नेंद्रा शु भेर शुभार मामा रेमा प्राप्त भी भी देरा भा

정기'표

RESERVE COPY

038407

Accession No.....Shantarakshita Library
Tibetan Institute, Sarnath

न्यु:श्रेट:श्रून:करी:नगर:कर्ग

(ब.चक्र.चंरीब.चप्र.ज.क्ब.)

ব্যানস্ত্রীন্মনা ------(1)

2. চ্বান্যন্তীন্মনান্ধ্নান্তিন্
ব্র্ত্তির্বা

3. बळ्चा ह्युत्पः देव स्य छे न विकासी स्थापः विकासी विकासी स्थापः विकास

4. নশ্ব-শ্লুব-ব্দ-ব্শ্লুব-শ্ল

6. व्र. यदे पत्र वर्ष स्था ते व्यवस्था (67) व्यवस्था वर्ष स्था ते व्यवस्था ते व्यवस्था

7. র্লু-অর-নেশ্র-স্ক্র-র্লু-রের্
দ ই ব ্ধ ক্'ন্-ন্-ন্স্ক্'ব্
8. বরুবারিল ব্দেবেরিবার লেহর নহন্
ৼয়ঀ৾৾৾৽ঢ়ৼৼ৾ৡ৽৻ড়ৼঀয়৽ৼৼ৽৻ৼৣ৾৽৻৽
য় न्-लःखनान्न्र्रः चुतेः त्याः स्तान्द्रं न्य
ন্ (88)
9. বৃদ্-দৃ-দতন শৃদ্- ক্রম- শৃদ- অবি- দ্যাশ
न्स्र-सिः नश्च-बाह्य निवास स्वया स्वया स्वया स्वया स
ॸॣॱ ^{ॱ॔} ॺढ़ऀॱक़ॖ ॱॺॱॺॱॾॕॻ ॱॸॕ ॸ॔ॱॸॖऀ ॱॾॖऀ ॸॱऄॸ ॺॱ
শ্বদ্দা(91)
10. দু'ন্ব'স্ত্ৰ'ষ্ঠেশ্'স্ন' ই'ঙ্ক'ন্ব'
न् परःष्ट्रीरःन्बःतेलः(बुब्वायःसःहे*****
न्रायातु गुरा हेटा। वे रेटा वर व के.
ন-শ্ৰ্ম্মা(111)
11. मॅं र अरासर त्युर बेर् इ वा मुलाल प
शुलासु तहें दानु नेंद्रा की तहें द
নপ্লা(116)
12. ५ ७८ ३८ इ व कु व कु व कु व कि व कि व कि व कि व कि
ૹૢ .ਜ਼ૹ.ਜ਼ਖ਼੶ਗ਼ੵੑੑੑੑૹ੶ਜ਼ਗ਼ ੑ ੶ਜ਼੶ ੑਜ਼੶ ੑ
ৄ৾ঢ়৴৸ৼ৴৴ৼৢ৸৸ৣ৸৻৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸
নন্দ শাৰ্ম শ্ৰী ক্ৰিক ক্ৰীৰ স্থান
······································

13. শ্নেষ্টিনেগ্ৰান্ত পুনানু অবৈ দ্লামান কৰি শ্
ৰ ক-ইন্-স্তী-গ্ৰীন্-নশ্ৰীক-ম-ন্ ন ্
নশ্ব. প্ৰা.লক. দ্বি.ল. বৃদ্ধা প্ৰ. নপ্ত ৰাৰ.
Tij(144)
14. धेव कर वॅर ल व्यक्त की अल वॅव
नुनः सुन्यासः यहेवः न्वः कवः नहुः
महीबामहिन्यासनाम।(152)
15. শে'বৃশ্ব'কুশ'রূব'কু'বৃদ' বৃদ্ধুশ
ततुवाद्यत्वात् प्राक्टें के विकास
न्नरःखरःनङ्कलःनःसंग् यः ङ्गराञ्चेनः
बह्र मञ्जु बहुर् केष्या वर्गन्य मञ्जू हता
۲۱ ······ (173)
16. দু 'এই স্ত্র' অইশ্ ব্বাস্থ্রি ' নশ্ব' শ
यतु वः वे वा सदरः श्लुः मृत्रे मृत्रः यः न् रः।
मॅ्रास्य रे से चुत्य संग मुत्र नम्ने
(180)
चर्षे.त। मॅं.लपु.मं.अ.संट्रचक्रें.त.पहंबर्ततत.
ग्री-अझर्-श्रीपया
1. 四下:到了: 口恶了: 凡器 四: 万下!
वहेंब्दी वहेंब्द्या(191)
[5]

2. গ্রি-গ্রুম-বি-শ্রে-শ্রি-গ্রাম-গ্র **真と、なな、何な、其とれ、たな、君、とせ、とと、** र्नेर्यः ह्येय्यः च व्याप्तः च (213) 3. महाळेबार्मणास्वाचे निषाक्षणावरः रु. स्वयामा न्मा याम्ब महारुषा बेद'लॅद्'यहग्रायानहरामा 4. শ্রমের দু শের ব্র অন ক্রন্ **ল ক্র**ম র্ব महेराक्षे पर्याचे स्राप्त प्राप्त स्र चर्यातःक्षेत्रः कुत्रः व दरः तुः वेचवः च (237) 5. विन्तुः विनः न्यवानी परं वा यहाया बेरका रूट में 'बुट' नदे 'च जुर' रेम | (248) 6. 首有 著不行与不過了·對下·夏·角·類和· ಹಿ**८४. খু**ল. ঐথ. ন\ ----- (527) 7. म्राम्रक्रम्याम्यास्य सन् छेराञ्चर ፞፞ቛ፞፟ጙॱ፞፞፞፞፞፞ቚፙ፞ኇ፟ቜ፞፞ዺቜ፟ጚጜ፞ጞ፟፟ዹፙጚዿ፞ዺ፞ፙ፟፟ श्चिर-रि.पश्चे. इर्थानवर-१८८। ४८. थर. मिनेम्यार्था हं सम्हि हुरायाश्चरि ग्री "" "विमलं रेंग्लं म्रॉन्वं मंत्र्य म्र्वर न (268)

৪. শ্ব.দিশ.ছেশশ্ব.শ্ব.শ্ব.বেনদ.শ্রিশ.
শৃॲ'ন ঀয়য়'ঢ়े 'শৃঙ্গে'বৃদ্'বৃষ'ঽৢ৾ঢ়'
ঢ়য়৻ৼয়ৢ৾৾৾য়ৼয়ড়ৢ৾য়ৼয়য়৸৽ঢ়য়ৢ ৼ ৽ঢ়ৢ৾ ৼ৽য়
শ্বস: আম: শ্বিস্ক্র শ্বান্দ্র স্বর্থ বিশ্বর
প্তুব-র্মনাঝ-মে-ছন্ম-চঠম-চ্রম-দ। (278)
9. শ্ৰ-মেজৰ-এন-শ্ৰমশ্ৰম-দিৱ-দৰ্শ-দ্ৰম
য়য় ৴ॱৼৣ৾৾৾৾ ৾৾৾৾৾ৼ৽ড়৾৾ৼৢ৽৻য়য়৽
ग्रीयान्डसायदेन्द्रमात्रस्य केत्रस्र
5 1
10. कु.स्र.रस्र.क्रुयास्यार्ट्र.ल्यायायाः
য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়ঢ়ৢ৽য়ৢয়য়য়য়য়য়য়ৢয়য়
নর্র-শ্রম-ভ্রমন।(298)
11. নশ্ব:শ্লুব-দশ্ব-শ্রা-শ্লুব-দ-শ্লুব-দ
कुष.ग्रेज.४४.≨८.४५७.४८. । से.७ ८.
लव - ज्याया में ता वितः रूर - क्षे - त्यर - द्वेर
বৃষ্ঠিক বা(309)
12. ಹಿर'मॅं र'बदे'য়ৢ৾৾৾৾ र'ग्लुर'मैंव'ঽ॔र'व'
म्ब्रागुः श्चेमः श्वायायम्य ताया विषा प्रमेरः
ग्री-द्व-क्व-छेन-र्ग्यु-गृहव-विवय-ग्रय-
म।(315)
_

13. च्चिग्रॅल र्नेव क्व वेर न्सुते वर वय
শ্ল-ক্রি-ই্ব-শ্ব্-শ্রী-অন্-ক্রীব্-র্মশ্ব
রে <u>র</u> িমে ⁻ অব্-জ-কে-ন্দ্-া এন্-নম্প্-স্-স্ট্র-
न्धे सळॅं व त्वाद विषा (334)
14. ব্রুকাশ্র্বাস্বাস্বাস্থ্যার
महमासान्दा। मेंदायाकवासुदानी यद्
ঀৼ ৾ঀয়য়৾৽য়৾ৼৢয়ৼ৾৽ঢ়ৢ৾৽য়ৢ৾য়ঀৢয়৽ড়ৢৼ৾৽য়৽
न्ह्यः तुः मल् न्याः सुः न्याँयः मा(347)
15. দু শেব স্থান হয় দ্বাশ ক্ৰু অৰ্ট্ৰ স্থা
শ্ৰিশ্বানান্দা। শ্ৰাদ্ধান্ত্ৰ ক্টিৰা শ্ৰীকা দ্
ढग ानसूत्रसदे सम्बन्ध कुषा ढन जु
ন্স্ব-দা (355)
स.त। टॅ.पपु.ध.त.रंबे.त.पोट.क्रेचयाची.पक्षपु.धेचया
1. খেদ:গ্রীব্ ইকারেইকাব্দা শ্রীবারীবা
बद्दः गृ र्षेत्रः लु रा प। (362)
2. मुल्पः क्यः क्रं क्या म् विष्या क्या दे दे दे
वंश्रवायान्ता द्वायये व्वायान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान
व्यक्षं स्थान स्था
5 শ্নে ছু প্রের স্ত্রান স্তু মার্ভ শান্ত্র মার্ভ শান্ত্র স্ত্র স্থান জ্বান জ্
म्भेम्याळ्याळे अँदाश्चराया मूला भेरा।
हूं सदे हा याद्वी स्दें व लुकाया (386)

- 2. अन्याकृषा विषाम्बद्धाः मयरायम् राज्या **ब्रु**.पूर.रसिर.प**ह्यान्नय**.युरा ये.पपु. पर्श्वेत्रः स्वाद्यः प्रवेद्यः द्वाद्यः प्रदेशः स्वाद्यः प्रवेद्यः द्वाद्यः प्रवेदः द्वादः बार्मद्राया स्वापन विवादा या विवादा व चर्चे न। हैं .लपु. शं. वा चर्चे . बाकु वा ना वा वा वा वी ना की . बक्रुंद्र-श्रेचया हूर बरद:५४%। विषानु स्थानी सामान 뒷지(416) 2. कैर में र अरा मृत्र ता स्वा परि दें र ही : र्यं व : रे व या छ : सं दे : ब्रॅं - व व या रे या या धवा

 - स्यायान्त्रः यह क्षेत्रः यह ता स्याया स्थाया स् स्थाया स्थाय

교환수.전	ঢ়ৄॱঀ৻৾৻য়ৢ৾৾৽য়৾৽ঢ় ড়ৢ৽৸ঀৢ৾৵৽ৼ ৽৻ড়ৢ৾ ঀ ৽ঀয়৽ য়ৢ৽
	ষ≆ুু; ^{ষ্ঠা} বথা
	1. খেন শ্বিন্ন বস্থান বিশ্ব শ্বিন্ন ব্ৰ
	ন্নি-মে-বিন্ধা-না(479)
	2. राम्वराश्चिर्म्बुर्मी र्मरादहेवाम
	ৰদ েশ ^{্ৰা} ন্ত্ৰীদাৰ্থ কৰিছিল
	बर -तु-बॅबाय-दर्ग वस्त-क्षु-द्वरः
	য়ৢঀৢয়ৢয়য়য়য়য়য়য়য়ৢঀয়
	3. পৃশ্ ^{স্} দ'ন্ত'ব্ধুদ'ন্ত্শ'ন্দ'। ই'গ্রীব্'
	न <i>न्</i> र्ञु'८२् <i>षः</i> ळंनः ब्रे-हुग्'बष्टि न ःरनः
	र्वर धुन तः श्रेर क्रुंद वक्र्रंवा । · · · · · (508)
	4. र्मसम्बर्देवःशुमःग्रीःतृषःवेदःर्दः।
	য়ৢ৴য়ৣ৾৾ঢ়৽৾৾৽ৢঀ৾৽য়ৄৼয়৽৾৾ৼয়৽ঢ়ৄ৽য়৾য়৽য়
	बबः श्रेन् : दग्वः चवे वः उदः नेदः बैवः श्रुः
	मझेमरा (518)
	5. इ.क्.में.इंट.इं.व्याधालाक्षाक्य
	नक्रॅंशयान्दा वॅन्तु-न्डिंदाहिये: हेंगः
	विमालार्येट् कुरार्ट् कॅलाइकेचा (535)

मै. अष्ट्रपु. सेच्यां र्भी. ता प्र. अपूर्धाः अप्तास्त्राच्याः विष्यान सेचाः वस्त्रा

2. বৃষ্ট্ৰিক ই বহৰ কুল ইন্প্ৰেশ্বন শেই

3. हू 'यदे न्न अर श्रेन तम्द न्द्रें र शु निवेषः सन्दर्भ सन् श्रेन्न सम्बद्धाः स्वेषः

ष्ट्रवा व्याप्त विकास क्षेत्र विकास क्षेत्र

4. खु:ठ:खुद्दै:बद्दे:बन्दिन्;इन्तुम्बन्दिः

5. द्र-भु-श्र-प्रचय-प्रचय-प्रचय-प्रच्य-भुव-

यते.र्बन् प्रिन् वेर्यं ने वेर्यं प्रिः क्रिं

6. শ্রহণ্ডীর প্রহণ্ডীর বিদ্ধিন্দ্র বিদ্ধানীর

7. तू'लते'त्र्'यासुय'यङ्गद्यमु'वळे'वळेष्
ही-ल्बा-मे. केंच-बेल्जा-ये-क्य-वा-रंटा
ने हेलाये किंदानु स्वेयला हे में दा अप सुबा
য়ৢয়৽৻য়য়য়৽য়
ঈ্শ্(634)
8. मुत्रान ह्रिन रहेत मु वह मु न् न् र र
র্বার্য নের্বার্য মধ্য শ্লীমা(651)
9. বিষামেই শ্রামার্কীনা(663)
10. ব্ৰুম্প্ৰক্ষাগ্ৰহ্ম বেইক্ট্ৰাট্ট্ৰ-
वययः म्यरः यः यम्यः विमः द्वरः क्र्रं मा (677)
11. व्र.पार्ट.चि.वा.क्षे.स्रेस्य व्र.चिश्वयः सः क्रव ः
य-८-ब्र्-४-४-इ.च्याय-त-४-४-१० १८-४-१० १८-४-१८-४-१८-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४-४
दहें वृ.चः वृद्दः ष्वियः श्रेन् : न्वदः द श्च ने देवः
<u> হুবা ঘর শ্বা (693)</u>
12. तू .पदे न् . य श्रु . से ह् . प श्रु . प श्रु य पदे .
धरः श्रेनः स्वादहेवः न्दा म्कोरः वितः
बदतः ग्राँका चते अं त्र (702)
13. र ब्रेट रूट हुन चन न ने कर हर हे कर हु
श्रेर् श्रुंद में विर विष्य प्राप्त र
कृषा गुरुषार्वर त्यायाच त्र हुर मुेव
বৃহ া বছুব্'ইঝুর্স্বা(711)

14. ৺ন্ মী'ন্মন্ম'ম'নন্' শ্লুন্'ট্যু' ক্ট্র'ম'	
প্র-মা ······ (725)
मञ्जःम। न्यायः स्वास्यः स्वरः प्रवेः नुषः प्रवः ।	
बापलः धरे : न् ये : सर्से न् : क्रॅं रा	
1. স্ত্রবৃংক্টকার্যাদকান্বদ্বেষ্ট্রবৃংক্তাক্ট্র	
য়ৢ [৽] য় ৼ য়৾৽য়৾৽য়ৼৢয়৽য়ৼৼ৽	
ন্ <u>সুক্ষা</u> (738)
2. १ दुषः ग्रुः वायका यदे ने न न व न	
ঀ ৢঀॱ ৾য়ৢয়৽৻ঀ৾ঀ৻৽য়ৢ৽য়৽য়ৼৄৼ৽	
নন্ত্ৰনা (754))
ペース・コーター・コーク マー・カー・ファー・ファー・ファー・ファー・ファー・ファー・ファー・ファー・ファー・ファ	
ग्रिले ज़िन्।	
1. न्युःद्रेरःन्यश्वाग्रीःबह्नाःग्ररः।	`
•••••••••••••••••••••••••••••••••••••)
2. 可思えて、これの (3:00m; まま) (3:max) (3:m	
श्रम्यः न् सुन् स्वादः स्वादः सुन् र	
5	•
इवरा में।	

ಶ್ರಗ,ರ≡೭,೩,೫೫,೪,೩ರವ! ವಖನ,ರಃ ಹಿ.ಆರ್ರ,≌,ನು೩,೧೮,೮.ರ.

र्षे .पपु. थि. य. यू. रायटा श्रेपारवरा की वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र वा प्रियंत् श्चर् क्रि. श्वरं क्षरः भ्राम् सरः स्वितः क्षेत्रः व्यव्यानः श्चरः वेतः स्वायः सदः । **ॾॕज़ॱॻॖऀॱऄॱक़ॆढ़ॱय़ॕॱॸ॓ॱॿॖऀॸ॔ॱॻॖऀॱॷॕॱढ़ॕय़ॱॻॕॸॱॾॕॸॱ**ॴॻॱॻॹॕॸ॔ॱढ़ॺॹॱॸ॔ॸॱॱॱॱ **ক্রবান্**না প্রথাস্ত্রা নলনাস্করারস্করার নানান্ত্রিরাট্রার্থরা গ্রিক্তার্যার্থরা প্রান্তরা প্রান্তরা প্রান্তরা প্র मद्र.क्र्याम् इ.र्.ची. हेद्र.श्र.पक्षेत्रया श्रेष्ट वरात्राकार्चा न्या. वया व्याः श्रायः न वरः कुः वर्षः वर्षः यदेः यक्ष्यः वर्षाया त्वि द्यः वृषः न्राः वरः मुशुर् र्रेम्य रें अंडर छेव यें रु अडिर नर मुम्य निर्म दे लामहेव वयाम्बर्यान्द्रस्य स्त्रित् स्त्रुत् स्त्रुत् स्त्रुत्र स्त्रुत् स्वर् वर् र् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर हू 'यदे 'शु हु ग प कं दर्ग न् इ दर्ग कु 'यळेंदे 'यद 'श्चे द येव पदे द द र स्राप र्राश्चिरः गुग्यारेया पर्वे वाष्ट्रमा स्वाग्रहा श्रम्या हेरा स्वाग्रहा श्रम्या हेरा स्वाग्रहा स्वाग्रहा श्रम्य श्चीत्रात्त्रात्रात्रां क्षात्र वाद्यात्रात्रात्रात्र विद्या विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र थे : वेषा मु : बर्ळे : वॅ : कृ : व्यते : व्वि : व्यत् : विव : व्यत् : विव : व्यत् : विव : व्यत् : विव : विव : व तहेंद्र-लु-हे-अ: हेंन्य:पर-न्द्र-व:य:न्युब्र-ग्रु-व:य:द्र-प्युद्र-ल्द्यः.... केर[ा]षुरुषात्म्वादेषात्रकायर् ञ्चर्-तु यर्दवः कुरामे क्रुपणालु वर् त्त्वानः र्वातः विष्यः म्यायः त्युरः म्यायः त्युरः विष्यः श्रुरः श्रुवः श्रुरः विष्यः श्रुरः विष्यः श्रुरः विष <u> न्युदः संग्वतुवः सः वृत्रः स्वारा श्रीः संग्वतः स्वारा स्वरः स्</u> ब्रेर-व-वृत्रिय:ऍट-वृद्ध दर्भव ब्रेर-व-भव-सुब्य-ग्रुब्य-वृत्त्य-प्रद्मा <u> इस्. क्ष. लूट. ये जया थे या हु . हु टे कु . चे या तया हु . खु या त्या प्राप्त व . है</u> ≝ॅमॱहुॱमन्द्र-इत्राहे 'हें'न्बे 'डॅम्राख' येनला रेयाचीलाहबा-स'न्द्र' **ळॅळा.मृदाग्री:वेदाळे**:पदे ययाच्चुर:दे:बे:ब्लुर:द्वॅदायविद:दर्शे:र्दा ज्बार्के प्राच न्दा के निवास्त्र विष्णा विष् चर.र्च.र्चाषु.श्रद्धताविषातक्वर.रूर. ञ्च.चिषुश्राध्ये. क्षेत्राचक्चराह्नेदः न्यर-तु-स्वत्य इं-द्वे-द्वंद्व-पह्नद्वः के-देदः (ई-द्वेदे-प्रम्द यम्भवः धरः यम् 'मवरः अपवरः दे 'धेवः) मैलः ग्रुटः वेवयः वशुदैः यमें दः यः बदः यः नदः व ठ वः क्षः सुदः विदः तुः श्रु वः दर्गा व क्षेत्रः व तुः नदः वस्यानः र वनः कुषालुषा हे निराज्ञवरामः निराष्ट्रं ज्ञावरावरा पर्तुषायः नरुषाक्चे देते स्वारान्यवा तु त्रेन्या श्रेष्ठेन्यते न्नाया त्रेष्ट्रा पर् यर् रा

द्वारक्षत्र विकास निर्मा क्ष्र क्ष्र म्या म्या क्ष्र क्ष्र क्ष्र म्या क्ष्र क्

.

न्जे लेग्य ह व्रायक्या हॅरान् यहं न्यर रे त्रव्या इयय ने ब्रिक् <u> चुरः ५५ म्" ७ ठेवः र्यम्यः म्ययः ५ रम्यः ५ रूपः ग्रेवः ५ र्याः ५ रहिः ।</u> ষ্ট্র-ম:1715ইন্: বিম:এশ:মম: ষ্ট্র-মেস্কু: ক্রমর: কর: কর: নমা न्ते क्रेन्र र्वे न्या क्रा क्रिक्ट व्या नि क्रिक व्या नि क्रिक्ट व्या नि क्रि ॺॕ॔**८**ॱॺॱक़ॖॺॱय़॔ॱढ़ॺॱहॖॺॱॺऻॸॱय़ॱॸय़ॖढ़ॱय़ड़ॖॺॱॹॾ॔ॸॱय़ॸॱॺॾॕॱॾॕॣॺॱॻॖऀॱ**ॱॱॱ** न्यॅव यं क्या गुर कॅविया वर्तर वर्षे न्वे या परि स्वया गुरा अके विरः रे विग वेगरा सम्दे पर गहे वा गर्यव र दे र में व में छेर हे के लेर वि'न्रा कर'रूर' वते है। बेर'ग्व'न्दे कर'र्यग्व' कुरा संस्थि स. रूर. श्रिव. रूर था। स. रूप . श्राचार नाय में राय हु या है। श्राचार अर सुव *ॹॖॺॱॾॕॺॹॱय़ढ़ऀॱढ़॓ढ़ॱॺऻ*ड़ॕॱॾ॓ॸॱॴॸॱॾॖ॓ॱढ़॓ॸ॔ॱढ़ॹॱय़ॖऀ*ॺ*ऻॹॖॸॱख़॓ॱय़ढ़॓ॹॱॻॖऀ*ॺ* त्रेन्द्रवाद्यान् ने महायास्यात्रान्त्रान्त्राच्यान्त्रान्ताः । भूवायायव्यान्ताः वरा-प्राप्ताः क्षेत्राया प्राप्ता प्राप्ता वर्षा व तह्नियान्वरावरावराहे न्नाया केराव्या स्था स्था स्था संदारित विदायि विदाय पञ्चल।"@वेषान्वललमः र्वनळ्नातृ लिते ह्वा यास्य पाळेवा यदी स्नित्रा ही **३**ॱइंशकुषा्त्राक्रमानीप्ति। पत्ति सवायार्थनार्थे । हिनाम्तराक्षायरावर्वन तद्दंबःश्रमतः स्टायः क्यामशुकानवाञ्चः करा मृद्धवानः हे . त्रायः स्वायः हे । त्रायः स्व 2.हैं ४.श्रॅब.वथ.त४. शब्ब ५८.। 2य.हैय.ग्रे.इ. ४व.भ्रेप.बै.क८.बु. (तृ:बाते:पतुव पते:इव:बर:न्यन पराय नेव पॅ:केते:क्ने:या ब्रोनायाः

नश हूर् करे मिन ग्राम्य 14)

②(इक्ष. वर. रेत्त पथन क्षे. म. मैच्य. पन क्षेर. कपु. मूच. चर्य. 16)

ইন মাস্নমাদেই ক্লাব্নু র্ল্লামান স্থান্

न् देश्यक्षः क्ष्व-म्प्यान् न्यं व न्यं क्ष्यः क्ष्यः म्यः व व न्यः व नः व न्यः व न्य

स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः व्यावः स्वायः व्यावः स्वायः स्वयः स्वयः

बार्चिष्यारायदे से राष्ट्री बारा से स्वाप्त के स्वाप्त ळेद्र-संदे-तहेद-लद्य-पासु-मेद-ह्द-मे-द्र्यद-म्रॉज-ह्र्द-तु-द्रे-पदे------रु अल कुद क स्वापाय झ ळ प्राप्त मा च व अ ळ र स्वापाय रु र की प्राप्त व न्दः चरुषा " 🕽 झुः दत्यः तुः येवषा "ने वषः मृदः यः केवः यदः वम्षः बर्गलायदे मु र्यं व के पा वैग प्रमुत्र व्यार्यं व प्रमान वा स्वयः प्रमुता । मद्र.यर.पर्याप. स्ट्रां च व्रां विषय बेदः धेव विष्य देदः दरः वह्नवः वहें वः क्रॅं वः मुकः ग्रीः वहुरः क्रुं इस्रवास्यवारु द्रिवार्या स्वाप्या स्वाप चकु:न्द्र:शुअ:र्रु:संनवे:ल:न्चु*र:*न्**गु**व:ग्रु:बॅल:क्कु:संगवःळट: अ:दतुल: हु-धेव-वेयानग्य-वेनया हे-वेर-रट-ह्येव-नर्ग-नरुय-वयाग्रट-म्राया केवार्य राये ग्राय त्राया लु ना न्रा विष्य विषय म्राय नकराः ह्रेट्-र्-मृत्र्र-....."र्मेट्-अते स्तु-अतु व्-तु-अळे . र्षेव्-वर्गः यक्षेव्रतः खु:व:वहर:वदे:वग्व:यव:धेर:घेववाया "श्वुतायदे:श्नु:दर्दे:हू: सर्वे:व्राथार्मेर्यं वर्षे क्षुरे क्षुर्यं प्रतिवा वर्षे मान्यवा वयता विश्वत् विष्ठ याचे । विश्वतः ठ विष्ठ पातहवानि प्राप्त के वानर वर्षेषु: प्रत् ग्रे-द्रन् हेर् याक्षेद्र: नवाया रुन्: नु: विनः प्रयः यह या श्रे रः नवाया रुन्: विनः प्रयः यह या श्रे रः नवाया रुन्: विनः प्रयः यह या श्रे रः नवाया रुन्:

① (त्रवात्वका के का इंत् करे विचा ग्रम 34-35)

नष्ट्रवःसः न् रः वैदः कुषाःसः **वैषाः** तश्चिरः वेषः गवदः। " 🗇 वेषः गयसः नः यूबाया.सूट. या.वट. वुया. ब्रा.स. यथ. यट बया. ता. ता. रा. च क्रूबा. ही या. रुचा. **ॲॱळेलॱगु८ॱऄॺऻॺॱढ़य़ऀख़ॱॸ॔८ॱढ़ढ़ॺॺॱॿऀढ़ऀॱॹऀॱॹॱ୴८ॱ**୴८ॱॴॕॸॕ॔८ॱॱ॔ॿ**८ॱॱ** मुल-सुर-दहें अपदे त्यूप-क्षुर-पन्नद-यदे के के के दल दहें कर व पाहु-मनद्रार्भिषा सुरिदार्थ के द्रार्थ के द्रार्थ मान्य नक्षेत्रची र्षेया पाले यापि यहिन हैं ना ने या हन पर्ने ना क्षा नर यह या स्थाप मते अक्रेन् न्वराशु शुरामते ह्रा र्यू र वी मुल अर्क्ष प्राप्त न्वा मरा । । । । वद नवा दवा रन मु हुरानदे हुला विवया ह्या मरान् वा मान देवा है। बक्ष. लट रच मु.रं यर. क्रिया क्रूय. ग्री. यं वधारत. विच यक्षेत्र में जात्र क्ष्य.... न्धलानब्दार्थः वेतार् राजा क्रुः धवः ग तव नतवा ग्रीः रेवा धरा हेः ग्री गः हु म्बॅल्याचरायर्द्धराप्ता कु मॅर्र्स्य न्ध्यायी रूर् व्वारोराक्षुः ক্রুব'অ'কেন্' শম'অর্ল্'ন'ন্সুদ্বা

① (र्यण्यश्रम् अः क्रंर्-कः व्याग्यर्यः ३६---37)

⁽न्यन्। प्रवाक्षः क्षेत्रः कः स्नाज्यः प्रवाकः क्ष्रः ।

म्यायानाः भेरः मूर्री स्वायाः म्यायाः स्वायाः स्वयाः स्वयाः स्वयः स्वयः

① (ব্যল্ ব্যর ক্ট্র-জ-র্লি গ্রহ্ম:52)

⁽七七山,七四四 勢,或 於人,至,复山,祖亡四, 23)

मवे**वःसरः भ्रॅवः** वेरः। श्चः सत् वा म्यः सरः हेरः किंदाकुर्यालयान्त्रेयाहे स्वर्यात्र हि.श्रि. वयात्र निर्मे केवा येते क्षें अर्केर वर्ष व्यवस्य वर्षा वर्ष । यह वर्षे भूमताक्षः ह्रा-्ग्नरः सं श्रेन् व रेटा मा म करा में दा बा के व सं दे श्रुदे · · · · · · · वाक्षवायायद्भी विद्यास्य विदायाया विदाय **भरः दलः मुलः १६५** छ्वः सं १५८ म् च छलः स्वरः सुत्या 📑 दे दलः सरः दलः हे परी परी द्वापा वया यहेवा है पहला दुराय है परी विरा सर.ल इंव.री.प्बेब्यर मूथायशिर्यायरा । सूर.बाकुव द्वारायय **प्र**त्राचयाच्चित्र क्र्यायाचित्रया रयाञ्चयातक्ष्यान्य्यायाच्चित्रा व्या हे त्री विरावत्वाया स्राव्या सरावेरा छैया छना स्याविरा त्विचेश भेट.चेशूल.ह.श्रचेश.**2 य.जक्ष्**टश.शे.चबुश चेट.कुध.चेशेट. ब्रेट्रिव क्ष्या सर्वा सर केवर में ब्रिवाय न्द्र क्ष्या सर क्रुकाने न्युका द्वार केवा येवायमा नैकासदे निया मुकासदे हिया या देन् लन् कुरी ने बातु न् वर्षा लाय में ना तरी न् मृता के छे स्मानु सामा हे तर् प्राया मृत्र पान्र ते स्राया ठव् भी भव न ने ने सुवाय पान्ने रया वया न्मॅ्व सळें वा वा शुक्रात्य सुवाता परें वा नृन्दे वार्त त्या पान वा तह वा न् च त्राः में दः यः केवः यः प्यदः भुः न राष्ट्रः म्वव वः न्दः वे त्रः न्याः प्यनः यः ः **শ্বদ**ের্স্ রের্থানের নার নার নার প্রামার প্র न्मर मं न्रा हे न्यम बेर् ग्री के न हे न से कं न न करा प्टर्ने शुर्रे त्रा के नित्त वित्त श्री के नित्त स्था के त्र के

श्ची स्वारा स्वरा स्वारा स्वर

^{🛈 (}त्यम के कूर क में म गरण 55)

र्मेवः पः र्रः रेरः पर्वः यवग्रः स्वाप्य प्राप्तः श्रुः यस्य या ग्रुरः ञ्चम्यायः वयः सेमयः पदेः ञ्चः केवः तुः यः नृदः मरुषः नृषे । यतु वः स्वम्यः पर्यः … ब्रेर ब्रेट्य.क्री.च ब्रेस् हे.पर्न. तथाक्रेट. वि.वंट. व्रे.ब्रं वर. द्याच्यापश्चिताहे.याच्यास्ट्रास्य व्याप्त्राच्या बळ्च न व ता त्य त्ता कु ता कु द । यह द । प्रव कि कु के कु न व व ता त् त् त कि कु के कु न व व व व व व व व कि कु **จัายสพาธร**ากราชิราชิวรุยณาณาชัฐรายลำสิราชา विमयामन् तर्मेन् पर अर्द न् न् मेया भेटा वर्षे स्व मुल मुन स्वया ग्रैकान् इंकान्य हेव. तप्त हैव. तर्वा क्रव. त्या अवत. र्वा विवाय. लुट. त्रुवा . त्रेणभी क्षान्यत्रे त्रेरभी पहन पर्रा क्षिर्य केन्ये वे क्ष्र श्चिन्। त्यनः कुः श्वांवा यदमः वद्यय सुवावः सुः न्वोः चदेः यहं न् क्वां वामः येवावः मवर-१म्था-लेया-सम्बाध-१८। रे.सर्ह्र्र्य-सम्बाध-१८म् क्षणायतराष्ट्रायदे न्यायत् विषणाय देवाया प्राः वृष्ये राष्ट्री प्रमुवः मःन्दा ब्राट्सिक्टाश्चर् ग्रीन्या स्वाप्त क्राया क्रिया विका प्रते র্মান্বন্দ্র্নান্ত্রেন র্মান্ব ন্দ্রান্ত্র্নার্মান্ত্রন্ত্রন্ত্রনার্ **য়ৢ**ॱঢ়য়ঀ৾৽৻ঀৼ৽৻ৼয়৽৽ৼৼ৽৻ঀৢৢৢয়ৼৢয়৾৽ঢ়য়৾৽ঢ়য়৽য়ৢয়ৢ৽৽৽৽ र्र-कृषे:स-र्र-क्रे-पविवातुः श्चेंगवाधरायर्ग्या राष्ट्रायाः स्टर्यायः प्रविवाति स र्ययायायम् नित्र दे त्रयाहे नि या के र त्रया ग्राम्स ह्रा स्वर हि र र त्रया ग्राम ह्रा स्वर हि र र र **७८.तर.** मेल य.पहत्र. रंतल. श्रेट. तूपु. रूट. लेबेथ. ह्रेबेथ. दश्य. १८८०. रु:र्र्वेट:कुष:ध:र्टा कु:रॅर्:क्र्र:ब्रुव:क्रेंव:वर्वेद:यर्वेद तुते:र्न्न्,क्वें त्र्ज्ञे :व्यक्ष:ठर्:पर्ने क्वेर्न्य:प्रेट्कः क्वेंर्न्य:वैगःवेन्द्रव्यः

र्वर्याम्रायाकेवारा विवायान्या त्या विदा हेर् त्रायाक्रा वयाग्रदः नह्नव त्र्तिः यव नदे श्वा केदः ह्रवा न यवा इवायरः द्वा पत षक्ष्यं. चंधिय जा. चंध्राजा परं प्रया श्राच्या थि. खेटा। बाह्यः क्र्यं चीजः चीटा द्वाया वयाग्रदा मूदायाञ्चव स्तु तमायाख्दाया सु त्त्र तमाया सु ति तमाया सु तमाय सु तमाया सु तमाया सु तमाय सु तमाया सु तमाया सु तमाया सु तमाया सु तमाया सु तमाया सु तमाय मूंयाम्बययाक्राताम्बयायागुवानुः यवायते यग्रातायवानेवानुः मुवायाः मञ्जूषा "1 वेबा ग्रायामान्मा ब्रायाचा ह्वा सम् हेवा सम् हेवा सं व्या स् विनयः सदे ग्राक्तेन विनयः शुः न् द्वार्थः स्वार्षि द्वार् तत्याय न र वि द दे द्वयाता के द्वदान हुला "@वेषा विद **ఠబ**.५५ౖॅ४.७८.। स्र-देव: इरा बिश्वास्त्र क्रा हे सिर हे व न न न हे न के व इं दिर्म् व्यान् अतिह्यान् इत्याम् दाया छेष् में ताथे हे नामिता । र्ट.श्रेब.१.वयातायायीयातप्रवयायेष्ठावपानिटाल। पर्वेषाताम्य र्विर्यःकुःबङ्घः वियःवः व्यात्र्यः धवः) वेयः ववः ह। मृर्-मृश्वयःग्री-क्ष-मे-क्षर्-ध-र्मः म्रोतः मृश्वरःश्वरः मृश्वरः स्थः म्रुः स्थः शुन्द्रिः होत्त्रिः त्या हे स्टरम् वया ग्री के स्टर्मिता न् स्टर्सि ग्री नर्माम् द्रान्ते द्रान्ते वर्षाः मेयायाः केरावम् नाम्यायाः कर्षाय ंसंदें विषयान्त्रेयात्तुन्यन विषाने त्यात्या स्वया र्र्केटाचन वेन न मैज.घटु. विषय. क्रियः श्रुर्-ातः यदः न्याः यदः न्युतः यत्रः यश्रुदः यः न्दः। (人口山) 於人. 年山山上山. 63, 66)

तियाय ता. वीया भूटा क्षेता पढ़िया क्षेत्र पड़िया मा इया तार देवा पर हिंदा र्र म्बेर्यान् कृत् व्य हे गुवायायह्वायदे यया ह्यायार्ट्यं वर्षा हेरा বস:ব্রীস্-বর্ষা ক্রম-বর্ষা ক্রুব-মক্তেশ-দুম-দুমের দ্রা-মব-র্ম গ্রীর্ষা *बुन*ॱङ्घेन्यःवयानङ्गवःपदेःक्षे**टःयः** बद्यरःन्त्यः वययः ठन्ःनुः कुयः परः च्यानिता श्रुलान्तुनात्रीन्यात्रीन्यात्रीना सर्वापरा सर्वापरा बर्दर्-यःधेवःवा रःस्रः छिर् ग्रेयः गर्वेवः त्यः वयः स्रः हुवः बहुर् देः नश्चनःविश्वत्र न्दःनश्चनःन्द्रेनःयःन्ह्वःयःन्दः। वेगःयःवश्चिशःशुः रॅंब-स-बिय-ल-न्ध्रंन् यत्र-सम्बद्धन्-केत-तु-दहेव-यत्र-व। केन्-रु.पङ्गवारम्ह्र कु.पमाराखरार्दा पहरावामा स्वरावामा विन् त्यान इत्राय कुत्रा मिन्द्र त्र्री नात देत्र यदे हूं त्यदे हा य दुवा य दे त्राय नगुरानाधेव पर्याष्ट्रेत् ग्रीयायात्रा क्रियाग्री न क्षेत्राया गुताया होया वर्षा नन्न नै:कनःश्चेन् ग्री:वनवायन्नेनवान्ना नक्ष्यनःश्चिनः वानिवानुः ववान्वान्ता न्रवानायायायीययान्तरत्त्रत्र वळ्या नदे क्रिनः न्तुरायारान्तु प्रति ज्ञाना न वेता प्रति केता न ने न्यर वेता प्रति न तिरा । मुै'सुर्'। वॅन्'र्सम्'यद्रह्रिंधेम् मुस्यग्रीयमुर्यस्य प्रदेश्वर रा मॅबाळेवाश्वाळात्रा ५५वा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा मु खन्या गु हूं व स्वा विनया है से र सं न र सवस या या सह र में सार्य नया नरःश्वलः इंदः हवः क्रवन् इंदिया श्वलः सदः क्रवः मः क्रेनः वदानवितः ^{ড়ेब}ॱबयःगःहे*ॱहेन्*ॱग्रे-छुग्-हु-५तुत्पःचःग्वरःचरःगुरुः५हुन्*न्*रःचरुरा हे.घबेया रे.पस्तायाययः इराह्यासरामेयाम् याम् राह्याम्याया

में पड़ियान ने कि तह क्ष्मा क्षेत्र मा महाया में मा स्वार हिया में क्ष्मा महिता में क्ष्मा महिता महित

स्वात्त्र स्वात

① (र्यगृष्टे के विन्यर्य 66)

दश्चेनल पर्दः चयापदेः श्रेदः वलाञ्चर हेना हेन् लायञ्चला पर्वा श्रे च वयता ठन् रं वहरान्दि गृब्बा हु चुन्ने व्या हु नेर विनया हे वहरू ळॅ दःवनः निराः स्वातुः च ब् निषा सरः क्षेत्रः ये दिरा ये निराः विरा मला नेन नलन् वसला स्मार्था ग्रीला सद्देन मनः सर्वे ना समार्था मला न् में दं बक्रमःम्बुयायान्नमः हु न्ना बरायदिया यहता करायदर्श यहतः र्षा चु असा न दे सासु न दिवा क्षुंदान न्दा क्षुं व संग्राम न से न में केव-म्-वयाग्रह्------ञ्चव-मवाक्त्रम्यास्य के बह्र-मृन् वर्केन् स्वन मुद्रेयात श्वाय श्वी सद् यदे स्वाद श्वी मार्ग न्दः स्वाय स्वय स्वाय स्वय मह्यूराब्र्स् इत्यह्त ने सरकेदार्या क्षेत्र विवादा " किद्या " म्यायानः द्वराष्ट्र त्याये न्ना याम् वार्य केवाया स्यापिता वार्या শ্বন্দ্র স্থার ক্রান্ত্র স্থার ক্রান্ত্র

2. हर्गन्यु 'न्यम्'न्स्र्न्'न्यः अन्यस्य

⁽१५५ म् न्या अं का क्रिन् का मिन १७०)

ः, म बा हिन प्रहेण नवा निवास साम महिना साम महिना न्यं व देगवा प्रमान्ध्रमा मेवा गुरा व्यवस्य व व वे पर् पा श्रु त व व ह व ना र बनरः र्र्ति नहिंदः केदः निंदः बदिः द्वनः द्सुदः त्यः निंदिन्यः दिन्यः व कुतिः तनर् नह क्राह्म क्षाया चुरा खर्। र्येर व। र्यतः निवे नितेः बुद्राचारम्हित्यायया "म्द्राय म्द्रमार्चित्राहेत्रात्यमाय्युंत्रा पर्वः पर्दे ग्रा वेताया पर्वे न् पराह्न वे वि वि वि हे न् ना हितायह र्यम्याद्रमाद्रम्यात्रव्याम्बद्धाःमाद्रवःक्षेत्रःमुत्रक्याम्बद्धाःम्बद्धाः त्वतः विवान्ता देवैः त्वव्यवायः यः त्रो स्वानः व्यानः हेव । व नवः विष्ठराते वारवार्थया प्रकृत् धिराव्य चित् स्रवास्त्र स्त्र स्रवास्त्र स्त्रवास्त्र स्त्र स्त मया न्य क्रिं में न जीया नियः वरः नु व व्यं व त्यं र क्रिं व क्रिं च व्ययः में न नुयः हैनः महरः मरः महेव मुरः वरः तु : बोरः मदिः म्यं मः रेग्वः रे मिहे वः इंतः वर अर् लया नेह रंग लय छर रं श्रेम्य श्रेर श्रेम्य रं स्ट्रिय स्ट्रिय धार वर्ष म्यारा देव स्य केते श्रु न्द देव केव कु व करा महिरामी स शुंकलाह्व क्षराप्तात्विराम ह्याला क्रिं राम्या मार्गिता त्रा हेलासुता र मर रहेव मेंद या बहुर लेव वया र ते हिर खे. र र पा नय श्री हे से . . र्दः चग्रः ह्रॅंब ही व्यापष्टिर है नहीं चल्या नहीं वि वेदा याया. दे प्रविद शेर् यद है गुर्य पहें द् त्यर गुरा के से साम दि न इंग्रंमिव्यात्राम्या "ने न्यान्या के निर्माण चे किर में मुल पिय केव यें विता क्षेत्रां यदी द्वार में के त्रा केता बर यें

① (ব্শব্দেরি নের স্ত্রাম্পর নির্দ্ধি ন

चलवाया वाउदलायाह्वाम्यायदेळ्याताचे निवासि दिते ह्या वा न्दा ज्ञाय य न्दा महिन महिन महिन है मार दे कि प्र दे कि चला रटारेट्रक्रराला श्रुटाकृषा हे परा देते. देव के लावा महिनाका परा द र्वसः क्षेदः वी ६ वा स्वरः च्चेदः सः वादेवः क्षेत्रः सः सः देः द्वः स्वरं वा स्वरं वा स्वरं वा स्वरं वा स्वरं बहर हुन य धेव यता र वे त्विंद सव हुर नदे र ता प्रत्य पर्द क्षयाद्वत्। धुत्याये केटाद्वताक्ष्वत्यायाचे द्वानी क्षुव्यता मह्याप्तिः ठैवा.हु.चेवेवलायदे.सः वृष्याय चह्रवायर श्रुरः है। "Dवेषावला सामा बिद। वेदलानेराञ्च वाश्चिका मर्नेषा महमामान्दा न्याया वृद्यका विदाय क्रेर-व्यव-श्रीयाग्री-वहन् मालुकामर-वानवनमकान्द्रकाशुःवश्चित्यः : बुवः व्या द्वा ग्रम्ह्वा म्याया विवायवा श्री मायमे द्वा माया विवाय हे*द:द्वैद:बॅद:ब:रद:ब:प*ठरूंब:ब्रुंद:बॅर्-ध:दे 'न्यायापर-अळॅद'ई |

श्रेर र्वे पर्यः न्दः सत् व स्थः व व सार्यत् धरः या सक्रेतः या चर:श्री म्रायायहवासम्ब श्रीमाञ्च निरामा निरामा अस्ताप्ती स्थाप बॅदि'त्रग्रास्यायाग्री'कुयामं 'कुयारियायाः त्यायीयाकुयामदी'मञ्चरा नेद <u>य़.७.४.२८४.त.६४४.ฎ४.५२,५५५ त.५५८५८५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५</u> **ळेदः यं व्याप्त्रायः वर्ष्यः या मेर्द्रेदः श्रेषः या वर्षः या वर्षः श्रेषः श्रेषः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः यदः** तुषा ने विषा नी परः तु 'पर्या सब दे श्वे 'सॅ 'यदा द है द ' देवा हु 'पर्शे द '' ड्रेल वसाहुदान्य रायदे न सुदाळ न्या यह र द्वा या किया वरा नदा क्षेत्रायाः नेतायाः व्याप्तायाः व्याप्तायाः विष्याः विषयः विष्याः विष्याः विषयः **इट.**र्म्ब.पर्से.चवन.लूट.च.वैथ.भुटा। तीप.टुप्ट.शु.झबथ.प.पहंश. **६०.ग्री.घरथ.**चरा श्री.देशवार.**क्ट.जय. १४.च.प.**च.प.रंग .पथ.श्रीय..... कुते क्षेण पहुं नाया छ्या हे 'अवता न वा भारा हारता पार रा हु य दे 'उं अ व्राह्मवान्यायते न्यं वर्ष्यमायमा मुर्वेषा हूर्यायत्रे राष्ट्री राष्ट्रिया मक्रुन्ने छिन्।वर्के नास्ययाः क्रिन्ने छिन।वर्के वायवार्केरः **२६५:**मदे ग्वराह्मा वृद्दा वृद्दा हुं ग्वराह्म । यता से दे । पार्टी हु न्मेला। ने न्तरार्धन् नु व्हर्माया ग्री त्युद्राष्ट्रित्या न्द्र ने निया ध्रायः वदाः देनेब्द्वंबर्भेषाभित्। बददारेबर्ब्यंत्राद्यम्। ख्यातु ख्यावाने प्रवान्मेंबर **इ.ज्-**.क्षेच्या.ह्र.च्या.क्ष्र.च्या.क्ष्र.ह्रंट.ल्या.क्ष्या.क्या.ह्या.क्षी.क्षेट. **ब्रैयःग**वरः क्षेःव्यवःग्रवः क्षःपठंदः चेरः यः क्षेरः गशुवः ष्रियः तुः ४ रहः ः ब्राविश क्षावर क्षेत्र पर की वी निर वी निर वी निर विश्व सर वा ला

① (和"万中下"等可称"中美气"之中"芒村"356)

*

2

ने वराकेर में र वर्ष न्य मान्स्र में न्य प्रति करा है र वर्ष है शु अद्य देश क्रें र महा अची महें दें मद केद मदी द्वार है महा है नहा यहे गः हे . सूर विषारी . प्रहेरा स्. के . या बे थर बेर . ये . ये . मते.र्धर.क्ष्रचयार्टा चैल झे.ह्रार्यं व रचाचहवा वरायहे.र्धर. मिन इं.र्नेव.वी.रंबर.पठवावर.दं.इर.पहूंबया रे.र्थानर. <u>क्रेब्र-पर्यः ब्रम्बर-प्राच्यर-प्रबः ह्यः च्रम्बर-प्रमः व्याप्तः द्रमः विदः।विष</u> **क** न्यानिनातिन्त्रानितान्यान्यान्यान्याः द्वायाः श्वायः द्वायः त्वायः निव्यान्याः विद्यायः <u> चह्रपष्ठः गर्वेषः दृदः। हृदः दर्धः गर्वेषः चह्रपः चहेषः द्यः चहेषः द्यः च</u> मूलान क्रि. शुर्व राय निवास क्रिया क्रिया राम स्वास मार्थ स्वास मार्थ स्वास मार्थ स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास श्चेलामा तर्ने द्वा "म्राधुलायन्ता हुनामानायते न्सुराळ्याता ग्रीमा नह्नवःमः तः सः तड्डेवः मरः इतः भैरः। यर्षः त्रीः न् मे ः नरे ः न भेषः मृद्रेवः रैगावा यावा हुर परि हु । वे ने वे वा बेर हु : वा श्रें मा नरा सवा है : र मा मैका पत्रतः नृदः पत्रुदः पः अर्दे रः वः गृब्वः पदिः त्रतः स्वः दह्यः पश्चः पः पवः " कर् भी न् स् मिलाम्बर्स्स, तु न् व्यवाम्बर्ध्या है त्यारका की इसवा ह्म र हिमा गुरानदे नदे ने अन्या न्यानर नुष्या । तथन्य या सम्बद्धाः रासम् **ठवः बेदैः न्हुन्यः सुः** न्दः न्व्वयः ग्रीयः पङ्गेयः पदैः यदैः यदेः यदेन्यः

बॅदॱब:चर्षाःचॅॱळेवःघॅषःष:ळेवःघॅदे:ह्य:ग्रुं 'ग्रद्य:क्रेर्'र्धुद:बी:ळॅत' के.नर.च वंशावयार्ज्या हे. ठवे.हवे. ंर तर छ वंशावर ह्या नर क्या वे... पन्मारुम ग्रुट्रिनेश हिराशु रिते हिराशी स्वार्म म्याने सिंद्यायायाया <u>र्वादेशक्रें त्रक्षे त्रक्षे त्र त्र व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त</u> पर्वः न्सुरः मैं। ळें म्या यर म्या हे । ळं रः पठन् दः वेः यहे म्या राया वे या वु रपः लार्मन्याः स्वयं ता स्वाप्ताः प्राप्ताः प्राप्ताः विद्यान्ताः स्वरः महिषान्तीः <u>द्रैलम्बार्यः क्रेः रवः हुः वङ्ग्रेग्वः "</u>क्षेत्रः नृत्वयावः हृरः नेतिः बहुतः व्रहः" **इट**.पहचयावयाचे वातातात्वाळ ८.की. पेव्टा हॅट्या सूट्या शिटिया. .. भूजार्धरः क्षेत्रवाज्ञीयामञ्चरः वयाच्याच्याच्यः ह्ररः वद्यान् । व्याची हे । स्वरः • र्रा ग्री रेंद्र स्व श्रिष्ट्र एवन ग्री या सहेया सरा ग्री या वया मरे प्रहण्या सा त्रिन्यः बुद्रः। दे व्यायं क्षः प्रयायाः क्षेत्रः देवः वे व्यायः क्षेत्रः **न्द्र**-इत्राक्तीः देवाया द्यान्ध्रान्य या नृत्या के या क्षेत्र क् केब.पर्व. मेक्व. श्रूट. पद्र. श्रेपया बचा. क्षट. ची. ह्रंट. ने तं व. प्रथम ईट्य.त.चेवा क्रेचया.ग्रेय.प्रट्य.चेवा हेच.च'∠.तप्र.±सट.क्र्च्यय. इस्थान्यरतः नेता द्वेन्य शुर्दे दात्ये । ईत्या यह्र ना मिताया यना से । से ना ल.पि.भे.यूचल-चंदर.क्रूर.च्रर.यूच.चु.रंथच.रंसे र.संबय. 55" कनवार्डना मुन्नते ना नवार निर्मा श्री वाद दा की द्वार श्री दा मुन्न दा निर्मा वयाधराञ्चरता हवानरायदान्यनान्युवान्देनान्सराय न्याप सम्मार्थरयाया विवा ने राय हिन रायश्य सहिन रे ने वा श्वा हिन राय हिन रायश्य हिन रायश्य हिन रायश्य हिन रायश्य हिन

① (a· ₹¤८· ₹ ¤ष· ¤ ₹८· देव· देष· 379)

श्चित्रात्त्रं त्रः इत्रात्तः ह्रे त्रात्तः व्याः क्ष्यः व्याः व्याः त्रितः व्याः व

मिलविष्यत्त्रस्ति स्विन्त्विष्यस्य हुव्यान्यः मिलविष्यः स्वर्णः स्वरं स्वर्णः स्वरं स्व

साम्बद्धालयायाया स्था वर्षा-क्ष्य-प्रमुक्ष स्था-सुक्-त्र-प्रमुक्ष-त्र-त्र-व्यक्त-स्था-सुक्-त्र-त्र-व्यक्त-सुक्-वर्षा-क्ष-प्रमुक्-त्र-व्यक्ष-सुक्-त्र-सुक्-स्था-सुक-र्य-व्यक्त-सुक-व्यक्त-सुक-प्रमुक-

3. अस्त ब्रुल'नेन'चं के'नेनेन'विन'यनत'न्सं ल'न्न। स् नेन्न'वेन् नेव्न'ने'तिने'तिहेन'नेत्रुन'क्वेन'व्य'न

ष्ट्र-अळॅन: ह्ये**द-२ गर**-ग्रेज प्रत्यत य स्। स्-त्र-ळेनक हे न्यात्ता में न्या विदा शुः ज्ञुनः तुः क्षेः चुदः द्वरादे द्वरादे उदः हुवः छेवः सः तहेना हेवः भ्रुंट्राचिर बेर्ट्य दासे सि.ची.ची वर श्री या श्री स्टबान सि.ची ट्राची स्टबान सि.ची ट्राची ट्राची ट्राची ट्राची म्नुब-छ्रव-छ-१-१-१ मि.स्याछ-छ्रव-स्वाल-५८-। नम्भव-परी-माक्य-चैन्-बुदु:गृव-नु-र्ह्वग-बु। नग्नद-दश्च-र्ह्न-ज्ञा-बा हैर-मैन्र-मृवयः ขู) - ขู ๙-ฉัลิ (ผั**ส**-ราสา) ๆ รู ธา ซู ธา เล ๙-เล -ร**ัสาขู ฉาลธารธา ซู ธา** ळ.रंचर.ब्रंच्यी चषु.ह.के.रंचर.बे.वक्षा म्.सं.सं.वहेब. ळ्यागु जुलायं दे न तुर जुर छे न त रामदे छे किर सर हैं न नर न हे द वहिंवा हु.सर.र्वाय.स्व.खर.हे.वे.ह.वरा छर.हे.वे.छर. वि छेर हे दे द यक में में बहु बेर नव द वे केट | केट में ट वरिन्हा अराने दिन्हा वदावी ख्राय है व्यव हे दाखा विराने वै.इं.च्या हा नगर इव नगर निया स्वहर हि नगे. ष्रवाया द्वार्याया क्रिया ने ने वाया भीरा खे त्या छ वा या हो। या व्याया हो। या व्यव यः स्थयः भेदः यहेदः कण्य यः तुः अः ददः। दह्यः द्विद्यः म्दः यः केवः इषु. लंदा पथा पहुंच राषु. वि. प्या ही स्थार र्गद स्व हु दर्भ त्र केरल न कुर राज्य हु स्व हु र दर्भ दर्भ का किर स्व हु र दर्भ का किर से कि ॅब्स-र्स्सम्बर हे-ऑन्न-पन्स्वयाग्ची-चन्बराक्टन-स्वी-नेमवान्दा। ब्रें केव पें र्माय व्याप्त विष्या विषय विषय विषय विषय विषय विषय स्वाह यामरामुलानदे मेटार्यम्याग्री दिराञ्चेषामी मुलाबळवादहेवासदे र्मे : ५५ व : ५५ व : ४ व : ४ व : ४ र्वेग्वायाये अर्केन् स्वान्द्रम्या स्वि हे न्व्या स्वान्या स्वी प्रामेन् प्रामा स्वान्या स्वान्या स्वान्या स्व नलका कुला के किन या करा नु न्दरान नदा। मलका धरा झाला निले दत्र-र्मेलाग्री ग्रे न्वान्तु साम्रवास्य र्मेनाया द्रा কু-ব্রুজ-পূর্ণ मलस्याग्री दिन में हिंद ते हिंद ते लिव स्थाप हिंद मा दिन सिल गुव मलया हो मा ॲंदै ~ स'म' ऱ्या सर प्रेम्स मित्रा मा नृत न्या कुत्र न्या कुत्र न्या स्वाप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स त्रन नदःन्तः ग्रे हे : हा व के तद् न त तु : क नदः स्व स्व : स्व : सं र सं दे : कुैं निर्माह विषय्यस्य स्ट्रिस् विषय्याया के विषय्य विषयः दङ्गर नवा देंर वहेंव के किंव-रेंग येंर विनेट न विनय कुल न गुव कु "" म्हेन्यायति दिन में स्वाहत्ये प्रमायाया है तही पर हेन पर निर्मा है नदे : ॐ नवा न्रः न रुवा न व्यथ शुन र र श्राह्म श्री सन् र व या हु : कुंब साव : कुवा : नते नह्न शुर केव ये दिन स्व न् मन ये आर केते विष हु नक्ष वा हे ... न् गुरापितः मनः गुरा र्यापा न्याप्तरा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्तरा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत न्रः इतः इत्रः हो हो वा केर् ग्री छन्। तु स्वा हे न्हे वा वहे वा ग्री के विवायाः सरायग्रीना सदा सुरा महत्र महत्र मुल्या स्था ने महत्र महिला ने महत्र महिला महा स्था महत्र महिला म मान हैना हे बार्यरा श्रुवा नेवा है वा है वा ऋगवा परी वा वा मुल यं :शूर्रः परं व :क्ष्रं अ: यं दे : यं : यु र त हे **व : व हे लः प दे : व**िलयः वेर : [হেনেনু রিঅ:শ্লব:গ্রী:শ্লু নে: নিমনে নেই লবা চী हे.सूर. य.व.र्य. **ढेबरा के द**ेहरायदे व्हार् दिनाया बेहा नहें हा स्वाप हे ना पदे ना वेहरा ঀৣ৾৽ঀৄ৾৽ঀৼৼ৽য়৾৾য়৾৾৾য়ৼৼ৽৸ঽ৾য়৽য়য়৽ঽৢয়৽ঢ়ৣ৽৸**ৢঢ়ৼ৽য়য়৽ৢঢ়ৼঢ়৽ঢ়ৼ৽ঢ়৸৽৽**

न्र-नु-पश्चर-मदे हेर-नु-विषया रोव-ग्री-मर्ज ह व पर-पने न सह । इसकार्टा रे.श्रीर.१ म.इ.च.६.केल.रच. ४६व.ल्यावा हरातिर. **के.**च ७ व.रम्ब थे. थूर. त.रस्ता चलय. ब्रैबय श. धे थे. पे व. थे. चूर्य. चम्दर्दश्चराष्ट्र मान्या वियावायः म्द्रायवायः ग्री-द्ववास्य क्रि-इवरान्ता इताई क्रेन्या विन्वे के साची वि तान्तर नदे हैं या बह्री श्रीमवेर.र्तु.क्र्यार्यम्यः रोरःश्च-रधमः हुःबेर्-धवेः स्रीमयः न्द्रात्र्वे य प पान्ना भैयापदे न्यार्थिया त्राया सुद्र सुद्र हि न्यापा परा हे इत्यः धेव खन्य न्दः अधुव पर्दः न्नादः ङ्गंवः भेवः मुः च्याः पर्द स्ना तह्यान् इत्यान् दाया के या की ता की या के दा या के दा वा या की दा वा या की दा वा या की दा वा या वा या वा या वा प्रिःकेषः स्राप्त विषयः सर् विषयः प्रति विषयः विषय **न्त्र**न्स् श्चेन्-तु-नैद-व-नृद्या नृत्व्य-श्चर-श्चे-श्चवा वरुरा-व-स्वयः है। पद्मवःयः न्दः यश्चा प्रदेः न्देवः तुः व्ययः यन् यञ्च यः यः श्चः यः व्यः वे य रः रु. प ह व . तर. प बि बेब. व बा क्रबा क्री. प व्रि. प्रा में . क्रु क्रवे . त्र से र. र में या बेस.मद.चेर्य.केर.के.स्टर्स्स्य स्था क्रि. वर्ष.के देव स्थय. न्दः। जुलःज्ञुन्-न्यंव-यं-इस्रयःग्री रागुद्र-तेन्यारदितः न्यद्यः सर्वः स नःस्या ७ वे यः नयमः वर्म

स्नित्त स्वर्मा न्या स्वर्मा न्या स्वर्मा स्वरंभ स्

① (ব্যক্ষেত্রমান্ত্রিকান্ত্রের ক্রান্তর্কান্তরের করে।

भ्रम्यान् र्वं यादार्षेट्रायाळेदार्यं दे यात्रायायट्यायाये रहार्ड्वा ₹*লব*েট্রাই'গ্র্ব'রুবাই'ন'ব্দা নগ্র'র্র'নগ্র'রিব'র ধা জ' ळॅल[.]रॅंज्ल एड्व न्यून प्रतान प्रतान के प्रत रेगल विन् न्रेन न्द्रा **कॅल झे केन ये इसल हा येन पर हिन** म्र ग्री: शुःरेनाताः तॅनाताः तापातः विवाताः न्**र्रः प्रते** त्वे त्व्वंनाताः नेरः शेर्तः त्र ^{ह्मन} हे पार्श्वाया ग्रे श्वापाय के त्वापाय दि तु में हू प्यते हा अवस्वा **स** सः पः र्यम्या वया ववा तुः नवरः यह केव देव यें के। म्राज्यक्रियात्राच्यात्राचाञ्चमा स्थला अर् छला वर्षा 454.9K.1 नग्-वेलक्ता नग्नरःस्वालक्षात्रक्षात्रःस्वालक्षात्रःस्वालः रमायाज्ञित ग्री'यारे करार्श्वमा केयानकराया नरा है। बेदा हुन है। नदेः तुःकु*र्-र्*र-हुन्न-न्र-ग्रीःन्। देन्या स्वायाः से न्यायाः विचा न्यायाः न्यायाः विद्याः विष्र-विरा

① (यह क्षेत्र ह्वा प्रवास स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्

श्चिम्म १८२१ म् १८४ व्यक्ष स्थान्त स्थान स्थान

म्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्र व्यान्य व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्य

① (वस नेव वदःवदे न्वेग्यः सुः द्वेयः सन्वः मृग्यः व ग्रह्यः 13)

② (न्यम्प्रवाक्षाक्षेत्रकः वृत्रकः वृत्रवा शहरा

चब्द. श्रुं दे या चे था चब्द. श्रुं दे या चे या चब्द. श्रुं दे या चुं चुं या चुं या

श्ची त्राच्या विकास स्वास्त्र म्या प्राचित्र स्वास्त्र स्वास्त्र

① (र्यम् प्रवास है स हैं र् क हैं न मुर्व १९३)

⁽र्यान्त्राच्याः क्षेत्रः कः क्ष्र्नः व्याः च्याः च्याः

প্তবথ নগ্নী শ. ধু না য়ৣ৾৾ঀ৾৾৾৻৸য়৾৾৾ড়৾৾৾য়ৢয়ৢ৾ঢ়ৢ৾৾৻ঢ়ড়৻৸ঢ়য়৾৾৻ न्तुःनह्न वदः। **"ब्**दःबदेःखदःन्वास्यःतुःचुदःनदेःक्षेदःस्वरः ॷऀज़ ख़ॱॸॸॕढ़ढ़ज़ॕॱॸॱॾॹज़ॱॿॕॗॴॸॱॴॱॖॹॱॸऻॹॖॹॱॸॸ॓ऀॱॸऻऄॿॴ**ग़ॖड़ॱॱॱॱॱ** ग्रैजःधर्-१५ ग्रारः क्षेरः हेर्जाशुः पञ्चन्याया ग्रुवः बह्वे व हैः बदैः न**हेदः** ग्री खिर हॅ निवाधी पहें वार देव सं के ग्री वार्त पर ने वारा विश्वास *ড়-र्--परुरा-पर्व-मर्श्व-कुव-तु-र्-र-पश्च-र-पृ-(पर्व-नू-पर्* पते न हुव।" वेषान्दान् क्षाया वहून पना "..... कुता वदे व हुव प रेव स्.ष्टुं.ब्री.रंटा वे.वंबाक्षणच रह्यान्चलाश्रेटास्युन्या ट्रे-ब बेर् यःदर्ने-वेर्-द्येयःकुषःब्रॅट-ब्रेयःकु-क्ष्वःचश्रवाद**ःयंषः…** मृबि:द्ररण प्रस्वायम्यायम्यायः न्यायः मृत्रायः प्रस्वायम्यः देवः न्यायः <u> गैरा गुरः क्वयः तुः न ग्रायः च ग्रायः महारा मृत्राः यः मुत्रः य</u> वनगः तुराई हेते वि ता बार्षे न परा महत्र करिया करा शेर् न र विर देय.की.रंतताताबाद्रयानर.क्रिंरानपु.श्रेर.पे.पंच याबिरयारेटा। थु.र. यर मुल पदे हीर में द्वे पद्व इबब गुर द्व या मिन विषा "देव" न्दः। नङ्कलानदेः तुकाळेगकावी "अहेकाचुन् कुः कॅर्यकाग्रीः कं নৰি শ্বের নাব অ শের সেন্দেৰ অ নাব অ নার নার নার নার ক্রান্ত করে। ক্রান্ত নার पर्सिषानक्षेत्र. तपु. देश. कुष्. कुष. कु. क्षेत्र. श्रीषा नपु. महिषा प्रमाणि । पर किष इपु-प-र्याचशिकानपुर्याचिताच्चरीयान्तर्वाच्चरान्तरा

म् म मिट्यान्य प्रतालवयाय्। सम्म.क्ष्रु रस्यान्य प्रतालवयाय्याः भ्यान्यत्यान्य प्रतालवयाय्याः भ्यान्यत्यान्य प्रतालवयाय्याः

दे.ज्ञ.क्षर.ब्र्स्टर.वे.वि.ज्ञ.व्य.क्ष.प्र.च.व्य.च्य.च्य.व्य.... गॅरवाराधेवाहे। इयाधरावरा। "भ्रमवादिरायस्यार् ग्रम्बादीय बामरे क्रिन्कु याचे भववारु भविषयाये भविषयाये भविषया विषय वयाश्च वनयाशु स्त्रव र्स् व स्था दे वस्य हेव हिर पर ठ द स्वया ही. हुर-तु-बर्ळेन-ध-कु-ळेब-ध-दिख्यायर-बर्धन्। ने-वयायहुर-वया-पवै पक्ष वे 'न्यु वे 'प्राप्त 'चर'तु 'हे 'हेन्' भ्र 'रॅं या ग्रैय हे व 'झ बया ग्री 'हू रात्र बर्केन् ततुत्व सुन्न राष्ट्रिक ने निव का कन प्रमा वर्ष दिन मॅद्र-अ.केव.संदे.र म्रेट्य.इंचयार्थे.र श्रुचया क्र्याया अक्टर हेव.चेशिया **र्वेर**:ग्वर:य:हे'त्र:य:वेर:गुर:क्'स्व:तु'कैनरानश्चर:म्वर:हे'वेदाव नवाग्री पर क्षेत्र त्यायाया ने परा द्वार तत्त्र तारा कु व्यक्षेत्र क्षेत्र त्र व्या प्राप्त क्षेत्र **डे**बा.हा यहवार्ड्रिस्याबॅरायाळेंदाग्री कुयायाळेंदार्रात्रा कुया ध्वारी *ঀৢ৾৾*ঀ<u>ॱ</u>ॱॻॖऀॱॱदॅवॱतु ॱॡॻऻॺॱय़ॱॺॕॖॱ॔ॸॣॸॱॿॖॖॺॺॱऄॗ॔ॱॺॾ॔ॺॺॱऄॗ॔ॱॱॻॺ**ॸॱऄॗढ़ॱॱ** म्बद्रा "प्रेबेषान्धलामान्द्रा ने व्यावश्वनान्त्रेरान्देर्नराज्वा **इ**न्युक्तमित्री सम्मित्या केत्र में दे ग्वेतर दिराग्वर स्वेत्र है 'येग्वर एतुक बु नर नहें र न्वरा " वेषान्रा "रे वषा र र र र सु ता झर मुद्धमः त्यमः विद्याः अपया तहसः द्विद्यः मूदः सः केदः यदेः म्बेर्विरक्ष्य्यापदि या (धरामेवा) म्यरखेनवामी अस्ति हा सा

① (र्यन्प्रवाक्षेत्रकः क्षृत्रकः वृन्ग्राह्यः 101)

वियानयतायां पाइबयाञ्चन्, प्रतिव्याते। प्रत्नाव्याञ्चयाः व्याप्ताः व्यापताः व्यापत्यः व्यापत्यः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व्यापत्यः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व

यं देर में दः अदे खुद नेवा क्ष कर खंद धदे द ये द द अवा ह अवा मुल वरानु धिरारे मा छ निस्ताले वाले नवाराते क्रिया वे निपर है नवा नहित् वृद्रा "ने व्याध्यवाक्षेत्रेरामा वात्रह्या वर्षे वाक्षेत्रे वृत्रः हुं व्या म म्राज्यानम् म प्राक्षेत्रम् त्रि.पीर. मृथामञ्चा वयाक्षे. क्षेत्रम् मिया कुवे.... ॲरॱ८२ व पदे धे चेट वै वाड रें द्धुट डिवाल द्राय कराय छैर क्षें वा " केष केषामञ्जल यान्दानु न्नद्र ने चंदाहुव के न्यदा दें रातु न्दा के त्रापदे ते तर्रे व्यापन्य स्वाधान के विष्य स्वाधान स्वाधान स्वाधान स्वाधान स्वाधान स्वाधान स्वाधान स्वाधान स्व য়৸য়৻ড়ঀ৾৻য়৻৴ৼ৾৻ৼঽয়৻ঀৢ৴৻ড়৾৸৻৸৻৸য়ৼঀ৻ঀ৾৻য়৸য়৻৸৴৻য়ৢ৴৻ঢ়ৢ৾৾৻ ्रेते ळे :बरतः १,वाववान्**ते केर**ानू :बुरःग्री :बरगः गृबु गःसः रगः न्य**रः :** ८व-५व रट-र-- व वरे है महिला दर्व है न है र दे न में नवा द रॅंद्र-वृत्र वृत्रियाचा वर्गान्य ग्रीहे में द्रिकेंद्र गैता हिर्नन्य या र्रायठवासान्दरः ववाह्य विषास्य सर्वा द्रायाची द्रायाची त्तर्यः इवयः न् धु : न्दः प्रयः ग्री वा वी व्यव रामः या प्रयः प्रदः विवे वा ग्रुदः न् गु में म्द्राम् श्रेष वी के राया त्रामा व्यास्य व्यास्य व्यास्य विषय । स्राम्य विषय विषय विषय विषय विषय विषय

⁽१५० वर्ष वर्ष के अ हैं र करे मिन गर्य 102-104)

भुषानन् षा:भ्रा: क्रेब्र:भ्रेते: नगदः त्यः ब्रुक्तः स्टरः धरः क्रेन्ते । ने 'न्युन्' तहैन हेव इया पर तदेव या गुव बहुव सुन व महारेश परे परि देव हैं इयाय वयवारुन् बहिनायदे दें बळ रायवाया व्यवागुरा ु इरार्द्र र् भु निव्व तुरे द्धाप इव प दर्। वस्त कर् से के वर्ष पर में त्म् 'चरि' वर्षे व'र्थे 'शुरि'व' क्रेंन् 'क्रेश केन 'श्रेव' धरि' क्रुंश न श्रृव 'ध। वेन् ' त्वर्यानी के में वे गु शु के व भेर वह के के उरा व सर महिन हु-पराय पार्वा सद्वित्या भेता वा दे द्वाया याहे वी क्रिया पराष्ट्रित् रुषा र्सुरावरुवाधिरास्यायावी वर्षाया केवायि वर्षा वर्षा स्वता स्वता वर्षे क्षानीयार्षे छ । अस्मया हे 'लु । दाने व 'तु 'चु । तया ने 'छे र स्म वी न र रे श्चिर्-तु-गर्ड-मॅ-गर्डग्-हिर्-मलुग्ना-द-ठिर-पशुर्ना रे-थर-शे उर-त *चॅन्ॱबॅूट्र्याशुःळॅरान्द्रःश्चेन्* श्चै 'च 'च न्व न में 'केब्र' में तै प्व ने न प्य न्व न न बहुद्दर्भः दर्ने : दरः दर्ने : क्षुं : हु : हु न्याः ने गः न्याः । वर्ने : न्याः दर्ने : क्षुं : हु : <u>दॅर-वैग-ठेश-५-१८८-न्नर-दॅर ग्री-गवरा-</u>ङ्ग्रन्धर-गृहश-भेग्य-पर-पर्झ-नःबह्दर् केन् केरा देव पर्दे देश्चर् तु नद् न कन्यर न्या रामायायाया **यदः तुःर्देशः रा**रमादः ङ्कं याय रा**यद् र् तुः ग्**राया वेशः श्चेशः से र् ग्री दे इयतः वः रे। पर्गः ठगः इयतः पर्गतः हे स्त्रूरः ग्रीतः यवः ह्यादे त्वेतः हेवः वामहेन पर चुका नका का तु विवाय की "D विवाय वापान स्मिन की ने **४५**-ग्रे-श्रेन्-तहेद-म्ड-४-देते-२-तुते-ळग-२०-तने-४न द्रा "४५-

पन्नेन्द्रित्त्वाम् प्रत्याः चेत्रः विद्याः व

तुषाञ्चनषान् न्या हु न न स्थाया श्री न ने तह यावा या ने व के में वा दी। ऍषाॱऍॱहुद्रॱन्ररःपदेः न्सुदःळॅष्वायः स्ररःपविदः न्नूः सुरः नुः द्वष्यायदेः र्नेषायाना वि**'व**ातकरापविवाधेना स्रम्या विरायते यात्रात स्रमान के किराः पृ:बुर:वेर:अरत:रेक:क्रॅर:ब्रुक:कुं 'क्रॅं नव:बुर्क:बेरव:बुरेव:.... द्य यर बेथ तर यह्रे त. तर । त्र कि. के. त. लट. वे ब क्र विता सूर्वाया द्र ग्री.विट.ब्रेब्य.पट्र्ब्व.घट.कुब.त्र.प्र.चक्षेत्र.चभ्रे.वर्ष्ट्र.ब्रेब्ट.व्य र्षेण्य विमःसःबैः नमः हिण्याः महिनः वदः विद्वतः विदः। देः मविवः ঽ৾ৼ৴য়ৢ৽য়য়ৼ৾৾ৼ৴৻য়৾য়৻য়৻ড়য়৾৽ড়৽৾ঢ়য়৾৽য়৾য়৸ড়য়৾ঢ়য়ৼ৽য়৾ৼ৻য়৾য়ৼ৽ **६८.अ.**क्षेत्रश्चरःप्र-पञ्चरावनाः नवरःयः क्षेत्रः विद्रायतुनः ग्वरः। बैं-र्वरार्थं क्षाना सरावी हैं वाया वहूर वरा वाया वाया हुरावा "रे वया राष्ट्रव अयासराग्रम्यायायाविमास्त्याव्यायर् अत्रवेषा में रायायर्म द्रद्राचम्दाययाद्रन् विः भ्रूनावद्राम्बुयाचीः ह्रेन्त्वाबुः चुः नायवानीः विदरः संन्यानम्**ते** न्तुराञ्चव महिलाम्बरातु स्वर्मेव पराम्बेर्वा पर्मे र्

① (देव:देव:कूँद:क:वर:देव:)

② (â·དབང་శఠ་གལ་བརྡོད་དེབ་རོས་४५५३)

① (५५न प्राया के स क्रिंट क. मृत्र सरा १०६)

तु : कॅट्रा पर्दे : सुद : प्राप्त : क्रं दे : क्रं हुँ न्यते इवाद हुन न्यान के त्रीत्र हो न्येन क्री किवाया आ ब्रिंग्नह्र ना क्षुवाकुर्याक्ष्यां ना व्यापाक्षा हितापव्यायाया स **बै:वैग**:पदै:रद:पवै**द:ठद**:श:धै:दॅश:पह्द:प:दे:पवैद:हा **यं-कु-श्र**क्षेत्रे अवरः वुष्-श्रक्षेत्र ग्री कर् पः श्रेत् परः श्रुदः पते । कुषः यं। र्धर.मु.कूक्य.लब.पब.पष्.रह्न.त.चंचर.त.चंचर.हे.बर्. ह्या.मी.मार्थ. क्षेत्-ग्रीवागुव-तु-वक्षंत्र-व-विद्यावन्व-विवेश्वम्व-दे व्यामीका नक्षंत्र-वा **देव**-तु-क्रेन्य्यायर-ध्रेव-रे-व्यानि-व्ययसङ्घर-ग्रे**य-व्य**देक्य------त्यर्थः न्रः न्स्रः मी ळ वायः यः भूययः के ळ्नः यान्रः । पयः क्षेत्राचन च्रयः वेदः। वदः नृतदः पयवायः वः नृतः परः च्रूनः पयः नक्ष्वायहेवासराची न्सुदानेता चेवा नेते केटा वि में स के न्दा। **वे** : क्षेत्र: वि : स्वा: स्त्र: चुका: स्वांका: चुन: वि : स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स र्वे ते के म्प्राधाना की मार्ड द्राधाराय मार्थ रे क्र- क्र- ग्रग्य रहा **बर्**त्व व त्र्रेव केव में 'न्य गुर क्यार पर शुर वरा। म्हेम्मे पुद्रित्रावायायरदारेता शुर्षे का त्या मह्त्यायर म्हारा व्याप्ति क्रट.चे.वीर.श्रेव.क्व.तर.पश्चेष.च.केर.थ्र.प्र.च.वेर.पे.श्रेवी लाया पित अयास पर् से स्व जिला पिय के वि र से में से सी हे र्ख्याद कुता मदिः धनः हे 'न्रः | न्दे केर 'नृ शुरुन्रः नमदे 'न्सुर 'हें व क्वराक्ष क निव लया परी पर्छ निवल क्वें निवल क्वें निर्मा क्यां पर निवल क्यां पर निवल क्यां पर निवल क्यां पर निवल क्यां पर बक्क. वि. प्र-मिल. ब्रुष्ट. प्याया मृत्याया क्री. मिला. मृत्या प्रम्या प्रम्या विषया ac.

सर ते या और अव में या गुर स्वर्ष सर व ने रया प क्षेत्। त्रु व्या खर ळेप वि.सम पे. वका नर कहूर नमर है। पर मी बिका में प्राप्त केरिया · ロエ・美の・のまだ こう・は・すべて・たる・む・ちょう う・む・う 著・角 た・ロ の a・ ब्रुं र श्वेत रे भेग र कर रवे रेगाय रव रे वा दे। विर वादे रागाय पता कुपःग्रीयः ध्वाय वयः नदः वृयःग्रीः नध्यः ग्रुदः खुदः दे । देनः य चदःग्रीः तीया विषा ही . कं . चथा मूरा अपुरा चे पुरा ले चा ना है . से . चा वरा वि . पूर्वा वा ता . . . यर व्यापा रेपान धुया रेते । वर्षे प्राची वर्षे । वर्षे प्राची वर्षे । यव वर मा वे निर्वे के निर्वे अप ता सम्मान क्रिंगि, बुर्प के स्थय क्र या में त्यं प्याना वियाना च क्रिंग के में प्रमान में वि पर्वेद.सपु. सं. प्राचियाता संस्था प्रवे तर र्याया व. ঘই-মঞ্চুৰ-ছা देवै श्वर्-तु नगद त्रुंद इसरायस सु देग्य ध विग दर्ग नर देंस निरा दे.लट.स्.के.घपु.ह.धेर.पट्ट.घर.द्रबय.श्री खेयाञ्चय.घ.वी ट्यु. क्रेट्र बीला ब्रॉलाच। दे लाहिं चं त्या पन् दे लायते ब्रव्हा वरा यह दे <u> १ व ल.य.पिय.लश.तय.लय.श्रय.त। १.१९.श्र.</u> मंद्रानं संस्थातह्य. द्र-क्ट्रिट्य-शु-क्षेत्रवाय-वय-क्षेत्रवाय-तप्त-त्र-प्त-व्य-प्त-क्ष्य-प्त-क्ष्य-प्त-क्ष्य-प्त-प्त-क्ष्य-प्त-प्त-ॱॾॣॸॺॱॺॖॖॸऀॺॱॸॗॱढ़ॸॕॸॱॸॸॱॿॖॱॸॱऀॿ**ढ़ॕऻॎॱऻढ़ढ़ॱॸॗॱॸॎॸॱ**ॾॆढ़ॱय़ॱॿऀॸ न्हें दंर वर्षाया प्रति प्रवास स्वाधि व त्या तर्षा व विष् भ.से.चपु.ह.धेर.यूर.खेबा.**३**थ.पश्चेषात्र्री "① खेथ.चयपाच. सेर. नगतः व्रेंब्र.व्रं व्रेंवि हे न्द्र। व्याया क्षेत्र क्षेत्र व्रेंवि व्याप्त व्रेंवि व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्य

① (和"万中天"美可有"中美气"之中 芒柯"457—459)

पॅर् र्रम् मी न्यम् शै स् पक्क न्राप्त करा देवा विवास क्रुंता वर्षा वर्षा वर्षा वयात्व, रवर्यावर.कु.च.क्द्र.चग्रीया.कु.वर्च, श्चेर.क्षेत्र.क्ष्या.व्रा तक्षव्यत्तरम् नेत्रम् द्वर्ष्यं विष्यत्तर्भः न्द्रम् वेर्द्रमे विष्यः स्वायामः मनुरःविरः पर्वरता वृता कुः यरः विद्। वृत्रा वृत्रः वृतः पुता सुता सुता कॅरामिनवी वर्षेरासः इंराख्या ई.समा हिरायारायम ह्या मुश्चयः स्वायः श्वः विश्वः विः स्वाः विश्वः यम्यः य स्वः विष्यः श्वः य स्वः विष्यः श्वः य स्वः ब्रूबायाक्षितावाच्याच्याच्याच्याः । ह्रियाच्या व्यापायाच्या गुरः र्रे न बरः न स्वादहेवा गुः न सुरः विषा करः य ठरः रे अव रः वि सः । **७८.६८.२.५४.५४.**५४.५५५.१५५ वर्षायात्रेत्रस्ट.५४० करात्रे. क्रैरामृ बुरान्स। कु न्यं दान्यं कृ सं खेला सं सं सि वरे है । श्रेन्यः र्वन-र्र-पठराहेरायरेर-रु-वॅब-यर्न-ज्रुटा इं-पनर-पहन तह्रवावी के विव कर् परे डि. केर सेर सेर क्रिया लाह्रवावर में जी तार विराम য়ৢ৾ঀ৾৶৻ঽয়৻য়ৄয়৻৸ঀৣ৴ৠ৴৻য়ঀয়ড়ৢঀ৻৸ৼ৴য়ঢ়ৢঀ৻৸ৼ৴৻ঀ৻য়ৢ৻৴৸ৼ৻৻৻৻৻

द्र-विट-कुष्य-प-द्र-। दश्-विदे-विदे-कुर्-ईन्ष-व्यक्तिकु-द्रव्यक्त-क्र-५६े.चदुः चवयाशुः ५ में रः धरः चवे रः वया हूः च्चः वा चग्राय दुः च्चः चनर-र्धतार्थेर-र्दा श्रुर-र्मे.की श्रे.कदे.क.चठकाईर-र्-न्वर. न्द्रात्रावान् वीवायात्रायाः केवायिते तुषापविवाक्षयात्रीत् वावतात्राः क्ष्रा न्ने जःपतेः ग्रेन: ग्रेन्य त्यादः यहाः म्हाः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्य ख्रनःबहुन में 'न'र्डबान हु-हुन'र्धेन्'सदे 'यहत'ख-न्म्। कु-न्मःबद **ह**. प्र-४्या. मे. लुब. ५ च्या. प्रवेश चित्र च्या. ब्रुयः ध्रुं न्यायः अक्रवाः तुः न्वोः न्यदेः ब्रेट्र वीः कुतः न्याः । यः ह्रेटः वीः য়ৢ৻য়য়ড়ৢ৾৾ঀৼয়৾য়ৢ৽৸ৼয়ৼয়৾৾ঀ৾৽য়য়য়৽ঽৼ৽য়ঢ়ৢ৾ঀ৽য়৽৸ৼ৾৽ৡ৽৴৽ঢ়ৢ৽৸ঽ৽ नेत्रा:धनाः क्रेवः अरःय। ५५०० वर्षः स्वायः श्रीः नवरः श्री यः म≡रः यॅं-द्रम्याः तुः अद्रः यः द्रदः यह का सुवाः यः युवाः तुः यहे वा की दः वा के द यदाश्चा के नदे प्रवाहन के निष्या के स्थान के स् पड्ययः पर्दः हिन्यः प्रतः कुरायः नव्दः पराः ने रः छन्यः ग्रीः अ**र्छन् : र्यद** बहरर्न्नर्नरान्द्रर्भित्र वृत्यं हु विद्याप्तरान्य विद्याप्तरा त्विन्ना क्षेत्र ने हेला शु छित्र व तैया व वा न्युत्र ग्रात्वा व र्ष न मुन् प्या बक्षाच्यायाळेका श्रीन् नाहेका गारी सुनाका समावा श्रीन् पाने कारी वाह्म न स्वया लट.पर्. बयार ध. क्ष्येया सर क्षटा

① (र्यन्प्रवस्त्रे अः ह्रेर् कः द्रेन् ग्रह्तः १०१)

स्ट. च इबस प्रवेट. प्रीय सव. पर्. ही विश्वास्तान म्हित्य वय. हर ही वाय. प्राप्त व्याहर ही व्याहर स्वाहर स्

स्ति द्रः "तह अन् च द्रान्त् व स्व व क्ष्या व क

① (ব্যন্ত্রাজী, মার্ট্র্কের র্ন্ত্রার্থান্ত্রা

② (न्यन नलवाक्ने.वाक्नं न.क.भून.वार्य. 126)

ळटळाळु: ह्रवायायान्वे: ह्यूटारी: न्ट्रेयाचें : आट: न्व यर: नवेयाने। क्षः न्दः चरुलः यदेः यहे व हे दाग्री हितः , वरा न्या पराग्रुरः यदे छे । हे न्याः विक.श. वृत् श्रेच. हरा सकूर हीव हैया र भूवा रूटा तवया लेपा स्वया कटा बदैः गुःश्चेम मैं विनया सने म्राल विनदः स्वा नः न मनः स्वा नः हे न्। " 1 **ठेशायदिन प्रत्या प बालन्। विश्वेत्र ही न्यम हिन्य यह न वमा** न्रायाच स्रावा प्राहेनान्त्रायदे ह्या ब बहुना महेन स्वाय महेना नपु-श्चर थे. त्रे १ छुप श्चराला नेया की श्रीय कर या नेया श्वर श्वर हारा । रत्त्रक्षेत्ररावित्कुरावित्कुरावित्वर्षा द्रष्टर्तित्वे क्रित्यूर बुर-ग्रेल-देते-ग्र-भ्रेग-लु-क्षेत्र-श्रे-घन-फु-घगत-त्रंब-४-इ-बति-हे- महिल-गा डेर महिंदा नवद्यद्र है। इस एट्रेक्ट चन ख्रालय वहेंबर नपु: र्गुल ११व रटः के. बुदु: बङ्गरा लेला ११वी. लाग हैरः ब्रु दे न हेदः लेवः म्न.प्र.प्र.पश्चराङ्गान्द्रिरावशान्त्रात्ते । यहेन वाह्रम वाहरा बेन्याक्षेत्रावृत्त्युः न्दा प्रकेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्रा न्द्रीयः परिः मृह्वः दवेनवः भेगा छ्रवः दतु ग या देवे खत् ह्रे गवः पहिंदा वदः। "दे देर.पह्माक्षेत्र इयायर. रट्रेव.त. कुव.त्र.कुवयाग्री।व.प्र.च हीर. यप्र. **ळ.**वेर.ज.थ्यंथयः र्'ट.रट. र'ट.पर्ये.वे.यपु.प्रज्ञातः क्ष्यंयः क्ष्यंयः क्ष्रं ल्य-मद्र-न्वयाश्च-नेयानवेय-तु-स्यास्यास्य-ह्र-ह्र्य-प न्ना अव-अव

① (बर्-बावर-विचव हुट-वे-छुट-व चह्र-च-ईल-बेर् ह्व-वे-स्व---के-छुन्व-चर-रेव-स्व-19)

ट्रेम्यक्तियःश्वेदःश्वेयःसःन्दः। स्थितःशुः भीवः विद्याः विद्

① (部、てって、青河町 口差て えっ 芒町・480-481)

धनतः ग्री-नत्रवः ञ्चे-चे-चे**-च-धन-देन-देन-व-द-ग्रीकः** न**न**न ध-१-स्रेग-५, बर्दव विद्रा दे थर दे केर मू हुर दर में क र दे हुव वर या किया तुषःवषः वज्ञुरः वर्षरः ङ्गॅर् खि**यांग्रे: द्रवार् धुरः वरः** वङ्ग्रुरः वरे ज्ञरः **ः** ๆดิ.र्ट.र्थम.प्रवराग्री.वेशवाज्ञेट.प्रवट.त्र.लू.प्रेट्.प्रेट.प्र **४**੶য়८'৸য়৽ড়৸য়ৢ৾৻য়ৣ৽ৡ৽য়ৢয়য়৽ড়য়৽৸য়৾ঢ়৴য়য়ৼয়য়৽য়ৢ**ৼ৽৽ ग्वर्**क्ट्राबर्त्युकाष्ट्रवार्त्राच्याः संस्थान्याः संस्थान्याः संस्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्य <u>ব্দা</u> ইব'ভব্'ন্ঠ্দ'থ'ই'থ'ন্ট্ৰ''প্ৰান্<u>দ্ৰদ'ন্ত্ৰ</u>'ৰ্ড'ট্ৰুক'ট্ৰ' প্ৰন্থ क्वेदःलयःनरःश्रमयःयःगदयःश्रेद्ःग्विरःग्रेक्टःश्चेदःसगदःयव्याद्वरःग्रेदः द्वाना भुगता केवा दहेवा की व्यापारी दियेता वा दे हिंदा में दाय दे प्रमाता बर्मवासदेःषावाम्बाषयामवा मगदाञ्चेवामविवामवरातुः पञ्चार्मे र्मेवा मदे तुर मञ्चर स्वराज्य या देवा विवादी सं स्वरि हे तदी देवा राया वेरा यहें वा स्वापा भन्तुरा स्वारा स्वापा स्वा न्नवः व्वादः स्टार्मित्र न्ववः स्टितः स्वावार्ष्यं वाताः स्वावार्षे वाताः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः क्रे.म.र्माक्षे.म.प्यापहार क्रेव्या स्थापार विष्या प्राप्त विष्या प्राप्त विष्या विष्या विषय विषय विषय विषय विषय **देश**:प. १५: पारा नेया वाया वाया स्तार्थ : ৼৢ৽ঢ়৽ৼৢ৽৴য়ৢ৽৻৽৻য়ৢঢ়৽৻৽৾য়ৢ৽য়য়৽য়ঢ়৽য়ঢ়য়৽ঢ়৽য়ঢ়য়৽য়ঢ়য়৽৽৽৽

① (â·དབང་శོགས་བརྡོད་དེབ་རོས་ 454)

क्दर:विलाग्री:ब्राईर:न्ध्रत:विलायधराय रात्वेला**ळेव: यॅ.वेश**नदे श्रॅर..... क्ठर बूर्य भुः कु क्रियाम् बदा गुदा भुषान् वे केरापू व्युत्र तर्षा र्ने न तमे न तम् । ने न ति व न ति कि स न न से स स स त स तम त हु म हे स हॅमलाम**्राम्या "तुला**म्बदालेग व अप्यान्दार्धा ह्यारिकार्य दे छ ब्रियायार्थ्यम्यासदे भ्रिः में ग्रुः श्रुः ठवा रदः वर्षेव श्रे द्वारा ग्रुः स्वयार्थः चटात्रिरापदे वटाचन ग्री च नाम हाटा है मेवा यह द केवा या ह वारा वयानु नार्दा श्रामार्दा मञ्जूषय सरा हेर् सदी मृत्या इया पाञ्च क्रमाया चुरायाया ने द्राया विद्याया ने द्राया चित्राया चे द्राया चित्राया चे प्र न् चुर्या धर क्षे स्व ग्री ग्रं र हिर छेव ये व तर्र तर्र व व व व व ৡ৾ঢ়য়৻ঀয়ৢ৴৻ঀৢঀ৻য়ৢয়৻য়য়য়য়য়৻য়য়৻য়ৢয়৻৸ৼ৻ৼ৾৽য়য়৸ঢ়ঀ৾ঀ৻ঢ়ৢ৽৽৽৽৽ व्ययात्यायात्राचे क्षानग्रत्यायायाया व्यवस्य स्वान्त्राच्या हे न्यु । प्राया **ୢୠ**ॱಹ੶ঀଵ৻ঽয়৻৸ৼ৾ৠৼ৾৻৸ড়৻ৠৼ৻ঢ়ৢ৾ৼ৻৸ঽ৸৾ঢ়ৼঢ়৻ঀ৸য়৻ৠ৾৸৻য়ৼৼ र्रायातुः बराञ्चरायवायने सुवा श्री क्ष्रं बक्षा धराव विवक्षा वकार्यरा । षयःयः इत्रयः ८८ वर्षः प्रतः परः ५५ क्षाः वर्षः प्रतः द्वाः वर्षः । " 🛈 म्रायाना इयान विषा पुरवासियाय बहुवाद्गानव या पुरवा वर **দ্ব ন্দ্ৰে**ল স্ত্ৰুন-শ্ৰুম-খ্ৰী-স্কুন-দ্বে স্ত্ৰুশ্ব-শৃদ্ধন্ত ন্তৰ্-------वि.त.क्षुपु.चयापावेब.ग्री.पह्न्यःग्रेच.स्वयातान्त्रेयःपन्ते. 551

① (高·云芍云·黄河内·芍美云·芍芍·芍柯·442)

न्द्र-ह्र-ह्रेग-न्द्र-त्रादियाम-दिग्-नह्र-पासर्डेद्र-ह्रिया गववः लट. र्षे. पतु. भे. या. व्या. क्षे. व्या. व रह्मायाः भृष्ठेरः नावरः नदेः कुलः नदेः न्तुः दिरः युः कंरः नुः गुमायाः यः **ह**याः परः कुलापायवापरे तेवल पन् ह्यारं में स्वी त्व व सवल कुरा। न्दे **&ে:**মু:ধ্ব:ন্দ:ĕ:ড়:प:শ্*বী*অ'নইজি'বৃআনু:এবি'মন্ব্-থম:ঙ্গুৰ্-জিদ**: •** वैषा हे 'न्ना क्षा कुर श्रीना वेषा पदी न्वेषा पना न्वरा श्री राष्ट्रीन पहुना श्री देवै क्ष्म शे.पश्यान्यवायाश्वयान्म जुन् ग्राष्ट्रनाञ्चन वयान्ये पतुवाः " नकुः क्षेत्राच्यान्यवादह्वाव च्रवाभेटा। नेते कुः वर्षवापटायवानने : येत्रच १८ श्रीर पर्या द्र वा में अस्व श्रुप् श्री अववा पर्येत्र म्बुबः चुलः यः दे रः बळे र्ष्ट्वः कुतः चुन् र र्वावलः वताः शुरः यः न्रः ग्वावलः यः … रदामाष्ट्रमा है या दिन् पत्वा गुरा र्वेदाया दे केटा रावा या ववता नश्ची-वी-श्वीद्वार भ्रेषा-क्ष्याला सराग् वालाया व बन्। क्षेन्तर मुंगला महर्नुतर्दिन क्रिया मही "नगदेः नग्रमः ज्ञॅब छेवः **४:८म.श्र.बह्य.प**ष्ट्राय्य.मृष्ट्री-मृष्ट्याची-यन्त्री-यामहेव-वयाचुट्यायनः • म्बर्स "क्षेत्र प्रिन् मान्य मुन्द नेया मन कुरा वी रे रण वै न्तुलान्दरनी नगात स्वा स्वराधी समुदा मात हुरा नदी हु हो दा व वा बर्द्रवर्द्धवर्श्वर्भे न्द्रो बङ्कदर्भवर देव र वर्षेत्र र भवा वर्षेत्र स्वर्ष कर् वै नहर् गुरु वे लर् हा

तह्नित ग्रे-भे-ने-नु-अ-मॅन्-तनम्ब-ह्युदै-रे-लु-भेद-वेत-य-ने-तन्-न्तम ॱॾॣॸॺॱॻॖऀॱ**ॾऀ**ॸॱॱॿॕॸॱॺढ़ऀॱड़ॗॸॱॸॗॖॱॶॺॱॸॱॸॸॱऻॗॱॱॱॱॸॕक़ॱक़ॗढ़ॱॸ॓ढ़ऀॱढ़ॸॱॸॗॱ त्यतः मा अप क्षा भारा त्रमे तारा हिता है ता है निष्य वा मा मे का क्षा मा कि ता में का कि ता में का कि ता में क ढ़ऀ॔ऀॻॱॻॖॆॸॖॱय़**ॸॱक़ॕ॔ॸॱ**ख़ॱॶॖॸॱग़ॖ॓**ॺ**ॱॻॖऀ॑ॺॱॠॕॸॱढ़ॎ॓ॱख़य़ॱय़ॱढ़॓ॺॱय़ढ़ऀॱख़॔ॱ*ज़*ॱढ़ऀॺऻॱ**ॱॱ** "ने न्या म्रावे अयाया यदा छे राष्ट्रया यरा करा या या न्यार हिन् छेना য়৾৽য়৽য়৾৽ঀয়৽য়৽য়ৼ৽ঀ৾ঢ়ৼ৽য়য়৽য়য়ঀয়৽ৼৼ৽য়ড়য়৽ঢ়৽য়য়ৢ৽ঀয়৽য়ৢ৽য়ৢ৽য়ৼ श्चेतायराम्भेन्यायाया व्यवायान्याचे व्यवस्थित्याच्या ग्रीया श्चि बर्-तु-बुर-व-विग-ब्रे-दू-लदे-ब्र-बद-जन-तु-बुर-यल ल्। रे-जर ब्रिन-য়ৢয়৽ঢ়ৄ৽য়৾৾ঀ য়ৢ৽য়৾৾ঀ ঀঢ়য়৽ঀয়ৢ৾৾৾ৼ৽ঀ৾ৢয়৽ঢ়য়ৢৼ৽ঢ়ৢ৽৽য়ৼ৽য়য়৽য়য়৽৽৽৽৽ इ.च.से.ची.चे.चं.प्यानपुरक्षात्राक्षे.से.चे.चं.प्यानपुरक्षात्रे नु:बुन्-य:य:मुन्ना मुलाव्य क्रेक्-यंदे:बुन्-र्न्रः मु-चु-व य:यह्न यर य हेन् हेन रूट हेन् श्रेयान्तुट त्राह्य त्या त्राह्य व व व व व हूं .५.वे. च तव .५.४ तर र व . व व . प व व . प व व . प व . व व . व व . व व . व व . व व . व व . व व . यातार्थम्य हे न्सुराञ्च्यान्य वियामेयाम् वियात्राक्षाः अञ्चतास्य प्रमान बिद धवःपःवःधिवःधरःग्रह्मवःधवैःन् चेवःङ्घेरःग्रीःधिःगेःवन्गः घॅः छेवः**घँः** त्यत्त्वात्राचरात्राचेत्रकेष वेत्रात्यत्यात्रव्यवा गुरुषात्राच्ये वार्षात्राव्ये व्या नःषेत्रःवेत्रःश्चःनः न्देः सद नेदः धेतः कर्षनः स्वः स्वः स्वः । स्वः स्वः स्वः <u>न्सुरॱ</u>ह्चॅबॱह्यायान्ययायाङ्गॅन् ग्रुचेना तुःन्ग्रान्यः याञ्चयाव्यवनः ग्रुवाः नम् नामा के ब्रास्टि न ना वा विवाया न चंद्रा चे हैं न मा विवाय दे व लक्षातु की जुना भी जिन्दा में निष्य मारा निष्य मारा निष्य की मारा निष्य

1727 वॅर्-रवाञ्चरावर्रुःग्वेषायदे से स्थाप्यरा रस्याप्रदा नगतः र्वेदः नरः ग्रीः तगदः ज्ञानेः र्वेदः दरः हेर छेरः ग्रूनः छेरः । अनलः नेदेः इ.थ.४८.४. बर्स्व.सप्त.क्रंचथारीचयाग्री.चर्डर.क्र्य.ट्र.लटाराज्ञा ह्यूर. मुशुयायायवार्धेन् ग्रीः इयाया यळेवा यमानहेवा वा स्वादि हिला न्दे: करापु सुरायार्ने वायावाइ वाताञ्चे वार्मे यायदे वायराय स्थारा परायरा ।।।। नहराउटा दिरावी क्षेत्रक्षेत्रक के.नाने नवा खेन की. क्षेत्र स षु-तुत्र-ष्र-ष्-वदे-न्द्र-वद्य-यद्य-यद्य-न्द्र-द्य------ न्स्- चियासरामहेवामया द्वां व्याप्त स्वा **स्.स.य.यु.** श्चिरःशुर∙ख़्वॱयःविषःधेव,ऋष्वराष्ट्र-ररःषे;ञ्च अःश्चु यः ऋषेरे ष्वेति याञ्च र **৺**দ্-ঘ-ৰ-দ্-অৰ্ সন্ত্ৰী-অৰ্-ৰেই স-ঘৰ্ব-ৰ্ষা-শ্লন্মনম-দ্-দ্-মূৰ্-ৰ্মা-দূ-অৰী-ন্ৰ बाबळॅग्न्दः नृतिकेदानू सुरायाने विषाग्विकाम् अन्तु त्याँ के गामतेः

①(和"万円下等可称"中美万"元中"、486—487)

म्मायान्य स्वायाः वितासः म्मायाः स्वायः स्वयः स्वय

पनिष्यय स र्रः क्ष्याप्रिष्ययः सर्यः स्वाच्या धरः स्वाचा सर्वः सर्वः स्वाचा सर्वे । स बर्गु म्र वु : भेग : सु तः नदे : वृहः । वृहः या न द्वा ये : केव : ये तः दि : केहः नू हुराय युरावीका अर्दे**वा धरावी हरका पर्देश हैं ए प्रा**या विकायी हर वा पर करा मञ्जूषाम न्राक्रमशा केषा मन् पुरस्का मृत्रा त्या न्या निवास केषा त्रिन: न्दः च **ठ राधः नेदः वेदा दिरः नवै**ः गृ**दशः हुं यः** हुं रावने विदः । ८.पिशः श्चिरः चेश्वरानी था.ने. मृथा चेथा वा च भ्रेंगाग्रार्ग, चुन्द्राम्बर्ग्यसम्बर्गन्यस्य प्रवास्त्राच्या । "न्ये निर्मा मॅं के व में ते त्युर त्यार ह्या न न्रा हु विव न न देर ति इ रे ता तु . **रॅॅं व**.५२, श्चिम.स्य.श्चय.च। श्चे.वय.प्र.म.५४ थ. थ्रे. १८ थ्रे. न्वराध्रायराधुरामान्त्राप्तिकेमान्म। वर्तिःहै। देतेः हुन्यः खुःमार्ने म्याःगावाळ्या विकास स्वास्त्र विकास स्वास्त्र विकास स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र न्द्रेन् चॅरात्युरामाने कृतास्यात्र प्रति प्रति क्षेत्र वे त्रे त्या व्यापान विद्या

দ্। "এপ্ৰ-ন্ৰথন্যৰ ৰ্বৰ্ভ্ৰ ব্ৰাশ্ৰুম-মগ্ৰুম্ব-শ্ৰুব্- দু-বু-ছ্ৰা---

न्द्रभ्राक्षर्वेदेर्द्राञ्च हुन्य पदे (वर्षे विषय सुद्रावह्र वराञ्च निविद्यः स्रुप्तः स्रुप्तः केट्राची मिन्ने स्रियः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्त ह्यरान्द्रा यकारो दार्यदाया सुदा खुकायाया ह्यराराहदे हैं। र्वायाप्तम् तः व्रेवः द्वायाक्ष्वः तुः ५ व्रेवायाः श्रेपयाः व्यायः श्रेषः **यदः** य क्रा क्षां लेपा विषा क्री. पथा है. पहें ये. त. र. सूरे. तपुर ये. ये ये. ता हूं. य वर. क्षवः बुरः क्षटः वदा धिः वे : देटः क्षं : बेवा : दृते : क्षेटः खू : बुरः व्यः व द्वारा व व व । व व है। ने . यः ने ने नव वका है न न से न र से न र ने से न र न हे र में कर न है र न न है र न न है र न है <u>ਜ਼</u>ੑ੶ਜ਼ਜ਼ਜ਼੶ਖ਼ੑੑੑਜ਼੶ਜ਼ਜ਼੶ਜ਼ਜ਼੶ਜ਼ੑਫ਼੶**ਫ਼ਜ਼੶**ਜ਼ੵ੶ਜ਼ੵਜ਼੶ਖ਼ੑਜ਼੶ਖ਼ੑਜ਼੶ਜ਼ੵ੶ਜ਼ੵ੶ਜ਼ੑਜ਼੶**ੑ**੶੶ <u> न्तु-श्च-वर्ण न्तुर-श्च-वर्ण र-ष्ट्-श्च-वन्दर-। यर्णाले-र-ष्ट्-प</u> चपु.ह्.ब्रैर.र.च.ल.धूबयानयानु.२च चक्चेच.क्रे.बट. स्राप्तायाया बुट-तु-नेग-य-नट-दर्बन्य-य-स्नावा-विकाय-वा न्दे केर मेवा त्वन् नहिन मुन् क्षेत्र मुन् स्वयः क्षेत्र स्वयः मुन् स्वयः मुन् स्वयः मुन्। बेद्-धर-पश्च द्व-धरा ह्व वा स्वर्ण ८.पिश श्चर.रेथंबाग्री.बेल्ब.चेथ.रेट.चेविट.जय.त.बट.न्थ. रंपु.कुट.चु. विषय स्या हेयारा अरासारा राज्यायरा नईवा समा विराधी सराहि सया ही

① (â·དབང་རྡོགས་བརྡོད་དེབ་ངོས་५२५)

ন অব্ ন' ব্যাধান্ত, ব্যাহ্র হোনা প্রথা প্রধানী প্রী ব্রাহার ব্যাহ্র ক্রা मह्मित्रम् । विष्यान्य न्या न्या न्या न्या न्या निष्य न्या निष्य न्या निष्य न्या निष्य न्या निष्य निष् न्रान्ता हुताथेन वित्रक्षानायतान्यन्ता वित्रास्य मंव्रामा स्वराम **केट-के-**पल् न्यान्यास्य रूप्त स्वयान्यान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वया नक्षेत्रःवयाञ्चयाळे द्धारा ग्रांत्रायरा ग्रीत्। या पहरा । दे ग्रीह्या पहे ग्राय वैदाञ्चवावबाद्वादव्यं श्रेषालु पाहै क्षेत्रात्वेव उदाक्षेदाहे खु रुव वेदा मर-दबर-विवेद छ्वाय-दहः। दे-दब्य-ग्रुट-छ्रेट-य-व दट-सुव क्युय-ब्रीट-ध-न्ध्र-चरुषान्य छूर-घन्ट-क्षे-न्दे केट-वी-ध्वाया ग्रॅवाया व्या **छ.** व्याप्य. त. र. र. र. प्र. या केया ग्री. श्री या स्था प्र. भुद्रि-ध-घर-ध-दर्ग चग्र-भैकाद्यक राच। भ्रु-विद्र-ध-स्विक क्षेत्र-**बद्धः म् न्वराध्यः न्युरः ऋषायः त**्युयः खः क्षेत्रः खरः बद्धः निवादः स्वरः सः ः क्ष्मते हे क्षर मुहर्भर महरा रे महेन रहता हिला रूप महिला म्राप्त्रच्यायायायम् विचाञ्चरान्द्रयान्द्रयानञ्जयाकृताङ्गाः च राञ्चन्यार्थः न्द्रायते स्वार्धि क्ष्या दर्ध इस्राया स्वा क्षया स्वार्थ स्वार्थ । ष्ट्रेनरा:न्ट:बुराय:वृद:बॅर:बुरा:बुरा:बुरावर:क्राय:र:क्राय:वा के.क्रेय.परीयाडीर.क्रीरास्त्रेय तपुःर्यस्याप्येयाष्ट्रेयाचेयाताक्षायावया स्टः.... न्विताशुः में दायदे प्रया न रातु न्दे केटान सुरान्यर न्यंन न क्टानदे न्वराद्ध्याद्वरायाद्वर्ग रवारोदान्य्यं ग्राश्चरान्चेत्रानाः स्त्रुवार्षे स्तर न्तरः तर्वत् श्रु ताय रामेद्राया स्वत्या की यह दाया वर्षे क्षे.चयानयवानविनयावचाम्याच्यानवटानद्यातकराञ्चानविषाक्षी **र्र्**स्

क्रेव्रायंदे विनयः हुरः दुः क्रेयाः नवा यात्रेयः क्रंत् अरतः देयाः क्रंतः याद्या न्दर्षितानी के अटा नश्चरा श्वरा निकारी र ने कि अवा का न्यमायमाञ्चेनान्या महायायारे विमासान्यतार् मेन् हियागी साम पञ्चर^भष्टे स्त्रून् छेदः रेवः प्रवेदः धरः र्स् यः छेनः न्वः वेदः रेदः छदः नहावः सं *ऍ८:च्रेज:पदे:पृंक्:प्रेय:चव:देय:वदःपञ्जा:क्रे:हेव:वाशुव:ग्रेय:चु:ख्रुव:ख्रूर:::* पहना श्रे ता. ब्रायन स्वास्त्र का के ता विषय पह स्वास्त्र के ता विषय प्रमा स्वास्त्र के ता विषय पठर् रे क्षेत्र गृबेतायापद्यः कः श्रुट्र दर्देश्यः संग्रतायायाया स्वायाने : . रैरल स्रवल ग्रैल मुनेगल बेद पल र तुल र सुर इसल ग्रैल हे ल स कॅर् परः धैरः येषाः नृषेषः चुरः। ने वषः षः सः वः वेनः वषः वरः यनः देवः **ळेद**ॱहें दे क्षेत्र गृंदेताशु गृंदेता है ता है ता हो ता वार्ष क्ष्यता क गृता शु क्रुंद्र ... रा.बंबर.के। अंथानगुळानिष्य.रंटाव्यूर.स्वा.श्चेता.के.रंथा.श्चेता.के. दशन्यत्रया गुरुषात्पाच हुन्।या क्षेत्रिन्दिर देते दे हे वावा शुरिया । स्रा त्रीताता इष्या कु. ६. ५८. पुष्टा इत्राया स्वाया वया पर्वा कु. पहारा विषा र्गारातुः बॅर्'यदेः नृर्वराष्ट्रेर्णाग्रेः नृक्षणः नृयं वृःखरः व्यः प्रदः। त्यन्वन् नष्ट्रताव्याम् इवकानु रामन् नायते श्रीता विवास विवास गुरु-बु-अप्नल-बै-नर्बेन्-पविव-तु-ने-प्य विवाधिर-न्वेतारा धेन्-प्रलः दें महिव चुरा ततु म र दे रे देवा मरण इवाय शुर तर्शे हेया नरा सेवा वानुका " अनव ने ते क्षे के हिन्न् ने व्यान्य व नियम व नु । भून पर निराम के व

देवा बुःवान राञ्चर् काद्देवा स्वनवा बुःवानवा विः मृद्देवा वा मृत्रान्य साम *वै-दे-*तस्याव्ययःहेराशुःश्लेषयावयाद्यम् । दे-वयानेवाग्रीयार्श्वःमरः तम् न्यं व ल हे ता मूं व न झुता न व द न न मिंदा में व न र्षन् च मुन्न न् देन न् ने हें र चुरे निया से द न न निया हिंद हो चुर รู ชิกสาทุนากๆ สารัฐ รารานนิ ๕ รายา ๆ ผญาน ปี รุ ซ สาผาา E.galada≝न्या र्ट्यान्यनापरयारीयात्राच्यात्राच्यात्राच्याः स्ता इंग्या लट.पत्र. १.चयाय. व्याप्त. व्याप्त. व्याप्त. व्याप्त. व्याप्त. व्याप्त. **१८.।** १८ल.यर.क्रय.च२४.च्ये.क्रय.५.च४.क्रट.च्यं च०य.विया.त. ल.पर्देच <u>इ</u>ट.र्चेष.<u>इट.र्नू</u> थे.थ.के.प.धु.ट.पिश.ब्रै र. गेशिश.ग्रे. ग्रंथ. किंद्रलःद्रवः देवतः विवाधिवः श्रृयतः यः तुः बृद्रेतः गाः यञ्जरः श्रेः अद्रयः **ः** रैकाग्री मर्डें दाररामञ्जूष दे विकास म्याराधेनका स्नाम धारा दे दे दर्जे । न्यवाख्री दिन्दा विवास सम्बन्ध निवास के बन्ध । यवर धेर् केया हे 'सं स् प्रति प्रमात प्रति व श्रुप हुते र्स **多の。3**下、1 चरुतःसुर्या विरामहेतायेम्बासराम्म् ताव्यान्देते केराना सुरामीः न्डेन्यं न्न्दर्वि चाळे नह न नगः भैता सद्दर्शः क्रॅरः न्युसः ग्रुः Bच.ये.त्र.त्र.च.रं.ल.र्ञ.क्षेत्र.क्य.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र

य्रच्याकी. रच्याच दित्र द्वाय प्रति विद्यान्त्र की या की या

नर-देर वश्वार्थ-क्ष्वण हीर-संग्रायदे क्री र-य- बर-य- दर्भ ही: | विर.स.स.स्वायासदे। न्सुरावीया कुत्राहे दे वर्षवाहेरा पत्राचरा वाचर। श्चे देर.च.व जिंश त.च.चर-श्चेर य.चयायम्, वियाने .चिया.चर-देवया.... भूर. मु.र सिर. क्र्याया यदर. रे. परे याया पर प्रायया क्रिया हे या या या मदर वित ग्री-र्यं व रेगका तर्रार है न नहेव तर्हे व वें जेंब र्रा हि न्गरामा न्यतः मा वेष सामरामा माष्ट्रसा माष्ट्रसा स्थान विरा क्रिंट.ट.च श्वय. बोबेया वट. श्वट.त. यूबेय. क्षेट. ट्वा. बी. दुबेया र्मः। तुःयः बै्मः न्यं वः न्मः यक्षः यवः ग्रंमः न्युमः विनः ने । यः ने । यः विरादहरारम्यायम् विषयाद्यापा विषयाद्या विषया विषयाद्या विषयाद्या विषयाद्या विषयाद्या विषयाद्या विषयाद्या विषया विषयाद्या विषया विषयाद्या विषया विषया विषयाद्या विषया विषया विषया विषयाद्या विषया विषया विषया व त्रुं र व्यात्वर त्वा त्वा वेर्यात्यत् वृत्यः है । यव हुव वे वे स्या ग्रुटा न्दा पक्षा विरायरा जीया समाक्षेत्रा या विरास्त्र रायवरा गर्यरा र सिरानी बे:ह्ल-न्दः अनेतु ह्नाकानका छेर- प्रवेद छ -न्वेक छुटा ने दे हिल *ॱ*दब्*ष*ं ४.क्ष. वर्ष. हे.र.ख. ०%म् . स्यान्या म्ह्रार क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र ं क्स्पाश्युं न्तृत्वे चेत्रा न्**न्त्रात्वे तास्य त्यात्वे तास्य स्वरावे नया ग्रायः ।**

गुव-पत्र-श्रम्यायायायाया-प्रा प्रयादर-तुःम्बर-ह्रेर्याकु-न्यम् न्यॅं व् बु : सप्तरा न्तु रा हुँ न्य शु : न ह र : नवे : सं : व्र : वे न : गु व : नवर : हु-न्न-अ-छिन्-ग्री-न्व-यरा य अकेरा-स् " वेरा-परी-र्मग हे-ग्रीण मह नवा सन् मान्या दे विदायम हेरास्यामते लु तही दाव साहिते वरा द्रं क्ष हते है : बरत : देश : दु सुर : द्वे व व : व श्व : देश : वर् या गृद्धराची र्थेण रेग्या र्थे केरा तार्ग्या र म्या प्रा लबा अपडी लाचू रार्च राष्ट्र राष्ट् नर्गे न मः म्हराष्ट्रं भ्रामदे श्रुषा हु र्शेषः मरा मनः हु विषावरा विमयः ম্বান্ধ্র-েইব-দ্র্বান্ধ্রীর ধ্রার দঞ্জিন্দ্র-প্রাথ্নার্মান্ধ্র-প্রা चित्र के के क्या संस्थित निरा । क्या के या क्या की व्या बड़ब विन् ग्री न विवाहेर हैट हेव या थ तु न विवाग्री वर्ष विदा द्वेत्र-धरान्तः हु-धन्तः ह्वे-द्वेत-वृत्यः क्वे-द्वेत्व-श्वेत्यः स्वाद्यः वित्व-स्वाद्यः स्वाद्यः वु व न सवारेट में दे या है हिंदा तु स्विता में वाया नवदा दे या वार्षे निर्दे न निर्देर देशायदे सरम्याक मन्द्रा इ. व्ययः स्थयः रे प्रविवातः त्र्ञुपरा परा तु 'याम 'र्म् ग्राम 'श्रेन 'यम गृहेरा के 'हॅर 'तु 'दर्जुम या हा ग ^ৼ৾ৼ৽ৼ৽৸৾ঀ৽ঀ৽ড়৽ঀ৾ঀ৾৾ঢ়৽ৼয়য়৽য়ৄ৾৽ঀৢৼ৽**ৢ৽য়৾৾ৢঢ়৽ড়ঢ়৽য়৽ৼ৽**ৡ৾ঀ৽৾ৢয়৽৸৽ৼ रे.चर्ष्य च ह्म च्या च क्या ही त्येष मा स्थर है । शुरु स्थर मा स्थर है । इयय. परीया त्यापा. इयय. चर्या. पर्या पर्वया. प्रेयय. प्रे. में प्रा. हे. हिंदा ही. यर हेर व्यान्यर श्रुर वहरावया या स्वा हु श्रुर वा न्राक्तया हेना :

ब्रुब-पबाबय-धर-श्रुर-है।

ष्र.क्ष.पथा.रं तिथा.रं सेर.केषा.क्ष. क्षेत्राया.तपु. बोब्या.क्ष्या.व्यव.क्षा. इन्-द्रमुद्र-क्रेद्र-दर्रेन्वर-द्र-त्यानभूव-द्वेद्र-विद्र-त्रवराष्ट्रास्य वात्रवा ने देश अर. वात्रवर वात्रवा रहार विवा मुर्चन विद्रादे जिदा हुते हुँ कुराद्दा हैं । हु न तर द्वा हिदा दे । हु न तर हैं क्रि.वयामहेना हे किया हु दे हुन्या श्वापना रत्या निराणमा निर्मा त्र्रः हेरः श्चेनवः र्षेन् सः न्रः न्युवः त्रवः न्रः चे व । श्रेनवः वर्ने र म् कित्र देव में केता क्षु कं न राष्ट्र मा न हैं मान मानेता है नाता न हेता ग्र-र्वयाः वेः कुण्यते प्रयः म्रोर्ग्यवरः यत्याः उरः। र्रः वेवः यः वुष यर-शुः बहुन् त्रष्टु मृन्देर्यातम् त्राप्त प्रताष्ठ्रताव साम्राप्त महुन् में साम्राप्त महिन् में साम्राप्त साम्रापत साम साम्रापत साम्रापत साम्रापत साम यम्भवादम्बेवान्दा भ्रदान्याराया न्युवान्युदायी उपार्षे रसायह्नव न्रामः स्वाया तर्षे पावा न्याप्ता वर्षे वर्षे वर्षे प्री न्यापा न्यापा नुवास्या नुवास्या तकः स्वराष्ट्रमः बिन्। वहनः संस्थानिः निनः केवाने विवाधिनः तहेवः चुकान्त्रकारान्यादे द्वाया शुरान हे या पादे वे ता पादे ता प्राप्त प्र प्राप्त रेट.बी.चर.पे.प्टया स्थ.क्ष्य.रंथवा.रंघव.ग्र्वयायाचीट. चर.वंदर ष्ट्रिया ग्री स्ट्रम् विवास स्ट्रिय में न्यं व न्तु वा में दावी न्यं व न्ये वा ता ता पा नभ्रवानिता न्तवान्धनान्धित्वात्रात्रेत्यायानु सन देराधनायान संवान्दरन्तुरञ्जराबराष्ट्रियानहेन्वत्रार्वार्यर्त्तात्वराहेराहे संवा चथं मंद्ररात्रायान्त्रीयाञ्च नायाश्वायान्य म्यान क्षेत्रायञ्च नायान क्षेत्राय स्थल'कव'नर'तर'नग्रथा नृतुर्य'धरे हेंर'न्वे संस्ता ष्पन्याध्ययात्रास्त्रदेशीत्रास्त्रम्

सर्वानर्थित्मः श्रुवायाः श्रुवानः त्याच्याच्याः स्रुवान्यः स्रुवान्यः स्रुवा न्दरःक्ट्रेंट्यः स्ट्रांतान्त्रःक्षेत्रः वेत्त्रः वेत्रः वेत्रः वेत्रः वेत्रः वेत्रः वेत्रः वेत्रः वेत्रः वेत् विदर्भेत्रः वेत्रः क्रिया सीट. लेश ताच श्रूचाया चाडू. ता. इस्या क्षाया र व्यूया हेता तया यत्रायार्वरान्य मर्वरान्सुराञ्चरा धरादेरानदे त्यवा यञ्चे वा यञ्चे रामा क्षेत्रयाचेत्रातर्श्वतार्टार्न्युयान्यम्। नर्भेट्याद्या न्दराष्ट्रम्या श्रीत्र सं स्वाप्तराद्या नेदावा स्वाप्ति स्वापा मदे दर्भे स्वाया र्सुर'यमु स्वा'र्र'यठवा हेव अर्धव क्षेत्र अर्'र्वेद र् यहर वता मुल' **केंद्रे**:≝्राथात्र-पर्वाये प्रताहरा। वेद.वच.चवेश.यूट. बक्रबरा. र्नु यः र्वण गुरावः रं त्या कुर् व्या कुष हेर ब्रेन्य गुरावर्व हेरः न्सुर केव न्र नर वर्ष नेव ग्रीय मृत्य हेर प्र मुंद नय प्र केव नेव में ळे*र.र्*तुष:म्र्डर:परे:म्बर:यरे:कुल:पय:हे:ॲर:वी:बुवाय:पहवा:बुवा सर् "मरे है रूट हुल कुल सर "देश नग्र त्य से वरा दे देश ক্রুঝ-ধ্র-ক্র-ম-র্-ম दे '**दय**' महार 'हेद' क्षेत्र' दक्षिण' तेय' **छय' ग्रह्म' ।** हुत्रायराश्चर्या देवयाम्बद्धान्ध्याम्बर्गाः भ्रीमा सेम्बर्गराह्याः हे न्तुलान्यमा व्यक्षं दाद मेनवा न्यमा वस्त के ना विमा गुरा हरा। ॅम्बा-पर्यान्यक्रान्यक्र-प्रकृत्र-प्रत्यक्ष-प्रवाधिकः विद्वाधिकः विद्वाधिकः विद्वाधिकः विद्वाधिकः विद्वाधिकः व यर.वेर.विय.तथ. ६६व. व्रट्य.रेष्ट. थ्रट. श्रेंच. बेश्व.वेश. विय.रेबंध. वर्ष. नळे नहत्नमा १ ता ग्रेस । उसा मारे महिमा है सु र सा में ना में ना न न्दा धर भट्दे कॅर्व्य प्राप्त के विषय के विषय

पणुकलानेता। इवायते श्रे में न्तुनान्सुतावित्ना वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वि च ५ वायाचा स्वाया स्वरा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र हैर स्वाया हिरा क्षेत्र स्वरा हैरा स्वर ळेव रेव. म. छ. र्र. थ. श्रु. पर्य छेव. यं. यंदे. श्रु. र्य यः यर गयः हे . र्यु यः . . न्दरः नरे न्वराग्री र्यम् यक्ष्यया तहेन र्वेषा भन्ने व्यापारी वित्राया स् नगदःधेन् न्दः नठरा नरः व्या गददः नरा सुवायः न र्वेन्ता ग्रीयः वन *रैदः* वी:२्तुष:२व्यव:|द्वा:विव्य:२:तुद:व्य:५५४:न्वर:न्नव्य:वर्वःवः**ने:····** য়য়৻য়ৢঀ৻ড়ৢ৻৸য়ৢ৾য়৽ঢ়ৢয়৽য়ৠৣ৻৸৻ৡয়৻ড়য়য়৾ৢঢ়৻৸৽*ঢ়ঢ়*ঀ "नद्याः इया धरायद्वेवाया क्रेव घॅ दे नग्रायाया এব ব্ৰ'নাইলেন্ড্ৰী तम्दानरःश्चेनश्चेन्। दवःग्वदःवद्यःग्वेन्त्वःवःवदेःष्वःवळ्यान्देः **&**८.पॅ.धे<u>४.८८। ११.५</u>.क्यथ.ङ्बा.^१.प्रॅ.ब्र्यश्चधेय.त्र.चेळ.वेथ. तीफ. न्तुल न्दर वे त बळ बल न्दर्भ सर स्वाल पाय अव कर् अ दर्शमः द्वः ब्रायः प्याप्तवा न्स्राये द्वारा के वा विष्या के वा विष्या के वा विष्या के वा विष्या के वा विषय के वा विषय तमरमा सुरम व मारा धेवर में। र थरा तह सा सर्वि न न मारे केवर में मा नवर्रात्वास्त्रायस्वानी नगायान्यात्रायास्त्राच्यात्रात्रा कुलाह्यः अहतः देशः द्रायक्षायः द्रशः हवः तदैः द्रगः वीः द्रवरः तुः वाहें हरः नः वयः धरः वेः श्रेन् वः ने वः तरीः यशः ग्वव तुः गर्रायः वरः चः नः वेन् ने।" addi

नुषाने खंबान निष्ट स्टारेन श्रुट्या श्रुप्य करा थें क्षायी स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्

① (和"石口下"等可叫"古美气"克口"芒啊" 609)

न्रा र्युलान्युरानीनाई। वान्यनान्यवानानीनान्ययाना र्भरानक्यार्थम् तवनः यरायरा अयारायया "म्वराञ्च म्वायाञ्च" र्सुर-मैव-र्तुव-मेंद-इयव-धवः केव-शु-० हर-वव-व-थ-४-४----न्तुलान्यम् कृष् या स्वर्णः कुला हेन् ध्वनः ध्वरः मृत्रान्यः न्तुलान्सुनः वी क्षेत्रः नु प्रवास्त्राच्या क्षेत्राच्या क्राच्या क्षेत्राच्या क्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच् न्दा हरी वत करा रायाय ह्याया हे जि त्रिता गुवा तु तही या पर्टें या चुरायरा अदः स्वारा स्वरा न्या रायद्वायः नृदा । नृत्वा न्या यः नदर-रवनाने हरनेन पश्चरापश्चिन्य ग्रार-धरायर वनाया हेन बार्षिकार्गारामराश्चराद्वत हमताम्बिकाबेर्म्सरासुबायामार्थेम्ताः ग्रैयानग्रयाञ्चन नम् याञ्चवे श्वास्त्रमाय धरानतुन् वयान्याञ्चयाम्बद्धाः चर.पश्चेषात्र विव ता.केर। हिट.<u>छ्</u>या.स्.से.चर.लट.लट.ह्य. पश्चेषा. च्यायात्वा संस्थावदे है यावयया नेन हेर् रे ववर वर स्थाया चु बनर में भी नथी रामक र्में वर्षी पर्व में दूर यदे न्ना सका प्राप्त प्रनित्तः मृत्रः लेव या अः व्यक्तः या प्रमृतः क्षेत्रः स्वयः मृत्रेषाः मैराम्डेन् म्रॅन्य वे ब्रेप्त मेन्य स्टब्स् स्टब्स् न्यन प्रमुद्य स्थान न्कः तृ त्यते त्रः या अर्द्धेणः या क्षेत्रः रोदः लुषा हे । त्रातः त्यतः है । द्वेरः वश्वयः । पायदेव ताय है प्रमुताल हु धेवादेवाय न् तर्म दि दे है हू यदे परुषाग्रीषापने प्वतापने प्यादहेव प्रदेश्च अपद्युत्र धेता अस्वातु तह्ना पते नाया स्वता भेन धेव पा नाया यर र सह व स्रमा केना ने त्य

য়য়য়৽ঽ৴৻য়য়৽য়ঀৢ৾৾য়৽ঢ়ৢ৽য়য়৽য়ৢ৽য়য়৽য়৽য়৽৻ঀৢ৽ঀয়৽য়৽৻ঀৢ৽য়৽য়য়৽য়য়৽৽৽৽৽ नगतः पदः तु। "वः सः वदः है : रदः ने दः ग्रे वः वे : रळ ववा पदेः ब्रुं दः र्छवः त्यः तहुनः परः श्रः र शुरः च देनाः धेदः दा वरः श्रुन्यः परः न्नाः से केदः परे रे नगितः बूदः (वृदः) नःहै :क्षेत्रः नक्षुतानः अः ह्वनः ग्रीः नतः नुः त्रहः कुतः क्षेत्र *ঀৢৢয়*৽ৼৢঢ়ৼ৽ঀ৾৾৻৽৽৾ঀৢয়৽৾ৼঢ়ৼয়৽ৼৼ৽ঢ়ড়য়৽ঢ়ৼ৽৾৾ৡ৽৻য়৾ৼ৽য়ৼৼ৽য়ঢ়৾ৼ৽ है के पाय विवारी प्रिय में किया है ये । यो के के वाय वाय कर बिहे के पारे नमादे नवरानः लखाः नवरानरा है। हरानवा देवे हो ना ता श्रानवा नहा पर **यदः य ग्रेनः केव व वरः क्षेट्रयः न्युयः ग्रीः व वरः वेदः वेदः व वरः क्ष्यः न्युयः व वरः व्यापः व्यापः व वरः व**रः व वःश्वॅर्भिर्भेष्यं ठवः स्रवायः ग्रदः रदः योः गृबेयः शुः स्रः वाषः क्षेरः ः **६**.घर्-४.पर्या ता *रिया* प्रयागुः रश्चिः विषः अथा ग्रेटः श्चिरः स् नरःश्चेनयः नेन रसरः ने स्वायः केदः सं तर्ययः नयरः नस्य नयोः नदः ररःररः वी नवल शुः श्चरः नरः तरे रता भेव" 1 **a.** a. a ha. al **३**यामञ्जूषामार्स्ड्रेनाबैदा। दे त्याकानविषान्त्यान्त्रान्त्रस्याः मःइस्यानरामञ्जून्वराष्ट्रं स्टिश्हिया यह केवारेवाय करा **&**८कः १४ त. में . केर. जावा जावा है . च केर. ट के या वे . च प्रे. प्रचे . च केर. प्रचे . च केर. प्रचे . च केर. प्रचे . मु-बेर्-सर-दश्रर-नयानगित-ग्राह-माईल-हेन्-डेल-पदे-लु-प्रेन्- दस्य नरः सं छ : वै न । अद्यान ने न । अदान ने तारा ने तार ना र न । पर्न-तर्ना वर्षर अनेया हरा दे या की निवास की निव नरुरा सूर्-झू ब.श्वर. लट.र्सिट-झूब.रवाब.श्वर.चश्चे. द्वा.वाट बारा

① (匐.೭੫೭.美山松.口美之.戈丸.丈以. 612)

कॅं व्यव किं वृत्त कें न्रान्यमान्यमा अराक्षा क्र मान्स्रान्यमा हेला <u>ৡ৾৻৻৴৻৴ঀঽ৶ৣয়৴৻৸৻৽ৢয়ৣ৸৻ৡ৴৻৸ৡৢ৾৻ৢ</u>৴৻৸ঀ৻ঀ৾৾৾৻ৼ৾ৼৣৼ৻৾৴য়৾ঀ৻ रट. पर्यान्त्र में दिर्दा हिरा है । अट्री है । अट्र हे । पर्वा निर्दा या निर्दा निर्वा **र्**ट-चरुषाद्र्-धुन्-ने-भ्रेट-र्ग्-र-तु-न्र्रेट-च-चरुषायह्र-्- रुटा। ख्रा **ଛ.**घ.५व्रेंच.चक्रुब.चुल.इ.बल.इट.ज्ञ.च्य य.*नट*.ब७ब.टे. लट. ५व्रं ब. <u> नब्रुन्,र्यथ,क्र्येथ,थी,र्सिट,पश्चेर्,र्म्थत,त्र्यथ,यत्र्यक्र,वित,यु....</u> पर्नेत्-हुरा-इश्रव-विपः पर-जवदः अवर। वि:क्षे-पः रदः हेत्-द्रिदः र्रः पर्याकुष्या सक्षात्रा या स्वाप्ता प्राप्ता भरतामः ठवः ग्रीः ताकरः येवता देः ठव व रः यर्-मर्मा संग्रा ग्रीताः ग्रीवा **&**M·दे·र्रेयःपयःदर्दर्यः ५ & नःदर्द्यः में दः वी: द्रुदः द्रव्ययः द्वः द्राप्तः हे विश्व हे र नगुन हे 'यॅ 'हू 'यदे हे 'द नगर शु 'नबन झर नहा वि **से 'झ** चतः है नः आरतः रुवः अतः अतः शुः न्वतः पर्दः कृरः श्व वै: रेवतः स्वतः · · · र्यट.री.पर्देश रम्.स.थटथ.मैथ.भैपथ.बुथ.तथ.ट.पीब.मैर. तथिव या अर्थे । यह म्या दे । यह मार्थे या प्राप्त विष्य में अर्थे में प्राप्त विष्य में प्राप्त विषय में प्राप्त में प्राप्त विषय मे प्राप्त विषय में प्राप्त विषय में प्राप्त विषय में प्राप्त विषय र्वि लेखा सदी राज्य वर्षा दमा। वर्षा क्ष्य वर्षा वर्षा क्ष्य हिया स्वास **ग्री-श्र्मारीयाया इयल वयल ठन्:न्नर:नु:**नञ्जल:यल:न्सुर:क्र्रेनल: के**द**:: **घॅरा ग्रुरा अनवानेरावर्टा वया यह छिदारेदाया छे न्दाया ग्रु । यह गा** क्रेब्रिक्षुः इं मः न्मा न्युका वका न्म्यः स्वाधिः मा के राह्यका न्ययः নথিমাঞ্জিন প্রান্ত্র প্রান্তর প্রান্তর প্রান্তর ক্রমের বা এবদা यर. स्रेमलः क्रुंदेः तस्रेदः रहेरः हरः। सं.क्षं मलः दिलः स्याने वेलः सरः तस्त ध्यानकुर्र्रहरानहेगार्चे। रे अवरार्वमार्वेदर्वेराया नदा न्तुला में दा निवार देव निवार के वा विवार देव निवार के वा विवार के वा विवार के विवार ऍ८:पर्दे मर्उ८:न्यम् मे म्द्रॅट येद, देखेर प्रस्था सुरा हे दे राक्र स्व.क्ष्य.बार्ट्र.विवा.क्षे.रश्चवा.प्रच्य.विय.वेपरा। रीवेश.रिवेट.क्षया मनः ह्वेत किरानेया ने रापा केरा न रायर मेरा विरान स्थापन स्थापन स्था ने न्या शे न्य र से दे न्यु र के व स्व से न श्रु न म न से र से न श्रु न स स्त-कृत्। र्वश्र-पिर-बी-र्बाद-ब्रादे-रहीत्-म-इवश्व-ग्रीत्-प्रयापर-च कृरः दे दे के सुद्रः खुद्रा सामा वर्षा श्वारः ध्राप्तः के नायः विद्रः वर्षा द्राप्तः । ब्र.पसट.श्रेट.घर.पश्चेंट.केटा रेथेय.रेसेट.इयय.श्रुवय.से५.घेषय. ଥିବ. ପଦ୍ଧ. ଏଥି ପ. ମୁ. ଅଧିକ. भ्रुवः परः यथा । । अयः पः तिह्नः वृद्धः वृद्धः वृद्धः त्रवः न्दः विकारः विकारः वि षदःवश्चरःतेःकेःषः चदःवीः कवः श्वंदेःवदः तुः चेत्र। श्वेःषः 1728 वदः <u>याच्चे प्रपृत्र क्षेत्र चित्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र</u> शुन्तरःग्रैतःग्रॅटः ब्रिनः **क्षःतः सॅट्यः ह्**न्तरः नर्ना नेनः नत्त्रः नात्रायः स्रा

प्रमाणि विषयः क्रिया विषयः क्रिया विषयः व

म्भेव प्रव हेव व्यव्याते। म्रापुर न् वे केट मू ख्र हेव व्यार् प्र हि पः र्यम्या हुर्द्धः हेः हुः सः ३५ व्या म्वयः ह्यं म्यव दल्ल हुन्य ञ्च प्तः त झॅ र : ञ्चानल बेर् : य हु र : वेर : । य रे : मा च र : र्षे मा य ग्रे : यं : यर् रा बे : रैव-च-छेर-दे-खन्षान्त्री-चु-अर्छव-लु-पर्द-पनाद-व्न नवद-प र्यन्यः ञ्च-तु : वावका वरे : तह नावा भी : ह्वावा वा मार्विया वर : वह दा है : ह्वावहर सवः क्ष्यः तथा ग्रेयः न श्रुयः न श्रुयः न श्रुयः मुख्यः यः स्वः श्रुयः मुख्यः यः स्वः स्वः स्वः स्वः स्वः स्वः तह्न अर्भाय बर् व्याप्त क्षेत्र व्याप्त व्याप्त व्याप्त स्थाप स्था मराद्विष विरावी वर्षे पश्चरण विरा देर हेव र त्या वर्ष गुव हु नने न्या भीता है के ना मा हि । कर वे हा ना ह या ना रहं का की ना ना वा वा **ह्रेंट्** य: हुट त्रुष्ण 🛈 🔻 हेरा ्रायान रहें अपस्य विषय विष्ट्री विषय हुण् न्दर:न्सर:नेत:क्राच्युर:हेत। र:ख्य श्रुर:न्स्या न्तुलाम्रानीन्वयान्सुराक्ष्यायानुरान्त्राचठलाहे सं ज्ञराकेवासे देः कप झॅदे तर तहीं त वरा झें पश्चरा पर पहें वा वि दे दे पदे र वर्ग न्सुद्रः नैकायः निः तान्दार्वे तान्दका क्षेत्रः व्यवस्ति वास्य स्वानिका वना गड़ेश रूटा न व द्वाम्य श्राह्म या श्रु रहा वहव दे हैं केव

न्त्र म्या स्वाप्त स्व स्वाप्त स्वाप्त

त्वतिष्वा व्यक्ष्याया ने ने विषय वाला हैं हिन्या व व्यवा निमा विष्यु गुम

① (न्यन् पलसक्ते सक्निक्ते मन् ग्रंत 133)

ॼॣॱ॔य़ढ़ऀॱॹॱॺॾॕॺॱॸ॔॔ॸॱज़ॸॱॾॖ॓ॱॺऻढ़ॖ॓ॺॱॻॖऀॺॱॸ॔ढ़ऀॱॾऀॸॱज़ॣॱॿॖॸॱॶॕॺॱढ़ॾॕॺॱॱ पान्दा पर्ने म्बर श्रूदाय अंग्राय हे हुरा म्वदारे ग्रास सामा बेद्-य-द-ळे-रद-बैदा-बदर-क्रेय-द्वा-द-यु-द-र-वद-प्रेद-व-प्रद--त्रैतः र्वेषा या शेर न्यदा अळेषा वया न्येद्या प्रवेषा कु केरा व **ह्र** न्मॅल'वेल'वुल'यन। सं क्ष'नल'गुर'हेन् ळेल'ग्रुट्लप' ने क्षेत्र'पेत वा द्वाञ्चयः सः तृते अः स्व ने न्वान्तः स्व नु न वित अः उत्र न व न्या ख्रवःश्चु तिवरः न्दः वरुषः यः ते वैषाः से त्वषः गृदः तुरः नु वे वर्षः सम् *षद*ॱवॱनग्रदःत्रॅवःग्शुवःन्सुदःन्दःनठरायः वॅ : इदः क्रेवः यॅ दे :कनः ङ्गं · · · वशः श्चेरः ततुरः धरः वर्षः राज्ञेषः र्यम्यः सवः सुरः धरः हृ : सदेः ञ्चः व्ययः कु.नाहन तियानाना हेन ने दे हैं हैं हैं हैं सिराम बनाय हैं है है सिराम कर स् विनयान्वयाञ्चरः प्यतः द्वरः विनः विनः विनः विनः स्टः देः तस्यां द्वे 'स्राद्यार्तु, ब्रेंबाने 'हू 'यदी ह्वा अ अक्रमायायारा नवा महीरा हैवा । <u> ब्रियः वियासम् विरायते स्वायः अर्थः विष्यः वि</u> संभेगवान्तरम् रात्र्रा यहान्यातः ह्रवाह्मवारा ग्री स्वातान्त्र र्टिषा श्रद्धात्म विकास के पार्व प्रत्य प्रत्य प्रत्य मित्र में विका के क्षेत्र पर करा है। स्वा सायहेन्याया क्रेन्यान्या वेयाये क्रिन्यमा क्रि. लते न्न अल हे सूर प्रमाद प्रस्थान सूर पर्मा मेल के विष्य से ते र्जेग ्रह्मन्यायरम्यत्वन् स्रास्त्रीत्रम् केत्रात्रीत्राः स्ट्रसः

विराष्ट्रियार्थम्याययदरान् में दाया सेदायर के पर्देरान् वस्या शुः **到**51 "श्चर्रियायहवायम्बर्धियाद्यास्याम्यायद्यास्यः दह्रण:वॉ र्धरः ह नेया ने हैं . प्रायक्या पास्त्रया स्वया सीया पर्दे राक्षे नेया या प्राय **ଌୖ**୵୳ୣୢ୷ୄୣୡ୕୵ଽ୵୷୕୶ୖ୰୶୲୰ୄଌୣ୶୷ୣ୕ଌୖ୵୴୶୲୰ୖୣଽ୕୷୷ୡ୵୷ୡୖ୶୵୲ୄୡୄ मुल पः सक्रमः मैं सर्दर्द्र देवे देवे में ने नहार शुः शुरुपः नहार ঞ্জন:বগ্রীকা इसायार्थेन्यायान्त्राताङ्ग्रेषाङ्ग्रेषाञ्चेताच्यात्र्याच्या व्या श्रीटायर ब्रेट्राया दे स्रेट्राश्चेट्रायवे खन्न वि व्या क्रिंट्रा हे 'पर्या मरात्युराकः यातक्षा द्रा दे दि दि द्रावार्यात्राचरानु म हे वे विष् हिरा देते.चर.रु.गाव.बहीव मुल नचर.बळ्या.मी.चयाद.लक्ष.गन्द. पर शे प भी र दें। " वे व प म र्स प विर । र त् व हुर म शुव र र र र र नै'हिसर्-रे-पनेर-मन्त्राहा-पहुन-र्सेन-धुत्य-न्वन-र्-र्च्या-र्ड्य त्यी र्स्र-नदे केन् सुर इ न्यम् के सुयम् कु रे नर्द्रम्य दया नव्य ने दया हा चः हुना पर्ते व्हरकी द्वराष्ट्रं क्षाचा त्ररा केता द्वरा के शिल्हा चित्र व्हर्मा हि द्व.केल खेळा वि.स्व.च्.को श्र.पंचय.के.किपव.त्. मर्व. बुर-घरुषान्धुद-ळेग्वाजीयानभ्रॅर-व्याक्टे-घॅ-ब्रद-क्रेव-घॅर। हू 'यदे' ञ्च या या के भू मी यह ता मरा नररा भव हुव स् छेते थर में व नरा श्चर्यकर् विवासिक्षा वरा श्रूर्य विवासित्र में प्राप्त विवासित्र विवासित विवासित्र विवासित विवासित्र विवासित विवासित्र विवासित विवासित्र विवासित विवासित्र विवासित विवासित्र विवासित विवासित्र विवास र्दा विषानवेषान्तु क्षुद्र वैषा हु यानकर् नवया नवदार राज्या

5. ଓଟ'ସିଟ'ଅନ ଜିସ'ସିଟିମ'ଛିଟ୍'ଅନମ୍କ'ଧିକ'ନ'ୟଅ'ଅ'ଅ'''' ମ୍ୟୁଅ'ୱିଅକ'ଫ୍ରିକ'ଅ''ଟ୍'ସ୍ଟ୍'ସା

स.रेपु.क्रंब. अ.क्टर.बु.क्र्य. गवया गटा खेवा "नर ह्याय र्चेट.अ.चर्चा.च्रुंद्र.चेथ.अटचेथ नदुः न्द्रुं.च्रुं.ख.ज्ञ.चय.त्रव्याच..... बे.दरम्दर्गे.रसरम्ब्रम्य ग्रस्य बेर्न्स, र्म्स्नव्य व्याम् चराक्षेत्राच दे ते ते तर्पया दे तु न्योरा मी हिर्या स्यया सु प्याप । भू रा शुः हे रा न द रा है । य हु न स्वार खा खु रा न हु या स्वार । डुर्-१६, १४, ५ . इन्नय. रंजना स्थर. १. तश्चेरय. १८.। "स्य. यू. नर्श्वेतय. हे त्रिव है . यह व वया हिन समया है या में दाम दे त्राव त्या प्या दर्बे दया नेट.वे.च रव त.क्रचयात्र.कु.पर्ट.केर.चब्रीय तथाब्रूटयाञ्च.बुयाळ्ची... क्षित र व त. है. क्षु नेय हैया प्रहेनिय चेटा। सन् ना में हेया एट्रेसा प्रवेद यर व्राप्त भीतृत्र श्री : इत्राप्त श्रुप्त भीता ने त्री भीता क्षेत्र स्वापा होता होता होता होता होता है है । चिश्वराय श्रम्य पाने ने देश अधिव पान्यायमा अध्याय स्वारा भ्रम्या व भ्रम्याय स्वारा भ्रम्याय स्वारा भ्रम्याय स्व बेते पर्व वॅते १६८ ळॅग्य या छेरा छेवा वॅ। "Û वेया गयाया प**र्रा** म्रुर-नशुक्षःग्रीय मूर-वा-धर-ग्रीव-पा न्दे-क्रेट-प्र-द्विर-ग्री-वन-क्रेय-वेय-यः र्वः क्षंत्रपत्वः द्वः क्षणः द्यः यभूरः पदः र्वेषः क्ष्रं रः ग्रेः क्ष्रं वः वितः वः . नर्वेष.ल.स्.सं.सं.नयाक्च.बक्षव.र्टरयं.धे.लब.न्येन.वयाह्मव.मेन.चुरः...

① (â·万·元·黄·河·克·美·万·元·元·元·650)

त्त्व ग्रेय यत् कृष् कृतः क्षेत्रः विष्य कृतः विष्य कृतः विषयः कृतः विषयः कृतः विषयः कृतः विषयः कृतः विषयः कृतः

"ने वर्षा के नेदान वर्षा स्पर्ना प्राप्त वर्षा वरम वर्षा वरम वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्या वर्या वर्या वर्या वर्या वर्या न्गुरः क्वं व में केवार नेवार राय क्वार क्वार क्वं व क्वं व ह्वार व रवार । इयराक्षरामकर् किरा विदेशन्य में (में क्षामर वेरा) रहा हेर् गुराहे स्नि हुरायते निष्या द्वारा परे व किया सव मा न्रः उता परः ।।।। निष्ठ ता से प्रकार परि निष्ठ देवा देवा में दाया परि साम है । से प्रकार परि साम है । से प्रकार परि साम है । से प खरामबरायं याम्बेरयाम् इंदाईरा १५० धराकेव वि: धना मुख्या तुषाम् विमातुः मञ्चला है। देते के विते त्रान्य में ति दिरान्स मक्षामा नरः ब्रेम्या शुः व या ब्रेम्या है । सुया ब्रेट । सूर हमा हिरायाया पव मा **कैर:न्**तु:बुदै:बॅन् बर्सेंब धर:यहुन् यदे हुन् खब् बहुव न्दा **पर**। **पर**: त्रोद्राम्बेद्रायद्रायम् महायामहित् यात्रक्ष द्वाय तेत्रायार्थयाची । हेदाः खु-लुन्य-पर्द-धन्-न्सु-धुन्य-छु-अर्द्द र् । "① वेया-ग्रया-पर्दा रे हे वार वे राय रहा विकास न हुर राय हुर साम इस.मुयागु स्टर्नान्दिराम् दे नदिवारास्त्री नवरास्त्रीता कुर्-र्रः। वेष-ठव-४,० व-००ष-श्रे-पर्य-त्व-प-श-रेथे-र्ग्यायाग्री : श्चर. वर. १ द्वा हेया पठरा परा हे द्वा स्वायापना महना क्या वर य. यहर्या रा. ध्वीया व्रीय स. श्वीय पर में व्याप मह्री वर व्यापाय पर्या वै भगता ने रान् देला शु अवेदाविता ब्रेंदा महावा स्वापती वादे सामराप्ता विनयः हुर छे देर द्वर कुष हु दे खया दर्श नवर अहं द पा दे नविनः

① (â·དབང་རྡོགས་བ莨ད་དབ་ངོས་੬੬០) .

मन्द्रास्यायः मस्या द्या वर्गे न् मायायायः स्

क्रिन्न्रवे त्रेन्न्न् निवा ही व्यः 1728 व्राचा ही व्यः ने रदःयाम्बयाग्री नरःश्चर् रतः वर्षः नरः हे वर्षः नदः। विष्टरः वतः ষদ: নহৰ্ষান্তী ৰাজ ইমবা থ বিৰান্তী বিদ্ৰান্তী দ্ৰীনা বৃদ্ৰানা বৃদ্ पर्याती.या.क. अवयातीय.यय.वी. विरयाती.शेचीपार्म्यातप्राप्यापार...... यम् "ा डेयान्यतामः यात्रम् देः न्रः नुयाय हिन्यः यसः ग्रंहः बूट्या ग्री के के न्टा ट्या नेटा स्व के म्या ग्रीट नक्या ह्टा तम् मेथियात्.लट.न् १ कुवाश्च.हिराहासाञ्च प्वारा प्रेयापानर्गःश्चराः नवर कुर स्वाविर १७२७ वर केर केर केर नवर नेवर नेवर दर् र लय.चर. में हेय.चर्से.चर्च में चि में .चर्च न्यं.चर्ट. वंय.चर्ट. क्रंट. लय.चर्ट. रूट. म. मृतु सुर गृह्य पाया या न्रा या या म्याया अया नव लु ते हे रे रे ने लय.क्टा व्रट.चेव्य.य.डी.प्रर.च्ट.च.प्रचर.वय.प्रय.पच्ट.ट्र्य. श्र.पविर.सम्बराचक्याम्यापापरीय

प्रकृताम् गा.ण.म्.प्र.ग्रीय.भेग नेट.म्.ट्रियांचा स्ट्रांचीयः प्रम्पान् व्यापन् प्रमान्त्रात् स्याप्त्रात् स्याप्तः व्यापन् स्याप्तः स्याप्तः स्याप्तः स्याप्तः स्याप्तः स्याप्तः व्यापन् स्याप्तः स्याप्तः स्याप्तः स्याप्तः स्याप्तः स्याप्तः व्यापन् स्याप्तः स्यापतः स्याप्तः स्यापतः स्यापत

① (पूरवि इंगड्य वर वर् थन देन देल 114)

6. ହୁ'ଘଟି'ଘଟିବ'ଘ'-ଟିଜିସ୍'ସ'ଶ୍ମ'5'ବିଘର'-ମୁସ୍କିଟ'ଘା

① (高: 「万下、黄河村、口莨丁、「九下、花村、659)

② (**匐:て**ロエ:美型型:ロ英文:大口:大型:660)

बॅदःयःनवयःरुःनवेनया देवैःतेनयःग्रीःययःसुःनंबेदःयःयन्नायः त्रै देन के या के स्वर्ध के प्राची के प्राची के प्राचन के प्राची के प्राची के प्राची के प्राची के प्राची के प्र न्ना अन्दर्भ वास्त्र वर्ष्य वासाया सुन्या वर्षु व मृत् व वर्ष हु दे क्षेच्यान्त्रः इस्यान्यान्यः स्टान्यान्यः व्या देः न्यः स्टान्यः सर्ह्यान्यः पर-हू 'यदे-म्च 'य-पर्म 'ठम 'नैया श्रुव 'इ रका हे 'यद 'ईत्र' गरीर'' ' ঽ৴৻ৼৄৼয়৻৶৽ড়ৢঀয়৻ঀৣ৾৾৾৻৸৾৻৸ৠৣ৾৾৾৾৾৴৻৸৾ৼ৻ঀৢ৾৴৻ৼ৾৻ঀৢ৾য়৻ঀৢ৾৾৾৽ঢ়৻৸৻য়য়ৢ৾য়য়ৼ৾৽৽৽ य चन-इट-नक्द्र-न-अवत-श्रे-न्यंग-पर्व-नग्त-अद-तु-नश्चु-न हैं। देते.ळे.घबल.कर.चित्र.त.चेल.चपु. रचर.त्र.य.प.दर्ग. अ*र. कुर.* नॅॱवैॱने८ॱवैॱतृषः**ॾॅ**षःनषयःग्रुॱगवषः इयषः यद्यनःध्रेवः परःयः शुनःः **ः** ये केट तु प्रज्ञ द की प्राया मुक्ट प्राय से द र वा प्राया के प्राया के प्राया के कि उदान ने स्वाकर् गुरा वर्षायां केन यदि वर्षा र हे सूरा वस्तारायाः यर्देवः चरः चर्ह्ने दः हैरः। दः तुरः धरः चग्रवः त्यावः त्यावः वरः वरः वरः वर्णे दः र्दे : बेयः मगदः मञ्जूष मया दे : न्यः दह्वः श्रुषः ग्रुयः श्रुदः दयः ने : मः ¥ण्यास्य भेरा देवा विश्वास्य स्थान्ता । अस्य स्थानका ब्रि. अपु. श्रु. इवयाग्री. यर. लट. लट. त्राय. यय. ये. य. प्रे. श्रु. य. यक्र्य.... ्रञ्जन्यः शुः धेनवायः यः नृषेतायः विवा के वयः ग्रुटः ववटः नृषेताः स्वा सः सः । ब्रेन. बुल न्दा ब्रे . बुल ल क्वा क्वा क्वा चे पाव दा क्वा स्वार क्वा सम्प्रा मायायाय मा

① (高·万口下:美可切·石美丁·方口:芒柯·680—681)

न्तुन्न्वरातुन्न्त्वराह्नेत्रः कराक्के. चार्ता क्रि. चार्यात्राच्या क्षेत्रवरा वर्षर र्ये या क्यून व्यून यया यव रहंव वस्त स्न स्न त्या वहेव यदे सुर नम्लामी मुं मुं दे अर दिना तर र ने कर दिन सर मुं र प्राप्त है है। अर दे र बा देव या वता देन वार मता ही हूं विवादिव से में में रात् वार निर्मा मार **७**८५.क.मेेेेब.श्रें बथ कु.च.झें ४.५).५.५७वी.श.चट. क्रेंचया.श.हाचया. ५ व्राया. ग्री-रम्य वृद्दः यः श्री रः मेंद्रः अरक्षेत्र यदि सुन्यः द मेंद्रयः यः वर्दः द यदे **** म्बर्फ्रिया हे.व. ब. ब्रह्म श्रु. व्रे. प्रे. प्रमा व्रम् व्राप्त व्राप्त व्रम् मने मिते छेन मठवाने विषायमें अन्ति ग्रम् व मन्याम धिवायनुषा नह्रव त्रा ही ता वर्ष वर्षा वर्षा पर्मा वर्ष हैं र या व हैं र या विनाः चुरः वः येन्यायया छेः नरः न् मेर्या है। यहः छेवः रेवः यः छेः नरः। र्ष्तः स्व वि देव रे के र्वाया त्रा हु ता रे र हु हि त्या वया पर्मा । तर्पशः भुः लः पवतः हवः चुरः तत् मृः ग्रुरः। पर्मः हेरः क्षेत्रः वर्षः तर् **ढ़ऀॱ**ढ़ज़ॕॱॸढ़ॆॱॸॣ॔ॺॱज़*॒*ढ़॔ॱॾऺऺ॓॔॓॔ॻऀ॔॓॔॔ॱ॔ॿ॓॔॔ॱॴॗॾॴॺॱग़ॱऀ॔॔॔॔ॹॱज़ॷॹॱढ़*॓*॔ढ़॔॔॔॔॔॔ बह्र-तयु-रेथात्राचयात्रम् क्रियात्राचियात्रम् क्रियात्रम् व्याप्त बयु.पग्राप.क्षेत्र.पश्चिम.स.चल.ग्रीय.पञ्चया "ा वेय.ग्रयस.म.दिया रमकाने 'रदः ता हैका महे का कुका है। धेवा क मरायाने 'व हैका है। महेंना द्वालाक्षात्रातात तानवावकेवानेता व्यायान्यावहतात्र्रा

① (न्यन्यवस्त्रहें स्ट.क्र.ध्नां चरवः135)

"ग्वयानक्ष्र्या भेताया केवाय ते त्वाया स्ताया क्षेत्रा हि त्याया स्त्राया केवाया केवाया स्त्राया केवाया क

① (南:て口て:美可和:口養て:六口:天初:683)

ष्ट.के.चप्ट.शु.चेष्ट्रय.पर्ट.पर्वेथ.त.चेष्य.क्षत.चेश्च.के.ये.केष्ट.त..... नेह्रलायान्वीतावरुषा अवन्ताः याः क्रेब्रायते विग्रतान्ता विवयान्ता विवया तर्ने मृता शु 'नत्र अत्तर वृत्ते : है : वृं : नतः मृर्डर : वृत्यः अरतः रेतः न्रः : चरुराग्री:र्म्यमा पश्चितावर्गा श्वराशी:मिराञ्चेवाधरी:र्म्याः भारते स्वराधिमाः कैरल चेर र्वें र ्हार भर। ५२ क्रें र स के नविष वर्वा वें केंद्र र्येषः यप्तिव पः यः निर्हे नायः येदः पयः कैट्यः ये चिदः परः वनः पठदा हुः लते न्ना वा वर्षान् वर्षान् र कुषा (धवः) में दः वं विमादः न्नादः न्ने वरः *ष्ट्र* ≨ : हे : कुलः ये | लुबः यः न | क्वुरः रः नः न रुषः ग्रीषः द में 'डिषः र् नुषः म्रास्त्री देवाय ह्या चेविट.श्रम वेच.क्ष्यु.श्रम.ह्या विश्वयाता <u> ७५ मुलागुराम्दरातुरा ज्ञानामजुरामदेश्राम्द्रम् हरास</u>् <u> क्रथ.चश्चेरी क्रथ.चर्थ.बर्श्चनं इत्रथ.ल.पंचच.पहूर्यान्नेथ. तर.र्रीय.</u> *क्रे-५-*यॅद-तुःसन। क्रॅं-धदी-५सन्। मठता-१८ता-धर-४-४म परना-४: केत्र-पॅर-५ ग् ग्रॅंश-चेर्-की सक्षे क्र्य-लॅग् पॅ क्सला हू स्पर्व-न्ना स् पर्सन् व बकान्त्र मुका इका से पर में न्या शुक्रा मान करा या वर्षे य मृज्याया शुक्षाय कुर् क्षेत्राया श्रुका तो । यदा के दाय दे वे अद्या वा वा वन छलात्रम अप्तरास्म्यान्यान्याः कराह्मस्याः ह्वेदा म्ल्राह्मसः स्वाम् वहाँ दावराम् विदा न्या में वाके वाके वे के के विवास सकूर.री.पर्देगे नेविर.गु.स.प्रेपास्ययातसरयास्रर.री.ल्य.क्रियाया

चुका वैदा अंदराय में विदार व मार्दा वदार रेका का विदार यरुका न पुरा में रार्क्ष विष्य के प्रता विषय के प्रता व न्या भैया क्षुत्र पं व्याव वा स्टेर श्चेन राज के हिंदि तु ने के वा सा नहार दबानम्र प्रा द्वार्य त्रा वर्षा निष्य वर्षा निष्य में निष्य में निष्य में निष्य में निष्य में निष्य में निष्य নত্ৰাৰ্থা মৃষ্ঠ দেনেই লি 'ক্ অৰ্থা অই দে কেন্' নত্ৰা स् इयया प्रम्य ষ্ট্র্যা দিহে এই নত্ত্রীল বেহী কেন্ট্রে ই ল'ব ধকাত হ' লা দুঁ সা নত্ত্রীল *ॸॖॖॱॺऻॸॕॸॱॸॱख़ॺऻॴॺॸॕॸॱॺॱॸॺॺॱॾॗॕॸॱॻॖऀॱ*ॶॴॸ॔ॸॱॿॴॸॱॿॖ॓ॸ॔ॱढ़ड़*ॺ*ॱॱॱ वन् के के त्र वि नि के के ति नि के के ति क यदै यद्या र केत्र संदे द्स्र केत् यदेत् म्यू मानु विषय य विषयि कर्र ग्रॅंन् हेरा रहेर् ५५ सान् र नहें रायाया नहर है। युर्ग सामा र स्थान <u>२८. पश्यात्त्र वर्षाः व्याः व्याः व्याप्त्र प्रत्याः क्राप्त्र प्रत्याः वर्षः प्रत्याः वर्षः प्रत्याः वर्षः प्र</u> इसकाक्षेराहेदेराना वकासादर्गाना विवासिवा विवासिका हेबामानम्बायासुरासुअर्दराचठयात्त्राळेयायाक्षाळे र्वा मुकाञ्चन न्दर परुवायन देवा शुः सुला "ा देव न्वया वर्नाय न्दर। देते:ब्रु:सं:ब्रे:द्वर:सं:क्ष:पदि:द्वर:द्वर:द्वर:द्वर:द्वर:यगःययःकुवः**दयः** क्रमानत्रान्तरे हेनाक् क्रावि हिनाक् वाराम् क्रायर हु त्यरे व्राया वहवावधन्त्रं चर्त्रः अवया "न्सुनः र्ह्हेव ह्वः धः न्या वीयः नृदेः केटः मृ शुराबारुदायराष्ट्रवायारे व वगायराष्ट्रवायायार्या मे नगार वेवा

इंगवा गुन हु निया दवा ग्री देवा निश्च वा वा वे वा अंगवा म्रायाना नर्यात न्यम्याता वृ त्यते न्ना या नतु व या केव ये ति ने ने न बर्ने ख्न्य ग्री न स्वाया सुन्या शु रहन् यदे ने वान्य ग्री ना या न्य या है या इनियाशिष्ट्राप्ते श्रायाश्चाद्येरान्येवाश्चित्रवास्यानु श्चिरायाविताः धेव र्स्त्रा दव गुर तहेन हेव कर रेन ग्री सर ता दे न न मा देन न कर न्रामुकाः कृतः व्यवाधितः । कृषाः धराः भ्रवकाः नेरान् सुदानः न्रामः यमः है न र्रेन् न्र मतर न्र स्क्षित्र स्वा स्व वा स्व वा **শ্র**মার্ক্তবার্থনের্দ্র নির্মার্থ বিষ্ট্র নির্মার্থ বিষ্ট্র নির্মার্থ বিষ্ট্র নির্মার নির্মার বিষ্ট্র নির্মার নির্মা र्रः इय कुल गुः करः वी न्वेतः रा लेवालारः ख्या हुरः न् श्या ग्री हेला ... त्यर्था**रवः श्व**ष्य के.च.क्ष्यायायान श्रुतः व्यायात क्ष्यवा सरीः चग्रादः । वेर्-श्रुर्-महर-म-र्यम्य वृद्द-पर्व-स्म श्रे-नमर-र्ष-स्-न-दे-न्यतः कित त.धुवा.लुष.कंचया.धे.लपु.चि.षर.वी.क्ष्या.वी.धियाष चया.व्यालया रॅंब-यावविंब-विर्वेब-वी-क्र्न-या-धेब-या-व**ठरा**-या-वहेब-क्रेट-मॅंद-या-न्दः " ब्रिनः धेवा यः व रुरा तावदः द्वा है स्वानः व्यापार्थनः यवदः स्वापः व बिद्रा कु कु व दे द्या या यहे वावया दे विया हू यदि हा वा द्या यह र तु नित्वाया व छिव हर गुर शै ता ताया विर वी वह व क्षेत्र वेर ह्यु र वया " नरे नवर नक्षर श्रं र रेनक र्ष र रेनक र पेवर श्रेर क्षेत्र । न्र कर नवन् नेव तरेते वर् छै वर नवर नवर नव्य में नवया द्या के ना तहें रखः क्के.र्वयः विषाः चुदः यत्रः यद्वार्ते।

① (和"万口下"美可切"口養气")

श्चै.स. 1728 द्रं या सु. प्रं या व्या स्ट्रं या स्ट्रं

क्रि. वियासर. योचया क्रि. वियासर. योचया क्रि. वियासर. योचया क्रि. वियासे वियासे क्रि. वियसे क्र. वियसे क्रि. वियसे

おってといった。 まっといった。 まっというでは、 まっといるでは、 まっとい

या.पा.चयथा.थायथा.ग्री.याह्रं र.सं.क्षेट्य.चेचा.ग्रुवं या.पायवयथा.ग्री.याह्रं र.सं.क्षेट्य.चेचा.ग्रुवं या.पा.वयथा.ग्री.याह्रं र.सं.क्षेट्य.चेचा.ग्रुवं या.पा.यावयथा.ग्री.याह्रं र.सं.व्य.चेच्य.या.या.यावयःग्री.याह्रं या.यावयःग्री.याह्रं या.यावयःग्री.याह्रं याय्ययःग्री.याह्रं याय्ययःग्री

 न्दः न रुषः भिः सदः च अषः यः ब्रीदः तुः व नष र्षतः व विनः रत्न व

"८६ अ८० में ८ अ. केव ये वर्ष में ४ ५ ५ ४ राष्ट्र मार्थ में १ मार्व स्थित । मुं केव में पर राषा यापवा अयापवा प्रा वे से राहर में वे या मी हू-न्न-अन्वह्रवादह्रवाळ्यान्तान्ता ळ्यात्रवेषान्ता ज्ञा भूव अदे सुद में सु मि खू में ज़्वा भे सु सु सु सा मिव लय मदे सु मि न्दः ब्रु : ह् : बेव : ब्रुव : इटालय.ग्रेथा.मञ्च्यारं अर्थेटालये. योष्ट्राया विद्याप ह्या क्षिता विद्याप स्था " अक्षान्त्रा थराथमाहेन्त्रामार्त्राह्नेत्राक्षेत्रा वित्रव्याप्तरा विदः न्म्याः द्वाराः वार्यः प्रमातः वेनयः क्रात्यं वाः च्याः वार्यः वार्यः विद्याः वार्यः वार्यः वार्यः वार्यः वार्यः बर. ह्रव. ह्रव. ह्रद. र. ज्वर . जुरा द्रा प्राय. प्राय. प्राय. प्राय. प्राय. प्राय. प्राय. मुलायाम्बदाक्षे मु वना सं खदानी उवाद व हैं मेर हुन नया वया छदा ठवःतत्या चुः नवदः। "तर्ने अनयः वनवः छेरः स्न धरेः हू विवादवायः वयाग्रुद्रः धरा हे . सं. चरा रे. व्रवया सरा व्यवा है। संगवा ग्रद्या पठ राज्या लय. ४८. मी. मैं बेथ. २८. च कें ये. तथ. क्र्ये. श्रुथ. में र. श्र न्बेल भेटा ळेदःरदेः नम्दः द्वारम् इत्यार्थयः मण्डून् ताथे मे हुत् द्वारम्भदः स्वारम् बुगा "७ वेगानगमावेदायानु मानदारेरायमा हे न ग्रान्वमान्रा कुरायम्य द्वराष्ट्र वर्ष द्वरा द्वरा करायतुम् दे वर्षा स्वातु विदायते

② (កុពកា ពេសដុទ្ធិ ដុទ្ធិកុ ដុក្ ។ ១៩៧ 143)

श्चित सर वळववरालु त्रियार्स पहराम्बरायदेः श्च वराश्चरार्षेतार् वेताः वयायायर धेरावर्षे राष्ट्रीय विदाया क्रेवर में या नवर प्रवेर ने ये राष्ट्रीय ञ्चनाः तुः निवेदाः भेदाः । देवे वदाः स्टर सदाः स्वाधि वताः नि सदाः नि स्वाधि । **ग्रै-ह्नुर-न**िष्ठेन र्रेन्य-न्द्रव-८र्देव-अ-बुरा-गुर-। नेर-अ-ब्रे दे-रा-कर विनया मदी अनया न्रा मसुव वया यह या तस्त् ग्वर पवे र विर रा क्ष्यान्दा भे हरान्दा है नदे स कराय हु नव म न न न में न पा हैन नियर-तु-पञ्चत-क्षेत्र-प्यन् युन्या श्चन् छेत् यः चर्र-केत्र-यं मः निर्मा न्नन्यात्रम् हिराळे स्वयानस्य म्राम्यानस्य हिन ल त वया स्वाताः मबेर क्षेत्र सेमल तसुता जिंदा न रेमल सेमल हैं भेव हु न बदान रूप नवरः ही व लर कर पण देव तः नेल रटः ग्री. ग्री. ने. श्वायः ग्री. ही र नः झः ळूबाया.लूट.तपु श्रेषाचाचु....वा.च.च.वा.से.च प्री.चया.सेपु ८३८.भी... ख्या तान विवाय केटा। "शुः अकं अया मूं य हे या पान हे किन में दा अदे मुलार्यानु स्वीत्राम्य म्राम्याचा म्राम्यान्य विवासिया यहारा स्वास्य स *ॸ्*ॸॱऻॎक़ॕढ़ॱख़ढ़ॴढ़ढ़ॱॳॖॸॴॸ॔ग़ॗॸॱॺऻॾॕॴऄऀॿॱॸॗॱऄढ़ढ़ऻ वरः मैं मुरः रेयः यः के प्रते के लिया में ने स्वारं में मूर्या में मूर्या में मूर्या में मूर्या में मूर्या मूर हे. ब्रेट. ल.ब्रेट. श्रयात्वस्थयात्रदेतः हेत्रायात्रम्यायात्रक्याः सुग्यासं यदेः BL.ŋৢ. এবএ.ড়ৢ৻৸৻৻য়৻৸৻ঀৢ৾৾৾৻ঀৢ৻৸৽য়৾৾ঢ়৻য়৾৽য়৾৽য়ৢ৽য়ৢ৾৽য়ৢ৾৽য়৽৻ঢ়ৼ৾৾৾৻ लयः ई.पु. विचयः हुः ई. हुः छः यह वः यवकः श्रुषः प्रतुषः परः हः चयः ई यः वरात्र द्वरायरा द्वर मेळ्य इत्या श्वमाया श्वरायरा श्वराय द्वर वि त्रस्यार्चे दाया क्रेव्राये दायक्षया लु : न्दायम्य : देवा क्रें ख्यारीया या थी : लु :

क्रम् अ.वी.य.ची.व्र.प. \mathbf{a} व्र.प. \mathbf{a} व्र.प. \mathbf{a} व्यक्त व्यक्

म्यान्त्र "क्ष्रिम्यम्ययान्त्र म्यान्त्र म्या

"ने न्वराध्यम् हे न् यायर में हा या केवा में न्दा व्याप्त में राज्य केवा में न्दा व्याप्त में राज्य केवा में र

^{🛈 (}न्यन प्रवाहित अहिन के मिन ग्राम रा १४५)

② (न्यन्'न्य्यः क्रें व्: क्रं न्: क्रं न्: मृन्: ग्रन्य: 149)

श्ची स्वा १७०० वर् १३ वर्षा वि स्वर् । त्रा श्वा वर्षा श्वा स्वर् । स्वर् स्वर्

[·] ① (ব্ণল্'ন্থর'ৡ'য়'য়ৢ৾৾৾ঢ়্'æ'য়ৄ৾ল্'ল্ন্থ'146)

7. वॅट'लटे'वगद'हुट'वॅट्'ग्रि'दर्ग'दर्देन्'खे'हु'वर 'वङ्गस' वा

⁽देवाबेराबदावदैःद्वेग्यातुः)

बैं। द्यर के व दें व ला बेंद साम द्या पर मार्थ के व से मा श्रुप के व (ग्री हर) हु ला ब्राम्कुल ग्रेम्म् देश्वेर वेनयाय। इस्तर विं ग्रेम्पर म्याप्ते नया। मह्यान क्रवान माने ना वरें है र महें द य धेद लेखा महेर्या महें र कु मेरे र धेया दर पहें या " १वाशुःसम्बा "किवाम्वयानाम्मा धराने हेवाश्चे या 1731 वर् क्ष्मवासम् वार् स्वर विरामित में निरामित कर् यान्त्रेर धना ही पद्भवा ही द्वारया र्वा वा वा वा ही की वा वा रेट ही नन्नार्यः कृतः ने ते प्याप्ता देन् ता होता नी ही हा सवाया नहिन हुता ह हे.हे.वर.र्ज्य.हेप.झेर.च.ला मेर.ग्रेश.हर.५ इथ.हर. टेर.त्रु. र्रायाका हे वार्षा तहीरवाही या स्वाया की विष्या स्वाया स्वाया श्चरतामद्रे पर्दे प्रताश्चराया दे दे में द्राया दे स्वर्था में प्रतास के स्वर्य में प्रतास के स्वर्था में प्रत न्दः असुद्रापरा पर्वतः अद्राप्ता स्राप्ता स्राप्ता अद्राप्ता स्राप्ता स्राप **ৼ৴:য়ৣ৴:৸:ৡ৾৾৽৴৴**য়ৢ৽৽৴৸য়:য়য়য়য়৾৾৽৻য়৸য়৽য়ৄ৽৽য়য় **गुराक्षान्तरायाह्म अवराग्री निर्मादकारा निराय अनुवारा हेन् परामी गुरावरा ।** न्ह्रवं नर्दे व्यवान् ग्राया शुन् मा स्ववान् में प्राने वेदान्द्राय प्रान र्षम्यः भेर् स्थाः पर्वः च न्यः पर्वः च न्यः पर्वः च नेरः सुदः हिराने स्वी:हि:इयामुय ळे:पहवा हिर्गी:लापिराळेवा परार्रः यं व्यापि नरामी छ पाया है नवा नरासे वाता नरासे वाता नरामि है विषय माने न विरा

Ф (र्ण्यायित्वि विर्म्प्रेन देवादेवा विश्वित्वि विष्युत्वि विष्युत्वि विष्युत्वि विषयित्व विषयित्य विषयित्व विषयित्व विषयित्व विषयित्व विषयित्व विषयित्व विषयित्व विषयित्व विषयित्य वि

क्षुंश्वाराधिकायल देन् व्हाराम्हालान्यात्र कामक्राम्य स्वार्था । विद्यारा स्वार्थ । विद्यारा स्वार्थ । विद्यार म्भेया इयाक्याके पहन विद्यापर केन निया के निया बःचर्। र्-क्षेत्रःषे-क्-वृत्तःग्रीतःष्ट्रं र्-वृत्तःयरःयरःय्रिन्- क्षेत्रःह्वयः लुता चुराना न्रा क्षाप्राय से प्रायम से वास्ता विकास के वास क यर-५ वॅट्स हे . यद्वा क्रे ब्यायहर क्रुरा व्याप्त स्थान विष् सुरायानहें दायाधेद। इंदारेदाग्री प्रमाद देवाम सुरवाधदे द में दवा य:न्दः अधुदः परः विश्वतः ग्रीः अन्वतः श्रॅं यः न्**ठेतः** श्र्वतः ग्रीः ग्रः नः इवतः ग्रुदः । र्रायमुद्रायदे । यहें द्राया यम् । वित्रार्या वित्राया वित्राय য়য়ৄৣ৾৽ঀৄ৴ঀ৾৽ড়৻ঽ৶৻য়ৣ৾ৼ৴য়ৣ৽ৼ৴৻৸ৼৼ৻৸য়৻৸৻৴য়৻য়ৣ৽৸য়ৼ৻ঀয়য়৽৽৽৽৽৽ त्रवेतः प्रदा गृयः हे 'विद्यका सुन्य र दाः दम्य प्राप्त र मा प्रदार सुन्य स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स ब्रिंद्र-ग्रु-क्र-दर्देद-च-इवय-दक्ष्मय-भेर-। ज्याप वयाक्री-वियः प्रि. विश्वयास्य व्यवस्थान ज्ञान । स्वाप्त व्यवस्थान । व्यवस्य व्यवस्थान । **ळेव**ॱप्रितःपतुम्बर**्गुरः**र्थःन्सुःयःन्धुनःञ्चःतःपदिःळेवःपत्तुवःयःवेवःः यानकुषाविद्या दे व्याबी नेद्राच राञ्च रायदार्मेदाया केवा में दे प्रामादा য়ৢ৽৳ৢ৾৾৻৽৻৽য়ৢ৴৽৻৸ৼ৽ৼৢ৻৽ৼৢ৽ৼ৽য়৾৻৽য়৾৻য়৽য়৾৻য়৽য়য়৽৽ न्दः म्बेद्रयः नङ्गंद्रः यः धेव। व्यानकुत् व्यावीः चकुत् ग्रीः यत्रः कुवः कत्ः बेर्-धर-देब-पहिंद-एहण्यान्वर्याचेर्-ज्ञुर् ग्धर-केद-पिर-पहिंग्य-न्सुद्राव्यान्तु प्रदेशन्तु व साम्रादेशकेया मह्युव्यात्या वेद्या प्रदेश मह्य न्या प्रदेश मह्य न्या प्रदेश मह्य मञ्चल "धिक्र प्रतिन् प्रतिन केरा। सुरादर्भ मान्य हुन हराना

① (বৃগ্ব'নৰ্থি'ভুহ'ন্ই্ব'ব্য'ইগ'29--30)

बै:र्यराहें ग्यायहॅर् याया यहिराया क्षेत्र दे हें बर्त्युया गर्वर यदे र पर्चित्रतः कुरुः ने रे पर्दे : केद्राया न् र : कुरु: क्रेरः क्रेरः क्रेरः क्रेरः सः श्वायः ग्रीः ग्राः त्रेषायः दयः त्र्यः त्र्यः त्र्यः न्युः ग्रीः न्युः ग्रीः न्युः ग्रीः न्युः ग्रीः व्यापयः । एवं त ह्रव.त.रट.अक्रुव.क.र्य.ह्येग हे.इल.ह्येट.प.जूबयावियापरीया. ॅॅं स.स.पथ.रे.रे बे ल प≲रे. बेट्टर ग्र.लट. थ.वेथ.तर.परे. *ॱ*इंद्:तु:पवण:प:द्द:। दे:ऋ:द्दे:क्रेट:प:तु:र:ग्रुश:यॅ:हू:वावशःहे: न्राक्षाः कुत्राञ्चरानु । ज्वराः श्चरान् राप्ताः स्य श्चरा श्चरा । स्वरापने । येगवारा सन् ब्रीटायदेः गः देगवा स्टब्स १ वर्ष द्युवा द्युटा वी वटा दुः बुगवाया रहा। त्यात्यताद्गन्यः सद्देन् श्चेन् ग्रीः **क्ष**न्या सदः सः निश्च नया सः स्वाया ग्चेता सदः । । पहेन'र्थ'झ'नर'वॅर्'ल' गन्याचे'र्पर'ञ्चर'र्मे' गन्यावेप'स्पर्थ'ररः ' য়ৡৼ৻য়৻৸ৠ৴৻৸ৼয়৻৻৻য়য়য়৻য়য়৻য়৸৻৸য়৸৻৸৻য়ৼ৻৻য়ৢ৴৻য়য়৻ৠ৻৸৻ **ळ. के य. ग्रीट. ज्रीट. ज्रीय. ज्रीट. ज्रीय. ज्रीट. ज्रीट** "र्चे द्व बैर-अर-पह-केव-नेव यें केन-वर्षेष्याचन-वृषावया

चमः भैयः ऋषः विद्रः देवः सम्बन्धः भैदः। मूदः ऋचन् मः देवः छेवः देवः गुर्-अर्व-ग्रॅंव-ग्रेर्-प्रमें र्-मु-क्रेर-अर्द-र-कर्-। र्मेंब-वेर-न्तरः श्रुटः यः श्रुः धेना नर्मेन् त्रवा नञ्च यानः सन् त्रन्ति नत्रा नत्र नत्र नत्र नत्र नत्र नत्र न यरे छेव श्रीर वेया ग्राम्या "किया ग्रायया पर रहा विवर यह विरा ख्यानु : हवा : स्व: न्द्रः वियायः श्रेष्वयायै : दवः इययः वर्षरः वर्वरः न्द्रः । न्यं वर्रवाता क्षेर्क्र इता इवाया क्षेत्राचर स्मानया है। या वर्षे वाया वारा तर्नेन् द्वरामञ्जूषायनेन्न् न्दा न्देशः इत्। व्याः व्याः श्वराष्ट्रः श्वरावयः बिदः तर्दे गः गै : हॅ वः ह् वः र्वे ग्वा र**ं यहः यहः ग्वः है रः** व वॅरः केवः र्वः रः वेदः वेदः रट.ब्रट.चट.चर.चर.कु.खेथ.कर.रट.इट.पहूच.कुर. त स्वेथ. इ.च.वंशाचेया.चु.क्र्यो.त.रं बातस्रीयंयाचे वे.त्र.चेथा.त.वा.चरी इंव.कर. त्य्यामञ्जेषात्राञ्चेषात्राची प्रायाप्त त्याने देशके साम मानाम स्वाया मेन हैं के चर-स्.कं.चय-कं.य.चया बट्ट-इय.यब:बर्ट्र-विश्वयाग्री-टर तथा विवादमातारूरा हेर् भी विवय ग्रवार्टा ₹.ट्रेज.श्रूचल **८म्.थ.** देवाकेन् वहेंद्र विदान्त्र विवाह विवाधित विवाह व <u>╤╌╈</u>╡╌╣┄╣╓╌┋╓╌Ӻ┄┪Ⴀ╌҅҅҅҅҅҅҅Ҁ╝╌┞┪╌ᡚ╌ᠺ┑┖╌ᡸ╌Ӂ┈┄ र्वेदै:नङ्न्-सुन्-क्वयावयाञ्चन-न्**र्वेयः**मन्-रेष्याःन्न-न्न-सुन्----इंदरने अकदारमें र नियादया स**ंकना महिंदर पार्यम्या क**पायप रया ग्री यदे इर मव पर्द न पर्व मा सर में हिन पर सहर पर मा साम हिन परित '**শ্র্ডি**শেরির'র খুর্র'ন'রার শ্রেমার করিব'ন'র বিশ্বান্তর বা রা প্রির (1728**)**

⁽a· (a· 「ロエ· 青山町・田美丁・「「中下町・706)

लॅंधवानीःकर्पत्व वाह्नेरायाबद्यतान् ने कवा अदा वन्दावते हवः मञ्जूषयः व्यवस्थाः र्यवायः अर्देरः व्यञ्चीः स्वायः द्वीः रहे स्वयाः दहः। श्रीः इस्थरा ग्री त्र हें ता श्वारा बदा देन ता ने त्र वा ने स्वारा ग्री वा ने स्वारा मा इसरायेगराञ्चेगाचरापाने नियानेराक्षराञ्चर वर्षाक्षरायाया **য়८.४८.७८.७.८ ४८.**७०० वर्षात्राच्ये ४.४.४६ वर्षात्राच्यु.सर्थाः वर्षात्राच्याः केद'र्य' देव' पहरायापा सर्वेट' हुराया विदायट से प्राप्त से प्राप्त वै.भ्रं.भ्रंबलकर्वाभेटा श्रेट.क्रेंचवाक्र.च.रटा नेवान्याता तह्रवाहरास्वामाविषाधिव सराञ्चराह्री र्येरावाह्रवाहरा लला "मुला वनला क्षेत्र य ते चु नतते तह न में न ने देश मा ही न म हो ฮน.พ๔ะ.ไ ผู้.มีผาซิะ.ยิ.ปน.ชู.พิพ.ใน.นีชม.นีชม.นับน.ฏิ.ฐม. न्डे-इर-बेन्-मा दन्ने-वै-ववत-पॅदै-खन्य-ख्रा-ध्य-ध्य-दे-वेय ने वि वतिःहेरान्तुः हेन्यान् सुन् स्रेन् स्रायहन् स्राधिन स्रोति स्रायहन् स्रोति स्रायहन् स्रोति स्रायहन् स्रोति स्र वै'यर्ने'क्रुबरहु। यहिन् हेवर्ग्री:गुःचरन्यः धेवर्यः वै'न्बर्यदे छेत्रः *त*तुत्पःचःत्यत्यः मृद्युत्त्यः यद्वैः नृद्युत्यः व्यव्यः नृद्धेन्। तुः तेतः यदः इ न्मॅरायायाधेवाकी इंपासिबयायायात्वायाच्या अक्ष्यायाची निवस द्वान्तान्त्राच्या विष्यात्तान्त्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या नवर-तृते स्वाव भेद गुर्-श्वराधर । देव धर नव नव वा " मिलेख न्यायाना नुवाने र्वं या वा न्याया यव नुवी न्याया निर्दे न क्षाया के ना वा गा मुद्रे द्रो निवि येदाया पार्या द्रिया द्रा ही स्व निवा ही का मुद्रा स्व स्व पत

प्रवास्त्र विद्या क्ष्य विषय विद्या क्ष्य क्ष्

क्षे. वया ज्याया श्री मा प्रस्क श्र

हिरालाक्षेर भेलारमारा केरा बरमाय प्रदायका सरा यह दिया श्रीमारा इस्रवासर् दे। है। र्से 1730 वर् र र र र र हर र है विवेश सदे । स्वार ष्ट्रि.स्.[.]ञ्चत्रच्चर्रतप्रमुद्धाः केरा चेरा प्रचेर प्र **र्गरके** त्युर र्दे हे दे हे दर्गे त्र्वत्य र्यापर एट यते वाय वे क्रां वित्रावरातुं सरावर्षते चुनारात् स्वाया रेवा रहेव चुनायाता **१.**५न.व.१५.५८.७.नेव्य.वेय.रेव.यहर.्..तयाययः र **यावयाः** सम्प्रम् देः त्यम् । स्थाः सार्यः पश्चाः पश्चाः मृत्रः त्यः त्यः त्यः । याद्यः । याद्यः । याद्यः । याद्यः लट.थ.चुव.केंचळी कंट.ग्री.वेषथ.बुट.कंट.कुथ.य.चमंट.प्रीट.ख. **€८.**पध्ट.तर.रेथालिय.श्रु.स्बे.से.दें.सेव पब्ट.पद्य पंथा क्षेता क्षेत्र क्षेता क्षेत्र क्षेता क्षेता क्षेत्र क ४.सं.चर-श्रेब्रश्नर-विकार्न्द्र। <u>हिर्</u>दान्नका श्रेब्र-छर् कीर-सर-चर्न्नद्रे. न्र-केर-सब्र-संस्ट-रे-र्र-पठलाकु-विन ह्रिर-वृत्तिलाईर-स्र-स्टनः **तनरत्राक्री मु । व्रॅंब : नरान प्रृंब : धर्व: धर्म दे: यम् दे: यम् : स्याध: यार्वा द्वा : स्याध: यार्वा : स्याः : स्याध: यार्वा : स्याः : स्याः : स्याः : स्याः : स्या** वेलान्ग्राम् ग्री:सराम्बे:लक्षाम्यः नहेंदान्देवासदेःगगदःवर्धनःयः.... पश्चिम्याक्षेत्रया **ध्रवः १८८ अ**त्वेरः परः परः पर्मः पर्धः त्याः स्थायः क्रमः **१८.ज.७.**च.४३२। १.८ब.ज.४८.ज्ञब्य.७४८.५३.५३८.४८.३. द्वादः कद् व्याद्वादा कु अन्या भेषा देशाचा वाह्न द्वाद वेनवा स्वाप्त हार <u> चर्या सत्य स्टार सदे प्रतृत्र पर्से द्या पर्से द्या हे स्वरा हे प्रत्या हे द्या है । स्वरा हे द्या है । स्वरा हे द</u> **₹**ਗ਼ਜ਼ਜ਼ੑ੶ਜ਼ੵ੶ਜ਼ੵੑਗ਼੶ਗ਼ੑ੶ਜ਼ੵ੶ਸ਼੶ਸ਼੶ਸ਼੶ਸ਼ਸ਼੶ਸ਼ਸ਼੶ਸ਼ਸ਼੶ਸ਼ੑਜ਼੶ਸ਼ੑਜ਼੶ਜ਼ੑਜ਼੶ਜ਼

स्रह्मान्द्रा वहेदानीमाशुक्रावदी बदाके प्रवादिक महिला दश पथ शु. श्री प ता किंदा खेया या चाया था। श्री पथा हु रा खे प दूरा तावा स त ७८.र्थेत.त.¥थळ.ग्रेथ.रु८.२८८,धे.से.स.पेशेश.पंथाप**र**.प**रं**.रीय.<u>ग</u>.त∠... तहिर मेलाम हे सि वया मही ग्राम्यामरा ने विवास या मही । मृत्रेयावयाम् इत्रवं यापरा यदा छै। प्रयापत् व्यवस्था स्थी पर बन्नवःगुरःग्रुवःद्रवःवःकन्यःयःवश्चरवःयवःवःवःविनःन्रःश्चरःग्रदःः चक्षः त्र्रा मुंब विषान् गर हिंदा वी का ने दे ते विष्य का वि हें ब हि दे त ৾৾য়৽ৢ৾৽ঢ়ৼ৽৴ৼ৽ঀ৾৽ঢ়ৼ৽য়ৼ৾৾৾ৼ৽ৢ৾৾য়৵ঢ়ৼৢ৽ড়৽ঢ়৾৽ৼৄৼ৾য়৽ড়ৼয়৽ঢ়ৣ৾৽য়৽য়ৼ৽ড়৽৽৽৽৽ प**ह्मल**'सद्भर के'नेगल'स'चुह्र'पर'ग्रगल| चग्रत्यश्चराग्री सर विरः इवकः हेलः शुः प्रः केवः ञ्चं प्वचरः थेः वेकः त्यः तत्यः व्वदः वहं रः रेः न्मताङ्गान्म केराक्षे केदार्यन सम्पानम के सं निश्च व व वर्षा न व वर्षा श्च.पह्र.त.बश्चर.तर.बी.बैंच.त्र.केंटय.लूरवा.**थी.** शु-गर्भयः बिद्रा द्व-र्र-र-र्शेषावि वार्निरायालवयाया वाषवालर सं. यपुः वर्षे. लगाम्मरम् वेताला व्यवस्य व्याप्तान्ता सुन्देव न्यायर प्रवेदला मन्द्र लाम् शुवा श्री या अळे वा न में वा से प्तु । सना व स्वाया में या पहिं म्या सुवा न्मा हे वा नबेरलः संग्राळका स्वारा कु । अर्हन् । यहे व : अर कु ल : यर : अर्हन् : यर दे**र** প্ৰন-দ্ৰ-মাইথার্থা

क्ष्यं शिलाचेट्र प्रचिन्त्र स्त्राच्या स्त्

र्राकेरकार्वे वारेका यर अर्द्रा गुरा वदा ईवार ग्राय दिवा ग्री गवक शु शुरायायाञ्जयत्र तरी द्या या भ्राप्य अर्थे व ग्री व तर्थे व श्री व श्चेन्-दॅराञ्चयान्द्रेयाञ्चरानरः श्चेनयानः र्वे र्वेराचेयान्वे याचेनः । मु ने ब त्याय प्रच्या स्थाय र वर प्रच्या यह वर हो दे दर्भ र य वर सह र र **लः नद्**राही रः न्त्रात्या कु वा हे दा व है या द्राता र हा वा से वा व व व हिंदा न्या व व व व व व व बेलाञ्चवः लु.स्वायद्वायादा। दे व्यवः देदः वेवः विः यः द्वाः स्वायः ग्रीयः र्बरः न्यंर् प्रहरः श्रे : बळे ना हु ता न्व दाया ने दि । ता न हें दा करा । तहु ना र्यं द न न तर स दिन गुर प क्रें त तर्न हरा अर पर भ्रास्त स शुवाकेरायामाञ्चिति के दिन न्दावकरायत वहानान्यं नान्यर याने त्या बर.म्रेल.ग्री.बर.प्रिय पश्चेर लट्य.श्रेपया गा.श्रीत श्लेमवा.यथा. **ब्याः** पश्चितः प्रतास्याने प्रतास्य विष्यान् विषयान् विषय वन्नयाः इटः निवेयावयाः निवः देनयाः निवः निवः नहमाः वहनाः | विनामिक्यान्ता विनामिक्यान्त्र विनामिक्यान्ता विनामिक्यान्त्र विनामिक्यान्ता व **ढ़ॕढ़ॱॾॕॴॹॖॴॹढ़ऻॻऀॱॳॸॱ**क़ॕॳॱॻॖॴॱॳॴढ़ॹॖॺऻॱॸॣॺॺऻॱॾॕॺॴॸॱॾॕॸॱॱॱॱॱ とうしゅうないがたいあたいがないかいれたいいます! **A**51 श्रमकारेरायहाळेबारेबायाळे र्रा **ऍबायः**ग्रीयाञ्चाः स्वाः नङ्गयः द्वाः न् न् त्व्याः न् न्रः न् यवाः यद्धययः पहें वाः । मन् कर्यातर् यानवर्ता तश्चना श्चना स्वातास्व स्वान हेता है ने ता

ह्म बारा प्राप्त प्राप्त व्या श्चन्र सङ्घणः स्तर्भः के स्तर्भः क्षा क्षा का स्तर्भः का स्वर्धाः स्तर्भः विश्व इयमः सं सं र देयः हुन् म् इव कर् म् वयः म म्यार प्रवर मि "तह्यायमॅद्राविरेश्चिर्पायहेवायाम्हाराया निषाया केवारा निहा। न्ययाद्वेरावहेदाश्चेरावहेर्नयराष्ट्वयाद्वेरयन्याक्वेदाद्वराद्वरा क्ष.चर.बुर.) पाञ्चेयायधीयाबुराञ्चे प्रयीपानधात्राच्याच्या सराचेरा म लॅमल थे मे देल सु दिन् धर छ ला १ विकार लाग सम् त्रमता ने दे : यहा मा ता हुँ न : य ने क के क : यहा क : यता र न : हु क : र स्मी : ख : हु : " ळे दिरान्यर ळे दा चे राया थरा वें रातु की नृतर यह राष्ट्र हिरा ह्वा स वितः वर्षण्यः । गाञ्चान्नः अस्वः श्वापः इत्रवः र तुवः न्द्रवः वर्षः । **ਛੇਰ,-८८, १०००, पूर, १०००, १००** मानक्यात्रज्ञुनासुत्याव्याकेरानेंदायान्दा। १५७ न्वयारीनानीलुदा पात्राञ्चन त्रिया ने हरानी त्राया से निया पर्दि निया मा स्वीय पर्दि निया मा स्वीय वयामदे ते से स्राम्य क्रिं से दार स्राम्य मान्य माने स्राम्य स्राम स्र য়ৢ৴৽ঌ৾৾৾ঀ৽য়য়৻য়ৢ৾ঀ৽য়ৼ৴য়ঢ়৴৽ঀঢ়য়৽য়ৢঢ়৽য়৽য়ঢ়৻৽৽৽ चर-र्नाद-इव-स् न्तर-र्द-तर-के-लिबाय-जुबाय-जुबा-इवाकी-ले-ह्या-हेदः परुषः नृद्यः । वर्षु गः पदेः श्रेः इत्या वेषः परुषः पर्वे नः परः यह यः प्र.मेबर.के.पर्याप.पट्ट.क्यान.पळेला " ®क्यान्यायायायाय वर्धेन विषा वदःवहुबानेवेनुबाईन्वे अर्ने अन् रामवे हुदामाम्हिन्यायान्यन्य

① (為·云平下等可如·平美丁·六平下初·756)

^{② (ন্নৰ্'নব্ধ' ই'ক' ইন্'ক' ইন্'ক' ইন্'ন্ন' নিত্ৰ':170)}

ব্ৰেন্ট্ৰ-জ্বীক্ষ 1731 ইন্ প্ৰশ্বন্ধ ক্ৰিন্ত স্থান ভূম কৰ্ম কৰিব।

1733 ४५.६ श्रुट स्र श्री र पर से ले प्रा में ट.स. हे से र য়ৢ৾*ঀ*৽ৼ*য়য়*৽৸ৄ৾ৼ৾৽য়ৢ৻৽য়ৼৣ৾ঀ৽ড়৴৾য়৴৽য়ৼ৽৸ৼ৽৸ঀৼ৽৸য়৽ঢ়৸৽৽৽৽ त्यर र्राष्ठा खेर रहरा वर्ष र पर्ने चेर खेर खेर खेर खुर बिर कव त्रम्थाः क्षेत्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः विष्टः विष्यः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः ঀ<u>৾</u>ঀৼয়ৢয়৽৾৻ৼৢ৾ঀ৽৾ঀৢ৽য়ৢ৽৾৾ড়ৼ৾৽য়য়৽য়ৢৼ৽য়ৢ৾ঀ৽ৼ৾য়৽৽৽ रेगायाना हेया नहीं या <u>ष्टि विवादी पञ्चर पर पुराष्ट्र मृत्या मृत्य विवेश सर पुर्व स्वा भ्रूर मृत्यर "</u> ेषाञ्चनःतु पञ्चनः द्रवाञ्चे क्वेरेके गा पकुनः ञ्चनः यः के पह्रदः कुतावरः । । ब्रम्ब्रायःया र्रायं र अर्थे ग्रायर ग्रायं र अर्थे द या विषय विनवासन्। "मदिःवासं स्वास्ताम् दात्राम् दात्राम् दात्राम् स्वास्ताम् स्वास्ताम् स्वास्ताम् स्वास्ताम् स्वास्ताम स्थानु स्पन्यान्तान्ति स्थान्ति स्थानि

विष्याक्षः स्वयाक्षः स्वयाक्षः स्वयाः स्वयः स्वयाः स्वयाः स्वयः स्व

⁽劉·人山之、美山如、山美人、子中、天山、831)

द्गर्स् ते श्रुर् प्रवेर्ण हे शे श्रुष्ठ् वृण्य श्रुष्ठ् वृण्य स्थल छ वि प्रवे श्रुष्ठ् श्रेष-द्रा प्रण नेषणी द्षे वि श्रुष्ठ श्रूष्ठ श्रुष्ठ श्

इस्राध्यावरावरा। "तर्नाञ्चनरातहस्राम्युर्याचेदायाकेवार्यावरा <u> इस्तिश्वास्त्राम् वित्राम् वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वि</u> इर-विवयाशियर् वर्गा वर्गा रिवियाल्यर लट्ड शक्यायाशियर ता चक्या हे.धेर.चरश. कॅरश.श. क्ष्यंतरा श्री. वि.सं. चश्रुर. क्या. तदी. चर्या. **ঀ৸য়৽৸ৢয়৸য়ৢ৸ৼ৸ৣ৽৸য়য়৸য়য়য়য়য়য়৸য়৸৸য়৸য়য়য়৸৽৽৽ 山ら**ス・スロ・スロのないと 治・マヨケ・「くれい、スガス・ロック へれ、そうない、スロック ख्याया या हे व्यापम्य क्रियाम्यव म्याव म्याव मा क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया विनयः मःनगानः हेरा ही :केषाः अस्ययः वयः यान्तः नृतः यनुवः मः वेयः मः **ढ़्रिन**'ल'दर्शन्। प्रस्ति द्वारा व्याक्षिता प्रदेश्य द्वारा लाखा प्रस्ति । मते तस्वि ताला व वा वारत न्दां व व वारा तस्व दार नते हे वा तसे वा ताला न बर्दना नेते जर हिन कुते के न्या इवल न्या में राय केन में ते प्रमाद था व्यामकु महिन्मित्रियाविराशिक्षात्राम् द्रानी द्रानी वि भी वि स्टानी য়ৢয়৾৾ঀ৾য়ঽ৶ড়৸য়৽য়৾৽ঢ়ঽড়৸য়ৢ৾৽ঢ়৽য়ৢৼৼ৻৻য়ৄৼ৻৸৸ৼ৻ঀয়৻ঀৼ৻৻৽

नदेः शुःबद्धं वः विवादश्चतः शुः व्याः । विवानयाना स्राप्तः दिन् विवादः ₹वा.सप्त.व्यंट.वाप्त.व्यंव.व्यंत.व्यंच्य.वाचवा.व्यंच्य.व्यंच.व्यंच्य.व्यंच बह्बया पठन वया श्रव तिरा बुषा द्वारा वित त्या श्रु तिर्दे न से दाया न् गुषा **ळॅ र**न्द्र-**ळे द**े पॅ 'ग्रुट्र-च' अळॅ द' बेट्र-| **"ने 'वया** हॅ र ज्ञा 'प रु 'ग्रेग' पति देता हेरा गशुका ही ग्वार भ्रार दर्भ मुंदा रावाद हिंग मेंदा के द चॅदे ग्रेर ग्री प्रमाद है 'सेर मानद मान बेन हैं। इ ज्राप ह महन ठगः ठेराःयः वै : तृ : स्परेः च तृ वः सर्वः इतः वतः र दै : वैदः ई वः यः ये : श्वरः क्षुः : कृ.म्ब.व. द्व. द्व. व्यक्ष्या लवा तार्टा साव्ययायाय विर्वाण्य ष्याकेराष्ट्री या १७३४ वर् भिरास्या यर धेदा पर सद्दा "दे द्वरा न्यंत्र-इत्रान्ते प्रेत्रानी स्ट. इत्यंत्र-हित्या म्रान्य हेत्र स्ते म्बर धेमा पञ्चात इंग म्बर हे न सु सु सु भ रूट रे न ये कि रे हु र य क्रं.क्रंया पचर.म्या.लेबा.क्रवं.चची.लंबा.पथा.वीच.तपु.क्रक्टं.इंय. स्य हेद्राच मान्य वा इर इया स्या हेदर मुंद्रा स्या हेदर में द्रा स्या हेदर में द्रा स्या हेदर में द्रा स्या हेदर में द्रा स्या हैदर स्या है स्या हैदर स्था हैदर स्य हैदर स्या हैदर स्या हैदर स्या हैदर स्या हैदर स्था हैदर स्था हैदर स्या हैदर स्था हैदर स्या हैदर स्था हैदर स्या हैदर स्था हैदर स्या हैदर स्था हैदर स्था हैदर स्था हैदर स्था हैदर स्था हैदर स्था है शु. यूर. त.र बर. थुर. च के प्रिया यूर. वि. स मा म के या र पर पर या र इयतासुला ने हेरा झार्या ग्रीया यह लान्ना हेर्नान्ता हेर्रा ठ्या इवराक्ष्रिः वह यान्तरस्याने द्धनान्तरस्य । विराधेनया वैनानेरा वत्रवहर्ने वया वया व्याहेष क्षेत्रक्ष व क्षेत्र हो त्र हो निश्चर हो स्वर है । वर्ष

① (र्यम्'प्रवाक्षेत्रक्ष'म्म्'म्र्रव'172)

लट.कुर्.टे.पङ्गिताल्ये में साहट.ल.ल्यां श्राम्य क्षां मेंट्या हुं ट्रा में श्री स्वार स्वार प्राप्त स्वार स

देवयः भीटः श्रं त्यात्र स्वात् महिन्य हे स्वाय् स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स

^{🛈 (}दंगना-नलबाक्ने अःह्रद्रकः वृन् ग्राह्न राज्यः 175)

ब्रुं'न्ट्र-द्रे-चग्निवेल-कुर्यासुर्यात कुर्य-न्ट्रा व्यवतः नृतुर्यः वर्षे 'नः बदत-न्यानने क्रिन्या र्श्वन्यते क्रिन्ति तकन् रहेन् हेवा यश्वरान्ता <u>इयान्यकाञ्चर्यान्यव्यास्त्रम्यात्रात्यन्यम्यास्यान्यम्याः द्विन्यः वृत्यः नशुस्य। "</u> नमातः क्रवार्यम् वर्षः स्टः स्टः तर् न् व्यवः धेनः नवि वः नुः क्रीरः नर अहरी के अंशन है निवे ना वेश मूरा आ के वे मूर् न्मॅर्याप्तेन् सुराष्ट्र त्यदे न्नायायळेषा मन्तु वेयया हेयाय मन्तरा য়ৢ*৾৽*য়ৢ৾৻য়ৢঀ৽৻য়ৢঀ৽ঢ়ৼ৽য়ৣ৽৻ঢ়য়ৼয়ৣ৽৻ঢ়য়ৼয়ৢঀ৽য়য়৽য়য়৽ঢ়য়ৼ৽য়৽ *बिना-न्दा*। गुःपः सः न**ञ्जः अ**त्रः न**ञ्चलः वर्षः** गुः कदः तह्नं गरायः न्दा। **नेदः** बर्वे बहूर् वया सूच्या ह्रा चेवर बीच व्या क्षेत्र बीच व्या प्रविव *ॺॺॸॱॿॸॱॸॺॕढ़ॱ*ॻॖऀॱॺऻॸढ़ॱय़ॕॱॹॖॱऄॗॱॸॕॖॱॸॾॸॱॸॺऀॱऄॺऻढ़ॱॸॹॕॱॸॿॺॱॱॱ न्दर:इंग:श्रूर:र्मेंद्र:रान्द्रेर:श्रुर:गै:पग्द:अ८ग्वः क्यवः वेग्वः.... मनः यहं र किरा सं दे दे ज्ञाना महाया परि छे ता हेना हेना याना वर वराकेनरा वि नश्चर हे रेबान विवाय पर ग्रे रू र व्वायर के नर लपर. बहल. वि. द्वेच क्वा श्वीय. यू. पर्ट्र ट. हेर. पङ्गल. वया व्र ट. हेर्या. **इ**थाग्री:ब्रेट:थर:ब्रेबा.स्रचया ज्रबा.पब्रपाचिय:च्रेट:थेवथ:यूराप्ट्रिट. भ्रमणः मदेः में स्वरं म्याः सर्वे दः मृत्रे दः श्रुः मुः मकुरा स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं विषयः द्वीः बदः विदेशिद्दराशुः वें 'झे पार्यः मी वी देवें ने या या विष्टि । पार्या विग्रह्मा देमायमानुगम्ब भिन्यायम्ब म्या विद्याना वे तुन् भैटा। अहर द्विष्यात्रेया यदी न्वेषाय न्टर पठरा पत्या क्रेया य न्वेषा

① (५०न प्रवा के वा के र क. में न जर्य 177)

त्रमल नेर केवल पशु न्र तक्षल लु पठर प र लेवल ग्री क्रिंग बर्ने विषया विषय हुर वे हुर पान हूर परि वरा "रेर् र्र वर वर्ष म्बर्श्याम् नियान् विवादः ब्रेटः ववार्ष्य त्या व्याने ने में दारा सुन्य वर्षे व केव-य-न्दा अद्राञ्च-देव-य-के। स्राप्त-विव-त्वारायायक्रवरान्दर बर्चयारा चवर चिराच क्रेर पश्चेर। चविषय श्चर पर्ध वेच चिर्धिय बर्दर विनयः मृता मृता निमान बहिदान्नेत्रकेदायान्ने अवस्यानुत्रकेष्ठाः विदान्ति । मन्वः ख्रान्यं र मल्याया यह या प्रते श्रुः यह व र । र्मेदे-र्ग्रुयादिनः म्बे-च्रेक्-स्माध्यः म्याययाया सर्हार् हरा ह्वारे माः मैकाभू वाया वेनका सम् यह वा बेटा । वि वेट रिन्य के से दे है मा तक्तामीयामहुन्ने भीवाक्षपालुया सुति ने निर्माणका वरा ततुना ह मुश्चर्र इत्राक्ष्य द्वर रायहेन्य प्रति नम् वर्ष নম্ভুন্ম ব্যা चक्रैजान इश्वर है . हिन् जान हिन् विवयान है . क्रें न वा मूर्भे न नहीं म्बन्ययामा क्षाप्तराहमें पार्व क्ष्यया शु र्क्षराहिता श्रुप्य अमेव केव **रॅं-२्र-बॅट्-अ**दे-न्न-द्वेव-इवल-ल-हे-क्रू--ब्रॅल-दॅल-क्रु--्रॅव-इवल-ल-वे ळें वा कु : क्ष्रां में कर मार्च न के कि के वा का मार्च म

^{ॾॕॣ}ॸ॔ॱॸग़ॱऄॺॱॿॸॱॸॖॱऄॱॸॸॸॱऄक़ॱॻॕॱॸय़ॖॺॱॿ**॔ॸ**ॱव॓ॱॿॖॱॸ॔ॺॕॺॱऄॱॸ॒ॿॱॱ ङ्गपलःयः के: न्दः घरु लाने : पशुः पदे: पर्मे न् : या कु : केवः यं : वर्दे वः यत्नः यत्तुः : बर्दर्यते बहुव पहूराहै। विवेशवानुरा विद्यारे देते तुरा सुर कराया है सुर-हर्या मन्द्र बहेदायर-दह्मियायात् वी श्रीद्र-सुषायदी श्रमः न्रामुकायान्द्रान्त्रायदे प्रवासायाम् मुन्या ठवापतिवातुः क्रीकायमः । कैनल'|व'नश्चुर'वेट'| दे'-द्ग'नी'श्ननल'सकॅद'ॲद'दबॅदल'स'बॅ्ड् न्हेन्.हु.र्गर.चदु.जुव्यात्यत्रात्री.झू.रूर्तात्रक्याइट्र.चेष्यायवर... ৼৢঀ৾৽য়৽য়ঢ়য়৽য়ৢঀ৽ঽ৾য়৽ঽৠঀয়৽ৠৢ৽ঽয়ঀ৽৸ৢয়ৼ৽ঢ়ড়ৢয়৸ৢ[™]৾য়ৢ৾ঽয়৽৽৽৽৽ म्यायानः क्राप्तरः श्रम्याशुः तृ ।यदे न्ताः यस्य मान्दा। ब्र.क्ष.चर्द्र. <u>र्नर-र्म्नर्थः व्रुविधःश्वेषः क्षर्-ग्र</u>ीः इस्यः यः चुर्-पः श्वव्यः ग्रीशः स्रवेरः 871

① (和青'和内木'丹君'夏二'中美气'青年'芒有'40-42)

नम्ब त्याँ दे देव क्रमण केव वह र द में या ईता राम्य विन क्र या विषा देवैः यवः तुः हेः केदः वयः दः सद्यः सुः सुः तुः वैः सुदः हं गव श्रैः व्यवः हवः ः ः मनेरमा विवासिर मुद्रा वहसान् चरमा मेंद्रास केवारी व ने सामी हान बेदः पर्दे : चम्दः देवः केवः धं या च श्रुद्यः हे : सुयः पर्दे : पष्ट्वः यः द्दः । व्यदः प्तिःक्षॅरःवडुःब्राध्यःग्रीःदहेवःक्षुदःद्वेषुःग्रुदेःवग्वरःववःद्वेःवर्षः...... न्वेर्यान्रूर्'यर्द्। रर'र्ष्याव्याग्रुर'म्रुव'र्य्यर'श्रेन'म्ययान्र के चेन् विताधिव गुरा श्रेमवानु वाग्री मेन् त्रायरवा वाह्य न्या स्वाया मतुन् है सारीन् न्यान्यायरा होन् क्षां सराम्या महेन् सामानु त्या विनाष्ट्र ळ नव विष विष । र इत्राचर् छे क्विर स्वायवतर्व वह रेंदर विष ब केव रिव ने ने नवार क्षुर र्रा पर क्षिर राज्य ने में निवार क्षेत्र रे व केव रिवार केव केव रे विवार केव केव केव लयाय र न श्रुय यथा र य ग्रुट ह्ना या न में व स के न या में व य व से व स भ्रे.मुल.र इत्,र्र. विरा। इर् ययरथ. यर्रे क्रेरे व ब्रेर्य राष्ट्र स्थानश्चरा तनर्'त्तुर'केर्। क्षेर्'त्रर'व्याण्यर'म्र'श्चय'मते'र्देव त्यात् श्चर्रामः बेर्-पर्द-क्ष्म-नलबरग्री-दद्धत्य-सुम्लादनुब-य-ब-वेर्-र-विम-केलाग्रुट----न्में या वे या नगाया व्यव वे ना मुयान स्थाना व्यव गुरा है नया हुया या

 मुत्रा र्ह्र चन्य्रम्य सुन्य सम्दर्भ स्त्राच्या र्ष्ट्-यू:कृ:वेव:र्षणवार्मेट:अदे:बे:ठ्ना:इबवा धदे:बे:वे:द्न:व:न्टा। चमातः ह्वा बन्तः न्यं वः संगवा हुतः तिवना नववः प्यतः हुः लूबान्न वि.क्री चलान्नी पर्धिबानाः सूब्यानाः सीयाः बी. 551 पठर.प. वश्य. कर. प. यहतावि ह. ग्रे. पठरा नवर विदा दे . दे य न्दा क्षारा प्रवी यान त्या विषया स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वापता स्वापता स्वापता स्वाप्ता स लट.ब्रेचय.पर्यय.क्रे.च्.च्रे.च्यं.र्य.व्यय.र्ट. बहल.र्ट. पर्या.क्रे.स्व..... वेवतः त्रवतः व्याः व मुनःमदैः नः नः द्वेन। तथन। द्वेःस्ना मुलः सळनः संग्रायक्रनः इयानुवायहेवायन प्रमान्विष्यवा उत्तर्भाता में स्वाप्त यर म्याया यदे सुदारु मेर्रे राष्ट्रिय विषय होता यदेवा सरादित्। इन् बरः इरः क्षुः देवः मः क्रेःवयः बङ्गाः स्वायाः वन् । न्रः तहो यः नर्तः तहायः । मः दिने ग्राध्यः वहन्। दे व्यायः ग्रायः ग्रीः भ्रम्यः द्वरः ह्वरः श्रेन् ग्रीः बद्र-म्र्नाचन मुलायु पञ्चर

यान्ति, वृष्ट्रस्ययाः वयाः श्रेवः श्रेवः श्रेवः व्याप्तरः महेव। मूरः स्राप्तः स्रापतः स्राप्तः स्रापतः स्रापतः

भ्रास्ति । त्या क्षेत्र विषय व

¹ र्यम प्रवा के अ हिं क में म श्र र र 210)

② (र्यन् पत्रमान्ने स इंर् क. मृन् ज्रास्त 295)

बर्द व।

संन्द्रः "म्राम् दास्र हेत्रस्तरम् त्रिरः विष्या मात्रुः व्यास्त्रा स्रेत्रः स्रेत्रः स्रेत्रः स्रेत्रः स्रेत्रः मुरान्द्रभू पचर न्ययाय मुना देवाया महेरायते वि पूर्वा पा है। देबायानाबुबायदे विप्याखे तुर्वा ड्विंदाने के पूरवि रूटा सुराया थे म्री करे के महिलाम करा ही महिंदा रिया पर में मान हु महिमा त्तृ **ग्रां**यासः वहुदः द्रः तस्तरः तेरः ब्रेट्सः संग्वा ग्रीकः वसुका हे । स्र स्रवः क्केंद्र-विर-विवयः पदे कु अक्षंद्र-स्वयाग्री म्वेर-ध्या पति स्वया तु स्वया बै. इ. इ. ब. थ. य. हें व. ब्रॅ. र ट. मशुट. ब्रेट. प्यायः यहें . कुरायः मवटः। दे <u>हेलःक्ट्रःबःन्धुटःकेट्रःम्वयःतुःम्वेग्वारायरःकुद्रःववेःवेरःयदःश्चःःःः</u> श्चर्मा मेला म्रेरा द न व दे दे म्राया अहा में नहा निया नहा मेलह है स्वाया कु.ब्रुट्.तर्वे. वक्र. थे.ब्रुट्.वर्वा. कु.ब्रुट्.वर्वा.व.क्र.कुर्.वर्वा.व्य **ब्रुक्-मु:ह्वेद**-सॅ:न्ट्-वरुष:स्यावायवेषाने बॅट्-अ:वे वर-न्वेव्यायः ने वेर् ग्री र में र या या या र या शुः स्वाया यदे । स्वाया यस् ग्री या यस र । "1 डेलान्यलयम्पर्मा दे हेला में दाया केवाया कुरिया विकास मा तक्षायावि.वि.श्राम्बायातम्याक्षित्रार्यः न्यान्ता हि.स्यावि हित्यरः महेकाइव.मर्टाम्टाकाक्रव.स्राह्मताक्रवाक्रमाची.पात्रावयान्ट्यापदे.वि... धनाः द्वेनावान हत् यायोः स्वानाशुवान्ता हेवः स्वानुः स्वेनः यायाया म्बर्दिन देशहर्षाञ्च वार्यराज्य मान्द्रस्य वार्यराञ्च व नन्याक्त्यरायत्रायात्र्वयान्तः हेवार्यायात्रः विकास्यात्रः विकास्यात्रः विकास्या

^{🛈 (}र्यग्रवस्थेःसः हुर्-ळ-वृग्शरयः 219)

नवरः। "धेवेषःविष्रः धेर्।

स.पर्नू र.के.याचे हैं न.जन्। जिस् नी प्रीयाय वित्र अहिया मुं प्रवि न्या मदे "शे. १८८.वेशय स. अंधे यात पर्दे चेयर. ये. पर्वरया सदे भूरा "शे. त्र्वा में भुवता वर्षे व ज्ञुताव म्बारा ठत् विद्या निवाल केव प्रेरे नगायः नविव बे : न्नरः अळे गः वर्षः हे : मृ मृ मु से दे ते : श्रुवः ह्यः मु यः यः वेः स्यानपु.र्द्रान्थेय.कुय.कुय.कु.म.चेश्चर.चर्यात्मयानश्चीपयानाचेपयाना नेबर्चन्द्रः हैं चीचः तपुः रंचरः है ने (ब्र्चयः र्वेदः स्ट्रियः स्वरः मेवः) वयः रमःमृत्रकाञ्चला" ७३वः ग्रायाम रूपः हे स्टै में राजा ग्राया श्चेर्-मृत्र-मृन्मृत्र-ह-मृत्र-द्वेष-द्वेर-क्वेर-द्व-। श्वेर-मृत्रेम्वायाय्य-ळेब् :रॉत् ग्री :प्रे :प्रें दे : वंदे : वंदे : वंदे : प्रें :प्रें :प्रें :प्रें :प्रें :प्रें :प्रें :प्रें लबा वै न्त्य व वर विर विषय के ते र इसका है न्या तर वा के में वा है । त्रवारान्त्रवार्वार्वेरावीरत्वेराखेर् वारवारीवानस्यते द्वाराष्ट्रियास्य ह्ये र्ब्रुबयःशु,प्रम्थः योप्रया प्रयाश्चियः संस्ट्रियः वर्षाः वर्षः योदः प्रमूरः नः न्दा वेव.कर. वेय.कर. श्रम्य.य. य. नृह्या पष्ट. य. य. य. व. व. र्रायव्यामञ्जीयार्षेत्रार्थेवार्यान्यार्यातः श्रीत्रार्वेताः के वा वै। नलवाळे न् ञ्च । स्वाप्त भवा सुत्या स्तुवा ग्रुमा । तन्या न त्या भवा भवा न

① (ব্নশ্বেলমঞ্জী ম ঈুব্ হু ব্ মুন্ গ্ৰহ্ম হৈ হ

② (য়ৼ৾৾৽য়ঢ়ৼ৽ঢ়ঽ৾৽য়ৢৼ৾৽ঢ়ৼ৾ৼ৽ৼ৾য়৽য়য়৽

मदे क नम्बार्म निर्मा दे साहरा महिना ही तेर ही न न हुन महिन स्ति रहा ही सा श्चिमः मञ्जूषाः वः सदः क्षेत्रः स्वरः ग्रीः यात्राः स्वरः हिदः विदः। विवः करः सम्रोतः क्रन् र् व्यापा मञ्जा क्रा क्री में व्यापा क्रिया क षे नरम् भुष्याययम् विवास्य स्वर्थायायम् विवास्य स्वर्थायायम् । न्ने स्क्रिन्य में के धेव क्ष्या मते क्रिया मत्र यक्ष्य स्व " विषान्रा इव.कर. श्रव. क्रवाया नवेश श्रमण क्रवाया ले नया रेने. पर्व.पावियाम्बेदामञ्चामा चयाम् दाञ्चामा निष्या वियामदे भूरा "क्र्ययाश्चर्या श्रीतराक्षेत्र में तर्ये पापतीया यवर ৳ৢৼ৾৾ঀ৻৸৻ড়ঀ৾৾৾৽য়ৢঀ৾৽য়ৢৼ৾ড়**৾ৼ**৾ৠ৽য়৾৾ঀৼ৾ঀৼ৾ৼ৾ৼ৾৸য়৻য়৽ড়ৼ৾৽ঢ়ৼ৾ঢ়ৼ৾য়৾ঀৼ৾৽য়ঀ<mark>৽৽৽</mark> मेल्व.श्रीयःतःत्र. स्थयः धेर्यः षक्षः व्रूपः तीयाः वृ.र्यायः क्ष्यायः व्रयः स्याः . मईर्रम्यादाराध्यायम् वार्या श्रीता श्रीत्राराध्या स्वार्या द्ध्याद्विन:स्र-न्र्यानेष्टर-रूर्-नु-दियाञ्चयाना-वु-व-स्-इययान रे.च.श्र. इंग्याय श्रेन् रहरा। विदान्यवयान्ताश्रे तरायवान्त्रीनवाळे नरत्युरानदेः ह्या नार्देव स्वागुः द्वी सः ह्या "@ डेवानवायानः वतः **ब्रै**-इचियाने भे तेपाय प्राप्त विष्य वश्चर न न में द के ते ते हैं द दे ते हैं हैं द दे ने व दे ते हैं हैं द दे ने व दे ते हैं के ते हैं ते हैं हैं विग्रायः वर्ष्ट्रयः चेदः वर्ष्ट्रः वर्ष्ट्रः वर्षः सर्वातुलः दम्बादिति लया श्रांता भु नुते श्रांता महें वा मा सुनालमा ने व विष्यं हेन्या पर्या हिंदी वर्षे दि पर्या ना न्या । वरा पर्या न्या दे दिया पर्या

① (वर् वाप्रापते चुरापह्रा देवार्य 43)

② (a其·a中去.古安. \$上.古美之. 少日. 天山. 20)

श्ची स्त. 1737 मूर् श्चा श्ची स्त. प्रश्ची स्त. श्ची स. श्ची स.

श्चेत्रःश्चा व्याप्तः व्यापतः व्यापतः

^{🛈 (}न्यम् न्यवाक्षे साक्ष्र्न् कर्ते म् म म्र्यः 293)

^{💯 (}द्यन्यत्रवाक्षेत्राक्ष्र्र्.क.मृन्ग्रह्ण.295)

① (ব্ৰব:নদ্ধ:নহ ভূম:নছ্ম:ব্ৰ ইব:32)

② (ব্যশ্বেষ্ঠ্ৰ ফুর্ক ব্শ্রহ্র 300)

विरः बद्यः नेल्यः क्रीं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विषयं विष्यं विषयं विषय

श्चै-सं 1744 दर् नेर वेर वेर वेर स्था "तर् सं मेर सं केर से दे स्था **इ.कुब.७५.५८। विज्ञाय.क्र.नर्थे ४.८८.** क्र. इ.ट. श्र्येथ.क्र.नर्श्व. यथर.स्र. रेगाम बरायास महामहर्षा हे स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग अवासी श्रव स्वर्ग श्रव स्वरंगु **कद्रः**पविष्यहुं न्या क्रुरः विष्याञ्चा या श्रुषः न्ये व्यवक्या ह्रेटः न्ये व्या क्लाह्ररा (ब्रुरा) निरामकुर् निराम केवा में ते निर्मात केवरा माना में बक्षं दे हुन् ग्री.क्षर. ग्री.शि.क्षर. थेर. र्या. पचिष्यातार ग्री. र पर. क्ष्य... कुर्राया यु ळ रामी ज्ञासरा खर् कुर् ज्ञासा र में दासळे पा न स्व न्रा रेण नवरा गुर्कर में हा वर केंग हेंग वरता हुर। देग्-पदेः गुः कर्मने न्नः सद्भः हेग्लारा दे न्याने देवारा **ऄॖॸॱॸॖॱॻ**ॸॣॸॱख़ॱॻऻॹॖॖॖॖॖॺॱॸॣॸॱॹॗॸॣॱऄ॔ॻऻॺॱॸक़ॱॸॣॻ॓ॱॸऄॱॻऄॖॺॱॻऄॗॸॱॸऄ॔ॱॱ चक्रिन्त्र्र्त्र्त्व्याच्या पडराइंटर्न् ववट्क्युर्म्य छ वा पक्षण "**ॐडेल** मायायाय निया

^{1 (}र्यन्'य्यम् क्रे.म.क्रेर्.क.ध्नेन्'ग्रस्य 302)

② (न्यम्'न्यकाक्षेत्रकाक्ष्र्रं का वृन्यम्'न्यन्य 343)

म्या ॥ १ व्याच्याय प्रम्य व्याप्त स्याप्त स्यापत स्

म्दायाकवाल्याची याव्याव्याव्याची याव्याव्याची याव्याव्याव्याची याव्याव्याव्याची याव्याव्याची याव्याव्याची याव्याची याव्

① (ব্ণণ্নথম ৡ ম ছব্ ৯ বৃণ্ন্ব থ 344)

स्वारम् मेन्द्रियः स्वार्त्त्रः स्वार्त्तः स्वारम् स्

श्चिम्म विकास स्थान स्य

णे (र्मन्प्रवाहे वाहेर्कः विष्युप्त अ ३५७)

② (न्यन्प्रकाक्षेत्रकार्म्न्कार्मन्यरवा 365)

र्सः न्तुः न्दः तन् वः नकुः विषानकुनः तः ने न्यः वेन् न्तः न्यः व वः नेन्। "① केरान्यायायात्त्व

10. व्र'वरि'ञ्च'अस्म्'न्त्। स्'झ'वरि'न्वर'ष्ट्र'न्य'

য়৽৴৸ৼ৽ড়৽৸৽য়৽য়৸৽য়য়য়৽৸য়য়য়য়৽য়ৢ৽য়ৢয়৽ঢ়৸ঢ়য়ঢ়৾য়ৢ৽য়ৢঌয়৽৽ श्चरः या मृद्रा न्य प्रत्यः । विद्याः विद्या विद्या या या स्या श्री स्वयः या स्या श्वी स्वयः या स्या श्वी स्वयः हेला छन् प्रते न्दरत में लिया धेव पार्वित यी है यह पहें न् श्री वर विवास म्यायाः स्राय्या स्रायाः स्रायः स्रायाः स्रायाः स्रायाः स्रायाः स्रायाः स्रायाः स्रायाः स्राया क्रेन्यं नशुक्षः ग्री क्रेन्य क्रेन्यः प्राप्तः नृक्षयः नृक्षः ग्रीतः निन्तः। न्नितः व्यामितरादितान्तु केराकु विवया हेवाय वेरवानु वा क्ष्म परातुः मुलानदेः नगादः त शुरः भेरः धरः से गावा न श्रु नवा हेवा श्रुरः धरः न हेवः …… **नर्डल' त्युर** रें रें व वी वेट पर प्रत्य पा के के वे वा वा वार प्राप्त के कार्य वा वा वा विकास के वा विकास के व परा अळे व क्षित्र के प्रति श्व माहे ला की न् स्व पा विमायहें मान व मा वह ना परामहेदार्चर के रेग्वा क्षेत्र पुराहेद्र हुन स्वाया विकास महिता मह ञ्च-५८५०५-६५ तु.क्व्यायदे सं कुरा क्वे के ख्रा लेया धेना <u> नृतुत्राम्बर्धरायने महत्राची व्याप्तराकेष्य में नेत्रामुत्राच्या पृत्रावरामु व्याप्त</u> मतुत्रामः सक्रम् । त्याकृत्रे त्रात्राक्षेत्रामः विष्याका सुत्राचरः बर्देवा क्ष्मायराष्ट्राविदाया गृजेमाराधिरामें दार्ख्याया ने क्षाविदानदा मी वंपयाविष्याद्वराधिमाळप्याञ्चेयाचेरापाविमाहेयातु प्रदेश्वा सदीःःः बुगला बहुव भी विनय हैन शुराम नेता विन रहा वा बव वा महन शी.

(हू.यदे.व.यद. द्यावर. व्र. ह्यावर. व्र. ह्यावर. व्यावर. व्यावर. ह्यावर. ह्यावर.

¹¹¹

ह्रक्षाकः ह्रुवः ह्रव रहा। ने : धराहु : यदे : ह्रा खदे : ह्रा वठरा मह्रवार दर्द ग्नेथ.त.अघ८.लथ.पंथ.अ८वेथ.बे६८.वेथ.क्षत.श्वेथ.वेथ.पं वनवार वीर भे स्वार हो व ह्यू र र शुन भीर र हुर स्ववा हू र वि स्वा स बक्कू वीराधिवाल सवाधिराञ्चराञ्चरात्रम् राषक्कराल्य वाचे या यो राप्तराचित्रकः नः बर्दे : अपिनः नदे : चुरः न न हे न : प्रेन् : चुरः चुरः यः कर्केन् भें वन्ह या पहितान ह्रवात में ते पव पनि हो तान ता सुन्य हेन् ही... त्रुण पः अहतः नृरुणः गुः अहुव पः नृरः। वी प्रमणः नृरः अहुव पदिः ज्ञानातात्वार् व्यवतः क्षेत्राराः वैना ह्यान् न्यान् हिन्त्रान् स्वाद मुद्देन्त स्न व्ययः ग्रे.मं.अप.अ.व.क्ष्यः म.ल्यं म्.ल्यं म.क्ष्यं म.क्ष्यं म.क्ष्यं म.क्ष्यं म. য়ৢ৾৾৾৾৾৴৾৽৸ঀৣ৾৽ঀয়৽৻ঀয়ৣ৾৾৴৽য়ৢ৻৸য়ৼ৸ৣ৾৽৻য়৾ঀ৽ঢ়য়৾৾৻৽য়য়৽৻য়য়৽৽৽৽ न्नर-न्दः। नृत्रेयाशुः वःश्चेः वं नृत्-ग्चेयाश्चेदः वह्मय्यायः वह्मयः नृदः स्क्रिके स्वापने तह्रम्याया या प्रवापनि व र में इत त्या की अधि की पान त्यात्यान् वा वी चेन् प्यतान् चेन् प्यत्र ते क्षाने न्यी न्यत्र केन्य स्थान प्यति क्षेत्र नश्चर्रात्राच्यानश्चरात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या

নম্প্রধার লেন্ডের্ন্নের, বিশ্রা। ব্র. ক্সব্র. লুব লেন্ডের্ন্নের ব্রা।

नश्चनः श्रृंबः चि. त्यः बर्धावाः ता वीचरः त्यः । च्रिः त्या वि कर्षः श्रुंबः च्रैः । व्रेः त्यः व्रेषः व्येषः व्

यम् निया वर्षा मञ्जयसम्बद्धाः चूरायदा देनावस्य यहै स्यामहेवाद हैवा चुना ग्री केत्। दॅबःगुदःश्चेदःवदै 'हुदः ग्वेषः क्षंद्रषःश्चेषः दृदः देवः हुदः द्या שבי דרי ם במי פוי בל קים בי בי של בי בי बह्रवाची विषय सने वाया ह्युता की वार्ष मंद्रा धीवा वा निया हिन द्राया था। बर्वेदःचेदःदेवःबेदःठेवःचुःबळवःव्यवयःग्रुदःवःकृरःविःळेवःदेःवेदःः (श्रेन्द्रायाचेरा) वया स्टार्स्यायाच्याचेत्रा सुग्वा स्वायाचेत्रा विवरः मते सु भेता ने त्र होन न में या दें वा के त्या भेता से वा के त्या भेता से वा के त्या भीता से वा के त्या से वा के त नवाराक्षां विवासी त्यानुतर सेवाया सेवायुर देवायुर देवायुर सेवायुर सेवायुर चन्नातः नव्दः लु राः क्रं न ग्रुटः। च रु वः नें दः वदः नीः श्रेः न्दः अवः श्रेदः छेदः क्चु-बी-दर्ग न्यं वर्यं न्वॅन्याया नृत्या द्वेव ने गाया क्वा देवा लुया यहा नःमरुषायहितः हिन्याने निवेताया नेते राष्ट्राने वार्षेत्रा वाहिता वार्षा ॉवं क्रं (बर्दे :बावर :ब्वरा हुरः) वर्षे **र : तु :बाहें** र :व :बावर :हुर :व : वर्षे द श्चि वर्षा वर्ष बंक्षंव चुकारा वर्षा देव तु कृत क्षेत्र वर्ते क्षेत्र वर्षा कर्र स्थाप देत्र मका चर्या में का भीवा ने का वा में निम्मा परि ही मा हु निम्मा भीवा के विद् षदः बेर्। दर्नेषः ग्रुदः बः दश्चषः वः दश्चरः वः वः दश्चरः वादः विदः वादः वदः

क्रियंत्रे द्वान्त्रे त्या नेषास्य व्यापता स्वापता त्या स्वापता स्वाप

① (本首:本内本:中部:夏下:户美有:首本:美有:58-1456)-)

11. শ্ব'ঝঝ'ঝব'বর্বরুব'র্র'রর'রর'র'র'র'র'র'র'রর'র 5'ব্ব'গ্রি'বর্বর্বর্বর্বর

श्रान्तर्थं कृत्यन्त्रं न्यद्वं स्वर्णां व्यक्षणा व्यवक्षणा व्यवक्षणा व्यवक्षणा व्यक्षणा व्यवक्षणा व्यवक्षणा

① (वर्ने वामन्त्रवरे कुन्नि निस्ति निस्ति क्रिक्टिक 58) ।

Ţ·ᠬ᠒᠂ᡪ᠒᠂ᢡᠵ᠂ᡏᢩ᠂ᢡᢋ᠂ᡚ᠂ᢘ᠂ᠱ᠂ᠵᠵ᠂ᠬᡠᢐᠬᡸᠵ᠂ᡚ᠂ᠬᢐ᠆ᠮᢋ᠂ᡆ᠂ᢆᠵᢐᢇᢆ क्रे.व्य.क्र्य.तपु.चम्त.चश्चुर.क्षेत.पर्यम् ७३४१.म्.श्चुरायवुन मदे न न् न् ई या नवराया देवा न में ना यह व ने राम हे दा की इस करा की वा **ॺॱॿॖॹॱॸॕॱॺॱॺ॒**ॺॴॱक़ॕॺॺॱॲ॔॔॔ॸॱक़ॆॸॱढ़ॸॣऀॸॱड़॓ढ़ऀॱॿॸ॔ॱॻॖऀॱॶॺ॔ॱक़ॱॺऻॺॖॸ॔ॱॱॱ के.च.प्रवापः वृवाः पर्देवः श्रुः श्रेवा अपयः देवे श्रेः र्यदः ययः श्रयः गर्देयः ग्रै:तुरानग्रन्त्र्वं वृःग्रीः सरादम्बन्नदेशः श्राव्यः अर्दः अर्दः व्यव्यः वृदः **छ-२८-१**-वर-कुल-ग्री-बुर-व-व\र्ह्-१-धत्र-वर-१ "ने-वर्गः शे-२८-नरः वववाग्री क्षः व्राप्ता न न वार्षः क्षेत्र व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व वयाग्री वया श्वा चेन न व्या प्रमा वर वी के वि वया न त्या व व हु वा ने व्र-तियम्याग्नीः त्याः म् बान्नीमः स्वरः नीयः यञ्चनयः परः परः न् नियः · · · **ॱ** इत्रिक्त के स्वास्ति के स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास मतरा बुराहरा महेला "डेवान बुरवा तत्वामा न्रा ने महेवार स नते विवासं राषी माने वास्त्र सुराया के न्या वार्मात नवी निवा वुराया नहॅर्न्स्र धर्म "ने वर्षा श्रीन्नर नर्षेत् वस्र हेन्य कुरारे हेर् য়ৢ৽**৴ৢঀয়৻য়য়৻ড়ৼ৾৾৻৸য়৻য়৾৾৾৽ঀৼ৾য়৴৻য়য়৴৻য়ৼ৾ৼয়৸ড়৸৸ৄৼ৻য়**ড়৻ড়<mark>ৼ৻</mark> बैका वर् की के का वर्ष राज्येता "अडेका बका वर्ष स्वापन र दे वर्ष स्वा ञ्च यः श्रु द्वेर पर्व वर्षः इयः वरः «र्धण प्रवयः देवः में किते क्षेः यः » वद्रा "तर्रे अन्यार्वेद्रायाळेव र्येषान् त्यते नृ तुरायायानुषाक्षरा वृत्

① (ব্ৰ-ব্ৰ-থ্য ইঅ-561)

② (af'apt'ab'gt'a美元'青年'元年'58)

য়ৢ**৾৽৸য়৽ৼ৾ৢয়৽ঢ়ৢৼ৽ৼৢৣ৾৾৾৻৽৸য়৻৽ৼৼ৽ড়ৢয়৸ৼ৽ঢ়৽য়৻৸৽**য়ৼ <u> श्रमः क्षेत्र स्त्रम् क्षेत्र मः कः असः मेलः मृत्रान्त्रः स्तः स्तः स्तरः मेवः स्</u> गु. द्वा. न वर है। यगद लय मूर य के वर्ष य न हे न य न मुहर य मदे. व्याया हे. र्ट. नग्र. देव. र्. नेया वया इया मा वयया छ र . र्. नग्र. . र्रः न्बॅर्यायायया श्रृन् केवा ग्रुर् क्षे तवायायर यर मुदे ग्रु नावर । । । **ঽ**৴৻৻৻৸৸ঀ৾৻৸৸ড়৾৻৸৽য়ৣ৾৾৾৾৻৽৻ঀ৾৾য়৽য়৾য়য়য়৾৾য়ৢ৽৻৸৽ঢ়৽য়য়৴৻ৼৢ৾য়৽য়৽৽ म्बर्भ " कि वेषाम्या सम् क्रिं निर्माणयात्र । यदे । नक्षं नव्यान्वरानदे केया तुरार्थया म्याया श्री ततुम रातुरार्भे राय म्बर्शित्रमृत्रमृत्राचियानेनाची बरातुत्रा "क्षे क्वारी नितृष्याय द्वा बेबेयासाबार्म्याञ्चारायद्वीसावदा। स्राक्ष्रायायव्याच्याच्या त्यच्नित्यः क्रेक्चितः व्याह्नव्यस्यः वीः क्रें त्यः न्दानक्रायः नुषाः भृतः । । । रे महिन ता हिन महिन महिन ता सहिता हिन। वार हिन परे वार पेवा য়ঀ৽য়ৢঀ৽৸৽য়৽ড়*ঀ*৽ৼয়৽৴য়ৢ৴৽৾য়ৢঀ**৽ড়৾৾৲**৽ড়ৢ৴৽৻ঀ৾৴৽ৼ৽ড়৾৾ঽ৽৸ঀ৽৻ঀঀৢ৾ঀ৽ कै.स.क्रुयाग्री:र्नेव:५र्रेयारे:र्ड्रन्:लु:क्रु:दे:धेव:घ:यया हॅगामेदे:ळेगः नश्चरः वदरः ब्रे पने वरह्वार्षे व्यापुरवार्षेद्रायः विषा व्यदाना वहंद्रा हुः " वै नवर् भु र ब य य य व य र र र

् अदः तशुराबेर् इस सुया चर् राशुः हे चिरावर्त्रका हे खे व्यवादा।

① (र्पन्पर्वा क्षेत्रक क्षेत्रक मन्त्र वर्ष 376)

⁽नैयःवेन मॅदःयते : न्वेन्यः सुः नेन् ग्रद्यः 15)

द्वय्याक् रू. दू. पर्वे . दूर. र्यार प्रश्नु र च्या यह . व्या यह . व्या दरादर् विनाम्भ स्तार्वा वा स्तार्वा स्तार्वा में नासवारम् क्ष्मयामत्रे यदया क्रुया श्रेष्य द्रानक्षु र्यम् ययया ययय यवि भेटा श्रव सरः खन्नवाक्षीः श्रेषाधरा भैरासरा सार्दे 'बळ'रा ठवार्टा। दे 'महे वाउँदावा नकुन्-छ। गवस-पहन्य-पह-दुन-सँग्य-ग्री-सर-सु-भैर-सर-अ-नर्ने. नदी.प्रयासह या. गृष्टी ता. हे . ता हे ता हो ता है या पर . त ती या ही रा लिया या . न्ता न्यातः स्वान्तः यावाः स्वीः ततुः वितः कुः वित्रेन्। न्यावः स्वा र्षेत्रयराष्ट्रयाचे श्रुपायळे रायह्याताया रायाता स्वापरायपाची हेला । क्रूर-र्ने झ्निय ग्रै-इ-पारन्त-न्तर-न्त्रामञ्चानया-पर-ग्निय । दे विव श्रेरः ্র্ন: প্রবাধান বিদ্যাধান द्वुनाऱ्रः अर्दे 'अविरः विचला हुरः नेवा ग्रायाः क्रृंतः ग्रादरा । र् त्यते मृ तुरान् न्यतः स्ट्राक्षमः क्षेत्रः न्या ने न्या न्यतः न्या स्टर् कुतैः वयारेट्र र्ग्याच्यायेवयार्वे वर्षः स्वर्वाच्याः स्वर्वाच्याः स्वर्वाच्याः स्वर्वाच्याः स्वर्वाच्याः स्वर् र्वयान्यामञ्जूराहे। है अर्रित्र

> त्त्वरान्त्रम्वराह्मवरान्तः। । स्वाञ्चरान्त्रम्यान्त्रम्। । स्वाञ्चरान्त्रम्। । स्वाञ्चरान्त्रम्। ।

चेथान्य वित्वत्त्व विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र वित्र चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र वित्र विद्या चित्र वित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्य चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्य चित्र विद्य चित

६ होत् भु त् । इ प म्दायदायह वाया द्दायक वायव वे बेव या तहेल ब्रेन्-चुन्-कुल-तु-र्धुन्-धा क्रुन्द-र्ख्य २ द्वयायायादी-वियानमुब्ययार्द्यः रुदर है : ब्रे : क्रुबारा पाल्यावार पदि : इवार ब्रुट : वार वेहा वाहित वाहित वाहित वाहित वाहित वाहित वाहित वाहित न्रॅर्न्स्। ह्रेंब्रक्र्न्ञुन्यते न्रेन्क्रिक्र्या सहिन्द्रा भेराञ्चे म्बार्याच्याः वित्राः यदै दिरुष वर्षु न न्दा वर्षे गुरुष अन् अन् गुरुष र र न विद गुरुष र ग ष्ठिम्बर, भेट.ल.ट. यही ब.सर. वेचवा है वा श्वी. यहारवा खूर् चिता हर. **र्भ-लब्र**-लब्बल शु-र्श्चर-पदि-श्वर-र्द्धल-स्वबल-त्रेवनल-पन-क्रिल-च-ल-दे----नविष्णु : बर्द्य श्रे ग्राया पर्रा तिष्ठ दु . द देव हु । पर्या येया चर्चे बार्था दव.त.तचर.तूर.श्च.चषु.ईव.बावे बार्टः। बेल्.श्चेथा नश्चन् प्रते केषा वी द्वे द्रान तह वा बेट क्षेत्र पा न वा खेनता पर श्वा न ता की वहंबायते बद्दवा धुद्दवा है। वव्दा बद्दा वर्षा द्वा वर्षा दव्दा वर्षा द्वा है पर हैर पर केर क्या द हुर म्याय पर पर दे दे हो। पर मारु म दे र सुद ही ष्टिः चुनापति वार्तः श्रुपारे सेरामरान्य या मया ग्रुपारी वितासरा श्रुपार । वयाद्वयापानु वया हे पर पळे पा पर वाळ द नु वळे या है। "वेया हुर. ब्रात्युराबेराह्यामुलाग्रीःबेरम्भिलार्टा भेलास्ट्। श्रुराईलाम्बला ब्रायास्त्राच्य्राच्ये वादि वाहु वाहु । चे च्या प्या हु राष्ट्र वाहु वाह वाह्य वाहु वाहु वाहु वाहु वाहु वाहु व न्यान्तिन्त्रेग्य पर्दे श्रम् निर्ति श्रम् या विष्य त्या देवा पर्दे । मक्षाके वास्तर स्वामित सिर्याम केवा सामा विषय हर रक्रकेर् ज्याया संस्रापित रहेता श्रेष पहर हिंद है। रहे यह व सह

"अंतरा भेग नियं प्रमेश । महारा में प्रमानिया बहुर्यहुर्या **छट्रायन्। हा वें अवार्ष्ट्रान्ट्राह्य में हेर्या वर्षा वर्षे व्याप्त** ञ्च-प=८.पण. भेथ.८८.८ तथा.चया.च.च्यु-.स८.मी.पश्चप.क्रॅब.ल । श्व-अ-व्यय-प-न्ता सु-स् मुत्रा वनवादुर-पठवादवा बर्द्दर्भवागुर्द्दाया विवादा में वादा प्रवाद वा के वा हू विवाद वादा वा वा वादा वसारेन्-साम्बुर्-चुर्-। विन्-इति चेन्-स्नाने हे क्रिन् धेन बी बायल व्याचित्रवाचन। लुः सव तुः नदः देवा ववा याः मृत्वा सुः नद्वे वदः रुदर-द्यान वेर-दर्। चेर-रब-प्रश्न ह्वर-द्रन-प्रदे-द्रन्य हे-प्रम् विषट् विष्यः स्वर् । स्वरण्यः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः विष्यः विष्यः विष्यः **ॱ** न्यर बेर् र्वं या हुर। र वै यव ऋ' के रेर व सं महा वा के व सं ... तुराचुरावावमान् श्वाची न्ये क्षराधेवा रतुमा धरा है क्षराम्बरा धरा त्रुंन्य अन् प्रान्नेत्राय न्द्रन्धन त्राय लु मु अन् देश लुवा "1 <u>बैकाम्वर्याय क्षेत्राययाची ज्ञायासुत्र हिंगा च्यक्तायम् वात्रे वार्या के प्रता</u> बै:र्नर:वै:युरा:बैं:यरे:व्व:ब्रॅंय:वा नगद:ब्रॅंव:तुर:र्गद:पदे:पट्टे ह। बर्ने बार्य विवर्ष हुए छे नेदान् वर कुषा यरुषा श्रवण देते वर् ৠৢ৾*ॱ*য়ৢ৾*ॱ*৴য়য়য়৾৽৸ঀৼ৾৽৸ড়৾ঀ৾৽৸ৡ৾৾ঀ৽৸ৼৢ৾ঀয়৽৾৾৾৴৾ঢ়ৼ निर्ग्यु वदर गुरुर् हे उवा यहरा सर् वेर् विराम्या यर बुर्देर सुन। **৾৾ঀ৾৾৾৽**ঀ৾ঀ৾৾ঀ৾৾৽য়৾ঀয়৽ঢ়৾৾৾৽য়৾ৼ৽য়য়ৢৼ৽য়ৢয়৽য়ৢ৻য়৽ৢড়ৼ৽ঢ়য়ৣ৾ঀ৽য়ৢ৽য়ঀ৽য়৾ঀ৽৽

त्युन् बेर् इस मुल ग्रील र् वर व सुर ल न् शुव र्र होर् म् । ग्रील क्षेत्रायः स्ट्रे. स्या अरा हिन्या श्री ध्या हिर्या श्री रे र् न्याया हेया बेर्-चन्ष्यरत्तुः शुः शुः दः इवतः तः त्रे रः तुः र नुतः ् उरः नैः र वनः … र्सरामञ्जालानः स्ति क्षेत्राचा चे के न्रायक्षा हे ने ने ने न मुत्रा न्माना मुड्दायार्श्वाल यान्ता वर्द्रानायते हितानु चु नदे बर-बर्यान्याम्बर्हितः द्याः भृत् हे हिरान्युराग्रीः यवा उपवासः हेः वित्रम्याः व्यव्याः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः क्षेत्रका शुन्का मञ्जूका हे . मॅन् का बार्डिय : म्र स्ट्रिय : स्ट्रिय : स्ट्रिय : स्ट्रिय : स्ट्रिय : स्ट्रिय त्यन्सुन्त्वह्याचीवास्यान्त्रान्त्रान्त्वव्यक्षेत्रान्त्रम् क्यान्त्रान्त्रान्ते विवा **विष्याञ्चम् प्रते** च देश वरातु यरा तु यरा तु य च चे प्रता बाक्तःमवा "म् नित्रहेषाया रहेते अन्याये में प्राय के पर वेत् उरा ।

⁽অব্'অদ্ব'স্কুব'কইব্'ব্ল ইল'61—62)

क्ष्मात्राक्षेत्राक्षात्राक्ष्मात्राक्ष्मात्राक्ष्मात्राक्ष्मात्राक्ष्मात्राक्ष्मात्राक्ष्मात्राक्ष्मात्राक्षमात्राकष्ठमात्राकष्रकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्रकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्रकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्रकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्रकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्राकष्ठमात्रकष्ठमात्राकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्रकष्ठमात्

① (অই.অচিব.বধ. ইি.এইই.এইইএ. १३)

व्यक्ते मं अराया त्या वर्षा क्ष्मित के विदा विदायर के निया देवालः ऋगलः ग्रेलः **झंटलः सः भृः तुलः नगादः सः वैवः अः ग्रुटः** ५ तु वः ः गुरा १.रुरार्वादासाध्यास्तरेतासु नठरासस्य क्षीवायास्य सं ठवा चगादःभ्रेषाः नृहः चरुषाः अहतः देषाः शुः हिंदः नृः ग्रवहः नः धिवः वृददः। लयु.चयावनयापर्विषाग्रीयाविष्टाना च्याचियार्वेयार्विषा श्च.क्च.र्ट.च्र्य.ब्रट्ट.द्रयाश्च.ब्र.च्र्र्ट.च्द्र.च्र्व्याञ्चलाञ्चलाच्या. श्चरः यदः त्र्रं न्वदः बुवः चेदः द्वेषः यदेः वन्वदः यदः । मयय. रूर. यहिव.त. कुव.त्. पपर. पर्. श्रें र. ध्रे. पहचेय. लूट. यह. श्रें पथ. यहम् ने र्राम्य प्रमेषा र्ह्य ग्री खु : धेमा क्व क् क्व ह : स्था हें मा कु : मव दा " ॻॎऀॿऺॹॱॿऻॴज़ॸॱऄॣॸॱॶ॔ॸॱॶऻॸॱॾॴॹॖॴॹॖऀॴज़ॗॱॴढ़ऀॱक़ॖॱॴॸॸॱॱॱ **ळेव:२ेव:४ं:ळे**दे:नगदःस:अव:पर:वद:दश्चिग:हे:४्वा:हु:५५८:क्वेव: **ब८५:५०:ग्रे:५**बब्:इबब:बर्-ब्न-उन:५हेंबब:इब:५:५८:*|* न्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्राक्षेत्रकेष्ट्राक्षेत्राक्ष्यात्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रा <u>ૣૢૻૡ:ૣૢૢૢૼૡઌૡઌઌૡૢ૱ૺઌઌ૱૱ઌઌ૱૱૱૽૽ૺૡઌઌઌૢઌ૽ઌૢઌ૽</u> **कुै'के**'लेर'प'नम्प'यदर'र्कपल'केव्'चुद्र'पर'ग्रगल। अपरारेर'धुै' व्याप्तिक्षात्रम् वित्राम् वित्राम् वित्रम् वृद्धिः हु त्यते कु हिंदः रूटः म वेश्रयः कुटः इश्रयः ग्रीः प्रेमें र् पः है 'हुः पर्दः '''' क्ष्माधेव के मुत्रे हिलाम महिला द मुना पर पर प्रमा प्रमा पर सक्षा पर है · ① (त्यन प्रवाही का क्षेत्रक मृन्म श्रद्य 404)

मवरः। "®वेशःम्याः स्र-म्राम्यः स्वन्तः स्रम्यः स्वन्तः म्राम्यः न् न्तः व्यः स्वन्तः । व्यः स्वन्तः स्वन्तः स्वन्तः स्वन्तः । व्यः स्वन्तः स्वन्तः स्वन्तः । व्यः स्वन्तः स्वन्तः स्वन्तः स्वन्तः । व्यः स्वन्तः स्

12. দ্রুশ্রণ্ডরশস্ত্রশৃত্তীণ্ডর্শর্মারী বিশ্বর্থ শ্রীকানেবণ্ডন্দ্রশৃত্তি নির্দ্ধিন কর্মারীকালের নির্দ্ধিন কর্মার বংক্ষিত্রশৃত্তিক শ্রীক্ষিত্রশ্র

यर्ने र.व.प्यान् स्वाचितायी स्वाप्त यह स्वाच र ये स्वाप्त यह स्वाच र यह स्वच र यह

① (र्यम् नलसः क्रे.सः क्रॅर्.कः भ्रम् ग्रह्मरूषः ३९०)

लाम्राज्यक्रव मृथाश्चिष पश्चित्यार्टा। श्ची.मृ.यर.मृथार्टा पर्श्वर प्राप्तर ठवार्थे न्दावक्ताय रवा तु न्वाय प्रवाहित या वह्न व्यव है। वेदा वर्षे नमातः हेव १६८ . र् न्या वर्षा १८८ । हे जि. यर. लट. न यश हैं र. यम निर्मा इस्रात्युरासरातु चेदारेदा। इत्रास्त्र स्वात्य हुदायी म्हासाद मे प्रदेश प्रदेश प्रदेश ग्लेबर्त्या अराक्ष्या क्षेत्र कर्ष्या क्षेत्र विश्व ऱुनाःषाञ्चरानः रहः तरः वैदः ग्रहः न नः अदः यवैः यनः श्चेदः यनः **वेन**ःयः ः <u>बुंग्राप्याम्बुरायदेश्यास्यायम्यान्यास्यायम्या</u> त्रं अरतः रुथः सुरः अरः मृष्ः व्यवाधिकः वर्ः । व्यवाधिवावः मृद्धेवः । बंदि क्षेत्र तु पहिंदा पर पहेता " वेदा सर मी वेदा क्षेत्र प्राप्त पहेरा मुक्रस्ययात्रिंद्रायदे यह्नानु। वद्यतः यदे द्वात् च्या स्ट्राय बहुन् नसूत्र सर "ब्रास्त्र केत् च त्राक्ष ग्रम् स्न केत् वित सु केट इंदरलवः हुद्रामहेवायानगदः यदः यदः वर्षः वर्षः वर्षः (1750) इम्बः म् स्पृत्र-द्व-प्रश्च-पर्व-प्रदेश-प्रवेश-प्रश्च-प्रश्च-प्रवेश-प् दक्र, सर. क्य. क्य. वर्षा. पत्रीय. क्या. प्राच्याया हिया महत्या प्राच्या प्राच्या प्राच्या प्राच्या प्राच्या प ख्रमायाम्याविषयाग्रीकरायायम् दे तहायात्रावेषान्याम् क्रिनग्य भिन् ईस ग्रेय सुर पड़े र पर दे र ग्रे स्य देन ने र र ने य ग्रेय क्रमां अर्थ होता वराते इंदर होना वहर हे हिर्प व नाया वदायहे.

য়ৢৢৢৢঢ়য়৻ড়ঢ়৻৻য়ৢৢ৵৻য়৻ৼয়য়৻য়ৢ৻য়ঀৣ৾৾৽য়ড়য়৸ঢ়ৢ৾৽ঢ়য়ঢ়৻ঢ়য়৻ঀয়৻য়য়৸৸য়৽৽৽ न्यान्याः स्वायाः स्वायाः । तायतः नयायाः त्रायाः स्वायाः स्वायः स्वयः स्वयः स्वायः स्वयः स्वय न्ययः चुन्यर्तु यः वैनः ह्वः दंदः न्ययः हे दृः वैदःन्वे राज्ञे र्वे नः यः र्वे यः नर-नस्वयः मदे निष्ठा हे निः वक्षानी क्षेत्र निष्ठा स्थ्या न्द्रेरः इयवः ग्रेवः नृष्ठं वः दुरः द्विरः वेर वेर वः व व्यवे के दरः। **ढ़ॆॱक़ऀॱॸॖॱॹॱॹक़ॱॻॖऀॱ**ॺॖॕॺॱॺॱॹॕॗढ़ॱॸॖॱक़ऀॱढ़ॹॗॸॱॸढ़ॆॱॿॸॺॱॿॕॗॸॸॗॱख़ॱढ़ऀॺॱॱॱॱॱ aft'995" ययान्द्राययान्द्रेवानर्षाने नगताया रीपान्थी रोग्रयायरार्वा शुर्वरावण यदावश्चराष्ट्री छेवाई हे तकर छेवा प्रव भु:र्याचीयायेवायायान्ता वृत्रात्व चित्रव याञ्चराध्य विवासञ्चनवा शु:ग्वरःवःवःकःकेः सरःदं न्यातः हे नमातः हिन मिन हिन् देवाया **बॅदःअ:ळेदःऍ**ॱ५शुरःअदःइवःग्नुयःयःदबॅदरायःळेबरायरातृःवेदः…… मृद्रेतात्तराम्याम् विस्तराष्ट्रीतास्य स्टार्के । । मह्मरःवयः रूपः यारवाया मूरः यः क्रवः मृषुः श्रुः क्रवः यः देः नर्षः नः र्षम्यासुरागुरावयाळानुराव। मेंदायाळेवार्याम्वयाद्दानुरावेदा য়ৢ৽ঢ়য়৻৻ঀৢয়য়৽ঢ়ঽঽ৽ঢ়ৼৄ৴৾ড়৽ঢ়য়৽ঀয়য়৽য়য়৽৴ৼ৻৾য়ৢ৽য়য়য়৽ **ठन्-नु-रुवा**गुर-क्षे-सेन्वाय-सयागुद-ग्रुवा-सन्-स्पन्-सन-क्षुन्-न्न्वाय-लेवा " क्' द्व'ग्री' धुंगवायव छुंव स्वया न्रा है 'नेरावरुवाय श्रुरावय नयुवा सेन् चित्राह्मवारानाद न्त न्नित्रा ग्रीया नद स्वापन्ति । वर्षे बे वेषरा भ्राप्त वर्षा भ्रेषा रहा। ला स्रूरा बेष्ठे वा स्वाप वा वसहर त्रे किंग तु लुग्या हे पर्डे पहेंग के प्यत् बेर् प्यत् वि केव ई हे प्रकरः

चर्नातः भ्रेनाः श्रुद्रः धेनाः श्रुद्रः न् इतः न श्रुवः न श्रुवः श्रुवः भ्रुवः श्रुवः त्यम् त्राचा न्यम् वे न्या वि न.वैर.पर्ये इ.म.वाश्रक्ष वे.चेयाकुरे.स्.वेर.याचयारवे त.र्.पर्ये. बुग्याधियायान्वर्भरार्म् स्याप्त्राम्बर्भा र्यायाम् रा दर्या वर्याः ॡॱर्राग्यायायाम्बर् के मदे हिरार्राम्बियामा अवसर् माया दशुर बेर् इस.मुल.ग्री.म्प्र्या.क्ष्त्र.श्रुव.ग्री.र.ग.पे.र.ग.ग्री.ह्य.प्यंट्यर्थाग्री.पेर...... 'स्वाया'शिया'शिया'शु'क्क्या'सद्घानम्या'त्र्या'नग्रस्थे 'हे या नश्चम्या ने ते के क्रुंव या चुराया क्षे कि ते के माने या न्या विषय विषय विषय विषय पव गविषा ग्रे ज्ञा मा प्राप्त की किराया परण विवालिया जा जी र र्घ. में . प्रत्या प्रत्या है . पष्ट्र . प्रत्या कथा चया मूया याया था व्यापा व्यापा व्यापा व्यापा व्यापा व्याप क्रे.चमयः द्वेषः ग्रीयः चक्रीरय। गुरः पट्टे हः हः तयरः म्रा सः केवः यथः चमयः য়৽ঀ৾ঀয়৽ঀৢ৽ঀ৴৽য়ৢ৾৾ঀ৽ৠৢ৾৾ঢ়৽ঀ৾৽ঀয়৽ৼৢ৾ঀ৽ঀৢ৾ঀ৽ৼঀ৾য়৽ঀয়৾৽ঀয়ৢঀ৽ৡ৾ঀ৽ঢ়ঢ়৽৽ पयाम्यादिन गुरापकृषा दे तस्याम्राचा केवा सराम्या स्वा ढ़ऀवःधरःढ़ऻॺॕॸ्ॱधदेःढ़ॖॱधैषाःहॱੜॺॱॾॕॺॱॶॸॱॾॕॺॱॻॖॆॺःॶॺःवदेः ॸॵढ़ॱॱ लव.री.स्यात.वी.परी.क्षेत्र क्यालेट.व्यवस.त्र.व. ह.र्ज.तप्र. व्यालेट.व्यवस.त्र. न द्वान वित्त वित् न्दःचग्दः ञ्चं दुः चेत्रः चन् गः चेन् के सुदः पट्टे के त्यः धनः ध क्र. शूर. ४ वीर. व्रवासील. दया शैया वीय. वि. व्यव. व्यव. वि. व्यव. वि. व्यव. वि. व्यव. वि. व्यव. वि. व्यव. व्यव. वि. व्यव. वि. व्यव. वि श्रेन्द्रेन्यरायात्रन्तिक्तु पत्रामत्रापत्र मान्यरायहेव। यरान्द्रायदा व्यान्त्रम् । त्रियान्य विकासम्बन्धे वास्त्री । विष्य विकासम्

क्षे-चमायः भ्रद्रान्य पद्मार्थे स्वीदः ह्या ह्रमा अवा प्राप्त मुख्य मुख्यः र् क्रि परि अय नव स क्रिक्र ठव व व रा ग्रुट त श्रुट सेर इस मुरा हर क्षामि वार्षरात्र मार्था विषय विषय विषय वार्षिय विषय वार्षिय विषय के किया विवयः ग्रेयः दर्गन्तर्। ५२ : इवयः ववयः ठर् : वृ : वदे ह्र : वदे हि : धेवा रःकः हूः यदे न्नाः याया ने निरामें निर्माना करा निर्मा म्दरःक्ष्याग्रीःविदः न्याः सरः तञ्च नयः स्यः देन् ग्रीः रोश्रयः नयः धर्यः सरः क्रिया लट.अध्याचे देर.धे. पवट. एया. वेय.ग्रेय. प्याचेदर. देर. नपु. लख. नव क्र. प. मूपानपु. श्रेनया शु. मू. पद्. श्रे. बया ट्रेया न श्रे मया वया ब्रीम्बर्स्स्वर्यात् स्त्रम् । प्रदुष् वित्रक्षे मिने स्तर्वाया शुः स्वरास्यया बूर्यामने मारामान् मायारेन् द्यानेव कु मध्याया पराचे वया नवरः श्चेवः श्चे र देशः यः इस्या र तुरा म् उरः तुः स्र प्रायर स्र न्या प्रायतेः " . अ.याम्ब अयाम्ब इया कुषाया श्वर व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप वव्यातु सेन् ग्री वरा ग्रारमी रहे प्राया पहुर्या पर्वः ग्रावर ही वा ग्रावर नरानेन् त्युरावेन्द्रवामुलालाङ्गार्रारायदाह्रवासदानीम् राष्ट्रीवास दंबाबेर् कुर्य देर वका वि परिष्य से क्षाववा की के रिवार्य रार् र्या **र्रः ब्रद्धः श्रे : श्रें इः द्वेदः द्वा**ल्यवायः द्वेष्वायः दुरः ख्वाः पश्चेतः यः यः । । । । नयवाक्षात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यान्यतः नग्रातः हेवानञ्चर्याव्याह्वः "" **र्मर मैं** में रामवर है। र्मुल मर्डर र्नेव मर्ग र्डे रड़ेर्डेर न्द्रुणः ध्रेद्राक्ष्या पर्देद्रः मुलः ग्रीः न्यायः श्रुद्रायः त्रद्रायः देशः नः देशः

यदै मुंब यें न्द्र न्वम न्युर क्षेत्र अवेद प्राय हेव। मि न्द्र के या ८२:५क्चेर वयाब८८:५०८४:ग्रु:^५८,४वयाऱ्या.हु:५८व ढ़ऀढ़ॱख़॔ॺॱऄ॒ॸॱॸॺॱऄॸॱॷऀॹॱॾॗॸॱढ़ॸॖॺ*ॎॸ॓ॸ*ॱख़ॱ*ॹॸ*ॱढ़ॕॎॱॸॸॱॺऀॱॾॕॱॾॕॱ त्युर-बेर-के नहत्रे रूपाय-धेव-वेष-ह्व-विष-नग्य-वर्ष-व्याने · · · यगार हिंद र वर्ग रहा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा है । है ते सु र्रात्वीयः वयवः ठर् प्रवा पर प्रवे कि है कि है वर ग्रेवियः ग्रेन्। न्द्रे. १ पु. प्रम् यास्या व्याचित्रा विष्यु विषया ही । पर्स्य पर्दे । पर्दे । पर्दे । पर्दे । वि.र्वियाशी.र्षेर्रापञ्चित्रवेश वि.राया बार विया मि. प्रमेला प्रा য়ৢ৾*ॱ*য়ॱঽয়ৼৢ৾*ॱয়য়*৾৾ঀড়ৼৄ৾৾। য়ৣ৾য়<u>ৢ</u>৽য়৾*৾৽ৼৼ৾ৼৼৼৼ*য়য়ৢ৽য়য়য়৽ড়ৼ৽য়ৼ৽য়ৼৼৢ৽ नर्डवः ५५ - रॅम्यायः वर्षे न्ययः द्वेषः रे व्यम् ग्रम्यः ग्रीयः श्रेष्टः नः ५५ म देन्-ग्रुजःब**र्वः**-वज्ञःविन-हु-वहमःव-वृष्ठःकेर-वश्चर-येन्-इयःकुलः----ररार्द्धयारवामा या भ्रमा करा भ्रमा भ्रम भ्रमा भ्रम वयान् नवायकावि प्रवाने स्थार राज्ञीत् केटा न्त्वाविदान् बदया बन्नावि सर्वा सुन् गुर्मा देन व्यान विनास से स्टर्भ वर्ष स्तर ग्रैकाके : धरा हेन : अरहार सरा अरा हिला दिन : के का कि स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स त्युन् धरात्रुम् दर्भाया क्षान् वात्राता ह्रवात् प्रम् वायाया क्रक्रास्ट्रेन्द्रान्यराष्ट्रेन्वां अव्वायरायतुन् ने च्यानारेन् क्रीनाया देव-ग्रेय-न्स्य-न्दर-गै-य-कदे-क्रे-चे-य-द-र्ग-परे-क्रे**न्-र-गै-**र-पः के द्वरग्री नहीं प्राप्त । तश्चर बेर ह्या गुल विस्ताल सुर परे स्नाम **ख़ॖॱख़ॱॾऀढ़ॱऄ॔ॺॺॱढ़ॺॱ**य़ॾॖ॓ॱॸॖॱॺॱॸ् य़ॖॺॱॺऻॳ॔ॸॱॺऀॱॸॕढ़ॱय़ॱॺॱॻॖऀ*ॺ*ॱॿ॓ॸॱॱॱॱ वतुम्खरा देर्धियारेयामरामग्रायमायावी बेर्। व्यवानव्

न्देयाग्री नयम् सर्र्त्र्य न्दर्या नेदर्या नेद्रया नेद्रया ग्रीत न्या नेद्रया त्त्रिन् व्यासव में न्या होन् प्राप्त यावयावया स्वाय न्हेन् हु रा दे व्यापा र् छे 'दर्छेर् 'छेर् 'ॡण' क्रुं अरु 'यावल' दर्ग पहे 'ह 'वल' देल' यर 'यर यह *ॅ ५ ५८* अहुव धर **रे** 'येंग' बे 'इबल छं र प छन् 'वल ग्लॅन थ ५८८ । लबानवानेवालाक्ष्र्वाचेन् चेन्। न्त्राम्बन्देन् वाक्षानने ्ह्नायानमा विन्दुः इन्दिन्दह्ना ह्ना ह्ना हिन्दि हो हिन्दिन हि त्रेयाग्रेयाययायास्त्राच्याग्रदाश्चा ह्रेयाग्रेयायायायहर्याः ... बॅर्। र सम्मारं समार् तुमा न्वंदारु क्र्रामदे अमानवाह्मसमा हुना यातुषामात्मा देवार्श्ववाधेनः चेत्रः न्यायः चत्रः वत्त्व ने भः वत्रः पर.पत्तरः हे तपर्याप्त हीर पर हिला र शुरा वा भी विष्य हिं। तेन्याक्तरानदे पुरमाधिवामयामसन् याप्ययावास्य माया मुद्राया मवा मञ्जूषामदे: ग्रजाह्य:मव्यान्द्रजादेन:व्यान्दर:वी:बी:वा: विराक्चिते ने ना: न्नर्भाषाळ्य सङ्गे १ रदःसुदः मै में राजे दः ददः वरुषा है रहः यदे हा बरी नगत र्ह्म द्रा कुरा है त्र कुरा है दर्श के देर रहे त्र विवास में दर्श है द तस्यान् त्यते न्ना सन्दा क्ष्य क्षिता तु न में त्या स्वया ग्रै वर वर नेय मु के वेट धेर ने हर हुय या इर वर देर मे इसका न्रः क्ष्रानु निर्मातः श्र्वा श्रितः श्रितः स्त्राचा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स इयतः नगतः व्यानेतः वृत्रः व्यान्यः स्यानिवः वेतः स्यानः स्यानः व्यानः स्यानः स्यानः स्यानः स्यानः स्यानः स्यानः

ने ने राज्य में वायन्य लु पान्मा न्यय न्युमा नु क्षेत्र नु के नि वह्निय पः सम्या द्वास्य स्वादय के परि नेम्या स्वया स्वया कर् प्रमाद धेषा अस्यात्र सदै । अया मन् न् स्वाया त्या या मन् न् ने निमादा र्ह्हेन : या ने वा निमादा है । इत्र-तृ न्वे त्रवेत् च्या द्या प्रमादः धैया स्माया प्रदेश खया प्रवास के या प्रमाय । ग्रीयास्यामा मर्दे वास्त्रमः स्थापारे स्थिवास्य हा मान्ता स्थापार्थे या द्वारा स्थापार्थे या द्वारा स्थापार्थे छम व्वत्यान्त्रम् वर्षाः विषयः चयातह्नवारापः र्वावराचु चेन् वद्यतः नवा र्वटातु के नेटान्टा वि.तु. ळ. बर. क्षे व. यावि. वयाच म्हत. देया नर. प्र. मेर. मंर. मंर. मंर. मंर. मंर. लश्चन्य इया व्याप्त व्यापत व् न्दा प्रकृति इस्र अवा क्ष्या क्ष्या क्ष्या प्राची तात्र प वयान्द्रत्वर् न्द्रत्युं प्रज्ञात्वर् व्यात् प्रत्युं प्रत्यं प्रत्युं प्रत्युं प्रत्युं प्रत्युं प्रत्युं प्रत्यं प्रत्य इयाक्त्राक्तिवादि न्दर्भी सुर्दे त्य श्रुन् अद् के न हवादे स्वाधा धेवा वेदा इवः विया नगाया वया लुया है। श्रामाया दक्ष या नदी न्यमा न न न न न न न ग्रैकायळे.चर.वेकाहे.वर्ग्येकाने.व्रटावेकाइवावियाय**२व राकार्यः** कः मृद्याः तुः मृद्याः प्याः विष्यः म.ब्रेन्-कृटः। वेयाब्रेन्-तु-नयन्-यतुन्। मयानेयान्य-न्नाक्रं स्याचेन् दंबाशुः ५५ व महे 'हरा वहर दबा दशुरा बेरा के 'यह दा शे 'स सर्' कर्न्वतारेन् कु नगतायमा है। अत्र मुद्दा में में ता केवा बदता दैल-ब्रॅं-इंबल-क्रियान्य विकान विकान विकास देवाला प्रदेशिक्ष याताने अग्रयाने राष्ट्रिं पत्र राष्ट्र में प्रतास में प्रतास प्रतास में प्रता त्रेंद्र-ग्री-लाकर-पश्चेन्ताने 'लॅट-लॅन्के' वि या मे 'लॅट-नेलायहे**द खन**

त्युर बेर्-इ व कु व कु व कि व कि र न है र न र कि न दे स्वर खे र सर खे । मिविया छेरा देर ह्याह्मस्यावियातुः पड्रायठर् रे त्युर सेर छे पद्यामी.पी.पानेया तार रे.फ्.धु.धा.च.चर्थ.ताषु.क्याचक्रीर.पाके.प्रेया इयरात्युर वेर् इया मुला में प्रदे न्या स्राम्य है । वया कर् वया र द्वार वर् तु : वाश्चेवता वता है। वाया है : वर् : श्चेवता वर्ष न है : हता है : चयः चयरा उर्-ता प्रस्तु । प्रस्तु । स्त्रा च्री राज्या विवार्य ग ฮฺลฺลฺงฺอฺรฺลฺฺู๊รฺฺฉฺ๛ฺลัฺรฺรัฺรฺฺลฺรฺลฺฺลฺรฺลฺรฺลฺงฺฏิญฺลฺฉฺญฺ तर्गायानञ्चनयायाज्ञवयाविन हु दे हे हे थारामी नन नर बहुदायर न्द्रि तद्रेन् द्रेन् य थेवा यह्रै निया स्याप्त स्यापत स्याप्त स्यापत स्याप यान्दान्त्रान्त्राविषाविष्याविष्यान्दा विन्तुः विदान्ति निवानिष्यान्दा न्यम्'बै'क्यराधेम्यापराञ्चेन्रन्ता म्याराञ्चर्यापरे प्रमा रे'नब्दि'न्यान्दिकेते'नन'नब्द्वित्'ग्रीयाद्वेद्दिन्ग्रीद्दिन्दिक्त कपःश्चर् ग्रे : श्वरः यदे : श्वरः यदे : श्वरः यदे । स्वरः श्वरः यदे । स्वरः श्वरः यदे : श्वरः यदे : श्वरः यदे : ग्री'नर्र्न् वस्यानग्रादेवान्तित्ति हिन्याः है। न्यायान्या मःम्यान्यः । इतः द्वाद्यः द्वाद्यः द्वाद्यः द्वादः व्यादः न्याया पर है है ने पर र हरा धेवा पहे ह न्या प्रमाद पर दि दि । ब्रद्यावयादी द्वार हेरा हु त्वाद्या है विषय दिवाया स्ति विषय हुना हिता थी वि

यङ्गः त्राच्या च्या प्रकृष्ण स्था के वा प्रकृष्ण व क्षा प्रकृष्ण व क्षा प्रकृष्ण व क्षा प्रकृष्ण व क्षा प्रकृष रॅ्व तर् क्षेत्रात्या अदाव श्रुतः व्यादा विषया हूं 'लदे.मि. बर. चग्रत. बर. वर. वर्ष. कर्षर. पश्चर. ब्रेस. वर्ष. हू 'यदे न्न 'बर पत्रुर है 'बे ने देर' वर्ष प्या स्वर्ध पर बे ज्वा पर อีน.พิพ.พิ.อิ.บ.ฆ.ฐ_{น่}น.ฮิน.ซุน.ฮุน.ชน.ชน.ชน.ชน.ชะ.ฐน.บ**มี**บ. द्वराधेव। दे द्वेताव प्राप्त दे प्रमान महत्त्व त्राय अव पर हिर देत इसका ग्रेका देन त्या विकास दिन ग्रेका ने न स्वाम विकास स्वाम यलवायाः स्र्रामुद्रा दूरवादे न्नावाया न्द्रित् भी द्रावाया न्द्रित् वायाया वि त.लुर्था बे.कर.ञ्च.च.च के.लु.च्यु.च्यु.च्यु.च.च्यु.च्यु.च्यु. चवःइवरावया दश्चरःवेरःइवःग्रुयःचयवःश्चरःदवःयः**श्वरःवराः श्वरःवरः** ब्र-(यत्रागुराहे केर संरायत् माया भ्रम्या न्राया म्रम्या म्रम्या मुर्केष . तु . वि . या त्या त . वि द . वे ता वि व्यवः ता श्रुं त . य त . चे त . वे ता लु ता यम् - देन् वर्षाक्षयः यव केरा स्ट् बुरायायायाय ग्राय मेव्रामवरावस कवार्द्र, रवारी सुवायावया कवा यवा यवा विषया बरःश्रवःश्रवः द्वेनः देवः पः इयवः श्रवः श्रवः द्ववः नवः विवयः यः श्रुवः नवः । । । । चिन्द्य देवायम् तायमः संविष् रिन् ग्रीवायमः सदिः यम् तान्दाः

बर्गन्नरिष्यानम् नम् ने ह्येनन्यस्य ह्वायास्य मन् स्राद्धयाः र् विषयाता श्री र विर | वि र र र में वेदा में में में मारा से र सर स्टर में देवा भैवः तुः न ने 'सँ नः प्येनः यः सँ रा याया सैनः ये साया न ने 'सँ 'सुनः। ष्यानवः नृष्ठेषः देवः देनः मम्मानुमः वे । नृष्ठेषः वृषः व्याः विषः व्याः । । श्चेन्-भ्री-विनयः प्रदेगयः च्यानः ध्वः स्त्राच्या स्यानम् स्त्रेन् स्वायः शुः म्बर्क्ष्या दे अन्यादृ त्यते ज्ञाययात् स्यानु ज्ञानहर व्यात् वृषा म'ब्रॅर'मदि मॅन्'दमरमा इवमायामें मरादेवाम ब्राम्य वर्षा दिवा । च द्वनाया देवा वितास्तरक वार्श्वना ग्री ने देवा तारे ना ग्री ने देवा तार या श्वरा य धेव तर् ग यथ देर कु रो अवय भेव र र मान व मान देव व व न क्वि.वी.र.थे.त भेषात्रमा प्रति व त्राध्यात्रमा व्याप्ति स्त्राची बतैःक्षेण-गृहवःवयाश्चः वृद्यापर-गुःषःश्चेरवं वयरा दे द्वार्यः वृत्युद्या ॸॣॗॱॴढ़ऀॱक़ॖॱॴढ़ऀॱॸय़ॱॸॢॱॼॗॸॱय़ढ़ऀॱॸॄॸॱॿॴ॒ॱऀॺढ़ॱय़ॴॸॣ॓ॱॠॕॸॱॴॸॣ॓ॱ॔ॼ॔ॴॱॱॱ नुन्-यः यत्रः देत्रः यः बक्कत। यष्टु नः श्वॅरः श्वेनतः रेटः निवेतः मविदःस्याहेयाशुःशात्राद्याराया हूं यदे हा अवागुरा हेर् हराया स बक्रेया देन् ग्रेया स्वावयान् स्वी यत्र तु त्वाये राष्ट्री य स्वायः न्तर्यः **न्दःहुः** त्यदेः ञ्चः व्यदेः श्चः प्रश्चः प्रदेः श्चः त्रः त्यदेः ञ्चः त्यदेः श्चः त्यात्रः श्चः त्यात्रः श्चः त्य पर्ने अंत्राधिन व पान व व सवा वित्र पा यवा ह्या दिन व व तर् **कः त्रे** 'प्रॅंब' ग्रे 'स्ट्र' अया पवः क्रें 'रेट' यट ग्रा व्या द्वा द्वा द्वा द्वा प क्षे .र् प्रतान्दरम् **य.क.** इययः श्चे र.पहन्याः श्वे मेर्राः र्टा वे अवग **ठवः**ग्ववः इयरा नतुरः द्रशः विवयः यः श्रुं रः नरः न**ृरः यर्**। カズ

< देर-पट्टे 'ह 'वया त्युर-वेद-इवाकुताकी 'वह्न गार्श्वर-केद-पदे रव-पा इवलर दहेव वियाम चुरा व्यान के मेव कु के निवा मान हे पा निवास है ह्यपःयः चुदः खेदः छे : भेदः हुः नायः क्वे :बेदः। हूः यदैः न्नाः सुनायः पने :बॅन:बॅन:पॅने: प्रतः वर्ष:पॅन: प्रवर्ष: इवर्ष: क्रुंन: प्रतः । प्रवा र्सुराश्चेतवायायाञ्चनायराग्चेवा देर्ग्गुवाबदनवायायदेखायावनः *ৼয়ঀ*৻ৠৢ৾৾ঀঀ৻ঀয়৸৻৸য়ৢঀ৾৽৸ৠৄ৾ৼ৾৽ঀয়৾৽য়৾৽ৼঀ৽য়য়৽ড়ৼ৾৽ঢ়ড়ঢ়৽ঀয়৽৽৽ लर.कु.पर्.पहर्मथाश्चिर.बेयातालूर्मशा व लपु.श्च.शास्त्रमथासूर यर अहँ रा लु देश ग्री तर्श्व प्रेमा कर कर नि स्तर स्तर मा कर खर-मवश्रास्य मर्द्ध-स्टरेन्च-स्टर्म-स्टर्म-स्टर्म-स्टर्म-स्टर्म-स्टर्म-स्टर्म-स्टर्म-स्टर्म-स्टर्म-स्टर्म-स्टर् वर्ष्ठः सः त्रा व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्यापतः वयापतः वय क्रेरा क्रव्रासुर नव्याया पर्डे स्राप्ति हा पार्च हिना परि हेता हेता न्सु स्या में दाबदे न ग्राय हु स्यदे हु अराधना हु बदे हु ध्या ष्ययानवाइ व्ययान्यायवाळ छेन् या सुनामदे कु वळवान्रा 951 য়৽ৼঀ৽ৼয়য়৽৸ৡ৽ঢ়৽ঀয়৽য়য়য়৽ঽ৾৾৾ৼঀয়ৢৼয়৽৸ৼৢ৾৾ঀ ঀৣ৾ॱড়ॱक़ॱয়য়ড়ॱঽ৲ৢ৾৾৽ড়৾৾৾৽য়৾৾৾ৼৢ৽ৼৼ৾ৼঢ়৾৾৾ঀ৾৽ৼয়ৢ৾ঀ৽ড়৾৻ৼয়৾ৼয়৾ঢ়য়ড়ড়৽৽৽ ह्रं लारे न व्या महिमाला हे मेवा हु न माना यह हा अदे लु क्रें न बबसा ठनः देनः वयः वैयः हुः मृ ने मृत्याया देन् ग्रीः न मृत्यायः नृतः भेवः हुः ्तु। ञ्चःबरःमगदःषयः श्रेःग्रंजःबह्यवःववः द्वेःववेदःवेदः देन् पर्गेषःग्रेः र्वेक्क्षराध्यात्र पर पर्चे पावरा हो र हु 'धेवा पर प्राप्त पर र हा र ぬ身上、ふんときないか、しゃし、見し、ひ、こと、ない。こうへ、さんし

तमस्याम्बयाक्तरान्दे सम्बद्धाः हुर मायार् ह्रवासर गुर्वा है स्व नक्रुन्ने न्त्रासाहिन् याधेन् नविवादश्चनायते क्रेलान सराम् केना तस्यानु नश्चरः वर्षः वर क्रिटें वर सवया करा नवव वर्षः र त्युना सर शुर केन् केन्रु:नग्रायमाचेषायद्या "D वेषायद्वित्तरुन यश्चरः ब्रेन्-इब्रामुलामु नेव्यार्श्वेन् न्द्रा पर्ने म्बरामु तिहुरामुवा ब्रवतः महावानी वरार् वाकार्कर इवाराम्या केरा है रावदा हवा वरा रु रोवरा " त्र्वितः व्यवस्यत्रवाया व्यतः त्रस्य व्यवस्य विष्ण व्यवस्य व्यवस्य विष्ण व्यवस्य व्यवस रमता भु 'बेता'त गु लाम १८ वर 'में 'चेत् 'बेर 'बेर में तामर कर 'स्व 'में 'चु ता ' र्टरयातालुबी बेवयालटाबूटाब्यलाव्यात्ये अप व्यायर्टरावेटात है हे. . इतः मुरायामञ्चर्यानदेः बॅटः बदेः नम्दः धेन न्दः यं न्दे दे व वृः न्दे व विदः • बेर्-ळ-ळ्ट-र्न्वर-वर्षे-वर्र-बे-रवर्ग्यी-हुर-व-वहॅर्-पर्व-व्र-रुदर-न्ययानायान्। र्रिट्र्न्नियान्वे सुरायक्रे म्राह्माया स्यासपुरम्भादाभूनाम्बार्खान्त्रान्त्राचिताची त्यवान्त्रान्त्राम्बारान्त्रान्त्रा पर-पर्में द्-तर् वा-प-हिंद्य अद्भाव कि वो सार देवा विकास के स्वर्थ के सार्थ के सार्य के सार्थ के सार्य के सार्थ के सार्य के सार्थ के सार्य पर्वयामानुबानीया ने निया वी साने वाक्कि मान्स्वया हू । या वी साने वाकि माने वाकि माने वाकि माने वाकि माने वाकि नवर परे भगत नर नहेन वहार का वे के के के का स्वराय नहीं समार् हे 'च रहे न् स्वारा निया विषय है 'स्या है स्वारा है स्वारा है स्वारा है स्वारा है स्वारा है स्वारा है स्व ळॅॱरेट:बेर:पर:पडर्'वेप:बग्गवॅर्'छेर्'स्टल| तुल:बेट:श्नपल

① $(\mathbf{T}^{\mathbf{q}})^{\mathbf{q}} \cdot \mathbf{q} \cdot \mathbf{q$

मलवाश्च वाच्यार् व्याप्यायि व्यायये अह्मा न्याया व्याय मोर्ट्र-प्राच-इवका विरक्षाञ्च विराज्याच्या व्यवसार्वे नामा । ने वह वा बे व दाया वह ना में हे राधा में राकेन च हन **용지**·원도 여제 वियाचेत्रकार्यावायान्दा अत् छैन देत् त्रेन मृहन रचेनवाचेत् देवा रेग्याक्षयाम्बाद्ययान्द्राभ्यामध्य मृष्यि हु यदे न् वराष्ट्रव मृष्यि । <u>ब् न्बॅल क्रॅ</u>न्स्वित वैदार्खं व नवयान अद्वेदारमें न्वन्य दिया विदेशाः नर्मेन् नदे सहया तु नह दारहेव न मान केर केर केरा में मान निवस नर्भवात्रस्यान् इत्वान्तायात्रम् वार्षे क्वेदार्षे द्वार्यावितः धिवाहिता सर वेनयः पर्वः क्रेनः म्द्राह्म व्ययः गुरः न्विहः चेनः हेवः द्वेर्यः न्दः। बेदायर्द्राम् वातु यातु प्रामृद्रामा सम्बन्धिदायर स्वतः माना माना स्वर **यं के दें** स्वाह्म ह्रव्या हर नाक्ष्म के दें ना में ति हु र्देन-चल्चर-दन-प्राध्य-क्रिन-क नम्रेन्स्त्रेश्वराशिद्धः स्रान्दर्वयान् मा सर्वर हे हु न्राया वा नाया ळट्राचरळ्या "ा ठेवानशुर्वाय मृत्रामवातृ त्यते ह्रा सरा वदःव्यान्यः इवयः वै दे न्या दे न्या ने स्या वि ना ना हित्या न्ये या ना व्या अन्यःने रूर ने कुषा ठव की इषा ह्या परि मा कुषा ही व परि न मा का म त्रै क्षे. ट. पानवि न वर्षा धेर हें व उराया पानवा वी

न्र स्था गुरा द्वारा विवया वया न्र गुरा में पूर त्या यह या सुरा हु । । । मकरःश्रमणः अर्दे 'अष्टरःमणः कंमणः केवैः देव क्वेवःदे 'यः न् छ्न् म्याः म्रायाभ्यका म्द्रायम्या श्रीका श्रीम्याया हेर् प्रायी प्रीट म्या सही म्या है न्-स्याम्न्द्रः स्वीत्राह्यात् हेलात्त्रः विवानिकेताव्याः क्षेत्रः क्षेत्रा केवः द्रथानश्चराम्यवनात् इता द्वार्या स्वार्या स्वार्या श्चे द्वारा स्वार्था स्वार्था स्वार्था स्वार्था स्वार्था स्व तु 'अब हू 'बैब' महैब'अ'उद'चर' इब'य' दे 'महैब'सुद'चर् म'मङ्ग'मैं' ब्रुं न्याम्याके स्थार्यम्यालुकायम्। ने मा सुनार्यम् स्वायायम्या पञ्चलारमा सेमला परे पत्र प्रति निया सदर केटा महि पञ्चता " ॻॎऀढ़ऺॺॱॸऻॺॳॱॸ ने ने अन्याने दे ने ने अव्यान का निवास क-र्मु दु : व्यक् मु : प्रवास द्धार धेव पः व्यक्त मु : विष दे विष स्वास : विष : शुःग्राम्यायदे हु त्यते ज्ञायदे इया वरा न्दा वर्षे व्यापरा न न्दान् मतः यवै यदै चुरावाव ह्रामा बावेका की कराव दिनायदे से कुल की धेवा रेग्यारे अने के स्थापन्या महा खिया गृह्या हुँ र क्वा ग्री प्रश्नुर केर "मुलारियानु।र्धाराम् श्रेराष्ट्रीयया ठवा विगाणवा धरा इव्यःमुत्यःत्य ब्रें ळें य र पा वया प्रेम्'" ७ देया वेषा पर्द्या वया दम् क्षेत्र के प्रेम् प्रेम् प्रेम् प्रेम् प्रेम् प्रेम नेरामहेब राक्ष्याम्याकेराववाहवाग्रीत्येगमवेवादिराञ्चराधराञ्चव कर् शे इराया गुरायहर हैं या केया र में वर्ष से मुख्य गुरे धेव कर विवा त्रेव कु धिवा

② ("ইব্-ট্র-ইব্ কুঅ ব্রব্ব-শ র র্বার্নির ইব্ 572)

इन्द्रिया है है शे है है व्या मूर अक्ष्य अर ला स्था नदे.

"न्वय देन राष्ट्रेर्नी त्र्रे नाम्ययः कर् ग्री सुनयः सर्वर त्र्यः न्ययः न्ययः न्ययः क्रिं न्ययः क्रिं न्ययः स्वर् व्ययः स्वर् व्ययः स्वरं व्ययः स्वयः स्वरं व्ययः स्वयः स्वयः स्वरं व्ययः स्वयः स्वयः स्वरं व्ययः

स्व.च्यापः स्व.वीट.तक्रे.श च्यापः स्व. ळ. ४८. २ वर. भेषा च याप. भ्रव. श्र. या द्व. प्रथा च याप. भ्रव. भ्र. या द्व. ৾ঀ৽য়৽_{য়}য়৽য়য়৾**ঀ৽ঽঀ**৽য়৾৾৴য়ৢ৽য়৾ঀয়য়৾য়ৢ৾ঀ৽য়৾ৼৢঢ়ৼয়৽ঢ়ৢ৽য়ঢ়ঀ৽ৼ৾৽য়ৣ৽য়৽ ৾ৠ:য়<u>৾৾৽</u>য়ৢ৻৽৻ঢ়য়৴৽য়ঀয়৽য়৴৽ৠৢ৽য়য়য়৽ড়৾৾ঀৢঢ়য়৽ঀ৴৽ৠৢঀয়৽য়ৢ৽**ঀৼ৾৴৽৽৽** য়ৢঀয়৻ঀয়৻য়৻৸ঽৢঀয়৻য়য়৻য়ৣৼ৻৸৾য়৻য়ৢঀ৻৴ৼ৻৸ঽয়৻ঢ়৾৾৾৻ঀৢয়৻৸য়৻ড়ৢ৾৾৽ म्राह्म भव्ति भव्ति स्वाप्त विक्ता म्राह्म निष्य क्रिया भव्ति स्वाप्त कर् विवायः हेयः श्रुंदः नः नृदः। क्षेत्रः सन् नः र्यवायः नृदः तनदयः न ह्रवः त्मॅ् नवस्य ठर् परे विरः क्वेर् प्रते छेर् तु छ्वा ह्रा र स्वा वे त्या स्वा । म.बद्रायदर्भद्याम.ब्रेन्.सपु.च योष.पूर्व.च यथा.कुय.ब्राह्मच.नया.क्र. हुर-त्रु-पञ्चरया-वैरा| वे.कर-प्रश्चर-बेर-इय-ग्रुपावया⊅म्राया-सक्रम् मी-अव्यक्ष-वर्दे मात्र-ब्रेन्-धर-ब्रुमात्र-वर्ध्यन-धर-च्रित-धर-द्रिन्। प्यद्यान देव त्यूं विषय ठर् देवान इतात हुन र त्यूवात विवय हुन बान्ब्र्न्यर वि.स.च मृतः विवलायाञ्चर निर्देश्य सान्तर वहुवासर <u> वृत्रः श्रुदिः न् श्रुप्तः अन्तरः सः ने प्रुप्ते वृत्रः सृत्रे अप्तरः अत्रः स</u> मझ्यान्-प्रवर्षाम्बर्षाक्-प्रवे नायाम् न् भूगम्बरायणाः भेषा <u> ल्याया क्षार्या क्षार्या क्षार्या क्षार्या क्षार्या क्षार्या स्व</u>

पर्वाता सदी र्वेट्या मा न्या परा हेता त्र हेता छव वहे में इसका तहें ब न हु र हु म पर न हे ब न म द द द र ल ल न ह न न से ब हु र ने ् व " ् ५सु८: छेव: धुर- ए. बेव: यग्य- ६ेव मङ्गु८ल: वर्षा वर्षः चेट: ग्री: यर्ल हेव् ब्रेन्-चॅ-लब पद-इबल-३ ब-पर-हॅट्-पर्-पन्-दिद-छे-पर-ठवःबहे : वः भ्रान्तः । न्यम् क्षेत्रम् विष्यान्म अवस्तु अत्रान्विष्या र्वेष्वेष या विष्ठे पा केव्या यसाम्बन्धान्ते के सारा निष्या स्थान में स्थान में स्थान स इस्रतः ग्रेया वितः व साम्यी गाया इस्रया सम्दर्भ निक्ता क्रा निर्देशाः ग्रैकाळं नः श्चे वा त्यका श्चेरका त्या **सर्**न्स् श्चरा ना स्वाका न वाता देवा न क्या ः ययायर्याया मान्या अन्य सराज्या अराज्या के वार्षि के वार्षि वार्षे वार्ये वार्षे वार्ये वार्ये वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे न हैन नुया है र की श्र है न विष केया ब्रेट में मिर परी र में र महरा सारा नत्रन्यः गुनः यः व्यक्षः रुन् श्चिरः स्व मे नै र्रास्टर् मे । हर विदः श्चर में रायः नर्ग छेर्-र्-मञ्ज ननः दर्वे या खेद्रायर राज्य के के राज्य र विवा यः वयतः उ*र्- ञ्चरतः हे । ज्*लरामे : क्ष्यः ल्यतः शुः यञ्जनः अरः अरः अरः अ मुल वर्षा नरः ५५ में राष्ट्रियाप्तराम्यानायाम्य म्यानायाम्य मान्यानायाम्य । য়য়য়৽ঽৼ৾৾৽ড়ঀ৾৽ঢ়ৢ৾৾৽৾৽য়ৢঀ৾৽৽ৼয়য়য়৽ঽৼ৾৽৽৽ पञ्चित्रतात्रताः स्टरःशुः श्वापायम् केरःपः सम्मातस्तातस्त्। तस्तिः ने श्वेषः कर्ःः ५८। वाष्त्रमा झाबा मग्रस्त्र्वा बर्यस्मिता यक्षक्रा <u> ব্রুমের ব্রুমের বর্ম রাম্বর করার বর্ম রাম্বর বর্ম র</u>

दरद्यानहृदात्री है श्रेत्यी नरातु नने क्रितायश्चर केंग्या दरा ~म्रा.या. बळ्या मी. न्म्रा या वे न् न्ता अधुन प्रते । व्यया यने ग्रा श्रुपा श्रु मः य रुषा क्षुः रोनः मध्यवः रुन्। रोधवा हेः मृरुषा वी क्षें ववा वी गानः मानः । <u> देव-क्रेब-स्-नथन क्रेथ-श्रुध-स्-विस्-। स्व-क्र्स-स्-द्र्य-</u> क्षका ग्री के दातु वृत्वे वाद्यं वाद्या द्या विद्या लट.रूर.यूष.हेर. २०४.च वे वे व ्वट. क्व. यूवे व. ट. कर. २४. से वया क्रे. हुना-पद्यतः व्यवतः ठर्-ारायः हे वळेन रह्य स्थतः ठर्-परे क्रिन् ही ... न्धताताञ्चन क्रम पार्वम्या अहारा अपन्या मार्च क्रम स्वीत सुम्या हे न्दर्भ नग्रद्भ नग्रवाधियाचन नग्रद्भ त्याचा स्वतः है । स्वतः । त्रम्यः क्षे. क्षे. क्षे. च्यायः क्रं. चयाः ज्यायायः परीयः यञ्चयः च्रेटः व्याक्षः च्य द्वै विषा वर्षेत्र सं छे न सम् बेन् श्री के उत्तर होन वा क्षेत्र विषाग्री सिरामा विदर्शेषान्वर वेराळग्या स्वाप्त्री **द्येग**-२ेल-तुनल-हे**-**शु-२ठल-सुल-ध-क्रेव-धेल-सुल-२-२-३-२-क्रेव-धेल नदेशमान्ता अन्कन्तुत्राचन्यार्थेन्राचित्रानस्वातस्य मः अष्टिवः देवः > अर्थेवः वर्षे वः प्राप्तः वर्षे वरः यः वर्षाः वर्षे वरः वर्षे वरः वर्षे वरः वर्षे वरः वर्षे व श्चुद्रापद्राप्तेद्रायाः क्रेरायदेग्वा<u>याचेत्र क्षास्याप्तात्राप्ता</u> वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः व सुत्रं नदै भी ने। "ा विषान्य प्राप्त नदे वद "वया सुर "विषाय वया

चित्तिः मञ्जूषः धन्यतः नृतः नृतः । वृतः धन्यतः । वृतः ।

"अग्री वार्य प्रित् वार्यम् सम्बाद्धान्य स्थान्य स्था

न्गतः व्यवन्तु न्यं न्यं विष्यं विष्यं विषयः र्ग'र्ध्**र'**च हर'द्रश्र'तश्रुर' बेर्' द्रथ' श्रुथ' श्रु' हेरा' 白野可以 ブア・ दब्दलः हें :ऱेष्पः पः क्वॅं : पचरः प्रायाः शैकार्यणका क्वेः स्वायः केरः वा याँ वि दत्तुराचेत् सुर याहूरावेरा। "ने वर्षा शे नेरायन में राजायन गार्थे द्वेन-घॅते-८ मृते ए*द*-बीका-बद्गवान्यते-क्षे-द्वन-वन-क्ष-क्षे-विन-अवान्यन---ळॅन्यायायदी पड्न विवासँ र न्युन् ने। विकास सँग तुः यवकाया इयसः विषयः सम्बद्धः इत्यारः पदिः ङ्वाः वदः सः क्वः क्वः क्षः सः रूरः प्रमादः विषयाः चेता छन्। "अविषान् वायानाः द्वानाः नुमान्यः । वायाः। १ॅग'वरारविंद्र'यामवेवामवादे 'अयामवामेद्र'तु 'ऋँदाया- चुँर'व्या द्वन्यः हः सं वहन् ने रूरः नु वेयः ठव यः इययः यः वयः मैंवः ग्रेः विसयः । न्डॅर्-इरा-पान्दा दुवाबह्दवाहू त्यदे हु या अळेन नेवा" इ लंदा सर.र.प.प.चयार्यस्चियाः क्ष्याह्ररात् नेया अर.स.ह्याया मधः हराः त्रिनः र्यम्या सहितः मया ने वासार् । वानः न्या स्थानः व्यापारः वाम्यः **नॅन•नवरः**क्षेॱहे*•हेन्*ॐॱयगदःदेवःद्रवःपवेवःमदेःक्षंॱवरःक्षेःशुयःपमुः **ઇ**য়য়ৢ৾৴ৄয়৾ঀয়ৣৼৢৼ৴য়য়য়৽৻ৼ৾ৼয়য়য়ৠৢঢ়য়য়৾ঀৣ৽য়ৢৢৢৢৢৢৢয়ৢঢ়য়য়য়

① (মই ল্ন ব্ ব্রহ্ম ন্র্র্হ ব্রহ্ম 67)

बहरा" किता प्रतायत्व

13. मॅंद'सदे'प्यमद'ङ्गर'ठू'प्यदे'त्व'स्रस'र्चे'्गेु'स्त्रेन्त्र' प्रदेश'याप्त्र' प्रमुद्ग्यस्य हिन्स्न्द्रस्यः सुप्पह्रम्यः स

ষ্ট্রী-মে' 1751 দুই-স্বা-গ্রীম-নের্-জিএ-প্রা-স্ত্র-র্ন্রা-बॅदःबदेःचग्रावर्द्रन्शुः लयर्द्रेब्रःबेदःग्रह्रन्द्रःबदग्रायदेः तेः विवर्शुः **इंट.**री.कु.पुट.री ल.य.विब.लज.वब.हू.वे.थी पूरे.री.चक्प. **क्रॅन.ग्रेन.श.लय.पद. इ.य.श.ल. ज्यात. १.५.००० ५ थ.व. श.ल. पश. पर थ.** क्रियर देवा दर्जे राजी वाद्रा लादे निवास वाद्या त्युर.बेर.इय.मुत्रःक्रॅर.ग्रु.पर्-वचर.लट्यःक्र्मत्यःष्ट्र-लदेःन्नः वःब्रङ्क्य व्यः "पष्ट्रवः यः कपः श्रेन् विषया विषया कुरः न्वेन्यः हे प्यादः व्यादः यॅॱन्वरः नर्यः ब्रब्यः ठर् : यरे : यहरः ब्रुट्रः यतु न्यः परेरः क्री : दर्ने दयः धरः : नैव-हु-ननवामः हुन्-वेषामदे-वेष्यवाद्यदे नगव-न्ना वेषा हुन् इः म्यासियाक्ष्यं अट.त्र. पर्याचिटा परियो , कुथा म्या द्रायते न्यायळ्या मेरा म्राया द्राया हिनाया प्रमान निवा मते र्भून इया बना वहा। "अन्या पर्नेन र्भून या केवा ये दे थे द्र्या ह्रवा ह दन्ष्या वे ऑदार्य अवा । कवा श्रेन् श्री स्वर कु सदर वे तर्वया या नु क्रम्भित्। व्रायन्त्राष्ट्रीयात्रायव्यायान्यान्तात्र्वाया र्

^{🛈 (}न्यम् नक्षम् क्षेत्रस्य अन्तः विमाग्नन्तः 4)

⁽इ.स.च.र.र्चना, ने.स.चे अ.अर.क. चून.चंट्य. २)

वका रूपा श्रीता वक्षा करा की प्रवाद प्रवाद स्था है। हा वा की प्रवाद विवाद ब् रोतरकु न इव प रूट कप शेर केव में र पव श्वेषण विव हु के परा "" देशःसर-दे-क्षरःसर्दर-द्रमेशःभिदः। विचयःधेरःनग्तःक्षंद्र-पवि पर्त्रः विषानम्यास्यास्तरे देवानविषा श्चु वातुवातु वे द्वा इया द्वा च मृतः न् ब्रॅं ला व्रॅं मृत्युद्रः सङ्के मृते विष्ठाः विषयः विषयः इ्र^{ॱळ}ॱ२८.र्घट.केब.र्टः। इ.थब.चूब.ता.बु.कूर.कु.कू.चे.च केव.बु. य्दःकिरःकृष्।प्रवादःविदःवःस्त्रःग्रदःक्ष्रः यद्याप्रवादःक्ष्रःग्रुः लयामा होन् या न्रा हे रामा नि स् स् स् स तु त व न या हो ने मा न या हुग्य म्नॅः विय न विगानभ्रान्ब्राला हुया चुरान न विवास म्निनान नेरान्रा न्व नगत ह्व तु नक्षे नविषा सर्ना में दाया केवारे दे दे वेदिया सरा यदः न्युं र हे . श्रे रेदः पर है : या मुला यळ व ता या ई र ग मृ न्न : यदि : स्रे दे पन्न क्रेब प्रत्यक्ष्या "चिष्ठरादिन्दनुन्यक्राकृत्रदिन्ति वारा यतुवायाळेवार्यवार्यत् चेत्राची क्रमाञ्चित्र सुवावायवाय विवासाने वे। वेदः बदैःचग्रदःख्दःचर्त्त्रंगःतुःबेद्ःधरुःद्वतःबद्दःद्व्यंत्रःख्दःचःवि**गःः** धेवः यः भ्रम्याः देवे वॅद् ग्री मिल्ट क्षेत्रः धेवः देवायः क्ष्र्वः द्वादः **यदेः वदःः** गुरुगः शुरु दुर्गित् यात् यव साव मा के यद बेत् य विषाधिव स्त्रा "五之·美七公·少士·劉·劉·母公·長·烏七·山梨公·口·白之口·哈七· য়ৢঀয়৻ঀঀ৾ 1751 য়ৼ৻য়৾ঀ৻য়৾ঢ়ৼয়৾ড়য়৻৸ঢ়৻৴ঢ়ৼ৻ঢ়৻য়ড়ঀ৻ঀয়৻ড়৸৻৻

 ⁽ব্নন্-ব্রম্ঞ্র-মাস্ত্র-ছ-র্ন্-গ্র-ক. 5--6)

हीन् अन्य महिकारी स्माय प्रमाय पर्मा मिन प्रमाय मिन किया मिन किया स्था **बर** संग्रा मं जुरा ग्री थिया रेगाया ग्रुव रहा श्रे यह व या वे या श्रेया यह य मास्र वं वा नक्षे न व न न व न हो हिंदा शु दें व व न न हे व **ग्री'यक्षव**'प**ेव्रायह्न प्रीया अर्थ क्षेत्र अर्थ क्षेत्र अर्थ क्षेत्र अर्थ क्षेत्र अर्थ क्षेत्र क** बळॅग नेवान हेवा वा निवास वा नि कुै·क्षं-ह्रेन्-ल-धेद स्वया हर्-कुै-ल-कुल-ह्रेन-केद-तर्ने सः तुते त्र श्रुदः मृद्धेरः मृद्धेया स्वर्या स्वर्या स्वर्या मा त्रा त्र श्री म नहेन्द्रः छ्रताश्ची द्वारा श्ची भेदा ह्वारा ग्वारा में न हे केन्द्र न हिन्दि सहारा षॅर्-कुः धेषा कः रे खुर- बहे ब- द्वीका धः बहु म वहे अप्राप्त वि केंद्रे.ब्रॅंट्र-ब्राक्टव्र.लुट्र-ब्री.ग्रयायकरान्त्र, याञ्चट्र-ब्रु-र्रलायदेः हॅ देते ह्रयाः बरैं तुः "हिते सं स्त्रिं शुर्रे द्वार्ये द्वार्ये द्वार्ये स्त्रु सुरातुः श्वार्ये पार्ये श्वर्रे सेत् इसं मुल में केर ला ताया सेर निम्न में दे सम मान से ला से ना से ना में में त.झ.क्च्यायातय प्रंतप्तर्याच्यया.ठर् द्वेया.पाच्चेर.बुटा क्येपार्यर मयंयारु न्या हो न इं न इं व न सास्य सुर सु हिं व न स के व से स्वाया <u>ৡৢৢৢয়৾৽৾৾৾৾য়য়৸৻য়য়য়৻য়৻৸য়য়ৠৣ৾ৼ৽ঢ়৾৾ৼৢ৸৻য়৸ৢৠৢঢ়৽য়৽য়য়ঢ়ৼঢ়ৼ৾য়৽</u> स.स्वेया व्रेयामा ग्रीनिया हे. तार्टा यहंट्या पर वार्वे र विराम्या है **ढे**न्ना हेन्-पन्द्र-त्रन्द्र-प्रदे-मृद्र-यदे-लयान्द्र-मृहेता हेवारा या दे र स्या जुला द्वरा **वयता ठ**दा बहु वा सदी या ता सारा सदी दा

① (देव देव कूरक पर रूप 572)

হুন্-ছুব অধুন্-ধুন-হ্অ-জুন্-প্ৰজ-অন্য ই্ন্ৰন্-ন্য-পূথা र्मता मूर्या क्रिंग्य अवा अस्त स्वाया यर्द्र क्रिया व तर्तु चुर मात्रम्या मुलाविरे न् नदाय दि म् श्वरात्र याशु व राहे व त्वा मात्र महारया ঀ৾ৼ৾৽ড়য়৾৽য়ড়ৢ৾ঀ৽য়ৣ৾৽য়ৢ৾ঀ৾৽ড়ৼ৾য়৽য়৽য়য়য়য়৽য়ড়৽য়ড়৽য়ড়৽য়য়৽৽৽৽ महेवा मूरायाक्रवात्रास्वायान् मूर्या नेवानुः ह्रवायायाहे हाया (अर मुः) वेदःयः नम्यः मवदः न वश्चरः वेदः इवः श्वयः श्वः श्वः श्वः द्वः यः देः **क्रव्यतः मुद्रे मा प्रतः प्रतः हिला प्रकार पायतः हिला धरा माने वा शुर्वा शुर्वे रा** ग्रैसः पर्म मुदः केसः वयः प्रदेः क्रुंदः धेदः यहु मः पर्मा देरः धेद करः पर् ग्री-बी-ल-न्निम् क्षे-ल-न-क्षेत्र के बी-तिन्ति । क्षे-ल-न मु-वाह्निन के विष् महिनायान्य मंत्रायम्या श्री सर्वे हिन् सु विना न्द्रा न्यना ञ्चनःयःन्दःविषयःग्रॅनःयदेःन्यवःयः हें दुःचगुवा ग्रेःस्। ववः र्यम्यः पञ्चरा व र्य - व र र क्षे. च र र के र के र म र र म र र म र र म र र म र र म र र म र र म र र म र र म र र विषायः विषाचितः न्मॅबायर् षा देतः हे ज्ञायायर् वाषी बुग्वार्म्म् द्यायात्राम् तः स्वेत्रवादे । प्रवेदाया स्वार्म् द्या स्वार्म् द्या स्वार्म् द्या स्वार्म् **ঽ**৾৾ঀ^{ৣ৽৽৽}য়ৢ৾৾ঀ৽য়য়৽ঽৼ৽য়৽ঢ়৾ঀ৽য়ৼ৽য়ৢ৾য়৽ঢ়ৢৼ৽ঢ়৽ড়৽ঢ়৽ঢ়৾য় विनयः तः क्षयः पः पस्याः तुः ग्रीवः क्ष्याः तुः वीः उत्तः नः विषयः ग्रीः सुन्याः र्ख्याः धेवु वतरा रात्रेया पर्वेया यर्गे प्रकाशी लु पा तस्या हु । श्री पश्ची राजा स्वर त्तु गः श्रुयः सुग्रः श्रूपरा मञ्जूदः वर्षा देः यः वर्गः व्यत्रः सुर्यः ग्रुः क्रः स्रः AT पर्दु ग्रा में द र या पर गार्चे र के द र ये र हे द र या वे शार्मे द र या क् या र व शारा र या व

मङ्गबायाने बार्च के सुवाय केंद्र क्षेत्र येवायन वर्ष द्रापादमा । ह्रदायन यन् गार्थ केव सं केन् प्रमुव मदे नें व त्राय तः वे म श्वाय यान् में द्या मदे मह्नत्रामित्रेत्रात्रव्यवान्यवास्यात्यक्ष्यामान्यवि वे वानवा मह्नवासा **२ेदःसः के**:बुन्दायायान हन्दायाया विनायम् यः देवः क्रुंदः यः केदाः ग्रुदः बुः वेद्याः स्र-ह्वायाक्षातुः**तुराधराने वे वारुटा शे वाशुट**ायरायतुर्वायायदे । यस्रा या इं म् वा ब्रुवालुवाया ने व्यन् यन यन त्वा वा विवास **३**लाधेनला वळवलानेरामॅन्यलाकुलान्नराधेन्येत्रवितावर्श्वनाकुत्रा मॅद्रायाळेवारॅंद्राम्**वरा**र्स्वयाग्चे खुन्दर्शेवासुग्वरायातस्त्राप्यादेवराया मॅदः बर्दे सु बहु द दिवया पर नग्दः यय। में द : धुवः द दै : न ह्रदः पदेः त्वुरःषिर्यः भेवः पर्दः न् परः गैयः पर्ने देः न् व ऋँ रः यः देन् ग्रीयः ग्रुः स्र सः स **ब्रलायर प्रवास्त्रा अदा अदा विता तु प्रवाह में प्रवास में कार्य कार्य विदार करा है । व्रिट्रा कार्य कार्य कार्य** देन्-ग्रु-मलब्र-पान्-क-वॅन्-ग्रु-मङ्गव-श्रेन्-मबब्य-ठन्-ग्रु-प्यव-प्राप्त--<u>श्चेमःक्रेन्यः वर्षः श्वयः पर्याने । पत्ते वर्षायीयः पर्यात् वृत्यः यो अर्थः वर्षः वेतः ः ः ।</u> बेनवा पर् हे ज्ञा वा बळें वा व वा प्राप्त में वा भेवा हु के लेवा लुवा पर्या देः अन्यन् न्तेरः ग्रे प्रम्य स्त्राह्य अन्य श्रुष्ट्रिय । श्रुष्ट्रिय । श्रुष्ट्रिय । श्रुष्ट्रिय ।

मृत्रार्गितः स्वार्थः श्रामः नी न स्वार्थितः अतः निर्मार्थः अति । न्-तुन्-वानुवायाः मन्यवय यायने मिल्ने विन्ने **ॾॱळवॱय़॔ॱॸ॔ॸॱ**क़॔ॿॱॸॱढ़ॖ॒॓॓॓॔॔ वयःनर्चा जःर्द्र्यःश्चःचश्चरः ऄॗॱऄऀ॔॔रः.... बेर्-धर-वेरा-धेर्व। "① वेरा-म्राया-वार्मर-बा बहर वेदा-दर-विया महार में या में या विया मवराया ह वया खरा हु रा हु। से या विया में विया में या विया में *য়ৢ*৾ঢ়৾৽য়৾৾৾ঀ৽য়৾৾ঀ৽য়৾৽য়৽য়ৢ৽ড়৽য়৽য়ৼ৽ড়ঢ়৽য়৽ঢ়ৼ৾য়৽য়ৢ৽৾ৼ৽ড়ৼ৽ नग्रतः नव्हरः नः इस्रतः भ्वाः वर्षे ग्राः स्वरः ने राविवः तुः न्युदः इस्राः वदः । मवरः वर्षत् यः दर्रे 'सृः तुः वैः क्षरः स्वार्यः ज्ञुवः ग्रीः धेम रेमवः दयदः वैमः खुवागुराम् स्वापायक्या स्वत्या स्वत्या म्वव्या स्वर् स्वरे म्या म्वया श्चेर् गृलुर अन्यानमॅर् पदे स्ट्रिंब वस्य रेन क्रि. वर रुपर । "क्रे. ब्रुटारवाळवासुरावि पत्वावायस्य दुनाया नेटावायळेना द्वाराया मदी मही वे मदी मही मार्थ मही मार्थ मही मही स्वर्थ से मही महि बःकेवःपॅदैःनगाषःकॅषःश्चिरःग्रीःसगवःनवेषःतृःसदैःञ्चःवःवैरःवषः....ः पवेषान् विषान्ता। विषया द्वीता गाता ह्व तार्वि । पक्षी न विषय विषया था द्भराखान्त्रः कुषान्तरायतुवाया केवाया अष्यान बराकु विकासमा विवास **पॅर्**'ॾ्रितः इतःश्रेर् ग्रै खुग्यः दग्व प्रवेषा " वेषः र्रः । **"ग्रःयः** केव्'र्यंदे' ग्रीर: म्रायेनरा प्रायत्रा सुम्हेर स्रायः केव्'र्यंदे स्ययः नवैदादुनः द्वन्यः अर्क्षन् तुः न्ने नदेः वैदाने कुलः ननदारा हेरा कुलः ।।।। নম্ব, প্রথম ট্রী, ন ধরা রুর প্রথম হব, প্রান্ত ব, না নাই, ই, শ্রে, পরি, শ্রী, পর

① (वृद्धः नगृदः नशुदः तस् वः क्षेत्रवः न्यः न्दः द्वः देनः गृदः वः १८०)

বর্ষান্ত্রিমান্ত্রিমান্ত্রিমা "① ইকাল্বলান নহলান্ত্র্না এল্নান্ত্রিমান

व्य-व्यान्त्रेन् मृत्यान्त्रेन् मृत्यान्त्रे । व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त **८६वयः अनयः चत्रः इदः इदः इदः वदः न्यः । वदः ।** द्रशादवर्षा द्वाराय विवेदानवयायुनार्थे श्वरातुः नकरा देना वितास न्यान्यं वर्षे द्वार्यः व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त वर्षे व्याप्त वर्षे व्याप्त वर्षे व्याप्त वर्षे व्याप्त वर्षे *षॅगॱ*ञ्चन् वर्दन् ने 'गशुर-ने गणा *' ष्ठॅन*-ऋ' षॅत-दल में दः बल्दे दे दी हुत <u> हेल.पश्चरताने.पगेष.भूय.ग्रे.म्.लर.चल्य.त.लयो सर.स्.सं.सं.चरु.</u> *१ यान्रा* वशुराबेन् इवाकुलाग्री रुवान्रायातराग्राचा *वैदःवषय्यः* यद्भर्ययः य**त्रुद्धः प्रमायः विद्या**त्रः विद्याप्यः विद्य **इटा श.रनय.ग्रे.नर.पे.विजय.**ईय.पक्च.न.जूटा *ेष्*य.ज*ीवरय.* हुरायरा देरावयारी यवालादी निया सवासाय मी पत्राश्चेवान पुरुष्त्रं द्रायान्त्रा से केत्र्ये देः व्यापा दिन्त्रा शुः त्युरानः शुः के राज्याः । षदः बेर्- धरः ब्र- षदः निष्यः व्रेतः श्रे देशः धरः दहेषः धरः विदः निर्वरः निषयः हैव-पर्वयाग्रीयाथी प्राञ्चेयाग्रह-हार्मानेयायहार व्यवसायहार विवयः परे गुरा पर्या परि विवयः भेग द्वा क्षा या के पर्या दिव गुर मॅंद्र-अ:केव-यंग्रन्यम्य:ब्रॅव-ग्री-गवग्र-द्रः। हं ग्रिय-हरे है के क्रं नवर्यात्रीमिन्द्रीतुन्त्राहेत्रीन्द्रीक्षेत्रायाहर्यायान्त्री

^{🛈 (}नेन वेन स्टानित न्वेन सि. वेल वा नेन जिल्ला 16)

सरावश्वराधेराक्षा कुषाव्य राखेरात्ररावकरात्ररावया राक्षे मेरास विषानुषाग्रीषानामाञ्चनवा वनवा पर्नेनवा ह्युना ह्य पालु विषालुषा परमा क्राम्ययान्ग्रीयान्वयाक्षेत्रायान्त्र्याः विषयान्ययान स्राम्यादान्त्र्याः म्बद्धाः स्टर्भः स्टर्भः स्टर्भः स्टर्भः स्टर्भः स्टर्भः गर्रेग ग्वर प्रतः तर्वर हुँ र द्रेग परि देव। में र ग्वराय ग्वर हुँ व मही था महिषा महा मु दें वा महि हैं मा यहा हवा महहा महिष्य महिष्य भूव धव भूट ने विट लेग हैं में विष है नियं या अस्ट नी के या क्षिया न कलाई विवास ज्ञुन मा वर्षे वाब विताह के विदास में कि विदास चरुषःपर्श्ने पवना नवरः। "② वेषानव्ययः चर्तरः। प्रमदःश्चनः र्रः न्वरः ब्रेवः र्यम्यः स्ट्रः वियः यः न्यवः यवे विरः वृहः यहेन् वहः । । । विवर्धर्भित्र "नगतः व्वन्ध्वा कुरः **र्व**्रायते विवास्तरः तुः देशः तम्रीयास्तर्भातास्याप्तर्भातास्याप्तरास्तर्भा म्राज्यस्याप्तराम् रट.ब्रुव.ल्ट्री वंब.वे.च.व.च.च.क.क.च.ग्रीव.वेब.हेर.ब्री.म्ब नम्परः ह्रॅंब बनसः हुरः ७ बः ह्रुः सेरः वृद्युयः यः प्यरः ५ देवसः ह्युवरः ग्रैसः ःः नभूषाया भः नषा पर्ने न लि ने पा तक दशा च्या या व्यव से निया **ৼॱ५०**७७ प्रमादः ह्वं वाद्याक्षरम् अत्यावे वाद वे वाद हिरा ५८० । तर्देन् ले च वना र्थन्य द्वार र्खन्य के चेत्र स्ते रेन्य न्वित्र व्याय स्त्

① (অই'ঝ্দের্মর ভুর্মর ট্র্মর হর। 68)

① (ব্ৰশ্বথ্য কু.ম.শ্ব. ফ.প্ৰ. এ২৫. ৪)

मन् कपः श्रीन् श्रीः विषयः यने ग्रायः न्ता व्यापः यन त्या श्रीः व स्था श्रीः व ৾ **ৢঽয়**৻৸ ড়৾৾৾৾ঢ়৾৾য়য়৻৸য়য়৸য়ৢ৾৾৻ঀঢ়৾৾৻য়ৼ৾৾ঀৢ৾য়৾ঀ৾ <u> ૨૪.૦૦ કે ૧૪.૧૪.૧૪ કે ૧૪.૧૪ કે ૧૪.૧૪ કે ૧૬૫ ૮૮.૧</u> क्षा देव शेर् थे न्यो प्रति प्रति प्रति दे र र ने श्री र ने य के र खु परि नविवान ह्रवायदे वैवा हें वाया नहें न् केटा रहा वेबवा वेवा हु पर्केरा मःमङ्गाञ्चेतः क्रमः वृत्राः मृत्राः मृत्रीमृताः मृत्रायः निष्राञ्च हात्रायः मा निहें नेथा रे.हे रथ.क्ट.अ.हिर.रट.इ.अथ.चेशट.क्र्य.हेय.हन. क्रर. यः बह्दः द्वेषः र्यम्यः नगदः वेषयः द्दः हेषः शुः दर्धेषः परः प्रमदः ह्वः ૹૄુ[੶]ૻૻ[੶]ઌૹ૱ૡ੶ૹૄ੶ૡ੶ૹઌ੶ૹ૾ૢ૽੶ૡૻઌ੶ૹૻੵઽੑ੶ਜ਼ਫ਼੶ૡૻઌ੶ਜ਼ਫ਼<u>ૺ</u>੶ਫ਼ੑਜ਼ਸ਼੶ౙਫ਼੶<u>ਖ਼</u>ਲ਼੶ਖ਼ੵਜ਼ तार्थिताक्रियः प्रहार प्र्यायः क्रियः यह याता क्रियः विद्यापा । यात्रायः नरात्धराष्ट्ररान्चनान्वता वर्षेन् इताह्रवताल्यरान्धराव्यान श्चरः क्रुं दः त्यत्यः श्रुं वः स्वे तः स्वे दः श्रुं वः स्वे वा स्वः रे रदः। सः श्रृं रः ववः न्रः अधुवः धरेः वि प्व नृष्यः नृष्यः न्य वरः ने प्व वरः ध्व ष्यः प्य न्य न्यः ग्रीवः ः ः ः पङ्कला "ा ठेलान्यलयानाक्ष्राने व्यापञ्चरा 1959শ্বন नम्यः नम् मैं भ्रेमः मृति रूटः तम् वः रूट्टा अवतः रूम् के सं लेखा न कु द्य-५८-पर्देर-क्षेत्रक्षय श्री-वेष्यातालुप्र-धूरी

^{🛈 (}र्वाद प्रवे प्रवे व्हर प्रहेर रेव रेव 65)

स्वाप्तवर्भवर्भरा क्षाचनर्भिरः वैवाक्रे श्रीन् वर्ग्रे स्वाप्यवार्वरा **ॻतुरः**च। देे :हेखःचगादःह्वंदःद्वाः विद्यःचिद्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः श्चीत्रास्य स्वापाय त्यान्य राष्ट्री स्वाप्य सर महेद्रम्य मान्या श्रीत् मानुद्रमी त्या सुमाया नुस्र सामा कर कर के द्राम हुर-पर-पहेवा बॅर-बर-पगल-केर्-रु-बरगल-पर-दि-हू-वेव-इवल-**रमः। सुमःमङ्गेन, परुषा अवशः ज्ञालः ग्रीषः इतः प्रायः पार्वपः न धनः ह्याः** क्रयःश्चिर्-ग्री-श्चेग्-ग्रिन्यसः सम्बन्धान्यस्य स्वरः स्वरः स्वरः न्दरः। वीः वस्यसः मेदः त्रेयाध्रमानदे केन् म्हारा स्वरान्में रका मङ्गेरान्मा कृ यदे हा सरा हुन *ते८:बुत्रः* **इ**ंग्-श्चन् धेन् य्याः **१ व छेन्** धुन्यः ग्रीः सः दहेन १ व : क्व पह्ःः नशिवाबियासराज्ञियास्त्रीयास्त् ৰ বৰ ৰাথবা

"केट.करे.पृ.वेवा वरे.हा वरे.वं येट.सं.वं हुन. कृषा वर्णे.वं प्रे.वं क्रे.वं क्रे.वं क्रे.वं हुन.वं क्रे.वं वर्णे वर्णे वर्णे वर्णे.वं क्रे.वं क्रे.वं वर्णे.वं वर्णे वरे नगर व्रंव स्ट पड़े न।

ब्रियान मा विवादा स्थान विवादा स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान व्याच र्ह्यून हू त्यते न्ना सामा सुवा ततुन् स्त्रेन स्त्रेन सर्वेद द्रा स्त्यत्यत्यः वी वे वी तीर त्या ववर व्युत् चुला वा वि रहा वी हैं हैं नयरंना श्रीरः स्वारामह्यार्थे वेषा वेषाप्राप्ता वेषाप्रामः बर्-बे-तेन्व-पदे-वु-न-बद-र्वयाच्या-पर-पहेन् हि-ल्य-क्रिन्-व्यामन हु विव महेतावता सेवा मेतायहेतायर। वर् सेर सेर सम्बद्धा सम ञ्च वर्षः भुःतः न्द्रं न्द्रं चुकः न्विकः ग्रीः बद्धतः न्द्रेन् मुः त्वानाः हन् ह्रंन् याचेर् छेताम्राया केव् यंरा ० क्षवा मुंवा प्रतापति रं या प्रतावता प्रया न्द्रेन्यापरातुः विवयायाञ्चराते वयरायार्गा नेरावाळेवायरातूः लादे : इ. चंदे : व. चंदे चंदे : चंदे : चंदे चंदे : च यते र्श्वेन् केट र्सु र्सेन् श्री के र द र दे र केर पठन पत्रवा पा न स्विन कन ग्रे-द्व-वययारुन्-विव्युः तिव्ययायन ग्रेन्-द्वेयायन न्वेद्याव्या मग्राबाद्यायायते. स्रायायाचेत् स्रायाचेत् मु न्यायाच्या ह्रायाचे ह्रा बायानग्यानग्रवातुवा सुदायहे हा द्दा क्षेत्र क् न्म्यान्तः द्वरः क्ष्मा प्रवास स्यान्मानी विषायेन्या परः न्युन् व्यास्रः क्री.लेबबाब्र्याक्षेत्र.बव्यायहब्ब्याक्षेत्र.त्रायहिंबाचकर्। क्षेत्राचर. मन् वृत्राम् वृत्राचने तहम् वार्षा प्राप्ता त्रा नामवारा छन् न्या

मुक्रालाङ्गार्थर व्यान्न स्टाल्य स्वायाङ्गार स्वायाङ्गार स्वायाः स्वयाः स्वयः स्वयः

युः सं स्वा वी चुः चः स्वः यः ध्यः धः व्यः य त्रा स्वः स्वः स्वा स्वा स्वः स्वा स्वा स्वः स्वा स्वा स्वा स्वा नर्भः पवना नवरः पदेः प्रमादः भ्रवः प्रवेशा ५.४ र. लरः इरः ख्रा क्रि-वि-रदाम्बेयावयानग्व-व्यक्तिम् । ययान्याव व्यव-व्यक्ति दॅवः वेषः यदेः त्वः यदेः वदः वषः ग्रेषाः पदे यषः श्रुणः ध्रुषः यदेः प्रग्रदः **त्र्वः** भेग्वः बरानः न्रा नाम्भेतः नग्नानः ह्वेतः श्रीः वरः ववा यहे न नित्तः सुरा मी कें स्त्राच्या मेलवाया सम्बद्धाः स्त्राच्या प्रमाया स्वराधिक स्वराधिक स्वराधिक स्वराधिक स्वराधिक स्वराधिक स हं राग् विते हिते कें वि मार्च पर ना मार्च न दर्भाक्षं सं विषा अष्वदाव विव के न्रा के तर् वर्षा प्रवा में र या के वा संभा क्षेत्र सुवा हो। ही द्या यहं द्या ही। हा या निवा सा के निवा **ॐॱॐॱज़ढ़८ॱढ़ॺॱॸग़ढ़ॱॾॖॕढ़ॱज़ढ़ढ़ॱॾॺॺॱॸ॔८ॱज़ढ़ग़ऻ॓**ॱॼढ़ॺॱय़ऀॱॿॖऀॸ॔॔॔॔॔ **9**

स्वयःजयःक्ष्यः **द्वयः । अर्थः** प्रत्यः । यस्य । यस्य । वस्य । वस्य । म्हेर-व्राप्त निया गुर्या श्री के स्वरा ग्री वर द्वार विष्ट पर्वतः यॅर^{्र} म:क्ष:रम:दर्देन् ग्रे:बे:२बम्ब:बब्बल:ठन्:व:५नम:हु:मञ्ज: डु८:५र्_न ५.७.४ूल.३व.५४.२४५८.धूब.५४ूब.५४, हुथ.५.**५**००. दर्ने यः न्दः प्रश्नुं व धरे र्श्वयः कुवः के दः धरे रहे वा तर्न दर्वा की का परि द्वे · · · त्तेन् चेन् न्यं वा न्या के प्राप्त निवास के कि स्वाप्त का स्वाप्त के स्वाप्त का स्वाप्त के स्वाप्त का स्वाप्त के स्वाप् मदे तथा कवा ने शरादधर कंटा अ तथा मा दहें ना छन रातुर धरा ही **इंग**.यथ. प्रभूट तपुर स्र अंचे ये. यो के प्र. श्याय प्रयाचित. भी. यो या या या प्रयाचित. भी. यो या प्रयाचित प्रयाच प्रयाचित प्रयाच <u> चेन् दंशः इवशःचेन् ख्वा च नः इतः इतः देशः नगदः व्रंतः श्रुः ईवा वयः</u> ॻॕज़ॱॖॖॖॖॖॖज़ॱॸॖ॓ॱॸॖॣॸॱॸॿॺऻॱॿॕॱक़ॣ॔ॱढ़ज़ॱॸऒ॔ॸॣॱय़ॱऄॖॸॣॱय़ॱख़ॹॱॺॿॎड़ॱख़ॱॴ॔॔ॱॱॱ श्चीत्राच्यात्राकृतालु प्रमेशायदे सेगाया द्वा । वर्षा या हा स्रायाया गु.चथा व.प.पबंदशकु.पपु.दुबंधावैद.वं क्याग्रेट.पबंपु.हुय. शु'त्रच्रत्रावया हू'यदे'ञ्च'वार्द्रा इ'यर'प्र्'यदे'हू'वेद'इवया लालुकामदे समाळेंद्र नसूत्रा हूरलदे हा सदे समान्द्रा नग्रा बर्गलायते हु 'वैव'ग्री मवामा पठलायम है मवरायते में व स्राहिता <u>ররেরে গ্রীস্বর্ণান্তর বার্বাররের বর্তার রূপ করিব করের প্রা</u> वरःवतःग्ररःस्वताःर्वतःर्वताः वर्षवाताः यदिः तान वयः यः वर्षः प्रतिःहेलःः त्य**र**क्षः ब्रेन् प्रतः त्रेग्राक्षः बुदः व प्रग्रतः र्वेव ग्राव्य व्यक्षः वयः देवेः द्दः नेषः परः चेषः दयः च ः पः यं यः चेषः परेः क्वः बळवः लुषः हेः हेषः यः · · · শুর্টু মান্ত্র

र्द्रवः स्व म्रेमःया इतः न्यं वः म्रेसः म्रेनः व म्रेनः व म्रेमः व नवन चेन्-त्रा नगर र्वेन इस्य नय नमः तर्ने न् की नर्वे नवन च्या वःशःतत्रुवःभेरः। वैगःन्धन् वःश्वं गवाः व्यः विशः विशः विशः विष्टः विनः ₹सतः ग्रे-के राज्ये त्या देवा ग्रे-देवे प्रेन्दिन के स्वाप्त के के स्वाप्त के के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त इसका ग्रे-के स्वाप्त के स नश्चनः इ. स्वयः ग्री-पवितः स्व ने में ने ने व्याप्त प्रमा निवास ब्रेन्-इब्रामुल-ब्रुं द्र-पदे-व्यन्-ब्रुंन्-ग्रेज-पदा-दिन-घुक्-प-द्रवान-द्रान्-दि रदः ने हैं . या स्रि . यदे बे ह्य बबा यवा क्व वा या ने में दाये हो दा न में बार . व्या द्वारी श्रुप्त स्वाया यह स्वरंत ह्मरा नरीम्या सवर हुँ न् सर विरा वे तेरा हुँ र न्र साम व हैं मूरा नहन्द्राया चुरायत्व राष्ट्रिन क्रिन्य निर्मे मान्य क्रिन्य क्रिन्य मान्य क्रिन्य क्र पवनानेन् मु कंटाया पनावान्त्रवाह्म स्वराह्म प्रवाहन स्वराह्म स्वराहम स्वराह्म स्वराहम स्वर वयान्वेगवान्द्रग्वान्यकाने दूर्वात्रम् । क्राव्यान्यक्रा हू विवाह्म वारा व्याचन विवादि । हू विवाह्म विवादि । विवाद चम्यायायायायाये द्वावित् श्री सवामा श्री नः पदि चम्याया स्वा ने दें द प्र वेद हे ता हा प्र हो र पा हे द । प्र प्र प्र प्र प्र वे प्र हे पर हे विष *ঀৣ৽ঀৼ৽ঀয়৽৸ড়ৢ৸৽য়ৣ*৽ড়৾৾৾ঀ৽৸ৼ৾৾৽৸ৼ৾ঀৼয়য়৽ঽ৾৾৴৽ৠ৾৾৸ वया श्रेमवदानहे सम्मूरान्म्या यदार श्रूम श्रेन हरा कुला न यद तपु. इय. ली प्र. तपु. याल्या रच . लया हुर. यूर् . य स्वया पड़े . हे . वया चह्र-अन्वर्ध्यस्य छन् छिर-ल्या छ्यायतुग ने अन्यर्भरत्यः ष्टर् ग्री पहे कंग महरामा **इया शाक शें शें** राय बुद मही प्राये राय दें राय द्रवराताःश्र्वानः देवाल्यः तेष्वान् व्यात्रेतः श्री वाल्यः तेष्वाः व्यात्रः व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् त्यतः व्यात्रः व्यात् व

र्देव:क्षव:मुक्रमा या क्षव मद्र:र्द्माय महे:र्द्माय:र्द्राः हेय:पः न्हें र जु ते ख्राया सव वर्ष न्या र में या तर् ना प्या विष्य र छ र कर छे लियाय ग्रॅंपा.पा.पाया.क्ष्य.पर्स्ना.लूर्.पर्स्ने.पर्वयाचेर्य.पर्ना द्रयाय द्रया.लूर्. मदे शे ल्या मा स्वरं के मा स्वरं का मुक्त का मा स्वरं के यः नृतः । रतः बळववरा ग्रीः विवयः दम्या ग्रीनः वीः यन् वा नृतः में देः विम वया ननव द्या ग्री विश्वया गृहें दा नृष्या शुः तर्नु म वशुरा श्रेरा स्या श्रुवा वयारमाञ्चमानम् भराग्री हिमार्श्वेन के मान्मा मनमाम निर्मा निर्मा बेर्-पर्वे बे हैर-प हेरा बेर्-इबर्क ग्रे-पर्व कद नहेरा हेरा र मेला ग्रे-कु क व अया कर् जिस्या तर्रा वर्षेत् अर् अर् अर् अर् अर् अर् अर् अर् नदे ह्रन्य ग्रेय व्यव रू में क्षेत्र हुन हिन्दी कुन नदे के के त्रुन र भूथ.पय. ब्रे. प्रम्. सूर्य. सूर्याय. यथा. विषय. प्रमाय. क्रेट. रेपु. रू मेथा.पा. क्रैया.पा. न्ता अनाक्ष्यान्त्रें तान्त्रें या नेयाक्ष्याः स्ट्रास्ट्रास्ट्रियाय न्ता न्वत्याविष्यात्वाताम् दाह्ना द्याया सन्ता क्षेत्रा सन्ता ৻ঽৗৢঀৢ৽য়য়য়৽ঢ়ৠৼ৻ঢ়ৢৗয়য়৽য়**ৼ৸৽ৼয়৾য়৽ৼয়য়৽ঢ়**য়য়৽৽ त्रेयतः इतः यदेः भ्रां वदान्या मुहत्। भ्रायः दूरः व्रेष्ट्रयः हुतः दृद्दिरः र्वेगलाञ्चा रेवेन व्याप्त क्या वित्र क्या वित्र देवे व्याप्त वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वि मदे देन्या ग्री नेया मस्ति व्या मस्ति व्याप स्ति व तेबतः इतः में तः केतः ग्रुदः न्त्रत्यः वरः देवः द्युदः ग्रुः द्युः वः स्थः ग्रुवः । · · · · ·

नष्ठ्रवा हु त्यते ज्ञा वा नहा । क्षा वा न्या हेता । व्यापते निमादा में नहा वा निमादा होता ।

तर्वायत्वरत्ह्वाः कुतः श्रूर। प्रवर्णात्वाः कृतः श्रूषः कृतः वृषः वर्षः दर्नेषायतुम् विचान्धन् वास्याखन्यायान्त्रेवायम् राज्यायवार्या बः धवः हवः न्दः वेषः धदः ठवः ५ ने बः श्च ग्रायः ग्रेः प्व शः ग्रेनः प्रायेवः । युरा त्युरवेर्द्र इया कुषायी प्यामा छेर्द्र इंदरकर् विरूट्र विरूट्र यर गर प्रंत् ग्रै पङ्गे प्रविष् रूपः यहे खेद र्खेषावा रूपः स्वष् प्रदर्ग हू . यदे:ब्रु:य:य:सु;*न्पर:बा*ह्रव:द्या:बेन्:य:ब्रुय:य:दर्न:वेव:हु:य:दॅय:य:: **ळेवःयः चुतः ५५५ ग ५**५**छेवः ळ५ः ५वें व**ाष्ट्रणः रूरे देः अष्ट्रवः यः न्यः यः पञ्जः नवननिन्निर्मु र्रा विषया रेग्य-पहे-र्मेय-धुर-द्या हु-पदे-न्न-य-द्य-प्य-पन्य-म्नेग्य-धै-मन् ग्रेंद्रा यम्द्राञ्चं द्रवाहरा श्रे श्रेयार्व प्राप्त प्राप्त श्रेया प्राप्त प्राप्त श्रेया प्राप्त प्राप्त श्रेया प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्त न्या में विया में विय

 चुन् वायव वेर यर पहेवा मुव य वेर द हैं प बर पग ने व व व है ळ र·रदः ५ ळ बर्या ग्री **: बै: ५ बदया न श्रुयाम : श्रॅ**याया **श्री : ग्री द**ग्गी **राखाळ :** ध्रीया : ৼৢয়ঀয়৻ঀ৻ঀৢ৻ৠ৻৸৴ৢ৾৻৸৻ড়৻ঀৢ*ৼ*৻ঀৢয়ঀ৾৾৾৾৾ৼ৻ড়৽৸য়য়য়৻য়৻য়৻য়৻য়ঢ়য়৻য়ঢ়য়৻য়ঢ়য়য় ग्रेग् ग्वर त्राप्त्रीं र पर्द अव्यातु हो यावद्य पर्मे र पा हो र तु पा द्वाप ल्र.च.परीय चेट्टच.क्र्रिचायाशी.लया.स्या.लाह्यया लरा। चेट्टच.स. यर.लूर.बेनेया य.कर.स्व.ग्रट.बेर.त.र्टा व्र.लपु.शं.बपु. ब.क्ट.त्रथानमधु.इयाश्च.पद्यट्याब्या व्यापदु.श्च.वार्टा क्षे.यर. ৼॅन्ॱ**प**दैॱॡॗ ॱढ़ैवॱइ*ॺ*ॺॱॻॖऀ*ॱॺॺ*ॱॺॱॸॹॖॸॱॺढ़ऀॱॸ ग़ढ़ॱॸॕॖॺॱॺऀॱॸॿॕॸॺॱॸॕ**ढ़ॱ** पर्वतः चेत्। अत्यः न्**यं दः इयतः वतः** चुदः तुः तः कः ध्याः धुवातः ग्रीः शुदः क रोबराप विग नैप रुग हैं द हो । मृत्य हो र रें मृद्य महिंद रें मृद्य से विर रें मृद्य विट.य.पस्तारी प्रणायायायातार्थे. वृयः इययाता वियासपुर पश्चिता रॅव-मवर-रॅव-हेर-श्चिर-नॅवा धर-मविमयाव-मर्टर-याम् रॉर-**य्**र यदे बद्दान्यं वाञ्चरायं छवायाय दे या हे वाया मृत्वाववा के यह ग त्युर अन् इया मुला मुला मि पा न क्षिन न क्षेत्र प्रवास वया प्रदे रहा तक्षायाः ग्री: त्यतः क्षेत्रः न वृत्ताः न स्वाननवान द्वेताः वान् नुराधरावि या वेतायते गर्दरावी अन्तर्वे व नरावहण्या ग्रुवा " वयावगा बेर् यावमा सबैया इया मारा मारा यर सहमा देवा हा स्वार्

स्वास्त्राम्हेम् या नगद व्यास्य व्यास्त्र व्यास्य व्या

बर्दः र्थे वः हराय। हुः यदेः त्रुः यदे । यदः विषयः वाष्ट्रियः ग्रीः यवः गरिः न्द्री त्रेन् न्द्रा न्या मी न्या न्या ने प्राप्ते न्या ने न्या ने प्राप्ते न्या ने न्या ने प्राप्ते ने न्या ने न्या ने प्राप्ते ने न्या ने प्राप्ते ने न्या ने प्राप्ते ने निवास निवास ने निवास निवास ने निवास निवास ने निव तरुष अर गरा परी त्याषु र भेदा हु द्या हु दिर स्वरा तरी न्या रा र्षराच मृत भ्रेषा रे ज्वादा द्वारा भ्रेषा मदी स्वयाष्ट्र र त्वाद्वर के पर र ... <u> च्चेत्। र क्षे.लूर सर्रः। यसर श्रापहूचा ब्चेषु र यमयः भूवः सर्रः र सूचः</u> इवल ग्रे बिट में मूट हे ते ने व ल व में द में क्षेत्र व ल में के ते व ल व में द में के ते व ल में के ते व ल में **ब्रॅंब**्ब्याने 'ब्रेर'येनवान ग्रायन हा कुर्दा विवास हा व न्म्यार्थात्राच्यात्रा ग्रे-नग्र-ग्रंगः च्यान्ये। नग्रंनः द्यान्ये के स्ते वया वया नश्चनः देवः ञ्च या वाक्षेरकारे.यायाराष्ट्रेयायञ्चरकाश्चाराष्ट्रिया हेकाळ्यराप्टका अराष्ट्र षपु.भ्र.व.बक्र्व. थे.शु.पह्रब.तर.विश्वय.रट.पब्यताच य.क.तीय. इविया ग्री त्यया देव श्रुपा की भी का भी दा। या व्या क्वा पर्विषा मुन रेगाता त्रुगाना हु स्परे ज्ञा सन्दा न माता सरगता न तर से तर नश्चनः र्वे वः बुषा वषा व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः न्यः च्याः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः नगर नेन दंर देश निरंश वया हैं र निरं र देश परी तर मूं श की र्देवः र्वतः गृरुवाः या वैश्वीरः स्वायाः या स्टार्स्य स्वयाः ग्री प्रद्याः नतुरः छेन् शे तह् नः मदै ननवा तहे सः तहु न न सुन् तः स्रनः र्वे सः सम्

ग्रै-बै-बे-राम्यका ठम्। दूरसदे न्ना यदे यद्दर देंग धेद दर्ग परायक्ते

ॻॖॱळेॱॡॖ८ॱबैॱऄ*ॸ*ॱतृॸ्ॱब८ॱतृ८ॱवैॱॸ्छ्रेॱॸॱछुॱवलॱऄ॔ॱऄ॔ढ़ॆॱॾ॒ॸॱॼॗज़ॱॻॖऀॱॱॱ

163

प्रिय भेगवा शुन व्या वि किर पर पहुन परि न वि कुन की सेमवा यत्र व ी विषयः ह्या वचीत् अरः हते त्व्या कते व्या तृ वर्षा पाचेत्। मू.कं.यंथ.रंटा तज्ञें शुरं इंश.चेल.स.सं.वं.वंथ.जय.विर. चैन् यः वृषः च तुरः नदः वर्नेन् चैः च नृषः वर्षेवः च षः च नदः । वर्षवः वः स्थ. की. म्. रट. मी. पर्य पश्च स्ट. तप्तुः श ता. द्वे श्वरं री. रट. त स्थय. यदैःचगादःभ्रमः ह्वे दःदर्गःयः नदः। वैः न्य्तः यदेः वैः तः वितः म्यः तत्तर इं ळ ग्रा तेव पति स्वत्या वे तेर में में में प्रा हे में स्वा से स्वा पा में दिन वतुन वनाव ह्रांचन्यन्य न्यं व ह्युव स्रम्भ वस्य व स्याप्त हिन धिन वहः पर्वव-विपायक्षामु ग्वह्नव-श्रीन् त्यामु राषव-विष्यारे वापरायमुद्रापदेः क्षे.ल क्ष्यः रेबोराचर्या तक्षेत्रः बेर्याच्या क्षेत्रः क्षे.लेव्या रेट्रा न्वनःत्युनःवेर्ःह्यः कुषःव्यः न्यः स्टः दर्नेरः ग्रेः नेवः वेर्ः तुः श्रे वः स्ट्रः स्ट्रः । ळे. चलथा. হেट. রুখ. এই. বহু . বহু । বহু . বহু । বহ लुकामदे छिर तेव छकामदे नलुद मूं वाया वर मान्नेक कु केवा विता बै:न्ब्रिंगःपदे:चगाद:मृंगःग्ब्रःच:इब्रयःवेच:न्धुन्:धुरु:वुर्यःद्वरःहुनःः… बट्यान्त्र्याकु छव। इर कृत्यु वितान्द्र छन हुन हुन ট্রব্য. म्यर तथर मृत्ये कृ तथे हैं वा ता लु वा यदे वा स्र यर् पविव चुराव शे रो र वयरा रु र ही र प्रव हैं यर य स्ट र त्रुव र वरा महार क्षे तेवता इया र्या वी विमया परे ग्या से ग्या समा विसाम रेप र्या । कुन-नव्दः देवः देन्वः ग्री-क्षे-व्दे-व्यादः ज्ञेन-व्य-द्यंन-व्यवः वयः इर वंदे क्षे वल दूर सदे ज्ञा य रहा। नगल यह गुरा सदे हूर है वर

देवः इवः मुरुषः भा देवः हः राज्याया ययः धिषा प्रमादः विषाः हु स्वतः म्नायामालुकामदीः म्वरावानवान चेतात् न् न स्मालुकाम वा हू स्परे हा बरे प्रथ रेगल रेंद्र ग्रॅंट् रॉट लक्षे रोर व्यक्त रूट् ग्री रेंद्र ह र् ज्याया ग्री विनया श्री विनया श्यी विनया श्री विनया श्री विनया श्री विनया श्री विनया विनया श्री विनया वितया **इ.स.मु**ल.स.तृषायकावितः नृत्ते । स्त्रेन् भेन् । या वर्षा व तुरा। র্থানা ক্রব. क्रैरायामनेषात्रण मन्यास्त्रीत् सन्यास्येतामकराष्ट्रीस्रायाः नठतःश्चे तास्यात् क्रिंटः श्चेर् स्वराम हदः तु तारदः वर्देर् श्चे त्यवाधिवाःः **चैतःप्रतः तः त्याः प्रहरः। ज्ञाः करायः प्राप्ते वार्यः वाराः व्यायः स्टरः वेः वेः वेराः इंग्** श्लुत्यः तरेन् ग्री ज्ञुत्त्वः पराय हेवा श्ले राह्य श्लाप्त्य त्य राष्ट्री द्रमानस्याक्रेक् रा.क्षे.वेष्युराना चैराने प्रेया व्याप्य करा प्रस् नदै हे ब न्द ज्या वर्षा पर्वे र क्रेब स्था पर्वे पार में व र है । व्याप वर्षा पर्वे र नगतः र्ह्वेदः अन्तः न् चेदः दक्षः इतः यः नहेंदः च रः रदः तदेनः ग्रीः लक्षः धेनः नहरः बैःळॅन नित्रः र्ने वासायना र्ने वारे वा चुरावा के वा गुराहु । यदेः न्न बर न श्रुवः में ब लु षा धरी : श्रुवा न बा जु वः धरी : व्यवः धेवा व मादः मेंवा : ... न्बेरल रेंब क्र डेर न्बेला वग हे क्रं र ल हे व क्र र न्बेल धरे हैं শেশ্বিশ্ব ইবি ই সেন্টি রেল বিত্ত ব্রব্ধ এ বি ইবি ভিন্

र्देव कं व महिषा था हू स्पर्त हा दे हुण बहें र वद य व मा सिर

भुःकलः इयलः यः रदः १६६७ मुद्दा वेतः द्वा वेतः द्वा वेतः द्वा वेतः द्वा वेतः द्वा वेतः द्वा व हेरायाया स्वायहराय**या दें र्यान्यान्यायायीत** व्यव्यायायी वि वेन्:श्रुन्-चेन्-न्बॅल:बुर्न्-व-वन्त्रःह्वं व-इवल:वला हू-लदे-ह्-लल लुयान्यानेन् र्श्वन् रेन् राधेना क्षेत्रेन् र्स्या स्टायराष्ट्रा यदे न्नायदे ञ्चना-न्यानवदानी-प्येन् तत्नुन व्यान्धान्या प्रश्नुन-व्यानुता वबायवार् वा नृष्ठे । त्रेन् । क्षेत्र । व्याप्त । व्यापत स्राश्चिर्यार्मः। दृष्येत्रञ्चायायातुः नायराम्यन् दृष्येतेञ्चाया वयः विराय विषयः ्वात्तर्भाष्यात्र्वाप्यायदे भेवातुः श्रेष्यायः क्रेव्याये क्षेत्रः धेवाय्याये श्रेतः वयाहराबुवाहेरायाहरार्वे याकाकराहरारे ग्या श्रमा सदि राय त्वनम्ड्रिन् के त्रेन् के त्रेन् क्ष्या करायराष्ट्र त्यते व्वा यते ख्रमान्या यनः द्वन मलुरः र्वे त्यामहिरः र्वे त्यारे मता श्रुरः द्वे न मतः श्रवः द्वारा श्री ग्रॅंबानपुषाग्रुबामदी हू सदै। ह्वाबरालुबामदै। नगदान्दान्दरान देव ৾৶[৽]৾৾৾ৼ৾৾^{য়৽৻য়য়ৼয়৽ঀৢ৾৽য়ৼয়৽য়ৼ৾৸৽ৠৢ৾ৼৢ৽য়ঢ়য়৽} वयाश्चीन

रॅं व ळव.मकेम या विद्याग्री शक्ते रांगांचे व्यय प्रमादे हेवाशु *त्बर्याव्यात्*षुव्यव्द*्रे ग्वयात्*ह्याद्याशुप्तुम् वैवार्धर्यः **तु**"नञ्जनः र्ने **व**्लु रा वृषा नर्गो र् प्या च्चे र च्चु र थेव् । दे चु र अेर् । इ या कु या *नषर्-पद्य-हेषाशुन्द-पः* छे-ल दर्बे-दक्षेट्र*ष*-छेर्-क्षेनश-तर्बाल-ज्ञॅल----र्भिण में तिरी श्राचा करा सर हे साम सेरा मिर के प्री র্মান্ত্র ক্রমান প্রমান ক্রমান खन्य श्रृत्यः श्रे.पर्दे.पर्दे च ड्रे.कर.च गेषु. ईवा थी.पर्चरया थया है.चा चेथा सरावि नरा **छ ।** यर बाला ल्वा व्याप कर प्रति **हे** वा श्वेषावा त्रा दे ने वा वा त्र ते व्यासुयावता पर्या पर्या प्रमाणे स्वास्ता स्वास्ता व स्वास्ता व स्वास्ता व स्वास्ता व स्वास्ता व स्वास्ता व .स. छेव में दे.हिन्य हेरा पड़े निविष्ण ग्री निर्मे द्यारा न्या सहवा पर त्युवासेग्राधनात्र्यत्ते र्वेतात्र्यं व्याप्तात्रायाः स्वराधात्रायाः मकुन्-मञ्जरादर्गा-मयादर्गा-धन्-इवयायाळे सं-वेदाने धन्-दिः यदःन्दः। यदःवःववेःहःवेयःवर्षं-यःवययःठनःवःक्षःवयःन्दः। त्शुन् अन् क् या मुल व ठला ग्री न्दर व कं बला ग्री ने द के दे के के के के कि का मिला के कि के कि के कि के कि क **धे**वः ५५ मः पराः श्रॅलः त्यसः ५८ः मह वः वर्षः श्रेः सञ्ज्ञाः महिता **444.** चक्ष्राश्ची न् क्षे व्यन् प्रदे त्याँ पा चक्चन त्या स्रोते दे न स्रो च ब्या छेन्।

रा स्व न द न व व वे च कु द त दे बवा परि रा स्व र हर मे र न का न व मा यार क्षे. पकुर् तर्वे बरा भरी खित्र र् में में में राज्य पत्र वित्र वर्षे में तर् विवर्षः इरायः श्वाय श्वार्षः प्राप्तः अह्या प्राप्तः वृ स्रेते वाष्ट्रः श्वायः स्व रेबायायबिबाहु यमेंदाया चेदाकेटा वर्दे द्वा सबलाकराया झालरा मल्यायायी तृ लिव वर्ष श्रीते यमें र ष्ठिम छेरा सि स्वारे वर्ष के मह *ঽ*৽ৢঢ়৾ৼ৽ৢঢ়৾ড়৾৾য়৽য়৽য়ড়ৢঢ়৽ড়৽ড়ৼ৽য়য়৽য়ঀ৾ঀ৽য়য়৽য়ড়ৢয়ড়৽য়ড়৽য়ড়৾য়৽য়ড়ৢয়ড়৽ मु। हु सदे न्न सदे विषय है वि दि व वि स स स न स्वाम स्वास हरासिवाया क्रेरा वृ त्यते ज्ञा यदे प्रवा यहे ए वया नव राख्या ব্ৰাবাবা ক্ৰীবা श्र.त. बाह्रेट. र ब्रांथ. श्रें र. घश्य. कर. बर ब्रांथ. राष्ट्र. व ऀबेब्र-इब्रब्स क्षेत्र व्यापन क्षेत्र प्रेट्स क्षेत्र क्षेत बद्दर्भव्यव्यव्यावयाः स्टादर्भ्यः श्री पहर्श्वे स्व নশাব-শ্লীৰা यदे दृ लेव इ समा दू यदे हा स रूर इव र र र र व न र व र र हिव र र र संक्रित्विदाविदायक्षानुः स्वार्धिते द्वित्वस्य स्वार् न्यायी कुर क्वेन् चेन् प्रदेश के म्याया क्वर क्या क्वेन् क्वे या म्याया क्वेन् क्वे या म्याया क्वेन् क्वे मनदा मना श्रीत विस्रवा की हेवान वादवा की की ताम तत्वा के हेवा नाई न कं ववः गहेंदा देदः लदः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः मुः द्वरः व रदः शुलः तुः हः वें रः व्यावा मह वः ववा वेदः धदे । देवः हे वः ददः ख्रायः यरः महेवा इ.स.वया मार्याम इन्यति शे.वृत्ता वर्षा प्राची वा वर्षा नर-८न्दि-अयार्कर-श्रेय-कि.यर-रूर्-नर्वे नार्य-पद्भावि पर् ৾ঀ<u>৾৾</u>য়ৢয়৾৾৾৾৾৾৾য়৾ঀ[৽]য়৾৾৾য়য়য়৽ঽৼ৽৸৽৾য়ৗৄৼ৽ৼ৾য়য়৽৾৾য়ৢৼ৽ৼৼ৽য়য়৽য়ৢ৽ৼ৽৽৽৽ स्ट.वृट । वसरा ठर्.चूट. स. छेव्. यं दे. शु. हेव ल. च हेव. यदे. ब्रंस. रस. हेट । स्ट. दहन

मॅद्र-ब्रायान्द्रवाये क्षत्र स्वाया अद्राया भेदा या छेता भेदी प्रमादि हेला **खु'**त्र इत्ताव्यान् स्तान् व्यान् द्रानी क्षेत्रः क्षु : अहतः न् व व है : श्रेन वरः वरे ... श्चेर-प्रदः देव-दुः धेव। दूः विवास्यवान्याः स्यतः हाः य रदः य ग्रायः <u>র্মা (বিমার্ম ন'বিমার্ম-মুরী, র্মান্ট্র-মেরাথা-মেনিরী- র্মার্ম নির্মার্ম নির্মার নির</u> न्दः अहुद्राध्यः सुद्रः पट्टे कृषे न लका छेन् न्द्रः च रुषा न न वा व हो वा न्द्रः " নমুবা ইব-র্জবেং বই ব্রথমাক্ত নের্ম বা এবা প্রহার নিমার ব্রহা न्मा अन्तरम्बेदा के.ना त्र्वे.ल्र-नम् रीमः भुःन्वा वदा श्रमा ठन् न्याम् दा अवन्य देश्यु देव य न्न् केटा म रवाय इवार्य वी हेया " श्च.पर्या संयात.इ.मञ्जू बाबी.वे.लपु धि.या.यञ्जू व पि. राहेय. सवाया. খ্ৰীমা **ব্ৰ'ৰথম'ত হ'ই হ'মহ'** হ'ই 'ব' হ'ই ৰ' জ্ব' জ্বা न्दः नर्रान् वयवायायाद्याञ्चन् क्रिंवायर यः चन् तुः कं नक्षुन् क्रिः नर्रा ฐ ·スエ·スエ·จิ·ฉัฐ ·ลุณ·ฐ ·ฉัฉ·นนิ ·ผูณ·ฐัจ ·ฉันณะฐัฐ · ฮลลเอรุ · · · · · रर-र्वर-रु: हुन् क्रवाय-र्दा वहुव-रु: ब्राह्म स्याक्रव-प्रेटे सुवाय है. न्दान्र्लान्त्रातानहेव छ्टा इ त्यते न् वते सुन्तरार्म् न हि . स्नि . लूटा। क्ष्यापर्टार्टापर्यायाचरा श्रुरायदा क्षेत्राया लाटा वा सवाया क्षेत्राया इंच.नषु.चवर्षे.क्ष्त.बिथा.धे.ब्र्.यायम्चययान। छेथा.स.क्षे.च. ईश्वयास्य न्त्रत्रस्न्त्राशु न्त्र्रापदे त्या स्ट्रीया मर्जुन्या हे त्या केत्र से दे यहर विवा वी. चर. रे. व वया. चर्ष. र्चे. श्रु. श्रु. प्रस्त कर. प्राच्चे. चर. रे पा मूं वया च.

पर्वताश्चरतावता झें अरान्च अत्यास्य कुता हैं हो हैं 'त्रेरान्च व तहवार्ष्य द्वा स्वा वर्षे वा वर्षे व्या वर्षे वर इन्यारा मा अप्यान्तर विषया भैषा भरः भूरः न्नः यः ञ्चः पवदः यह यः द्वः द्वः षा ज्वारा न्नः यः द्वः गुपःकु वर्षे वे तः र श्वर् ज्ञान वर्षे प्रवर्ष वर्षे वे वे वाज्ञ वर्षे न्यतः तर्वेतः मु वर्षे न्यतः व्याप्तः वर्षे न्याः वर्षे न्यतः वर्षे न्यतः वर्षे न्यतः वर्षे न्यतः वर्षे न्यतः वृग्रार्द्राञ्च व्ययः यः देष् व्यव्या में द्रायः व्यक्ष्या वी व्यव्यव्यव ग्रन्य प्राचित प्राचित व्याप्त विकास रण: र्नर: र्नें व शुन् विवास व व व शुरु त ही . तं हो . त हर ते र स् पथवार्श्वेतास्त्री अ.र.श्चे.श्व.चंदानंत्रावादानंत्रावादानं भ्वाताद्वादानं पह्रवायता न्यायास्याप्ति प्रदेशस्य सहिन् पह्नवायान्त्र मुत्रा प्रयाप त्रवः सुरः यहे : हा विषयः त्रवः के स्टार्वियः विषयः विषय म्ड्रिं छ नह्या नगार व्यान के ता कुल यह वा सुर सुव नगर न इव तह्रवा ग्रीर.पर्वीय.श्रीर.रेचर.क्रिया ह्र.यम.चपु.हरु.रेचर.पर्या न्तुल अन्तर्न्य वर्तर कुल न्या श्रील न्दर । विश्व वर्षे वर्षे वर्षे म्दर्वा वर्षात्र्व द्वराष्ट्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र कुला रवारानारमानह्नवा द्वेतान्यं वायारास्वास्वास्यान्या कु यात्राच्याः अर्थेन् अर्थेन् अर्थेन् विष्या विष्ये के निया निया के निया 170

क्या क्रामित्र क्रिं स्वार क्रिं स्वर क्रिं स्वार क्र

क्ष्म् न्यं क्ष्म् व्यक्ष्म व्यक्ष्म क्ष्म न्यः व्यक्ष्म व्यक्ष व्यवक्ष व्यवक्

① (ฉัราชิาะารถลาผิสดาฐักกรุสดาสตาลตาลตากลิการสการสการ ริภารัสา1---16)

त्र्वावायित्ववत् ने क्रिंग्वावायित्वायः ॔ॺ॔ॸॱॺॱय़ॸॺॱय़॔ॱॾॖॺॱय़॔ॱॾॆॱॸॶ॔**ॺॱ**ढ़ॾॺॱय़ढ़ॖ**ॱॸॗड़ॸज़ॱॸॸॕॴ** न्दःन्द्येतः अद्ः पते न्वेद्यः पत्। द्वः पते : व्वः अदे र व्यतः व्यतः वर्षात्राच्या के व्यवस्था वर्षा त्रे व्यवस्था के वर्षा के वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा द्वया नक्षा ग्री या मा के राष्ट्री में माया वया मावया अगया वया करा है ना रे ना ला ब्रुं राम हे दिए हुं न्या क्षर बेर् धर क्षेर्य पर हैं राम दे दे हैं राम हो है न्या कर है न् त्या यत् वित् न्ये व निया इयव देन् वित् तरहार तर म्भेया मी.केर्-तु-सेनला 点之. g. g. 支 g. y z. cn c. c z. 当 c d. g. y c. ८व.त.ध्वथारूपा अँजायबटाययायश्चेतार्टावधिवातास्वथात्वरः क्या शु. नवर कुट्रे. स. क्रेन् नर प्रामार खेनवा पर्मा प्रमाद है वे के लेवा क्षेत्रापरीयानायव्यविदाक्कि. अक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्रा अविद्याचित्रा तर्गारान्दा दूरवरेञ्च अपे इयावरात् "मेंदाया केवा में देशे <u>५ मृत्स्ययात्रयात्र्राची यया मृत्ये क्वा पञ्च मृश्यानु पर्मिन् यदे न्वा</u> इसलाई लाम झुनला नेरा नेरा नेरा नेरा स्थान है स्था स्थान है स्था स्थान है स् ₹`हे`तकर'तृ 'यदे'न्न' अप्तर्ने निं व चित्र व्याचित्र क्वाची **大型**似.重大 ब्रुव्यं देश होता व्याप्त व्यापत व য়ৢড়৽য়৾৾য়৽য়ৢ৾৾য়৽৸৽ৢ৾য়৽য়৽য়৽য়য়য়৽ড়ঢ়৽য়ঢ়ৢ৾৽য়৾ঢ়৽য়ৢ৾৽য়ঢ়৽ৢঢ় हु सिते ज्ञाया स्पाळे व स्ति श्रु र त्रा क्षेत्र स्ति हु र सित हु

ठर् हें हे तकरात्र त्ये ज्ञाया रर्षे वाया हर् र्मे वायी यरदा में वाया म्बेर्यान्हेर् स्यानध्येव माया हिर्ज्ञायारीरस्यान्दर्शेम श्रे इग्-र्यम्यान्द्र-ग्री-रोर-ञ्च-ह्या मूर-य-क्रिन्यते-चम् <u>ঀৢঀ৾৽৻৴৻ৄ৴</u>ড়৻ড়ৼ৻৽৽৻ড়য়ড়ৢ৻৸ড়ৣ৻৸ড়ৢ৻৸ড়ৢ৻৸ড়৸ঀৢ৻৸৽৻ঢ়ৢ৻৸৽৽৽৽ कृषा.तु.चने क्रिन् न्दर स्वरय व्यटा ने स्वराय में दा केवा ইবি:নগাব:খ্রিঅঅ:নর্ভব:বেই নৃ:ক্কি:না-প্রাথান্তব্য-অধন দ্যা-ব্রা देखासर ग्रीकाल हवा हु परे क्रीत लाश्चर क्रवा परे श्वर देर अदा दवा पा चैन्-न्नॅब-धरी-चम्नद-धन्। "① चेब-दिन्-दर्ग-चेन-। पत्तर[,]रॅन्'ल'गवरार्शन्'ग्रिट'मै छेन्'र्झ'इबल'न्द्र'कंब'पङ् 'ग्रुब'छै इ.स्.र्ट.वर्षेष.पह्रब.रंतायायव्वर.ग्रेथा "व्रं क्रूंट्य.वर्ट. घ्वय.ग्रे मुकाळं नः वराद हें वर है दर हुदर हुदर मुनावर मा "@ वेका हे कर दहुना या पथ.ग्रेट.चयल घर.ध्रेचथ.ध्रेच.स.पचथ.श्री

① (न्यन्य्यक्षःक्षेःवःञ्चन्कःव्नन्य्रःवः

② (དགང་བན་བན་བརྡ་ང་བརྡོང་བརྡོང་བརྡོས་੬¹)

क्ष्य साम्या ॥ विद्यास्य स्त्रा स्त्र स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्र स्त्रा स्त्र स्त

য়ुःसं 1752 सॅ (- खः ब्रें : संस् । यहः क्रेवः त्यायः वृतः यो वृतः यो

① (ব্ৰন্বেষ্ণ ফ্লিম্ম্নে 18)

② (ব্নশ্বেম্মান্ধ্র রাজ্বর্ক র্মান্ধ্র 25)

<u> चैरायाक्षरायहण्यये द्वरावह वादरा</u> अळ्याद्वरावेटाया ब्राह्म मॅट्र केवर मृशुवा हैं हे क्षियर द्व वर्ष वर्ष केवर विर्देश द्व द्व वर्ष हेद'र्र'यठरा'वद्यत'र्ग जुर्'ग्री'जुल'र्ये'केद'र्येते'त्रील'केद'र्भे स र्वेदे पत्ने द्राञ्च ता सुदार्थ द्राया स्वाप्त शुं मः केदः में 'ञ्च 'मदेः है ' वः न् में 'शेन्यः न् मतः मन्नरः में यः ज्वनः ग्री 'दर्ग्यः " **ढेव:र्टः। र्**ग्रीय:द्विरःग्री:क्वं:याक:यय:र्टः वठराय: येव्राय:र **गहरायाया** पात्रविदालया कुषाशु पञ्च वार्षा प्रताप्त प्रताप्त वार्ष्य प्रतापत वार्ष्य वार्ष्य प्रतापत वार्ष्य वार्ष वार्ष्य वार्ष वार **यः उ**त्रः तुः यः त्रद्रा व्रिष्ठः मृत्यः त्नानाः वहतः न्नाः तः अः ह्नायः वनः हनः ने हो छे वः ने वा वहतः न्नाः । नवान ने निर्मे निर्मे वार्याया स्थवायायर जुन ने वा सवत केन परि में र्नेन:ञ्च-व-वेन्-य-पञ्चयावेन। क्रिन्यम्-वेन-क्रिन्नान्नः। हे केद र न्द्र नहेग विषा ग्री नगा ८ न न म म स्वाप्त मा मा मा स्वाप्त मा स्वाप्त मा स्वाप्त मा स्वाप्त मा स्वाप र्षेष्वा स्व : इंव : द्व्याया ग्री : यबे द : द्व्यें द्वा ये ग्वायः स्व : द्व्ये या व : क्रेव : * য়য়ঀ৾৾৽৴ৼ৾৽ঀ৾৽ঀ৾৾৾ঀয়৽ৼয়ৢৼয়ৢ৾৾ৼয়ৢ৾৾৽য়

संतिरः "प्राचित्राचित्रायाः वित्रायाः वित्रायः वित्रायः

त्त्वाकु न्वरा "ा "ने हैरा निराय केव में ते निर्माय नियान कुन् नि শ্বদ:ননা Ĕ**੶**ਖ਼੶₳ੑਜ਼੶ਜ਼ਜ਼ਫ਼ਸ਼੶ਸ਼ੑੑਜ਼੶ਜ਼ੑਜ਼੶ਖ਼੶ਖ਼੶ਫ਼੶ਜ਼ਜ਼੶∄੶ਫ਼ੑਜ਼ਸ਼੶ਸ਼ੑਜ਼੶ਸ਼ਫ਼ਜ਼ਜ਼ हेव प्यवम्य य प्रा ग्रायानु मानवा मानवा स्पार्या स्पार्या स्पार्या स्पार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या ठर्ग्युःबेद्रात्मा अक्रमा जुर्मा या धेवा पता ने ते अक्रम् ग्राया तुः क्रे ने स्वयः ¥. ड्र.पकट. वे. पषु शे. यथु. रे श्रूरशाच श्रेथ. वदःयःचग्रदःयनःवरा मवयामवन रु. श्रेयाया समान देवान मुन्त है तान मुन्त नमः त्राव त् बळव लु रापरा वर्षि के हे जूर पर्व द स्वय में वर्षा प तुर र स्वि पर वया गुर-र्गोव सळेवा या श्रे (बु क्ष्या सर सर्द र सदे र माद हि र सर ठव मवर्ग्यर म्ब्रिंग हे तस्य है के तर्रा न्य स्वर के तर्मर हिर है र र्शे र तर्माया मेवरा "@ वेषामेषाया पर्ने नमा ग्रम् स्थित हैन कुल कुल के र पर प्राप्त ने निवास है वार्ष ने 'यह ना धेव 'छवा के 'र र पर्दे र ' छ र ' क्य.त. वेच. ध. चयाता

ब्रु-स- 1753 दर्-छ-छ-सर। "ब्र-स-स-न्यान-छेन-स्-

⁽न्यन्यवाक्षेत्रः अन्तर्भन् न्यः अन्तरः अन्तरः

② (\(\frac{1}{2}\) \quad \(\frac{1}{2}\) \quad \quad \(\frac{1}{2}\) \quad \qu

वनरः दर्भे वः यवः प्रदाः । वरः दर्भ वयः यः ह्वः वन दः द्वे व दर् व। वरः ८ळवः मृत्रैराः मृदेः श्रुं नः नृचे दः तुः इत्यः कुत्यः चः कंटः मैः गः नः नृनेः श्रूं टः ः ः ः नश्रेतातवर क्रें नवा स्वाप्ता नश्रेतातवर के निवस् विराधि क्रिया विराधि क्रिया *ॸ्घॅब*ॱॸॖॖॱॿॱख़ॱॸॱ_ॱॱॺ॓ॱॺॕॗ**ॸॱ**ॸऀॺॱक़ॆॿॱॸॾॕॿॱय़ॹॗॺॱॸ॒ॸॱऻ न्देव:क्रेव: बक्रम गुः करः मृष्यः प्रदेः नृषुः बर्दः नृः श्चीरः रमः द व बषाः यः नृषयः नवर नव र ना वर नदेव र कुर अर न र देव लिय न व अव सर-पद्मराशुरुराञ्चवःश्चे**द**-सःगुद-र्गयःसर्वदःश्चिररा-रूरः। ন্ট্র' ঝ' बर्-स-र्ग-न्वर-वश्रवाचार-वरुवाचे-केर-तु-द्र्ग-कुर-वृद्र-ख्रण-----नवरःश्चेवःच न स्यः प्राचित्रः स्वार्थः स्वार्थः ड्रेन्-न्म्यायदे-वय-न्दर-म्यान्यः। " 🛈 वेषाम्ययान्यः दर्ने-ययाम्रेमः वयार्बेट्रायाकवास्ट्राचीयायेयाकुताव्हरायरार्वे स्वायाक्षेत्रया कुर-५८-वेद-ळेद-र्थ-दे-५५५-मदर-य-अळेद-य-५८-। महेरा-दर्य-५५ **ग्रै**'न्बॅब'मवर्षाशु'मर-न्द्र'८ळवर्षाः वेरा'नेगवाम वेरा'पॅन्'य'वा चन्। त्रमा व तात्र ने ता क्षेत्र स्वराय स्वराय व व स्वराय राज्य । व स्वराय राज्य । व **द्रः त्रुवः चा अध्यः श्रुवः श्रुवः स्टः तुः ग्रुवः वस्त्रव्यः गृहेराः गः प्रदः सः यरुतः** बर्ह्मव्यास्त्रम् वित्रिः वी न्यान्य क्रम्यात्यः विदायह्याः विवरः न्धन्-मृति-ष्ठिर्यः स्व-तिम्-प्रदःश्चन् क्ष्र्यः व्या

① (ব্রন্বন্ধর ষ্ট্র ম প্রব্ : র্বা ন্র্র্ম : 48-49)

वैद्रा ४८.ध. छ. ४८.४८. १८. १ . लबा पव स्वाय ग्रीया देवा हव । पह नेश्वरानियः विवासीया अवासीय अवासीय क्षेत्र स्वासीय क्षेत्र स्वासीय क्षेत्र स्वासीय क्षेत्र स्वासीय क्षेत्र स्व र्ने द्वाचेत् कृराध्य परि चराय्यं गाळे पा शुका दुः सं र्गु द्या। यद्वा त्र क्षात्र क्षात नः ने न्। " डेलः नृतः। तुलः सह्यतः "नगतः भवाः वीः ह्रांनलः शुवालः *७ववः २ववः* शुःन्हें ८: के २: २८: न गागः श्रुयः ग्रेनः के २: द्वा व्राध्येः श्रुः बते थेन कर विन पर्वनि है ने दे वर दु दुर थेन के के पवि पर्ते न्वन् छेन् न्वें राया ने कें कराया है दुराधेन न्वें राधेना न्याया न्या मी.हीर्-रूव.चिष्ट.लच.क्ट.स.लच.क्ट.चीय.बुच.चनेर.चेव्यत्वेचयः बानुकान् प्यरादत्यावरादन्वेवकानुकाकी केंग्यदे न्त्रं कादने न हें नामा **क्रे** 'रेन' नदल' श्रॅम' गुं' पर्दन्तल हे 'र्नेद क्रे 'प्रन' नी गुं' स' श्रॅम् नेना नद्र-इस्त्रव्यः स्राप्त्र-द्र-ग्वेश्वाप्त्र-तृ नहर है स्रार्धे स्रार्धे स्राप्त्र नदिवान्यं वर्षे त्राची त्रावा त्रावा त्रावा त्रावा त्रावा त्रावा त्रावा विद्वा मेट्रे मयाययाविरयानमा बरारी प्रायासम्बादिरारी रहिमा क्री विया *बेरा:श्रंमदा:मदाय:प:देर:क्रेर:क्रें:शुअ:स्व:र्ग:न्तु:न्र:दन्य:क्व:भ्ना:....* र्याचेर् दिर्वाशु पङ्गाया रूपा है धिन करायवाष्ट्रवाचरा रे हैं व पर्श्वन्यायाध्येत्रायत्त्रमा समायासमानीमानुदार्द्वाधिमान्देन्वाध्याया द्रत्यः बरः द्रश्चेषयः श्रेषयः धेषः कंदः द्रयः द्वियः यभेरः ग्रुः ह्यः द्वेयः धरे ख्राः पक्षक्या मुँदारम् विवाप मूँ वाया धवावाया दे विवास विदार्प दर ±५.र८.शु. बर्बेर.ज.रं.प्रचेश.र्द्रयाशी.जचा.ज्येय.पर्टं.प्रचे.व्यं.व्येय...... त्र्वायान्य न्त्राचे के विष्य १७५४ विष्य स्वाय के स्वय के स्वाय क ष्टिः स्वर-धिवः यः नृहः। इत् वः श्लंच युः ईत्वाराः धुताः धदः राजवराः विवरः र्षे.पपु.से.स.से.सुट.च मेर.तपु.सेनय.ही.प्र. विग-मु-धेव-य-वर्गा 1788 वर्राक्षे स्ति त्राचा प्राची वर् हे स्ताचर के वर्षे से स्ताची हैं শ্ব-বর্ণানী-নদ্র-এর্নিঅ-ন্র্র-মে-ন্না খ্রী-মে- 1794 ন্ন্-প্র-मृन् सं र ह्यं तः मृ दे दे हे न यय र स्वायः गृत्र तते तया ग्री तर तर ये न र न ग्रीट्रित्व म्या वर्ष्ट्रियः श्रविष हु त्यते व्वा वा क्षु विद्राप कु विद्या केवा ... म्याङ्गि.प्र. 1935 पूरं के.ज्ञे.चे.च.त.क.तपुर.क्या.केय.चेय.चेथ.तक्ष्य..... मते हे रहूम मुदे मरुव धमा महार मदी वर विष मर विष मर विष मर विष् नैयान संक्रिया नेंदा सदा महुः मह्युया महिंद द्या या महिंदा स्टिया गा म्यरत्त्रह्म्याः न्वरः मः दिमा धिवा स्वाग्ररः या न्वया श्रीत् मृत्रः मी त्यव विर्यानु य न्रः मु विष हरान्विकारम् मी हे र्न् नि हे नु र वर्षः र्देव-११रू-भेव। अन-मु-११रे-१८-भेग-महाम्य-१८-। पर्-१म-गर्ड-ह्मरावर्ग्य हिंग हिं। क्षेत्रारम् हेरास्त्रारम् राम्यारायार्ग्या ঀहु[৽]৻ঀ[৽]য়৾ঀৢয়৽ৼৼৼৼ৾য়ৢ৾৽**ড়৾**ৼ৽ৼৼ৽ঢ়ৢড়ৢৢৢৢয়৽ঢ়৾য়৽ৼঀ **5.4といる。** ग्वतःश्चनः ब्वनः बदः यं र वदः द्वा विषः बर्द्धद्रवः श्वनवः दे र् न्वः हुः हे र व क्र, लापु. ब्रिंग. श्री. चक्रे वे. सक्ष्ये . कथा स्वीया ह्या ना वे दया ता वी ना ह्या. म्बर्स्यात्राच्यात्राच्याः स्वाप्यात्राच्याः स्वाप्यात्राच्यात्राच्याः स्वाप्यात्राच्याः स्वाप्यात्राच्यात्राच्याः स्वाप्यात्राच्याः स्वाप्यात्राच्यात्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्यात्राच्यात्राच्या

16. ହୁ'ଲନ୍'ଗ୍ର'ଅଅଛ୍ସ'ବ୍ୟ'ଟ୍ରି'ସେଶ୍ୟ'ଲ୍'ସ୍ଥ୍ୟ'ସ୍ଥ ଅସ୍ୟ'ସ୍ଥିୟ'ନ୍ୟ'ସ୍ଥିୟ'ଅଛ୍ସ'ବ୍ୟ'ନ୍ୟ'ନ୍ୟ'ନ୍ୟ'ନ୍ୟ'ନ୍ୟ'ନ୍ୟ'ନ୍ୟ'ନ୍ୟ

त्रस्तिः स्त्रस्ति न्विण्यम् दिन्य वर्षः स्त्रस्ति स्तर्भः स्त्रस्ति स्तर्भः स्त्रस्ति स्तर्भः स्त्रस्ति स्तर्भः स्तर्यः स्तर्यः स्तर

मालिनायाञ्चराळे ते राञ्चा है। हैरता है। द्वारा दिन है ति है। ति वि **ळेर्**'ग्री'स्वयापर्रेषाश्चीत्रं मृ'शेर्'णेष्यपश्ची विष्यपर्व विराम् **यद्या ग्रुया मान्ध्रा तु "बिया गीया गु "या केव" में "प्या मी "द मी "य द्वा परि "य दिया गीया गीया मी "द मी "य द्वा परि "य दिया परि "य परि "य** <u>৾ঀৢয়য়ॱয়৾ঀয়৾৾৽ঀৣ৾ৼৢয়ৼ৾য়৻৸৽ঀ৾য়ৼ৸৻ৼৼৼঀৢৼ৽ঢ়য়৽ঢ়য়ৼৼৼ৻ঽ৾য়</u> **खे'**येन्यायेन्या" 🛈 देवान्यायायाः श्चा द्वतः न्वत् त्याना तर्ने द्वा तुर्रः हुण दत्रा न्ने त्र्र हु हु रक्ष ग्रे हु न र्या महिता महिता है न र्यो र र्यो रक्ष पलेन्-ने-त्र्यम्बर्यः वै-न्र्रेशः दर्शेषः नरः न्धे-म्बनः ह्रॅंब्-ग्रीः यहंन्ः यः ज्ञन् नु चु दः यः हे तः तु : धे : स्रत्यः तु : दे तः यः विषाः यः धेवः व या । ने : व ताः ह्यामि वेषादि ने मुन्ति र रह्मर्मि वेषा के तर् विषा मितरार्मे या हुरा लट्रां स्वार्थ द्रार्थ र त्राया व तर्रा प्रकार में स्वार्थ प्रम् बिया हु बिव गड़ियावया ग्राम ग्राम ग्राम विवा प्राम प्र ब्र-मन्द्रन्तः तन्द्रतः च च च च ह्या श्चरत्व व व देवा पर व देव हु दे नयः केयः ग्रुटः वेनयः नृर्मेयः वुषः य र । ने द्वारः वृतः ग्रुषः चेरः वृतः र षष्र-तु-दे-नर्श-त्र् कु-व्रेद्-धेनर्श-म-नत्रिक् कैनर्श-रम्य कुद्-नर्ह्यः.... र्टा करुकार्वे रातुः श्चीटावरायेवकः" वेकार्टा "हूं वेवा महेकार्यम्यः न्यं ब्राप्या-वया ग्रुटाकवा प्रवेषायानः क्रेयया श्रुपालु या भैटा । प्रवेषयाञ्चर ৡ*ॱढ़ॸॱॸ्ॸ*ॱळॡ*`*⋛८ॱऄ॔ॻऻॺॱय़ॱॻॾॕॱॻऒ॔॔ॸ॒ॱॻॖॺॱढ़ॆॱॿॖॖॻऻॺॱॾॕॗॱॻ*ॸ*ॱॲ॔॔॔ॸॱॱॱ नदे किन् हिन् विनय है इस्यान्य विनय दने व्यान मान विवय है न्वें या *ড়*য়ৢৢয়৾৾য়ৼ৸য়ৢয়ৼয়ৢ৾য়ৼয়ৢয়ৼঢ়ঽয়ৼয়য়৻ঀয়য়৻ৠৼৼৄঢ়ৼঢ়য়য়৽৽৽৽৽

^{🛈 (}न्यम् नत्रवाह्ने याञ्चन् क मृत्याच्य १९८०)

मुन्द्रम्बुग्य ग्री.लून्स्यम् स्याः व्ययः व्यतः भुन्तः स्यः मुन्द्रम् व्ययः व

"अन्यापन्न राम्राङ्खा न्यापापद्गार्थान्याप्त वृत्ता विष्णान्त्र विष्णान्य विष्णान्त्र विष्णान्त्य विष्णान्त्र विष्णान्त्य विष्णान्त्र विष्णान्य विष्णान्त्य विष्णान्त्य विष्णान्त्य विष्ण

⁽र्यम्भ्यत्रः क्षेत्रः अत्रः अत्राचार्यः १९९)

② (イロ山、ロビロ、多、町、草木、栗、丸山、町ビビ、113)

ब्रिंदा अंक्षेत्र व्यापारी प्रस्थाय प्रदेश कृष्य देश स्था प्रश्नाप्त विषय न्त्राक्षेत् हुराक्षे भूनान्ता केना अस्यायाचि भूगदन क्षाविया बह्यारें त्री शुः रिवायः न्रियः परिः तर्रेन् पहेनः रावेगव वर्षन् न्में यः चर.पूर्-ते.चर्ट-वयाञ्चव.चर्द्वयाचाटाञ्चच परीजाञ्चे.लुव.ध्योधा चयोप. नबरायः नव्या ग्रीय श्रेष्ठनायः न्रा वह्न ग्रीः नबराम्यः व्यारायः । स्वा.क्रव. बर. पद. चवर. हेव. पठय. पङ्ग पान. पत्रांन. में इय. ग्री या पड़ेयां ने नियानि भू निराञ्च नाम निया मुख्या मुख्या मुख्या मुख्या । र इर.वव १व.री.च हेबाना लेबाबया चया क्ष्रीं च वर्षिया चया निर्मी पर्सेर. मबेरानवरायुग्रार्थम्य लुया अव यानवायारे सान कर्मिन लब.री. चर्. क्रूपा ग्रीयाद्ररया या पर्या दे दे त्या या पाया पर्या में वि ग्रीया **इय.श्.लय.त.प.प.इय.श्.य.**प्र.य.प.इ.प.प्र.यंप्य.यंप.क्ष. प्री.र.पत्रती म्राज्याकुर्न्ययाञ्चितः श्रीतः श्रीतः श्रीतः श्रीतः अरम्बायः मृष्टाः राज्यः यान् मृह्यः । र्षे त्र्व त्र्व त्र व्या स्व स्व स्व र स्व र त्र व्या त्र के व र त्र लबाम्बिर्यः भेरा तसम्बारायायामा भारान्याम् वराम्बर् राहे वर्षे छे ल्बायाताच्यी अकूरं र्टा क्वाया पर्ता प्रथा प्रथा विषया है। र्वी प्रदर मु.क्र-मन्द्रा लवाचन्यनेत्रान्द्रा वि.स्। श्रदायाच्याश्चर बरुव-रु-दिर्य-हे-श्चव-ध-व्य-छन्-छन्-प-हन्-प-र्-। म्र.वय. न्दर्मित्र मु त्यावर ग्री अद निर्मे स्त न्द्र त न्द्र त न्द्र व न्द्र व न्द्र व न्द्र व भूरः कर् सुर ह्युर प्रदेश न्र्रिय श्रुव पति तास्वित रामिता वितान्त न्रियः

र्यं द न कुर् ' स्वावा विवा ह ' श्वेद कुर सुर्या " के विवा विवा विवा पर कर म्र्रायाञ्च वर्षा करायवेषाग्री तर्द्धन यहेवा यूराग्री वाक्रमान्यवः बेर-भ्रु-बॅट्ब-**ब्य-**ब्वब-व्ह-द्व-दिवान-**ट्ट**-। रेषा बेर र ने त्त्व ग्री भे ग्री के व से र विचया रे वा श्रेव श्रुच व र व र खर ख्या र से प्राया र व वियः कः धेनः ययः यिनाः यः नेवायः यः स्टरः भूरः यदः। ५८तः भ्रेदः यः यवे वासरः ষ্ট্র-ম-1757 দ্ব-ম্ব-বি-প্র-মন্ত্র-মন पति छेता नशुस ने द न विद्या पा स्निता पति भूता सर्वे सामन पति हुए नहें न व दाने के व " न न न क न इसका सुदी न मानु न कर हे न सुद दी" म्राया वियायह्यास्यायविवास्यायात्विवास्यायायाया <u>बुर् . द्वाच्या ब्रियं ये या ब्राप्त त्यालार लारा त्या चुर्याया पुरा विषया र या श्रीरः .</u> पःयता प्रमादः सेपता केरः अपुरः परा देः श्रीपता स्वास्त्र स्वता वताः ब्रि. अप्र.श्चे. क्या खे. स. जा. स्व. लग्न. यव. बाहे या ग्री. यत. ही व. वया ळे. सेपा , पुष्पत्रा , से. यया में अप केर. सेवा. में . युवाया है. केव मं तेयता हैन मान वर्षि पत्व वाया स्टूर्य केन मु यह न न न न न न त्रिराधार्म्य परि के क्षेटा धार्मी पत्र वर्षा राम्या महारामा क्रिया म्यायार् ग्रेर केर् ग्रेर हेरे न ज्ञायायायार्य्यायाया सर् बिदः तर्नै रः नष्ट्रवः त्र्ने वैः दें वः क्ष्यायः में के निषयः ग्रीयः वैः विनः यः व**र्दः ः** यते. न में न्या या अध्य हिता है। मित्या छ उन में या यह व उन में या यह या भामञ्जूषानदेः देवः तु। इंदायाम् शुवारेवा ग्रीयाधिवायदे ववना ववना

① (र्यग्रवस्त्रकः हे 'या श्चर् क 'वृग् ग्रद्य '116)

क्र-इंट. त. स् न नक्षत्र प्रदेश्च व क्ष्र स्वर क्षेत्र क्ष्र क्ष्र प्रवास क्ष्र क्ष्र क्ष्र प्रवास क्ष्र प्रवास क्ष्र प्रवास क्ष्र प्रवास क्ष्र प्रवास क्ष्र प्रवास क्ष्र क्

त्र भुक्षान्त न्यान यहता न्यानी यहन नाम्य हिनान न्यान स्थान न्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थान

①(a · a · a a · a · a a ·

र्वेत् त्यन्त्र वयत्र ठत् निर्मेतु त्या वर्गेत् सर या वत्। यह्न दार्थेतः स्राया विकासी निकासी निकासी मित्रा के मित्रा विव.पे.कु.पथ.लूर.पत्यरथ.पुर.श्चे.पर.श्चर। रेब्र्ट्याह्रवीय श्चेतः भूर-बर-वलक हर-ल-देर-कु-र्वेट्यन्य-नर-र्वेयावर-वी-लर-कुदे.... चलात्वर्तकात्वा र्रे हे तकरातृ त्ये त्रे वित्रस्य मानावी नरातुःकु में मा सु के न विमान्या वर्षे वहें न दिना दिना विमान न्त्राग्रं र मी का त्रार्या सहत न्या ता भेव मु । ध व । ध न मु व । क्रु व । त्रेंत्रचेत्र-त्रव्यः व्रवः क्रेंत्रक्त्यचे के व्यः नव्दः प्रवा ने क्रंत्रः चेन्-न्म्यान्नेया क्याज्यस्य वित्राची निष्ठा स्वर्धान्य न्यान्य निर् त्यरक्षात्यानने क्रिन् त्यनुरामते चेन् क्षे व्यापश्चन्य म्बेष भेरा। हेन् वयानवयाद्वायाक्षेटानुःकुः त्या वयवा ठर् छ वया व हे या पश्चित्या पदे र्बेद्या-य-द्र-अद्युव-य-र तृ -यदे-न्न-वा ह्यु या ह्यु या महाया ग्री - पर-र नु न्यु र मयानगायानिव श्चिमामायायायायाची माना श्चिमाया वयाग्रदः सदः सदः स्वाचनवा मदीः सवा तायन् नदः नदः नदः । तृ । सदीः ह्यः सदीः शु.रुवायवेव इं र र्वे या प्रवर्ष या अवस्य पर के देन र में वा वे विषय प्रवर्ष व म्बर्यराधिना पत्रद्वार विषया "कियान्ययान वास्त्र हु त्यते ह्वा यदे द्यावर वृद्द तृद्द वृद्द विदेश वात विवाद विवाद विदेश विद्या विद्या विदेश विद्या विदेश विदे

① (제국:제內조:대리:월조:대萬국:국대:독재:98---99)

द्यू.च.चठय,ाप्तिंद्र.पर्याता,केर.च्र.यं.यं.थं.खंक्य.येथा क्ष्य.पथां नग्रान्त्र्रेषाळ्यारान्वरार्थेन् गृतुर्गे स्वर्धेव वस्य देव ग्री वर्णाः हुतरान्यतासम् कॅर्रत्रिं प्रम् द्र वित्रमुरा हेन् तार्वे स्वराधिता वित्र ৾৶৽ঌৢ৾৾৴ ৼৢ৾**৾ঀ**৽ড়ৢ৾৾৽৻ৼঢ়য়৾৽৻৽য়ৼ৻ঀ৾৾৾য়ৢ৾৽৻৽য়৽৻৽য়ৼ৻য় बळें न् में द्राः मावव ने दे द नु मिविषा या समा माना ह्रां द्राया प्रा श्च-वरुरावन नित्राचा निवासी श्वामी श्वामी हुरारी निवासी राश्चा इस्रताम् न द्रुराग्रीयामुल पदी आराही रारे वार्य के मार्व लु र्रा रहेता । देशा श्रेद् भी सुन्या तन्त्र भी द । प्रति य यान्त्र राम रामे श्रेद् प्रमा श्रुषा । । विना मुल कंपा हु पङ्गापवना सहर मु देशादन्य के र्र्ह्णा न राया ग्रें हा रा मुडेन् सहुद्र हुरानरानहेदार्द्धरायदे हुँ संदाक्षरान्द्र से मु नक्राञ्चित्राः अर्मे व्रः क्रुयः नदेः क्रुयः क्रियः त्राञ्च त्रः नदः नश्चरा "② ठेराः द्रेराः मी.र्नर्म हुरायम्क र्र् यावयाके स्थि। मारे वाह्य "मॅर्गी सवा रॅ्व'पष्टिर'प्रहेव'बृ'रोर'मङ्गव'म'प्रहेव'च्चेर्'र्मण'स्व'र्वे' बेव'ठ्व'' ग्रेम्बरम् कुया "अवेरावित् वर्षः स्त्रावित्रम् क्राक्षः न्दः त्यतः व वः ने शुः वैवा वीता व व दः त द व । यदः व स्ता न दः धेवः

① (र्यन्प्रायः क्षेत्रः क्षर् कः व्रव्याप्तरः ११व ग्राह्यः ११व ग्राह्यः ११व

② (वॅद्र'न्यल देव क्के.चर'बदे क्कंद कंचर'देव:584)

③ (देन:बेर वॅट:नदे:न्बेन्य:तु:व्न ग्रह्य:62)

本版 (日本 (日本 (日本) 本) (日本)

म् त्या स्वास्त्र स्वास्त

म्यार्ग्य क्ष्याः स्वार्ग्य क्ष्याः म्यार्ग्य क्ष्याः स्वार्ग्य क्ष्याः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर

① (न्यन प्रवास्त्र अस्त्र म्या म्या १११४)

स्त. रूप. कृष् श्रु. हिंद. री. पर्वा. क्वा. इवस. ग्रंता श्रूपा. विप री. विस. मर् मुल क्ष्यारेव संक्रिंग हेना श्रेलानवर परे देर नर स्वाधित कुरावना पठन् वता शुर्मातुरारेव संक्रिः दुरातु विम्यान्या हेव हेते भ्र.पक्ष्य.प्रा.पुराई.वि.वा ह्.यूष्ट.विट.पश्चर.श्चेतावा न्युर-भुव-य-पठवान्व-इरवाव्यापक्षापक्षाप्तवर-परा 쮰. न्तुरःरेदःसं छे अनुअवः परः चलु न्वारः संविषः परः चनवः नेरः। प्रवेग्य. ग्रेस्. श्रीयय. प्रक्रेयय. य. प्रमय. य. प्रवेत्। च गा विषायद्विषा च र मह्यं गा सवा विष्टा महार महार च महिता स्वा च महिता स्व ग्रदःभेवः मृतः न नवा भेदः सुवः सुवा स्वायः भ स्वायः मृतः ठरःकेवः यद्यः यद्यायश्रवाः श्वरः व नृष्यं यः यः येष्यः पदे सुत्यः नृःश्चेवः यः हुत्। दे व्यासु गृत्र देव य के भेर प्रवेत के रातु प्रवेत प्रवेर प वयत ग्रे विदः सक्रमः द्या धरः पत् मता शुः म्रां वादिः सक्रदः स्ट केदः ः युप्तःश्चित्यः ब्रुप्रः श्चित्यः प्रचपः धुबः ज्ञायः वा सः क्षेत्रयः ग्रीटः चनः तम्याक्र. यहा विदायदा द्वा वहूर दिया में प्रिया विवास रु.शुरायाबेदाम्बेषाञ्चर्यानेवानुः त्युद्राद्यादायदा। कदायान्युद्रा ब्रूज.ब्र्य.वया.वयुप्र.ब्रुट्य.प्रट.जया.चयुट्य.घर.घव.घठट्र.घरु.ब्र् पग् 'नैरा'क्षुव'र्थे 'वरा' पृ ठ केव' स्वयरा रु र 'यष्ट्रिव' ग्री ग्रां केव' **रॅरा' सु ''** कु'र्यरल'ह्र्याल'इव'इल'ग्रे.चेत्र-श्राताश्चराह्रंर'स्वापर्वद'देव'.... गठेग तुः न झू यः विरः। ग्वन यारः अहंग तुः न्न यदे वें र ठन इ मरा वयान्नेंद्रयाञ्चायाव्यावदेवयान्दा न्योत्रान्त्र्रादेवार्याळेताञ्च कु स कु व र राम्याया या के द् र द के मृत्या भी या स्याप मा मा मा व द र स या यह द र द या

द्वास्त्रात्त्रम् स्वरास्त्रम् स्वरास्त्रस्य स्वरास्त्रस्य स्वरास्त्रस्य स्वरास्त्रस्य स्वरास्त्रस्य स्वरास्त् स्वराद्वास्त्रस्य स्वराद्वास्त्रस्य स्वराद्वास्त्रस्य स्वराद्वास्त्रस्य स्वरास्त्रस्य स्वराद्वास्त्रस्य स्वरस्य स्वराद्वास्त्रस्य स्वराद्वास्त्य स्वराद्वास्य स्वराद्वास्त्रस्य स्वराद्वास्य स्वराद्वास्य स्वराद्वास्य स्वराद्वास्य स्वराद्वास्य

⁽ax ant art art frame)

स्ति स्त्राची स्त्रा

1. षरःश्रेन्'वङन्'वङ्ग्यःन्नः। ह्यःवह्यःद्विःवन्यःस्यायः दुयःचा

तृ त्यते त्रा यते त्या यहं त्या पति हैं ग नि वे ग नि व वित्या न त्या विवाधित स्ता नि वित्या मित्र स्वा नि वे ग नि विवाधित स्वा मित्र स्वा स्व मित्र स्वा मित्र स्व मित्र स्व मित्र स्वा मित्र स्वा मित्र स्वा मित्र स

पर्-भे.हे। रट-व्या. मैपा अष्ट्या पह्या राजा में अष्ट्र भूरायता हे। म शिन्-श्रॅम्-ने -श्रॅम्ब्रम् न स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वा वह्याच्चीट. ष्रघर वी. लट्या तपुर में ये. जा बे प्रचा में प्रचा ने या. ता वे या. ळेर्-तु-बळव्-वर्गेर्-गुर्य-५५ ग्-गुर-। रॅव-र्न्रॅय-शु-मुत्य-परि-धर-श्चि<u>नः स्थापहुष्याचिषाहुः क्षेत्रः श्चिषावश्च</u>रः तत्रः श्चेत्रः स्थावतः । । र्टा हुं नवा तना वा ची . रहे . हेर च नह . तह न "इनवा हुवा 1760 वर. मुलः नदैः लटः श्रेन् ः श्रॅंनः लः मुः विनः ≹रः न्वेतः विनान्नाः न्रः। **क्र्य.**र्ज्ञ.\ययो. वयास्यानदेः चैयायाः ह्वाया बळवा पत्रमः नेवया ग्री बैदावाबुदा दर्चे रागः दे·ङ्गॅरः्व्यानवद् के नवान् ह केवादेव में के कुवानिवातु न्वाद्वातु · · · न्दा वर्ने श्वर वर्ष केर् वेनय इट हु रहे मृतु थे नेय न हु व पते য়ৢব রা কুম র্জন ব্র রাব তব রামাব স্থান ক্র নি নি নি নি न् वर्षः न् न्या प्रायः प्रायः प्रायः न्युरः प्रदेवः क्रेषः क्रुरः । प्रायः पर्षः नयः न के बी खेराखे . बेबरा अह्र रामप्र क्रिया बेबा नवरा खेनवा बैरान पित्रया न्दरा द्यार्नादान्द्रतातुः स्तिर्नेयानः इययायाः श्रीतेः **ब्रेन्टक्यान्द्रा** ह्याया सक्षत्र : रॉयाया यह या ब्रिन : द्वेन्ट : स्रोदे : स्रेन्ट : व्याप केर्-महॅर-अर्हर्-स-छेर-स्वर-विरल-वल-ल-झ्न- 1758 **ब्र. ७ केल**... 15 वैदः व्रेतः श्रुपः क्षः रे. श्रूरः तु । पर्वयः पर्वः श्रुषः पः ने रः प्रयः क्षेरः प वरः । । स्रम्याङ्गः स्रमुद्राञ्चरापरापहेदाञ्चराधराम्याद्राम्यान्यायाः सम्मरः मन्द्रा वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् **ॾ**ॕॺऻॺॱ^{ढ़}ॹॖॺॱॺऻॕॣॕॕॕॸॱक़ॣऀॱॿॣॕॱॿॹॱऄॿॱज़ॹऄॖॱॾॖ॓ॿॱ॔ऺ॔ॸॱऻॎख़ॷऀढ़ऄॗॸॱ

व पत्रतः स्वाया दे त्य र त्रि हे न ह्व र धरा न वेवत रहत <u> वुरापरः र्करः अप्तृष्येदः र्देशः दिदेवः अर्दरः परः पहेवः र्करः अर्य रेःःः</u> रदः तः श्रुप्रायम् व मुयापदि यदः श्रीदः श्रुपः श्रयः व प प प र लु मु स्थितः **द्धं यान् में त्राया है । यहा वाहिता में निष्में या में निष्में में निष्में** न्दा प्रमादः भगः वयः चेनः ब्रेंट्र व्यावदयः केः व्याद्यः यः मान् वः क्षेत्रं वीः द्रैयः नञ्जन्यः यहं रः" ® देशः श्रेयः तत्त्व यः स्ट्रमः श्रुः देवाः श्रुः यदेः ञ्चरः श्रीः । राकः के तर् विग वरा महामी हें वातु विवराया धेवा हरा। ब्राम्यास्त्र म् विनयाः स्वाय श्रेष्यायाः प्रति। क्रिय प्रते स्वर स्वर न्रें ता शु मान दा तिया नदी समा मार्डेन् हे 'स्रेन् चुलामा र्वे माल इ या सरा न्मः स्यान्याक्षः अध्वाप्यान्ते वाराक्ष्यः ग्राप्यान् ने स्थित् क्ष्राप्यान्या नक्षेत्रतहेग्य बेर् ग्रैया बहर् पदे हूं त्यते हुं वा श्रु होरा न कुर् पदे ह्या बरः≪वह् बःश्चेरः बद्यतःशुः अरुषः मते गुवः » नैरः धरः बः ने रदः लः गृषेः चर्डलाईम खुदाक्षुःर्लायदे हैं हेदे ह्या द्या द्या त्रुताम् व क्रेंता हु क्रा है व बर्हर्-ध-र्ह्ना अन्य-रेदे-ध्याद-ह्वंब-बर्हे-ब्राप्ट-विनय-हुह्-गै-हुह्-नःनहॅन्:या न्यतःचितःवे:नवे:बे:रनवःग्री:बुट:नःनहॅन्:वं:वॅ:वंतवः ग्रम्। विक्षात्रेम्। कुर् : चर् राचिता हे विक्षात्रे । विक्षात्रे विक्षात्रे विक्षात्रे विक्षात्रे । विक्षात्रे ৡ৴**৾৸ঀ৾৾৾ড়ঀ৶৸য়৸ড়ৼয়৵৸৴ড়৸ড়য়ড়৸৸ড়৸৴৸৸৸**

Ф 《इर्-के-के-इन-इन-रननः अवेर-नने नेन-इन्-कने-नर-देन-585

इसम्बर्धाः भी वस्त्रिया स्राधित स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्व हूं सदे निया में दे हो न है दे नदे होंगे. वेट महे वे नदे हो में दे नदे हैं नर-महिलान नैवातुः सामेनवागुराच मनवान्द्राचान राजुरा नावैः त्रु यदे न्नु वदे अक्रवा वी ह्युया पदे न्युया वेदा देता ने वा प्रता के नया रु.च्र्ना.सु.वेर्.च्र्-तु-व्रेनया.वया.ब्रुया.सु. नस्र- नरुर् वया.वया. **ळॅ**र्-ध-च्रेर्-र्न्मेषा कु-चॅन्-सु-देर्-ग्री-नव-वर्षाद्य-देर-चॅर-नहॅर-क्रे-र्भेर् गुर्म र ने राजे र ग्री पहुन परी में न मारा के नया मे नया नया स त्युत्रापरः श्रुताञ्चा क्रिन् प्रमुदः हित्र वेषयः नृष्या वेषापदे प्रमूदः " विमला श्रमान्यमानु अयामव गरिमान्दा द्रमें व स्ट्राय मला म्राम्यप्रमान्त्रम् । म्राम्यम् । म्राम्यम् । म्राम्यम् । म्राम्यम् । पश्चित् अहित्। " किय न्याया विता। ने क्रें रायदे व्याय राव नया हुतः मुयाग्रम्। "तरी स्निनरा मान वा ग्री क्षे मिरा वा न न ग में रहेन में ता मुता न्नरः इं हे तकर में प्यरः श्रेन् विष्यः बेन् श्रुनः न्याया भी न्में रतायः । । । महर्विया मुलार्वरास्क्रेंगानी सुन्य श्रया अधिवास र्राप है पा 를로.인.너트피·디 नहन्मते न्याया चेत् केन ये त्री भी अर हु बक्चाः श्रु लार् व में के के द माने र हिंद्यान ह मानद र न न विव हैं न न पहुर मवेषामते वरातु क्ष व्वा है हे मन्वा ग्री मवषा शु वेष ष । "७ वेषा त्रित् यान्ता नेते मेंतायक केवारेवार्य के भागर केन नु मन्वाल ① (शुतु नम्ब क्रिया में के स्वरे म्ब्यू मिल्य स्वर्थ मिल्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वय्य स्वयं स्वयं स्वर्य स्वयं स्व

到5억(192)

② (বহু বাদ্ৰ ভূব বাইব হব হব বাইব 102)

र्रः ५३ वः कुषः कंपः ने ॱश्रं रहें 'वेषः वुः र्रः प्रमृदः भूषः श्रं गृषः द्रषः धरः ः ः श्चेन् दिताङ्कुलान्यन्यक्षेत्रताङ्गेन् त्याङ्गेन् स्वदे तसन् वितालुतासदे सन् स**र्** बार्यर नथा "मुल कंप स्वर से क्या के बार मान स्थल में से देश मान स्वर से का मान से का मान से का मान से का मान स ষ্ববাৰেইবান্তৰাণী শ্লীবেকা প্ৰভাৱৰ বাৰ্যালয়ৰ দুৰ্ভিত্য নি দুৰ্ভিত্য নি প্ৰভাৱৰ বাৰ্যালয়ৰ নি প্ৰভাৱৰ বাৰ্যালয়ৰ দুৰ্ভিত্য নি প্ৰভাৱৰ বাৰ্যালয়ৰ নি প্ৰভাৱৰ নি প্ৰভাৱ *न्हॅर*-नवर-पर-ध-कार्यन्याक्ती:बेर-क्षर-र-पक्षुत्र-प-र्रा क्ष्य-ਘ-म्ह्या व्याप्त व्यापत व्या न्दःनेते अन्यान सुद्राची स्तरायवात विता सेन् सह ना न द्वावा छै। सेन् ₹तः वृतः यः चृतः रेगल शुः वैः यतु ग्"ः चे ठेरा ग्रायः पः वा वा वृतः शुः रुं∙वेंगः वुःवेनयः पदेः हेयः शुः भदः देयः श्वायः अ**दः यः वें व**ापयः मृत्वः त्रेषायहर्त्त्रम् द्याष्ट्रित्तरः श्रूतः हे। र्रे देत्त्व ह्रेषात्ययः ५३ूर.ग्रैय.म्बु८्य.पर्। "अ्नव्य.वेग.श्रुव्य.हे.इ८.श्रु.श्रु.मॅ्ट.यवा बै'हे'नग्रद'देव'ठव'दे'वेद'य। (गुर'मङ्गे'नर'नेर') शु'हेद'ग्री' **६ं.ज.पे.च्याय.त्राच्याया विष्यायप्त.यक्र्याची स्थाय विष्यायी स्थाय क्रियायी स्थाय क्रियायी स्थाय स्थाय क्रियायी स्थाय स्थाय क्रियायी स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्य** ষ্ববা-৴**৴৴**৽৵৷ ৼঀয়৾৽ঢ়ৢ৾ঀ৽য়ৢ৾য়৽য়৽৸ড়ৢ৾৾৴৽৸৴৽য়ৼ৾৾৾ঀ৽ঀ৾য়৽ড়৾৾৾ঀ৽ भ्रूर-विना सम्बद्धा श्रुव तद्देव लुका ग्रह्मा व्यह्म तहि सम्बद्धा सम्वद्धा सम्बद्धा **ख़८.त्रुच्यः क्षटः बःत्रः २०**.पादः बोद्यन्त्रः द्वेचयः बोद्यने पाचक्रीयः नयः द्वे . . बात मुना तर्ने सुनारे बात गुरना शु शुना न न ने मुने मेना राज्या है जिंद क की हें ने वारा प्रदेश मिना वित्य के देश के देश मुख्य की में वारा के की वारा के की वारा के की वारा के की वारा परुषा न् क्षेत्राम् द्वे कि. पर्ने त्या क्षेत्रा क्षेत्र क्ष

धेव-वेष-ग्रुट्य-य-वा देवे-यव-तु-----शुव-यदेव-हे-उंग वर्द् ग्रदःक्षः तर्रे विषाः ल्याय वै अव स्याना निवान विषयः श्री स्वान स् हें के धुल तु : रूट वी न राम केंद्र यह राम या तु : य राद र न र लु : वा कुल : नते भर् श्रेर् श्रेर तर्रे सं राके स्निया कु वया में रावा के वार्य या गुरा बद्दः लाधेद् बाळ्याचर बद्दः लाजूदः बद्दः वदः व्याप्तः वदः व वैं ऋप्रयासमें दाने देवारी के दाया में विदास में विदास में प्राप्त करा है या म म्वव वेराहेषायवेरान्दा सहेषायसम् सार्वा सार्वेरा यो नेषा श्री मिवेषा ययान्ध्रन्ने समा कर्मा विमायह्न दिन् विमा ने ने निमाया विभागति ঀঀয়৾৾৻ঀয়ৢৼ৾ঀৢ৾৾৻য়য়ৼয়য়৾ড়ৢ৾৾ৼয়য়৾৽ঢ়ৣ৾ঢ়৽ঢ়৾ঀ৽ড়ৼ৾য়য়৽৽৽৽৽ यसवायाः इवान्याः लुः न्येषायावी रामकर्षा लेषाः लुः यरः वर्षः । "ा देषाः वयाम् मा क्षिम्या र्म्म्या स्माया स्म नः अळे वः विरः । देः हे यः दे यः श्रु वः वरः वरः वहः वः द धुदः व श्रु वः वदे वरः अस्यत्रे अत्राच्च ता वृष्ट्र न्या द्रियान्य विश्वता विश्वता वृष्ट्र विष्यता विश्वता विश्वत नद्र हित्र म्ह्य संवाहर हुना प्रके के वर्ष प्राप्त हुन थे भेराया ।।।। <u>न्धुन् प्रनेबल बहान् कुरासुल प्रते ज्ञूरा सुरा कुरा हरा करा "न्</u> *ঀ৾৽৲*ঢ়৽ড়ঀ৽য়য়ড়৽ড়৾৾ঢ়৽ৠড়৽ড়৾য়৽৾ঽয়৽ৼ৾৽৾ড়৾৾য়৽য়৾ড়ড়৽ড়ৼ৾৽য়৾ড়য়৽ঢ়ৢ৽ **प्**रुद्धरत्याचन विदाग्री यात्रा देव विवास विदास समान समान विदास विदास विदास विदास विदास विदास विदास विदास विदास

① (\qq.\q\angle\q\angl

लेगल पर ग्रॅल पार विवा हे संवय (इट सुर नेर) ग्रं यह र ক্রুঅ ক্রবা ন শব: ইব রেশব অব ইব ট্রব রেশব হব ট্রব রেশবর मुर्चनातु। भव्राक्षेत्रास्त्रस्यायद्वातुनातुः न्वराधितायदः श्च**र**्रे**र**्रे**व**, मू.कु.प्रधितः श्चरः स्थाप्त ह्या स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप नग्रद्भेत्रमञ्जूदलर्भेलर्ख्याग्री.वि.च.व्व.प्रवास्याचला म्ह छेवः **बगरा रु र** अष्टि **द रु र** मि तेमल या के द में लाय हु ला हु ला खे में लाया है दार र धरः भरः मः रः ्व प्रदर्श्वेष्य शुः शुः द्वि द्वार्य दे । केदः कुषः द्वदः । तहिगानेदाम्यायम् वास्त्रम्य मान्स्रितः यदः श्रीदात्र वास्त्रीद्वात्रम्य वास्त्रम्य विश्वति वास्त्रम्य वा मुर्हेर्-पर्दे-च मृदःसुरू-च हुन्य। "ा हेर्यान्यक्ष हिन्। हेर्यान्देदेः **यम् श्रेन् देशः यने अयः यः गृव्वः न्मः श्रेः यहः न्यतः न् गृवः गृवन् यहैः कृरः** त्र्र्र्र्द्र्वा म्डॅं मॅं मॅंट्र्य कव्यस्ट्रिंग ने मूं म्रुवाय स्ट्रं विया क्ष्माताः केवः सं स्याह्म स्पर्धः मुक्ताः भीवा प्राहः केवः सेवः सं केताः संताः श्रुयाम्डिमार्सम्म द्रातियाम्बरासेदाउदा। द्रातृदाकेदानेदास्यतः नगतः सुरः दर्धेनः नृषेत्रः क्षेत्रः निरः न्येनः वः श्रूनराः ने देः नगतः ह्येनः वर्दे विषयः नवा "व्रें नं विषयः मुवास्ता विषयः विषयः विषयः विष्य मयता रूर : यहित : यः केव : यं र : श्वाता र वा र ह वा ला किता श्वीर । पवा यं र **१.**लर.१या.मञ्जा.१.श्चेय.पट्टेय.ग्चे.लर.खी मवय.लर.श्च.श. थर.श्च. मार्यम्याक्षः भूषाकुःस्यान्दाःस्वायायस्यान्यायाद्वी सन् र्यम्याकुः भू वसाग्रमान्वायायम्। देश्यक्रायदेशम्बार्धिराहेवायदेवा पर्द्वराधिव स्वर् त्राया श्री देवा या सुन्या पद्वा स्वर् पद्वर पद्वर स्वर

① (वितः नगुन गहारः सहाय क्षेण्य नयः रूरः मंगः ग्रान्यः 232)

बत्तापर विवानुया क्षारी ज्ञार र ज्ञार प्रमान विवास वारी विवास विवा *ঀৢ৾৾*৾৾৾৾৾ঀॱॺॎॕॱबॱदेशॱयः वृहेनः युह्य । বৃষ্ট্র । বৃ *ष्*रोत्रःपद्येदःपःग्रह्युवःग्रीकःह्यःयत्रःप्रवायदेःश्चर्-तु । **यदःश्चन्यत्वन्यः व्या**य्याः वयः हॅनः न्धुनः यवनः कुः सुवः श्चनः न्दः । मॅं८ॱमीॱम्वरार्द्धयाम्८*'५८* ठे अळेराया ह्यराय ह्याय**रे ५**३*८रा* में८ः बायन्याः व केवः व दे याचे राष्ट्री क्षेत्रात् याचे वा के व है कि स्वराय माचान्धनः । । यते. र्वे . ता श्रम् . श्वरः लु . कु ते . ब . के वा . ग्रमः य ले वा या . स्रमः (स्रमः अ.) श्वरः . **র্মা: প্রবান্ত্রী:**র্মা: 1760 ইন্: প্রশ্বানরের্মা:র্মে: অন: গ্রীন্:র্মা:গ্রুম: গ্রুম: গ্রুম ग्री'यहग'रधर'गदवार्ख्यार्खर'याराष्ट्र'ठ्यावेंग मेंर'यर'श्रृदार्श्चेदा नवरःश्चे न गरि है र वेनल है क्र न हुल नदि है व ल नहि न गुर लु कुदै निं ने के के के कि क्या अवत पर्वेषया कुर प्रवेष के ने कि कि कि कि धैर-वेनब-नवर-प-*न्र-। दे-*हेब-नगद-पद-दॉवर-नर-"वॅद-स इरावर्षा प्रवास वरा है वर्ष वर्षा शुर्मित देव में वा श्वर है द्वा या स्रेरा श्री में बरामा निर्मा हिनाया श्रीमा सा श्रीमा में से मारी मारी में न्द्रत्देव् लु कुरे नश्चर क्र्रव लु द्रम् वाये नवा परे हेवा बु र न्या । । । है। गुर्वर बूट्या शु मुल कंच देव में के दूर। है अय पवा के **ড়৾৾৾ঌ৽ঀ৾৾ৼ৾৽ঢ়৾৽৸৾**ড়ৼ৽ড়ৢ৾ঀ৾৾৵৽ৼৼ৽ঢ়ঽ৵৽য়ৢ৾৵৽ৼ৾৾য়৾৽য়৾ড়৾ঀ৾৽য়ৄ৾৵৽ৼ৾৾৾য়৾৽৽৽ क्रे.ब्रुव् तद्वेव त्यान वेन्या देन चन वन दे भेग है बर परे पारवन

^{ৢ৾৾} (য়ৼ৾৾ॱয়ঢ়ৼ য়ৢৼ৾৽ঢ়ৼ৾ৼ৾৾৽ৼ৾য়৾৽107)

महर् अ. प्रमिता न ने यात स्य अक्ष्य ।

बिर्या तप्र प्राधिता स्य क्ष्या मुन्य प्रम्य मुन्य प्रम्य मुन्य प्रम्य मुन्य मुन

श्चीयः प्राप्त श्वीयः स्त्रा स्वीयः स्त्रा स्वाद्धः स्वादः स्

राना अर्दे व्यापर छ रेरा द्वारा कुरा वारा रश्वर अरा द्वर हुया स्ते. है। बर्दरचंदा ईरार्चिदा परीरार्धरा बैर्चेदा धना बहूरे.च। व्याने छेर। चेष्ट्र-व्यास्वयारे चेषा क्षेत्र हिरासदी लय है : रेन : हु : निर्मा निर्मात : स्वा व : रा हु निर्मा के : रा हु निर्मा के : रा हु निर्मा के : रा हु निर्मा स्बाय के के शु क्या अल्ला के किया प्राथित कर श्री या ग्री के श्री वर गेरी प्राया ता ... ब हेरा घर पर है । या रुवा या या रिष्या या ये । दे वे य:क्षेत्र:५५५ इसलाग्रेसायकॅन् परि है। हाना परायाग्रेसाय हा पार्य सित्त नहीसान्या परे.प रुव.ग्री.भिष. सूर्यः त्वावा.पि. पूरं त्विवाया. १ . भूटा बावेया हीर. मॅं.के। झे.करे.के। शुलाचे.र्यमया वयाचेनयानशुः यहं न् परायहता ञ्चनाम्बद्धाः "🛈 विद्यानदाय मासूरास्ट्रमा ह्यूयारेवामा छे ने दिन **लु-्ध्री** प्रमुख्य हु- प्रमुख- प्रमु कुल क्याने से मुन्स सुन्दर्भ कु न्य कु न्य कु न्य कर ने ने न्य कर ने निर्मा सुन्य सुन्य न बेनलाततुन न्नातानवे नदे हुतान नहेन्यदे नता ं तर् न्नानला द्धरःश्चर्द्वनः श्वरः न्द्ररः नुवयः श्वरः न्रः। यह क्रवर्रयः द्वाचे नेता चारा श्रवाद्वा देवा न्युका चेरावा मवरा खावा रावा वा वा वा उदः द्रगः यर या वर्षे दः हो। इदः श्रु देः स्र यः वरः द्रः । वर्षे वापरः पदेः बुद्र-पः यह्रद्र-पः यद्रद्रः इत्र-दर्दे -द्र- यु केषाः अधुद्र-ष्वयाः यद्याः न्याः दे ****

(इयाधरायहंबाधरावधराक्व नेरायरावयान्यार्थाः

²⁰⁻²¹⁾

र्ण हिर्द्या पर्वत पराञ्चर दें।

इयाधरावराने वया "ने वॅ रेवाया के न्रा वेरावरी वर्षे वायय **रा.प्र.** भेर. पठवा ग्रीया श्रुपवा सर्वे प्र. प्र. पदी प्र ग्रीते खेपवा श्री प्र. । बहर्भंडूर्र्स् बहर्म्म वर्षः वर्षः विष् कृ विरावराष्ट्रे करे के पूर सं.लय.श्रूप श्रुपः भ्रूपः चयः पश्चितः स्तुत्वः स्तुतः स्तुतः स्तुतः स्तुतः स्तुतः स्तुतः स्तुतः स्तुतः स्तुतः स त्तृतः चुतैः ग्रातः चे 'कॅर: ह्रा महाकारादैः धरः छे तः पठुः महे तः हे दः १८ 'ग्रीतः इव.तर्। रेपु च मेप.लय. इ.च. सं. तपु. क्या. हे. सी. च हेया लाई. में . लया नवःश्रीः रात्रः सेनराः हे। देः य न गतः न बदः द्वतः गरीतः धेनः देवः देवः न्दः। मन्दः क्रेल दें व्यक्षरः ठवः ये : ब्रवः प्रच्य पञ्चयः यहा कुः पदः **नमातः मुंद्यः ह्रे**न र्र रक्षरः न ह्यंतः हुः ब्रेंबः नमातः नश्चरः र्रः। वश्चरा धेषा पश्चे**र** चुते प्र गतः यद्याया सहित्। स्था हिन्हें त् ह्वा प्रति स्था प्र कुत् न्तरम्रावर्ष्ट्राञ्चरायेग्रावेद। म्रायदे वे र्गाषयायद्गनेविताग्रेदा हुर-व-र्श्चर य-लेर-श्रु। मन्व-ल-केव-य-नश्चरग्री-श्च-अ-लक्षे -र्सम्बर न्दः परुषः पर्या निर्वरः भेना देवः मः के विष्य स्टः परे पा रुवः तुः मन्द्रम्या महिन्धिम देव में किये वेचल पहुन हैं य या स्वापन मी बर्व-दे-श्व-तर्भात्व-त्र-वि-य्यायावयात्यास्यात्र्यात्र-नर्श्वनवान्त्रवान्त्यवान्त्रवान्त्य मुप्ताः सर्वे वः सर्के म् ह्यू या देवः में के सुग्या न् ग्रे या पति वे ये पया पत्र निर्मानु मत्नु नवा विदेश सित्र मित्र मित्र

चवा न्यंतर्रुः सुः लयः नवः नवेतराग्रीलः नवेतरः धेनाः न हरः। न नवेरः स्राप्तं वार्षः वारायहे क्या महिराधेन रेवा से के कर है जा से प मर पश्चिष्य पति प्रमृदि देव या के दिर विवस ग्री के लिए विस्त मिर प्रमृद् न्ना बादे हु ला मुन्यायम मा न लवान्तु वान्दर में लवा में वाने न के के के रेटाह्टामी सुरा देन् ग्री नमायान विवाह्य या परि हु हिन् नहीं नर रेटा क्वे कि.स.चया ब्रियासरा ब्रियासप्टा श्वे हिंदा में बच रहा श्वे रहा स्टरी हैं बर्कर ठव पत्रुमा हेर म देर ग्री लेबल नेव हु रमया हू स्पर्ध हा स श्चु-म्राम्याक्र्यान्ती-ल्युवान्तु-हिवासराय बर्। र्यानी-प्राम्यः **र्रः तुः** ज्ञरण वृषः वृः रोरः पुः राष्ट्रः । वर्षः राष्ट्रः वीः কন'ন্নদ্থারমথাত্র'ন্র ক্ট্রি'না স্থ্রীর'ন্র বর্ধার্ স্থ্রী রম্ম তর্ ইর্ क्तु-द्रम्प्त्यः भः न्दः अञ्चवः भय। देदः वयः श्चित्रयः अवेतः यहे न वेदयः मह्नद्रामु केर प्रश्ची या विद्राय वि नर म्री मार्य द्र राष्ट्र त्य थुवयाविष कुर्य. त्र. विरालरा राक्षे. ज्ञानी विरया श्री विषया है या पर्दा श्री म्याप्तराष्ट्रव पातरी रेत् के प्रिन्त्र महावापता क्षा श्चलामते सु हिन् वयायात्या क्रया है । पह्रवामते क्रिटा संवा ते ने ते ने हिन् ख्रावर, र. पुर. में या १६ द्वेर. शे. मूथा प्रथा पा पक्ष वे. तर अस्टेर वे या शे. ळवःह्वदःरार्जनवा ने में र बेद्रायानाकी रासवाह्ययायरे सुननवा र्भ मुंदार्भ ते हे दार्मात हूँ दार्माण न वित्र मुंदार माना न वित्र मुंदि हैं। र्मन् बेर् ग्री क्षु नक्ष्रा म्यर ग्री दे भूगु हुन मदे क्षु नक्ष्रा देव म्:कुप्.वेच.पत्र्य.वेट.च्र्य.वेच्.च.पर्.वे.वेज.तप्.वे.वे.वे.वे.वे किरा वृत्तेरामु पङ्गवाया द्रायते केरा तु विवाया धेवा गव वर्ष्मुर ঀৄৢ৴ঀঀ৾৶৶৴ঀ৾য়ৼ৻ড়৻ঀৢ৴৻ঀ৾য়৾৻৸ঢ়ৢ৴৻য়৴ৼয়ঢ়ৢড়৻৻৸ঽ৽৸ৡ৶৻৻ नगतः सर्मात्रात्रा द्रायक्षात्रा भी मन्द्रा भी या नवरा नक्षा नक्षा नक्षा र्ग्रे यः र्ह्यः रहः वरुषः मृष्यः वर्षः व्रवः मृष्यः मृष्यः मृष्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व वया में दायते प्रमाद धेम सुराय तुर् र द्रा पर या पर परे या है व्या ळ.रन्य अर.ग्री.श्र. च्ये व.ध्य रटा व.च य.च यथा च.च व्याह.सं.स्य नवःग्रीः श्चम तुःमवरः। मदः अःदेवः यः केः सुमायः हे केः वर्म देयः नम्दानङ्कता ब्राम्यदान्त्री द्वा अयानवार्यवारानेतात्त्रामुंदा इसरा भारतमा निमान के साम स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप ननःग्रीःग्वरः। मूरःबदःग्रीरःध्यानङ्गानेनराग्रीःहेवःत्वुरः विमाया संदर्भ वा को प्रस्ता निमाया महाया इया मुख्या विमाया स्वासी क्षर क्षर अर। श्रेरा पत्रेर्भ सम्बद्ध स्थित श्रेर श्रे विनव नह्न दर्र दर्भ तत्वा सुवानर सहया द्वा नवर । द्वा दे के स् अवतः न्याः यः वर्षे न्य वर्षाः नक्याग्री सि. हेव. न. इवया लदर वहता ख्रेषा न देखा " देवा नरा लर "म्राम्याक्षेत्रम्यत्रम्यत्रस्यत्रस्यम्यम्यक्षम्यक्षम्यस्य महः छेतः छेरः हैं 'तृर्दः दे 'कॅ' कॅं 'कॅं 'कॅं गृत्तु' गुँता पश्चरः ग्री 'कॅं न मबर्मान बर्मा देते पूर्व क्षा पर्वे बला श्रुणिया ग्रुला हु . सदे श्रु वर्षे अरु वर र् निव्यान्त्राष्ट्राध्येत्रत्यास्य प्रक्रितास्य स्वर्धितान्त्रे विद्याप्त्राच्या मक्रमाश्वराता न्यान्या न्यान्या

स्चिषः मुब्ब सरः वस्याः न् मृषः देशाये पराः न् वः पविवः प्रः केवः रेवः मः ळे.र्टः। ^{शुप्तः} क्ष्यः दे द्र्यः द्रवः द्वः च क्षः च ग्रायः च ग्रायः **वृंग** स्रः स् क्र्यान्या श्रु. दर्व या वे यया श्री मायना सं स्कु. मजमः कृ. **ह्रान्यः व**ि परुषा सदी नश्चा में दायदी नशे ना में वा निर्मा दिना निर्मा सना निर्मा दिना निर्मा सना निर्मा सन निर्मा सना निर्मा सन नि विश्वयातान्ता वि. हिरानार्यान्तराष्ट्रयायाय्य गृहेयासी व्यन्तर्या यदे न्वे क्वर्त् त्त्या श्रुरालु न्वे राये पर्या श्रुरात्तु स्वर विषः मृदिः नृगनः र्ष्टुः ग्वाचा कुषः **र्वे**ग कुषः कवः ने **. सं . हे . व्रे**ग हु . नृतः । न मार्थः श्रीरः यदः इवयः इवः कुयः हे । सुरः सुः श्रूषाः न्वः याद्याः द्वरः चुवयः । न विराष्ट्र क्रयाहे विष्टुराया निविधाया निराया केवा संदेशन ग्राया स्वयं मञ्चरके स्राप्त वहिवानु सुला ने मञ्जून हेव व सेला ग्री केर नु मलुर लावताञ्चपतायान्वावायान्याञ्च ताञ्च ताञ्य ताञ्च ताञ ताञ्च ताञ ताञ्च ताञ ताञ्च ताञ ताञ्च ताञ ताञ्च ताञ ताञ्च ताञ्च ताञ्च ताञ्च ताञ्च ताञ्च ताञ ताञ्च ताञ ल्रायात्र्रेवानुत्रायायात्रहेवात्रुद्धान्त्रीयात्र्यात्रकृता कुल क्राने के के बेद ज़्दा नगरे हैं द केद रागरा रोत हु हिंद सग नम्पानर धुन् न्नर न्वर । जर्म तहेन न्वेय न्या द्वारा हुन स्था भ्र.य.प्रस्व.र्य. रहेव.र्य. र्या.र.च्या.प्रय.र्या.प्रय.देवया. खर.चंचर.चे य.परय.देला "① ष्याचयतारा क्षेत्र.चूर.घषु.च येषः खुद्रःचित्रवाद्यादहेत्रची्राम्ब्राम्ब्राचेत्राचक्रांच्या व्याद्राप्ता ब्रह्मन् श्रुयः न्सुरः सं निव त्यान्ति र र्थयः वता श्रुः स्व तत्या प्रति या पवि व

^{🌣 🛈 (}ধ্যাবশ্দেধ্যাখ্লীশেষব শ্ৰুব্'ৰ্শ্নিশ্নত্ব'21—23)

र्यः वह्यायास्यः यहरः

ने वर्षा मुला स्वा ने सि ने वर्ष के निमा व मारी मुमा सिंवा स्वरा इ.कु.बाधेयाचर.री.ज्ययाचयाची.रीज्यानेरया भूरा। वहर ता इया बरः नदः के दें व्यक्षरः के नः नक्षा विष्ठ्वरः के दः विदेश निवेरः हुरः हुः " बर्दरम्रायः हम् पर्वा प्रमान् विद्या में दावि में विद्या में विद्य नवरः चर्षः लवः द्वा कः श्रुरः वि चल् नवः नगरः केरः हुनः परे हा नः नकुः नकिन प्रतिः स्थानकिनः तान मातः सेनका प्रता हितुः खया प्रत् ग्रीः काः वयाने सं हैं स्वा श्वरा गुरा यहे । ज्या वया है। जू त्यादे स्वास्य स्वा म.बैर.चेन्या स.६.लपु.च्यूर व्रियःचर्याद्यादावी.युर्याची.पह्रद त.बैथ.भूट.। र्धथ.बंदर.बू.श्रु.पंज्र.क्ट.ज.बीथ.श्रू.पंज्रपान.लूट. क्ष्याल ध्या स्या हुर विर । इ राज्य देन वर्षा हु यादी हा वर्ष या क्ष लुवी र.क.बक्रुवे श्रिलाश्चेर.कु.र्धर ब्रह्मांवर पक्रूर झर खरे. त. पर्वे व. वातृ त्यते त्राव्यते वळ्या ह्या तहाया तु च क त्यते हि त्या त द्वा देवा या । तर्न वावतः न्डेन् हु वाक्ष्मा हु याद्वी तर्दन हुन् हु खारा निनार हून ग्री त्या देव छेव र पे भीवा विदेशाल र भ्रा के प्रेंग हा सर गया वया है। सं क्षे तेर पर रहर मी खु केर रूर बढ़ बारु : क्षे रायर है वाववा के वामारवा नवरानरायळें न है तानि रेर विरायर तानि राये ता है र खेन देर है न विराये ता

^{🌣 🛈 (}इस.वर.पद्य.व्रीट.यवप.वृत्.वृत्.वर्य.वर.

ৡঀ৶*৻*৴৶৾৻৴৸ড়ৢ৾৾ঀ৾৻৸ড়ৢ৾৴৻ৠ৸৻৸য়ৼ৻৸ড়৾৻৸ द्रश्राह्मरानवदा ञ्चारा हुना यदे छ या यह न न न न के न देवा त्.कु.ष्रवेशः वटः री. तुर्याः वैषुः वर्याः पर्थः यधेयः वटः यर्द्रः वेश वे. दश्यायेन्या परामश्चेन्य यान्य दर्। जुलान्य स्तर्ये केरायहा यार्थार्थित्रम्म क्षेत्र क्षान्य महत्याया वर्षेत्र या कर्मे वर्षे महत्या वर्षे तहसार्गरा शे.मेळ.च.रंगर.मूपु.ह्या.चेष्टा छे. कृ 'बुर' ५ बे थ' ग्री 'र्घर' र्षे ग्राया ग्राय क्रिया ग्राच च क्रिया ग्राया क्रिया क्र नवरः। " किवानवायः वरः। दे ववः वि चेनवः क्रीः अर्ह्नः क्रियेः ग ब्रीमा इसका थेनक धरा शुषा प्रसुव कि । "ग् पि विवाल्ला परी प्रमूप য়ৢঀ৾ঀ৻ঀৢ৾৾৾৻ঀয়ৼয়ৣ৻ঀ৾ঀৢয়৻য়ঀৣ৻ৼৢয়৻ঀ৾য়৻য়ৼয়৾ঀয়৻ कुलान्र क्षेत्र केणात्र स्थलायते केत्। यने मा ठतात्र सा अपन्य स् লব.র্থ.ঞ্চনথ.বঞ্জী ২.৯'ব ২.বস্তু.ন্তুনথ.বগ্রুখ मॅद्राक्षक्षर्येते. नग्राचार्यायायादीः भुः संनः ठरः हुव्। क्रेरः सरः स्रे नह्रवः भुनग्र बै[.]ने**८.६८.५**१.**५.७८८.**लब.ता सं.लब.घ.च.ब.ल४.के.५५.५५। हिं. ख. मीर. जी स्र. च खे चे था लबा च चे . कु . मेर. हिं. ख. स

① (বর্ষাস্ত্রম:অরব:ক্রব্র্ন্ন্রম্থ:25)

विवायान् विवायान् विवायान्य के स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वय नगरि:मुद:ह्रॅंद:नदी सुद:हं:राग वरः यायाव के के किर श्वाया में बर्गा विषया परे में या वि দ্ইব্য मःमः तेरःश्चः बर्ळणः न् व्यवः घरः घरः घरु व्यवः यः स् व्यवः न्*रः* । क्रेद्र-चें तें त्र्राच्यार्गताम्युया क्रुन् क्रेन् अन्। क्रेन्टा चें ने स्बाया ग्री व्यापन श्रिया स्वरा ह्ये विवय सर विराधित । पि.क्री चल. ผ.>ัฐวิ.ชุลไชเมียงภูพาฐานะชากฐาฐานานขึ้งเข2ิง. नन्त्र। तञ्चलःश्चरताः वर्षः केन् भीरायनः न लुगलः श्वरः धन। **लगः** न्देन'पठन'ययान्त्रा'ळेरा'न्सु'न्य्र अर'दर्भुर'स्रु'' । श्वाळ व्यापाय दे के बार के बार के बार के व कुर्यथ. र्-र. चें ट्रू. ज. श्रूबाथ. ब्राचन स्ट्रम् वाचन क्रिया क्रिया क्रिया वि । क्रिया क्रिया क्रिया वि । क्रिया शुःन्र्लाश्रवः व्रवः वर्षुः प्रदेश देनः भिः देनः सः क्रेनः यञ्च दः रोनः श्रुः बर्धराष्ट्रमान्तरावञ्चला ने ब्राकेन्यावावञ्चरावरातेरा ब्रेट्ला इ.न में बेब्य.स.ध्येम्य.सक्ट्रेंट्र. होव.ग्रेंट्य.होट्र.नया.होव.टेंट्या चेबेट. क्वॅं'सुव'ळॅगवापत्तु'ययापक्वुन्'येगवा गर्ने'यम्वापर'व्याह्यायर' मुळापायदापने लेवकाप १५ विटाया ह्या गुराये राष्ट्रे राषा गुरा नदे से मृंग्ने कर नक्षेत्र न रूप नक्ष में हे दे हिर विर विन व सुर नग *ঀৢ৾য়৽৲ৼ৽৻ঢ়ৼ৽য়৽৸ড়ৼ৽ঽৼ৽*৻ড়ৢ৾৾৽৽ঢ়য়৽ঢ়ড়ৢ৾৾৾য়৽য়য়৾ঀ৽য়ৼয়ৼ৾৾ৼ৽৽৽৽ 208

र् "ावियान्दिन्दर्ग्रिन्। देते श्रे केद्रा देवा देवा स् पश्चेरयाने क्रियाग्री पिर्दराया पश्चिर पर्दा निवया खेंबया केवा के दारादी वरा तु। तहे नवा अन् न ने दः स्वाम हे ना सदी नवे ना श्री वि तस दवा वर्षे दः ये नः विनयः रोवः ग्रीः यह्नः यहें वः यनः वर्षे नः यहं न। देन श्रुवयः वर्षे वः यह छवः सयरा ठन् : यद्वित : पा यक्कें गा नमा। कुला कं माने : वें : में को । व्या निवा भीट.चमेष.भूषे-ल श्र्वाय.चषु-के.शुदु-प्र्याञ्चययान्यानीय.शु.विच. तपु. न्तुराशु म्वयाग्रीः क्षायह्यान्ययान् ग्रह्मान्या छेव धरीः नगरि न्रेर धेन नै सुर र्क्ष के व ये सकेन र सब सबर र न नि ने र वे र र रे र र हुलामञ्जूनाता है। व्यञ्जा वित्राधिन वित्राधिन महामान विवास पश्चर। मूर.षपु.णवायापरीयाक्षे. इया डे. २ प्रवा डि. २ प्राया पविनायान्त्रा निर्दाता श्रुष्तेरा बहुता वाचनाक करान्या नेयामदे ह्या ह्या विया हुन् स्वाया देया स्याया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स लयाया लराञ्चा कुं स्वाद्या छा सु में माराया है सु लया पत्रा म्रिन् भ्रित्या स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वया व्याया स्वया स्वय हेब-क्रि-तर्वेष-तर्वु-तर्वी-तत्व्य-तर्व्यका-वर्ष्वे-त-तह्नर् हे.पर्श्वय. त्यन्य माञ्चन वामङ्करे क्रात्यर्या मृर्की वृष्ट क्रवा वि स्राप्त न्शुवामी क्रिक्षे वे वे व्याप्ति न वित्र न वित्र में वित

① (বর্ষাশ্রীন'অধন: ক্রব'র্ন গ্রাম্থ:25-26)

ब्रुं म्ह्रम् व्याप्त त्याप्त व्याप्त व्यापत व्यापत

ने व्यापञ्चर अळ्या श्वाप ने व्यापञ्च प्राप्त प्राप्त

① (দেশ সুদ অলব জব শৃন লদ্ম 27)

② (本共、本内文、景大、中美大、大中、共和、111)

विनाःस्तायाः स्ता विनय प्रायहर्।

विनाःस्तायाः स्वाय प्रायहर्।

विनाःस्तायः स्वायः सहराने द्वायः प्रायहर्षः स्वायः स्वयः स्वयः

ষ্ট্রী.অ. 1220 জন্মনানুদা "বছমাইন্র প্রাক্তা **ग्री-मुल-दॅरा-मुल-दक्ष्व देव-दॅ के में ८-५वेल-ग्री-सुगवानक्रेट्-स्-र्-ा** इरामकामबर् हराया हाया बेका प्रति न में दाई मायर मह्न दाना दाई दा के.चर श्रोष्य. त्रं र. श्रोष्य. चर्च य चरा ने श्री श्राप्त है श्री पर ने प्राप्त र र्टा र्वु अर्द् पठवा गहेंदार्मेवा कुरावाद सेववाय स्ता 周·四の·周·四 のに、中·冀·四下、大口·日日 2001日、雪丁·劉丁·四万下 **₹** वन वनवार्द्धरास्य म्चराळेवार्यानवार्द्रा 뷫.켈ㄷ.ㅗㅁ.ㅂ급**¤**쇠. पः चुनः ञ्चन ञ्चे र व्यव्यान के त्रा प्राप्त के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स र्गे श्रॅरार्ग र्ररानेवाळेवार्रा र्गे श्रॅरार्गर्यराञ्चर परुषः≝्रायन् तः म्वरायनः सं सं राख्याक्रया ग्रीया **सर्वे न में** प्रवाशी गार्ग र्हेव गवरःगचरःग्र**ाहेग** जुलःरह्नदःश्चे'र्रःष्ठरःयरःयह्यःयर्गेवः त्त्रः बति नेदः तुन्नवः हैं : बः बेदः यः द्रनः कुषः यदः वदेतेः द्रेष्टे दः द्रयः वः तुः <u>ढ़ॼॗॸॱॸढ़ऀॱॾॕॴढ़क़ॸॣॱड़ॖॆॴॱऄ॔ॻॴज़ॺय़ॱॸऄॗॴॱॺॕ॔**ॸॱ**ॴॾॕॴॱॻॖऀॱक़ॗॴॱॺॕढ़ऀॱॱ</u> न्बॅरलामबेन् न्नु का बेन् पार्श्ने दानदे सर् स्वाला सहत न् वा ता वस्तान ঀ**৾ঀॱ৲**য়ৢ৽য়৾৾য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽য়ৼয়য়৽ঢ়য়য়য়৽৽৽

मरःश्रदः।

अतः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः

श्चै-सः 1777 ब्र.व.सः रसुरः नवरः ग्रीः रग्रीयः क्रॅबः श्वनः वस्या हूः त्यते त्वः यः यहँ गः न शुरायः वे शुर्दे गितः पत्र पत्रे वः हैं गतः ग्रे वं स्वापः । । न्ने ता कु ते व्यापक सं राम हा के दा रे दा से के मिन दा लु ते के क्षा मार्ट राहु ... बर्गल इंट्याम्बर्टा वैट्। ज्ञानाम्बेयायदे वृत्रात् ज्ञाकेनयामः चश्चर-वर-वगाद क्षेत्र-र गाद पाते गुर-पहे कि गाव अपन् व्याप्त गाराराः तक्षवतः वुर गृहें दः गृवदः दृदः। इः तरः वेनतः वृवः हरः ख्रायः हरः **ৡ**ঀয়৾৾৽ঀয়ৢ৾ঀয়ৢ৾য়য়ৢ৾য়৺য়ঀ৾৽য়ৢয়৾৽ড়ৢ৾য়৽ঢ়ৼয়য়৽৾য়য়য়৾য়ঢ়য়ৼৢ৾য়৽ঢ়য়ঢ়৽৽৽৽৽ र्चे प्रदेगवायत्विताः स्वावान्त्रम् । स्वावान्ति । स्वावान्ति । स्वावान्ति । स्वावान्ति । स्वावान्ति । स्वावान क्टि.थ.चशित्राद्भव केल.री.धै.लपु चि.व.वाकूच.व्यय.बाद्वा.वाद्वा.वाद्वा.वाद्वा.वाद्वा.वाद्वा.वाद्वा.वाद्वा.वाद्व र्ह्रेल.रे.बु.पर्नेथ.श्रूबय.पश्च.भ्रूर.ला तेष्ट.कुथ.रुथ.ग्रू.कुय.वेर.**के**य. पश्चिम्प्रे प्राप्ते कुनयः पञ्चितः सूच यः ञ्चतः नृत्यः कवः च्युः यः दह्स्ययः छ्वाः नहः स्वतः *ৡ৾য়*ॱ२৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾ঀয়ৣঀ৾৽ঢ়ঀ৾৽ঀৼ৾ঀ৾৽ৼঢ়৾৾৽য়৾ড়য়৽ড়ঢ়৽য়ঢ়ৢয়৽ৼয়৽য়ঢ়য়৽ৼ৾৽৽৽ श्चिमया अमूचा श्चिता नारु र नारा म्या श्वा नाय अस्ता नाय ता है। 551 त्या श्रूपा न्या हुना विश्व र ने विश्व विषय विषय विषय विषय **र्-दुकाशुः नृत्रेक्राधरः है ग्रान्ते : स्वान्हेक्राव्हेक्राध्यान्य ग्राह्मरः ब्राह्मरः**

① (দেশ্রার্থিন অর্থ: ক্র্রার্থান্ন আন্ত: 64)

ଶ୍ରୁ·ଘ· 1777 ଘ୍ୟୁଗ୍ର-ଘ୍ୟୁଗ୍ର-ଘ୍ୟୁଗ୍ର-ଅନ୍ୟୁଗ୍ରୟ ଶ୍ରିୟ-कुलाळमाने संन् वेदान्त्र सुरान्ने ग्रामदे स्राह्म सरावरा ॅंप.पंडंथ.र्धेंट्य.र्थे.र्ष्टे.पर्ह्रेल च.र्ट्टा द्वेंथ.बोट्ट्रेंट्र.ल ब्रु.सं.ट्यंत. यूप. ह नियान् धन भेवातुः स्वाधि सेनाया चुरानरा केया हेरानहेया हेवा बानव वर्षे ते दे व केव की के रहा रहा व लया पा हे के किया के पा के रही हैं न्त्रम् वत्रः द्वातुः नृष्ये दर्शाः यदेः अशुगरा नर्षः तत्तु त्यः श्रेश्च दर्शाः नरेः त्रतात्रामी मु र रूरा मेर्रा म्री र म्री र स्वाम है राय है र स्वर्म ब्रह्मर्।वर्।वन यानमु ब्रह्मर्री या स्ट्रम् नेवार नुरक्षित्रा मञ्जूर ॻॖऀ*ॺ*ॱॸ्ॺॕॸॺॱॾॕॺॺॱॸॸॱॺॾॕॺॱॾॗॣॺॱॸॾढ़ॱढ़ज़ॕॸॱॺढ़ॱॸॸ॓ॱॾॕॗॺॱढ़ॖॹॱॱॱॱॱ न्राया नृत्या विष्या स्था सुरा स्वेत स्वी सुन्या स्वार स्वार ने निर्माद । । । । **予**4.口器下刻 ग्राया हे दे हिंगा ब्राम्य या क्षेत्र ग्राय प्राय ॥ १००० त्रिंत् वहार्यः "पग्रतः ह्रेवः कुषाव्याः मृत्रव्या षयः पवः इयः गृहे राः पञ्चर। गृवयः पञ्चराः स्थः दशः र छ र राः में राः सः चर्वां च. क्ष्य. चर- क्षेत्र. चेत्र. चेत्र चर्चा क्षेत्र. क्ष्य. द्वर चर्चा केव्य स्

① (AENBELABA. \$4.54.024.28)

भूर.गु.म्बर्य द्ध्यायम्यान्यस्यान् ग्राड्यान्ययाम रहा। अहर ञ्चिते द्वारा निर्मा भी देश विष्य देश हैं के स्वर्थ के प्राप्त के बॅद्र-बाळेब्र-घॅराविंद्र-बी-कंब-हु-घॅर्-ग्री-यर्श-दॅव-ग्रेर्-बाव्ब-विनवासरा न्ना सा (अदाक्षुरानेरा) बह्नवादवा क्रीवार्या स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स श्च. य न म् त्व ताया में मा अवे न में मा ताय र या राव प्राया हे ज्ञा या नम *वैद*्ञु व ब्रेव वदर में र बदे ज्ञु देव धेव म् ने य संस्क्रिण ठे य बु य · · · · नगान तथा ने न त्या ह्या ने दान न दान विषय । व्याप विषय त्र्नाम्बर्धान्त्रः द्वाप्तः विद्वाप्तः विद्वाप्तः विद्वाप्तः विद्वाप्तः विद्वाप्तः विद्वाप्तः विद्वापतः *ज्वःचन्दः* ॐग्यःयद्रः वेशः येनवायस्यः न्नः यः यळ्गः ववारे गावः इतुवः ः ने न्या कुषा धुवा न वे नवा प्रदे न ने नवा है नवा है नवा है नवा है नवा नि वर्षे अप्रान्ति केर् ह्याः विवयः नहिंदान नवदा विदायः विदायः विदायः विदायः विवयः निह्नवः श्रीतः ययः देवः ञ्चन हैल कुं नश्चन व क्या निवास निवा न्दः इत्यानवै न्दरः भ्रेषा गुः देवाया नङ्ग्या " ७३ वादिन् या निवेदः <u>बिंदः वै: बेंदः बलः केंद्रः तुः वद्यलः वङ्गः नवदः वदः वदः वेदः क्रीः श्रेद्रः श्रुंदः त्रुः यः </u> ब्रद्रमानुबायाने विवा

सदे.वियायायाक्रवाद्वीरावियाक्चार्यादे स्वायायरार्वे स्वायायरा व्यूरा

① (বৃশ্ব নর্বীর স্তুর নেইব স্কৃব ক ব্র নের্ব 296)

⁽वृत्रः नग्नुः प्रुद्रः त्तुः क्षेत्रः त्रः क्षेत्रः त्रः द्वः देवः देवः वृत् । वृत्रः 320)

यः तर्रः मृदः यदः शुवान्द्रः वदेः कृष्वेषायः यदः ग्वयः र्ह्वयः स्र ···· *षर-*५५ मार्थः क्रेंन:ई:नेर:वक्षुब:दह्दि:द्वययद्वेंत्र:ग्रुषा "ददेः भ्रमत अयःमवः इयः मृतेशः र्यम्यः कुः **न्यं वः इययः** कुः शुन्यः **छः म्वः** छैः . . . गुँवःयः न्गरः यः न्दः। वृः सः सः स्वरः सेन्ः यः गुँवः मनिष। मुदः प्रमादः र्नाराम् राम्यान्य वित्राच्याः क्रियाः स्वर्षाः गुरः *रे ॱ*रॅबॱक्षरॱडेर्*ॱर्वेषः* अधः यदः ग*नेशः* दयः ग्रुरः ५**रु** गःरॅबः क्षरः ५**रै**ः भ्रम्यः प्रमान्त्रे । भ्रम्यः विषयः विषयः विषयः प्रमान्ति । विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः वि पञ्चतः तर्ने : ञ्च अप्तान्त्रान्तः स्वरः श्वाः श्वाः न्त्रान्त्रान्ते वे । यहिनाः श्वें दः प्रते वे । यहिनाः श्वे बह्र-न्ब्राया चुराराम् नेया कु व्यामी सु रदाक स्यापार रेन् गुर हेदॱ**८३॓लःकेत**ॱळलःशु**ॱ**शुरःधदेःषःअळंदःसःदेन्'शुरः।"७देलःनशुरःग इयाधरावरा। "वॅरायदे सुयादे पराग्नेग्या ব**র্ শ**:ঊ**৲**'। यदे अर्केन् ह्वेब ह्वेया पर जु ह्वा अपनि विष् म्,कु,चक्य,चब्रूर,चर्। मूर,चयु,चम्य,चबर,च्। सी.ल.म्बर,

① (বর্ষ খ্রীশ.অঘব. ফ্রব. ধুনা. মিথা. 80)

② (ব্লব্বের্বি:ভূদ্বেইন্ন্র্ন্র্বে:297)

श्च-विवासासुवान्तरः क्रेव-श्च-वरुण-वदरा क. इंश्या. रीपा शुॱ५५**,यःनः** मुःबद्धद्वः र त्यानुयःचायाः यातः श्रुवः द्वर्यः पर्द्यः पः मुःकरः ॻऀढ़॓ॴॱॺ॑ॴज़ॱढ़ॱॱऄॣॸॴऽत्रैत्ॱऄॗ॔॔ॣॱऒॗ॔॔ॣॱॴज़ॸॱय़ॱढ़ॕॱऄढ़ॱ ज्ब दगः दवदः द्धंयः विषयः ग्रुदः श्रेषः वेषः वेषयः धरः वर्देषः विदः। देः वयः भृतः चतुवः धते र केवा च दे श्री श्री श्री श्री श्री श्री र हे र वे कॅ 'बेब' 'ड़ब' वर्धे**ब'** 'वर्ष' ग्रेब' तर्दे ग्राथ' ग्रे 'कुव्य' यर' र्द्राटर' पञ्चर । য়ৄ৾৾৾৽৸৶৶৻ৠৢয়৽ঀয়ৼ৽ঀৼ। য়ৢৼ৽য়৽য়ৢয়য়৻ঢ়ৣ৾৽য়ৢ৻৸য়৻ৼয়৽ৼ৽ २ ब य . केर . की . खेबाया पश्चेर . श्रॅंबर . प्रवास द्वर स्व प्रवास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स श्चेत सर पहन श्चेर सर मु मिर प्रयेश मु न्या राम होता निवार में स्वार राम स्व बेयानग्रदायेनया " ७वेया र्वान्या क्षेत्राने वयान हुराविरा वेया श्रीता च्वापराम्यरातुः गःश्चेगः व्याध्यराह्मवः कग्यामवरायः न्रा खुॱळेॱञ्चॅनॱत्रेर-तृ ॱञ्चॅ 'पलु ग्रायद्दं र 'परा ळे 'ञ्चॅन 'त्रेर 'ञ्चेर' त्र र र र र र रे 'रे '' त्ष्विनाम नन् चे त्र चुका बैवाम सुरार्च वा नवना कु व्यन् नि श्रेन क्रिना <u>५६ेते श्रॅ</u>रः «कुलः रवस नेवः र्गर के लिंदः » वदः दुदः वदः ५ विंदः धः ॱॷॸॱज़ॱॺॕॎॸॱग़ऀॱय़ॺॗॖॸ॔ॺॱॷॴॱढ़ऀॱॺॸॕॱॹॗॸॱॱऄॕॱढ़ॆॱढ़ॺॱऄढ़ॱय़ॱॸ॔ॸॱऻॱॴढ़ॕढ़ **बु**दे :श्रूपण पर : प्रमण पकुर : ल : हैर : है ग : द्विल प श्रूय : दल : वॅर : दे पला रोरःश्चर्-ग्-र्कट्र-तुःश्चेषा-मृतुषा-ग्वट्-द्रया गृतुर-सुष्य्या-र-द्रश्चयाः ।

① (तह्याम्चर्यस्य स्त. केव. ध्वा. चर्या 83)

ल क्वेत्राने देशनिव नाम्याय छेव यॅन् श्वरा ने व्या श्वरा हैं न् त्र हिनयः भ्रेटः बर्दे रह्माय प्रदयः ह्रमय ग्री-प भ्रेयः मृष्टेबः र् रश्चरः वया । श्वरः मः बावदः मॅदेः श्रेनयः कुः हुं ग्य शुः धेनयः नृ वाञ्च रः नयः भूरः हैः यावदः । र्यते विष्तर्भव संस्नित्र विषय । धर-द्र-द्रमेंव-ग्रे-वायवःमः सः त्यमुन् न्सु र्डा अहं न् हेरा प्रन्मी अरा न्वा यो वर्षा वर्षा श्चिन् श्चिदः नवदः वयः नविदः नीः त्या सम्बद्धा तः न्यः 최정**적·**지·기 र्शराञ्चारवायाय ने स्वत्यः न् दार्थदान् वदः वरः শন্তব দেশ सं चुरा ने ते व्यर विर " कु व्यर वे परा र धेव या न्रा बर्दन हो। ॐॱ**वॅग**ॱसुरःराद्यायमाय व्लॅब्दर्सः कुःवद्याद्या राज्यस हुबाके विदा $\omega.gau. \pm \omega. \pm \omega. \pm \omega. \pm \omega.$ $(\pm .gu. \pm .gu$ **के क्षेत्रक २.०८.वि.** प्रदेश की. प्रदासी ताला पर्दे के दे विदास के बेल आ [मनार्श्वरायान्वर्याते मान्याराकेर यहन्यया मृत्ररावी श्वरक्षा न्दा। न्मॅलरेस्य अन्निम्बर्य देनी अन्ति न् केर केर भा नुस्य वर्ष में न् की मूं र " गरीम-मः इयरा-वरा

बेसाम्बरादवेनः भून्। " ऐकेसाम्ययानदेः "मुःवसायेनसायेनः प्रेवःया

①(ज्ञयः रनवः ऋवः त् चुरः वेयः न् ग्रान्तः सरः ध्वाः क्रेरः वेवः सः व्वः सः व्यः स्वः सः

यक्ष्यः क्री त्या व्याप्तः व्याप्तः व्यापः व

① (वृषः रनतः इतः नवृदः नेषः नगरः वेः वदः धिगः क्रैरः विषः यः नृगः व्यापः विषः विषः व्यापः विषः विषः विषः विषः व

ई-रेट-परुषाता वृत्र वृत्त वृ

क्षराश्चितः स्य वरात्। विराध्याः स्यायत् त्रु विषयः श्रेययः प्रायः केद्र'म्बर्या ७८' बहुद्रिय प्यते 'ब्रिय'द्रया अप्राप्त स्वर्या अप्राप्त स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्य *ॹॗॱ*धेदॱय़ॺॱॸ॓ॱॸॖॺॱॿ॓ॸॱॺॱय़ॵढ़ॱॾॕॺॱढ़ॵढ़ॱॿऀॵॱॻॖॸॱॿॖॱॸ॓ॺॕॺॱॿ॓ॺॱॱॱॱ র্বথ্যমা हे मि या अष्ट्र वा यथा स्तानित वे प्रति की तथा है . लिया *त्रेव्पवेर्'न्र्प्र' केव्यक्षं*ग्वयायेनसम्बेर्'स्र्र'मदेः मर्राष्ट्रेः । । । । बर्ळबराः र्ञ्चे राहे 'त्रु' वाबर्ळेग 'वर्षा वर्ष' रे दे। पर्ग' में 'केव' में 'र्गुर' सॅ'चतुत्र-छुन-धेनल-पदे-न्नद-ङ्गेत-ग्री-भ्रम्ण-पृह-क्रेत् सम्य-ठन्····· बहिद-स-मुल-पिय-ळेद-धॅन-धेयय-मुन-सद-द्वंद-मृत्रेय-मृत्रय-सुग्य-स ने वला में दाया के बार्च राले । कुंत्रातु । यह । के बार्च दा ये के । भ्र.चर.मुल.बद्धव.बर्च्च.च्रु.च्रेच्य.वर.। च्रु.च्र.चिर.क्र.वर.च्रेथा बक्ट्रांषटा या. चवा. रटा. पठयाता. हेव. वश्चिया बक्ट्रा ह्या ग्रीया श्वरात्तरा.

 ⁽বর্ষারীশ্রেরব.য়ৢব্র্ন্ন্র্ন্রের)

सं देते ह्रा पाड्या पदे वराय हा के बादे वर्षे के मद्वारा प्राप्त के स **ॱसुन 'सं 'नल' थेनल' झॅन 'ग्रील' गुर 'दशी स' नजु न' सन् 'तार 'गुर' कुल' नर 'रु'''''** कैनल'नञ्चर'नवर'जुर नहेव'हू'यदे'ञ्च'व'बळॅन'गुर'येनल'क्नेय''''' बह्यायस्त्रत्तु "अप्यापाठव प्रायेष्यया परि क्रें राह्य अस्रावरा "मुल नःइरः अवतः दुरः श्चेनानारः रूपः यह केवा वयता ठरः अधिवारा सहयः। र्मयः र्चरतः में र 'यदे 'मुयः विषः हु 'क्षेत्रयः वयः भुँ र मुरः यदयः ठवः ' ' न्या. भैतः बर्झेट. श्लॅब. प्रै. प्रेन्यः सः प्रह्मा व्याः श्लाः बर्ख्यः वर्षः देवे देः वियः र्गुलरद्वया निवर्नियहतासुर केव संदेशिय मुलर्ग पार ह्व कुषाविष्यापर पर्मित्। द्वाराहायवेषातुर कुषापदे विष्ठित क्रिंट दि बैव-५वा षयायाम्बेया यगाय ज्ञॅब-प्रि-मन्द ज्ञुनः महावा अस्यादे हैं। यम्या (प्रायदे:भ्रावदे:भ्रादे:म्डेद:मं) बद्दार्म्व मृत्या प्रम्यः क्षित्र श्चमा अस्ता देते अपन्य के के किरा वरा इया यया क्वा हुरा र्मात्रीरार्ध्यापरुषार्दा। इयाक्याम् कराक्वार्याः *शुक्ष*प्तकुःस्प्रच्रःक्षॅ*रःन्द*ः। न्नःन्नद्ग्यःग्नेन्न। वर्ग्रद्गःग्हेरः इंदर्जन वहेदर्व कराव करा हो राज्य हो है से अ 회투진.

⁽१६६ नगुन्न नशुर तत्वाक्षेत्र नम् वार्य १४ वा ग्राह्य १४ व

द्यदश्रश्यानमुः मह्यान् महर्यायाः मित्रः व्याप्तः मित्रः मित्रः

ल्र.पर्नुपुः श्च.च.चर्छः च बरः। विश्वश्वातिज्ञः शास्त्र सः स्वायः वर्षः कुव महव के अर र्सर क्षेत्र क्षेत्र में या चित्र वे निर श्रिर पर न्तरळ्टा अर् अर र्वे का की है हार वर्ष वा विवास की विवास "सग रॅग हुग हुरा श्वेरा धरे रारद रार इसरा ग्वर वर्डे रासुद छैगता यायाम् द्वा विकास स्वर्धाः विकास स्वर्धः मित्रा स्वर्धः स्वरंधः स् बन्दरम् व क्रवारा वि न्वरा नुतार् दर्दर प्राप्त क्रि. मा स्वर प्राप्त प्रम्पता म्रीम् त र्म यं र्स्ट्रिंग में क्षूर्राया सर्मे रापि तह्या कम्रास्त मुरादा र्मूर्या विवयःश्वेरः ह्यायान इर् प्रयश्चिर हिर हिर प्राय स्थ बर्ग्य है। इन्ह्या में बर्फ न्रायक राम्ने क्ना हिरा देंगा मुल'विद्यत्र ग्री'तहेन्द्राचिल'त्रेन्द्रियासर'स्वासर'स्वासरह्या द्रदर्। द्रवतः क्रुकाग्री रत्नार्श्वर पर्श्वमा अर्था स्वास्म म्हार्य स्वास्म प्रमा क्रिया <u> र्नरःअळॅग्यः ग्वरःङ्ग्ययःग्रेयःर्नःमतुग्वरःहूःश्रेरःगृत्रेयःद्यःभॅरःःः</u> बर-श्रुव-श्रुव-स्याप्तर। ग्वयाग्री-झ-तहबान्ध्या-नुप्तराक्रेयाग्री-मुलायः स्परा सुनाया रहा नया है। करा हुन रहिरा हिनाया रूटा पठता निर्तिता ग्री. ब्री. प्रतर वर्षाया तर्या प्रतिर व्रिष्ट म्रे या र प्रतिया प्रवा

① (यहंबाध्रीर बह्य क्विं मृन् ग्राह्य 95)

वै'दर' च ग' १र' हरे हैं। इ' तु' ब्रू द' के वा वे' ठ' कु न' मा ₹* ह्र.के.ियट.त.क्रथथःह्रट.चर्चर.चश्चेटळः श्रेचळः चर्याचःजय। प्रट.ट्रथः व्याम्ब्रुवाद्याः देव बेदायायवादि द्याप्यवाद्ये प्राप्तवा यर अ. तुर्या वर्ष्य चर्रा चर्रा श्रुर थारे रे ने न्या क्ष्म र् में या प्रेरी पर्मेर पर्मेर था ... ङ्गु देश रे या सरा श्रें रा प्या स्था न स्था বর্ল:বুল:বু:নই:নহ:গ্রনল:গ্রল:ব্রক:শ্রহ:। ৸ব:য়ৢনল:গ্রু: बर्दरक्षेट्र-तु नु म राजे महिलाग्री क्षुंज्ञानल ग्रुवाया या शुन्या या शुन्या या श् के.र्थरथ.हीर.वेथ.त.कुर.लूर.र्व्यथ.थ.वि.चया पहंत्र.रवेरथ.बूर. बःकॅबःग्रे:मुयःपॅदे:वर्षेदःययःबर्धद हुयःग्रे:व्नयःवरेनवःनरः वश्रुरः चर्यायाः अर्वाह्य क्रवायाः नृत्याः नृत्याः म्याः इवयः र्राम्बुर् ध्रुवायान्ब्रिया श्रुराग्री विवा ररागीया ग्रुया पार्रा वी श्रुरा व्य- व्य- प्रते व न रूट इसका है दिनका पर्व कर के का ग्रीका ग्रीट क्रिंग यर-नगव-च इका छैव-नद्द-स्त्रा म्वव हे-न्यदका छैदका वा नद्द्वरा मृतीम् अवरः मुर्केन् 'तु ' अ' र्राटः नदी रद्दः वरा में दः अ' अकेन् ' र्षेवः য়ৢ৾৾ॱৠॱ৻৻য়ঢ়য়৾৻য়ৢৼৢঢ়৻ৢঀয়৻য়ঢ়৾৾৾৽ৠৢঢ়৻য়৻ড়ৗ৾ঢ়৻ঀৢঢ়৻য়য়৻৸য়৻ৠঢ়৻ यते ततुत्र या क्रेन् न मृत्र वा वि म्या स्तर स्तर मित्र मित् *न्*रा व्रिंत्र्स्यवायाञ्चनवायह्यायेत्र्यायद्वेद्दवायाञ्चेत्र्रे वायञ्चेवा " **৾৾৳য়৽ঀৄঢ়৾৾ঀ৴৸৽ড়ৼ৽ড়৾৾৾৽৸ড়৽য়ৼয়য়ড়ৢয়৾৽ঽড়৽ড়ৣয়৾৸য়৽ঢ়ৣ৽ৼঢ়ৄ৻৸ড়৽য়** नबेर्'न्सुर'तह् गृ'अ'न्मॅ्य'य'र्र'। वद्यर'दर्ने वय'ग्रुर'वे 'दहस' म्राम् के विरंगिर विष्याग्वर पार किरा ग्रीया थर। "वर्णी श्रीर देव

① (বর্মান্ন-মনব-কুর্র্ণ-গ্রম্থ-106—107)

कुलारवला" बेरावदे वदावरी क्रेंरायवदा छेवा ठे क्र्या वदा घंचा दतुन ब्राम्यायाः स्टामुन स्ट्राप्त प्रमान स्वर्थ स्व "निवर् अर् अर र्वे व पर रे प्राप्त अपना अर विकासिक सारव रे वि नै'म' इसरा वरा श्रुपरा सर्वे व सुय निम्म स्वरा ठन् सहिव पर में र सा मन् मार्च केव स्वी माव माहेव हैं हरा हमा मह अ ह रा मा है मिन् ही र्यं व नगर स्था भी हेट व या में ट या के व र्यं र मव या ई ता ग्या हे . स्या . शुमःमरःमहेवःदेः श्र्ररःश्रीःविमःद्युदःदरः। रस्टःयहण यः छेदः न्बेगल वे कॅन केन सु नु न्या वे कर हुन केन ये न्र । चल्नायाति अयानव ग्रीनहे क्चान्तः श्रुवायावरः भ्रवायानवः र्षेण्या मुर्ति । सङ्घा मुर्ति स्टान्य राष्ट्री द्वा स्टान्य व शु. क्रंथ. कु. पंग्रेर्थ. शुर्थ. श्रॅर. विश्व थी. पंग्लेर. श्रेषु. योषे य क्ष्त पंग्लेर. पर महेव। विश्वयावितानिविदः विवशः विवादितः। हीरः विव श्वराक्ष्यः श्वरा दनदःवी क्रेन्ने नरुषार्श्व द्वा इवा द्वा वि वि वि वि वि वि वि बेकार्यः प्रमायः द्वैषारुष् वे स्वैरः सङ्गे : कृतः त्यक्षः चुः गर्वदः यद्यः दः द्वैषः । द्धर-स्-ठव-य-प्रम् नेयासुव-ळ्यायान्रा यास्-प्रहेव-प्रहेव-द्वास्य मुला अराम्बदातम् कृराच्याप्तरम् कृराच्या अंचयार् रे.च.प. ८ व. २.५ सं ८.५ ६ व च्या च्या चया हु. खे. उ. के चा नया. न्यगः दे दिन् ने नर्व तार् दिन्द तुन से दिन से ने तार हिन न हिन् से न निर्देश्यान्त्रा वार्ष्यं स्त्री स्त्

① (ব্ৰব্যবিটিইন্নেইন্নিইন্নিইন্নি)

ঀৢ८·৸৾৾ৡ৾৽ঢ়*ঀ*৾৽৸ৠৢ৾৽য়ৢ৾৾ঀৢৼ৽য়৾ঀয়য়ৢঀ৽৸য়ৢঀ৽য়য়ৢঀ৽৽ वश्यानविदःवियासराव्यः विष्ठः क्रिन् विराध्यानः न्दा विराधः विष्ठः म्बर्सा परुषाक्षा महिषाक्ष्या में मानी विश्वषा मुर्हिन सुर हुन हरान र्रः कुरः वा वानवा सुः वानठ वानवरः हेरः देः वा सरः रूरः कुरः त्तृत्तु नहरावेत्। यादवायावया ह्वाक्त्याव्यायायाया । *ॸॕॿॕज़ॱॾॺज़ॱॺॖॖॸॱॺऻढ़ॕॱॾॖज़ॱॸॖॆॱॾॖ॓ॺॱख़ॸॱफ़ॕॱॹॸॱॸड़ज़ॱॿॖॆज़ॱॺॖज़ज़य़ॹज़ॱॱ* कु'र्टः। श्चरःहम्'मुबःविवायःवेर्-रेगयःवे:ग्रेन्-कुवे:वाद्यवः वर्दे**वायः** र्यतः नवरः क्षेप्रनादः **ञ्चेत्रः स**्थयः स्वनय च्चे : क्र्रः च्चः च चुर्। धरेः वरः खेरः । त्रिरः पः परुषः वेषः **कः न् ग्**यः पवेषे वे श्रुष्टः पः पर्हेन् । यदे । वृदः य**दः । यदः** करा नन्दानवे सुराक्ष यरा दुरावेवा "अवार्य राज्य हेरा हेर मॅंन् अग्रॅं व में वेन्न्ता मेंन् हुन या कंव र्यन् केन् र्यम् राम्य निन्न व वर्ष निविद्यान्ति । स्वर्यान् स्वर्यान्ति । स्वर्यान्ति । स्वर्याः देरालयानव नदेशावरानराया गुनामर नरा गुन्य स्व 79.75.1 *नु*ॱक्ष्वॱक्रुकःग्रेॱक्षरःक्षयः कु**रःथेनकः नृष्यः क्ष्यः नृष्यः व विवाग्व**ाद्याः म्। सरः पश्चिरः थरः । अयः पदः महितान्यः पर्वयाः व । तिवारः । न्दः स्वायः । न्द्रितः न्द्रायहर् त्र्नित्र न्द्रितः विद्यालयः विद्यालयः मवं नहिषा ग्रेका के हे ' ने ' हे न ला महे ' न वका का महार वह न नि ल्लं न्वाक्ष्राचार विकामर्ग्या हिता है ता की मिता वा वा वा विकास व नगत नश्चर र्रा श्चराल में राष्ट्र यह के या दे हैं या रहा। से अपने से

^{🛈 (}न्यव निवेत हुर निह्न ने न रेंग 414)

क्षयः वियानः न्वरः। ५५ विरान्ति न्वराद्वयाने म्ब्रिराश्चरः त्र कुष द्रव. मृ. कु. च वि बाया क्षेत्र ये. नु च या. सू व के. ख्या. বেশবা न्दः हे न्नु य द्व तु विवयः हे न्द्रेयः य तु यः न्दः ख यः न्व तु व वः यः य धु . वेद . क्षेत्र . श्रु या स्वास का क्षेत्र समय या क्ष्य . सम्मान वयानकुषानदी मूर्यपार्ट्स व नेव हि क्यापा स्या हे जिला ग्राप्ता है कुन्य राम्या देन स्थाय कवानु या यहरा मार्य र देन यह नाय दे हे वा यह स सुन सुन सन्तर सन्तर सन्तर वर्षा वर्षा वर्षा सम्बद्धा सन्तर सन सन्तर सन्त मॅंर-वर्ण-प्र-ळेव रेव पॅं-ळे-न्र-हे-न्न-याह्य-मृष्ठेराय-न्युर-ग्रु-व् मबत क कर्मा देव में केदे खुन से हार निर्मे न खुर है निर्मा नः इवनः वर्षेत्र वर्षानायाः वर्षः सुरः सुरः भेरः देनः सुनः प् इ.थब.भे.ब.र्वा.सं.व.प्रमाप्त श्रीयथा वैब.तप्र.बे.सीप्र.बेर.पे क्रेब्र म्बब्ध रुन् अधिव पायक पनिव तु वे पर्या हुन। हे न्ना या केन्न्रा र <u>लट. सुनया पश्चराष्ट्रेय साक्ष स्वर्त स</u>्वर् ब्रिंश हिन विवास विवास निवास निवास निवास के साम महान मही हैं । स्विमा वेव क्षेत्र रु. दे. स्व. वे र. रु. श्वन वे नला नगल सम्बर्ध सदे सुर सुर नि**ः इयः अवः र्रः इयाः र**प्याः र्याः प्रायः यो द्वारा श्री या या विकासी या विकास स्वर्था स्वरः स्वर्थे या सारा मॅंद्राव्यामञ्जूषामदी म्योत्राधिमान्द्राहेवाळवाह्यवासुताहे म्येवेवाः न्द्रतह्रवाह्रवाहर्मात्र्रात्राहर्मात्रह्रात्वा पत्ववाद्यायार्म् वाहर ञ्चॱवःबळॅगॱवद्यःबह्यःयहॅं वःग्रीःध्याःहेवःबळॅवःग्रेन्-ग्रीःन्देतःयत्यः

① (원연.건계절.네원간,선원和對세松.전화之上,보당.첫세.최본성.302)

न्दः वरुषः क्षेत्रः वहत्यः लुः वः नवदः । "० वेषः न्दः । ने हेषः "कुषः युक्त मुन्य प्राची में दाबि निम्मका ने में दा क्षित्र मुन्य विषय कुर नि-कुय.शक्रम वयान्तरा ह्रिय क्यानानहराहे. हे. स.हे. रूराम वेनरावरार्वेट अस्व स्थातस्य मवट नरमा केवर नेव में द्धेते.द्वेचयात्रः याची.भूरः रू.चयायायायः यद्दी.चवरः वेदः। च वः क्रेदः यक्र्यः **৲**৴৴ৼৢ৴য়ৢ৴য়ৼয়৸ঀৢয়৾৻য়৻য়ৼয়৸ড়ৢৢ৽৴৸৴৽ৼৢয়৾৾৽ৠৢয়৻য়য়ৢয়৾৸৻য়৽৴ঀৢ৽ঀৢ৽ æेन्-भुन-ने-मन्द-भुन-सर्ना (प्रक-केन-न्गु-प्रते-भ्रम्य-य-अ<u>न</u>्यन्य दर्दराषी:न्यॅब:बु:यदराक्ष्मःचहु:न्यर:ब्ब ग्री:ळेब:नेष:यॅन:य:यॅ···· ब्रुयः यद्दे ये बुद पत्तुरः प्रसः । । पर्वदः परे : कुरः ब्रेव या ग्री : केदः यहः ळेब:२ेब:ऍ'ळे'बे'ङ्रर:ग्री**:**ऍ'श्वर:ळेब:ऍर:बॅर:बर:बरव:ऍ'ळेब ऍ'र्द: बह्य तस्त् वह्र चुर हे न्न व क्रें के स्व कर के स्व करे हैं विवा **ঀৄ৾৾ৼ**৾৽য়ঀৣ৾৽য়ঢ়৽ঢ়ৼ৽ঀৼ৽ঀৼ৽ঀয়৽ড়ঀ৽৸ড়৶৻ৠয়৽য়ৣ৽য়ৼ৽য়ৼ৽য়ৢ৽৽ न्दा व सम्बद्धाः व के कुर्त् यान्दाः क्षेत्र है किनवा नही राष्ट्रेनवी म् केत्र देव संक्रेन् म् स्यर यहता कुदे स्या अर हे हि सा अक्रेय व्या वृ.सु.चेर (श.) पर्वेचयासायाङ्गीररानु विनया मृत्या भ्रेचायहर प्रदः मर-बुद-इन् दयावर्षानःबाह्न-वृषायायग्रुद्यापर-क्रुन्-बयाग्री-स-ज्ञर **ळे**व-ऍर-पृष्ठ-ळेव-वयल-ठर्-यष्ट्रेव-प-र्ट-एट्य-र्च्य-येदे-हे-ऍ---इत्रिन्, हुन्त्या स्ट्रिं मूर्या केत्र स्त्राहे हा स्त्र सक्त्र मा हु हिन् व्यक्षः सक्ष्यः मानेकाः वृत्रः वृत्रः वृत्रः मान्यः मान्यः मानेकाः धनान्यः । । ।

① (शुद्धःचगृदःचशुरःदश्चःश्चेग्यःचयःन्दःद्वःभृगःग्रद्यः306)

विषालु न यहं न ने निषामें दायदे नगृदान विषानु है है है या यह पानिषा विचया द्वी विया है। यह केंद्रा रेदा यें के क्षेत्र क्या में मुंद्र क्या में मुंद्र विया महाकार कर र् . स्वयं वया नेया महूर अहर र कुटा र अग्रीया प्र . कुरा प्र वया सिपारी.कुरं पश्चिषः वाह्रं रात्रुः पण्यः भ्रेषाः क्षेत्रं स्रु: ब्रेझ्यावटः री स्रु वाः । । । विवया प्रक्रिक् म्बबया ठर् यहित्या रूटा हे हा या रूटा है ज्ञाया बर्हरा धुःवेदः नद्याचुः सः में रः यः नर् गः यः केदः यः नगः नेदाः सुदः मूर स्वया त्रि. कुष. अक्रूच जायध्य. तथि बाया परीजाया बाषटा स्वया ·····बॅदः दयः शुः नशुदः शुन्यः हे दः र्यमयः द्रेरेयः कयः नययः ग्रीयः वेः । यः दत्यः चः नव्यः। नव्यः हः चवेषः भ्रवः न्यः अदेः चन्यः यया हेन् हीः न्तुदार्थं पत्तु वा दुवे सुराधे रा केवा यदि हिंगा प्राक्ति केव केरा है 'वे पेपरा प **ष्ट्रण्यायदेत्रायस्वाय्यायाचेत्रानुः यद्याः प्रतायदायदास्यास्यायः स्वारास्यायः स्वारास्य** त्री कु अळे भूर वराय कु के बिटा देर वरा कु या शेर कु या निरास कर के स् क्षेद्र-वी-र्न् व-वयय-ठर्-चेद्र-न्ब्यय-घरा स्ट्-श्रमय-येर-ध्रेन्यय-য়ৢয়৾৽ৼৢ৾৽য়ৢ৽য়য়৽য়য়ৣয়য়৽য়য়৾৽য়য়য়য়৽য়য়ৢয়৽য়য়৾৽ৼৢ৾ঀয়৽য়৽য়ৣ৽য়৽৽ रेबारेबाच्चेन्-घदै-श्रवणान-घँन्। न्-यबार्यः रे' \$4.0K. बर्ह्मन् स्वान्त्रा श्रीया यहता या तर्ने स्वानी ख्रीया त्रान्ता श्रीया या तर्ना श्रीया या तर्ना श्रीया या तर्ना नक्रुन्-ग्री-दर्शेषानानवद्र-द्वा-देशान्य-श्चित्र-प्रते-तुर्श्यानवर्षायाधेत्-----वहुग्-पर्वा देन्-दवाञ्च-याक्रेन्-याक्रेवानगवायरायं-वु-कु-धेदा

देन वयास्य वं ने की प्रथम स्रोत् की नेया क्या केन विषया क्या तस्य की की ´ঽৄ৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾৻৵৻ড়ৢ৾৴৻য়ঢ়ৣড়৻৸৸য়৾৴৻৸৸৻য়ৢ৾য়৻৸য়ৢয়৻৸য়ৢয়৾ঀয়৻৸৻ঢ়ৢঢ় वतरः चरासं के तर्व के का ग्री निष्यास के इसका सुर्वा सुर्वा स च**८.२.५५५**०५ ई.४.५५ ७९ अष्ट्रम ची.शु.इ.८.५ ६.च.५५ईमा हे.घे.अ.... वर्षा रे देर महत अर सुव शुया ळ म्या पति हेव यळ र प्रव महिता ळेव হ'ব ব্যা इ.१८.ज.वेनथानक्ष.परीजानः बेबर.नरः धैवायः ग. नैव-हु-दर्शना-हिम्। मदय ग्रील-न्म-हेव-दर्श्व-भैव-हु-येगल-पमः म्राज्यक्षेत्र त्र्या है हिराया श्वेष्या र्रा देवा सरार्गेषा **इ**दरम्य था श्री था श्री विष्य संस्थित संस्थित है। विष्य स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स য়ৢয়৾৽য়য়৽য়ৢয়৽**য়৾৽**য়য়৾৽য়য়৽য়য়য়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়য়য়৽৽৽৽ गुहु व व राया भेरा व दे दियाया हर या में दूर्य व इया गुहेरा ही गुरा <u>नभ्रे</u>न्-क्रनगःच-क्रेते-बर्बुगा स्नुर-प्यतःमुयःन-स्टन्-विःय-क्रेन्-वितेन-स्त्रेन-स्त्र-यात्री त्राव्यात्र्रा व्याप्तात्रा त्र्या प्रते ह्रण्या शु द्वराप्ता भेवात् **ଌୗୢ୶୶ୢୖଽ**ॱଢ଼୕୶ୢୠ୕୶ୢୠ୕୷ୢୠ୕୷୵ଽଽ୷ଊ୕୵ୢୠୄ୷୶୵୵ୢ୶୶୷ୡୄ୷୷*୳*୵୷ୡଽ୕**୵**ୖ र्ने।"®वेषानवायायतुना केरा। नाववायरा नेते तुषा ग्री वार्म् रा वार्म् रा ला "अनल भेग में र अ के व रे ल र के व अके ग न र हे जि अ म हे ल तसम्या श्वामी द्वाया अर् र देवे मा म देव मा देव र म देव र म स्र

② (वृदु नगृद नृद्ध न् तृद्ध क्षेत्र क्षेत्र नृद्ध ने नृत्य न् उ०७

मदे. विवय इया क्रवाया न कर् विवा होया यहार नर् न श्रीया वाला नरे रे रा लॅ'य नवरान ह्व'अन्य पर्याच्चव'र्-नइययायायर्दि। हेरानवेदेः वेष अक्चरःल्य, येथ्र-विषाक्षेत्रः श्रेषाः केषः क्षेत्रः क्षेत्रः स्वरः येष्टः । वेरः सः वस्य पत्तरः नेवः पद्धि देरः दक्षरः ठवः ग्रीः श्रंषः गरः छेर् स्रं ग्रेशेषः परः न्रक्षेत्र सक्ष्म सेन्या पः इस्य शुःहे मि सः नेर् गुरः क्षेत्र गुः सेन्या पः । । । यहरी देर. हैं व बी. देव. ते हे के देव. ते. के. ते. थे. वं वं वं वं वं वं वं यान्यत्याभ्रवत्। हे न्नाय अक्रवा ग्रुट् ने राष्ट्रं द द्या क्रव्यायाया मन ळेव रेवः मॅं केलः न्वादः व्यवः व्यः न व्यः च वन् । सुरः न क्रुयः न दरः वालवः यः नवरः। वेरः न्सुतेः वेवः तृः सुः चेतेः न्सुः नहिरः यः निरः वः केवः यः न्दः न्यं वः यहं न् ः ने ः नु ण ः छु ः यदे ः सं रः य ये वः यः गवरः । के राः गह्य यः ग्री वः म्राच्यात्रक्षेत्रक्ष्यायाः भ्राप्ति । त्राप्ति । त्राप्ति । त्राप्ति । स्राप्ति । स्राप द्रपुरम्बामा ग्रेन्स्या हि.श्रे.बा.बुर् व्रियाया हे क्रेया मुखा वयः गः पत्रे वः अपवाः इदः पत्र वावाः यहं रः छरः खः यरः ग्रीः वः पत्र वावाः त्त्यारामवरा हराहुनानी वेदान्या नेदास्तर ह्रवाया हेना यदे अर्मे द र दु : अर्के द : ऑद : माने रा र मा हे : ह्व : वा वा के मा से परा द रा । **ळेव**-२ेव-४-ळेल-२२-ॲव-२ ४व-८-२-अ-ऍन्ल-न्शुट्ल-१ेट-१ेल-नहर्ना नम्बर्धना नेवास्त्रान्त्रास्त्राह्य । वर्षान्य वरत्य वर्षान्य वरत्य वरत्य वरत्य वर्षान्य वर्षान्य वर्षान्य वर्षान्य वरत्य ष्रवःश्वायः वर्दरः वी यग् भियः क्षेत्रः स्वरः क्षेत्रः यह वायः क्षेत्रः । यहः क्षेत्रः **२ेक्:यॅॱळे**वेॱगुॱॺॖॅर्ॱक्**रा**ञ्च यानबरान वेगान्राञ्चरावद्वेत्रन्गे पङ्गेताः र्षम्यान् में या रहेया हे ज्ञा या यह या या विषय विषय या या विषय

प्राकेत रेवार्य केराक्ष्य प्रमास मान्य न्वयाशुः क्षः क्रांत्यानन्या वे क्रिवायान्तुत्र क्रांतन्तुव क्रुत्र वेनवा पतिः ... त्त्वा कुरा हे न्या अळवा गुरा प्राके दिन दे के प्राक्त में न **ब**दे न ब ने या या या थी. ब्रें से विष्य के किया में प्रायम सहया वस्र भ्रवता मयता करा है है है। ये केर इंदर है विवया या नवर दिए। दे 'द्या' वी 'श्रूपत्य' वेंद्र' खदे प ग्राय ह 'के व' देव' यें 'के 'या वे अपूर्ट' व्दर्रः ' बादी-चर-दर्दे की-बा-चत्तुत-व्यान्दः। हे न्ना-बा-बी-बा-कुद्र-ही-बादी-दिवान य**र-तु-धेनल**-चुबब्धायानलु गृषावृषात्र चुँव-कॅग्-पदी-पद्ग-कुँव-क्वा-व्----ब्रेन्-य-पङ्गला यह के ब्राह्म ब्राह्म व पहिन्य के व स्था न्चरतः क्रांचर अकेष राष्ट्री क्रांचर क्री राष्ट्री अस्त्र पान व्या क्री तार्थ क्रिया भ्रु.के.चदे.च र्चवयाच ह्र्न् .पयाच स्थयाने .वश्चर.च नेन् .प छ थया श्रयाः . पतिः क्षॅं वता विनयः पह्न वाश्ची पदे वाळे ना सुवाना रहा। म्र्ट. ब.कुव. यॅल्पान मात्रात्मव किराक्क के नार्वे राष्ट्रि में नियान विवास्त्रमा सरामा पञ्चलाम क्यराहे न्ना अक्रम वरा अक्रन ऑव रॉ. रॉ. लाम क्रुन वरा क्षेत्र नु ... त्तृतावः गवरः। न्तुरः अर्क्षन् : व्यान्यः वर्षे अराधरः हे न्नु : या अर्क्षनः गुरः वेप या । केरा नकु 'नशुक्राची'त्वारकाभ्रमः न्देकानविते केवा......पष्टा छेव'कार्यना न्दा *इतातुः बॅटा व्याळेवः यं रा वहाया रा स्तु - नृदा* विकास के किया र्षम्यान्यम्य महत्वालयात्र्वाणु त्रेयायाम्बरः। ळेषायरु यहुर्णु

वितः ब्राया वित्र वित्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र न्यवान्वेषाः सर्मान्याः न्युराय भूतात्रः हैं न्ये न्ये न्ये न्ये न्यायाः नेयाः । ्र अलाहे न्ना य अळ्या वला र्या अत्र तृ न हु राहे ने दायते अव त्र त्र त्र नः गवरः। दे वयान्य के क्रेवा सक्रमा कुषानिनः क्रेवा ये करः दः क्रेनया च श्रुरः ने वा दे श्राय विषा निया ग्री स्व या ग्रे श्रिरः में श्रुपा विषा विष प्रक्तिन्द्रेत्र्यं क्रिते सेम्याम्युत्रः वर्षेत्रः पद्गत्यः देवाके महिंदाना नवदा। हान त्या पदी छेषा महिना नी ने वास हार छेव स्वित हे **ब्र्**य-क्रूय-ब्रुट-क्रुट-क्रुय-य-नवटः। क्र्य-नशुब-क्रुट-क्र केवायकेवान्दरहे न्नायायवाहरी हो एटा तु थेनवायम् विदाववानुया नः मग्रा उर् अष्टि व पर दूरिया कुरी तहत राजा की राधिव की तकर नि वि य्यान्यानान्य व्याप्त केत्र व्याप्त केत्र विष्या वास्त्र विष्या वास्त्र विष्या विष्या वास्त्र विष्या विष्या विषय <u>ই স্ত্র অর্জ্রণ ব্রাইন্ স্পৃন্ গ্রীরান র্যা এটি এচ ক্রের র র র র র র স্থর সংস্থর ...</u> त्तुत्मः बह्दा दे द्वार्थि की . या (यव) ही : क्री द स्वार हित सुवा ही . स्वार ही . स् बक्षवान्यवान्त्रः व्याद्धारान् व्याद्धारान्त्रः व्याद्धारान्त्रः व्याद्धारान्त्रः व्याद्धारान्त्रः व्याद्धारान म्बेन्याक्षरायेत्रायराहान्तायावळ्यागुराक्ष्वातु र्वेद য়য়ঀ৾৽ঀয়৽ঀঢ়৾৽য়য়ঀ৽ড়ৼ৽য়ঢ়ৢঀ৽ঀৼ৻ য়ৢয়৽য়৽য়৽য়ৼ৽৻ৼৼয় <u> श्रे-बुग्तः क्रे</u>ट्-ग्व्व-ट्र-वे: द्र-वि: द्वट-वितः व द्वव-यः व द्ववः वहेंत् हुै न्दः। इन यर हे ने न यर विवास वि <u>ᡨᠬ</u>ᠬᠬᡚ᠗᠆ᡸᠬᡸᠬᡸᠬᡃᡚᢃ᠂ᢋᠵ᠂ᠬᢩᢖ᠆ᡯ᠂ᢓᠳ᠊ᡣᠽ᠊ᡊ᠇ᢅᡍ᠂ᡗᡊ᠇᠘ᢩᠮ᠆*᠆ᠸ* विवासम्यानु नामवरायाया में गया क्षेत्र कतावरायरामववा स

च्चित्रच स्वर्या गुरार्यरा वे केवां दि राया निया वा वा वा किया स्वरं म्हेलः इंद्र-दुक्र-भेग्वक्रा सुग्वाप्त मुक्ते दिन्य वा नाम सं र्येद्र पर दिन्य वा यस्य स्व. दे. की राज्य प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प् व्याक्ष्रायेनवायदे त्या तु न्तृ न्या की न् क्षेत्र स हे लिट की छ । यर वेपव पत्र। न्मॅव ने ते वि वि न त्र कृ कृ वर अरे के त्य विव ह त्यावराय विव स्र राया प्रके के दावका द्वार प्राप्त प्राप्त के दे भारत हैं न्या अर वुया या हवाया है न्ता अर अई ना वया में रही अहं र नय। न्र.कुर.भेव १.५कुथ.वय.व.५.भर.ज.नह्नायानह्र वहरा नया मूर. स धेबाया रंगुया नय रं . नर. में . या कव. खे. खेया न यया न ह य क्षॅप: न्यॅव: ग्री: क्रॅं यं: पग्य: देव: पक्ष्या दे: वदा: प्रः केव: देव: यॅं के: पत्नाताः न्वताः सुः थेनताः परः हे : न्नः यः यक्ष्यः त्ताः नुरः न्यताः सुः पः क्षेतः । नगुरः मुः के नः तत्यानः सह र। हे या र मुते हे व नरः मिते हे है र ह या तु प्राचित्र केवा सक्र म नदा मेंदा सामहता दही सामहिता है ती सामहिता है तो सामहिता है तो सामहिता है ती सामहिता है तो सामहिता है ती सामहिता है ती सामहिता है ती सामहिता है तो सामहिता है तो सामहिता है ती सामहित है ती सामहिता है ती सम है ती सामहिता है ती सामहिता है ती सामहिता है ती सामह बाबकू बाजिटानु वा वा विश्व कुताब का कुताब कि वा विश्व कुताब कि वा विश्व कुताब कि वा विश्व कि वा विष्ठ कि वा विश्व कि वा विश्व कि वा विश्व कि वा विष्य कि वा विष्य केव्रायक्षे मृद्धाः हिद्यायि वृद्यमे मेद्दायि यदा मव्या म्वया स्वयः "" न्दा उन्नद्धः मदे स्मानदः समाना स्मानदः सदः मदे समाना स्मानदः समान ने वहा सव सुतु : भव : मु : बळें : केव : में : त्या शु : केव : में : बळं र **७व.ल.**पर्धे बेथ. वया सुनया स. र.स. तथ. (२व.) ग्री.से. र.स. इस्रता शु भेरता मा नर्या भा हे हि सा अक्र मा गुमा हे दे र वे परा द्या

क्षे'पर इयय ग्रें के वार्ट में दे क्षा में किया नर्ने केष्यक्षेत्राच्यात्रव्यस्य क्षेत्राचा क्षेत्राचया है न्या वा क्षेत्राचा क्षेत्राचया है न्या वा क्षेत्राच मु.धियाया.क्षत्राता.चीरा.ब्रेटा। व्रेटा.सक्ता.मु.धेषा.क्षेत्रामटा.युटा.स्टरापकः ଌୖ୶:ฅ୶୶୕ଌୣ୵୕୶ୖୄଌ୶ଽ୳୷୶୕୶ୖୢଌ୕ୣ୵ୄୖ୷ୄୢୠୄ୕ୢ୷ୄୢ୕ୢୄୠୄ୵୕୶ୖୣଊ୷୵ୡୖୣ୵୳୕୶୲ বপ্ত,নধু.ছ্পে. मह्य भी के बार्य दे के दे के बार का का महान के बार के का के बार के का के बार के बार के का का का का का का का का नदे सं न्यर है। बेंद स्थ केंद्र सं न्दर प्र केंद्र स्थल कर् अहिदारा न्द्र तह्र अ.तप्ट. क्रॅब. ब्र. कुब. त्र. प. हे. ये. अ. अक्रूब. किट. ख्रत या न गायान के के बार्क मार्क सार प्रति है से आ श्री या गाया मही साम है म्न अस्त्रेयाभ्रयान्त्रेयायदे पर्राप्त देश सामान्य म्य स्तर *ढ़ॆ*य़ऀॱक़ॆॖॺॱय़ॕॱॹ॒॔ॱय़ॕॱॺॱॸऀॴॺॖऀॱय़ॸॕॺॱख़ॾ॔ॸ॒ॱय़य़ऀॱख़॔ॱॹॾॱऀॺॹॴ म्वयःद्रवाचीः श्रेर्वा म्वयः शुः यदः दर्दे त्ये त्यात तुवा सः द्वा स्वा न म्वरः म्बर्धाः वेर् स्राप्तः अत्रात्रः व्यापः व्या न्यायाङ्ग्याम् देवायाः स्राप्ति स्रापति स्रापति स्रापति स्राप्ति स्रापति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स् मॅट्राकेव्यारं प्रमुव्यायाय सूव्यादहिवान्ट्राय रुवायाया सुवार पवेषायदेः तरः हम्या अंस्यः सेर्-तुः प स्वायः नेर्-तुः केषाय कुर्-ने *ऀ*9ेद्र'र्जदर्द्दर्दे स्पर्दे स्वाहुद्दर्द्दु स्वाहुद्दर्द्दर्द्द स्वाहुद्दर्द्द स्वाहुद्दर्द्द स्वाहुद्दर्द्द स **हे** 'त्र' य' प रुष' क्षेत्र' कुष' दें ल' श्रु त' प दें त' श्रु ष' मार्थिय' खें त' कुष' प रू' य**हं त्** ৡ৴৻ৢ৾৾৾৴ৢয়ড়ৢ৾৾৾৴৻৸৾ৡ৾৾৵৻৸৾ৠ৴৾ৡ৾৾৽য়ৢ৾৾৾৴ৢৢঢ়ৢ৾য়ৢ৾য়৻৸য়৾৾য়ৢয়৻৸৾য়ৼ৾৾ৼৄ केर. है ने वेब ने केब सवाया कर वाहिब ना है ही बार र से मी न विवाया

हु क्ष्याक्षेत्र म् नर्-तार्ट्य न्याया नया तर्-ताया क्या निया त्या विद्या मित्र म् नर्-ताया क्या विद्या या विद्या या विद्या विद्या या विद्या या

च्यां में हिंद्या श्री विषय स्था प्रमें त्या में त्या म

⁽बिल.नगृव्यी:नल्ट.व्युब्य:ब्रेन्य:नब्य:न्द्र:देवे:न्नन्य:व्यः

ब्रदास विवा नविदाकु प्रदार्शन। ना झे दे न ना ता ने ने से नि से के दे हैं। हैं ता रुतर निष्व वय श्रे नवर पायष्ट्रिव ले यातु पाय हि । प्राय त्या हे इर.शु. २व. म. छ्यान् त्याष्ट्रन् इ यायया नरा न्युर्याया ने प्राप्ता स्था धर देर दे। देर वयाल जुरा यह या धरे द्वि दया में दाया के वा धरे नर्वेर्-पःश्रॅट-श्रुदे-श्रवः र्वे वः स्वः वः के देगवः स्वावः संदः नः तः त्वावावाः वया र रेया शु रहेर ग्री रहं तर तु राया त्या मावव साधेव र हि *ॱ*झेर-म्यु*र्*यन्य-प्रतेष्ठ्राच-पर्दे श्चॅब्-५5ुव-म्यॅल-५२े पर्य-म्र-५्वा-ल बेयायेनया महाळेवाह्ययाच्याच्याच्याच्याच्याच्या मवयाश्वी.स्प्राय वयाश्वी.क्षेत्रयातपु.क्ष्याय व्यापा इ. मि. या अक्र्या ब्रैव.रॅट्या स्व.चलूच.इथय.वय.स्व.इ.ज.चच्चंय रेच्य.क्ष्य.व्य. मामदीवाम्बन्यावया सनासादीयार्गे र्वारीयार्गे राम् विषयानभुर्-रदःग्रहःकः नया नद्गतः नदः त्र् । नदः र प्याः म्बर्म क्षेत्रे वित्रमें राज्यकेवार्या वेत्रा व्यामित्रा है गायहर् रित्रा हे-ब्र-अ-अक्रॅम्-अ-ब्रु-इ-८-५-विम्यः म्वर-८म्यः स्टर्म्यः स्टर्ग्यः विनवा मह के वा व्यवस्थ र दा विवास विदान विवास महिना महिना न्नेव्यादिः न्यम् मेवानेवः प्रवादिवः स्रुः विवया स्यादः स्वन् तुः वेययाने वयः कॅराज्ञापञ्च गर्देगापदे केंदाग्वेगायी है। मदार्थ याता श्रीपादे दे गर्द्ध पारा मुद्र-पस्दर्भिते-र्धायायम्दरम्दि म्हेन्-स्रिन्न मुन्दर्भितः मानु महाराष्ट्रितः मानु महाराष्ट्र कुलानार्द्र-र्मणा अर्ग्धे सुग्यागरा ग्रेग्याया स्रे स्थान ह्रद्रा रे र्थाक्षेत्रां नाल्त्रां ना वटः या वयता ठट् युः प्रत्ये गुर्या न मृतः हे सु द्वारान

त्रिन्या शुः प्यत् वेदाया हे हा सा सक्ष्या ता हा राषा हा स व स स रा ष्ठ्रमाम्प्रम बुराने। अन्मत्रा देव में केर तह या तु न में राम दे ही खु इययः यह्र द्वरः। विवयः दयः वययः यदेवयः ग्रीः दयः परः। व्ययः श्च. श्चेर न्रेचया ग्री. राष्ट्राया पर्या चिष्या पर्या चिष्या प्रमाण विषय स्था न्द व्रायान्यवार्ष्यवार्ष्यवार्ष्य वर्षा वर्ष हर्तायम् द्वाराङ्गलाद्वायात्राराः हराञ्च विवेदापदे केदान्द्व म्बेर्यायायक केवा वस्त्रा कर् स्विव स्वित म्रोतः म्रोतः देव संकि मर् तु : श्रुव नर् देव प्रते वेपया श्रुवाया केरा कृते : सु पर नर् नु हैं व वया ₩. मतुरःधेर् पहित्रक्रिः क्षेरः येरः मतु म्रायाये अक्रेरः हेतः यापः **** य मृष्य र दिल ही :अह्र ला र ठ वा सुला है। अदार्श र श्रुर श्रेर विषया ही सुष्य है'मञ्जूल म मृत्रम्'वर्षा हैन सेमका क्षा "ा विकामकार्या पूर लपु.मि.वा.चम्द्रीर्.तपु स्वा.घर.लयाप्तिराताक्षेत्र ॥ स्व क्षेत्रव्यया ठन् अधिव परि क्षु न्तृ म तेव में किर अक्षेत् तस्य परम तसे या तसे कु पर पशु पर सुद हैं व र देव पर दरा वर्षे व महेर है र र या "@ यूर्वयः छ्टं यर्ह्रट्रायश्चरयायः यः वर्षः श्रुः वर्षेट्रः लट्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः भ्रम्याः सक्ष्मः त्रम्यः स्वावः श्रवः श्रवः श्रवः श्रवः त्रम्यः त्रम्यः स्वावः स्वावः स्वावः स्वावः स्वावः स्व गवर'यहर तर्ग

4. मॅं = 'स्र म दू 'यदि 'त्त 'स प्वतु न 'प है म 'त्रे न 'म जिन म जिन म

① (बिस.न गेब.चेश्वर.परीय मुचयानयार्टा.सपु.भूच.चंट्य.

³¹⁴⁻³¹⁶⁾

इया वर वर । श्रु का १७८१ वर्ष र पा श्रु र पा श इन्यान्य मार्थ हेन प्रते हेन ने ने ने स्थान ने ने स्थान ने ने ने स्थान ने ने स्थान ने स्थान ने स्थान ने स्थान में म सब मेरे थे म्याया क्षुं र मर सहित् मिर मिर मुख म्या मिर हेवा हेवा है : यद्मी : र्राण्य गम् व : राग्युय ग्री : श्रुं य : म्यें व : श्रे : गम् व : श्रे : विन नै'न्न'ह्युय'पठवातयन्त्र पते दने 'यत्त्र दर्गात्र अत्रायः क्रिंग्रान्त्र प्राप्ति स्राप्ति स्रापति स्राप्ति स्रापति स्रापति स्रापति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स म.के.पीष्ठ.पणषुःपर्तिलाञ्चिषःगञ्च्याःब्राच्यःक्षःस्ट.क्री.क्षःर्ये..... इराम्द्रार्थराञ्चाळाळाचा श्रुःस्यायाग्रहास्यान्यंता **৾৾ਜ਼**ঀ৽য়৾৽ড়য়৽য়য়ৢঀ৽৴ঀঀ৽ড়৸৽৸ড়৸ড়৽৸ড়৽৸ড়৽৸ড়৽৸ড়৽৸ড়৽৸ড়৽৸ড়৽৸ড়৽৸ড়৽৸ড়৽ঢ়৽ড়৸ न्वयाग्री संमूर्यं त्यते तिराम्या श्री दि ते रे दे र पव सह याया पहे वायताया केव-सं-घ्र-पर्वेचायाः लवान्यः कीयान्यं याचित्रः मान्यः पर्वेच न्नवा इरावन म्राचा प्राप्ता राज्या हुनवा अवते मुलावन ने शे इ. पर्यायक्र्यान्यवे. तर्रात्राक्षेत्रे. त्यारावे । विषायप्राप्ते । प्राप्ता नगयायायम् नयाञ्च अराकु देन सु र रामायाय र र दू न् स न्दा लयाया हुरक्षेपवी हिंदली हैं मिन्तिका के हर निंद त्रिनः इयतः द्वातः हो। द्वेनतः ग्रुः त्रिनः त्रतः वश्चुरः नः तह्यः न् ग्रुम्तः म्राज्यस्य स्त्रिम् रेराम् राज्यस्य स्तर्भात्रः स्त्रान्यस्य स्त्रान्यस्य स्त्रान्यस्य स्त्रान्यस्य स्त्रान्यस्य

कुर्या ग्रे प्र मञ्जूष्य पर्या में हे तकर हु त्य ते न् सा हिर् र् क भु व चर रेवा वर् स्वाय ग्रे क्रानवया ठ द व्याय ग्रे मु वर्षे र छ्वा यावै मव मने ते साम केवाया था । इन मन भूम स्वापित महेवायते क्केट-घॅ 'बृ 'बेर-ग्रु 'रेट-सु गवा यावायका नेट-र्ने वा इ बवा ग्रुट-थेगवाय धरः' हॅग्तः परः शुरा तेयतः ठदः घयतः ठट् तः त्रुं : वे: देरः येदः यः तु : वे: नुरारश्चरण बारवासम्बद्धाराष्ट्रवारायमाध्यामाध्येतानरे श्चिरः विषयः ग्रै : सुग्वारः श्वार प्राथितः यः अद्वित्। 🗦 : हे : तक्र : रृ : त्ये : ज्ञ : या में र : या र्रः १५ वर्षे १ रुन् ग्रे'स् अदे : न वॅ ८० मः न ८ अहु व धरः श्रुरा है 'अ हु म श्रुवायः ग्रे**'** রিমর ভব ধরর ভব ধর বই থে নেস্ব। ইবে গ্রব শ্রির শ্রী নেব্শ ऍर·美·हे·पळरःहु रादे ह्याः अहिर र्वरावश्चरः म्बेर्यावश्चरः पराहु " न्नः वः कृ सेंग हु 'हं 'राग भाष्ट्र 'यें 'न्हः। न्नें व के व खे सू 'ह वारा केन् 'हु ' बर्चलायदेः वर्देरः। व्योते श्रदः वर्दे वः श्रः प्रयाग्नी वः तपुरः श्रदः प्रवः वर्दे **म्युव**-ल-तहत-ल-नृहा मृत्येत्र-सूहः () व्यवः सुव-धितः स्रामा म्बर् स्ट म्बर्स रहा म्बर हिन के के देश महिला मा सुरा पर राज्य रहा है ম্বল এবএ-এএ-এই বার্টান ইবান এথন এই প্রথম এই ক্রেম্বর বার্টার ক্রিমান বার্টার ব क्चेन् प्यादर्वेन् पर पर्से दाया श्रे देन पा ग्रेया विदान व ग्रेया ग्रेय ब्रट्राज्यात्मा मृद्द्राच्या मृत्राची त्रार्थित स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या भूनः रेग्यायवि । भवः श्रुरः यदै । यगदः धेगः न् मृत्यः न् वः नृतः। **चयः**वयःदेयः त्रुन् प्वतः श्रुन्। चन् ध्याः तुनः श्रुंगयः **यक्रंग**ः तु <u>२ वे 'नदे 'वेट' वे 'जुल' २ नद्र रा स्नेट' वे 'जुल' न स्नृद्र वें दर्रा ग्रे 'नद्र व' वें ''''' '</u>

विवाय करा अधिवाया है 'दे करा हू 'यदे हा अदे विवाय है वा दिन्य बर्वन्दर्देवः महोरः ग्री स्थ्रमः दहेव रथः केवः यः नश्रयः नश्रयः नश्रयः नश्रयः पह्रव दर वरा अर मारा अर्घेव पर रार्शेष में र अरे व प्रवास असुता शु. चश्चरः विचयः हे वः संचयः क्रयः नदः। व्यापनः चीः न चुनाः सः र्षेमवः विस्रवः ग्रैं व्यापा म्यापा मा म्यापा म्याप ञ्चरा वरावी विषान्तार्थवाषा श्रीना प्रदेश सर्वे स्परी सुराया स्वार स दम्बायायः संस्थानः इस्यायः नद्याः मैरः निष्या "® विष्यायायः नदः। अनवारेरार्वातावि नक्ष्रायहेरार्वातायहॅराग्रीवागुरा "तरे वा न्त्रारुवाक्षान्वेनासुनावान्यः स्रामुन्यायमेवासुयान्दे न्तर्यं रामेदा य.कुबे.त्य.क्ष्य.कुवे.चेबेय.क्षेत्र क्षे.चर्च.त्य.क्षेट्य.क्ष्य.चय्राच्य. ह्र ग्राप्टरर रा ग्रोर ध्रारे व से के प्रकुष प्रति से ग्राप्ट स्राप्ट स्राप्ट बर्द्धेवःद्वाश्चेवःलयःतुः नदंदःश्चेतः दद्दैः बदेः देः यः इयदः द्वः न्द्रः द्वः द 四天、艾如、口蓋子、黃可 म्बर्धित्रक्षात्र्वात्रक्षात्र्वात्रक्षात्र्वा रे'ऍर्'पदे' बुबरा' नशुब्र'र्रा कु'र्दुत्य' हे' केव' नहेन त्यास्रद'ई' क्र्याचेष्ठेया चन्नराम्याधानान्यस्यचरुयायस्याभागवाधीः व्ययः महवान्यां वार्षा त्देर-विवार्चबारद्देव-दर्मेषार्देव-दी। "वॅट्-क्रि-क्षेट्-देव-कुल-रमषा" "ब्राम्यां अक्ष्यां म्याय्या म्याया व्याप्ता स्तर बेर'मदै'नेप'ने दे'**न्**र'|

① (বর্ষাস্থ্র-অধ্ব-শ্রুব্-র্ন্ন-গ্রহ্ম-120)

②(५नव नवेवे वृद्द नहें ५ देव देव - 429)

महेवा वर् हिर्याक्ष वी ही वर्ष वर्ष ग्रंथ पर महराय कर संदर्भ र त्त्र न्यात्र क्रेता वर्षेत्र क्रेता क्रेता क्रेता क्रेता क्र ता व्याप्य वर्षा व्याप्य वर्षा क्रेता क्रेता क्रे वुग्याप्तम्यवादिवान्यद्रा "ा देवान्ता रातृत्त्र्त्रायळ्यवा **५ त्यान वर्षा** "ने प्रिये संस्था स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स मानमा निराश्चा प्रति निर्मा हुना निर्मात केवा थे मेवा मुला सक्षानिव """ <u> बियाग्रीयाश्चरिः स्टार्या तहिवानु गर्मे प्वापानीया बुवानु हे सं ज्ञाराराताः</u> ब्रद्रामतुष्व-कुःव्यतः श्रुपानिदे । यदः वेषः पकुः वतुष्वः व्यवः वदः यदेः वे वि न्द्रान्त्रम्याग्रेयायदाहा कु.लग स्वा.लम द्रा.लगायव क्रिट्री तुनः क्षुंन्यः सक्रनः तुः द्ने नदेः देदः नै : कुलः द्वदः राष्ट्रेदः कुलः दक्ष्वः ড়৾ৼ৶য়য়ৣ৽৸ৼ৶য়য়য়৽ঽ৴য়৾ঢ়ঀ৽৸ৼ৾ৼ৾ৼ৻ড়ৼ৻ঀ৽৸ঢ়৽য় वेयातहरायातस्याधीतद्वेरामायात्रत्। कु'इमाऑदयादयायेनया त्तुमालु विदेशी श्व'र्या गुरावर्ष्ठ्रा "@ लेषावि तर्देव तर्दे संवर्षर वयानेनवारत्त्वाञ्चे वार्ष्यान्त्रम् ताः द्वार् वाष्याचेवारत्त्वाः सरामहेवाद्वाः लर्थः नजुन् सदे द्वास्तर दें स्वयः वृद्धयः श्रूपयः देवे धेवः रेव्या र्वा पदः पद्धः नष्ट्र-चेर्-नरेते केर्-तु-द्रम्यमा सम्बर्ग

स्रान्तिः त्रान्त्र स्रान्ति वित्राधिन न्या स्रान्तिः वित्र स्रान्ति स्रानि स्रान्ति स्रानि स्रान

① ("ব্-ট্র-ইন্-ই-ক্-ক্-ব্-ক্---606)

हुबः च्रुका श्रु अहेर हु स्याय या मुद्रानी क्राया प्रस्थान स्याय श्रुका नवरः। "७ विषान्दः। धरः" ह्वापामञ्जान्वेनाधिः ळेषान्वेनावेना श्चिते षु: वॅरः (हे:दुरः व्लॅं: पञ्चरः सुबः ळवावः यः वेरः) लः क्वे:बुः वावदः वॅदेः **नञ्जूलः नर्दः अहलः बुरा सेग्रायः श्रुरा गादः द्वैदः नश्चुद्य। " ७ वेरा ग्राय** नःनडलः श्रन्यः ने नः में मः अः कवः समः मेवाः तूः त्यतेः श्रुः तेः गुडे वः मः वि.सं.चेष्ठेषात्तपर.क्र.सं.क्षरं चेषर.चेषाक्षरःश्चरःश्चरः बह्यतः क्रेवः प्रदः रे निरुद्धः वर्षः वर्षः प्रदः । वर्षः मृत्वे वर्शः सुः दे स्वयः वर्षः सदः रॅॅं **व**ृञ्च्याञ्चेन्यराष्ट्रीयरम्बुट्रान्देवर्याय**नु**त्र्यस्य न्यान्त्रेयस्य व्यास्य वर्णास्य वराष्य वर्णास्य वर्णास्य वराष्य वर्णास्य वराष्य वर्णास्य वराष्य वरा ह्रेनरा श्रूर । यदः श्रूर ह्रिर नहीं र नहीं र ने वर्ष र हरा न या न र हिरा शु त्रु स्पते ज्ञायते सुते हो दे नया वया नवु दार् वा स्पते न में नया के स्वा सदे **वैॱ**श्रम**तः** ने ते मायः श्रॅंबः रः ग् । १ ग् । यः न्दः श्रॅंबः यः ग् वैरायः भें दः यदः र । । ঢ়ৢ৾ঀ৾৾*৻৴*৴৾৾ रमाष्ट्र त्याते व्वाक्षास्य विकाशास्य विकासी

श्ची त्या १७८२ छ भू मा लिये त्या निवासी निव

①② (বর্লার্ম: অরব: কুব র্ণা:গ্রম: 120)

म्द्राच्यक्षत्व क्षेत्र म्या म्द्राच्यक्षत्व क्ष्र स्वर क्ष्र क्

Ă'৽৻ৼৢ৾ৼ৾৽ঢ়য়ৢ৻৽ৠৢ৾৾য়ৢ৾ৼৢ৾ৼৢ৾ৼৼৼৼ৾ৼৠয়৽৸ৡ৽ঢ়৽৻৻৻৻৻য়য়৽৽৽৽৽ न्मॅर्यालु न्वरात्त्वायदे त्र्या के वार्षे के वर्षा के वर्षा के वर्षा का वर्षा 'क्षरत्रः पद्मत्राः ग्रीः तक्षुदः निवी 'ग्रेडिंटः विवीय क्षे: ग्री**यः ग्रीयः त**र्माः केटः। र्म्तरवि विरेचुरामावह्राधि वर्षिरामेवा "न्कवार्क्ष वर्षे बह्रम्'सुम्याहे'ठव'ग्रीया विंद्यहेंम्'ह्रम्'ह्रयःह्र'यि'दिवेद'न्स्यायदेः नर्-क्रृंद-बर्<u>दर्-म-धेद-</u>दर्ग-मका-रेका-द-वाग्द-ञ्चंद-ग्री-वका-दहिर-ग्रुका र्यर क्षेत्रया अ.म.मर.लर.थ.**क्ष्र्य.**रंट.चेय.ल्रंट.ब्रु.रंबर.व्यापक्य. य.तु.म्.नहरा.भेग.विय.व। देर्.रर.लर.क्र.बह्नगर्ने.क्वर.पवेता **ळ. प्र. ४८. जपर. ४८. ५ वे व. प्रेच ४. ४ वे ४. ५ वे ४. ४ वे ४.** त्रै'न्र'वै'त्र'प्र'व्य'व्येष्ठ्रेन्'के'म'व्याप्त्र'त्र्व्याप्त्र'हे। श्चिम्यायम् वाध्याञ्चेवान्तार्मिन्। मत्यायाः व्याप्यायाः विवायस्यायाः विवायस्यायाः ल्य-पीर-तक्षे-५-४८-ब्रैय-ल्र-१८-। नेविर-नथयानुय-ल्र-क्र-क्षेनया

रे**ॱढ़ऀज़ॱॸ**ॺॕॸख़ॱय़ॱढ़ॖॱॿख़ॱॺॱॿॖॺॱढ़ॱॠॺॱड़ॖॸॱऻ व छ र वहार मञ्ज्ञ न्या महि । महिन महिन महिन स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स् **३०१-८८।** लग्नाच के याच्याम् श्रद्धान्त स्वात्त स्वात्त स्वात्त स्वात्त स्वात्त स्वात्त स्वात्त स्वात्त स्वात्त स **८६ॅ२.लुव.**१८८.वर.वी.लब्या.लूप.वी ईव.ल.सिट.पट.व.ध्या मञ्ज्ञम्बल्यायथेरः द्धंयः न्दः वरुषः न्वं द्यः यः वुषा ने देवा पुरः रदः तहन्यालु : वनया चुन् : पा त्या चन् : सुन् : मुन् : मुन् : या केव : येंनः : लु र्द्रन् बै बु ब इं ल न् शुर्व है। वे हे न म् द देव र व सुर पट्टे हैं मग्रदःभ्रॅंदःग्रीःययात्विरः न्मॅर्यालु सर्नः श्रुदेः द्रेयः सं स्या परः पहेतः वर्ने सं न्तुव वं वर्गव वर्गव वर्गव वर्षे वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्षे वर्ष वर्षे वर्ष वर्षे वर्ष वर्षे व म. अयावयान चेरा लेपया पर्ने वया श्रीया तपुरा देया कथा ख्रीया तपुरा हिर्या. ग्रै'कुर्'र्र्। क्ष्म'रॅब'स्ट्रे'ह्र'र्र्र्यक्ष'ग्रुर'कुब'र्रर'स्द्रे'यर व्ययः परेगल हुरम्ग नुसाधरामायस्य प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व ज्दामुद्दानी के स्वाम बेद्या पर्स्न पर धिद्या यया देव माया के स्रम्य दॅशत्र्वा चुराष्ट्र स्रराविव तुराक्चेर चेर्र र्वेष र्दा स्वात्यः। **स्**वात्यः न्य्यान्यानक्ष्यानदेन्द्रन्त्विः ह्रन्त्ना सः इते क्षेत्रस्य ग्राम्य **५.**४८.मृ.श.कुप.क्षेत्र.४८.मृ.मृ.क्षेत्र. व्याप्त. व्याप्त. व्याप्त. व्याप्त. व्याप्त. व्याप्त. व्याप्त. व्याप्त. मुक्षचेते ग्रोर मुक्त प्रमात प्रम प्रमात प्र बी**ॱब**ब्बुलःद्वेदःद्देॱबःव्हॅलःदक्षःशुःचङ्कलःचःचेद्-चिब्बुवलःखबःचवःविद्वेतः

ছুশ্ব নশ্ব:নন্তুৰ। "া ইবাংবার্টির বিদ্যুশ:ইবাং ह्मा म्यारा म्राप्त वर्षा हिन् र्स्या म्राप्त । "ने व्यासि त्युत्य परः बे हे न मृद दे व र व दे के द के प्रा के (म्मूब प्रहेंब प्रथा पर्चे र रहा हैत्) रहा। विहेश या पर्वे राह्य है पर्यम् द्वा न्यायाया क्षेत्र के न के राह्म न राहम न राह <u>र्चेर्यान्टर् क्षेयान्त्रं नव्यालु कु मे किर कुलायन केव मेर देल हे ।</u> त्त्वाम्बद्धाः "® देवान्दा देवे ही संग्रह्म व दिस् ঀয়ৢ৴৽ঀঢ়৽ঀৢ৾৾৾ঢ়৽৺৴ঢ়৽য়৾৽ঀৢ৴৽ঀয়ৢয়৽য়ৢ৽য়ঀ৸ঢ়৽য়ৢঀয়৽ঀ৽ড়৽য়৽য়য়য় (1783) स्ते क्र म् निविधायते के वा ग्री निव में राया पर्या में **ଌୖ୶ୖ୰୶**ୖଽ*ୣ*୵୵ଽ୲୴ୖୖଈୄୖୄଌଽୖୄ୰ଵୄ୵ୢୖୄ୕ୄୠ୴୶ୄୄ୶୴୕୕୷୷୵ୢୣ୕ୠ୷ୢ୕ୠ୕୴୷୵ଽ୷ **६.४०१.७.१.१.५०४.**७०% पर्दे प्रत्याङ्गराय गेपालय पश्चिराचर पर्दे थे **นผล:ขี่น:โละ.ข่ผน:ขี้.ลีฐา.พล.ชน์วิ.ตั.พฐน.บพ.ชุนีน:ชุนีน:ชุน.บพี่น.บ** नक्ष्मा " ®केषानवायानानकवाई देरासुराम् हे कि वे स्निनवादे रे वे द ग्री-न्यंत-रेगाला गर्छ-रं विगाधित-।यरा यया यष्ट्रिनः ययं या येत ग्री-ऑन् त्रै'वि'व्यायाः विवादिर्'त्रुव्'याया वर्षाया महेव'रव्याया प्रश्वार्थ याः "" इरवायाधेवा

① (ব্ৰব্ৰের্বি: স্তুর্-সেই্র্-র্ব-ইব-443---445)

^{23 (59}A'-08A'-BE-15E-15A'-445-447)

न्यायाः इव विद्वातात्र त्यते व्या वा वा व्या विद्वाता विद्याता विद्वाता विद्वाता विद्वाता विद्वाता विद्वाता विद्वाता विद्याता विद रोटः नवटः परे प्रमादः त्यवः श्वेरः दिष्टः तत् मा यः इयः वरः वरः। "व्वः म्राज्यक्रव, त्र्रान्य द्रास्या व्राप्ता स्वराधिता व्यवस्थित । व्यवस्थित । ब्रेन हे देरे ह्यूय झु देरा म हेन पा दे सु चेन के द में धिद वेरा मुल न पर बर्ळेण'यापानम्बाया नायराते'र्यान्यानेकरे केरे हिन्या मनर मॅक्प्सुनान्दरः मॅक्प्सुनान्द्रका स्वरः च्राह्म व हा छेदा सर्वे ना ह्यु तान्दरा खेर-हे-दै-दे-वेद-हद-(शेर-भुँट-छे-श्वद-शेट-) दया महेतासुयटा ····· न्रियः र राधेनरा सः इवरा राष्ट्रिय। न्रियः न्येवः हः रागः न्ना न्रांवः न्यं वः स्वावः नवावावः यः नव्याग्रेः न्यानः श्रृदेः स्वाः दत्यः दन्यवः म.चियय.चेयानचे.भूमा अष्ट्रचा.श्रीया.ह्यामा.क्रेट्रसम्प्रच्या श्रीयाप्तिय नरःश्चः क्वः हे दुरःश्चः बळेरः नचे वः मः हिरः नद्वः नवरः । न न न वः शुवः इं लग् न्नु अर्दर्भ म्राज्य र्यंद्र स्वयाय प्रविष्य व्यव स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर् न्दः। बळ्नाः श्रुयः नन्द्रः लुषः बळ्दः श्रुः द्रदः चग्रुः क्र्रिः क्र्रं रः चग्रदः श्रुयः मञ्जूषा "ा देशाय विनाय न्याया वा ने स्पृष्टा या वा मि ळेदःशळॅगःश्चुत्यःनेदःसं ळेप्यः इयःश्चेतः निर्मादवादायः इयः वरायः गः न्मॅब-तु-वन्दि-दन्भन्या-वेन-य-केब-यदि-चन्त-विव-यन्-----चलु न्यालयानवाकेरासुरायाचेनवामवे द्वे न्याताह्यं न्याताह्यं मवि मह्नद्र नहेंद्र न्मवा वर्षेत्र मृहेंद्र मृद्र वर्ष वर्ष केंद्र केंद्

① (বর্ব শ্লীন অবব কুব্ শ্লী ক্রন্থ 133)

र्वादः दिने चितः वुदः वाच इंदः यदे अ वदः वाच वा धरः दिन वा व्या

तृ त्यते न्त्र अप्या कृत्यते अपया क्ष्मया क्ष

स्तिन्द्राम् केन् व्यक्ष्याम् व्यक्षयाम् व्यक्षयम् विवक्षयाम् विवक्षयम् विवक्षयम्यम् विवक्षयम् विवक्ययम्

श्चे-प्र. १७८६ व. ६ -प्रतः श्चरः चार्यकानतः वदः। "तर् अनयः

② (དགང་བནིན་བྱང་བརྡོང་དབ་རོས་४६०)

तहशः न् च त्रा केंद्र या केंद्र ये का न्या के खेनका महै । न केंद्र का ने द देन्'ग्रे' वस मान्त्र' या अदाक्षा कुं क्षेत्र वुं क्षा या तक्षे प्रनास्त्र कुं ना बिदःतुःमभेगवार्यते संयः सया मा न्नु स्यरः वि दे स्वेवः ज्वार्यः सदः तु स्पदः । र्वेता हु यदे न्नु वर्ष सर्र स्वारा ग्रे वर्ष द न्व वर्ष उर् दे विवा গ্রবি-গ্রী-গ্র-ন বলবা-হর্-গ্রাম-ধ্রিশ্ব-গ্রি-রেনা ব্-জ-ছ্রব-গ্রবি-শ্রীব गार्थः विवायः विदः क्रेरः वर्षेयः वया यत्यः मुगः ग्रीः वह्रवः यः नृतः। न्म्रियायान्दास्त्रम् विदारान्व्दान्म्यावेषायेवत्। "वेषान्दा। ज्ञः नामदीमित वरा "लयामवाह्या नृतेषान्राहेते हुराधेनाम्बर्धाः तह्रवयाञ्च । तथा द्वा वया मा जीय देवदा ब्रह्म । ता परीयाना मेवदा। " वितान्त्रता विता वळ्टा व्यव व्यवस्था व स्वता ग्रीता क्रवा श्रीता प्रमान व्यवस्था व स्वता ग्रीता क्रवा श्रीता प्रमान विवास व स्वता ग्रीता क्रवा श्रीता प्रमान व स्वता ग्रीता क्रवा श्रीता प्रमान व स्वता ग्रीता व स्वता ग्रीता क्रवा श्रीता व स्वता ग्रीता व स्वता व स त्रेयः नदेः स्व : स्व : म्युरः वेदः कुषः न्रः। हेदः त्युरः त्रुयः क्रेष र्षेण्यामञ्चलार्षेण "न्यातास्वापनायान्याति वे वेदान्दार्ह्वा त्रिरारो हरा कुलापन पुरिष्य परा ग्राह्म न म्यार में वा म्यार पुरिष्य व्याहराक्षेतातालयामार्थवायाकु न्यंवा सुमानमाराही वरायाहे। मृर्-ग्री-र्येट-प्रांच-क्रु-झ-क्ष्या-क्रु-श्री-त्र-श्चिति । व न्या व व न्या व व न्या व व न्या व व व व व व व व व व व व व व व व व व विया ग्राया

5. व्यात्राच्याः वीः पत्रवाः वीः पत्रवाः विष्यान्यः विष्यान्यः विष्यान्यः

디죖드'국제

रॅं**व**ॱक्वेवॱ**८रैंदे**ॱडुरॱॡ॔॑॑॔सॱक्रॅंत्रॱच गृदॱक़ॖॕवॱॸ्षदॱघढ़ॆॱचॱॸॾॄ**द**⋯ॱॱ **८६ॅ द**-५५०.५५५२६५.४.५ून,अघर.घ२.चशुवाग्री.८वाग.५ूप.घे.८८ **वरःन्देंबः**शुःलुब्**षः**श्चॅरःवरःनङ्गेवःविरःग्रेबःनश्चब्यवःपदेःन्ग्दःनवैःः नते वुरानाईर्पाते वरावेन म्याया तिर्ा संस्र र म्यायख्या गुः नहें न् व के स्व 1785 ने महिला स्व र में न स्व पा के न महिला करा के न स्व पा के न स्व पा के न स्व पा के न स्व प इराययानयाध्याहेवानबेट्यामाबेयाम्डान्यास्य द्वाराया व्ययः नार्यः श्रु न मानः नार्ययः च नदः । वनः नुः श्रुवः श्रुव देनवः नुः श्रुवः इना यहूर ग्री वर अथ कु अंतर न में वेश प्र र विरा वि व्राह्म नया *तीपा-थै.पञ्चे र. श्रेचया चू र. पि. चै प. श्वे च. वया पर्ह् र. ऱ्ये चया श्वी पश्च. प्राया श्वेर.* मुला मृना केरातपुर रेया पंजा श्रीय श्रीय त्या प्रया प्रया क्या केरा रवा सा र्वा श्वराया म्या विष्याविष्या विषया यते.च्रान्यायदे.र्यान्ड्याक्तरःक्राक्षरःक्षातुःधवाउदरः। म्भेला रत्याकेरायात्र्याक्ष्यात्र्याच्यात्र्याच्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या **त्राधी ने** देश पासुता यदा तम् प्रमूत अञ्चर तात् क रें द् व ता दे व ता दे व त्र्वायान्त्रकः स्त्र्वित्राम् वतः वदः न्दः। सदः न्दा क्रिन् ग्रेन् पठताताष्ट्रया विश्वासं तर्ने ने स्व प्यवा तृते मुला स्व वि हिरापते तृताः ख्यमायहेवाता श्रुमाया श्रुमाया श्रिमाक्या श्रिमाक्या । विषया । तुः केलः श्चनः चुनः वन्दः। देः द्वनः वाचुनः केन्त्रवान् सुनः वाह्ननः विकास

वृत्तः व व भेषायाययः ने दिव वित् त्रतः हेव प्रवेत्यः या मेहियः व व्याप्तः व वित् या वित्यः या मेहितः व वित्यः य मिल्रायः या विव्यः ह्याः । व या वित्यः क्षेत्रः व वित्यः या व

भ्रम्यान्त्र ग्राह्मान्त्रमः ह्यामान्त्रान्त्रम् । अक्षा न्ता ५ ज्ञुना सम्मार केत हरा तिर र ने में ते श्री श्री साम स्मार र न्नराष्ट्रकार्चरान्द्रन्दराञ्चराव्यक्तिकात्रीः **इ**र বৰ্ষাথ্য-প্ৰথ্য-আ मृद्धि-पश्चर्याः तर्दाः क्ष्याः श्चितः श्चरः पह्यः ह्रमः मृद्धिः वरः । । **ৼৢ৾৾৾**৴ৼ৾ঀয়৾৾৽য়ৢ৾য়৾৽য়ড়৾৾৾৾৾য়ৼৢঢ়৾ৼৼ৾ৼৼয়৾৽য়য়৸ড়৻য়ড়য়ড়৾য়ৼঢ়৽ৼ৾ৼৼঢ় वि.रंबर.श्रैय.रं.पथ.र्वा.हे. **धेर**ॱसॅग'ग्**वर**'तत्तृग'ग्रुर'। हेब्र प्रवेदयापदे द्वर पर पर पर वर्ष या धेव रहं ता है रव ग्रा **利**ス.14.2と.1 वयानेवालमा सरामद्वारी प्रमासवास्य प्रमास्य नयःश्वयः हे दः नवे दर्यायः श्चेयः चॅरः मॅरः मलु दः दर्यः नश्चरः मठेरः श्चेरः य वर्-तु-ध्रेर-श्रुष्-चु-कु-र्मा वि-स्तिःस्व-तु-त्वर-म-विर-मठका हेव्रप्तेद्रत्यःयः मृत्रेत्राव्याग्युद्राञ्च देव्यव्याद्येत्रःयः स्ट्राम् ज्ञुः विद् न् चॅव भाक्षव रेट बैका बॅट | यक्त पहें व पदे दे ते पत्त व क्र पता तथा क्रैराधार्चर् तु-वर्षे क्रुणा नह दावर्षेणा नवा यरादा नह ता क्रिरा क्रेरा नशुकान्तराहराक्षराक्षरान्तराचिरायदान्त्रावरान्तरा वृ र्वार्यरामाक्षर

रॅंब-तु-नश्र-पर-ञ्चव-मा-क्षे-ऑर-प-न्र-। पत्म-धुत्म-वृत्य-द्र्व-व्यन्तः <u> ५८. मंबिट. मुथ. मंबेट. क्रै. ५०४०. क्रे. ५५. विथ. क्षेत्र. श्रुवाथ. ्रावट. राष्ट्र. इ. .</u> मॅ**२**ॱन*ण्*यः भृषाः रूरः नरुषः धरः ज्ञाः वा बुः र् यरः नषः सुषः नदेः क्षुद्र खुः … ः त्षे**रः** हे न्याः ध्याः हेवः यहे द्याः य नहेकः यः श्वेदः श्वेदः हेवः क्याः वरातुः वेनया व्यामवरा वरा वरा देश हो बे हा सं तर्वरा क्षायरा पर्चेर-तर-झर्। हेब-चबेर्या-त.बेध्याग्री-खे.ब्यायनर्रा वे.र्थर-चद्रे **ৡवः**वुदेःन्ह्र्-र्व्नावेशःक्वनःदन्यःनःश्चनःश्चेश्वरःळ्या वृःन्यरः कुलाची रगरा वहें बाकुला दिवे छा। हा रहा बु रहा बु र बरा मा बी वहा के बु रा ॱॹॖॺॱ*ज़*ड़ॕॸॱॺऻॖढ़ॺॱऄॱॶढ़ॱॻॺॱॾॣॺॱॸ॒ॱढ़ॸऀॱॺॕॸॱॺॎॱॿॖॴॱऄॖ॔ॺॱॴॕॺॱॱॱॱ ध्वनाक्तुरातकराचेनावावनावान्यसान धेव द्धारार्यम्यानुबातनुन् ने भूर.र्शय.बेश्ट.ल्ट्य.ज. सूर.वि.केजा.संब.धुब. बुब.वुया.विट.तक्षेर. धैव. याचै त्या श्रीन् रहर्। अञ्चतः बी तदी न्या हव मूर्ये न खुन खुन खून स्वाता वृ र्बर-प-र्राष्ट्रे श्रुर-प्यन श्रेष्यग्री स्वा दवा नवर-र्वा पहर है नवर ৠৢ**৴**৽য়৾ঀয়৽য়৽য়ড়য়য়৽ৼৄৼ৽ঽড়৽৸৽ঀয়৽ঀ৾ঀ৽য়৽ঀৼৢঀ৽ৼৢ৾ৼ৽য়য়ৢঀ৽য়ৢঽ৽ ঀৢয়৾৽য়ৼ৽ৼয়৽ৡয়৽ঢ়ৢ৽ৼ৾৾ৼ৽য়৽ৼ৾য়ৼৼৼ৽য়৽ঀৢঀয়৽ৼ৾ঀয়৽ঀৢৼ৽য়ৼ৽৽৽৽ क्षेत्रण यासस्ययाहरामिष्यारमायायययाहमान्त्रमान्द्यमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रम वस्याद्रम् न्रा व्रेवः यान्राहितः स्त्रीतः व्रव्यः व्राव्यः पश्चरः चुः र्टः। ऋः ह्रं रः वदा द्यात्यात्य व्याचा ववरः क्रे । ववाः इद्यवः श्वरः व गावाः र्म्यार्थायक्षय वेर् भ्रास्तित्यम् क्रि. क्रियार्थायक्ष्रियः र्वराष्ट्रियः ह्रात्वरायात् राक्षेत्रः क्रेत्रः क्रायात् व्यायात् वर्षाः वर्षाः वर्षाः

② (र्ग्रन्नवे निवे चुर्न्स्र्रेन्देव रेव रेव रेव र

न्त्र-त्र्वाक्त्रव्याक्त्रव्याः इव्याः नेवान्त्रव्याः क्ष्याः व्याः क्ष्याः व्याः क्ष्याः व्याः क्ष्याः व्याः क्ष्याः व्याः व

^{🛈 (}न्न्यः पत्ने प्रते प्रतः पहेन् प्रेयः देवः ५६१)

ब्रूट्रपञ्चर् ल्राच्या ह्रार्याय द्वार्या ह्रार्याय ह्रार्या ह्रार्या ह्रार्या ह्रार्या ह्रार्या ह्रार्या ह्रा क्ष्याह्मात्राच व्याप्त्रिया हिलाय हेला यह न्या हैला स्व क्षेत्रया इ.५५ थ. घर्य. दे. यद्र र. विया विया न या पर्वे प्रश्नेया विया पर्वे या য়ৢয়৽য়ঢ়৾৾৻৽ৡ৸৽য়ৢৼয়৾য়৽৻ৼয়য়৽য়ৢ৽য়ঽ৾৾ঢ়৽য়ৼ৾৻৽ৼয়৾ঀ৽ড়ঢ়৽য়৾৽ঽ৾য়৽ इट.शुर्-ख्रिचयाग्री.पर्चायर्द्रेययाश्चायद्वरायद्वर 4.22.1 ğब रसुकाम्रास्यान्यमाः श्रमः म्यान्यमः विवासक्ष्याः श्रीकाः केर् स्र <u> ब्रेन्-सर-मु-न्धॅब-छ्र-र-रे-न्द्र्म</u> क्रेन्<u>ड्र</u>-रो नगद-ब्रॅब्-ध्रे-ग्रॅब्न य-द-क्र--त-व्यत्स्यः नहिंदा च्यानी दे हेरा नगतः हेर्नेया **इ**ब्रान्य:भेष:र्व्य:बुन:न्तुष:ग्डंट: न्वब्रानञ्जूष:ग्रु:र्व्य:न्तुट:श्रु:७व: तुःकुःर्दरःव्वःदग्वःपग्वःश्वरःशुःर्धगःव्वरःह्राःपद्वःग्वरः। । चॅ केव चॅर पर मॅर द्वाप क्षित्र ता स्वापा श्रीता वर्षे व तरी 'च्या तरी 'चुर'' बी-बवराःईत्यःद्वेत्यःद्वे न्द्रपदःश्चे श्चे वेर्याः वेव ग्तु वर्ष्युं तः पदः श्चें वरायुत्यः पः वी पूर्-र्ह्स्ट्याग्री, यहेब.पंग्री, लूट्या पारी विषया पड़ा पा कुबे. तूया वाडी विषय हे। डे.क्रॅब.क्रेब.वी.स्प्र.ली.बी.क्रुब.त्रुप्र.टे.स्व.ट्यम.इयस्याप्तस्या इंदर्भेश्वरायद्वरायायायायायायाच्ये वर्षेत्र क्ष्या द्वराया । विदर्भेदे मुलःरूटःस्विष ग्री-र्वेद-र्ववा-स्वाकः सग्रद्धाः स्वीदःर्वेदः । मुद्रे म्बर्का द्धं ता श्रेन य। "अवे या ग्राया पर प्रमान में न

① (বৃশ্ব'নদ্বী'নবী'স্তুহ'নইব্'ন্ন'ইঅ'563)

स्ति म् १ क्या प्रमाय के स्ति प्रमाय के स्ति प्रमाय के स्ति क

त्म क्रूर् छ ग्र क्री त्रायम है द्र्या हु क्रूर मर महे द मेर् स्र र्मारान्यतालयानवान्ता नमारार्ह्ववान्ययार्थे सुदारस्य विराह्य कुलामनेतामा केव अकॅगा हुला देवा में नित्ता हुंगवा हु गवा ता नित्ता हुन नरानग् नेवा क्षुवा में रा भन् क्षे वा ग्रीवा हेवा है। तहा वा महाकेवा **অছু**এ.য়ৢ৻৽য়ৢ৽৻ঢ়ৼ৽৻ঀৢৼ৽ঢ়য়ৢ৻৽৻ৼৼ৽ঢ়য়৻ঀৼ৻৽৻ৼৼ৽ बरः मुदः पङ्गप्त मुद्दः क्षृद् . खुदः बर्ख् रः सुः तः द्वारः रेवः वेवनः सं ' घुदः सं ' । हरायर अया मुर्ग र विय क्षेत्र वह स्था मुर्ग प्रविष्य नित्र विष्य ने वसारे दा बेवा बेंदा बादे न मृदा क्षेत्र वदा रादे । द्वादा देव ददा वी विवाधिते सुर्वे वर्षे **ॼॗ**ढ़ऀॱख़ॹॱॸॕॺऻॺॱख़ॖॱॸॴढ़ॱॿॖॕॿॱॸॣॺऻढ़ॱॸॿॣॿॱढ़ॾऀॿॱॸॣॻख़ॱढ़ॼॕॗॸॱॱॱॱ न्श्रेन्यायात्र्व्यायाः व्याप्तात्र्यात्र् **धे**रः तमेवः ग्रेराग्वतः वृदः नृदः। स्दः नृदाः श्चेरः ग्रेरः। न्नवः पठ**रा** ्रत्ने पवि ने न्र न्सुर ने वा पत्र ति ति वा प्रे ने व्याप्ति । हंवायडेंद्र कुर्वेद्रिव विदेश रहार्रेयावयाहेया वर्षा र्वेद्र द्रम इसरा ग्रद्धना सर में राद्यना स्रदाय सर स्रदा श्रीता स्रवारा स्र तहरानुन् न्या मे हिया व्यक्षा य में रायानुन् है का गुरा। इपि.धिप्र. 型な. 大八. मुबारमावानु न्यं वृत्ती धेर बेर पान्या ग्राम्य व्यापी

२ अगः २ घॅ दः दश्चा स्वरः देशः यः संग्राया गर्डे : ५ गः । व शः तु रः ऋग्रा ग्रेयः नगदः व्यवः नगदः नवे नदः व्यवः हुः वनयः द्धं यः व्यः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः विवः निवः तालक्षात्ररात्वम् तहरा द्वितात्रत्वन् वम् ग्राह्मा त्वात्रात्वरा हेत् न्दा न्स्रान्यन कृतवा केवा क्रेनवा तहन छेन् सर वन स्वा क्रिन क्रेन **ऴ्**ष्येय. मृत्या अर्. तथा चलाक. या चै ८. जू ८. वथा खे. जू ला पर्या वी वा घरथा. **इन** (स्व : के : द में राधर : दे : में राधर : व : द में राधि : द में राधि : दे में र बिराबरामान निरायत्वा गुरा। न्वायाचे नवा विवास विवास के र्यम्यान हुन् भेषान् मान तु नहीं ना ने स्निन्य में राख्य में किन द्वया केर्-महॅर-मवर-पर्व-केव्यावि-र्धयाः देव-र्दा कर-छ्व-स्मायः न्धॅव-न्यम् हेलाथॅर-इयला या तर्हे नः परः शेलान् मानः तु पर्ना ततुम ने नवार दे रुटा छुव र्रा । अया पवासु ग्रार में हेवा वर सुव हैवा प्रते न्यतः द्रारे व र्षे व व कुर्या कुरा देन कि न्ये व न्यवा द्रवतः वे वा र्गरातु पड्रार्टर पड्रा हेरे हिन्स्य । कुर्पे दास् छै स्यया दर **धेन्**ॱसॅल'नष्टुर'ग्रील'नग्' भैल'ञ्जुद'र्य 'दल'म् ह केद'ग्री 'धन'हे 'द्रमल'''' **ৡ**ঀ৾৽ঢ়ৢ৽ড়৾৾৾ৼ৽৻ৼ৾ঀ৾য়৽৾৾৾য়ৼ৾৽ঢ়ৼ৽ঀ৾য়৽ঽয়৽ঢ়৾ঀ৾৾৾ঀ৽৻ঽয়ৼ৾৽৻য়৾য়৽ৼৼ৾ঀৢ৾৾য়৽ द्वाः नरः नयः नृत्रदः वरः वर्षे रः तः विः नयः दर्गनः क्रेवः दर्शे तः वर्षु रः सु क्रम्या बेर् परा र्णुक् र्धेर् ज्ञान मज्रुर रवा रेट रे सुर खरा

व्यान्ययम्भिवः भव्यायः श्वापः स्ट्रिन स्रोतः स्वयः श्वेः श्वापः स्वयः स्वयः श्वेः स्वयः स

6 ୍ ମ୍ୟ, ପ୍ର୍ୟ, ଅଧିକ, ଅଧ

ষ্ট্র-শ্র. 1488 চুर.খ.শ্র.পুর.পুর.পুর.পুর.পুর.পুর.পুর.পি. पापबि.ययान्यूर्याच्या प्रायाः स्थापाः स इयल'वल'गवत'वर'पकुन्'नल'धुल'तु वी झ'यन्र तका में र गिनु र ... न्ता व्रायाव्यत्यरावराक्षेत्वार्ष्याः व्यवित्यवाच्चे व्यत्यत्वा वर्षा मॅंर-धुंन्य दरायदान्ययान्दर्थर अस्ति। स्वरं वित्रायदा **ঀ৾য়**'য়**ঢ়ৼ'**য়য়৾৾৽**য়ৼ'|** ৼৼ'ৼয়'য়য়৽ৼ'য়য়ৢঢ়'য়য় <u>ইব-ৡ৴:৸ভ৴য়৾৽৾য়ৢ৾৽য়ৣ৾৽ৼ৾৾৾য়৽৾৾৾৾৴৸</u>৽য়৾ঀৣ৴:৸য়য়য়ঢ়য়৸৸ঽ৽য়ৣ৾৽ [मरा गुलुर:न्न:न्यॅव:क्वाबाववा:गुर:धॅमवःम्हेग:वे:लु:मर:मन्देव: त्र्वाग्रीकान्नेत्रप्तान्तराञ्चराञ्चरात्रपत्तान्त्रपत्ते । दाकार्वाविका <u>श्रृषाःप्रम्यःश्रृपः लःलेवायः हेयः हे न्हेन् मेनः ज्ञ</u>ुयः ग्रीः लगः नुः प्रम् ः स्नृम्यातुः ववःक्रेन्दराग्चेन् वे बुका भैरा। मृता हे रदन् दें ता ग्रवा वका देशे मा ধ্যা ব্রুমারমার্ক্ত ব্রুমার্ক্ত ব্রুমার্ক ব্রুমার্ক্ত **ড়৻৸৽ঀৢ৽৻৸ঀ৾৽৻৸ঀ৽য়ৢয়৽৻৸৴৽৸৸৸৽৽ঽয়৽৻ঀ৸৽৸ঢ়ৼ৽৻ঽৢ৴৽ঀৢৼ৽৸৽ৼৼ৽৻ ३**-दस्रक:२वगःषर:ऍर:पदे:कु:२ऍ द:इवष:२८:ष:पग्रव:ग्रुं केट्ष:" मन्यवार्ग्यायस्य स्वर्ति । दे र्वे व व रवराम र प्रमेश परिवा

श्रेषरामर्य नगरा अंदर में छेर सिर सिर स्वा स्वा सिर्य प्रवास नियान माना रिया क्षेर् त्यूर ग्रीय विर हे ह्यूं र तु निहर है य छय ग्रदा विर प द त्या न्त्रम्याम्बर्गान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम् <u>र्बर पर महें दर्ज</u>दे ब्रा थेग प्र हें रापदे दें दर्दे रा रेट.र्थ.ब. <u> न्यम् न मृतः मैदा के त्याः मृत्यम् मृत्यम् मृत्यम् न मृत्यम् न मृत्यम् न मृत्यम् न मृत्यम् न मृत्यम् न मृत्यम्</u> नरुषात्त्री,श्रेथा.प्रेथा.कु.में . त्राचा चित्रा.क्ष्या.च्या.च्या.कु.कु.. लूट. श्रुर। प्रध्यः लब्धः सार्वेदः सूटः यः अक्षयः सूटः यम् स्ययः पूटः न्यातः गृष्ठेतः वत्रः क्रेट्रतः श्चेषः अहं नः क्षेत्रः न्यातः व्यातः न्यातः न्यातः न्यातः न्यातः न्यातः न्यातः न्यातः गृष्ठेतः वत्रः क्षेत्रः श्चेषः अस्तः क्षेत्रः व्यातः व्यातः न्यातः न्यातः न्यातः न्यातः न्यातः न्यातः न ने .र्चे ये केटे .ल.ही .कवा झेट स्टिंट हिट , ये बेथा जेट .कुट था ही वा ৠৢঀয়৾*ॱ*ড়৾৾৴ॱয়৾৾ৡ৾৾ঀ৾৾৾ৼড়য়ৼ৻য়ৣৼ৻য়ঀয়৻য়ৣৼ৻য়ড়ৼ৻ৼ৻য়য়৻৻৻৻ <u>बुक्षःळॅ</u>न-सःसॅन्-र्ञ्चत्यःर्वेन्नकःसे:ने न्यह्यःयर्द्रद्यःन्यः के:बेनः पर्त्रे कःहे। नदी वर्षे व म हेन थे हे रा मुला वर्ष व ने र न न तय सुल हु के र हिंदल इषः देव वि'यः देरः क्षेत्रः क्षेत्रः स्वितः हुरः बतुतः वृ दव रः नवा नहरः ୶ଔ୵ୄ୶ୖ୶ଢ଼୰୷ଌଌ୶୯ୄଌୖ୵ୢୠ୶ୢଽ୵ୄୖୄୠ୵ୢଌ୶୶୷ୄୢଌ୵୷ୠ୶ୢଽ୶ୗ देन्-वर्षाःग्रुर-मॅन-कुत्पःग्री-ब्लॅंब-ब्ले-ब्ले-ब्ले-क्लेन्-क्ले इट.प्रम् स्राचा क्षेत्रा क्षेत्रा श्री मा स्रोता ダイ・英山・単・イイン *न्बॅशन १*न् ळे बॅंन कुल व्याप्त व्याप्त व्यापन । कैरल'न्व'हुर'व' इंदर्स्य वे अ वेर्प्स के के त्र के किर्प्स के के त्र के किर् श्रुवयादर्दरः

ॐ८ल:बॅल:ब्रेन् अन्:हर्-हु-वॅ**र-६वॅ द-**२व्य-इयय:प्यय:ब्र्य बै....**:** बहुद र्बा देन हुर पर बर्देद हैं रनद पद पद पद पद प्राप्त है र वर । "ৡৢ৴*৻ড়৻ঢ়ড়৴৻ঀ৻য়৻য়য়য়৻ড়ৼ৻ঽ৻ৼৢয়য়৻৻ঽৼৢ৻য়য়৻ঢ়য়ৢয়৻য়৻য়৻*য়ৼৢঀ लट.য়्रेथ.पहच हेब.बेघेब.टंग्रे.जा चै.ट्रंचय.तथ.च्छी च्टं.प्र.चय. त्रुर:बेर:मःत्रुष:उरः। त्री:तुष:मु:वॅर:म्वेष:य:रे:दॅप्य ग्रे**:** ৻ᢍᠵ**ॱᢠᢅ**᠂ᡥᢅ᠂ĕᢩᠬᠨᢋᢐᡕ᠊ᢩᡠᢅᠸ᠄᠗᠂ᠵᠸ᠇᠋ᡎᡎᢋ᠂ᡠᠸᡃ᠍᠊᠍᠍ᢍᡕ᠊ᡅᢆᠸ᠂ᢩᠸᢅᡎᢐ᠇᠊ᢆᡚ᠂ᢆᠪᢋ᠁ पश्चिताहै केंद्रिक्ष चुकारुद्रा कुर्द्य दाइबकाञ्चरवाद्रिकर पश्चित रदान्यपरायाष्ट्रवाने वान्यवायाष्ट्रवाया वान्यव्यवारी हिंदा तम्, भूर.च. द्वारा त्वारा द्वारा द्वारा द्वारा द्वारा व्यापटा चु राव टायेटा प्र ৼৄঀ৾৻৸৻ঀৢ৾৾৾৻৸ঀৢ৾৽ড়ৢৼ৸৻য়ৣ৾ঀঀৣ৾ঀ৴৽ৡ৸৻ঢ়ৣ৾৽য়ৣ৽ৼ৾ঀ৽ঢ়ৢ৽য়ঀৢৼ৽ঀৄ৾৽য়ৢৼ৽ঀঢ়ৼৼ৽৽ शुःरोर-र्ने कर्षाञ्चेयायस्यान्रेर्वा यहर्-र्नेयाल्यायत्न व्रवर् ॅमॅ**र**-इ्र-क्रेश-सॅब-क्रे-क्षुण य:न्टा के-इ्र-क्रे-बर्ग्व-रॅब-श्व-सुब-য়ৢঀ৾৶৽ঀ৾৾ঀৢ৶৽৸৽৸৶ৼৢঀ৾ঀ৻৽ড়ৣ৾৾৽ৼয়ৣ৾৽ঢ়য়ৼ৾৽ড়ৢ৾ঀ৽ঢ়ৢয়য়৽৴ৼ৾৽ঢ়ঽ৶৻ড়৾৽৽৽ **ॺॱढ़ॺॱॺढ़ॕॸॱॺढ़ॸॱॸॕढ़ॱ**ॻढ़ऀढ़ॱऄॺॱॸॻ॓ॸॱॸॖॱढ़ॾॕॸॱढ़ख़ॺॱक़ॗॱॸॺॕढ़ॱॱॱ **इय्यावयान्त्रेन्** क्षेत्रेरम् मृतःक्षंतर्नर च ठ्यायाम्यातानुः केर्याया ह्यायाः र्रः क्षेत्र केषा हॅरा क्रिन् खेषाया शु तस्या हॅरा यहन् र लॅटा। "० वेषा नहार तत्व केरलाश्रं ताचेना शास्यता ह्रान्य रात्र राहेला चाया वात्र राहेला चाया য়ৢৢ**৴**৽য়ৼ৽ড়ৢয়য়৽ড়ৼ৽৸ৼয়য়৽য়য়য়৸য়৽য়ৼয়য়৽য়৽ঢ়য়**ৼ**৽

① (বৃশ্বাননী নের স্কুন্নেইন্ ব্নাইন্ 1593 - 594)

लु धिना सुता हो। न मान सन्तर तथा में राजा सुता न राजा हैना ही सु यतु व वर या यापव छेव राष्ट्र या या या या या या सिन व से व से या वेषा न रा नवैवः कुः न्येवः ळेला नगायः त्रेवः न्यायः नवैः नः न्नः। अन्यः न्**येवः** ৡৼ.৾৾৻৾৾৾৽ড়ৢৼ৵য়ৢ৸৻ঀৢৼ৾৻৸য়ৼৼ৾৻ৠৢ৾৾৾৴৾৻৶ঽ৻ঀৢ৾ৼ৻৸ঽ৻ৼৢ৶৻৸ঽ৻ৼৢ৶৻ युरः बहरः में राष्ट्रिषः र्घरः द्वरः क्षेत्रः क्षेत्रः तुः बढ़ बः दहें बका **वे**व विद् न्यं व के खुना भा है 'अशॅ व में व खुन सुव हैं नवा है 'हुन हैं 'मनन র্ভুন্ম:ব্রিঅঅগ্য क्रिट्याः श्रीयाः साम् क्रिक्ता सक्ष्याः श्रीयाः श्रीः व्यापाः श्रीयाः स्था न्ययः स्वः न्वः शुपः न्दः। वः शुक्षे वर्गेवः गिष्ठे रः यदि रः पठवः न्दः। मॅन:धुंग्याव्याकेटयाञ्चेग्।के:ब्रु:न्ट:केट्याज्जुन:न्वग्:न्यॅव्:जुटः...... त्रेयः रु. मॅं राविः क्वयः कुरः इवः यः हेनः रूरः। मॅं राविः अक्वरः म्वयः <u>च्याचे च्चाये स्वाप्त प्रतास्त्र मान्य स्वप्त स्वप्त स्वप्त स्वप्त स्वप्त स्वप्त स्वप्त स्वप्त स्वप्त स्वप्त</u> परुषःन्दः। परःश्रॅषःग्रेन् के'त्र्रायातृ न्वरःमः ह्वयाः श्रेन् ग्रॅटः व्यः য়ৢ৾*ॱৡ*ॱ৻৴৴য়৽ৼৼ৻ঀ৾য়৾৾৽৻ৼৢ৾৾৽৻য়ৢৼ৻য়ড়য়৻ৼৼয়য়৽৳ৼয়৽য়ৢ৾য়৽৽৽ *वेव*ॱबळवः पश्चर् : बर: चुरा धदे : ययः गृबे : गृष्ठे : गृवर् : वे । वित्रः द्वे गृष्ठ वयाचेराव। पराञ्चनयानेषावयानेराष्ट्राचेयातवया ह्रात्यापदी मुनः न हेनः न न न प्राप्ता में न में न में न सह व र हो या या न व व व व व व

इराईयान्दा मैंराज्यारी है हारहाया वेंदावया यहा नहरी छता. क्रेब्रधीयायन्यास्या स्वायरानयाक्रयाहेरानुयाधी तया गा स्र न्दा मॅंतरत्य क्ष्रा बेरा महिताया तहं त हिरा न में ता हुं या यता बदा हुता उदान्यवाद्मित्राचित्राच्या मर्द्राष्ट्रवाद्मितायान्यम् देता न्दःह्रान्जः र्वायात्वयः दहेदः वेनः वनः नव्दः वुदः वरः वहेदः वैरः न्यम् बेरम्हॅराम् बेर् हुरावेषान्य। न्युरायहम् चुरायहै वर्षातुरःगृष्ठवाद्यरः दरः। र्रा ४रः धरा हिरः द्यावा क्वेर् ग्रेरः परुषार्चनः चुराप्यारे 'त्या छेराश्चया त्र्वेषाळे स्राय्ये रे ता हु 'रेवा हु 소문대는, 역소. (교육회·대조조·등·다옥·국·) 회학·단환·국·철·소·교육도... श्चिमः र्वेग मरी राषः न्रा र्वं प्रिये न्ने सेन् येव श्वी स्वया वया में राष्ट्र च कि. विद्यः विद्यः क्रियः क्रिया विद्या इर-प्रयामञ्जालयाः भेषान्त्रीः विषान्ता क्षान्तान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्रयाः विषान्त्रयाः बै:ळॅन्:द्धंत्य:र्सेन्वराय १८, त्र्याय:४८, प्रे. त्र्यंत्रः द्धंत्र्यः वर्षा दद्य ॅब्र्रल: वॅन् विषय: पङ्गेष: ब्रेन् : ख.च्नेर: विषय: द्वेर: क्रें य: च्वेष: प्रेन् : न् र न् र ने दे <u> चॅद्-ल-पङ्गॅद-तर्ह्रम्य-धेद-र्ह्हल-द्र्मः त्र्याम् म्यूर-ङ्गेर-मी-तर्ह्दः</u> बर-बर्-ध्य-तुन्न-दन्द्रुद्द-दन्न-स्र-दन्-स्र-दि-दन्-सुन-चेर्-प-----यय। ग्वयानङ्गराज्ञारा वाक्रवारा देश वहूरा निवाल निवाल वाक्रवारा वाक्रवार वाक्रवारा वाक्रवार वाक्रवा लयर मुल रे दे र्पर भेर ग्री में व्या रेव मर अवत महिन हु प्रामा ॕॳॖ॔ॴऄॱय़ॸॖॖॺऻॱॹय़ॺॱॸ॓ॱॸऀॺऻॺॱऄॖॸॱॸॿॕॺॱॸॕढ़ॱऄॸॱख़ॕॺऻॎॿॕॸॱॿॖॺॱऄऀॱ हैं क र क र स्ट : बेद : बेद : बेद : क्षें द राया थाया। बहु : यह द : बेद

द्धला महाराष्ट्र तार् वार् राष्ट्र न्या मिल्या मिल् इट:रटा विषयः ५६८ में १ तम् १ तम् १ तम् १ विषयः रु. य. चरा मिल विन वी. में हेना. नदि. वी. में वा. गीव. व ब. ने. लवा ही वा क्रर. ग्रै-वियायह्याविषयायविराग्नेन् सुयाया ने देनवारी यहेन् के में र ब्रेन् हुंबा मॅनाव वया यहें के खुं कर (है के मुब्रून) न्दा संनेदा (न्डीवरहेर) याम् नेवर ब्रेया ड्रयायर हेर स्रमा धरा धरेन विन्या स्वर য়ৢ৾৽ঀৼৢঀ৽৻য়৾৽য়য়য়৽ঽ৾৾ৼ৻ঽ৾৻৽ঽ৾৻৽য়৾৽৻ঽ৾ঀ৽য়ৢ৽য়ৢঀ৽য়ৢ৾৾ঀৼ৽৻ৼৢঢ়৽৽৽৽ ग्रॅनियालि.लीयाड्र.पर्श्चरप्रधार्मातास्वीरयाक्षेत्रयात्री.पर्ध्ररायाः <u>नश्चर-त-क्रथान्तीः श्वथाये देः इस्राधर-तस्वराधान्त्रम्याम्याः स्वराध्याः स्वराध्य</u> ष्ठे'बदे'प्पर'दर्देव'र्ञ्च'गृहर्'दळद'सुय'दषग्वार्'याञ्च*द'रवा* न्त्रचेत्राराङ्क्ष्यातङ्क्ष्याच्याः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स् बहिब्नविवाराक्रेव्यार्था अक्षर् अक्षर् अव्यक्षि है हिन्दि विवासका मान्वर के स्वाका के.कर.मूर.रि.यंथ.पूर.रे.क्ंर.मूपानियाता. গ্র.অ.অঞ্চ্য.ধ্রনথা ग्लद अन्वग्नह्या र्ष्ड्ररलम् राया केवर्षे नुग्ला विवादका दरावी सः क्षेच्या. ख. य. यक्ष्यया. क्रंट. ए. यू. प्र. च. क्षया. न्या. या. या. या. य्या. प्या. प्रता. प्रता. प्रता. प्रता. नयास्या म्या विष्या यह स्वार म्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया নমূব ইন न्यम् पया सन् न्तुरा न्दर व कुन् न्मेरा मुनेरा 회.보스.디네. मह्याग्री हो त्या यहत न्या ता यह परा न री प्रायव र यह र वि केर

त्युर-रॅब्जन्ज: देवः झुद्र-सं-न्दः। वःश्च-वृद्धेवःवयः श्चवः वानवयः मञ्चर मॅं या तेर् या ततु या चुया क्रॅंबा या लेया लु - वरा यह र् । " चिहु ता यत् र पद्यर मुन्न र केरे में न हर निविधा सं स्रे से स्रायन स्रायन स्रायन स्रो स्र लग्याञ्चन्याची प्रवास माने दा क्रुन्य के त्रा विष्य स्वाया मेर् नविरःश्चे.क्चाःक्षयाःवयःलात्वयःवय्वित्यःच विरःक्षे.वि.च वर्षःपः न्दः। ञ्चःबः बृः न्यरः नः न्दः यः नग्ययः ग्रुः श्चः छनः ह्ययः व्ययः व्यः प्वः छ्वः त्यः मृत्येन् व्यदः व्यदः व्यव्यः व्यव न्यर हैर ने तह र बर स्र र ररा इर नय यय से हर पर र या है। ॡुद:बर्ॱके·ग्रय:ग्रु-ॅर्दर कंद्र:ह्याय:दे-ऍ्द्र-ग्वत:दद:तग्रय:दु"प्वण यदेः मॅरः वंरः केरकः रवः चुकः यदेः केवाः वविः वकः कः वङ्गरः **वे**वः ववः तुः য়ৢ*য়*৽ঢ়ৼৢয়৽য়ৄৼ৽৸ৡ৸৾৴৸ৄয়৽ৼৢ৸য়৽৸ৢয়৸৸য়ৄ৻৽ড়ৢয়য়৽ঢ়ৢ৴৻৽য়ৢ৽৽৽৽৽ वियातर्भगास्त्रास्त्रास्त्रं स्वाक्षेत्राक्षेत्रास्या याच्चित्राध्या यहेन्यास्त्रा तुः देवः वर् वृङ्गः कः स्टावनवान्दातुनः चुवा चुवा उदा। ज्दा स्टा हे नवा **कै**रलः नॅवःशः ञ्चलः र्ह्वलः केंद्रः भूनलः वेलः न् गृतः तुः येंद्रः पदे : केव्यावदेः : -*न्यवः* स्तेवः न्रः। ठरः हुव। वैवेः बुः र्यम्यः वः न्में रयः नर्भेनः बुः <u>ᠵ᠂ᠮᠵ᠂ᢆᢏ</u>᠊ᠬ᠇ᢋᢆᢡᢩᠵᠬᢧᢩᠯ᠂ᠬᢢ᠄᠍᠍᠍ᢖᢋ᠁᠘᠘᠘᠘᠒᠂ᢐ᠘᠒᠂ᠬ᠗᠒᠗ᢩᡱᢆ᠂ᢩᢔᢆᠯ᠁ वियः इंट्या ग्रे मवस्य ईयापठरा स्यायतुषा धरा । कु द्यं व इयया वया वरावगुरकावेदारावध्यातु वना क्रेन्या ग्रेन्य्ने का नेरावा

द्वेत्व र्रुवःक्र्रायवान्यवान्यान्याः धर् द्वेत्वन् सुःविनवः क्षाः यन्य वर्षा अवतः वर्ष्टरम्वेषान्ते त्यात्वः देवः दिवः म् कर्रा म् मु रेषः व्रिं व्रिट्याम्डिम् तार्च् कर् प्रवि प्रमुत्या 회원소.등.납화, 회신. व्यात्मीन्। स्वयामुद्गान् सन्याम् वर्षः प्रमान्य विष्याम् । त्यान्य वर्षः स्व बर.च वर्-छ्र.च वर्-लब्-बर-व्यत्वयायवर-वर्-दह्ना र्स्रवि:श्रृंत्रः वृद्दः वृद्दः "क्रैंद्र्यः क्रेव्यः क्रेव्यः क्रेव्यः वृद्धः नम्रीतः स्वायाविष्याचेत् यास्याच्याच्याः क्षेत्राप्तः स्वायः स्वायः स्वायः ग्रै-महर्-देव-ला पर्-स्वे-दर्ग-रियायास-स्ट्रायदे-हे-बर्-श्रया चकु:सथाय: वॅन् क्याक्त्रावरात्य्याः क्ष्र्न् चुराहेयान्वरः क्षेत्रः स्वायाः । याः बाद्यायाः क्रिंद्राचा विषयां क्रिंद्राचिताः ज्ञाद्याः याः क्रियाः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः त्याधिरार्श्वमा छेर् च रूरा। केर्यामा केवा स्रोते वरा तुः हरा मवियानमा चविते त्रु देव तद्दर मूंदर मृद्याय स्टिन् ह्रेंद्र द्रम्य ग्राम्य व्या उदा है कि नवःश्वयःहेवःनवेदयःसःन्दःध्वयःबद्धदयःगवुदःगैःश्चः कंनःवेदःश्चः द **ॾ**्रम् न्युत्रक्षेत्रक्ष्याः केत्रम् क्षेत्रक्षयाः प्रत्यः सुत्रः सुत्र वयाकवाःवाः च्याः हेराः चेरः ने वरः ने वरः वर्षे देशे वयाः वयः वयः वयः वर्षः व स.लुब. बुब. पर्इ. वे. बोयल. प्राप्त. खुबा. जुब. खुव. ख्वा चुर स्वयः तबायः न्न'यव हुव न्दा पर न्यद ने बेद्ध दे दें न्यद्य न्दा वि देश भः द्वाराक्ष्याः स्वायाः क्षेट्याः विष्यः स्वायः विष्यः स्वायः स्व *ख-*८व.इप.पह्न.८<u>म</u>्य.वैट.नर.सन्य.पहेच.कुट.कु.वि.कुट्य.वि... यासुवै देव या पर्ने मेरान्वे या वर्न वया श्रम् श्रम् कुव प्रह्में स्यान्वे या ""

मते मु न् मं व । नवा व व विवय पन्या सर्न ने दर्वे अकव विवा ल विवय । न-न्दः। इत्रायाकेन-ठवानेन-पितावीक्षात्रास्यायानीक्षात्रान्ति। र्नेवाबेरायाबाबायहण्यातुरा। वियान् म्याताहारे वायर्गा वाबुकायरा क्चि<u>त्राम्यात्रास्य वित्र</u>स्य । स्वान्य वित्राप्त वित्राप्त वित्राप्त वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्र वि तर्मन् मनका क्रेन् : न्वें का चेन् : निव्न स्वावि : स्वावि : विवायि : स्वावया चेन् विवायि : स्वावया चेन् विवाय र्यतः दः रेवः र्दः। वर्षेदः रुदः वर्षेदेः शुः मृत्रेयः शुः उदः। यद्यः सु-ग्राम् अयानव् इयान् वेतान् यवन्य प्राम् शुया हु । यदा वे स्वाम् मा **ॱ** इ.प.कुराय, पश्चेर, रेब्र्य, त्राय, प्रम्य, श्चेर, श्चेर, त्राय, प्रम्य, व्यव, व्यव, व्यव, व्यव, व्यव, व्यव, व्य दर्शयातुः क्रिन् शॅराव्या नेयान् ग्रान्त्रा प्राप्ता । "® वेया ग्राया प्राप्ता व नविवायहरामु न्यवासु अयानवान्ता ग्राज्यानवा यहा ५ व **क्षरतः**विरःतम् वक्षवःतम् रः कुः गः म्रारः ग्रेकः न्यायाः व्यवः गः र्रः। बद्धरः बहुना कु : धेना में ना हे : यह ना ने वा : मेन : यह मा सा प्त.य.पे.क्रे.पवे ४.क्री.पब्रू ४.ब्रे ४.व्य.व्य.क्ष्य.व्य.पय। पर्वे.ट्रू **४**. नदःस्र-रन्दर्विरम्बर्द्धतः द्वर्यात्रात्र्वरः स्टः हेर् छेषः ग्रुटः अहिवः इत्राचित्राच्याः हेर्ड्यालयानवर्षेष्याच्याः सूर्याः क्रवाः **घॅर-५वॅ,५र्च्य-भैनय-वब्र्य-१००५-१विषय-२२वे.१-५४४-४** धवः गरिषा दर्ने सं वयः पत्तुर सं गवरयः कगयः गुतः

① (ব্ৰব:ন্ৰ্:ন্ৰ:ভুব:ন্ৰ্:ব্ৰ:ব্ৰ:640—641)

बु.इ.न्ह्रिट.र्मूय.बुय.नेशिटय.तर। हेश.य हेप २४.५य.नूर.मैल. लःश्रवः लुः चेन्ःञ्चः वेषः यहः श्रेः वेषा क्रेन्ः गृहें हः गुरुषः यः धेनः विष्नः ग्रेः लवातु ने ने वा हुट हे ला वे वा तु न मारा हे वा के खेला न हा। ने इं स्व क्रे.इं.५मॅ.क्रें८.७४८.क्रेंपय.मूच.शु.¥ वया.त.में.पेत्र.मू.पेत्रय.यूप.प्रूंत.त. त्त्याः हे व हि न् म् यान गायः श्रुच लु । छन् । श्रु गाम । अवान व रशु उर विवादेय येनय सुन व रन र र । वहर सु कं न कु र ये व रे केर **ॐ**ག་ᠴᠬᡃᢗᡁᠬᡃᢍᡆᡃᢋᡭ᠊᠇ᢧᢩᠬᠨ**ᠮᠵ᠂ᢋᠵ᠂ᡷ᠆ᢅᢄᠵ᠄ᡓᠮᠵᢌᡤᠵ᠂ᠵᡥᢅ᠊ᠬ᠀ᢐᠬ᠁᠃** *॑*८तुषाः धरः यहे बाक्चः द्वां वा वृदाः **उ**दाः थेः द्वां वृष्ट्या वृदाः यहुषाः वृदाः य वितः यद्धवतः लुते : श्रेन्द्र न्यः न्दः श्चन्यः क्रेन् : ग्रॅंटः व्यापयः क्रुटः · · · · · (पमुर्षः) नयःध्रयःतुःकेदः पष्ट्रं रक्षः यहंदा "① ठेवः नव्ययः पः द्रः । <u>इट.प्रमूपु.धि.च्य.ची.रिया.ध.च्या.घरटा.क्या.पर्वथथा.ट्र.क्री.यी.कर्. थीया...</u> पक्कु :बबः पः त् हुं नः दस्या **में न**ावनः हेलः हुन्। **"ने :वलः बे** : पकु **रलः पनः** ॺॕॖॸॱॸॱॹॖॺॱक़ॖॕॺॱढ़ॺ**ॸॺॱॸॣॸॱॸॸॺॱय़ॺॱॺ**ऻॺॺॱॸॹॕॣॺॱढ़ॾॺॱॸॗॗ**ॸॺॱॱॱ** मॅद्रायानम्यायाकेवार्यमायकवारातुती हेवाकराततृतावी जामी राजाहेना परुषा "@ रेबापविवाक्कान्यं वास्त्र स्वरान्यः स्वरानुः वरः यरः पश्चिनः धः क्रिट्यात्त्रीयायाप्तीः सेम्यास्य स्टास्य क्रेन् स्ट्रां वसारामायः स्रेनः र्वादःपदी पः रहा चित्र अक्ष्या ह्या । विद्या स्था पा **すた、**なん、うず、こと、ないない、「ちょう まっきん。」 するたい

② (ব্ৰবাননী নেই স্কুলাইব্ বিনাইবা 652)

बर्दर्यं व अराव रव सर रेग्न या ने शुक्ष पदि हें ना न्रा के वा स्वा में म् अर्रम्यार्थम्यार्थः न्यार्थायः र यः र द्वायः य द र । 551 ग्रंट:बर्द धर्:बंद:चर:चम्द:बेरा:बंचरायदे:क्रॅर:र्गद:वदै:....... "मूर्-पर्वेचयालयानवःसि-धै-धै-चेष्ट्रेयाकुरान्य-प्रमास्या DAI मदे नेयास्य कु विषा पु मिहें मा कु राम गाय क्षेत्र सुमा विषा कि स्था क ग्रै'न मृतः नश्चुरः हॅम् रे 'देम्' इं सः हुंतः श्रे ॲंटः नदेः हें - र् यः हुन् - र् मृह्यः ।" महारतः धर विर ता ते विमा होन धरे वि व महुता लु महर तर्म ग्रहः। **"**र्स्व-तु-वद-त्र्वव-क्रेव-प्रिते-त्यय-ह-तेव-ठव-वया नॅद-य-क्रेव-घॅर-क्रु**द**.खे.सीयाः चीनः प्रयोगः प्रयान्तः विष्यः विषयः यहर् "ा द्वाराया विद्या "द्वारा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा म्बर्या रुट्-बिहुद्-म् नेम्या केद्र-चॅर-५६ नुया ५६ नुट्-मी मदया द्वा लु च-न्द्रा श्वम्राहेते: श्रुन्-चङ्ग्यः ग्रेन्-चन्नावः भवाः वर्षः अर्थे वः हुद्रः विवायहरादेवा तथव्यायाळेवा हैराहेते.रराव्हेवाज्या न्परः मध्ययः ठन् विवासयः ग्रुटः अयः पवः गृहेयः यः गृशुटः व वः यहंनः ः र्वन्धी सु याता श्रुं र छ । पहुं न से न तर तर वे त्युद्रलः चरः मु 'वया'लः वेषरा द्वेषः चुदः रॉदः घरः त्वु वः वदः ग्रीकः श्चः ' विश्वयायात्र त्रुन् " ७ ठरान्ययाञ्च क्रिन् विन् विन् विन् विन रॅं**व**ॱ**स**न्ह:५२'५वंबःवैषःयदरः"घॅरःग्रेःश्चेर:रॅंव:ज्ञुयः रमषः"

① (বৃশ্ব:নর্ল নের স্তুম্নেইব্ ব্রুব ইবা 656—658)

चेत्रः तः नेते वित्तः "गर्डदः अन्तः त्यं वः यन् ः स्यः ययः स्टः न्यतः न्यः यः यातः वितः यातः वितः यातः वितः याव क्षाः यात् वितः वितः यात्रः वितः यातः वितः याव्यः न्यः याव्यः याव्यः । "

() वित्र वृः याते : च्राः याय्यः वितः याव्यः वितः याव्यः याव्यः याव्यः वितः याव्यः याव्यः वित्यः याव्यः वित्यः याव्यः वित्यः याव्यः याव्यः वित्यः याव्यः याव्यः याव्यः वित्यः याव्यः याव्यः वित्यः याव्यः वित्यः याव्यः वित्यः याव्यः वित्यः याव्यः याव्यः वित्यः याव्यः याव्

बर्नेन:व:बॅन:विरे:वर्डव:यहंख:बेन्ब:यनेवे:ब्रॅन:यन्द्र:यदे:ह्या: **:** बर-बरा "धर-जवाधरे नहें र-बेंद-ब-र-ने बनुयान देवा हु ने न पस्तिन्तः न्त्रा न्यादःन्यन्यः विन्तः न्या वायक्ष्यवाकुनः तुः ढ़ऀॺऻॱढ़ॖॱढ़ॾॺॱक़ॖॕढ़ॱॿॖऀॱॾॆॸॱक़ॱख़ॺॱय़ॖॸॱॸॗॱख़ढ़ॱॾॖॱॺड़ॿॺज़ॺऄॸॺॱॎॱॱॱ नवरः शे: नर्नेता क्रेंता ग्रे वर्ष्ट्रा सरामहेंदा सामवरा देन ग्रे न्वन *बै:र्ट्स्ववाताताव्याणटातह्र्ीकु* बेर् ३वाषवाचवावयानगदावश्चा सुया "७ वेषानवयानाः स्रनः नेंदा अक्ता स्रमः द्वा प्रवा न स्रमः न स्रमः न <u>৺ল্মাস্ব-মূল্মন্ত্রের রাজ্য প্রত্রের পর</u> चमार । इतः मेबर । स्त्री वा ग्राम्य । वा मेबरा श्री । व्याप्त । वा में वा प्राप्त । वा में वा प्राप्त । वा प्राप्त । *व्यान्दा*न्न्र्वपद्धयानगार्वाक्यान्यान्यस्य स्वास्य विद्यान्यस्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य *चःश्रॅम्यान्द्रन्यःच्याःचुत्यःतुः* वृत्रः हे न्वर्वनः मृद्रं न्वेर्द्यः मृद्रेयः यः वस्यः क्रुते : ज्वा तेवल स्रूर : परा के 'ठ : पर्चे : पर : पश्च ला वा निराम : विषा : परा बळव देव त्य कुर धव य विष् भुर बै तर्ष

① (বিশংবি শ্বাস্ক্রাক্তার্থ কার্যার্থ কার্যার্

न्द्राचा न्द्राचा

ने हिलामें र विनल न्या में द्रातृ कृ त्यते न्ना का दरा मह केवा वर्षण " इर्.पर्धियाय क्षत्राचयः सब्देशः रहा। चयापः वया चर्यापः हेयः त्तुयालु की भेव रह्या ग्री र्वत तु क्षित्र में त्र केट्र की माया भंदर की इवारा केन:ग्री:श्वन:पनप:ह:ज:केन:न्मः। क्ष्म:ग्वर:क:री:कर:ख्<u>वः</u>ने:सरी: बर-य-र्सन्य बे-झ-र्स-म्ब्यन-के-सु-र्स्त-र्मा अन् हु-र-तु-व्यर-বর-রা-রাঝনে গ্রুম-প্রব-ছ ঝাক্রন রম-দে-দত বাঞ্জ-বম-দেন্ট্র-ট্রেম नरःस्रःश्चेम र्रः द्वे तेवः स्याल न्रः र्मः छ्यायतुम दे क्रिंरः र्मातः मविते चुरामह्र वरा "ने अनव रराम्वन करावव वक्षा वर्षे बैन्द्र-धेद-१म-वय-धेर्-२्मवर्ग्ध-८कर-ङ्ग-४व्य-वानुद-उद-। श्रेवातु-ढ़ऻॸॱॸॾज़ॱॿॖॖॖॖॺॱऴॕॱॿॖॺऻॺॱॺॺॱ॔य़॔ॱॸॗॖॺॱॺऻॾ॓ॸॱऄॣ॔ॸॱढ़ॸॕॣॸॱॱॺ॔ॺज़ॱॸॺॕऻॺॱॱॱॱॱ न्मरः हुन्। लुन्वा ग्री किना न्वा न्या न्या न्या न्या न्या ग्री व्या हुन्या । र्षम्याराष्ट्रययान् हेन् से धेव प्रविदातु स्थे जुना जुः पेन् हा न्येव या । । । । बर्बबरालु 'दत्त्य'बेदे 'झॅय' ग्रेरा'पॅट' मः देवा' धेदः मः वॅरः ब्राट्स कवा पदे ग्रुः " वक्षवा प्रि.स. इवया क्षेत्राया क्षेत्र झे तिवा श्रीरा पक्षिता यरा प्राप्त वा उरा য়ৢ৴[੶]য়য়৽য়৸য়৽য়ৣ৽য়ৼয়৽**৾য়৾য়৽য়৾৾৾৴**৽৻ড়৾য়৽য়৽ঢ়ৡ৾৾ঢ়৽৻ড়৾ৼ৽ৼ৽য়৽ঢ়ৡৢঢ়ৄ৽৽৽ <u> इ.स.चूर्र्य वर्षा चुया लूटालबासिया क्ष्र्य प्राप्त प्राप्त वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा व</u>

चंद्रः क्ष्मेयाश्च स्तर्भ न्या १ द्वा स्तर्भ न्या १ द्वा स्तर्भ न्या १ द्वा स्तर्भ न्या स

श्रु.स. 1790 म्ट्. क्ष्मयाष्ट्री.स. क्र्यान्यास्य या क्ष्याच्यास्य स्थान्य स्

क्ष्यान्तर्थक्ष्यां में श्रु अळेर् हे दुर् इया महिलार्ट । हे दुर गुका क्ष्यान्तर्थक्षा में श्रु अळेर् हे दुर इया महिलार्ट । अप्रिया अप्रिया क्ष्या वित्र हो स्था क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क

पहरणक्ष भूराम् के व्यक्त के व्यक्त

① (ব্ৰব্ৰেন্দ্ৰী ন্বী স্থান্ত ব্ৰাহ্ম 714)

खेर हे वै विरामहे**षाववाञ्च ग**ववातु प्रह्यद्याहेषाञ्च मिरावदे हे रेग्रायायी प्रत्या वेदा व्यापा विविधार दि प्रता प्रता की प्राप्त विधार च्याळे द्रात्व मा व्याप्त त्रुम् यो चित्र म्याया वित्र वित्र में व्याप्त वित्र म्या स्वः है न्यः वेषः यः नेः धेवः यः न्यः। न्ययः व्वः नेवः यः वृषः विष्यः ग्नियामानी द्रायदे न्नायाम न्याय मुन्यदे न्नायाम नियाम निया इ.स.दे.र्बा.लुब.पर्बा.इस्। पर्द.ब्रेथ.बेथ.बस.प्.इस्. मूर्यंदेते. भ्रम्याः अप्तान्त्रः चेत्रः विष्याः चित्रः विष्यः चित्रः विष्यः चित्रः चित्रः चित्रः चित्रः चित्रः चित्रः चित्र ভুদ:ন≝্-এর:ঐব:এন:ঐ:এর দু: এর ন্ন:এর:এন:এন: यवैवःसरीः श्रम्परा शुः वृदः स्रोतः यादः श्रदः सः यादः स्राप्तः स्राप्तः स्रोतः स्रोतः स्रोतः स्रोतः स्रोतः स्र तृ 'यदे 'शु 'हेर 'हेरा कर माउँ र 'शे कॅग पा है 'शु रा ठव 'शे खू र 'सर में ' नवा गुराक्षेत् सुनाया देवा विवासिता निवासिता निवासित निवासिता निवासिता निवासिता निवासिता निवासिता निवासिता निवासिता निवासिता निवासिता निवा युरा में रेवा हरा इता व के ब्रॅबर ब्रेर ब्रेर ब्रेर में र मेर मेर प्राप्त के लाने ते बद्या "इंदा तर्दे राष्ट्री र शा बदा द श्रुवा स्वापा स्वापा से विद्या है द न्वयान् भूषात् ह्यान् गुर्यान्याः छेवः ययान् न्याः यन्याः यन्याः व्यान्याः व गु न ह्रव त्या स्ट्रा ता न हे न ता न में द्या है। श्रुप रा अमें व न दें ने व *ॸॖ*बॱॸॻॱॸ्ॸॱॡ॔ॴॺॖॆॺॺॱॸ॓ॱॾॕॿॱॸॕॸॱॻॖ॓ॱऄॖॸॱऄॗॸॱॴॸॿॖॻॺॱॾॕॸॱॻ॓ॱॱ

Ф.व. क. म. म. च. क. क. च. प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्

ब्रिय.ल्रन् श्वाया नरा. १ वया नगाय विच नहेन् स्व के विन् छेन् ৰ্বন: শ্ৰী: শ্ৰুবে বেবা ব্ৰ' ন্ৰ' নাম্বা তব্ শ্ৰী: শ্ৰুম্বা নে ম্মুম্বা মৰ্শ্ৰ' " য়ৢয়৽ৼয়য়য়৽ঽৼয়ড়ৢঽ৽য়ৢয়য়য়য়ড়ঽ৽য়য়য়য়য়য়য়ৼয়য়য়য়ৢ৽৽ ठ८.शेषु:८ज.घ४.घ.घ.६ेथ.त४.थ.घर्य.४८.घृषु:जघ.४४.४८.क्ष......... केद्रायं वाकेचवामा वश्चराहे केराम्बुराहरा दश्चराम्बुरा हुर ॅॅन्:श्चे:ह्व:देते:चुट:वश्चेयःव्यव्यव्यव्यव्यव्यःच्ड्नःश्च्यःव्यःदेनःच्यः...... च गायः बुदः हं ' अद्यः अवः अवः क्षे ' व्दः र्वे गावः कुः देवे ' देगवः दूरः। दन्धः न्यातः महायः श्रीः न्यातः स्वातः स য়. यामा करामी त्या है सम्बार से स्वीर सम्बार मान कर्राचययानन् भ्रीत्रावाद्यव्यक्षेत्रयानश्चातु व्याने व साम्राह्मे साम्राह्मे साम्राह्मे साम्राह्मे साम्राह्मे स्वारम् न्या भी नेवा में राविता वित्र वित् निर्नित्रम

देन्त्राचीत्राच्यात्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्याच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्याच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्यात्रच्यात्यात्रच्यात्रचयात्रच्यात्रच्यात्रचयात्रच्यात

①(「可有·可角·可角·夏天·可養丁·青可·茶初·715—716)

प्रथायान्या स्था हैं.पपु भि.षपु.श्रेपु.श्रे.च्.श्रे.चं नया.ला.वि. लग्राचेरावादे 'द्रा र्रितः चल्ली स्टर्म हे . हे . मे हे या या सीया स्वः द्ध्वः ग्री 'ग्रें 'र् ग्' यहेग भेर् 'ग्रें ग्' केश ग्री 'संर् 'म्रें र 'यह्व र स्वराज्य मृद्रेयःवयःश्चः विचयः अप्तिः यन्यः श्चः विचयः यः दळ्ळः चः न्दः। न्यातः बेन् हुं यान नन् परि यन नु ने दे दे र येन न नू यदि हा बदे ही बहेन हेर्द्रस्यामृत्रेषाशुरुद्राम्डेगार्दा। द्यादावतीयम्दाञ्चरा त्रेंब-५५वा-५५५८४ १:४ेनस-३८-५५८व ५५८-४ क्व-नहेंदः .. कु'र्सम्बरम्ह्र्यः ह्रव्याह्मव्यवाह्नायि ह्याया न्दा र्रेन् क्रुंद्राक्षेत्रः हे ही लुका भूता कु 'दंता व्राप्त का करा वा वा वा वा वा वा वा वा विष्ता के का विष्ता के का विष्ता के का विष्ता के कि हुरः चृत्रेका में रास्र ते मारा प्रवेदाकु व्या कु स्वेयका स्राप्त प्राप्त प्राप्त ब्रॅ**न**्नवरवि नि त्या स्रेता के निर्मे मिरा साम नि ने के वा से या निवर "" नते बेट हे में प्रत्मित्र रूट म्विक में त्र म्विक विषय विषय विषय में प्रत्य केव'र्दर'न्वेर:क्रुव'यःक्रुव'यर'दर्ग्,वेयायतायायायाया हिराप्त्रेयुरे ∯.g. द्र-पर्वे बेदालयात्र ने केदाने या ग्रीटार्ट स्व सामित स्व मठला ५२ क्रॅ- हु- १ न्या कृ न्याया हु खुर हे वि ने क्रेर के नि क्रेर हिंदा हिंदा हिंदा **ब्रे.नवेश:वर्-लन्द्र-अ:केव्-द्र-इ**श:बह्निव:पक्क्क्र-पह्निवानी-प्रमृद्धः द्विवान

<u>इना सं पर्ह्मन बेद र दुः द वृद्द र देश " के लेल लंगल कु के ल व प्राप्ट्र र</u> कु.मूर.भैल.र्टा ल.वि.से.र्टर.य हेचा संघायानुन.धूर्याय मे**ड्र.र्या.** [मन] न्रा वृ न्वरायायक्षायायम् तायेन मुक्रा हे वृ न्रायक्षा मञ्जूषाने अपन केन तराञ्चन सेग्य बेन न्। इयान में नामने सुना मामोद्रेयाश्चरम् अरवाया ह्राम्यवरा विरामद्रेयामा स्मान **८५८-वयानम्य न्यान्य न्याप्य प्याप्य प्याप्य শ্**র-স্ক্রেল্বান্স্র-স্ক্র্র-স্ক্র্র-স্ক্রেল্ব-স্ক্র-স্র-স্ক্র-স ह्यु देव र क्या हो द स्वर्थ हो द स्था हिं व र व त हिरा हो र ख्रा स्था व नुरार्वेग्य बेर् यान्य याकु यान्य राष्ट्र ग्रम केत केता कर स्मान्य राष्ट्र ग्रॅंट्य.त.र.रेट.। रे.ड्रिय.ड्रिय.र्च्य.परे.ब्रैय.तथ.धे.बर्धेट.पर्ह्य.ब्रंय. लट.लट.वियातपु.वावत.वार् च योप.व्रवार वे वर्षा त्रुवःशुः तर्चे रायः चः नृषेवः न्रः। ने ग्वसूवः चः वः वः न्वरः मवः इवः वः केया ग्रीया महिया प्रदेश में नार्य में नाय में नार्य में नार्य में नार्य में नार्य में नार्य में नार्य में *व् न्वरःचः धुरः धवाः चने ः ५ ह्वायः क्रॅनः र्यवायः क्रं यः* स्व **新**不'**万**下'| बदतक्रेट्याचु वहूँ पहूँ र्भायक्षाची न्ब्रिंट्याम्ब्रेरावद्याद्ध्याद्ध्या मरामहेवा वॅर्प्पल्यार्पराष्ट्रयाच्यात्रत्यात्रम्राह्यं वर्ष्या मायकार्रम्काय मेर् अंका स्राप्ति रे महत्र वरा तु त्राय में वा छ र में का बेरः धरः। ग्यादः खयः नवः र्रः। इगः धरः श्रेरः श्रुरः वै वैवः द्वा

वर्ष इ.स.चरीय वारावराचरापुर्ध्वापकीर्थात्वीर्धा है। प्राप्त १८८१ वृत्र अन्य रच प्रतः श्चान महीयातपुर क्रुया केरा पर्य के के खेरा श्चिरा हूरा है। बेव नव रम रमर छंता विश्वया श्रह्में मान श्रुव मिन या है से स्मर हु : भु मिने मार्ग 🛈 भूमरा पर्देर चेंद्र क्षे : हुरा यह वा है दा बेदा पर पहेवार्बेटायाकवासुटावया हू स्परे न्नायदे करा श्रेट् ही विषया स्वया क्रक्ष्याः श्रुष्यः भ्रुषः भ्रिषः भ्रुषः व त्रमः त स्रुवः यदे व स्वर्षः स्वर्षः व स्वर्षः व स्वर्षः नवर तत्न ने चर इर्जर वा छ र इर कन रे वा से के व श्र वा श्र वा शुःगलवः नलवः गवरः अनल में दः बदेः नगलः बळें न नुवः दंः सं वे रः कुै'बयन् नुःबर**ंवेनरा न्बॅ्रान गृत**ःख्**र**ंदर्घन्वेद्रःस्न विद्रःह्न्व् क्वेद्रः "इंदायम्यान्त्रवातात्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त्रवात्त तु 'अरग्यायते' (ग्रॅंर' नग्रायः) व्रथयः वेर् 'संव्रायः नगुरः ग्रां या केवः " र्घ: न्दः पठवाः गरोरः क्रुवः तुः पङ्गरः पः वैः १६ दिः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः मु:ते:ब्रट:ब्रेश:य:क्रेट:ल्रट्य:प:ब्रट:पम्ब्रुट:प:वृद:कृदे:प ग्रद। इराक् विन सु तायवायत कु विन सु हिंद् विद दिर दिया विवय सुदा सदे म¥व्रास्तराञ्चलायाः **नृदाः** क्रेला सुन्नृताः सामिता सामि **ผมาธิราคากคายีวิวิรัสา**ตัวากละายีวายๆ ชัราสีรากวิวิธีสายูา *ब्या न्वाक्ष क्वा वा क्वा क्वा विवान ने नेन्या कृ व्या क्वा वा वा विवान ने केन्या वा वा विवास विवास*

①(ቫጥፅፕ ጆር ጥዼ ፕሬካካ ዓ. ችጣ ወደ ል.19)

डेन्: नॅब न्य: रॅंग्यूल **प्यन्डे-**पडेन्-डेन्-बे-न्बॅल-कु-धेव-सूनल नु-डॅंग्:-**बु** क्ष्रॅन् त्यानक्ष्र्वायात्यायत्यावता श्चे त्येषा बु क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र त्या कष्त्र त्या क्षेत्र त्या त्या क् र्दःयम् (यः) हू न्नः यः मवदः परः ध्रेवः कर् प्रमादः न्नं वः क्षयः रूदः पठल वयाष्ट्र त्यादे : व्याया स्वाया चेत् : ची : त्या द्वा : ची : त्या : व्या **२**.कु. ईंग् वु. ब्रॅं २ : ग्रैं र : रू. वु. द्वार र हे : २ : श्रें द : क्वर यह : व्यार विवास व माधवायराचेर। य्र-श्रु-इवयान्द्र-श्रुद्-तात्व्र-नर्वे-त्र्वित्यायः बद्धराष्ट्रमान्द्राव बुद्धरायराय ग्रीया वृत्येरा ग्रीय द्वर्मान्द्रा वेदा क्रुंद्र नरान्नेत्। कृ त्यर्थान् स्यायार्थमायान्यस्य देवात् मानुरानमा नन्ना **ग्र.**च मुर्था प इय. तर. च मुर्था भ्र. सं. त. च मुर्था , र्षेय. स्टर्थ च थ. णियः क्षेत्रः वृत् चित्रः अन् विश्वाद्याय त्तृन विवायादात्रम् तः अवाद वृत्रः मूर्व्यानूरायरायस्याकु इवयास्याने न्यूरा हेरी प्रमायास्य स्री नव्याद्धंयाव्याग्रमः। ने अनवाहे हुमाला वि (वृ त्यदे न कुन पदे ल िक.) जनवालूर्मा प्राप्त र नरा ने बाहि . पहुंच में व विवास हि . विरा पवः महिलाग्रे ने अपला महिवाया सुमाला के प्रता सु अकेन लेंगालाग्रे हिम्रा खु-५व्रम् मामवर्गः (क्षम्यः) व्राप्तर-न्यरः स्व-न्ययः स्वर-ष्ट्र-पर्वः श्रूनवा ने देः न् यवाप्टरः देवाः) तुः न खु मावा "® देवा मावायः मः क्र-मिल्ट-म्ब-ल-न्यट-हुगाळेर-मिवट-वासुन-सर- वर्देव।

७(ड्रल-रनल-क्रूब-वड्डर-मेल-र्ग्य-ब्रे-लर-इल-ब्र-म्न-स्थर स. ८८)

"लामु लगल महेगला भ्रु अकेर गहेला (हू 'यदे भ्रु अकेर') मुरः करामदे क्षे देन वर्षी लया देव ला वि के वेव व्व श्वर वेपया हु ढ़्वा. (ॾ.क्वा.) म्र**४.५८००.८च्या**.नषु.नप्रप.नी**८.**न्या.क्ष्याय.रूप ञ्च.नः . न्दः मॅर्रे व्दः च हे नेवा व्ययः ययः न्ययः मृत्। क्रवः यदः र्वेन्वः रेबा ग्रेका त कुर् वा स्वापा स्वाप संदे वर मुनेन्या सदे स्वया वर् ग्री त्या में व ता हा र जर वे नया न ने या र मद्रे श्राया छे : न्द्रा विषा निषा निषा निषा निष्य निष्य । विष्य । विषय निष्य निष्य निष्य निष्य निष्य निष्य निष्य । समा महिका क्ष्मा र या न्दा पर करा मिले राधिमा मिन्दा द्वार के ति हैं र । दे *विगः* कॅटः बः ब्रह्मः यद्देनः हुदः नकः ने रहेकः नकेंद्रकः ऋँ रः यद्याः नकेंकः · · · ः ववापश्चेताबह्दागुराष्यापवाग्रीयायस्यावीत्वात्रीत्वा सर. स्वा. स्व. प्र. में या बिरा विष्य प्रति । प्र. प्र. वे . क्ष्य । विक्तिः स्वायाः स्वायाः विकारम् वि चुर-५५-१९८। वेर्याहे**य**-वाक्-यर-धेनय-तृय-वर्-। **"......ह**′&नॱहे′5ु८ॱश्वे′शेन्'हु′क़ॗॱॺेनल'सअ'नरॱदलाष्टेर'नश्चे<u>र</u>'''' बर्दर्भाता (अन्यायन्) ज्ञापायज्ञर्भाते छेतायज्ञर्भात्र विवयःहे। सं'देर'बॅद'रा'बळॅन्'बै'दर्धदः ययःग्री'रवःदरेगयः ववर्यः লু অর্ল । " ② উর্বাল্যবান নত্ত্বভাষ্ট্রতান নি ক্রিন্ট্রাল লাকান । **ঀ৽ঢ়**৽ড়৾ঀ৽ঀ৾৽ঈৢ৾৾৴৽৻ঽ৾৽**য়ৼ৾৴৽ঀৼৢড়৽**ঽয়৽ঀঈৢ৾৾৻৽য়৽য়য়য়

8. व्याप्त्राक्ष्यान्त्रं क्ष्यां विष्यं क्ष्यां विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं

⁽१) (मुल र न त क्र न त हुन देवा से में ग्राम त 88)

७ (देन इंट बंद बंद द्वेन्य द्व वं व्याप्त व्याप्त वा प्र

मन्त्रत्वम्यन्त्रत्वे प्रमातः स्वापित्रः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्त

য়ৢ৴য়ৣ৾ঢ়৽৳৽য়ৣ৾ঀ৽য়ৣ৾৾ঢ়৽য়৾ঢ়৻য়৽ঀয়৽ঢ়৽ড়য়৽ঢ়ৢ৾৽য়য়৽য়৽৽৽ वेनवायते नरने न क्षुर धर हैवान्यं व नरे हुना य ववा नहें निते **श्चे.बं.चंट.**अर्बे चंया<u>ट्रयान्त्र</u>यान्य र म्यायान्य त्याप्तरात्त्रात्त्र क्षेत्र व्याप्त स्थापत्ता विश्वास्त्र महेवा दे तस्यार्वद् मलुवायाष्ट्रयान्व महेवाद्याम गृतः ह्व द न्यतः नद्गेनम्बर्द्धत्रम्पयाद्धरायाद्धयाद्वान्त्रव्याप्तराम् विन ययः र्नायः नगतः व्यान्धः विनः नगः भैयः र्नेनः ग्रुनः रहः। नहनः मान्या वैयासुन स्वाया मर्गा होया होया होया निया हुना विया होना विया होना इयाञ्चराश्चेत्रायान्ता श्वेदासाङ्गाया श्वेषा য়ৢ৴৽ঀৼ৴৽ঀ ৸৴৽৻য়ৢঀ৽য়ৢঀ৽য়ঢ়৴৽ঢ়৽ঢ়৽ঢ়৴৽য়ঢ়৾৾৾য়৽ चेन्-न्नः। हाम्यार्वम्यन्। ययान् वेम्यान्ययात् न्नः वितास्तरः म्ननः <u>५8ु०ःकुः चॅर्-न्नः र् चॅद्र-द्र्यः नृत्रः नृत्रेयः नृत्रः । ।</u> बर्तः श्रदः तः नवंदः नुः नग्रतः कुः नश्चरः नदः स्रम्यः अर्द्धर्यः नग्रःःः नैता हुन ये 'न्मा वा हु निता हु किया ने केंद्र निर्मा निया निता निता है तरु.चग्रद.चु.लट.चङ्कला द्वन्यायन् स्तु.ध.च.र्ह.तपु.वट.चग्रद. <u> ब्रॅब-२न्न-१न्थ-नव्रेय-२८-५व्य-ब्रेट-इ-४न्-५-५४४-४४४-६-४५-५</u> हॅग-वॅव-ग्रेत-गरेत-स्टॅर-श्रवत। न्न-व्य-प्य-प्य-प्य-पश्चरः थे ने पन्दरम् वाष्या विषय प्रत्रः है वार्षे व पन्दे हुना य बहुबा

न्दा डेलान्यवापने स्वाप्यास्टा हर्षे वावन् सवस्यार्यन् वावुदा वयाञ्चर्यायायायायात्विषात्व्यास्ट्रियास्ट्रियास्ट्रियास्ट्रियास्य ग्रन्नर्व्या नवान नवर वर स्राप्त का का के प्रत्य न में वा स्था का का मान क्र-मिव्याके खेया के कि स्टाई पुरादरा यया क्रुया में प्राहरा देया **६ य द : प्रमा** : प्रत्या में द्रार्थ : प्रत्या : प्रत् मवितः वरः व्राथिः संस्थान्ता मविषासं में वरः यः यवषाधः ने सुल न्या हा या तु न्यर प न्रम् न्यम न्य व इस या देवा ग्रंदे त्र अस्र पः स्रायक्रायक्रायाते विः श्रः श्रूरः तुः व्युरः पः यः बद्रा र्वम् के र्रः दव्य क र्षा ग्रुरः भैदः हुः बरः च वैषः दर्ज र विदः स्तः क्रट्याञ्चलाम्बराध्याम्बराद्धरावर्गातरी প্রস্থান্ত্র नब्बि-लास्यासु द्वा मलामृत्र बदा द्वेया कुला ह्वीर रहे वा न न द्वा है। रट.ब्रुच्यायायतर.क्ररयाक्चितात्वाचार्तिर.पत्र र.चट.क्र. 95'55' देश.५५५.५५७ । अ.क्२. इषण.ग्रंथ.५५५.ग्रेथ.४ वक्षण. द्वे कॅ नदे क्रुव रोट द इं र दें व इ बया है यर कु नें र नु र नें व हे व म्याशु है । वय देश प मुन् दिया दिया है । प्राय । यव । या ये प्राय । या रे र्गर-८-शुन-र्र- छर-५५ गुर-। "कु-र्न- न्यन-कु-नग्न क्ष्यान्त्र विष्यान्त्र विषयान्त्र विषयान्त्य विषयान्त्र विषयान्त्र विषयान्त्र विषयान्त्र विषयान्त्र विषयान्य विषयान्त्र विषयान्त्र विषयान्त्र विषयान्य विषयान्त्र विषयान्त्य न्यम् के क् रूट द द द र के दिम् त इता त दिया है द हो मा रे र हा त रहा

ह्र इयर र गुर्व वेद रेय ह्र देन हित धेव दर्रा र वाया वे इसराम्हरादरा राष्ट्र वित्व धार्स्याचा इसराधिता नेपारा है कित्रा र्ने तः हिमः विवा की कु र ठरा ने 'र्ड गरा ए, र र उंदर ह बरा व बर न के राहे व् "" क्रमा श्चे रे व ग्री रे वा वव श्वराय श्वराय र् रा रे र रे व र र र व ग्वराय वा विदा वदः अर्हेदः यः नक्तयः वद्यः विदः हय अदः यः दद । नगदः अद्यः र्षेण्यः श्चर विराश्चरके में द्रवा द्वरा या स्वता महता वरा केंदा तत्वा सदा तुरा ग्राम्यान्ते न्यक्त् के के त्याविष्यते क्याप्त क्यापे के यावस्य में व्यवस्त न्क्ष प्रन पर्वे वर्ष लक्षाय के के के कि का प्रमान के कि तर्वा देव दर्जेरा " के वेव विषय विषय में स्टर्स त्वव विषय विषय विषय नवै रूप्ति प्रति त्र दे र क्षि त्र क्षा व इयल न्दा प्राताहित शुंकिय वर्षे व व वे र लाव न पर न द स्वर श्वर बॅर-२८८। वाञ्चदिःशुः स्वाय**ठवा**रेबाद**र्से**बवा**स्ववाग्रुटा। केटवा** बाळॅबाळे न ज्ञुबा गुरा नें बाबेरा पठका न् बबा के त हुँ राते ते त वें त नें बार र्व.पथा वे. ¥ बार्ययार्ष्ट्ररास र्वटा दुरा प्रवास है। विषय वेटा व्यव्हरायाः पक्रिं-जूर्-अ.रे.व.त.क्र्या-वेर-जारसंजा**रू व.नेया.यया.पुत्रा पृष्टे वार्**ये वरः द्वरः तर्रे यः शः पद्वरा ८ ई. श्रेचयः बेधरः श्रेनः सूर्वयः वस्वयः इट. ७ म्. इ वय. ज. ४८. विटय. वय. य. शिट. र वये. श्र. पर्ट. मूर्ट. र वर्षे वय. यर न्यण इता हूँ न न्दा रा का देन है या हु गया शु की क न स्टा

नग्रः ज्ञंब ग्वेशः न्रः अन्तः न्यं व छ्रः सं ठवः दिनः नठवः । । । मुक्रतः वरः में । परः हे । परे वरः दरः । पहेवः श्रीरः हं । श्रान्य वरः श्चु-ढंग-इवल-गृत्र-वृद्-न्नु-वा-त्युर-वेत्-ग्रु-विवा-ढंद-परुकान्तु------ন্ত্ৰাকা শ্ৰহ্মাক্ষৰকাদ্ৰ কিবল ইব্ নত দকা গ্ৰী শ্ৰী শ্ৰী শ্ৰী কৰা क्र-विन् ह्व नवाञ्च कंप क्षा क्ष्र- नव वापना नविवाहा हुवा स्वायाः *ञ्चन्यान्* विन्यान्त्र त्राप्तान्त्र व्याप्त विन्यान्त्र त्राप्त त्राप्त त्राप्त त्राप्त त्राप्त त्राप्त त्राप्त त्तुःवःवृ:न्वरःपवःथै:वे:केन्:पहम:वमः। "त्तःवःवृ:न्वर:नम:नमः मॅराप्तिः बै: इ. इ.बल: गुर: देर: तु.सः मृत्रतः वरः त् गु.सः तु र त् प्रॅरः यूरः … त्रीः श्चें ग्रायर**्वे याशुः हैं : रेट** न ग्रायः श्चें व : सुट : श्चें व न्याः व सा देन् वृ न् बर-व न्यं वनक ग्रैक दहेन व तु द तु व प ज है। मल् नवालयामवाह्यान्द्रेवाग्री यतुवातु केवाद मुलाल् कुदी मिवासेवाः बर्द्र-पर-पहेब-लब-पवेश-वया-र्व-श्चेव-श्चेद-हेश-गुर-वया-----न्वराह्यराष्ट्रे र्पराची के लिन्द्राचे राज्य न्वा के वानवरा कुते वरा क्व्यायान्यान्वे वागुन् वर्द् न् व्यन् भून् भून् भून् न न न वर्ष स् त स् वाभू व्या तु तद्रमानकरान्नेत् तुराया मेना यानु रामया ने अत्रापने वाह्य दे र विवाचेन् चुरावहैवाक्याचेरां राज्याचा वात्राचा वात्राचा वेषाचे शुः स्तः दं अदः मृत् प्रमृतः वर्षः वर्षः

द्वन्यत्व हे. मृत्यत्व स्ट्रियः ग्रीः यह्यत्व मी. याःश्वा स्या हे. मृत्या प्रस्त स्वा क्ष्र स्व क्ष्र स्व

① (「可不·口角·口角·口角·口養丁·一方可·一下四·)

য়ৢ**৴**ॱৼ৾৾ॱয়ॱয়৾ঀয়৻৴য়য়৻ঢ়ৢ৾৾৾৻৻৾৾ৡ৾৾৴৽য়৾৻য়ঀঢ়৾৽৾ঢ়৻য়৻ৼ৾ঢ়ৢ৾ঀ৽য়৾ঀঢ়৾৽ क्र्या छेर. गेष्ठेया छेव. वं या बोधाना या घबो. क्र्ये. पश्चेर. हं . या रं र. हं . या र**या** न्दः। अन् श्रुरः वृः न्द्रयरः नदेः यण्यायः न्वे विषयः पृत्रेषः नग्दः ह्वा ॸॖॺढ़ॱॸढ़ऀॱॸढ़ऀॱॺऻॖऀॾॺ**ॖढ़ॸॱॸॗॱॲॸॱऄॗॱॺ**ॺॱॾ॓ढ़ऀॱॺ॒ॺ**ॸॱॺढ़ॺ**ॱॸॺॄढ़ॱऄॕ**ॺॱ** विषातु र विषाण्यर ययाम् **धार्मण रहा। वर्**याञ्चराम् वेषाग्रहास्त्र वेनरा:ऍट:प:बेर:दॅव:विट:म्ह्या:यव्य:दह्यरा:बॅम 東上、公里以, ह्य^ॱनैवॱसॱळगॱग*ऍ८*ॱकु*र*ॱग*व्रद*ॱदरायायावयाळॅ८'८५ुयाग्रीॱग्रया परःषः**ळ**ॱॠॺॺॱॺॅराषःयाम्बरःकःगृतवःग्बर्ःश्चैःष्वर्धरायः ः…ः व्य-विद्यान्य विद्यान्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र ख्रा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क प्राधियावियावियानहें बाबबाद शेवान मन् भे मुन्या नगदा बन्द नशियानाः अर्माः द्वारात्रवाः क्षेत्राः नेरानाः स्वरः स्व ॕॗॷ॔॔**ॱॻॖऀॱक़ॕॱॸॿॗ**ॖॖ॔ॱक़ॕ॔॔॔ॸॱॸॣॺज़ॱॸ**ढ़ॱॠ॔**ॸॱढ़ॿ॔॔ॸॱढ़ऻॗ॔॔॔॔॔॔॓क़ॏॖॹॱॸग़ढ़ॱॺॸॣ॔॔॔॔ न्शुवःग्रु :न्षुतः द्वाः अद्वः हे :न्रॉवः पञ्चरः ग्रुवः यः रहः। दे दल्ला नगादः अन्तेः त्यताः च नवाः श्राह्म अत्यः न्दः में नः न सर्वाः यदः ईदः त्याः । । । तहरता ग्रेताये वर्ते भ्राप्त मृत्या या निरावित्र वर्षे । वर्षे वितः गुर्याः धरः दर्वेषः भ्रुषाः व्यापरः पः नृतः । भ्रेषः स्रुपः । भेषः नृतान् गरः विषाक्रिए क्षित्राचा महीयान्ता मन्नादा स्वादा स बर.कु.च.कुं.चढी.सब.रबेप.चथ.ग्रैश.रट.बूबे.ध्य.चेट.बुव......... तहर्याययान्त्रं राम्यवान्यं वाक्के विचाययम् स्वयामहरायायकयान् हतः वदःभ्राप्तरःगे छै वदः करः वाविषाने हिर छ रदः शे रताविद्यासः विषाः बुद्रः बहरः नग्रदः बद्रारः नशुक्रः हम् । व्यवाधिकः नश्वकः वयः दिवः

मु देग्या न्यं व छ्टा सर विव म वेषा प रुष ৰ্ব**ন**প্ৰেদ্ প্ৰাদ্দ मॅर-८बन-ने-८ध्य-४: १४८ क्न-क्रे-८ श्रवा इ.स्. हेरी हे. ४४८ १ हेर श्रीर. **इ.^घ.रहा थ.**पणक ग्रे.से.क्च.पष्ट्र-बलूब.पञ्चरक्षा हैपा.ग्रेथ. बॅर-८ वॅब-इर-सुब-सु-ई-६र-वेर-घ-८८-। वर्तु-इर-वनयःशु**व** अर्-ब्रि-त्वर-पदे- गु-रेग्व-त् शुर-वेर-ह्य-कुत्। র্থার বিশ্ব श्रुदः चुः बॅरः द्ववा द्दः यङ्गाययः धुयः क्वयेः द्रदः दुः द्विद् छैदः। मु कै न्यं व स्टरम् वे या ने मिंव मिंव न्त्रि के ये व मिया सं माने या समा स्वा <u> রবিশের করে বিশেষ করে বিশেষ করে বিশ্ব করে বি</u> न्दः। नग्वः बन्वः र्वेष्यः वन्दः वैः इ बयः कः नुषः वः व्यायः वन्दः कः न्वदः ॾॗॴॱॺऀॱॕॣॱऄॖॱॾॱॺ॔॔॓॓॔ॸॺ॔ॱॻऀॴॱॸॖऀॱॺ॑ॺॴय़ढ़ॱढ़॓ॱज़ॴॴड़ॱॸ॓ॱसॱॶॱऄॱॱ **ळे**८्-त्-पर्झ-पञ्चण-वर्ष-दे-ब्रा-पञ्चल-क्ष्र्य-पञ्चल-क्ष्य--चलासुलाबळॅन् हेवाचु उद्भाव क्रेंन् तु चल्वा या संग्रावि वायान्वतः मले नदे चुद्द महू न वह न महाराज्य म

म्बर्निः स्ट्रिन् स्वरः स्वरः प्रत्निः स्वरः प्रदेनः स्वरः स्वरः

①(र्न्य.पर्वे.पर्ड.क्ट्र.प्ट्र.प्रेच.स्थ.400)

दैदः नेत र्वायावयाच्यान्य म्यान्य म्यान्य म्यान्य म्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

मृष्ठतः वृद्दः पहुँ तः प्रदेशम् रः द्वम् इवयः दैदः वेतः विवः **ব্যান্ত্রামন্ত্র বিদান্ত্র ট্রান্ত্রামার বিদ্যান্তর বিদ্যান স্বর্ণা** <u>ञ्चलायामञ्चर्रामदेःश्चराह्याहरःतु। अज्ञलमञ्ज्ञामः वतुवापदे वदः।</u> षय नव-रदः विनय भर् क्ष्र कुरा श्रु वतु व तु न ठर वया विरा र वर्षा इयल नग् भेल क्षुन ये र त हुँ र ने अप्रान्त नु मा पर वा वा वा ना हुँ मुल तदैत्रः णदः श्रेः श्रेष्ण यदैः देशः यः श्रेः तत् वा यशः वि त्रां स्वाः सः **झु. बेंड्रेय. तथा ५. होबा. ४. झेट. ६ वा. धे. कुप्या पश्ची ४. लूचे ५. रा. होबा. ५८. ।** यतु खारा दव वता यह केव् देव में के गदव यद्देव लुका है के कि है र ख़ र्वसम्पत्तिराधेनवार्क्षेत्। केंवानेरादुग्रवसम्बन्धसादिन्वस ग्री'न्यग'न्तुरात्यःक्ष्मायासुनःमःव्यन्तःश्चे'त्र्यो प्रहःकेदःनेदःभः के वेनतः नसूत् विनः कः नहारः स्यायह्न् केंग् ठेरान गृदः वेनता "① *बेषा-मताबा-बेदः। ने 'हेरा-घ*ठ-केंद्र-रेद'र्घे 'के 'न् गुरा-वेषरा ग्रुय-उसका मॅ**र**-२वम् इवयः मृदिरा डेर-८ ईर-य-वः चर्। मॅर-२वम् यम् भैतः

① (पह्याम्चर वचर क्रेन् मृन् म्नर्गः)

न क्रमा न क्रमा विकास में निवास क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रम क्रम क्रम क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा नवार्षर् कर् हुर नवा म्ब्राया में क्षेत्र में क्षेत पर-दगाय-पर्वः अवरः गर्डेर् पहरः यहु म अपया नेरा हे द्यं वा मुः रै'रा'र्सम्बर्द्रसुवर्द्रबम्'ङ्र'अ'दब्द्रविम्'बैब्र'य'र्द्रवर्'तुं'न्श्'न्वम्' ' **ঀ৾ঀ৾৾৽য়৾ৼ৾৾৾৽ৼয়৸৻ৼয়৸ৢৼ৸৴ৼ৾৾ৢঽৼ৾য়ৼ৾৾য়ৢয়৾**৸৾৾ঢ়৾৾৽ঢ়৾ৼয়য়ৼয়য়ৼ प्रा-वैषःक्षुदःयःद्रषःञ्चरः**रॅरः**ष्ठेर्-पर्वेषःग्रे-च-पकुर्-पदे-ळेषः ···· *क्रे-*: नशुब: क्रेन्: न्स्य: ध्रुंन्य: शुः र्वे न: दत्तु न: ठेव: ध्रेत: नह व: दक्य: · · · · · · नर्वेयापरामहेवा अवापवामहेयान्दाव्यापराह्यवयाचे में ज्दानु भ्रु'पठराष्ट्रीया **"न्:ढ:राञ्चेरायरामगः के**'मयापत्वग्यामी स्वराचेरा। क्रमः अर्दे 'परः क्रेपयः पश्चुरः गृद्धः दृष्यं यः ५५ गृः छेयः लुः परा ळेद'र्ये दे प्रमाया अस्माया पदि श्रु ळ प . हु : रॉस् म नेया न् स्यायद महस् য়ৢ*ॱ*ৼয়য়৾৽য়য়৽য়য়৽ঢ়ৢ৾*ৢৢ৾ঀড়ৢ৾৻ৼয়৽৻ঀয়৽৻ঢ়য়৽৻ঢ়ৼ*৽য়ঀৢয়৽য়য়৽ৼয়৽ৼয়৽য়য়৽৽ म्राज्यक्रवन्यप्रस्थित्व इति त्यान्ते वात्रवा स्वत्य स्वत्य स्वत्य *०६र* क्ष्मला बुचः स**ःबैः पॅटः नलः न्**तुरः देन् वलः नहमा यः चेन् छेटा। विन् ग्रियन्य ग्रम् न्वेंद्यमा यह क्षेत्रय यह न्व ब्रॅंन:ब्रून:बॅट:ब:केव:यॅन:ब्रुव:लु**:**ग्रेन:न्बॅव:वेट:। ्रेडेट:क:ब्ट:के⁻ बह्दर् देवायेनवा "धेवेवाम्वयानः दुराषवानव् महिवाववानदि अतः तुषा-रशुप्तवाश्चरादाश्चराप्ने अनुवाकी विवाधकार्ये वाकी केराने ... वै वाष्क्र पर्दा नगत ह्रव सम्मण यव तु नु मु ह्व वे राष्ट्र हर

①(বর্মান্নের্ব: শ্ব্রান্নের্ব: 197)

व्याययानकुर्य याः ब्रवातुः द्वा म्वया द्वारी ते वारा शुः विषा पर्या **थ.य.पय.डॅ.क्.**प ग्रेय.क्ट. ८ ह्र बय. ग्रेय.ल. श्रव. ८ . व्यय. वया कर क्रेंद्र ख्र व वर दें क्रेंद्र प्रता वि प्रते न सुदा ता ने चि वा ता है न वा वा न वि वा भैदा मुलामा अपा स्वारा तरी माना निरा निरा मिला के मारा साम हो। क्षे द्वार दे वा व्याप्त प्रते की प्रया केर वे क्षे न्या स्त्रे र की र त्या पा न्या के नना न्नित्रहेत अठन हैं नित्र के नित्र में के स्थान है तार्रा **षदे वर** पत्रवार के निर्माण के स्वार में त्र प्राप्त के स्वार में के स्वार में त्र प्राप्त के स्वार में त्र स्वार स् हेव'बळॅग'र्र'। ५५'वॅर'इबब्ग'ग्रुर'मॅर्'वबब्गकग्'हु'ग्रुर'व'श्रुर' मॅद्र-अ-केद-य-दम्दर्गरत्र अवाधी कु चेद्र-पर्या दे प्रवार ठगा थे. **८ इरा ५ में 'म् शुक्र ग्री 'ग्रा मृद्दि इरा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा मृद्धा अस्त्र वर्षा** श्रुद्र-क-|मर्यायेव-ख-मर्यानू न्यादे न्ना या सं न्याद न्या नि व्यया क्रेया पार्मीय ... वियालयाया अवायवाम् विवासितास्य वास्त्रे वास्त्रे वास्त्रे वास्त्रे वास्त्रे वास्त्रे वास्त्रे वास्त्रे वास्त्र वयाद्वेनवान्द्रिराष्ट्रराष्ट्रराख्रुराकावियावेदाक्चेदाकुवेल् वासुरावराणाः महेवा मूट्यक्रिव-त्रूर-श्रेव-वि.चेयानः वी व्यानव-विवार्यः नैयाकमः वर्दे मारामाद्वायद्वेव लु : भगा धिवागुमा वृ : यदे ह्वा वा दमा बे म इसम्य संम्यान्य नेया में माम दिन की या माम नाम ने मास सम्मा हिया । र्नुवः ईरः विष्ठः प्रदेः क्रुवः दुवेः द्वयः हे । यदः सुव्या "① विषः विष्ठः त्रुम् अन्तर्त्र्त्त्त्वरम्डर्त्तेरःकुः अर्ट्के ग्राह्मयान्त्रः कुत्रानः

①(日本知道上,如日日, 面点,其山,山上山,108)

यनः श्रवः मृत्रेवः मृ द्विम्यः येनवः गवरः न् मृतः श्रवः मृतः सं ते र स्विः य्विषः । । <u>५५२,५५०,५३५.४ वया श्रेपया हुया,५५५५५५५५५५ श्रेम्या,५५५५</u> नेश्र-(व्याश्रुर-अह्याश्री :श्रूव व्यायात नेपया पार्यन्याश्री :श्रू न्या विवासी बैं वेनरा परि म्वरा र्ह्धया कं नरा के सुदा थेंद्र 🌎 "दे वर्ता मेंदा या के द्रा चॅदे:म्बेर-धेग्-पम्द-सुद-सेवब-धर्म अयःवद-मृबेब-द्वा-द्व-सदे ह्व बाक्या बर्दर मृत्व द्र दला हे । यं हा त्या मुवाब या ब्रू हेला चुका न दुवा ।।।। **७८**। दूरवरे न्ना वावया देवा साम क्रिया विष्या विषया सरम्बुन्यात्तु नायः नेवातुः सेन्याः स्थाप्तान्ताः सद्यायायायान्ताः । सद्यायायान्तानाः । **ळेत**ॱखेर-हे-वै-मण् -वैष-क्षुव-चॅ-वषा<u>वि</u>त् यतुष-ध-खेर-हे-वै-क्षु-व-ध**ः** नबा केवामा खेरा । अय नवा ग्री ग्री माया देवामा ग्री । वि ঀয়য়য়ৢ৾৾৾য়ৢ৾য়ৢৼয়য়৻ঀয়৻৸ড়ৢঀ৾৻য়ৢ৾ঀ৾ঢ়ৢয়৽ঀ৸য়৻য়ৢ৾৾৻৸য়^{ঢ়}৸৾ঀ৻ঀয়ৼয়৻<u>৾৽</u> यानवाराम्बेयायायन्याक्केवामवराक्करा व्यावदेशेराम्बेर ह्रवारु . तु द्वीतः द्वारा विषया के ता विषया के ता विषया के विषय <u>র্মাথ রুব রুব দ্বি জ্ল নে শী হল নে মার্থন নে থা নার নি প্রে মার নার দিন রুবা স্থান নি শার্থন নে প্রাণ্ড নি শু</u> नगदः धेन गुरावेन था "ा वेदान्यया दर्ग

⁽dea. 34. 44. 124. 199)

৺ৼ৾ৼ৽য়৽ড়ড়৽৻৻ৼ৽ড়য়৽ঽ৾**ৼ৽**ৠ৾৽ঢ়৾ৼ৽ড়ৢয়ৼ৽ৠয়ৼ৽ৠয়৽৻ঀৢ৽ঢ়য়ৢৼ৽ঢ়ৠয়৽ ंगवरः पर्दः श्रूर। इरायः ग्रायय वः कुदेः धेगः करः ययः द्रद्यः यः स्रूरः वा "肯下·अ·西司·영下·司·复下·号·豫司·영·在黃木·景初·四部·对下·司·首司·영下· ृष्टि छ रे रे रे रे रे प्राप्त हिर हिड थे रुट है न हिर हे महिया से हिन है र्यम् वे हॅरास्म नवि विर्ने न्र रे वर्षे वर्षे न्य प्रति हिर्य शु न हिर् र्मेवःपर्यः नम्यः प्राच्या अःरे महेवःश्चे स्वाः हुः नम्यः ध्वाः द र्घरः हेवा *वैव* पक्षाने ने प्रविव न्या धॅन प्रक्षुंत् श्री ध्वन प्रवा वॅन का क व सुन वेषा ब्रु.न् न ने या ता ने वा ब्रु राज्य न स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्ध स्वर्ध स [\$\,\frac{1}{2}\alpha\,\zera \alpha\,\delta\,\d **७**:धुर:सुर:क्षु: वर:अव: (वॅर्:यव:सु:वे:तुर:वर:बेर:) रवव: र्वेद: বি'শ্ নীক'শীক'ষব'শপ্ত 'বক'ন স্নাঁদক'ন বি' দ্বন'দেন 'ক্ত' নিদ'দ্বশ্ '''''' বর্ষন্থান্ত্রমার্থ প্রের (বের্ব শের্ম ন্ত্রমার্থ করে করে ন্ত্রমার্থ বর্ষা ब्रे.ब्रेट्-स्व विदेशित्रे ने ने क्षेट्र व्या व्रंट्र ब्रेट्य शु. कत्। यट प्वरंद क्षावयाध्यान्वयाः क्षेराधयाः स्पन्ता वर्षेत्रयावरायाः न्यवान्वयाः क्रूट खन नशुक्र नक्षेट्र किटा दे हे का ख्रेट प्या के विवासी देवनी विवासी ৡ৾৻ॱৼ৽৽৽ঀয়য়৽৸ৠৼয়৽য়৽য়ড়য়৽ড়য়৽ড়য়য়ড়য়য়৽৸য়য়৽ড়৸৽৽ ष्ट्रि महुब ह्रें स क्ष्मा उद्यानक्षें स्यावया मधुत्यायरा महराखें ।

म्रायाक्षयात्राचीयाश्चरायरात्री म्रिन्ची द्वाना क्रिन्या स्वर्णा स्वर

क्केयार देवा हेर् कुरे त्यायार गवा राष्ट्र र दर्ग या सार हरा। वर्ष प्र ष्यानव कॅ तेव या कवा वर्षे व्यान् त्या वर्षा न त्या वर्षा न त्या के व्या के व्या के व्या के व्या के व्या के व्य श्चेलायडेवाचेराकुतेत्वातायायग्वातायाः निवाधी द्वारी हिनाधी दुते किटाला नर्दर हुं न्यान्य प्राया धारा ग्री न्या प्राया ग्री न्या । । । । क़ॖॖॺऻॴॱऄॖॴॱय़ड़ॆ**ढ़ॱॸॣॸॱॴॕॸॱॾॕॸॣॱऄॖॸॣॱॹॗ**ढ़ॎॱय़ॎॺॱय़ॹढ़ॱॺॶॸॱॸॣॕ**ॹ**ॸॎ चरुतः क्री :चम्दार्थनः क्रिन्। यतः द्वः श्वानः सरः श्वानः व्यान्तः व्याः व कुते न्दाविदाने मानेवामारामानवान श्रुतामाने दा हुती नेवा कर् पठर् वयास्तानविवान्स्यान्स्तावरातुःव्यवाधेःवातः तह्यान्यायाः त्रमारा ने र वर्ष न मुन्ति स्वाप न सुदाया असे व् क वारि नगात.सन्। मियायायर.कु.चयर.श्र.विय.मियामियाम् मिर.वि.मियायारामे वारायः मियायाया ॅब्रियः नदः वयः क्यः त्वः द्वः विः धवाः मतुवः द्वः नदः। धुवायः न मनः वना वि द्वना न ने वा स्वा र वा में र वा ने र वा में र वा ने वा ने वा स्वा में र वा ने वा स्वा में र वा ने वा स्वा र्डयाग्री र्वे मिर्डमा मी पञ्चर करायन्द्र देशा भेगा विन् विन ज्या करा वि दयापियान्त्रेयाः स्रमा मञ्जापासु । स्रमा क्रेलप्तदेव चेन प्रमानेन। न्यम त्यापा वेरव ने मक्त वहाँ न वहाँ न र्यम् मॅव्र्र्र्र्याञ्रार वि'सम् केम् क्रेर्र्य कु केर् ख्र म्ड्र्र्र्र म्डेक् राम् ロ**ラ**に、こうず、羽口の、うん、動へ、近にてり、つり、「日の、近に、日のこれ、 できる。 「日の、日本 ある。 「日の、日本 ある。」 त्दर्भी पत्रिक मुडेग विक्यों विहा "Û डेरा द्वि**र दर्भ**

भूरा हु लदे न्ना अपन नु र पदे हमान र त्र दि र पदि र पदि । "कें या है" श्रम्बाया नेत्राम् स्टास्ट केत्र में स्वे नवा सुरा वे त्यावा ग्री हा या यवा है इसका नदा विदायी के द्वा है मिद्यी हुदादित हिराहित स्था हुता पर म्ध्रायामान्याचेनयाम्यु न्दा अवार्यामान्याचे न्या हो न लयानकुर्द्रयानुतान्यार्करायी त्रीत्राच्या व्याप्तराच्या न्दः र्रायः क व्या नेवाप्तः रेदः खन्या मुलाविवः केवः द्वे अवेदः नाईवः न्ना व केराया सहरा रे व या संस्था के व केरायर में ग्रायर वरा प्रविव ग्री कु व त ग्री वावा र दरा। वावी र विदेश्य धवा खु गुव न ने ने ग्राय ह के व देव-सं-ळेदे-पल्यहाः बल्बर्-ज्याराह्य क्रिक्ट वार्वेर वार्वेर वार्वे मॅस-पि-मर्रम्-रसद-पदे-पल्पराप्ति-लय-ह्रेन-सन्धान्त्रीम्या বর র্মন্ত্র ব্রাহন ক্রম্বর মান্ত্র বাব বির শ্রী গার্ভ্রন ক্রিন শ্রী শার্ভ্রন ক্র क्रय-प्र-इं-पह्रवास्त-स्र-पा स्ताय्यक्ष्य-मुन्द्रवा स्वर-व्या ळॅबतः केवः म डेवः क्षॅदेः वरः र्जयः हु "धरः ख्रुतः म वैत्रः वतः मॅरः यः केवः """ र्लं र्लरायाय मृत्राय दराय हैं । वास्त्रीय स्वा सेराय है रावा र्रा हु रे स्वाया स्था मुका मिया हिया का सं रामक्या महिया का सि रे निक्या महिया मिया का सि रे निक्या महिया मिया मिया मिया मात्र्याम्बेराम् मृत्रम् वाक्षे ने व्याम्बेराष्ट्रियातुवातुः अहतान्त इ.য়ूर्। ल.७.२८.५.७५०५१०५८५०५५०४५५४५५५५५५५५५५५५ त्रया के ले या अर्ड बता लु अर्ड द्। युर वर केत् में व्यव गुर हू व्यवे हा

अनिन् नर्या क्यान्र्रिया धेवा मदे शुन्याहे ता नहेव। देन् इयस तथ บฺที**ร**ฺบฺรฺาบฺรฺาธฺรฺาดีฅฺๅ **รฺ๛ฺพฅฺพฺรฺกฺ**ฃฺ**๙ฺรฺะ**ฆฅฺผฺหฺฺนฺพฺ๛ฺรฺรฺ **२५**-वर्षाञ्चम् तळत्यालु**र्वाळॅम् यालु नर्वा**तृ त्यते न्ना याम्बेरादिरः ः ः नव्यवारा अहिव वि न न अही । अहित अविवास केवा में व्याग्र में मान **ଌୖ୶**ୖୣୣୣୣୣ୰୰୷୷ୢୢୠ୶୳ଌ୶୶୰ୄ୕୵ୄୢୠ୕୳୴୳୵ୡ୕ୡ୷ୣ୵୳୴୵ୣୠ୵୶୵ୖୄ୵୶᠁ देर् है : या दु वा हु नावा है । यह दाया रहा वर्षे । वर्षे । देवा हु । हिर् बॅद्रायाळेबायंदेरश्चुबाग्रीपदाबासुरक्षानु विषायदेत्रायेवसायाचा । । । । । । कै.प्याञ्च , वा.पर्या , पाञ्चवा, पक्ष्पाय , प्रविष्यः श्रूषा, पाञ्चर, प्रवार, प्रेयः श्रूरः श्रुरः श्रुरः श्रू बहर् यालु लेवा वता केरा बहर्ग यह मा वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग लदुः शः यथ्यः मूरः यः क्षयः द्वारः श्रीषुः क्षेत्रः यः त्यः न् मूर्यः हेन् ः श्रीः श्रीयः तक्षयः **श.**चर्षयः चेश्वरः चःद्री हेलः धरः क्रः चीः खे नवः ख्रांचा व्याचितः स्वायः ल्य-पर्वे ने न्या में न्या के प्राप्त का श्री प्राप्त के प्राप्त क **৺**শ্নান্দা দু'এই স্ত্রাঞ্জীন কী'বামন ক্রান্ট্রা धिवः यताः देन् त्यः विः दि दिः वुः न्वन् दः वः यत्रं न् व्यवाः तः न्वें न् यताः देशःधरः द्यदः यदे यद् वः वैषाःयः दत्तुषाः ऋषाःयः दर्षेशः वेशः ववः वुः · · · · ः **बर्**न्। क्रुन्यः बर्षेदः केदः यं 'द्रयः दह्यः न् हृत्यः मृतः यः केदः यं यः हेन्ः वृर्वास्त्राच्यात्राचा स्वास्त्राच्या विष्या स्वास्त्राच्या विष्या म्बेर्यायाः कृत्तिः ह्रॅब्राकेवा हिन् न्य्र्सायन्याम्बरायायम्यान् वा केवाः मःक्षेरःयः परुरताते। मॅरः यः क्रेवः मंदेः क्वंवः क्रेवः विदः पत्व गवाः वरः वि:र्वेगवाद्याः मन्ववायायायाया विरावामवान्याया वि

मल्यायाकी हिन्ता देता वु मन्याहर् पर रेन्ता मादि नेनता क्षे ह्या । **ब्र**ेषे सुन्वः श्वापः प्रवेदः सन्वा अन् स्वापः स विवयान्न क्षा पुरत्येताने क्षुप्या सर्वेद केद संदे सुन दया दहार है **कुर**-कु.र-ध.म्ब. १८-प्रवच व्यवस्थान्त्रेय-प्रवच्यास्य स्थापन्य विचया विराक्षत्र अपन विषय स्ति। दे विषय श्री मुना स्यवाय अपन प्राप्त विषय शुनःकन्दः। धनःश्रवःन्द्रेकःग्रैःवयःन् गनःसं स्वेरःन्ययःन् धनः श्रीर. बर. मी. वया र गार. हिर. लगा चित्रा रायता राष्ट्रे गता वता म्राया केर केर केर महत्व विदेश मा प्रमास्य प्राप्त केरा निर्देश मा स्वर किरा महत्व **केवः यं**देः व्यार्मारः तुःरेवाय विवाग्येयः हः वुवार्षेम् ग्यायः न्यं वार्ये **र्षयः** प हे मा वया श्वमा हु ' अवया द तु या अस्त् । अपया द दे दे हूँ व र क्रेवर ग्रीया न्तुराञ्चरामुका केव देवे रेगायाया म्रायाहा अव्यापने गाया वि व न्दा ब्रेन्स्यह्यात्रम्याम्यराष्ट्रीयाम्यराष्ट्रीयरायम्यराष्ट्रीयः केत्रायः हेन् मह्नाः मु संहर्-पर-सहर्-पाने-प्रियानियानियानि पर्ने स्निप्या गुर-सर-हेन्-पान्य बॅद्रायाळेवार्यते विषयाय ह्वानु र्वेष्यार्वे १८नुवा ह्रेंद्राळे । पर्वाया नक्षेत्र-पगुत्र-ग्री-ईना-क्षुन्य-अर्नेद-ळेद-ध-ध्य-ॐनय-न्तुय-शु-क्षुद-----दर्जन दर्दे दृष्येद्र यया देशायर येवता श्रुवाया विगा दरा। न्दः वासेन्या वेता क्षेत्र वितरः वहर् । क्षुपया वर्षेत् केत् यं त्या **वॅद**-५ दे 'कॅस-५ र पदे बिट- झ-५ में ब 'बळेंग' महावा **वं '**म् र्ह्ण' हु ' '''' बहर् रे व्यार्व्व त्या दिन्य या स्वापा स्वाप য়৾৾৽ড়ৢঀ৾৽য়৾৽ঀয়৽ড়ৄয়৽য়ৣ৽ড়৸য়৵য়৾য়৽ড়৾ৼ৽৸৸ঀ৽ঀঢ়ৢ৽য়য়য়৽ঽৼ৾৽য়ৣ৽য়৸৽৽৽ बर-२ वे '५ तु व ची 'से 'पान क्षेत्र'म गुर-अहं २ चु तै 'तु शप्दे नश्यः य वै ''''

विन्तुः तेन्या निर्म इन्म्मदा अर्जन्म सुरा मी स्वाप हे दावरा नमृत हुराग्री त्यरा र्व तरी धरारे राधरा सुव शुवा है म्रायरे हेरा राव म. बुबे. पडिंद. यपु. हेब. पड़ेल. पश्चे विश्वाप्त. क्रु थ. थे. से. ल. यह र. ध्वेत्रः मुत्य मः उद्दर्गमः केत्र में या नेतृ मुंगुः तिनः म्यययाया महेत्रः त्राधेः · · · · वरानी मतुन् मववरा ठन् म ठॅवा परि तुवा धेवा ठेटा कुलाम रहेंदायाया केव् सं न्द्र ब्राट्स अपकेव् सं मानेवादी है नईव् व्यवस्य न् मृत्यादी थि म्बियायाश्चर्यास्य स्वयायाक्चराम् क्या ध्वराययानु यार् स्वयायाक्च यायाक्चराया विषायेनवानम् गुरावराळेवाचा धरात्वावान् स्वाधरार्थेवाने। मल्यायावी त्याया इराम वेद्या यह नावया सुर्याया है के लेया लु मा यह ना " **६**-पर्वत्रत्वि-तर्वायाञ्चन्तर्भात्रान्दिःस्याञ्चलार्श्वन्तरार्थः कु सार्दे या न्याय न्मॅरानेरातन्त्राक्ष्या ने न्या शुन्तिर मिरानी त्यरा न्वार हुव के पत् विन् त्वाराक्षे क्षयानवानकराञ्चा यतुवातु । व करावरा สตุสผานิ.ไอ.บนนสะเลขาญ.งงง.ปุ่ง.หู่นาญิ.บน त्री ख्रापरा श्रुपरायम् दाकेदायं द्राप्ता ग्रुर प्राप्त स्ट्रापर हे श्री राष्ट्र न्बॅरलही न्द्रस्ताक्षे पर्भवास्य व्यवस्य ने अपरार्धि स्वर रॅंब-ब्रेन-बेब-हु-नॅर-रूप-विनवाशु-नव्य-श्रम्य। नेर-महेब-विन्या **८व**.त.वेथ.केप.की.पथत्रत्य.पथ्य.प्रे.पंतु.पंतु.व्याच्चित्रयाचित्रत्य. म्वयार्थः इत्म्राया केवायया दिनान्ता विन्ति श्री क्षेत्र मित्र

① (বর্ষার্থেরব কুর্র্ন্ত্রমের ১০০—203)

हे रगिते बहु व व तर्**देव** र घें व व वित्र क्ष र समाय हा स धेते ळें गल 🕶 वयः व्याप्तः वहूर ग्रे. श्रे. पत्र र. श्रे. श्रे. वर्षः र विष्टः र ततः पत्रे र. नहिरानविद्गातु तहर् सेरानहिरानदे सहरा पार्व रायर सामु वा में यः इतः । विष्या विषयः विश्व विषयः विश्व विषयः विषयः । विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः वि पग्रिः ह्वं ब केवः वयः गुरः बॅटः यः केवः यं तेः न बॅट्यः यः यद्यनः सुगः न्टः ः बह्यवारम् हा हे नवाम् वास्ति न स्वाप्ति न विवादि न हे स्वतः न है या दिन र्रात्सर्परि सुद्रापाय विदार्। होगा होरा स्वार्मिताय हेता मञ्जीमारा मिन् नि स्ताना स्तान नह्रवः यः मवर् के धेवः ययः अहे रः वयः शुगवायावा रेटः शुरः वशुः रहितः গ্রী-অইবে-দেরি-দেরে-মে-মে-মেন্র-মেন্নি গ্রীক-অইবে-দেরি-**दर्-श्र-म्य-वद-तेर-श्रुर-अ-४ तप्-वन्य-ध्र-हे- ५२-५ में ताग्रद-ते- व**ि बेदः यः दब्देशः बुदैः यमेदः यः बाहें दः ददः बाहें दः यदी वः धेवः यय। दः सवा तर्भरामगः नर्**रः कॅन्** रुवा न् कॅवः वेषः प्रमादः ववः के रारः ये र या विराधः स्थलः वर्षाः ग्रुरः ग्रुरः वरः क्रेवः धेरः ने ' में व 'लुकः यहु न धरा ममत्रक्र महिवासदे न् मृत्राम न् ग्रे ताके ता चन केरान हे राम धेवा ... यत्रः क्रॅबन्सं क्रेबन्सं ध्यमः विवाहः न्या क्रियः यह न क्रेन् निताना म्राम्यक्रियः स्राम्यान्यम् स्रिन्यः म्राम्यान्यम् । स्रिनः स्रिन ब्रास्य न वार्ष किवास सुनाया अहेता है । न नाय । न चर मं । नरा पर्छ । रःमदेः द्वमः हेरः र्वम्यः मदरः ह्वेदः धरः पद्धः या "① देवः म्वयः दिरा दे-वयाक्षाक्षाम्याक्ष्यं व्यम्।यर-न्र-क्षे-व्य-व्य-म्ब्य्याक्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं

①(বর্ষার্নামধন কুরার্শার্নামন 203-204)

प्रमानिक्षात्त्र प्रमानिक्षात्त्र विवाद्य विवाद्य विवाद्य विवाद व

व्याः त्राः व्याः व्याः

① (বর্ষাশ্বী**র**'বর্ব'র্ব'গ্রহম'204)

कुलः रॅटः न्टः वठरा पर्दः न्सुटः न्य वा कुट्रा द्वारा गुटः हॅटः ब्रुन् प**ङ्कन्** । ब्रुंन् व्याप्ते । ब्रिंन् व्याप्ते व्यापते व्य नुष्यम् न्या मुद्रा नर्गेन् न्या नर्भेन् । स्या ने रान्य तर्भि ति हु । सक्ष्य न जन् सुदःर्वन्यःर्वः सदःसुःतु दःइवस्यग्रीःसदःवीः मह्दःयः हुदःवीः भुव्याः स्रदः वर्गु ग्रायर पश्चित् प्रविदान्। वर्षाया ग्रायर परि पर में या से स्वराज ज़ॴ॔ॱख़ॺॱॻॖऀॱॡॹ॔ॴढ़ऻॕॸॱढ़ॺॸ**ॴ**ॸॖ॓ॱख़॓ॸॱॸॣ॔ॴख़ॸ॔ॱढ़ऀॸॱॿॗॴय़ॱढ़॓ॸॱॱ**ॱॱॱ** য়ৢঀ৻৾ঽয়য়৾ড়ৣৼৢৢ৾ঀৢৼ৾য়য়য়৺য়ৣৼ৾ৢ৻৻ঢ়ঀ৾য়ৼঢ়৻ঢ়ৼ 型と致・火力・ मदी-न्यं व-न्यम् व्यवा-न्युद्र-तु-दुर्-मी-द्धंतानु-मद्र-त्मं वातानु-ववा-ग्रीट्र अर्गु नवासर मर्श्नेट्री सवास्त्र वावार्षः इयारा सवारा सवा दैदः वर्रावे वर्षः दृदः । वे : वरः रत्यः श्रे दे : दश्च यः वि रः श्रे : ब्रॅं व वा वि रः र्मण्यास्य सुराया स्वर्या कराया व्यवस्य विषया श्रीया प्रमाण <u> इत्रश्चर-र्यु-पर्यः म् र-र्युर-इवयः यदर श्चरः ग्रीयः स्वापः स्टर्यः </u> क्रिस्ट्रिंट वर्ष्ट चिका हे ' ने विकार्य वा विकास मान्य विकार विका व. 12 व. पश्चा. थे. पश्चा. के. यती व. राया इवातर मिवा पषु र राया है या ॻॖऀॱॶॱॺळॅवॱऄ॒ॸ्ॱॾॆॸॱ<u>ऒ</u>ॖॸॱॸढ़ॏॺॱॖॱॸॕॸ्ॱॻॖऀॱॺॱॾॆॣ॓ॱॸॼॗॺॱॺॺऻॗॱ ॸॺॱ**य़ॕॱ** <u>ਫ਼ੑੑੑੑੑੑੑ੶੶੶ਖ਼੶ਖ਼ੑ੶ਫ਼੶ਖ਼ਜ਼ਖ਼੶ਖ਼ਫ਼ੵ੶੶ਫ਼ੑੑ੶੶ਲ਼ੑੑੑ੶੶ਖ਼ੑੵਜ਼ੑ੶ਖ਼ੵਜ਼ਖ਼੶ਜ਼ੑੑੑੑੑੑੑੑੑੑਸ਼੶ਜ਼</u>ੑੑਜ਼੶ਜ਼ੑੑਜ਼੶ਜ਼ੑੑਜ਼੶ਜ਼ चरुषाच्या मृत्रेषाम्रान्स्रामुनान्यया श्रीत्याह्रमः चेत्रत्मेषाङ्गनषा । बादनेरलाधरादेन इबका ग्री नर्डे दाशुरातु व्येन पदी में रान्वमा में विरा म्हेन्यं ने . चरा नहरा १ वेषा म्राया निर्माण 뎨.

ড়ৢ**ঀ**৽য়ৢঢ়৽য়ৢয়য়৽ঢ়ৢয়য়য়৽ঢ়ৢয়ঢ়৽য়ৢঢ়ঢ়ৼৢয়য়য়ৢ৽ঢ়য়ৢৼয়ৢৼ৽ बा खना नार्ड : भुनावा न्यान न्युन् निवाना हे : वया हिन निवान मिताना की निवान विरः हे 'न्यम्। वमा मार्डम् विन् द्विन् द्विन् वस् मान्न द्विन् त्य षरः म्पानियाने ने विवयातरे वयाने रामाने रामानियाने व्यापन द्र-रवनायपरायन द्रायमा मुख्यामा मुख्या वर्षा वर ₱षः पर्वतः पत्तुदः मुलः वृषः क्ष्रः पदेः मुँ स्वेदेः लाळः ह्वं र सेवः द्वेषापदेः • নিশ্বন্ধন নিশ্ব " উপাৰ্মা "খ্ৰী শৈ 1792 শ্বী লান নি<mark>শ্বনা</mark> ਖ਼੶ੑਜ਼ਜ਼੶ড়ਖ਼੶য়ৢ৵৻৴ঀৼ৾ড়ঀ৻ঢ়ৢ৾ঀ৾৴৾ঀৼ৻ৼ৻য়ৼ৻ঀ৾ড়ৼ৻ঀ৾৵৻ঀঀৼ৻৸**ৼ৸** ब्रूटः यद क्षेत्रः व्यद्यायः न्दा व्रेषा यद्वः स् वेषः व्रेषः व्यवः याः वा व्यव्यवः देः त्रुरः(कॅन्) त्रअःमःन्नुरक्। देःदरःदुकःअव्यःदुःद्विरःहेः कॅन्वराग्रुकः <u>ট্রি-ঘর-ব্রশ্-বর্ধ-শ্বিশ্রেদ-শ্বর-ব্র-র্জ-সূদ্</u>শ त्रवासः त्राह्म स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास इतः) द्वारायानेयान्य्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्रान्त्राः मान्दा वृत् हूंदवाशु मर्वन पहुं या होता वावन वृत्ता मान्द्र स्वाया **गः**मरुषःषः एहे वः मॅ रः भिः कुषः सं रषः वः (रङ्गः) श्वः तु रः ग्रीषः ने रश्चः नव्यव मञ्जूर छल भर्त कु न्वन सर ग्राम् न्या हिर न्य व वर अन् छेर. सम् पहरावरायात्रा वि मृत्रेशायात्र वाञ्चेगा सरारेते जुना

गुरुग गुर ध्रु र धर्। द्व-ग्रद्द-स्-|दद-अव-ग्रेश धेना-स्व- नहदः द्यापत्या श्री वा हो दा श्री वा स्वार का साम वा स्वार के व ता मुला वि सुतु'सुतु' (न'ठ') पर्वत्रायम्बा हु त्यञ्जरातु वार्षे राह्म वारकु वारा पहेना दयात्र्वा शुराध्याते । नक्ष्रा गुरा स्वावरा लदा ग्रीया वस्त्र सं स्वरा यात्रवर्गायते म् भ्रवतान्ता वहुवाने मिन्द्रा वर्षा वर्षा क्रावे वर्षा वर्षा हे. पद्यम्ह्रास्य अराज्या पहरा ॥ व.पाड्या पत्र क्राय हैं। राज्य र *वैद*ॱकॅर-२-कुल-यॅराञ्चर-ਘद-२कॅ'-य-ळेद-यॅ: पहि: यह-द-दरा दे:ऋः… **ः** न्यंत्र-मनुर-पुरापदे प्रमाद-भूत-पश्र्त-दित-र्यय-दिन्र-र्रामु----र्पर्-ग्री-न्यं द-न्वण्-इबल-ध्रेन-नङ्गुल-र्षरः। जुल-र्य-नेल-सु-१८८-रूद सप्तानी प्रमान के जना के कर देवा येव प्रमान के का देवा येव प्रमान के का से का के का के का के का के का के का के <u>र्धर तहन वेर वस्त्रक दहन रे लुक गुरा हु वर लह गुैक हुर</u> यदः धेना त्यतः यह दः द्वा विवायः यञ्च द्वा यः देत्। " पे देवा नवता मॅ्रारशयत् वायश्चिष्यं परारे खुषायते अत्रार्ज कर विषा झार्ष्य राज्य पति पति चुरामा इता वरावि पार्थिया क्रिया के प्रवाक करा वर्षे वर्षा बाह्यरागुरा। र्देवःश्वेरः रणवाराष्ट्रवार्ध्यः यहेनः व ব্ विमयान्याया दिन्तु प्रविषाः भ्रमया देना विषाः विस्ति देने दिन्तु स्ति स् र्न्-ग्रुंट्-पदे-ट्यम् सः केद्र-स्-राह्रेर-पः र्न्-भ्रन्-र्न्-ध्या यापरायः द

विनाधन्यन्त्रा ब्रह्मां के कुदाकराष्ट्रवायान्य विनाने हिन्ने हिन्ने कै.र.के.च्या विष्यापरारी क्राया विषया में या विषया ञ्च.पर्ञर.छ्र.पर्थरमध्यात्रवायात्रा मूर.केल.र्टे.सं.१र. ৾য়ৢ৾৾ঽ৽য়৾৾*৽*৸ঀৄ৽৻ঀয়৽য়ঽয়৽ঀয়৽ঀৢঀ৾৽৻য়ৼ৾৾ৼঢ়ঢ়ৢ৾৽ৼৼৼ৽ৼঢ়৽য়৽৻ৼৼ৽ঢ়৻৽ हें भेव-मन्नपः कुषः **ईं म** सुः दुः राषः देव-वषः वॅदः में रः स्टरः वषः प्रकयः लॅन्या १ द्यम् १ द्यम् ४ द्यम् ४ द्यम् ४ द्यम् ५ द्यम् য়৾ঀ৾৾৾৾য়৾৾ঀ৾৽ঀঽয়য়ৣ৽৻য়ঀ৾৽৻ঀ৾ঀৼ৻য়৾ঀ৽ড়৽৻য়ৢৼ৽ঀয়৽য়ৢঀ৽য়ৣৼ৽৻ঢ়৻৸য়ৣ৽৽৽ म्या प्रमान्यम् पर्वे साम्रे प्रपासीयान्दान्यम् केरात् विष्या विषया बु न्वराय वै तु वा तव्यवा सत्वा वर कुर त्र का चेव पतु वा वा हैं : दैरागा के रराव्या में रायदे र्याणा र्यं वृणी यर पश्चरा दे। यर हैरा कु र्दर् ग्री द्वा द्वुर इवका प्रयास्य मुला मुलाव वरावी स्वारा पर्रा अन् छेव भरकः के वेरे न्यं व न्वम नया स्यास्य न म म व क्रून देन्य का की न न्म्यान्त्राक्ष्या "नग्नान्याक्ष्याम्यान्त्राक्ष्यान्ता छन्तर नम्तः यन्तः सम्याग्रे क्यान् ह्यान् ह्यान् स्यापः इययः हे स्यान् ह्यान् ह्यान् स्यापः द्धयः श्चेषः श्चेरः श्वः रदः। श्वः द्वरः श्वेः श्वः श्वः श्वः स्वरायः द्वरायः द्वरायः द्वरायः द्वरायः द्वरायः खन्याची निने क्रूट स्वरायहता यह । विन्याची निने क्रूट स्वरायहता यह । क्षे ब्रॅन् मा ब्रेन् क्ष्म क्षेत्रकन् व्याक्त व्या में मा क्षा क्ष्म विन् ग्रु-कुल वः यवः स्वानुवायः यः द्वरः यळवातः वुः श्रेः स्वेरः न्द्रारः वारः ः ।

बर्द्धरतात्युवःॐर्'ग्रे'र्च'द्वियःर्व्यःदवृतःर्वेतान्नुरःउरः। वन्दः नवरः क्षेत्रः भेः व्यवाद्यः पत्तुरः अर्गः यः स्व क्षेत्रः यः स्व व प्रकः रेःः ः हैताकृत लु हिन् पर तस्या हैतान् मैता लेगा "० वहून वर्गा परा नग्रदः क्रॅं क्र न्ग्रदे प्रयायकः ह्रम् व्रायाव्यन्य राज्यस्य व्राप्त **हरः**तब्दः च्रुरायः परे**द**ः वेदः हे नः यदः। देवः तुः चे दापः चुतः वेदः ব্যাস্থ্য শ্রী মারা দ্বানার বার বার করে প্রীবার প্রার্থ বিশা দ্বানা मः तन् कः श्रॅं त्कः श्रुतः यः यने वः वैवः वैवः वैकः वैदः। विवः वकः देनः सुः विनः बै इं क्र वायववारु क्षेर श्वानिर वायया वि व व नहि ईव यायन यदः व देन : हे रा पराद : या रा वाय धेव : बेव : हेन : यदः धेन : या हेरा वा द : हे <u>ধুন ম অঙ্ক</u>র দ্বান্ত ত্রেলে র্মন গ্রী প্র বের্মন্ত র্মের দের বঞ্চ বিবান্ত্রীর व्रायश्चेन विरायकार्ने रायद्रायन् रत्युना भेटा ग्रमा बेवा खार वटा बेर सु ब्रॅं लग्या बेरामा न्या मार्यकार्ये दाहे हुरास्याया मार्यदारा मध्र ॲंन् पर्याने न्यान्तर संब्रा क्रिया विन् स्टर्म केया स्टार्य के सुर्या ळे. क. प्र. चे थे पर. चे थे. वे थे. वे थे. ये थे. य तर्ना रातस्त्र मञ्जूराने न्यक्ष कु के मही में प्रकासु करा कु निवा Ҁॱॻ[ੑ]য়৺য়ৢৢয়৾৽ঢ়ৢৼ৾৽ৼৼ৽ড়ড়য়৻ৼৢ৽ৠৢৼ৽ৠৼ৽ড়ড়য়ড়ঢ়ৼ৽ঀঀৢড়৽৽৽৽৽ <u>बित् कि नास्या स्याम्बन्धान्यः मुक्तान्यः मुक्तान्यः मुक्तान्यः मुक्तान्यः मुक्तान्यः मुक्तान्यः मुक्तान्यः म</u>

^{🛈 (}न्यव प्रवे प्रवे सुर पहुंच देव देव 861)

त्रवहरः इ.जर् तुः ध्रेनः श्रृंगः नहरः छेः धेनः श्रेः केलः नलः छिनः ग्रीलः कुः निनः न्सुरः न्यगः यः । ननः नेतरः म्वःश्चेतः श्चरः तस्यः करः यः वर्षरः विरवः श्चेः स्राः नरः ।।।। यक्षाश्चिरः श्वॅमा चु ग्रु : यक्षा यश्चरः यतु मा स्वरः य मा स्वरः यह । से दः ग्री.पथबाक्र्मरं.क्षेत्रःच.भेषात्र्.प्रक्रें.श्वं.धैत्रःट्रं.बपबा ला.वि.श्वं.धैतःथा केपाशु तर विवादिर विदेश विद्या बर-वी-भ्रु-अतुब-तु-ध्रेब-र्वेच न्-लय-र-ल-वर-पन्-इयल-विप-न्रांता च्या है . देन . मु . दंन . म्रें या ग्रह्म . म्रें या या महा ह्या . च्या या . व्या या . उद:ब्रॅंद:क्रॅंद:र्चेद:ब्रेंद:बेर:पद:पद:पद: देर्:क्रंद:लु:क्रेंद्:बेर:बेर:बर्ट: न्मॅन्या ध्रुत ग्री नेया क्रुवा है प्यंदा श्री नेया यया मृह वावया यशे प्रुया स्वय बे.पर्या, द्रया पहूर मुब्र अधर विषा की. पूर्य शुर् कर अवध्य श्रेंबे. वि कु. प्रिया अस्या क्रे प्रायम क्रे वे प्रायम क्रिया मा क्रे या प्रायम क्रिया मा क्रिया ग्वरासं दे हर्। नग्रवा द्वरावरा अर् देरार्यरा। वा सुदे दुराधन पठरार्दा कु:रेग्रार्घेत्:कुटापति:अव्यातस्वाराग्रीराञ्चायातुः न्बरायाधेवा बेवासुराया वियायहर्षा ग्रुवा स्वा न्यवा मुप्तवा हैरा य:न्रः। ग्रॅंरःगेःश्चेःपःर्यम्यःगरःश्चेत्रःश्चेत्रःश्चेत्रःयःम्यय्यःसःरः तर्झन् बुद्रायतुम् केद्रा ्रियान्यद्रवाक्षेत्रः कुन् क्षां झ्रां झ्र म्यार्टा म्राप्ताम् स्थान्तिया प्रताष्ट्रया म्राप्ताम् यदे ब्रिंब में मा के रे हैं है से रे या रेटा है मा मेयर प्रया है मा विश्व है के.यर। से.य.नू.प्रथ्याम्ब्र.र्या मंश्रियायरुवायवेषास्य सेत् हेरः

क्षेत्रा क्षेत्र क्षेत

ने द्वा विकास है त्या के त्या

① (বৃশ্ব:ঘর্নি:ঘরি:ছুব:ঘইব্:ব্ন:ব্ন:ব্ন: 874)

र्स'न्द्रः। न्याः र्वत म्वतः में हेदायः है सूद्। न्याः वैषाः हुन्यतेः वरःञ्चरः दॅरः र र र । वाञ्च दे : हुरः धेन कुर र व द हरः र दे । चरुषःबह्यःवरःचर्दरःश्चरःश्चरः सु. त्रे. तुरःवरः क्रेवः सं. रट. ब्रुं र. क्ट्र : देवा वी : न् स्वाराह्य : यह वाया हे : क्ट्रेंटे : सुवाया ह्रेंया या वाया या या न्यंत्र-नृष्ठेत्रायतान्यंत्र-धुन्यान्ययात्वंत्र-ह्यायहेत्र-यायठवागुर-वरः वी'व्यव्यतः सु: तु: र-द्यवः वें : केवः यें : कृदः सुदः द्दः। वृष्यवः खु: त्रे : व्रॅव ग्री-ब्रुट्र-ब्रि-दिद्-दे-दर्ग-पन्। वि-द्-ठग-इस्थराग्रीय-कुदे-खन्य-ॼॅल.केर.बी.क्षेब्र.रबी.वीब्ब्रब्य.शि.चञ्चल.बथ.बरीब.पी.सीय.चू.चर्थ्ययाधे.. न्वलयान्। गुरामरावलाबहूतेन्न्रिन्तुन्द्वलायाह्नवलाहेतेन् *ब्नवादेव-चॅ-*केदे:बर्गेव-ववेद-व्यःर्द्व-व-क्रेव-चु-क्रेव-वॅन-भून-तु-वञ्चर-हे। दे हे द र्वेच वर्ष कर म्यया पदेश प्राय स्टर् खुयाग्री दे शुद्रात्र पुर्न द्वा या अया क्षे क्षेट्र य तुवा ग्री क्षेट्र व वा वा न्दात्रक्षयाः त्याविषः तुः विषयः याञ्चरः न्विषः यरः यदः न्देशः त्यवः ।।।।। बर्नरम्हुराने लुवा ने हेरा कु न्यं दार्वे राम्या महाया मा न्युका न्नरःग्रुःक्ट्रंसुरःके⁻श्चेन्याःभिगः ५५ुगः ५१ः वटः ५ - वेनयः वयः बद्धः … … ब्रॅंन-तु-बह्व-त्र-। र्थ-व्यन्ध-तुन। कुल-ब्र-र्न्न-व्यन न् वन् रॉन्तरह्वा बेल के नदे न्दर मंतु वक्ष द्वन्तर ने सु वहु न् क्षेत्रः । नक्षर वया में र विते क्षेत्र ये दे ने वयम ह्ययाया यह या वि ने वदः रेदः नःत्रवान गृदःदर्दे है वेनवा दे या है गृवा " 🛈 वेवादिनः दत्त् ग

बेद्रयानेवे न्वमायवना कुः बह्नवः वदे त्यहें मार्वि क्षेत्राध्य कृत्रायद

मैल पड्यल देय दर पर्विद् धरा "केर द्या मैं र १ दे मुल लर **श्चेतः**ज्ञनलः ॲन्:पन्। कॅन:भि:कुलः ॲ:लःबः (रहू:) श्च:नुःरःग्रीलःञ्च:पः नतु ब्रायदे ळे लानकु न् वे ब्राञ्च रायदाय वे पाळे ब्राया न हराव लान्यना । न्स्र मे अतुवानु अर्मे पह गरा क्रेंग परि ने पा लुका पा अ बन्। रूव कर् वर् वर्ष्ट्रतार्द्वितार्वे राष्ट्रियात्राचन्यात्राची केर्त्राचे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे **ष्ट्र. य. ४८ । इंद्र. कर्. य या. भैया क्षुद्र. यू. दस्या. य इंद्रा य इंद्रा य द्र्या य द्र्या य द्र्या य द्रा** ब्रान्यानराषु यापका क्रेत्राञ्चरास्यायरा नावरायरा नावरायी पहराया भूबा.क्रे.पर्श.बोध्य.वा.र्टर परुयातपु.रु.पाबा.स.कुर. प्रवाय.पश्चेपा.**ताट..** परः यः त्र । वृः न्यरः पर्वः मृतुः रः ठ्वाः ग्रुः । क्षेत्रः पञ्चायः स्टारः नेतृ **छव-व**यर-ञ्च-विर-अव-ग्रीय-र-प्रद-वियाय-य-ग्राचरया ध-नेत्। ज्ञ-व-विवुर मदी क्रे राप हु . पहि . हे द . में र. भि . मुत्य में रा श्वर . यद . यद . प्र र यद . यद . यद . यद . य त्त्राच्याः क्षेत्राः न्रान्तः त्रां के त्रान्ताः त्र्वा करान्यवाः तासुयान्तरः **।** बान् । धे ने पहर दबा वर्षे पहन् वरा क्रें न परि दे रे पालु वर्षे न र हिन तुषाव्यापाराषायळ्यषायाप्यद्यात्र्याचुन् वे स्त्रापा वेदषाप्र **घॅ** 'क्षेत्र' सर्वे ' प ५ वृषा हे ष' आर. पश्चुत्र' पर्वत् ' दर्द्व ' दर्द्व ' दर्द्व ' दर्द्व ' दर्द्व ' दर्द व्या......गुरायः केवः यं रातुः धेषा प्रमुषा हो देन् ग्रीः कर्षा हु स्वापक्षाः न्दात्रेयार्मेदायाळेवार्वेताव्यार्यायह्याजुरायात्रम्। द्वापार्यय इसान्नानियार्स्यार्थे पार्ट्सा श्रामा अताले स्वार् इत्रार्खन्यान् भ्रीना गुर्रा द्वराष्ट्र । द्वेत्रक्र स्वास् सेराना केरेर בשבים מים : של יבים שבת ושל מים בת ישל מים ב

लुकाळ्कना यदे रे ना ज्ञास अन् नु नु नु किया वेकान नि स रेन्। केटा भ्रेनयः ह्रेव तह म ध्रेव पर्या है निर लव ग्रेव में र या कव लिर ला १ स्ट. क्रिया में . यवत विकात वात वात कर में या है। देवर वा स्ट. र्मतर्रात्रव्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्य वर्षात्रम्यात्रम्य ळेव-स-२-६-गुव हु-६०-वय-६५-ग्री-प्रा - - प्रति-हुव-ळेवायास्टरंग ऍन्:पर्यःङ्गॅब्नःग्: नन:व्राःकु: बःच हु: क्ष्न्यः ठंब: धुव: क्रंन: नेन्। ननः देर.पि.च.इ.च्.भीय.धे.क.कच.चूर.१.८व्यव.हुर.५व्यव.धेय. त.हुर.. ... न्मॅलप्यात्वत्तुवातश्चरवायहरादात्वायाय श्वायत्या वेता ह्रदातु लुका मॅद्रासक्त सुरावी दुरातु क्षेत्र लु दे त्य द्वेरा हे का ह्वा विदालताया बर्ह्म म्हूब चुका सन् वि क्षे क्षुवा वका लु मार सेव मिर में अपका न्र नक्षेत्रके तथा थर दे केर विशक्षेत्र पानेत् क्षेत्र नगत खर नक्ष्र पश्चमता च्रतासम् देवे त्वमा सम्बद्धाः के तः विमार्थः के त द्भर होत् कु दे हु राध दिया भेदा स्ता । द्वा ग्रुट ग्वय ग्वीरा ग्री द्वर इ.स.चेर.चचर.चेष.ख.कर.चेया ब्रंट.प.चेष. द्यायर्व. पर्याय **क्रमः मः विश्वः सः । मर्गः निर्द्यः दयः निर्द्यः देवः चेन् । चेन् । व्यक्त्ययः मर्व्याः सः निर्द्रः । २⁻व्यान्**रभः ज्ञलः यं तः ञ्चे वः केवः यह **रः व्या**ञ्च ग्रायः न् ग्रायः वर्गः न् रः। वनामा अञ्चल अन्तम् भेराहेना गठवापर र केना हेराहे करा

11。 口河只'湖内'与月'名成'刘母',明白'中元',九八岁,为月'迎,为月'和八岁,

विद्यान्ति विद्यान्त्र व्याप्तान्ति विद्याः व्याप्तान्ति विद्याः विद्

ब्रुट.पर्या.कृटा चक्र.च.च मापाञ्च ब.ट मापामाला माने यापा ग्रीट.घटा स्र मृ्या द्वा दुर् दुर द्वा स्था वया सा द्वि दे स्ट क्रिया वस्त विया पर्द प्राचिया अवरःच ग्रायः च श्रुप्र थयः द्वा "ञ्जूष्र थयः या व्याप्र या व्याप्र या व्याप्र या व्याप्र या व्याप्र या व्याप्र <u> चुरः स्वर्यः हिंदः यगदः त्रॅंदः यद्दः च्यंदः खदः च्यं</u>दः खदा नम्ब-न्निर्द्नान्ठरार्द्र-वृद्धवान्द्रराधः द्रवाद्यः वृत्तः परिः न्त्रः बुताः र्वे त'य'र्थेर्'त्र'यहॅर्'बेर्'र्रा रे'बेद'र्धुर'बर'लुर्'हुम्'द्रश श्चिष्य हेर्र उरा रर लुकर् श्रुर्भ स्वर्धर अधिर अधिकार हेर য়ৢ৽য়৽৸ৼ৽য়ৼ৽য়৽য়ড়ৼ৽ড়৾৾য়৽ৢয়৽য়৽৻ৼ৾৽য়য়৽য়য়ৢঢ়য়ৢ৽ড়ৼ৽ঢ়৽ৼৼ৽৻ सःर्यापरादवायवायेव कुः व्यापरी श्रुवायवाय निवाहे निवादि । **য়ॱतु-र**ःविषयः श्चे-रःग्रे-त्राप्तेनः र्वेन् षयः पवः सु-हः नेव-ननः। सु-हः য়ৢ৽য়ৢ৽ড়৽ৼৼ৽ঀৢৼ৽য়ৢয়৽ঀয়য়৽য়য়৽য়ৢয়৽য়৽ঀ৽য়ৢয়৽য়৽য়ৢৼ৽ৼয়৽য়৽ঢ়ৢ৽৽৽৽ [मिते:बार्क्षद:ब्रेन्:ब्रेन्:ब्रेन्:ब्रेन्:ब्रेन्ड्रंच:ब्रेन्ड्रंच:ब्रेन्ड्रंच:ब्रेन्ड्रंच:ब्रेन्ड्रंच:ब्रेन्ड् र्षेम्यः म्रॅलः रयः र्धम् : बेरः ईवः ॲटः उदः । । विदः ह्याः दयः देः सूरः <u> बुर् अ.वे.य.४४.४८.वे.व.ची.लची.वे.कुथ.बर् त.प.४५.ज.४८.ची.लेबेय</u>. ब्रूज.८. द्रेय.त. ह्रव. ळूर. ५६ ज्. ह्रव. ह्रव. ह्रव. ह्रव. ह्य. ह्य. या. व बात्रिराप्टवागुरामु वर्गानु पहरवा नेवापर वर्ष म्बेलर्दा म्बद्धिर्राक्षश्चर्षम् व्यत्यायाः तुः वरान्तः वर् बे.सर्भा रुव पढ़ी लर् क्षेत्र रुव क्षेत्र क्षेत्र विष् हर दि हर हर हर तह वा हित्र चेन्-न्बंब-ळ्न्-डेब-चब्रुट-चङ्कल-चुन्-। "① वेब-ब्ववय-व----

① (द्वर वृद्धर व

र्मा नक्ष्रावहेंद्रान्यवावहेंत्राचीया "ने वया के व ग्रम्यायरास् चै.सुर-इ-ग्रूर-घर-ळेद-दॅदे-झु-बर्-द-र्-रंग बह्य ग्रु-दॅद-छुन्-य----पठरःश्रम्पण्डः वि देते हिंग न्दः क्षे अद्दर्शः स्वरा हेशः मेवे शः सर् वलानुन् वी तु लामला स्रात्र लाभे । केटा सं । चटा नु । साञ्चीनला मना स्रात्र सुला पत्रवाधिया ये.क्टा.यं.पञ्चरामस्य स्टायाक्रवास्य प्रतिप्रायकरः बर्दन्र विषाम्बर्या वया देवा में विषय वर्ष वा वर्षा "0 मायातः बुटः। रमारः माधः माने या माने रामे । स्वारः देवः स्वारा ग्रीः यन्यातुः **इंव.वय.**वेट.जत्राच बैट घट. येट.तु. कुष.यय. पश्चेट. तप्र. पत्र. य न्ता जुलायते अवस्य वियार्येनय हुतान मह्ना पति वरा श्रृदायहेनया न्र्वन व्यव न्रा स्व सातु या वित् व तुना ग्रमा लुवा ऋ वादा ता दिन्त्राव्याः अत्राध्याः भिरा वितास्त्राः स्वरः स भ्रमणात्मध्ययात्री न्मा वन् म्मार्याचीयानीय क्रिक् भ्रमायान गतः वर्दे रगा वर्षा भीगा नवर वर दे वर्षिय त्यव बिया क्षेत्र दरा **ब्रे-भ्रु**. प्रतःकः जियेथा ग्री**ट. घट. इययः दयः यः** याचीयायः क्षेत्रयः ≇्तः यालयः . न्यंदर्या मुद्रास्त वे श्रेश्व हुंद्र्या सरादर्गे न्या साद दे न्या मी खुन्या स्था । धेव वेषाच ग्राय यदी वेषण हुम चरा वि व ज्याय वर्षेत्र स्वीकरी पवातु। मधापत्मवायायायती वृत्ति हिर्मा द्वारा है। हैया

⁽ব্ৰব্বন্ধী:নবী:য়ৢয়:নই্ব্নই্ব্যই্ব্য:য়য়:895—898)

য়ৢ৻৽[৻]য়৾৾৾৽ৡ৾৾৾৾ৼ৽ঢ়৻৻য়৻৽৻৽য়ৼৼ৽ৼ৽ড়৾৾৾ঀ৽৻৻ঢ়ৢঀ৾৽৻ড়৻৽ঢ়ৢয়৾ঢ়^{৽৽}ড় **बेय**, न्याया वित् । व्यवतः इयरा ग्री प गृत पश्चर देव देन हैं र दिर प इव त है देर पता त हैं र न्युः इन् न्यः भेषः द्वायुगः नृतेषः वषः मेदः बः केदः देवेः 551 नग्रदः देव या नव्यया मरामुव या में राष्ट्र यमें नि म्या सम्बादा से वेयता सम्भारते : चुः चः स्वरतः क्रे : चुकः देन्। क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः व दुन्। क्षेत्रः व देनः व देनः व यदः विदः रदः क्रूं नयः वृत्रः सदे छ । यः यः न हे तः तयः द्याः ययाः तुः द्धं दः । । । । म्भेषाम् राज्ञेवास्त्रेत्युरान्रा द्वायदेश्चायदेश्यम् स् ऑन्:यः विनाने : तथा नु : यवना यया या त हुया निवा विनाने : केन् हॅन्याचेन्नन् कॅयायार्यम्यान् निन्नयायायायी नह्नदावर्षे येवकाः ठवः यः नह्तरा परी नायः सदः मुदः शुः थेः ई नायः यः पठयः वदः नीः शुनायः ... ब्रूजः क्षेत्र व. वेयः तः क्षः चरः च्रूचः उदः। विषयः ब्रूजः वेयः श्रवः वेदः व नर-नयवयः देवःनः वैद्यः न् मूद्यः यद्यः वयः हे । व्रुं दः रदः नृदेयः गः ः नग्रत्र्त्रेव्यीः म् राव्यान्वयायनः ध्येवः वेदः। ने अई दश्याम्ब तह्रव्रन्यत्त्रत्त्र्रम्याच्युन्त्रस्य्यानुराने के के त्राच्युक्तान न्द्रा हेयाः ষ্ঠ্র'অইব্নেইব্নেইব্নেইনে! ধন্মাত্র্ক্তির অভিমন্ত্রিন্নির্ম इ.पर्स्या हैर प्रवे हैं दे हैं त्रि हैं या है पर हैं या है पर हैं या है पर हैं या है पर हैं या है या है या है य दे. इया वर्ष्य क्रम् वर्ष्य क्रम् वर्ष्य **€**ल.श्र्वायःविचःयः न्वायः पवि प्रते ग्रुटः चः पहॅन् परे वहः वायाः स्त्।

द्व. र्र. त्यत्र. मेण. रिय. रर. क्षेत्र. व्यत्य. व्यत्य. व्यत्य.

①② (「四日·日南·日南·夏东·日美万·青石·芹和·929)

"ने वर्षात्र्राहर केव र व वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा केव र वे वर्षा वर वर्षा वर्य विष्यः म्ह्राचा ग्रीया क्री न् सुन्य स्थितया प्रशुः वुषा " 🛈 वेषा मृषया व्यन्य रूपा दे वयान्यमा देव यह मान क्षया ग्री त्या देव है न है न स्था परि भूरायाने स्वीरयानवयारीन मल्दानी धेन कंग्यायम रहे तह या ही का होन विष्र्राया भूरावा "रूटा ईवा छेरा बहे त्या है या है या है या हर पर दे वि रू वर मते थर शेर् रे रायहें दाश के नाया महिला निर्मा निर् र्टः। मृत्यामा इरि.सम् श्री श्री रामक्यास्या ह्रम्या मृत्रः मबेला महर व्यापा ने दे स्टार प्रमा स्थल में न् र्यम मी न्यम मु म्या प्राप्त देव छेन् वाष्त्र हे र्डू र कृ विष् श्वरः (गुत्र परे श्वरः कृ कष् · · · ब्रेन् क्रिंदः प्रष्ट्रवः प्रदेः बर्षेवः यः येव) म्राह्मयः रामवदः हु। दर्षेवः पदेः वरातुः लु : न अरामदे : मा : प्रमु : न्रः स्टु : येन् : मह्यु अराम् न : प्रम् : कंट्र **बः** नर्डदः नेन् गुरुषः न्षे गुरुषः सरः नह्यु रः दशः मन्दारः मह्यु सः गुरुषः महितः स न्याच्चेन्-हु-पठराधना-पठन्-पानेन्। मॅन्-१०राम्या-भैरा-हुन्-पॅनेः न्मॅ्ब-पर-पर्व-तर्ध्याचेन्-भ्रमण-पर्केब-भ्र-भेर-दुग-पर्द-म्केब-र्थ-वैराताकृष्ट्रम् विया (प्रणयाक्षेत्राह् याना श्राञ्चा प्रश्ना प्रवापा <u>ঀৢ৾৾৾৾৾</u>৴৴ঀৄ৾৾ঀ৾৾৽ঀ৾৾৾ঀ৾৾৽ঀ৾৾৾ৠৼ৾৽য়৽ঀ৾৽ৼৼৼ৾ৼয়৽ড়য়৽য়৽ড়ৢ৽য়য়৾ঀয়য়য়৽ঢ়ৢ৾ৼ৽ঀ৾য়৽৽৽৽৽ **र्व**न्याञ्चलाञ्चेन्यायाः वितान् नेतान् । स्तान्तेन् । स्तान्तेन् । स्तान्तेन् ।

① (বর্ষার্শ্রেরর কুব্ র্বা গ্রন্ম, 204)

ब्राम्याक्षयात्तान्त्राच्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त र्यतः नृज्ञं तः यरः पर्वतः यहं याचे न् ः श्रम्यतः हे ग्रुनः ह्याः ह्याः यताः व्यापार्यः । प्राप्तः । न्या निवासी मित्र के निवासी के विवासी के विवास <u> हेल:मृद्देल:स्वर:कृत:स्वर:स्वर:स्वर:स्वर:मृद्देल:मृद्देल:स्वर:स्वर: ::</u> श्रीतात्यस्याः वर्षे बाब्रेन् व्यन् स्याब्धनः वानेन्। ने नः वहे**न** खेन् याहे ने हे 'हुन्ः त्रः य न्तुकः द्वेन्वरशुः नक्कुत्यः हे 'न्यारकः द्वेन्वः ग्रे' विन् नुः त्वः नेवः न्युकः हे निस्ति निस्ति निस्ति । विस्ति निस्ति निस्ति निस्ति निस्ति निस्ति । निर्मित मते विर्मा हे दुर हैं देंग हुर मुवर वेषा पर्रा मन्दरायानाश्चरादयाने न्याचेन कुरियाम ने। वृत्यरापरी मन्दराया ৻ৼৢঀ৽ঀঀয়৽ঀৼ<u>৽য়ৣ৽ঀয়ৼ৽য়ৣঀ৽য়৽</u>ঀৢ৽৻ড়৽ঢ়ৣ৽য়৽ৡ৾ৼ৽৻ড়য়৽য়৽ঀ৾৽ড়৾ঀ৽ঢ়ৄৼৼ৽ *मन्तः*मृत्रःद्वराक्षेःत्रेरः मरःतन्त्रः ग्रॅन्यःश्रॅनः सनुग् यः न् मृतः मृत्रेः … मदे हुर महें र तथा भेषा सुराया अवत्। वृ र वर पदे म व दा हु . सु . सं यम्या चेर नरे न्र म्या विष्य वे के नकु न न्यु विष्य में र प्राय है या ह्य न स *ৼৢয়য়*৾য়৸ৣৼ৾৽য়ৢ৽ৢৢয়ৼৼয়৸৸৾৾ৼৢ৸৸৸ঢ়ৣয়য়৽ৡয়৸ৼ৽ৼৢ৴৸ঽৼ৾৽৽৽ **ल्र**ंबर् ग्रे प्राच क अवस्र प्राच क्रा वर्षे र वि क्रिया क्रा वर्षे प्राच क्रिया देनका बन्धा श्रेका स्वाप्त व्यवस्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व

ने क्रें र ग्री भें र ग्री व र हुर विच य भू र व ग्रर मी प स्थल ने व वर र त्विन्यः क्षेत्रः व "विन्यः कवः स्टर्मेष विन्यः मत्रः च्यापरः च्यापरः <u> न्यमानी पहेन् व्यक्तर्रा वर्षक पहिलाम में राष्ट्र हे रार्श्चेर रहा</u> नःनेकःन्वःन्न्रकः र्वेषः विनः विनः विन्कः श्रीःन्यन्यः श्रुषः नर्वयः यस्यः स्रुपः नर्वयः यस्यः स्रुपः वि नथा पूर्वेत्याग्नी द्वाराया मूर्टिया मुयार्याया स्थापा मुयार्याया मुयार्याया मुयार्याया मुयार्याया मुयार्याया मु ॻॖऀॱ**क़ॱ**क़ॗॆढ़ॱय़ॱॻहॆढ़ॱढ़ॺऻॎॱॱॕॸ॔ॱॾॕॣॸ॔ॺॱॻॖऀॱय़ॺॱॸॕॕढ़ॱय़ॱॸ॔ॺऻऄ॓ॸॱॺ**ॿढ़ॱ** यहितास्यादेवा देवाहिताहेन प्राचेन प्राचेन प्राचेन स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन ष्यवःश्वायाः तम्बर्द्यम् अत्रात्यम् क्षेत्रः तम्बन् हेरात्येवः हेराः देराः परातः तुः तृ वः हिनानी क्षें न्वराक्षेत्र भेना नहत्र प्रयेगरा इराहे 'खुन'र, पर्ड खु दाह्य पा दिना सर न ने देन में ता रे देन सहित हैं द निया सरी " के इया नियान तहवार्याता कु वहरा 'र् रेया न बुद्र र वन पा वन देर ये वताहन *त्तुवःवत्त्वःवरःॲदःववैःद्वैष्वावःध्वयः*दैःदन्दे*रन्वुवःगर्उरः*यैःवेरःकुः इसराश्रू र भ्रूं न चुर छेर हिर तु थेवा र क ह्या नु द छीरा पराया न इयान्या वीवान्दर देवा देवा येवा चुवा सूचवा तुवा या व व तु । यदा पश्चनः । । **名と、くぶ山、梨と、男・ジノ・ロ・製み、男イ・ナイー はる、切と、ガイ・魚とかり、いない**

^{🛈 (}हु स्वते न्त्र वितः इवः वरः वरः धनः नेवः देवः १५८)

हुयानहेदायक्षययायानविषयाक्षीम् दाया हुः स्यान्ति स्वर्याना यॅं की अञ्चित त्या नगाय क्षेत्र रॉयाय ग्रीय रुत कुत दु अ**र्में** परे दिन तस्यांहा व होन् हिन्। वर्षवायह्या हुन् हुन होना होन बेदा देर पहेन श्चेग थेग इसल रेश धरा र न न न न तरे पर र न न वि:ळेळानके:बुद:बुद:न्वेत य:वेळाय:न्वे:न्वेल| नेट:नुक:बेट:अ: **ळे**वॱधॅल'पग्नदॱश्रॅंचॱबेच'स'ग्वदः'व्या-्रॅंव'ळंव'रे'रे'पवैव'यर्ह्चपः…. ॱ इंदः अर्ह्न : ने 'न्यमः न्यं दः केदः यें 'सेन् : यः ग्रॅं तः वें यः वेनः श्रुन् : कुन् : म्बर्द्ध्यानुष्यम्बर्द्धाः भुवाबी स्पर्द्धाः निर्द्धाः स्वर्षाः याध्यवः रु.सव्रायदे सुन्या ने सहर ग्री स्त्रा दू स्पर्व हा सन्दर्भ र ग्री र में र स **ॾेव**ॱधॅर-यग्द-द्रेव-ग्रॉं -र्नॅवन्य-अष्टिव-ग्रय-धेव-धव-द्रुट-दश्चर- • <u>ब्रुथ,ब्रुथ,वेथ,चर्य,क्रूर,र्ह्य,भ्रीय,त.क्रुय,त्र्य,य.</u>क्रु,श्रीर,वेथ,धे.वे.त. श्चित देवः धेवः यः श्चेतः के र्नेवा मायः श्चेरः धुवः देदः तुः कवावः यदेः मॅंबल म नेल यहिंगा पत्तर पुरा कर द्वारा छैर पर देव हेल में दारा केव रॅंकॱॸॅर्ॱनढ़ॖॺऻॺॱख़ॺॱन**ढ़ॱॸ्ॸॱॸ्य़ॕढ़ॱॸॺॺऻ**ॱऄ॔ॺऻॺॱऄॗॸॱढ़ॾ॓ढ़ॱॺॾ॔ॸॣॱॱॱॱ ब्रेन कर दें न दम ब्रुट न दर में र बरे हो र महर **환.ŋ**호.리쇼| मैलासमा मर्डिन् हुन् हुन् बेदा महात्मा सदारा धेदा नहा महात्मा म्द्रिन्यः भेदा म्हः देना क्षेत्रः न्हः नहः देना थरः नः भेदः ने रहः **बेर**-ग्रैज-म्रवाम-म्बर-क्रम् वेज-नन्-भ्रम्य-द्व-लदे-न्व-अनुःसर-मक्चर्.त.पहवार्यायाः अञ्चलायाः जाराष्ट्रां र्वतायाः वरः वी **रॅं द**्रम् म्रॅं र त्या**में र** या के द्रायं या सुग्या यस्त्र र ग्वर व्ययाप्त्रे यस्य सुग्या र

मृत्रत्वेचला सहर् कु ने त्वुर त्युर सुत्र सेर ला न्व्रें रता मा वर्षे ता " देन्-न्द्र-देन्-देन्यायायेन-श्रु-इषयाध्रीयाश्रेद्र-सम् यावया विवायाहे के ले के जाता ने निर्मा क्रिया प्रायम मही न वा प्रायम त्रुत्तरकृतःक्षेत्राधेताः मृह्दायदेनताः सहतः हेताः देन् 'ग्रेता वेन्' पत्नाताः ^{त्या}श्चल्यायान्द्राञ्चेन पुराने पुराया केवायं राम के शुद्रा ववा हवा पुराया वयानु नामार के कदा अञ्चेन धेन सूर कुर सन प्रतर् सन नेरा श्रीत श्रु ने दिन्दर देशक में केंद्र का भाषव केंद्र में में मूला देश भेदा ला देन् रदः यतदः यवः केवः यः ईग्य देवः धेव। १ वेवः यवः मञ्जूवः धन्। " र्ने **ब**न्ड बन्ड वे सः मृत्युः बन्ड वे बन्ध ये बन्ध में निष्यु वे प्राप्य के सम्बन्ध विकास के सम्बन्ध विकास के स रूते वृत्ता वृ सर-वृ-ह्य-सुत्य-ग्री-नेमः» ठेल-य-वृत्य-द्य-यदी-नेव-कव-वेर-न्**गुः** बदे वर देव पर्योत् या न श्रामायया

दॅन् ग्री स्वावार्थयः ग्वरः यह ग्वरः क्रेंन् सं केंग् हें दः केंग् हें दः केंग् हें रः स्वरं हेरः । रस्

"শ্বন্ধ কর্ম ইর্ম ন শ্বাম মন্দ্র শ্রা শ্রাম এব এব নির্দ্তিব কর্ম নির্দ্ধিব কর্ম নির্দ্তিব কর্ম

ईट.व.रथा च मेबाबर बेबा चूर. कु. जब हू चे प्रवियः पहुचे ता **ग्रेट.** छै. बर-तु-हा यगावासरम्ब-चर-चि-त्वा-स्व-र्मन्वाचेन्- विव-स्वस-स्व-पठकावकाथी ने पहरायम। मानवादेन उदाह व केवाया ठवा (वका) म्रोतः क्षुवः क्षुवः विष् वर्षः वर्षः भी । यात्रः द्वान्यारः दह्नायः देवः वर्षः वर्षः वर्षः **इ.**र्भीषुःश्रूरःबेशुरःश्रेषःतुरःश्रुषःतपुः भ्रुषः श्रेषःवितासीयःश्रीयः भ्रुषः स्थान्यः सीयाः नन्नान्यत्य द्वरान्ता दे न्या इवया कुवारेट स्मित्य (अनया) दर-पञ्चम्। हु ८-ळे :श्वर-ययः देव हे*द-द* मृद-प-(पर्यः) द-यद्यः यदः पञ्चरःग्वराद्धंयः दर्भे पविवःस्यापः तृ ःयदेः ञ्चः सन्दःहेः दुदः कृ र्ञेगः ः • षु वरा रें व कं व भी रें व रें व स्थार या मिली गरा परि र में र रा रें व स्र र र र तस्यातु प्रमाद अन्ता <u>इंदा मृ</u>ष्या संस्यायम् साहरा साहर बेदः दंश बेदः वुरा के देश केदः हुन विकार व न्र्रा.लब्याः व्राच्याः प्राच्याः व्राच्याः व्राच्याः व्राच्याः व्राच्याः व्राच्याः व्राच्याः व्राच्याः व्राच्याः व् **ब्रे**चेय.बर्चेट्य.धे.सेता के.ब्रेट्र.टेचेंट.ज्र.ट.चकेंट्र.तपु.ध.क्र्याना

इन्याबद्द्यः स्यायद्द्यः प्रायद्वः म्याः व्यावः स्यायः व्यावः स्याः स्य

र्देव-कव-मृत्रेय-पर्म में र-मी-र्यव-र्वम वयायावाज्यस्य हुः न्स्रायह्रणान्वरायरायहेवा म्राप्तायम् श्रुरा ध्रणायळ्या बुबाक्षेत्रवाचर् पुतानरे तह वाया शुन्ति राम रहा। धुवाय असते। मिलार्म न्यायावयाक्षाया छ्राम छ्रा राम स्राम्य इस्ता छ्राया स्ता स्राम्य द्वारा स्राम्य स्वारा स्वारा स्वारा स व्यास्र प्रविव प्रज्ञा प्रज्ञा चुलाळ्या किरा। इंग्या समित से से मेरा न्दः। वि.क्र.श्रेम्बर्गुः स्ट्रास्यरे बेटः सं नर्गेन् वतालयस्यरे पास्त्रवातुः देवः ब्रुंतः चेतः द में वा दे वहंदवः वयः यदे हें हित्यः व व्यव रे न्दः। वि केरे क्रेंद्रस्य व्यं रे क्रंटर रे व्यंदर क्रेंवाय व व्यन्ते न्वा क्रुंब्य न्दः तुः त्र्राः धदः त्र्नाः धदः रूपः रूपः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप मुंगतान्दानु त्याँ प्यदाने निराययाधेन मुंदा कुरा कुरा के न्दा देदा रै'चक्कुन्'वर्षे'वेदे'रेग्याम्यर्ग्यर्खंग्यान्यंद्रम्यम्'द्रयम्'व्यायाधेष् त्यवेषायक्षात्रा ध्रुष्यायास्य द्वार्द्धराध्रदा वेदे देवायायात्र मेंद्र मबेब स् न वर्षेत् ग्रीका की ग्रम्का त**रे । धेन ग्रम्का स्**वार्धका परि । स्वारास्य पट्टरःश्रेनराः वेनःपट्टमः चेनः चुनः मा विवासः। प्रचाना पर्ययाक्रिया द्वरातानक्याक्षायरात्र्यरात्र्वेदार्ययात्रपरात्र्वेदाविव

त्रीच्याः श्री ।

देश्च्याः श्री श्री व्याप्ताः व्यापतः व्य

रॅंब-ळंब-नशुब्र-धर-। घॅर्-हु-छ्र-:ब्रश-हबाय-क्रुर्-धर्-देग्रा निः भूग भेवा भना धेवा करा क्षेत्र बेरा मिं वार्ता ने भारा स्राक्ष्त त्वानेनावाना विवास मान्याना विवास मी-न्म्याचिन्-पानकन्-माधिवा न्-पाया त्याम्यर हुन्-बेन्-न्नः मॅरात्याक्षर् वेरायर् पर्दे यह यह प्राप्त मेराय वेदा रहा तया प्राप्त क्षर <u> यद्भवर केर वद्भवेद ग्री त्य पक्चर रेर कु र्</u>ठ व्यक्षर रे पठवर <u> च्चेन्-ज्जुःन्मः। ध्चेनःकन्-त्रयःग्यम्यमः त्यःक्षन्-कः स्वन्द्यः पहमः क्चेन्क</u> र्देवः कवः रह्ने : धरा द्वानः वै: नायरः दर्द्दन्यः ग्रुयः धरः द्वारः नवरः ፙ፞፞፞ፙ፞ጚ-፞፞፞ቛ፟፟፟፟፟፟፟፟ጜ-፞ቘኯ፟ጜ፞፞፞ጚጚኯ፞ ቜፙኇ፞ዀ ፟፟፟፟፟፟፟ጜ፞ጜዹፙኯቜዹ፞ चरुषाष्ट्रवाश्चराष्ट्रमान्वेतायायान्वतायायात्रायदेन्यायह्रम्याव्या पर्श्वनवार्श्वन द्राय**यान्यत्रात्र्र्भवान्द्रान्यन्य**न्यन् वेरस्यन्तः नेरः बन्दरन्धं वरे इर्रावे देन्न वर्षा है हिन है न्यं वर्षा है न्या म्बिकाले। मुलाले। नैटारीपठकानी ही वियानिकाले ते मुन्दि हु के क्या है न है। विषय मार्थिय विषय है न विषय है क्षरास् म्हेन् लय सर तसुत्र सुन्त र्ना म्हेन न मृत्र भन हुं

यहूंचे र में या के ने निरंधा चे था र वा की पर का र वा था है है या विरंधा के प्रेया की प्रेया की

रॅ्व·ळ्व·ख़ॖ**ॱ**धर। इतः व्रान्यमः मैः दमें ·ॲ्नः यर् दः न् यॅवः **र्चयाययात्रीदायतुनाग्रुद्धाः ५ क. यद्याद्याद्यान् में व्याप्तान्य में व्यापत्त्र में व्यापत्त्र** पङ्गानेकान्ता ठान्यवानेतात्वा कुर्नेका के नेका नकुरस्य कुर रे। उ.र्घवाग्री:दंगानु:पद्यन्ते, श्रीसःपदी पद्यार्यदारेरः न्यम् बै: नकु: न्रः ने : शु: ऋ' सू: दे। वकु: न्यं व: कु: देम् : हु: हैर: न्यं वा ऀबेट-२ वॅब-२ेदे-वॅब-२ बब-बे-बे-बे-बु-स-ब्-२े-घ**ठ**य-**रे-**दब्-**कट-वाबे-ब-**निव्यस्यास्य भाष्ट्रमा स्रे वा स्रे वा स्रे वा वी वा सह वा सा निवा सा निवा स्रे वा स्रे वा स्रे वा स्रे वा स्र गुरः क्षेर् र न में या वर्ष र में वर्गी स्थाय हर र में वा हर र में वर ग्री:र्क्षय:हु:पश्च-र्यवा रे:र्क्षय:ब्रेट:र्येव पठरा:रेब:प बेव: तथर: न्म्याया बैर्मान्ता इत्राव्याचराचेत्राम्यान्या रैबात्यरायवा बर्हे त्रहें गृषा हुषा बैंग्केंगा (या) न्दा विश्वेरा <u>ৡ৾৾৻৵৽৴৶ৼ৶ৣ৾৽৸ৼ৵৽ঀ৵৻ৡৼ৽৴ৼৢঀ৽ঢ়ৢ৽৸ৢ৽৸৽ঀ৵৽য়৽ড়ৢ৸৾ৼ৻ৼ৽য়৻৸৽৽৽</u> **बैन**'र्षेन्'ळॅन्'या ने'यार'डेव'कन्'र्से'र्सेदे'त्रें'कूंनस'नेस'दिस'र्सेन' ॻॖऀॹॱढ़ॺॆॸ:ॻॱॲॸ्ॱळें ॱॸॆख़ॱॻढ़ॏक़ॱढ़ॺॸॱ**ऴॕ**ॺॄॱय़ॱख़ॹॱॻॹॺॱढ़ॺ॓ॄॺऻॺ**ॱऄॱॱॱॱॱ न्मे**ला

द्वास्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रस्य स्त्रम् स्त्रस्य स्त्रम् स्त्रस्य स्त्रम् स्त्रस्य स्त्रम् स्त्रम् स्त्रस्य स्त्रम् स्त्रम्

भूद्र-इस्तःश्रृंद्र-लट्रन्नाः चेद्र-द्यूयां भूद्र-इस्तःश्रृंद्र-लट्रन्नाः चेद्र-द्यूयां भूद्र-शु-अत्याः चळ्यः प्रवाः प्रवाः प्रवाः स्वाः च्यूयः स्वाः च्यूयः प्रवाः प्र

 व्यातम् विराध्याक्ष्यायर्थाः विराध्याः च म्याः श्रुत्त्वाः द्वान्वेवः क्ष्याः प्रावेवः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषय

 इत्यास्यावता तार्श्वर द्वार क्षेत्र द्वार क्षेत्र क्ष

र्देवः छवः पर्द्वः पर्देवः धरा प्रायः भ्रवः छवः पर्द्वः छेन् स्त्रवः द्याया वर्षा द्वा द्वा द्वा द्वा वर्षा वरम वर्षा वरम वर्षा वर वर्षा वर्षा वर्ष <u>ल्रह्म चिक्रा के श्री है स्वाप्त स्वराधित स्वराध स्वराध स्वराध स्वराध स्वराध स्वराध स्वराध स्वराध स्वराध स्वराध</u> लद म्रायका वरे वा सुना मेका के माने का माने रा सुन मु त वर्षा न में प्रविच मदर् कु र्रः। व्राचनम् र व्र व्र क्रियः यह माया व्र व्र के विर ग्रायान्यात्रमे वाञ्चेषा मारोप स्रवानु स्थापन्या पर्मा विषा न्दा विष्या बैद'रा'अळअरा'ग्रे' झॅट'न्यॅद'र्राग्रायत्देव'श्चर्या'ग्रेय'बीरा'बीरा'यारीर'''' ब्रुंट्रायाय ब्रुक्य में राखंट्र देवाका द्वका के कार्य वार्ट्र ख्वा सहें र् ग्री:र्कवःमङ्गे:दंबःम**ेडे**रःक्रदःयः नृहः। वनेरःन्यदःच ग्रवः दुः दःकेः न इ.र्ट. अ.च०थाग्री मृबं वयान्त्री नवव बेरेर छर र्रा मनेर-न्यद-में क्य-दिवास-न्दा केन्यवा ह-न्यवामक्यावया पर्यु: ५ में ला (म.) श्रे. ५ मंद्र- इ. ५ मंद्र- १ करा हु ने लाही. इट्रियं वर्ष्ट्रा प्रगद भृषा अञ्च वर्षा केरा की राज्य प्रश्ने हा महिरा ब्रान्त्रा व्यापार्यम्यात्राचाध्येत्रत्म्यात्र्राच्ये स्वराम् न्ब्या हराधनाक्षात्रस्य संवाहित्यान् करावान्त्रा वस्वनाक्षेत्र ह्मारा में प्रवित्त हरा द में के पार्टी या अवस्थारा है। हरा द वित्र **द्धरः यहमः नृज्ञेश्वर्रम्यः रूटः यम् स्टरः यये । वृज्ञः ययः यथरः नृज्ञेशः**

इंदर्धम ह्रापित द्राप्त विष्य देवे पशुःन्य व द्रा ्र में छेर्! मृव्य थर नन सर्द्रिय के नम् इम्रा की स्टार्ये न्रा ¥८. रिच. छ८. रि. ज. टैट. र्याट्र र. ही ८थ. चं था व्यवस्थाया. मने मार्थम। स्राचित्र व्यास्त्र मार्थमा स्राचित्र विश्व स्राचित्र विश्व स्राचित्र विश्व स्राचित्र विश्व स्राचित्र विश्व स्राचित्र स्राच तृ । यदे : न्न : बदे : न्न : व्याप्त करायर : व्याप्त विद्यापति । व्याप्त विद्यापति । व्यापति । व्यापति । व्यापति । रॅं र्क्षमः तर्रे : धेवः वॅर् : मलु ग्राज्यस्य स्तु ताव्यस्य देवाञ्च गः गैरा मङ्गे · · · मःलल र्वाः र्वाः स्वाः स्वाः पर्वाः प्रवाः स्वाः प्रवाः स्वाः प्रवाः स्वाः स्व बर्चे द:हुर:५२:५न: मृदय:हुर:७द:५५ न्या:गुरः। प्रगृद:ह्वंद:ग्री: र्मारा होत् : नृष्मारा स्वापा सः ता के स्वापा स्वापा हिता विता में ता के ता त्रेयाञ्चम नेताम् भूतिया ५६ तास्य कुम ने में न्याया हेता न्यंत्र मुद्रेय:न्द्र। हे.हुर:मुद्रेय:नठय:नङ्गं,रम्य:य्याय:मूर:मयय:नङ्गं, २९**ग हेर्-कु:**स्र-अ:पॅर्-२९ग्राखय:**नद**-र्र-फू:पदे:ब्र-अर-**४ॅ**य:.... नष्ट्रराष्ट्रीयानक्षं र्वेषा निमाराक्षेत्ररा वर्तर्वेत्रक्षरा इयायेवा स्राधा भूने होरे प्रधिया इ.च छेरा प्रचान ता ঀ৽য়৽ঀঽয়৽ঢ়ৢ৽য়৾ঽ৽য়৽য়ৼৼ৽য়য়৽ঀৠ৾৽ঀ৾ঀয়ৼৼ৾৽য়য়৾ঀয়৽৽ঢ়য়৽ঀয় क्षुत्र-चॅदे-छुन्। अहेन्-पङ्गं न्नेतान्यंतान् चॅत्-न्नेयान् चॅत्-**वॅन्-व्रा**-----पर्भ्र.पःर्दा ग्रॅलःर्घंदःग्रीःक्वःहेर्युःग्रलःद्रलाय्भ्रता ग्रीयः

क्र-क्रिब-प्रवेश-प्रमेश-क्र्म क्रिय-प्रवेश-प्रवेश-प्रवेश व्याप्त-प्रवेश क्र-प्रवेश-प

म् ब्राह्मन्यायस्य म् स्वरामक्ष्य स्वरामक्षय स्वरामक्ष्य स्वरामक्षय स्वरामक्य स्वरामक्य स्वरामक्षय स्वरामक्य स्वरामक्य स्वरामक्षय स्वरामक्य स्वरामक्य स्वरामक्

हुव कर. मूर. १ वया हु . यदे . हा अ रहा हिन यह न तर्गाना ष्यस्याच रुषात्मात्री श्रुः केन् स्यान्य प्यान्ति म्यान्य स्यान्य स्यान्य स्यान्य स्यान्य स्यान्य स्यान्य स्या नव् ग्री र्यानम् र क्रि. क्र क्रि. क्र क्रि. क्र क्रि. क्र क्रि. क धेना पश्चर मुहर रेन्। ता क्षा प्रतास्त्र प्रतास का स्वर प्रतास का स्वर प्रतास का स्वर प्रतास का स्वर प्रतास का लट.पर्वेच त प्रचय.र्रूट्या इट.ता ग्र.ट्र.थव.घट.पठय.अस्. महिलाक्षे तुरार्ह्रास्य दे द्वावलाहु त्यते ह्वा अर्दा पह केवा अर हे दि त्रा (या) दनुष म चुदा देव्या या मान क छे र कु के प्रतुन " क्या विवायह्रम् यदार्म ह्यार में या ह्याया सहये शेरिमया प्र रु'ऍ८'शे'इस्रव य वायर्क्सवारी'रेंदे हॅट'र ऍव'ववाशे'ग्रद्याहे <mark>ऍर्'</mark> **इ.तम्रेट रे.त्रेट पर्वेचयालय तरावे.टे.च्या रे.चर्चरयाचेल झ.टे.ी** *रैर-रे*रे-मु:न्यॅव वर्ष-ग्रुर-सर्-व्रॅन् म्रेन्-र्वेत। पर-मुख-स**व**ः रेग्रव दयः वॅर् प्रत्वायाः अवः सर्यः भे ग्रुट्र प्रदे । यदः अवः सः रहः दयः … यहराव शुक्षान्दा हु 'यदे हु 'अ'र्से ब्राय थे में 'हु र के 'महें र केंद्र र्षेण्याः अयः धरः वृत्यः वृत्यः व्रेरः व्या चेरः वृत्यः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्याप ग्री'लय ग्रेन्'क्रेन्'क्र्रेन्'म्बेय। द्वम्य'यद्ये'क्रुय'द्वन्य'न्न्र्यक्षयांग्री' धि नी (गृहर) बै ळ गृहिर । अग्वायायय द्या र् राधि नी वुर देत । लबायातास्त्रात्वराष्ट्रात्रदे न्ना वान्दा मुंतायश्चर गुराधी मेदि सद महिंदा **コ.ロロ.イエ.ロ 変なれ、別か、コライ、別・番り**

स्वास्त्र प्रकृत्य स्टर्गा स्वास्त्र स्वास्त्र प्रकृत स्वास्त्र स्

न्रभू.च.प्रथा ज्र.कट.नुगराकान्रभू.श्र.क्रग

स्त्र-विश्व विश्व विश्व

र्ष्य-व्यक्त-पञ्च-द्याः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्राच्यः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्रच्याः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्राच्याः व्यक्त-प्राच्यः व्यक्त-प्राचः व्यक्त-प्राच्यः व्यवक

द्व द्व ने स्व ने स्व

 $\frac{2}{3} \mathbb{Z} \cdot \mathbb{G} \cdot$

 यदे-विरा। दे-बहुर्या हुंन्याया धना हुंन्दे त्यूं नायण। रूर यदः मूर्यात्वेदा स्वयापर विषाव्यापया धना हुंन्दे त्यूं नायण। रूर वस्यया ग्रीया हुंन्यों स्वयापया

स्तान्त्र्याच्यायाः मृत्यापक्तः वेतः कृतः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्यापतः व

स्वर्रात्र्वा स्वर्णायात्र्वा स्वर्णायात्र्वा स्वर्णायात्रः स्वर्णायात्रः स्वर्णायाः स्वर्णायः स्वर्यः स्वर्णायः स्वर्णायः स्वर्णायः स्वर्णायः स्वर्यः स्वर्णायः स्वर्णायः स्वर्णायः

र्न्न-ह्यान्त्र-ह्यान्न्यः स्यान्न्यः स्यान्न्यः स्यान्न्यः स्यान्न्यः स्यान्न्यः स्यान्न्यः स्यान्न्यः स्यान्यः स्यान्

भिक्तश्च. श्वम्याः का स्टान्ट म्याः श्वे त्र स्टान्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः स्टान्यः मृत्यः व्याम्यः स्टान्यः स्टान्यः व्याम्यः स्टान्यः स्टान्यः

चैद्र-दर्नेश-सँग्य-व्यद्ग-यदुग-य-द्दर-द्वय-वज्ञद्द-व्य-विद्य-विद्ययः ग्यर य-सं-स्र-क्षेत्र-क्षेत्र-क्षेत्र-क्षेत्र-विद्ययः

⁽क्) अद्भः स्त्रास्यास्य (क्रि. द्वा)

म्या भ्रमा स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स

13. ञ्चिग'ञ्चल'न्य स्वाक्ष्य प्रत्यात्र क्ष्य क

वैव में र य के व संदे र गादे र में र ल र व या र स्व र पिया मिर र ही र ल र भेव-म-भव-ग्री-ग्रुय-सव-वय-खेर-हे-वे-पड्डेदे-ह-*न-*म्यु-५-द्य-हेया-विं पर्दे सुन् बहे*र् पः दन् र्वराचनाः विवानवाः निवानवाः स*ह्य ଵ୕<u>ୄ</u>୳ୄ୳ୢୢ୕୶ୄ୵ୣ୕୶୶ୣ୶୶ୄୢୠୄ୵ୖ୕ୡ୶୵ୡୖ୶ୢୠୄ୵ୄଌ୶ୢୠ୶୷ୄୢ୕୷୷୳ୡୄୖ୷୵ୖୄ୵ अनन द्वायते । व्यायते । व्य <u> </u> इ.९५.भे.फ.<u>रूथ</u>,पहुबे.वैशत्तर,चक्रेबे.श्र.श्रूर,चच.चक्रेथ,ग्री.**बेथ.**स... <u>न्धन् य सँगलाय ग्राय क्षेत्र वेचला ग्री न् बॅन्सर में ब स्तर हॅं व्याय व्यवर स्तर स</u> र्वाची सर्वे तर्दा वर्षा पर्वा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षे तुः चॅन्-द्रेनः सन्। द्रः त्यदेः च्चः यः वत्रः त्यः कॅनः क्रुंनः त्यः देः न सन् चेनः मञ्जून'यर'वेर'वर्ह्च कु'वेर्'वर्ष्य पर्व धर'मञ्जूर'र्दे वाव्य रच. <u> न्यर या भेष ग्रेष सु खु दे सु ५ व ग्रे सु ५ ग्रे स अर यह त ५ ग्रेष में स</u> *ने*ॱग्**नः**रॅलःदहेव<u>ॱ</u>छ्लःसरःहूॱसदेॱञ्चॱबा**दलः**ङ्खवाग्**न्द**ॱसःकॅलः**ञ्चटः** त्ताकः तह्न ने ने स्वाप्ताने ने वापतिवाता के ता क्रिंदा ने लिया महत्र वा म्राया प्रतिव निर्मात् प्राया स्तार्थाः व स्तार्थाः क्रिया क्रिया मे निर्माणे स्तार्थाः व नगःभेराःक्षःक्षुरःन्**गुरः**राःसःसदेःवराया**ञ्चःक्षे**गःकुरावरा श्रुताः यूट्राचर र्राप्तसलाक्ष्याक्षेट्राचीलिट्राचक्षेचालाचेराक्षेच्या नरमः विषा की वदः रु: बॅन्: हॅवा यहुवा ग्रीका काह्य कर कर नरा ववा १ का...

श्ररः ह्रम रमः नवरः वजः नेवः यरः पञ्चरः द्वमः हुमः हमः निवः यरः वि.च में बारा बाडुबा.च कथा क्रूबा श्रेंट.ज ₽'¤&'₹\ गूश्च.ताज्ञ.की ह्रव यासुयावकालु देगकासु सु विष्य सु ज्व के पह्रव है दे रूपा मुद्र-देव-क्रेव-ह्रे-ह्रेरे-सु-पठकाकद्र-अ-ग्रु-स्र-पः धेव-पवादि न्विताग्रीः ग्रयान्य स्वाताः सुरिषेत्र नेरामाधाः स्वाताः स्वाताः स्वाताः स्वाताः स्वाताः स्वाताः स्वाताः स्वाताः स्वाताः स नमॅन्-वस्तर्ने-मृत्रेस्-ग्री-ग्रस्वस्तु-धेव-र्रेस-द्वेत्-न्मॅस-वेस--लुकार्कर-प्रमा ने क्षा भार्ष केवा श्रुर क्षा वि प्यवास्य प्राप्त दे दे दे दे ना है. ळे.घ६४.६५.५५२१.ज्ञ.ज्ञ.ज्ञ.च्य.५५४.५५४.वेथ.स.५.८४.५४४ वि.त.क्षेच्.यहूर्तंत्र स्चार्यस्य प्रचान्त्र भ्याच्या प्रचान्य व्यवस्य वि. वेष्टान्य प्रचान्य प्रचान्य प्रचान नी-तु-त्यः क्षु-क्षु-ह्रेष-दह्रेष-इष- (व-) नृह्रः सन्त-व्यत-व्यत-व्यत-व्यत-व्यत्न तर्ने न्ना तान सन् न्यु ने ने ती के ताम अपन रुन् के श्वर प्यान सन् नाम ताम ताम का निवास का निवास का निवास का न ॲॅं**२.५.५क्ॅं**र्टेश्यच्याने र्नेव्यविवृत्त्र्येट अक्वन्यं दे प्रमृद्धेवयः मन् देन् वि र्वेन तु व्वन्द्रलाम व्यन्त हु मानकुन् स्ट नर बेट वेल <u>र्रः इर्.ग्रे.श्रुपः बेकेन् श्रूबायाज्ञारः ज्ञास्यात्वः वर्श्वः व्याश्रुरः चनः यर्शः ।</u> कुराग्री पङ्गव भारे पतिव रेर् ग्री कुरायाय वरा पश्चरता हैन व तेर की कैपान् .लच. संप्.मी. रेथा नधुच. में. का बना क. न्द्रः बहुव : क्रे. च : वहा बेद् हिर्। द्रायमधेर में चायदे द्राया में हिर्द्या संवत् हे धेदायह न पड़े.र्ट.कु.प.पत्या यट्य.बैय.ग्रु.कूय.प्रियय.ज.युवय.डु.बड्डब.**बु**.

रें दें तर् व नदः यदः बेर् वर् न्या व रें द्वा ता है दें व है व है दें व है दें व बेर्-परुषःरेषःदः ५२ व दषः गरेरः ग्रीः सु स यः क्षः सरः पहरः र्वेषः ह्यः । न्द्रात्रक्रूर्वे त्र्याची श्वराहृ त्यते न्ना साहरक्रे का के के का के राहि ही। **৾ - অর্ভ**্রেম র্ ইন্ ব্র ক্ট ন র্মন্ম গ্রী স্থা স্থী , স্থা ম হিন্দ র নি ম র বি নি ম র ম নি ম র ম নি ম র ম নি ম | व. चथाय नुषा श्रीवा ह्या है . रे वा वी प्राप्त वाष्ट्र श्रीवा था सुरा हिया थी. इलाईन दर्र्पालयानवान्ता हुन्या सहित्या ही निता हता है व वया थे। मुर्वेगायाम्बद्धारान्दा यदाये केटा श्वराकृत्य वातु दरा तु असा **द्रथायहूय ग्रेट** श्रेपथा रे.पस्याज्ञराच्या श्रेराघरारे खेया ह्या <u>च्रे</u>रा पविवाला हा बिदार्स म्या भिराहरा हिंगा तु पर्मा व वा करा वहीं व हेना हु । न्दा ने अर्द्धन्ता सदा पठता ग्री औ द्वान शुन ह्वान ते नाता ता नदा सक्याता त्रु : भ्रु : भ्रु : ध्रेव: क्रंब: क्रंब: विकास माना यह अका नहा । हिरा क्रंब: विकास माना यह अका नहा । क्रंब: व नहर-म-तर्ने वर् बॅट बॅय क्र अस्। यदे थे। यद्य थे। सुर **र्वेग्**यःर्वेः र्वेरः र्राटः यह ग्वां कुः कें र्वे र्वेरः वरः वर्षेरः ग्वेव्। यदः पञ्चरः ञ्च याञ्चलाञ्चः र्वान्यायाञ्चर पदि वि नन्दर नुन् के के न पदि हर् धेन इर.१८८। दर् कुलात्म में हूं नवा श्वावा के नवे हानवा वि र्षराम। ने अहंदरा धुँगरा अविः में न् न्रा विदाने वार्षा राजा प्रकरा वयागुरः हरः या वर्षः विषाञ्चीतः वर्षः तुः तस्या दविषाद्वीयाया सुर्वाद्वीया वर्षः वर्षः वर्षः न्दिः रेग्या इत् छे द्राप्तव्य मे द्वा अक्षया र्मेया हुरा रूप

पः पठकारे 'में बः पवेब सेर् ब्रास्टर स्वास्टर सुवार द्वारा स्वास्टर स्वास ষদ্ৰে । রুব না মুব না মুব না ন্দা ক্রমে ক্রমে রুব মুবা বা তথা না व्ययःश्रेटःगेःङ्गं द्यानञ्चनःव्यःव्ययः व्याःहे श्वेत् नरः हेत् श्वेटः वेः व्यटः नः न्तः। यदयः कुषः कुषः यः यः न्द्रं तक्षे क्षे स्तः प्रते केन् धिष्। र्यर-व-यर्याक्रियास्य वर्षा वर्षा विरायास्य हेयासु स्थान रेग्राक्षेत्रम् यान्दा हु स्रदे ह्वा यान्दायह के दार्थेर हे ने निर्देश [म·मदे·तुःश्चॅमःके·मरःस्टाम्नेवा नेयानःशुःशेःरेयाःकनःग्वीःरेयाः तह्रवाच्चयाव्याक्चवानेतार्यात्रवाचिता हृ त्यते न्नायास्याया कुट.रे.लूट.श्रूट.रुटा ते क. कुर्य श्री. बूट. श्रालट. बर्टे. रुवाया ग्री.लूर्य. हवानिवाहु के पदा द सिंदे हु त्यते ह्वा सामा सामा स्वापते स्वाप <u> हुव.चेथरः ब्रेंट.ज.यूट्यनेथल बर्ट्रव. ब्रिवेश व्यत्त्र क्राय्य त्राय्य</u> हुट.ज. ब्रुट्या व्याय्य स्थाय व्याय्य स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स तह्ना चेन श्रा भेव तर्मा क्या श्रुट ने श्रा हे व पर ने प्रतिव भट मुत्रे. तीया मु. सं. पर्रे. वि बेया ता से. पी. तीया पर्ये से. पर्रे. खेन्याक्षात्रकान्त्राच्यायात्राच्याः विष्याक्ष्यायाः विष्याच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या त्रुलान्ष्रवाववावीत्रात्रात्रीत्रात्राचेत्रकृत्वा न्यायास्याहेवाया ने प्रविकास में र क्रिं क्रिंक के कर के स्थित क्रा मी खुर हैं हैं ल है पर हैं मार्ग नक्षायर कर अपहेन्या स्वया हेर् या प्राप्त विष्या है या वा कु सियाग्री से पर्टे विश्वयाश्चर त्यार वार्ट्र नदी श्चिता श्चर त्यार हिता च्या यार्ट्र न्त्रा बह्वा न्या क्षेत्र धेवा वतरा व्दा के त्र वा वा क्षेत्र के तहन विवा

नक्रनामानदेवापदे स्वत्याक्षात्याच्या स्वत्याच्या विकारी विकार (दर्वेषाः) ये तस्यान्द्राचर्त्र्न्यान्त्र्र्त्रायान्त्र्व्याया न्यायान्त्रेत्राची न्यायाची चर-मर्बम्।यम्।वर-वै। अतुव-तु-अकॅन्।यन्य-ग्रीकान्नुन-ह्या-अ पहें<mark>दानुन्-न्ब्रानुन्-छ</mark>-भेर-नुन्-पर्न्द्र-य-या है-हीन्-पर-ळॅत क्कॅ**ट.वय.ट्र**य.पहुच.व्य.क्र्य.क्रे.व्य.क्रटा. ४ट.पत्रेव.च्र.क्र.वय. लिट. पक्षेत्र जियाना स्वाया याना पर्वे बाया होना अन्ते ह्या हिटा मैं क्रॅंनः लटः देयः च बैदः वृद्यता सम्। हुः दर्शे देता लाने अनता नटः सुम्यः । গ্রী-নেশ্ব দেই অঅ-গ্রীন্-নেই-অনে-ন শ্ৰীক-নেকআ স্মান্-সিন্তা-মেনন-लुरामदी परा न्ने प्रतुवा ग्रीन् में याका में न्या मी में निय संनया न्वरावरान्द्रिर्द्र्वराय ग्रेंद्रायरम् सम्बन्धिर द्वेतरक कराय " इर रटा। ब्रट्स्पा (ग्री) पर्यानेय लाट्ट्रा क्रियाचेर र ब्राया প্রসংসদ মছ্পথ্য ট্রীন্ম প্রী. দুথা বদ্ধ এই প্রাপ্ত গ্রাক্স বানালথা সদ্দে প্রবিশ बहलाञ्चम न्र बरानङ्गलालाखराबिरानेम्बालालानम्माकाचेन् सन्मेता यःदेन् व्याग्रदः स्ट व्ययः दत्यः हेव **: हेन् : न् मॅनः** ग्री : यमॅन् : यं मन्यः श्री व **७**८। १थेर.व.रग.र्घर.च्या.वैवाववारव्यास्त्राची.वे.वाञ्चा<u>ची</u> बह्दिन्छेन्-न्बॅलन्ने-नेबलन्ना यदः स्थान् न्व से-न्दे कुः **য়৾৽**ঀৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢয়ৢঀ৽ঀঢ়ৼ৽ঀ৽য়ৼ৽য়৾ৼ৽য়ৢৢ৽ৢ৽য়ৼ৽৻ঀৢ৻য়ৼৢৼৢ৽৻য়৾৽ঢ়ঢ়ৼ৽ঀ৽ৼৢ৽ **ब्रह्म-प्रतृ**क्किन्-प्रया विद्यानुकानुन्न विद्यानुन्न विद्यानुन्न विद्यानुन्न विद्यानुन्न विद्यानुन्न विद्यानुन

हूं सदे न्ना व न्मा यह के वे के वे निया व व के व यदै देग्वा वेद यवा देन दवा क्रेट हे न्ट व्दायदै पर्मेन्य पहरान तर्-१न्गः धरः तञ्चरः स्वातः सम्तरः विष्यः में स्राम्यः म्हारः स्राम्यः स्राम्यः स्राम्यः स्राम्यः स्राम्यः स्र देशःम्थलः<u>ल्ल</u>्यद्वःनभूनःनःमहेनःन्म्थःब्रुनःनश्चःपह्नाःक्रीयःबेशः... ब्रुं र विरातुः स्वा बुरावरा ने ने वायविवारी विवास वायविवारी वास नः धेदः देवायः इतः चुरः नरा दर्गः नव्यः द्वायः व्यवस्यायनः त्यान्तर्मरः च.चर्ट.चर्टु.क्षेत्र.च्र्र्ट्रचलु व्याज्याचर् क्षेत्र.क्याया व्याव्याक्ष्यात्तु. स्या व। वै.पपु. श्र. यर. तर. चश्चिर. चवश क्षेत्र. स्वा. स्वा. स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वार ঀৢ৽য়ৼ৾৾৽য়৾৽৽ৼৼ৾৽৾৾৾৾৽ৼৼড়৵৽৽৽য়ৣ৾৽ঀ৾য়ৢৼয়৾ৼ৽ড়ৼ৽৸ড়ৼ৽ঢ়৽ৢ৾৽ঢ়৾ড়ৼ৽ঢ়ৢৼ৽ঢ়ৢৼ৽ঢ়ৢৼ৽ न नेते केन् हू लेते हा अर म्वल हं ल तर्ने नवेव सुल नर लर न हुन बॅदःशःळेदःद्वेरःनगृदेःन्बॅद्रशः द्वेदःविदःधुग्रःसद्वरः।घगःगे**ःसदःःः** म्लान्द्रा इर्.श्र.चरुयालाश्चेंच श्चेत्याल्दानाल् ईर्या क्रि.कर्राच्या नु खुल क्षे क्षुंदर्न गुद्र ले दर्ग द्वा दर्ग हु चर्म क्षे कराया "1 ৾ঀ*য়৽য়য়য়৽য়৽৻ঽঀয়ড়*৾ড়৽য়ৢ৽য়৾৾য়৽য়ৼ৽য়ৢ৾৾ৼ৽ৼ৾য়৽য়ৼ৽ঢ়৽ ब्यदः विचः करेः ने केनः धेन। विनः ने श्वास्त व्यादनुना यः न्दः। ने प्ववि**नः** ं वर् र्वण ग्रार्विष्य क्रिंग्य क्रिंग् ळेष:२ॅवॱळव:ड़ुष:ॲदःष्ठेष:२ॡॖॺःबेटः। २ेॱबेव:धेॱबे*वट*:ॲ**८:५८** वरके छैर पश्चर राज्य छे रें वर्गी अंतर रहा। वर्गी र वं वर रेज्य न्र्र्भाम्ब्रव्याचित्रः द्वित्रवाची अत्र्र्भात् व्याप्तान्त्रः विद्याप्तान्तः विद्यापता श्चेतातह्त. सरामी भून। प्रमृतः मृत्यान्तः सन्तः मृत्यार्थम् या स्वर्

स्तास्तर्विते ने त. वे र. विमा त्यामा विमारम् मृत्या विमारम् विकारम् विमारम् विमारम्

য়ৢ৾ঀঢ়৻৽য়৾৻ঀ৽ৼ৾৾ঀ৽ড়৾ঀ৽৾ঀ৴৽ৼয়ৢ৾৾ঀ৽ঀৼ৽ৼ৾ঀ৽ঀয়৽য়৾ঀ৽ৼ৾৽ড়৴৽**ৼঢ়ঢ়৽৽৽** बॅद्र-चंद्र-क्रॅर-ल-क बळें व व दर्ग रें व नव द न न ल के में ल हू न तरे हा बान्दायहाळेदाक्षेत्राहे देवाम् इं मं मद्राप्ति हा हुताळे विमा मी यदा য়ৢ৾ৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢয়ৢয়ৢয়য়ৣ৽য়ঢ়ৢৢৢৢয়৽ঢ়৾ঢ়য়ৼ৾ৢ৽য়য়৽ঢ়য়ৢৼ৽ঢ়ৢৼ৽ঢ় मदे नितर भेन थेनय अन्तर ह निर्देश स्था सुर भेर नि मुर्प प्रतर स्था मेर ॅब्ट्र त. कु. क्व. हु. न्व्यट. चरे. द्ध. श्वट. च ग्व. क्व. वी. द्वु. हें द.या "नवयाग्री क्षांतहवान् गुरुषा नेंदावान्य परि हेवारी विषानुवासरा । नगतः देवः ह्वः वः वेदः यः गवदः यः वदः । व्रेः व्याः वृः रोतः यकदः यदेः रेट.पीब्थ.लर.बीथ.बह्र्य.त.रेट.। लट.वूर्.पंचरथ.श्ची.वुट्थ.ल. चुयरा न् वेन्या न् वराय तरी र्नायम्य देवासु स्वत्र स्वर्या स्वर्या ततुन् करा क्ना र्वहे उराव परिक्र विवास निवास है स हे निश्चन याया वह वाया न्या परा परा वरा वरा परा वर्ष वाया बद्यरःध्वेत्:चुरु:पदि:ज्ञुद्य:तु:बॅद:बाळेद:बॅदे:घम्द:द्रेद:बालद:चुेद्:::::: *ब्नवानहृद्भुः* क्रवाबर प्रायम् वर्षा वर्ष

रदः लदः वरः यः ददः। वयरा ठ द विषे व परिः वं तयरः देवारा यदः प परुषः पर्दे 'हॅ व मुषा हें 'ब् 'शेर मु 'द्वे 'प्तु व हिंता ह्व सेव वर्ग नेट्रलट् न्नु खुलायल केर्रलट् केरालर् क्रेंच क्रुंट के नेट्र परदे वर्षेत्रञ्चे नः रेत्रात्रेत्रञ्जवरारेत्रा मृत्या वर्षा वरम वर्षा वरम वर्षा वर् मृत्या तरावाना ही हिर्यान्या गुरार् र्रा सुव वे हेर्पार्रा रे बर्ध्रत्य.क्र्य.श्रुर्राप्रवा.ल.श्रुव्रत्देव.वेयावयातिर.क्रवा.वी.बराज्ञरा.क्रेरा रॅसप्तहें दाग्री क पत्वण ग्रुषायर पश्चर, वस्त र् व र दे व सायर पहें या पर क्षे.कु.क.प्रमा स्व.लूर्.राष्ट्र स्या मु. भ.रम.पा.स.स्य.पह्य रेरा.महापा.लुक्. विदःरेगलाग्रीः ययः त्राँ विदः श्रः हैं गरा द्वारा त्र् न र कः में र वा पर्गारे ळेव-चॅदे-पगद-देव-झ-व-बेद्-पदे-राद्मरा-मुरा-ग्रु-पसूव-प-ता-मेव-हु----वसामहे रुट के मदे न्में दल देव द्वा सु सु हु दें वा दें वा दें वा हे वा ह ब् तेराग्री पहूर्वाया है ही त्रार्या दिया विदायमा मुका संदा के ता में दाया केदः मं 'द्रवः न् मॅन्रा बन म्बा द बेन्' नया केन् 'तु 'नक्षुण् नदी म्बीन ग्री राष्ट्री '''' तुं अ.भं.देव. त्रं .क्रे.चग्रं अर ग्यां कुं या कुं या कुं या कुं या कें या कें या कें या कें या कें तर्ने मन सेनल हुतान हु सप्ति के के क्ष मही मार्ग निर्द् हेर्दर्गिया केव्रॉर्ट श्रुष्ट वर्तु वर्ष्ट्र वस्त्र वर्षीय की पति वर्षा है व वर्याम् रे.तीयायाक् विवी वी मि.मा.भी भी पितियाप्य या वर्षा वर्षा प्र ब्रुप्तरियंत्रं प्राप्तंत्रं प्राप्तंत्रं विष्टा अर्न्धर्भात्रान्य द्वेत्रयाता चेवया क्षेतातीया पश्चेर प्राञ्चेर प्रवासी श्चित्रदेवालुगार्म्यार्स्याद्वापाययाश्चराउटा दे त्रेन्याद्वययाश्चर

नुःस्यार्चम् देन् दूर्यादे त्रास्टरम् कुन् कुन् कुन् काम न्यापिन ने न्याप बह्रमः मह्यस्यापन्देवः यः पद्रः विदः। उद्गापः पदः मह्यस्य प्राप्तः पह्नः व्यानग्रावरम्यावर्मन् नत्वम्याध्यानव्यस्ययाञ्च । वर्षान्तर् बी न्याद्या ही वार्त्र मिन अस् स्था ৰ্ম্মের ক্রেব্রেম্ব্র্ तह्वाम् नाहर्म्य श्रीतः विराधरार्द्राया विवाले ने ने नाया सुरे कर. पि चेथा केर. चेट. लुवे. ट्रंबा पहेंबे. चेचे. त्व्याचेर धेव त्र्रण या नंद्र-वियाक्षत की. श्रवाद्वरा लट. क्ष्याक्षिटा वया श्री की. नंद्रना नटा ता ₹बावहेंब्र:चुवाळे:ने ादते बेदान्हेंब्रा सं ने प्रवेदातु नेदाचुदातु चेवाः मदी दे.बद्धरयाचेराचेराबराबदायक्यात्वावराप्ड्याक्षे देका बेद्-बेद्-बेर्-मःदे-महेव्-महेंद-ळें-दे-र्ग ह्युत्पःसु-दे- वा बेद-य**ुन्** मःचरुषःधरःचन्नुरःचव्वरःद्वाःभःवर्ष्ठैयःद्वेषःद्रः। वदैःक्रॅरःदः १८.रूर. अविष्यःकेर.रट. ५ रू. ग्री. ट्यापह्ये विया रु विया द्वाया पद्धः ग्रुं र-बुर् छे छे या या द्वा य व्या हिर् देया धेवा के या दिर् पर्वा यः हुर्रे द्वान्त्र्राम् विरात्यान्यान् वर्षेत् क्री व्यास्यायन् वहरा म्बर् स्ट्रिं र्वेर व्रृ लिते हा साम्रु हिर पहुं पा है या विवर कु बर्झ् र्दरः। चर्च वृद्धाना बादया बीचा ब्री वर्ष्ट्र चर्चे वर्द्धा वर्ष्ट्र चर्चे वर्षे वर्षे অঅ.मु.য়ৼ.ৢ৽৴ঽ৶.ৼ৶.য়৾৽৸৴৴য়৶.৶৶ঀ৴ঀৢ৾৽য়ৼঀ৾৴ঀৼ৾৾৽৸৾ঀ৴৻ঀ৾য়৽৽৽৽ वरः पञ्चा क्षे वर् पत् वायालया पदार्रे वया र्युवा वर्षे व उता हे प्यरः ह्यरानु महत्र विवास्तर मान्या द्वायते स्वास्तर स्वास्तर स्वास्तर (8·35·45·6·6·3·50·58·45·50·108—110)

हॅ गरा मु 'बर्ड 'न्द्र'। पठु महास्य सिया पर्द्र न मु 'स है रा महेरा' पविरयाक्षेत्रास्यां विषयः स्थान्त्रा प्राच स्थानः इतः प्रवेतः पर्यः प्राच श्चितानविद्यात्रम् अञ्चरामामञ्चरात्राया महेवा मन् म् स्वार्या महेवा न् धुन्-वैय- यहुन्- न्द- यहोय-भ्रम्य राज्य केट- केट- केट- क्राय- क्रिय- क्र्य- --र्श्चेदःर्नेदःन्वेरःस्यान्युनः ८२ँदः तु : अ: २ मॅ रा: सरः यदः श्चेरः न्वेनः **र्वे**न तुःरॅशःदिहेदानुशःक्रेगः यदैः मगादः दिवाया विषा विषायाः यहे दावया गानुदाः ... विषाविदानानक्याश्चित्रास्यास्य अवताचराचेतानान्य विष्यास्य लया वेया ख्वा यह के के ते के ते हैं हैं हैं हो ते की निक्र में वे पर हैं निक्र ह्यन:२८:। र्नु:धः**ढ्व**ाग्रे:वे:बःइवानवेताग्रेव:न्डव:ह्या:के।वः ॅबन्बरक्वी:बद्दःश्चेर्-क्वरःन्बेर-सुब-द्युन-दर्देव-क्वी:नृहद-दिव्य-चः..... नक्षालन्। नक्षराञ्चे व विद्यान्त्रयास्त्री दे अद्धेत्या में निवना वर्षत म्बेर-र्टा श्वेष्यश्चेष्ययः र्वेष र्वेष-रेग्य-प्र्राप्येष्ट ॸॕॖॕॕऀॻॱॻॺज़ॱय़ॕॻ॑ज़ॱॻॖ॓ॱ॔ॺख़ॱॶॻ॑ॹॱॻ॔ॱॺ॓ढ़ॱड़ऀॻज़ॱॾॺॹॱॻॖॖॖॖॸॱॾॗॖऀॱख़ॕॱ 1911 ঽ৾৾৴৴ঀ৾৾৾ঀ৴৸ৡ৾৾৾৻ড়৾৾৻৸ৠ৾৾৽ড়৾৶৽ড়৸৽ড়৻৽৶৶ৼ৽৸৶ৼ৽৸ৼ৾৾৶ৼ৾৾৵৻ৼ৾৾৽ व्यक्तिर में ८ व्यते कुल र नया स हिं र तु : य सिंट न र स दि क द्या ने द क्व-ब्रेर-र्मुदेन्न्व, दवेवया, विना त्यन्। वसूर-व्यव स्त्र-स-दे स्त्रेट व्य-য়৽য়ৢয়য়য়ৢ৾৾ঀৢ৾৽য়ৢঀৢৼ৽ঀ৾৽৾৾৽ড়য়ৢ৽ঽয়য়ৼয়য়৽ঀৼ৽ঽয়৽ঢ়য়য়৽য়য়৽৽৽৽৽৽ वर्ष्ट्रनु के व्या

व्यान्य स्थान्य स्थान

श्चरश्चरारम् र्वराह्मयाविषयाञ्चयया द्रार् ञ्चराया देवे कुरा घरता **बै**रःळेवःग्ववः र गःर्रः य<u>र्</u>ञ्चरः यःग्ववयः ररः ष्ट्रिरयः शुःर्रुयः यरः **ःः** नम्न-तर्वयःक्रन्यः करः मृदः अदेः श्रेन् मृत्यः अदः त्रेनः त्वयः पः स्रेनः । **५५०.५ व.स.५.५५०४.के.म.इ.म.५००.व.५००.व.५००.व.५५. रमःबुदःमञ्जामञ्जामदेःहुःबुःग्येरःवेदःयःमदयःग्रुः**दर्भ**ःकु**षःन्द्यःःः त्यः पञ्चात्राया ते द्वा " (न्या हुन्य त्रु न्यु या परि सं पति पञ्च ते " हुनाचेर") ठेलायविन्यान्दुलायर कुनायने हुनायाय न्रा देशिष्ठे " ॅॅं 1793वॅ र . ख्र : श्रूर : ४२ : श्रूर : थर : बॅर : यदे : व ग्रूर : दुर : " क व : खुर : " . . . মর্ম-শৃর্থদে " (৯র'এদ:স্পৃন্থান্তী'র্ম্ব্-ন্তী'র্ম্ব্-ন্ত্-ন্ত্র্ম-) ব্র্বান্ধী ক্রু-র্ম্ **धै**मः रेग्नयः मृद्येयः त्रिन् ग्रीः न्द्यः त्रयः सरः तरे नयः श्रयः भेरः। ने : दयः मञ्जूरकेर में राया रेया छवा सं र्वे ते स्नामका "कृ के दाय दा गर्वर । " "न्द्रागुरायल न्वरा।" "मृंदाइरावर्ग्युः त्रेत्रावराष्ट्रा **४वः** द्वं निरः। " विवासः विवायः रेवायः रेवः सरः सरः सरे सवः रेवायः रेवेयः श्वेयः श्वेयः **42.** 1890 44. 1890 4 विरायक् सि.सप्ट. विर्यायाक्ष्यां स्पर श्वरायाः ॥ स्पर् सि. केरायवी. ॥ वेया सरः तर्ने नवः इंगः वदरः क्षेरः ब्र्नारः वदेः न गृदः खुरः न व्रेषः द्वं गृवः सः निग'धेवा

इ.पहूच.की.पूच.क्च.चंदी.चंदा.पूच्य.क्य.चंत्.का.त्

① (नै:इदे:द्व:यःगवयःग्रे:नृह्यःवरःगवयःम्खःग्रेयःः देव: 14—20)

नदर्शाः निव्दानी क्षेत्र वदा वि द्वा रोतः क्षु द व द द न्या राज्ञे व वेदः ... गुःलयःर्स्तानहदःलस्यायायात्रा हिनानद्यान्यस्यायार् ऍष्कःब्रेचःष्क्षयःदेवःचमॅ**द्ःग्रुकः**धरः"च म्रवःश्रवः कुःदेनः" ठेकःॲद्रुः खु'. यु ग्राप्त सः देत्र त्या कंदा ते 'ते 'त विदः यु ' क्रिं प्राप्त दा ते वा पर दार त्ये त्युर[्]ष तृषाळवान्यर **अर**ाव क्षेत्र प्रम्या कुवारीर वित् श्रुंत प्रयाने व देवःन्वै ह्वयः गुरः स्वता क्वै व्यः 1842 हू निरः वि यत् नवा नेरः व्र-प्रवाधिरावश्चात्र, तथु, तथु, क्षेत्र क्ष्र्य क्ष्राच्या व्यव्या नहॅर्वरा "....र्वदः वृज् ध्वारायता इयायर जुया नदे वि । **ळेव**ॱसॅॱ५२ै[°] क्रेन् ग्रीः व्यवायशेम् रत्नुः यहिन् साञ्चीः व्यन्त्रे । सॅनः यम्ब्याः र मः इयर यान्वयान क्रिया सहयान् इत्रा में मा यानन् ना सं क्रिया सं रा म्दर्भः इत्यः पः मृ 'देशः सर्वे 'द्यद देशः धरः छे 'चः श्रुरः पहरः ईव *ॾॆॹ*ॱय़ॱॻ*ॾॆॺॖॱॺॹ*ॱय़य़ॸॱॺय़ऀॱॻॸॄॺऻॱक़ॗॖॺॱॡॗय़ॱॻॱॺॕॺऻॺॱढ़ऀ**ॻॱ**ॿऻॺय़ॎॱॿॖऀॱॱॱॱॱ देवःच्वै ॱॺॕ्वॱॲ॔ॸ्ॱॹॖ॔ॺॱॻॖ*ॸ*ॱक़ॆॱॻॸॱॻढ़ॆॿॱॺॱॸ॒ॻॸॱ॔ढ़ॿॱॹॖॺॱॿॺॱॱॱॱॱॱ **ॸॴढ़ॱॸॿॖॸॱॡज़ॸॎॱॿॖऀॱॸॕॸॱढ़ॕक़ॱढ़॓ॱॸॸॱऄक़ॱढ़ऻॕॎक़ॱॸॿॢढ़ॱॻॖऀॱॸॾॕढ़ॱॱॱॄ** .स. केव, स्तु, ब्रेंच्या वृत्यः स्तु, श्चेंच्या व्यवः हवा वित्तः त्या वित्यः स्तु । स्वितः स्तु । स्वितः स्तु स मु वर्ष्य न दूर दर्शेषानदे के ग दें द पर स् तुर स्वर्षा या व्रवरा सर् विग्रायर श्रुराय यय मी हि से सूर् दु शुझ् मीर वर्षे र या नक्ष्याम्दायान्याचा केषाचा स्याम्दानि न विषया ने राम ने वारा हा । कृषा गुलाळे यार्षे परासे पासे साम यारा मही ग्राम मिराया वा" वेयायवित्रप्रम वेयास्ये त्याळव्यन्य अस्य व्याप्त व्याप्त

त्व्रतान्वे के त्वुर पर्दे केरा न्या निया तु रहे र र ते हा या शु हिर पहें **ब्रुच स. ब्राच्याची स. ब्रुच्य क्रुच्य प्रमाय में या ह्या प्रमाय में या व्याप्त में या व्याप्त में या व्याप्त** के व ॹॗॱॵ**ढ़ॱय़ॱॸ॓ॱॾॕॺॱढ़ॺॱॺऻॸॖढ़ॱ**ढ़ऄॸॺॱॸ॓ॱॿऀय़ॱख़ॱॵढ़ॱय़ॾॢॸढ़ॹॱॱ ^ॱॺऻख़ॺॱय़॔ॱॾॕॖॺऻॺॱॿॖऺय़ॱय़ॱय़*ॼॺ*ॱॸॣ॓ॱॸॣॺॱॿॖऺॱॸॣ॔ॺॱॿऻॺ॔॔ॸ॔ॱॿऻॺॱॹढ़ॱड़ॿऻढ़**ॱॱ** न्यान्ये वळें व र्थं यातु निह्नं या लग्य र्या "म्ना की की में रमलः"≣रःमदेःब्रःश्नम्यःनेदेःकमःश्चेन् :ययःखुम्बरःश्चेःथम्।कः न्**रः**। लगानह्ररामलाके तरी नगाकेंगा तुरार्वसासाचितामरा "न्यमा रॅग्जः पहरायके त्रहं अन्तर वरा अनुवार्षं ग्राया मुलाप्या ग्रेना गेवा ···· मुड्रेन यार्यया स्वायान हटान हिंदे श्रयायय। रखन स्वया नहर नया देते बदत देव धेव लेवाना हिंद के हिन। " मिनेराना संगवा रहा इर-वृग-पन्-शै-धेग-रेग्य-देग्य-दि, के. येथ-पूर्य-प्रे-शै-श्री-दूर-प्र-श्री-श्री-मॅं कॅंट् न्ट्-बे-कॅट्-मॅट्-म्वलय:ऑ-ज्रुल:धेम:२न्य:ट्रॅ-ब-**द्वर्य:**य:हॅम: **ः ः** न्ध्रन्युक्त दार्कर्म अका अधिव सुचन्य के ततुन नवः

14. ব্রক্ষণার্থনার বির্বাধনার বিরব্ধনার বির্বাধনার বিরব্ধনার বির্বাধনার বিরব্ধনার বিরব্ধনার বিরব্ধনার বির্বাধনার বির্বাধনার বির্বাধ

ने 'स्र-'यं न्' ग्री 'श्री मा श्रुं ला मा ह व ' त्ये न त्

①(ব্-গ্র-গ্র-র্ক-কুল-রন্ত্র-র্ক-র্ক-র্ক-র্ক-র্ক-

कैदॱसं 'न्यह' हुँ गुर्य शु 'बैयय' बॅह' यह य' बु र' बैयय' य' न्हें य' दर्य थ' ' ' वैदर्तुःम्बर हेरा। म्बेसल्हरान्यराष्ट्रातुः स्वाकुराकुरार्द्वरा श्चित्राः सम्बद्धेदः सं द्वाराष्ट्राः तक्ष्वः दर्शेदः द्वार् वादायः वादार्वे। न्-स्थान्न्-साळेव-सं-व्यात्रायळंब्यत्राग्ची-स्वान्न्न्-स्न्-व्यान्नेन्न्न्न्-स.र्य.स्.सं.पंचरयः धी.चर्षयः हे. ळेव.क्रेर.यं.बरचेब.त.पथा त्व्वान्वराक्ष्यः स्वान्याना मातः द्वेव स्वान्या बुपः धुँग्रा दिन राग्वयापदै दिशे पारी ब्राया रुवा स्वरा में दाया केवा । द्रुप्त मितः हेव् ग्रीया दक्षा ना बिमायम्या वा मिताया केव् द्राविषा स्र पविव-तु-सुग्रापडे पाकेव-घॅरापश्चुट्रापाविग-द्वेताय-कॅट्रास-केव-<u> दर-श्रृद-लु-र् बॉक्स-ईल-र्स्नाक-दर्-श्री-ल-कुर-र्न्नॉर्क-सदी-प्रगाद-श्रृदाः ।</u> मु किर प दुःला १ किरा संग्राया गराय विरा वा ना नर संदे किरा *ঀৢ৲*ॱॡॱॿॖऀॺॱয়ৄ**८ॱॾ८ॱড়ॱॺॱॺॺॱॿॕॺॱॠ**ॸॺॱढ़ॗॱॺऄॱक़ॖॱॺॱॺळॕॺऻॱॹॗ**८ॱ**ऄॱॱॱ ४.घट.थयाञ्चेलाबेट.थे.घवाञ्चेलारची.धेराथराक्षचयाचश्चरारटा। क्षे. श्रेयाम्बर्षाः कुषाः विश्वयाः क्रान्ययाः मराम ठयाः संग्रेयाः श्रेयाः तुः गा गर्नेर'गवर'यहर्'दरुग

①(বেইঅ'ব্লিম্ন্রের ব্রুম্ন্র্ন্রেহ০7)

अःअर्क्षेन् :पॅन् ग्रीः बन्यः नहेन्, न् बैन्यः न्हयः ग्रुटः ग्रुटः नहुने हेटः **'** भूर.वी.बी.प्रा.र्ट.चरुकाने.के.यपु.च्ट.च.र्रपथी ロス'&'ネス' ग्नायाया ५२ हेर् हु कु वर् र है । हु । वर र व्यव के र र र र वर्ष वर्ष र र र र वर्ष वर्ष र र र र वर्ष वर र र र र < ह्वायाः न्वरः क्वाः श्रेतः क्वां क्वाः हा स्वाः स्वरः सम्बाद्धाः सम् न् मॅं व्रायन् ग् गुराह : ळ ग ने वा से के व्या म् व्या म् व्या यहा यह या ने ने वा गा **बॅट्-बर्-ट्-**वृ त्यते न्नु य संग्रायत्र म्ह्रव र्च्च व न ग्र त्र्व व चुट त्रु ग् याक्षेत्र कि.वी.साबराने स्टायाम मान्याम मान्याम कर्मा कर्मा कर्मा कराने स्टाया मेरा तह्रवार्मणार्चित्वाची क्षाप्तामुवामाशुवामार्मा वाक् **४** वितेर्न्ण इ'गुव'ध्व'कर'मी'ङ्ग'पर' (४५'५'में 'यर'ङ्ग'पर'बेर') मुव'म्शुय'' वर् कु.कं.िट्रचं बरवं बेबल क्ष्या प्रवित्र मुट्ट बेट्र वर्ष हैं हैं कि के कि के कि ववै दरा वरु वर माय वरु हुन झें अळेर हेर में हा न्ना ग्र.भन उटावटा रायः झु.हवा.रटायङ्गासः सु.वहारा हुन्यः हे**वः** গ্রীকাস্থান:ক্ষরকাষ্ট্রীকো 1794 ইন্-পিন্-প্লোক্ষর-ঐশ্বন্ধন-এবিক্রে--गुनामरातृ त्यते न्ना यायळॅगावतान् मृदावेदान ह्वान लुग्याळ्या द्वार ब्रीट बेला वर्षे नेला यर अहर पार प्राप्त हेला शुः में टा अप्रु के हा वि स्था न्दः मं ते त्र्याः र्राम्याम् स्वायाम् वर्षः "न्त्र्याम् र्राम्यान् दे ने बेयामदे: न्मॅ्व श्रेरामूव न्रारा गुप्तास् च सुराव स्वाया न ग्राया विन श्रमा वहार नम्बर पहेंदा मु वहार महार हि पूर मु वहार के किए में पञ्चलाचेनवा क्षेत्रान् न्याम ह्या मुद्दान में भी दिल्ला परि मुं करा

① (इ.क्र्य इंबर्टर.रेट. तपु. तपूर्च. तद्वा.चेट. सूच.चंट्य. 183—185

ষ্ট্রী⁻ল' 1795 ইন্ নত স্তুন্ত বৃত্ত ৰাজ্য অবই প্রীন'র্জা আমা **শ্রানার** আ कर् सुर वि त्यापत् निया दया वि मृत्या द्वा स्व प्राप्त करा वि स्व वि "ञ्च पः मह्युवः पदे : क्रेयः स्ट : हेवः म्दः वा क्रेवः पदे : महिः प्या क्रेयः स्ट : महिः प्या स्ट : स् हू यदे न्ना या दर्श सेन् वि र्थ न् वृ ग्रु सदे में गृ श्व थेर वेगरा-पन्। बैन्द्र'यहर'ळॅन'य'र्र' रेर्'र्सुर'यॅ'वि'स्न'हु'यहद्रे केर्' न्षे तनुवाग्री क्रे ताळ्यातन्वाचान्ता व्यत्तत्त्वाकी सेरायान्या कनानन्दान वे वेराह्मव्यायायहँदाव्यान्द्वार्यात्वि हे व्यदायः त्वु नियानि क्षा बदा दा ब्रिवाया स्वाया वि सेन् ग्री न बिद्या या सम्मान्यस्य स्वापित्रः विष्या निवान्तः स्वापित्रः स्वाप बरःग्रॅलःरराह्यामः चन्न्यायदाः अर्देन् छे न्यम् बेन् ग्रीः स्रा देनः चॅ केते सुन् देर वृत्त त्यन्या न्यर तेते धेर न वेद त्नुन पदे । धु भी मूंयाविताक मेश्रियान कथान्दा। न्दु याश्रदा वि के माश्रियान कथा नवर्रानः धेव। श्रः धेरः स्राव्दः सं प्यरः यहरः ऋनः ठेवः वेयवः यदेः न्यं वर रताङ्गवतापत्तापार पॅर्प्तत्तुग्ताष्ठ्रयाय व ग्रेतापठर पर ग्रेवा कट्रान्नवास्त्रम् अस्यापान्ता न्रा न्राह्मवास्यान्त्रम् मबेयायहरी " ाड्यानयपार्वरा सामर्टराम्राज्यस्या

नर्म मन्द्रान्य मन्द्रान्त मन्द्र अन्तर्भ मन्द्र नश्चराच्या अन्तर्भे हिंदा क्षेत्र में त्र में म् भिरावत्वा के त्रात् वार महारायते महेरा मेरा वा प्रवास है ता है । लर-मु व्यक्ष्यया वि न्दा विषया भीया भीया भीया में या के या क हेस्र-रन:बुद्र-वी-क्रॅब-रावेस-र्दर-राक्रेद-ह्रवारा वाठवा-ठर-तु-बाह्र-रा-वा-त्र्वा स्ट्रान्नराष्यराद्यन्त्राचक्रुत्याचेनत्राच्चराव न्रा हृ स्परे ह्या अ चकुर्यः केद्रायं तार्श्वे व्या १७१८ वर्षः त्याः केर्यः वर्षः वर्षः व्या लाम्युवार् त्रावरायव्यायायायाः हर् सुवामवरायदे सूर् इयावरा वरः "तहस्य न् चर्या मेरा साहे व मा वया मेर् हिर्या मरे की न् रिया । " केर्रन्म इर्यं मुर्चे केर्यु केर्यु कर्यं क्रिया विषय हैं वा प्रे डमापक्षाल पर्व हेवाता म्राम्य माराया माराया मेराया माराया मारायाया माराया माराया माराया माराया माराया माराया माराया माराया माराया माराय त्रेष्ट्रम् त्रे क चुन् क्व क्षं व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त मिलु ग्रास्य स्थान ह्या मिंदा सके व में त्र दि हिंदा कुला मा सुव मुंदी प्रवास के मा हे न रहे व तह स र्पत्रत्वरता हेर् के हेरे ह्रा बायर पहन पत्रत् । क्रिन्ट व कर्मि तहेन हे व गुव शुः खन इ निते मवराधिव रहेरा नित्य ठव म ही निर ष्ट्र-पर-मृत्येर-सर्देग् ॐर्-पृह-दक्षर-पर्द-देर-सुन्या-तहेव्-पः संद्यः .. ल.बीबायान झ.च.क्रब. त्याच ये प.लिट. बीया बर्श्च में ये अक्रूट. तर अहरीत.

①(F-malanar 12.44.42.42.44.32.44.32.44.32.44.32.44.3)

देट.थट.भ्रेष.च.इट.वि.चप्ट.चक्रेच.च.इच.क्र्य.प्ट.व.क्र्य.चेया.भ्रेय.थी. বা यव्याय सम्बद्धाः स्तर् केत् भी त्राम्य देव भीव किया देव न रदःरे द्वारा मदःमे तर् वराया श्रे तु सुद शुक्ष व्याराया यह द र्नेतःलेलानगतःर्वेदानन् भूतः न्रा देः द्वगः श्रयः न नरः द्वरः यानश्चा द्वारा में १ तिया शुः द्वारा मारा नहीं त्या मारा निया में राज्ये रामी मङ्कि:रथ:यह्य:त:र्टा पर्वे विद्यातिष्यं विद्यातिषयं विद्यातिषय ক্র-ধ্বথ-ব্দ-বহ্বপ্রা ने दे हे र जु . स नव छ . च में न . ध सु द . खु द . यादार. नेयाग्री निस्न स्था अपने वाराग्रीया गुवातु वार्षेया समाय स्वार किया। क्षान्ति, श्रे क्षेत्र अष्ट्री श्रीव वित्र र वित्र त्या वित्र ति वित्र वर्ष वित्र वर्ष वित्र वर्ष वित्र वर्ष व Û ठेरान्तर्यानः कृतः हूं त्यते :ञ्चा वानतु बाया केवा यदि अन्यरा ग्री नेंदा वा र निरः वैदेश्यक्षत् गुरः परः क्षानिरः दर्ने केन् तुः न श्रेनियायः न कलः वनः सनः ।।।। न्मकेषामुक्षामु दिल्लेषायायळे वायते स्वामुक्षामु देवा न्मे का दिने न्वा । । । वयत्रायाः बेर् प्यरः स्रूरः पत्वे द रहे "स् । यूरः वी रतः नश्चितः स् । यूरः दूरः दूरः दूरः य **ネイビーナデタンの、対ビは、重、ガイ・デー**

हु 'र्' 1799 द्रं रच हुर नहु नहु अधर दि लास न क्राय क

①(内世和·萬二·四日人·曹母·并可 刊二四·269)

ᄚᇷᆟᇰᇕᆠᇄᅩᄱᆞᅮᄓᇎᆞᅉᅠᇰᆿᇬᇰᆿᇄᄚᅮᆠᇌᅄᄱᆉᆫᆯᆞᇑᄱᆞᅚᆦᆞᇛᅮᄓᆠᆠᆢ᠁ न्नेन्यः पदे न्व्यः द्धंयः ग्यः दे दे : यश्चरः यः स्वः तु : द र्वे र : द र्वे र : द र्वे र : द र्वे र : द र्वे **≩**ॱন শৃথি:৲্লুদ:রূর:র্অঅ:র:নর্থ:ক্অ:র্লঅ:১্লুম:ॲ:४८:১৯অ:ৡ **::: श्रुवः** खेर. खेरलः स्वरः खेल. चुं. तथ्यः स्वरः तः चुं नतः विषयः विषयः *ॏॖॱ*ॾॕॺॱळे॔॑॑ॹॱय़ढ़ॖऀॱय़ढ़ऀढ़ऀॱढ़ॖ॓ढ़ॱऄॸॱढ़ॼॹढ़ॹॸॣॺऀॱढ़ॸॖढ़ज़ॎॗॱय़ॾॗॹॱॻॖऀॱॱॱॱॱ ग्रम्यः पर्तु वः पक्कुः ऋ्रमः क्षः व्यवः व्यवः मः केवः स्रमः र न्वेम्यः स्रम्यः स्रम्यः स्रम्यः स्रम्यः र्बेग्य ग्रें प्रस्मिता कुर्रा दे स्वर्धर्या राकेरार्ध्या स्वाकुर् हुर् ॻॱॳ॔॔॔॔ॱॸ॔ॺॖ॓ॱढ़ॸॖॕॺॱॷॺॱॻॿॖॱऄॣॕॸॱऄॗॺॱॸॸॖॕॺॱॻॖ॓ॱॸऀॸॱढ़ॾॕॻऻॺॱॿॗढ़ऀॱॸॄॖॾॸॱ प्तः प्तः प्राप्तः प्राप्तः । विष्यः प्राप्तः प्राप्तः । विषयः प्राप्तः । विषयः प्राप्तः । विषयः प्राप्तः । वि न्दा दयन्य याने वाने के किरायदे तद् वदावर या भी भी बर्धे च.वै. तम्भै . बक्क्रूरी यु. प श्वाया झवाया पार में प्रमेया प संपार्थे . चक्रैला थट. धेर्य. क्र्याच क्रि. च हे ते क्रि. क्रम. पर्टे. चट. में अर्थे थे. में चिर्ये. वर्षेवः पराष्ट्रेवः क्षेवः क्रुयः स्वायः नृत्यः शुः भेनयः भेनः। ने म्बान ह्रवः ब्रीट वर्ष्ठ मा श्रुवारी कार्य के प्रदान पर श्रीट किं विवाह वर्ष के विवाह **बैल.ची.क्ट.त.** कुंट. यञ्चा- यञ्चल व्यान्य तात्त्र व्यान्त्र स्थान्त्र प्राची बहुण की देवाया नवर ब्रेवार् बहर् परि तर। में राबसाय मुखा बर्गियः लबः नव द्वानिवेयः न्रः । ह्वरः मृ ही ही करे ही गुरः वर्षायात्रः क्षें द्राय् प्रमान्य वर्षाय् वर्षाय् वर्षा ने न्या श्रुवः म्राज्यक्राक्ष्यक्षे भेराया है विदान मिन्नियाया स्टार्मिया स्टार्म बर्दर्भःर्दः। वुग्यःर्ग्रेदयःहग्यःग्रेर्ग्रेःरेयःयःपर्रःकृरःवर्दरः

हुंत। न्म्रियः ह्म्या ग्रे श्रह्मः ह्ये व्याप्य हेते स्वयः व्याप्य हिता हिता व्याप्य हिता व्याप

ষ্ট্রী.মৃ. 1801 চু ই রাখান্ট সুখন ন ৯ ছেব. শ্রী স্থান ন প্রধান স্থান सप्त. हे. य अक्रम दर्य था स्वर्था में प्रतास क्षं क्षेत्र हूं . त्र विया श्री बुध क्र र हैं . लपु . में . या बक्क वी वी या वावि हूं . . . बह्द दे निष्ठे द ह्रियाय ग्री ह्रियाय तर्याया वे या दहा । व या पर क्रिया व नवरःश्रम्याराश्चीः सर्दि झ्रें स्टरः श्रूषः व्यया श्रेनः येनियातरः पञ्चित्या स्य *घरःवरःञ्च'पःपत्वःपवेःळेषःपञ्चःपवेःवेवः"ग्रवःम*ञ्चेषयःप्रःळेवः ... **२ैद-सॅ'के'न्स्यायेनयाग्री-सुन्याह्नरायेन'यस्याज्जु-येन्यायर-गुन**-यदे-म्बर्शः द्वंतः म्दार्थः यन्ताः सं केव स्राधाः इ.स्यायदि न मदायवा मुता मदे के द द द विषय ह अया पव से पर्या (केंद्र श्री र) कर हिर मुकायतुन्।न्दान्रकाञ्चानवेद्या मद्दार्वम् अव्यापकार्मेदावाळेदार्वे **ॸॴढ़ॱॹॴऀॱऄऻ॔ॱऄढ़ढ़ऻॹॱॹॹॗॱऄढ़ॱऄऀ॔ॱढ़ॵढ़ॱढ़ॗढ़ॗॗॗॗढ़** *देनत*ःग्रु:बुग्ज ≹ग्जरद्युयःचबे्दाःसेग्जायःमरःशुवःसःने्रःचबे्दाःसा देन् रोबबः विवाह न्यातः विवास गायः सञ्चरः यः ञ्चावः येन् यः न्यान्यः स्व नेति:केन्-तु। दू:प्यते:न्न:यन्-ग्वदःहेव-यि-यहगवा हु:ठवै:नेदः म। मुर्थर ग्री शुरू तु। विमाय के माक हुर माक मानियाम रूपा मुख

ॻ(त्त्रःयदैःयत्त्द्धःमृन् ग्रस्यः222)

15. ਯੂ:따려'ਜ਼'ਸ਼'ন=ਸ਼'ヿੑੑਜ਼ਜ਼'ਜ਼ੑੑ'अक्ष'ਸ਼ੑੑੑੑਜ਼'ਜ਼ੑੑਜ਼ੑਜ਼'ਜ਼'ਜ਼'ਜ਼ੑਜ਼ ਸ਼'ਲ਼ੑੑੑ੶ਫ਼ਸ਼ੑਖ਼ੑੑੑੑਸ਼ੑਸ਼ੑਜ਼ਖ਼ਖ਼ਜ਼ਖ਼ਖ਼ਜ਼ੑਸ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ਜ਼ਜ਼ਖ਼ੑਜ਼ਖ਼ਖ਼ਜ਼

चुर-पञ्च-महाव्य-पदी-भैर-द्वे-"मृद्यान्य-प्र-दे-दर-मे-प्र-मृत्य-क्रि-र्र-नवियानवियाम् । मृत्यान्यः विदान्यः मृत्याः क्षेत्रः वित्यः विदान्यः विदान्यः विदान्यः विदान्यः विदान्यः विदान नः धरः हैं रहें सामन्या मुनिया विता विता है ते हैं विता मा निते र ता में ता मुनि यः क्षेत्रः त्रेः श्रुदः श्रव्ययः ठर् : र् ग्र्यः येतः श्रुत्रः ठेटः । ग्रव्यः अदः र् पुत्रः मर्दर खिल ग्री मद्या हे व न्दा व वर्षे व विद न गत मुद्र स्वाद हिना ल.चब.केथ.र.ब.त.चि.चथ.वैर.अर.ग्रीर.च.चक्य.क्ष्य.र्न.र.च.ल.चक्रेब. वया मृत्या ठवः इः मृठेगः भुनयः अर्मेवः मुलः न्यरः वययः ठनः अष्टिवः **७८.**मञ्जन्यःतः क्रवः त्रः हे । पर्श्वः श्लें । पञ्चरः पङ्गवः पदे । द्रापः श्लें वा । एह्यः र्मत्म अक्षे र्मत्म न नर्म हैन नर्म सम्बन्ध मान हेन र दे न र व की खुन **ब्रट. ग**र्था के प्रति होता है या त्राच्या के प्रति व्याप्त के किया है या त्राच के किया है या त्राच के किया है य नवेषारा रेस र र ग्रे सहर कन नवे हैं सुरा हु र नहे व न न है र स हुर *५*५ वायरायहेवाञ्चयरायमॅवाहाळवादे वेवाहवादेवा**राळात्रा**।

① (বর্ষারীন মধ্ব কুব্ র্শ শ্বাম্ব 292)

য়ৢ৾ঀ৽৻য়৾য়৽য়য়৽য়ৣ৽য়ৢ৾ৢৢৼ৽য়৽য়য়য়৽য়য়ৢঢ়৽য়৻য়৽য়ৣ৽য়য়৽য়ঀয়৽য়ঀয়৽য়৽য়য়য়য়৽৽৽ र्म ते त्वरात्म्य म्याप्त म्याप्त विकास न्तुराशुन अवतः ने साह्य अक्तर पदि न्म् व मे । विषा व विषय व ह व सु ... रैयाकु के तन् तन्तर मैया श्रुपः म्वर यह र श्रु। श्रु न रुर हा श्रुवः बाव्य-म् इवयाग्री-मृत्य-स्वायायम् वित्यः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः बावरा भेर चिर न है : व्यंत इवय यदर न ग्राद क्रुं केर्न कुरा चुरा राज्य नगीयाक्षे स्वा. इ.कन हे बायाला बांबु बाया सपुर बायू ला श्वयः परी ला श्वर दिला श्वर दिला श्रुदैःश्चिर्-लब्धन्द्र्र-महेकाग्चिःविमकामञ्जलालुःश्चःश्चितः न्दःकेन्द्रभूर्ः बेन्-बर्न्-ब्रन्-ब्रेन्-उन्। न्द्र-हु-विन्-द्रे-क्रन्-ब्र-विन्द्रेन्द्र-पर्छे प्रज्ञुन् ग्री र्श्रेन् दिन् हि कर अर्दन् या अवत अदे मि ने अपि स्वाप मदेः द्धंयः प्रवेशः अहं ५ : यहु म्यं 🛈 छेदाः यहिं ५ : हि म्यः न्यायः परेनल:न्टः। न्नॅटल:हॅनल:अकॅन:श्चेवा शुर:धॅव:नललातनेनल: र्षेण्यास्तरायाः स्तरायाद्दरायाः नृताः । "तर्दे स्त्रम्याः सेन् रेष्टे नुतायः र्श्वेन् पार्क्य स्वराष्ट्र वार्या प्राप्त वार्य स्वराधित वित्र । किये देश देश देश स्वराधित वित्र । किये वित्र वितानी अकून र वर क्टर वर्ष भेया ता क्या वर्ष है में वर्ष ने वि र टरी न्द्राचेत्रस्ययान्यवान् त्ययाची मुन्द्रका चरुता हा नियानर निर्माण विदः। म्राप्त्रं मु नविद्यान्ता वर्षामु मा से स्थानी न स्थान

क्षरः अथः वयः अर्थरः। "धेवयः नययः यः नदः। "भुनयः अर्मेवः जुयः नदेः र्मरः सं र्मेर्यः मालवः र्वः तु : यः माने मायः मेरः सं र् : मालु मायः स्यः ः ः मदाम्बुत्। मृदायामत्यामं छेदामदीर म्लेर हिता निह्नुदानम हि मदे नवस्य द्वार द्वार नवद र सह र पर पहें वा भे दिर निर्देश मुं विय.क्रव.स्.वयादियः व्यत्तर्थः प्रवास्त्रत्यः वितः क्रवः वितः क्रवः वितः क्रवः वितः क्रवः वितः क्रवः वितः क्रवः र्मा केन् इर वहर्न तर्वा तरा ने न्वा इवका ने केन् केन् सु जुर वर्डेरःश्रवसः कुवः न्वरः वस्य उन् स्विदः न्याः विरः नु ः युवेष्यः शुवः ः मालह्यान् चित्रा मृत्या क्रा मुण्या मालह्या मुला मालह्या मालह्या मालह्या मालह्या मुला मालह्या #प.िष्ठुप्र. स्वाच प्रचेष क्ष्यं स्वाच्य क्ष्यं स्वाच्य क्ष्य स्वाच्य क्ष्य स्वाच्य क्ष्य स्वाच्य क्ष्य स्वाच्य श्चितःयतः वदः वीः श्चरः वीं क्री रुवः द्वां वा विवाः सवाः सवाः श्वः श्वीः देवः य विवाः त्र्रंत्राचितः नग्तावात्य न्म्रंत्यः न्वाची चेन् क्षं क्षया शुनः न**सुनःः धेर** संग्" **७३** रात्र्वर त्रुम

নি দ্বন্দ্ৰ নাৰ ক্ষাৰ বি নাৰ ক্ষাৰ ক্ষাৰ

⁽त्वदःववैःवदैः चुदःवह्दः देवःद्दंषः1221)

मुक्तम् ते मुक्तम् म मुक्तम् म् मुलानदी भराने देन स्मानिक सामित सामि · इर चेंबर.केंब्र.क्ष्म्या वेंबर.स्व.बु.रचे.चर.जरर.वेंच्यायविर. ळे.च हे य. लूट. चर्च चे या. पट्टेचया बेया . क्षेत्र. स. में या. हे चे या. हे या. हे या. हे या. हे या. हे या. हे तिर्विर्यः चरः लरः वः रेर्यः तरः त्र्याः परिच रः क्ष्यः हः क्याः व्रेर्यः व *ज़*ॺॱदेॱॿॖऀॸ ॻॖऀॱॹॺॱॿॸॱॸ॔ॸॱय़ढ़ऀॱय़ॾॕॗॱढ़ॾॖ॔ॺॱॿॖॆॸॱॺॸॱॾऀॱॷॸॱढ़ऻॕॸ॔ॱय़ॱॱ रेप्तरेव कु धेवा है। यः 1805 वर्पित स्प्राप्त मान्य हरा है। ष्रम्य. त्. चेर. भैजा पष्टा भैजा क्य क्ष्या श्रीर में चे या क्षय में সুথ∙ই⊘। डेद्-धॅर-द्वद-वश्चर-वर्ते-वृत्तेर-धेव|-द्द-वरुक्-केद्-दु-वग्|क-बद-वृत्त मञ्जूषा हैरा केंगा बेरा प्रवेदी होता श्रुपया सर्वेद होरा हु कि **本可・素 あな・ てて・** लयः नव महिला मिलु रः लवेः श्रेः न्यः सम्बरः न्रः द्वार्द्धनाः तुः ह्वारायदाः नियाः निया बह्यात्रभ्रत्र्ता ने व्याहेत्रकेवया वर्ष्ट्रात्रीया विश्व ह्रायने स्व द्वितार् भुन्यासम्बासम् वास्त्रम् (हास्त्रमा) महार्यारा विवायार् म स्टास रैव-य-ळेब-गर्ड-बर्स्-र-पर्व-न्न-श्रुब्य-के-प्रिया-द्रम् गुद-प्रग्य-बर्दा के प्रचल ग्रे ज्ञायाप्याच्चे। हे में न् ग्रे प्यया हव पा इयया न्मा अया बद्द्रवान्तेश श्रुराष्ट्री सन्तार हरार्यन्य कुर्द् भी केर् कृ.परीयानवृथास्य वैराल्याव्याक्षेत्रप्रीयावस्राम्यास्याव्याक्षेत्र

①(वॅर्'ग्रे'शेर्'रॅव्'कुम'रमस चेर'मदे रेम'र्स्स 663)

यस तु पह्न र पात प्रति स्वर तु म्वर पहि । के दिर मह साम के सिर मह साम के सिर मह साम के सिर मह साम के सिर मह साम चर्ड् मॅलाला हेटा प्रेंट्ला लान्यदा च हुर विश्वापा हे दुर ষ্ট্ৰব্যবদ্ধী অন্বান্ত্ৰ কুৰ্মান্ত্ৰ ক্ষান্ত প্ৰক্ষান্ত কুৰ্মেন্ত ক্ষান্ত কুৰ্মেন্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত কৰ ञ्च अ.वै.यरय. मेथ.ग्री. पर्हेच त.लूरय.ग्री. बरंद. परं ब শ্র.ম.ঘরশ্র. ङ्गापकतान्तराम्बद्धाः भित्राम् । प्रत्यापस्य पुःश्रुदेः नर्मे प्राप्ते वा र्नुर्याशु न द्रुयायदे द्ध्या न ह्रदाय व्यापया रेर् ग्री सुन्याया नेदा हु । सर्यासराश्चर। हुव कर्.वे.लपु.श्च.बपु.लर्.शुर्-श्चिषाश्च.वार्वेव.हु नर.री.श्र.भ्र.भूब.भूब.लब ज.नश्र्य.हे.लब.ट्र्ब.नग्रीर.री.परीब.ब... न्तुलः न्रं रःवीः श्रुः तेरः सम्राज्यः उन् त्यः धवः व्यव्यायः त्युरः नरः त्युरः ... नयान् हेर्नुरानु में मृत्रु हैर् हैर हैर हैर हैर हैर में या विदाहर है या तर महर नियान बार्चन्। क्रार्थनः नव्या भूरान् सुरार्थाः रामवे । प्रे त्या माया बरन्या हे र तथा वर्ष दावी तथा देव प्रविकास देव में विकास है में विकास है विकास है के प्रविकास है के प्र न्दः च नः गुवायात्र यदे न्ना सन्दः में बा सहुवा परी वा है । ईया परी वा है न नेते छित्रन्त्रण गर्डरन्तु व्यक्ति स्ति क्षु केरा गुव छिता द्वा पविवातु न्द्राधरा श्रुराधि श्रु अर्कवादे ते श्रिरादे द वका हिना ता पर्याता महिन् बहन् छिन महिन् सर न्में न्या हेन् छै द्वासी हा या दिन मिवन पर-तु-हे-हुद-तु-ईन्-सु-हु-हुद्-ग्रीक-न्न-का-के**-र-इ-वर्व-ग्री-र्यक-देव**-ग्री-ही नहार प्रेया के प्राप्त के प्र **ऍ८स.म.वेशस.पङ्गाचीवयातपुर,र म्रेट्स.पड्नेट्स.मह्नेट्स.मह्नेट्स.मह्नेट्स.मह्नेट्स.मह्नेट्स.मह्नेट्स.मह्नेट्स.म** सरः लु : होर म हो तर मह कर पर न र : कु का न म : अका न म : धिक : का ने दे : न का लेत : यरःग्रीता द्वनातः नेरः तिर्मा प्रते श्चाः तेरः वस्ता उत् । यदे श्चित् । यदे स् पतेः क्वॅर-प्र-ताय क्रव्यापर-प्रमुखा व्याप्त्वः न्नातः क्वॅर्वः व्याप्तः प्रमुखः व्याप्तः क्विं व्याप्तः व्याप য়৾ঀ৾য়৻য়য়য়৻ঽ৾৴৾ঀৢয়৻য়ৼ৻৴ৼ৻৴ৼ৻য়৻য়ৢ৻৻৸য়ৠ৸৻৸৻৸৸৴৻৸ড়ৢ৾য়৽৽৽৽ शुग्र दगः वै: इं 'द्राहे 'हु र 'तु 'हं गृह । या रंग्राम ग्राम ग्राम ग्री र 'दे। पू नवैवाग्रीया सुवार्धेनावयागुवाययाववानवाग्रीया वे में नाम पश्चीत् केन केत्र प्राचनाय स्वया स्वा वेया स्वया प्राचीत्र स्वा स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया खुयानु : ब्रह्मर : वर्ष च : वर्ष : वर्ष : वर्ष वर्ष "१२.भ्र.भ्र.भ्र.भ्रत्याच्यः विष्यः विष्य बर्ळन् जुः न्ने प्रते ने दायम् दाय ने न्यं ने न्यं दाय के ता ग्री मुल ये दे नि ते न ग्री नग्राचार्यायायायात्रे द्वाक्ष्रा क्राच्यायायायायायायाया बर्षेद्र-त्सुद्र-मृत्रेद्र-त्यापर-कुलान्यद्र-ब्रह्मम्भी-कुलाक्य-ह्रेत्र-भून मृत्रैतास्व भी भेर् रायर् व सर पर प्रति स्तर प्रति वि तर् व सर त म्त्रिता बह्रा " ७ देव र्षा वार्ष ति त्र वि वार्ष वार्ष वि वार्ष तार्ष वार्ष वि वार्ष वार वार्ष वार त्तृ वा पा पठरा तरी त्यरा कृषा पदे शिर्या तरे व न व वि या में वा स सके या

^{@(}ह.ध्य. इय. इर. रे. रे. रे. पर. पर्य. प्रे. ये. प्रे. ये. प्रे. पर्य. प्रे. ये. प्रे.

वा "ठू : केव वि : प लु ग रा र तु : प र प सु र : प र : प र : प र : प र : प र : प र : प र : प र : प र : प र : प र **२ङ्गः**पदैॱळे*ल*ःप**ङ्ग**नशुबःकेदःकुलःन् घरःपकुनःपः केदःपः न्तृतःबयःः **ले. पर्यः स्वार्यम्यः प्राप्तः वि. रि. वि. प्राप्तः श्रायः या वि. प्राप्तः प्राप्तः श्रायः वि. प्राप्तः श्रायः ब्रॅबर्प्य प्रमाय के मार्ने हरा है हिंदी है है में बे शिया है पि है है रा** अतः अदः के लः शेन् श्वे : ह्वनः ग्रे : यहं नः में तः न्वदः व शुरा म्रोतः क्ष्रवः क्ष्रवः पदि ही र विवयः वग्रदः व वरः न्रः ह्यम्य ने र्ष्ट्वं के ख्याः ब्रॅंप्रापदः तुः ध्रेप्राप्त वेष वहत् यदे । तृत्या वया के ब्राह्म क्षाप्त दे । वेष्राया वानीव व तरा देश में . सुया न र व यद र दिन र वेद र वेद र । दृ त्या सवा के वें यदै दी श्वे सं 1751 वर् रत श्वर गहु अध्यय से शे श्वर स्तर **बॅदः**अःळक्'खुदःबीषाचॅद् ग्रीःकुलःळवःद्द यॅ 'दे 'बॅं'च दे 'लेष्या कु... बर्ळे र न बर पर दे 'धेव' छेर । दे है ' क्रॅर वय देव वर दे कें न मे न वर ह्या "कव्रस्टानु पत्रवाया वे माने या ये हा हा नहार परे के या पर् ्र केवाने स्थापे केटा मु केवला यदे के लि प्राप्त प्राप्त स्वाप्त **वेॱवॅ**ॱबैवॱॸृवॱ८गॱ८्व८ॱहुंबरविबल। (ळेॱब्रॅव्-ब्रेट्-कुवःवॅग-८्ट-चॅ**-ळ ₹२.**घ.७.घ.) प्र.ईदु.धुर.घघत्रा धि.ज्ञ.घश.घश्चर.**वय.थु. ढ़ॱय़ॱॺ॔ॣॱ**॔॓॔॓ख़ऄॿॱय़॔य़ॖॱॸॻऻॳॱॹॗॻ॔ॱ॔ॿ॒॔ॾ॔ॱड़ॕ॔॔ॾ॔ॱऄऀ॔॓॔ड़ॴग़य़॔ॗ॔ॗ॔॔॔॔॔॔॔ हेरे-भु:कंप-पु-धे-रेट-गुल-पिय-केद-धं र-श्वेर-येपल में र-गे-र्दुल **बबाळेबाबॅ दे**न्द्रादेन्बॅ देवन्य केंद्रादेन्य कुवाबबुद्दा नव्दाय देन्य

⁽देन:बेर:लंद:पदे:र्बेन्य:सु:ध्यःब:मॅन्:ग्रह्य:20)

दे-द्वैना-त्यायद्वत्यक्तीः स्ट्-प्विन्याः अद्याप्तदः द्व्याः व्याप्तः स्वरः क्ष्याः याद्वः द्व्याः व्याप्तः स्वरः क्ष्याः याद्वः स्वरः व्याप्तः स्वरः व्याप्तः स्वरः व्याप्तः स्वरः व्याप्तः स्वरः स्

मुन्यक्षः सहर् प्रयाणया मिन्यः स्मान्यः स्मान्यः याः र्वायः स्मान्यः स्मान

वि.ता दें.पापु.वि.श.चेंबी.तासिच,क्रेबेयाकी,श्रञ्चपु,श्रेचेया

1. यद'न्द्रिन'द्रम'त्र्द्रम्द्र'न्द्र'न्नेन'न्द्रम्स्त्र'न्न्स्त'त्

①(वब देन वट सु द्वेन्य सु वेय प व्याप्त म्य म्य म्य स्य १७००

म्राचित्रक्षित्रम् । विष्युत्ति विष्युत्ति । विष्युत्ति । विष्युत्ति । विष्युत्ति । विष्युत्ति । विष्युत्ति । नद्रतः न्रात्रः पद्धनः न्रेंन् चेन् अन्यः श्रुयः सुः न्रेंने दे अर्द्धनः नदिः बक्षवःकेथःच बदः त्रं .र्वं वः तपुः वं वयः क्ष्यं पूरं .री पदः पुः या वी यः विषः सद महेब्राकुत्यः र्क्षमः हर्ष्य मार्चे वीवान्त्र सर्वेषा न्दा नगदःव्रवःचले য়৾ঀ৾ঀ৻ড়ৣ৽ঀ৾৾৽ঀয়য়৻ঽ৾৴৻৸য়৾৻৽ঢ়য়য়৻ঢ়৽য়ৢ৽য়৻ঀয়য়৽য়ঢ়৽য়য়৽ঢ়ড়ৢ৽ पदि 'सरे 'झॅन' अ' बे 'ॲर्रा ऑर्रा 'श्रु 'मॅं र' अरे 'श्रु व' पराया नी वे अ' द न न न रच' पहन कु : बळें : केर् : रु: बरम्यायः दयः देयः ह्याय न्द्रः लुरः ह्रेरः पर्दः म्बर्या देरा देरे है है नि म्यु परि बर्य दे है वि में के प्या कर श्च[ा]्विरःन्दःगठरायःरेवाग्रेय वेषय बद्यरःरे विषार्वेदःवाळेदःदरः नेश्र क्षेत्र. हे. चर्माय. च ह्या स्वर हिन्या हिन्या हिन्य हिन्या हिन्य हिन्या हिन्य हिन्य हिन्या हिन्य हिन् मुद्धंग भग । पर दु ग न व दर्या वया पत्न गया ह्रव क गया अपया देर ने श्रेव ग्री स्वाह्य या नविव न में ते हर स्तर सर सर्व है। पर्या ".....डे वरमें हगरा सुव सुव सुव केंग्या पर्या पर से र वर्षे न में श्चयाञ्चर हेर् बेर् तु शुप विदाद दरा वर्ष वर्ष कर वर्षी की सवा सर के ने दें न धेन या ता तह न या न समें सहिन्या ने दाय न देन बेद्रायरायह्रम् यायान् यदार्यं यहुवायवे यह मायवा बुन्याया য়ৢ৴৻৻য়৾৽৾ঀ৾য়৾৽ৢয়৽ঀ৽ঀড়ৢ৽ঀয়৽ড়য়৽য়ড়ৼ৽ঀৢ৽য়৾৾ৼ৽ঀঢ়ৢ৻য়৽ঀ৴৽ वर्धेय.इ.थ.चैय.तर.पक्षेर.धे.कूय.श्रेंट.कुर्य.च्र.श्रेंय.टेंटयी वर्षेष् कुष छन रेष रेष केष गर्रे वर्ष । पगरि र्शुद ह्रंब ह्रवा या न्रंत्यान् वैयायकॅन् न्युया इत्योग् इयायान्वे र्वेन्या हे मृन् ग्रे

याया स्वराया स्वया रुद्दा न व्या याची वा मुच्या मुच्या याची वा स्वराया स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्व यदःश्चेत्-ब्रह्मन्निःश्च्याः सदेःश्चः द्वेन्यान्वतःश्चरः नः तदेः द्वयाः ययः नदः दिना धेव चु न्वायता करे निमात सुर व व क न्या लु नि न्वा निर निर हेदै-पग्द-सुद्द-सेनराय-दे-दिन-भूद-हेरा याध-देव-गुप-र्भूत-सदे-यदः तुः क्षेत्रः द्विरः द्वेतः श्चेत्रा विषाम्ययाया विषाम्यया बिदा पह के बन्दे व से के व बाया में कि द बाय में निवास म "ব্ৰাশ্ৰহাহাহ यद:रु:२८:३:अहुद:ग्रु:पञ्चर:येनय:ग्रुट:५**रुग** मञ्जेग-पर्द-पर्द-परि:म्येर-पर्वेद-तु-येग्य-पर्द-कृग-पर्द-छ्र-। ढ़्र-ॿॖॱॻऄऀॱॻऺढ़ॖॻ॑ॱग़ढ़ॖॱक़ॣॳॱढ़ॖ॓ॱॳऀढ़ॖॱढ़ॖ॓ॺॱॻऻॿढ़ॱऄ॑ॱॱख़ऀॺॱ॔ऄॹॱॼॖॻ॑ॴॱग़ ला मुद्रः बदः तु . प ह . क्रेवः बश्चरा ठतः अधिवः मधिमारा क्रेवः ये : ददः। कुलः स्पार्दे 'बेद'न्द्र' रायः है 'पद्मी' देद' से । वेद्र' पत् ग्रालयः पदः इयाम्बेल। देर्दे संन् (इयाधराईयायाया) दाब्रेट्देवाया छ। प नि में में प्राप्त हैं जा के अकू में श्री प्राप्त श्री श्री में प्राप्त हैं में स् हु:के:र्म:इयप:र्रः। मग्नदःह्वा यर्दःर्घवा हुरःधमःहयः मार्यम्यास्टारहेवयाग्री हिमार्ट्यारहेव पहणान्धरातु अपयासेटानी म् वैशःहरः वयः मृत् द्वं ययः केवः तुः श्चेवः द्रत्यः धरः मृत्यः हः शुवः द *न्*र-पङ्गुव-धुवे-लक्ष-पव-वज्ञ-धव-ल-ब्रॅ-सुत्र-तु-स्व-द्वेव-क्रु-ल-चुन्---इयराष्ट्रेन्'ग्रेराक्ष्रंन'ठेरामग्राम्बद्दान्य ईलावर्ने'वै'रोयराज्दा कुषाबरवाक्यापा**ळ्टा नम्या**ना हेरातु वा प्रवासिक क्रिन्त हेरा प्रवास के <u>むしていれていいまた。というないないないないないないないない。</u>

^{🛈 (}इबाबर रूर् यदे धर् तझ न में न न न न र 23)

नवैवःस्यानःवै। न्दःस्रःकुयःनःश्लःद्वान्यः वद्यान्यः । नवैवःस्यान्यः हेवःगुक्ववववदार्वरःहःनः (ल.५.५.) क्रवःत्रद्वारविद्यार्श्वरःनुःगुन्याराःः तपु.ब्रुंब.श्रु.विर.पहेब.व.र्रा इ.पर्श्व.द्वर.ध.त.क्रुब.त्रु.ब्रंट. **नक्रव**.नग्.नेथ.र्स्.।व.वा स्रग.र्नुषा स्रग.प्रवा श्र.नुर.स्वय. *ॸ्*रॅंतः**२**ज़्नतःनवेकःरेःछन्ःतुःसुयःनरः.....ञ्चः*न्रःवेरः*न्छन्ःरेंग्यः न्राधितःत्यत्रे प्रते धेव वे यान् हेन् गुप्तायात् व्याप्त राष्ट्रेया यहे व बर्ह्या दर्भग्नवराषु अवस्वन्य विषय विषय में दाय के वर्षेत्र सुरहे व *वेर-५५५-४म्था-४स्था-६द-७म्था-६य-५८*। वर्*र-*श्चॅ*न-४म्था* **ळ्या.धे.सी.टी.बा.बा.धेय.सि.प.स्.प.स्.य.स्.य.स्.वा.प्.ग्रीपार्यप्रार्श्यणः.** व्यास्य "🛈 वेषान्ययामास्या वेरवादर्दीन म्ना र्युर्देषा दहिवा ଌୖୣ୵ॱଊ୶୲୳ଵୣ୕୵୴ଵୖୢ୶୲ୖୖଽ୕୵୳ୢୢୖୠୣ୵ୄ୷ୄୖୠ୕୕୰୲ୠ୷୳୲ୖଵୣ୶୲୴ୠ୕୳୳୕ୡ୶*୲୵୷* बरःग्री केन रेया दया निया प्राप्त स्वाप्त विश्व विश्व विश्व

म्मान्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धि

बान्नियामया निराधाधनाहे केवापा (कवासरा) ने ने निराधी सु निया कृत् भीव वतर् वतर् तर्रे तर्ते वर् यामगुराम वर्षा मुन्न मान्य देशःमञ्जलकोरःसुबार्गुणः ५ देवः वार्मेजः धर**।** ५ दे केरः रहः ह लते न्ना बरे लट रेन् र निया पर्ट र र लेव र केटा मिया बरे स्था लेर म्बरःहेवः वः नहम्या है र्यम् बेर् ग्रीः श्रु पह्रव नेव-य-क्रेये-न्धेरःन। हॅ देवानकवानम्याधेवाबरम्वायाये कराह्वाचे केवाम्रेर *ञ्चर* बर्ग्यु ग्रायु : ग्रायु : श्री विद्यारम् तार् प्रायु ग्री विद्या स्वायु ग्री विद्या स्वायु ग्री विद्या स्व मवेषाक्रुवे क्रॅन्युं क्रूव ग्रव त्र्यापर त्राया पर विषया पर **ॻॻॴऄॖढ़ॱढ़ॱॴॻॱऄॱॹॱॻ॒ऽॴॶॻॴज़ॸॱॹॾज़ऄॗॻ**ॱ र्धलः स्वा मञ्जूषा "अवेषाम्बर्याना सूर ने विषावी रेट्यर मह केवा र सूव स्मेर के.वा.बक्चा.चेया नबेयाने स्वक्षं मुं नबरानह्रवायदे तसुरामवयारमा नगरा सरा में मय कु⁻बळें विराम्सियानराबर्दा "ह्वानाविरापदेळेरामहावाग्रीक्री मॅद्र'अ'न्द्रम्'चॅ 'केव'चॅ 'वर्ष'क्ॅव्र्'तु 'गुत्थ'ठेंदै 'हॅम्'नम्दर्गदरन्दर्य ''''' न्धेनरायायविवासम्बद्धारम्या मुत्यः स्वारं विवादवार्देवार्यः स्वरा न्तुकाम्बुद्रःकादेः व्याङ्ग स्वकान्द्रः। यम्बाकास्य प्रवेश्वेन् प्रवृत्तः खयः नव : इयः मृत्रे**रः** न्ये व : द्विनः न्यः नरुषः यः सेनय। क्ष्वः कुरुः न्यं व.प्रांच्य.र्ट. चरुषाता (क्ष्मा गुट. घट. ग्री.) मृ र : क्षेत्रका केवारी : विवा न्द्रेर्न्तिः हेर्न्यक्रम् ह्रियादेव च के ह्युव द्रत्य। वया नदः र हुन्या

① (इब: बर: ५५: यदे: वेद: देवं व् व् व् व् व् व्

स्तःश्चितः त्रेवः चं के वा के

यान्ते स्त्राच्या महिन्द्रि स्त्राच्या म्यान्त्रि स्त्राच्या स्त्

① (इबाबर रूर् यदे धेर् यह व वृज्य ज्या व्याधित १४)

विद्रा है से श्वाय न्यंदाय्यितः ह्रायाः श्वायः हिता व्यायः व्यायः हिता व्यायः

द्वःग्रदःश्रम्यादेतः मुद्यः प्रदेशः स्वाद्यः प्रदेशः स्वाद्यः स्वादः स्वाद

ळेला है . सु . मृह्य या में राया के दार्या व तायळे मा ह्या या देवा या के नारी र य़ॖॺॱॸॣॶॖॺॱॺॱॣॺ॔ॴय़ॸॱॱॣॺॱक़ॗ**ढ़ॱऴढ़ॱय़॔ॺॱॸॕॺ**ॱॻॾऀढ़ॱख़ॾ॔ॸॣॱय़ढ़ऀॱॱॱॱ नगतः देवः न हरः रगः रद्यायरः न वेशः हरः यः गृह्यः द्या कुलः दुः नेरः बायपाहेरेप्तर्भन्द्रा द्वाक्षेत्रकृष्टि वर्षा बर्ह्सन्यन्त्रः स्ट्रीक्ष्यन्द्रायक्षा बर्ह्स्या ह्यायः देवः सं ह्या कुष स्वः वॅ'बैब'क्वा क्रेब'प्रदेन्मॅब'पा रॅन्'मञ्जाबायव'ग्वेषा ल्ट्यायह्रयाचिताय्यार्च्याचा ह्याचा ह्याच्याच्याच्या यदे ह्या र ब्रेट वि के व रेव में के। र र्व में में बेव म्वा प्यतः केव-र्द्र-बेव-रुवा के व्यक्ष्यान्त्रीय-ह्यायदेशा राज्यान्यय-ह्यायदे भुःर्भगवात्रात्वात्रात्तुःद्वाताभुःकेः तिमाः इद्यान्ता। महादःक्रमाः व्यवः ৡ**ॱਫ਼ੑੑੑੑয়**৽য়ৢ৻য়৽য়ৢ৽ৼৼ৾৽৸ৣ৾য়৾ঀ৽৴য়ৢঀ৾৾৽৻ৼৼ৾৾৽৻৸ৼ৾৽৻৸৾৾৽৻৸ৼ৾৽৻৸৾৾৽য়ৼ৾৽৻৸৾৾৽য়ৼ৾৽৻৸৾৾৽য়ৼ৾৽৻৸৾ **वसामशुद्रःळॅनः** क्वुवः रेदः प्रदेः हॅनः वुन्यः श्चॅवः क्वुः केवः ये व्यहं द्। या दे.पह्र्य.मे.च्या.च्या.च्या.चह्र्य.चा पक्ष्य.म.चह्र्य. **৫**ৼ৾৾৾ਫ਼੶**ৼৼ**৾৽ঢ়ড়ড়৽য়৽ড়ৼ৾ঀ৽ড়৾৾য়৽য়৽ৠৢৼ৽য়৾ঀৼয়৽য়ৼয়৽ঢ়ৼ৾৽৽৽ ळेदःयॅरे:ब्नक्रायर्-रङ्गयायः विःस्वावीःयर्-तिःत्तृः यह्दः ठेटः। करः शे**र्** बर्द्राचराङ्गवरार्वेदावरार्वेदानु द्वेषान्द्री भूगवान्व्देरी देवाया पदा क्षेत्-बिर-पहेचया-पदी-म्युर-म्यर-अईद-र्यय-अई-ए-प-द् *चन्:गुम्:न्न्:यदे:न्तु:प:र्क्न्:यदे:न्व्यादे:थेन्:वर्ळे:ग्रेव्युन्:रः*

बर्प पक्ष ब्राय थे. प्रद्या ने बर्ट प्राय क्षेत्र क्षा क्षेत्र क्षा क्षेत्र क्षा क्षेत्र क्षा क्षेत्र क्षा क्ष ब्राय क्षा क्षेत्र क्

ষ্ট্রি'ম'1810ম্ব, স্কর্মার, ম্বার, স্কর্মার, মার্লার, প্রার্থিত বিল্লার বিল্লা ऍग्यापग्ठिगायाक्रवयाग्रॅं वर्स्रायरावर्षे क्रिक्ति हे इया घर वरः "रे र लट.श्रेज्यत्वर्रः र्वटः सं. कं. यः क्रवः संत्रं श्रेण्यः श्रेत्रः स्त्रः स्त्रः स्तरः स्त्रः स्तरः स्तरः स्तरः केवार्या अर्देवापरावर्षा वा इते न्वरायंते विरावना वी सुवानुः त्रंतायात्र्राचात्री कृत्युगायकृताव्यात्रायम् । स्वार्तायात्रायाः मुन् गुरारेशप्रविद्वां नियाः भुवातु गुरायरायहेव। वळ्टा व्यव निवेश र्मूर्यायान्व द्वा दि श्रुरायार्गा दि श्रुरायदे तर्मद्वाया स्तर्भा न्रॅं चेन्-पर अनवार्षा नवतारा नवता कुलावरे नवर में दे तही कु लकान्तुरानु तर्ने नाता यात्याञ्च का केन्याये द्वानाया मञ्जेन् ग्री वाद्य वाया व **कु**या कंपा वें ' बेव' फ़्व' केव' यें ' न्रा । प्रा दे ' न् सुद : सुव : केव' यें ' न दी ही : **६मः अविदः में - स्वीयः चर्यायः प्रश्रायः विद्याः विद** मेंक्टर.द्री वर्दु.पट्ट.इ.च.पाया.कु.पट्ट.पज्ट.अंच.च.च.या.प्रया.श्री.क्री. यदै मुं राष्ट्रव विवाद द्वा क में दा क में दा पा के मान के

ग्वदायायास्यानुः क्षेत्रायाय देनान्यया देन्यया वे त्याळे देना यह या दे न्यानु निर्मे निव्यास्य निव्यात् निव्यात् निव्यास्य स्थापितः हेरास्य कुर्-भूरा ग्रंथः वरः केटः भूरा दः प्वतः वरः केटः भूरा ग्रेयः **इट**. प्रमान स्वाया ग्रीया सह व. सं. चटा छवा सुर चटा है। चटा नेवा हु कु के पर दरा वि के क्रें र ग्री म बुदायर बिया य है र में हर से यह के स **₹য়য়**৾য়ৢ৽৾ঀ৾৾ঢ়৽ঢ়৾৾৽ৢয়৽য়৽য়৽য়৽ড়৽ঀৢ৽৾ৼ৽য়ৢ৾ঀ৽ঢ়য়ৢয়৽য়য়৽য়য়৽ঢ়৽য়৽৽৽৽৽ तहेन'ऋबः पदे मे*ने दर्यः न्दः स्व*न्धा य**ञ्चः पर्मेन् सुव**्सुबः स्रेम्य यः बेण गे.पर्न् : हेर: श्रुर:ध:दर्न : इबल: जुल:पदे: न्वट: धंदे: इब: न्ग्र: पस्च नाया निष्या है । इन् है । इन ने दिन ने प्राप्त के सार्या ना है । इन है । इन ने हिन ने प्राप्त के सार्या न इस्राध्यान्या परि रोसरा क्षेत्र प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त **ন**দ্ব-দর্শ-গ্রীক-খ্র-দ-দ্র্শ-শ্রু-শ্রু-কে-জ্য-শ্রু-শ্রু-কে-জ্র-শ্রু-ক্র-শ্রু-ক্র-শ্রু-ক্র-শ্রু-ক্র परःश्वापःपःचीयः......" 🛈 देवाः स्वापः पः स्राप्ताः स्वापः देवेः नुस्रवः न्वे ॻॖॱॶॖ^{ॣॖ}ॴॱॺ**ॕॱ**ॸॕॱय़ॸॱॹॗॸॱॺॕॱग़॒ॸॱॿऀॱॺॕॸॹॱॹॖॱऀॺ॓ज़ॱय़ॸॱॺॸॕढ़ॱक़ॕऻ

 2. 每四'或口'两'或可'可持可帮'或口'

 5年' 夏'四花'面'知'可切'口'题'あ''或''或''', '题''可持可帮'口!

र्देच श्रु -प्र. 1811 प्र. क्षेत्रयाली प्रप्त श्रियः न्यायालयः त्यायः स्वययः यः हेर जित्रा रहेत् रे का के विन वि विन नहेत् ति नि के के विन के के য়ৢৼ৾য়ৢৼ৾৽ঢ়য়ৢ৾৽ঀঀয়৽য়ৢঀৼ৽ঽৢয়ৢয়য়য়য়য়ৼ৽ঢ়য়ৼ৽ঢ়য়ৢঢ়৽য়ৢৼ৽ৼৢ৾ঀ৽ড়ৢ৻৽৽ रवसः" चेरःवदेः वृदः । देः श्रृंदः" चगृदः शृणः नृदः । वृत्वः रादेः শ্রম-ব্যব্পেম শ্রম। শ্রম-ব্যমান শ্রম্ শ্রু শ্রম শ্রম ব্যা বি শ্রম खेर-है-दै-दे-देव-इद-हुन-वहुद-वहेन्याः बेर्-कुष-**ढन**-ग्रै-दिर-वर्ड्स---पवग लुया "धेवेय वेया तर्ग पर्ने अंतर रे वें रें रे रे अंतर अंतर केंद्र ॻॖऀ॑ॺॱॾॕॺॱॹॖऀॺॱॺ*ऻढ़ॸॱॸ*ढ़ऀॱढ़ॣॱॴढ़ऀॱॸॣॹॖॱय़ढ़ऀॱॾॣॺॱ**ॾ**ॸॱढ़ॸॱढ़ॸॣऀॱॷॸॱॱॱॱॱॱ चिश्चरतःहो इच्यालमः ॥ इ.च.चशुक्राधरे छ्याच दुः हुना च इतः स्र त्र्र्न् क्षुंत्र सुत्र सुत्र खेता के नाया पर्दर हेता में मार का के का ग्री मुला में निकार में र्श्वरःषे'चेर्-पॅर·२्घर·पश्चरःष्∄रलःशुःपङ्गॅरःधदेःपग्वःधेषःथेवलःः यर। न्गरःह्या वयःवर्षेतेः ईन वग्नदः धेनःनीः न्मेंद्राः न्द्रा वश्चता लयः र् व ग्री वया मा न द्रुपः वया ग्रुपः र न रः वर्षे मा र रः। वर्षे र रा पर्दे व क्रियाश्वराह्र हे.पकरा विचयानरं झेया। श्रीक्रियाशिये.त्राच्यर क्र-नृत्तु : वयतः ठन् :ग्रेलाचि : चं :ठ ना ता ये नृता क्रेता ग्रेता ग्रेता न न न न न **७**विषाम्यायायायायाया श्रीन् मृतुदामी साददेवा वया देवा वदा नुददा "इं क्वा देव यें के विवेष्य क्वा हर में दृष्ट्वित क्वा प्रवेष प्रवेष विवेष क्षेत्र क्षेत्र प्रते प्रणाद क्षेत्र प्रते द्रा व्याप्त प्रते त्र विष्टे विष्टे

^{🛈 (}देव:देवे:धर:हॅब:673)

② (५५.४४.७५.४५ में भेर.४५ में ग्राह्म ११३)

देबायदे:न्दुत्य:ब्रबाळेब्:बॅ:न्टा ने:बॅ:ब्रु:बॅद:बदे:कु:न्वा न्या ह्याराच्याप्रयाष्ट्राक्षेत्राष्ट्राप्तायाप्त्राच्या **ॻॱ**नशुक्रामदे ळेलापङ्ग पतुव केवादे के देव के के देव के ताव स्वापान वरः नवारे केंद्र द्वा महितासुर महुर महुर वा वि सेनवा है नि महिता है **क्रेयः**न्द्रु-वृद्याः तः यहं न् द्वेदः। जुः व्रव्यः वृदः वृत्यः त्यः व्यः विदे É ह नवानवरःरक्रवाधियःरङ्गा व्यादेशनरानवरःश्रवाधिवः क्षेत्र-दे-दे-धेद-इद-धु-क्र-रेदे-धग्य-प्रवाधियया " 🛈 देयागयया सगः **ॾॕॸॱढ़ऻॕॸॱॲॸऻॱ॔॓॓॓ॸॕॱऄऀॸॱऄॗॸॱॺऀॱऄॎॸॱऄॸऺॴढ़ॆॴज़ढ़ॖॸॱॸज़ॴॹॸॸॱ** बेर्-ग्रे-बर्द्राय क्रुंद-यहोर् पॅर्-यर-क्ष्ट्राक्षे इया वर-वर-"तर्दे भ्रमकाम् रू. रुवा लाडी र भ्रम् रावी खिरानवका यहा विकार यह व का रट. हेर्-वृद्या हे.श्व. बा. हेर्-बार्ट्य-वृद्धिः इट. ट्रेन-बृद्धव नवायाची हिया म्बेरायाश्चनारमः क्रेंयाग्ची प्रस्तेष्ठाययाग्ची ब्वियायमे वृष्या वृष्या । दे व्ययः विनयानहन्दायनदाविनानश्चनयाहे हेटाययाहराहरा हराया हिना **ॷऀॱलक्षः ५२ ॱढ़ॄॱॶॸॱ८ह्षण् अःॸ्षॅकःयः देणःणे** २५**५दः**यः अक्षेकःग्रुहः। **र्ह्रव**्गेचे .लब् ग्रे**ब**.पर्या नेट्रा व्ह्रवःग्रेचें के ब.पह्यः र्चेट्या मेट्र स्वरे नग्रदास्य प्रत्य में वास्य मान्य तपु.क्र्याञ्चर्।यरयाञ्चयापष्ट्रवापपु.स्.पाना-हु.क्र्रायापर्द्रावेदावयाच **अर्.**धर.बूट.कुराशु.५ कुर.द्रय.बक्ट्र.लूब.वी.विवय.५ र्वेबय.पवधाय. ब्राम्प्राप्तिः क्षां व्यात् कुरा वि र ठना वया है। स्मा मेया क्रेया मेवा

① (देव बेर सद्ग्वर निवेश्व स्वाप्त १३व । स्वाप्त १३२)

न्दियः न्त्रं व रहे रहे रहे राज्या मन रहे व र न न न व व य व रहे व र न न न व य य मुलान्दर्भंदास्यादेन्त्युः हं लया सास्यदे समावहेवात् हे र्वरःबेकेरःयःवङ्कषः रहिन्यःयः देः अदः द्वैरः दर्वतः वः नः न्रः। र्वरः अळेगः र्रः क्षा कुषा शुः रेषः यः र्रेषः य तुषः द्वरः ते ग्रा गुरः क्ष-बद्र-के ब्रुट्र-वह्नक् श्रेट्र-धर-क्कुल-द्रन्य । अदतः उत्तरकः वर्दे : सः त्रॅन्-वनयःर्यम्यार्येन्यः अळ्न्-प्रॅन्-ग्रे-त्र्न्यः न्वेन्-न्र्रेन्-स्याय् विषाः चुरः वः ठेः यः उरः श्रुयः यः श्रुरः व्रषः य वरा यळे यः व । श्रुपयः यह षः कुव् रहिंद्य सुन्य हेवान विन्य राम विन्य राम अधिव अधिव लेवान राम राम "ा न्यतः र्चे र त्रेतः प्रेर हर् न्वर् ने व क्वारा रा ग्राया र वा वा हरः व्यापकायदीयाद्रम्यायाधिव।

न् म् स्वास्त्र स्वास्त्र

① (বৃদ্ধের অব্বের্শ র্শ গ্রহণ 123—124)

② (ব্র্'ণর'-অর্'নয়্ব্'রব্'য়য়য়য়'128)

चर्यारपाईषानु वायापानु वायापानु

ब्रु-ल्र- 1813 व्रद्-ख्र-च-ल्रिक् मार्थ-स्नु-पर्व-त्र-। प्रकाळेत् नष्ट्रदःपदे ने य अक्रमः म् रूरः द्रायाम् द (वु र् रः दर्भ य क्रेयः वे रः म् ने यः **ॱ** र्रर अव ज्याय पर अंगर्ने वा नर प क्र हे जिर क्र न क्र र रेवा नयः ह्रनः नियान्य यद् नः केटः। के क्रूं व हिराह्य मार्थः ह्रम र्यट्रत्ह्यर्पात्र्व्य विवय र्ट्रा हेर्ड्यू हेर्ड्यू हिर्द्य विषयः तपुः निष्यं श्रीयः विष्यः श्रीयः भ्रीः भ्रीः प्रचरः निष्यं विषयः श्रीयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः *ष*ॱर्वेग्यःय:२५:५वे:५वें।५५वें।५४:५व्।५वे।५वे।५वे।५वे।५वे। श्चितारे द.स. कु. अकूच ग्रीयार्ची व्हिता ही रहे या ता स्यापरार्ची ता प्रेता दुरःश्चेग्-कुषः बळ्दःश्चेरः पः इषणः ग्रैः गर्द्यः कुदः रुः श्चरः पदेः बर्दरः श्चरः इययः ग्वा कुरासुद्रासुद्रास्य हेर्गयः पञ्चितः धरः सर्दिः है।

कुं सक्ष्यः सहतापि लु पर पठर कुंदापदे म्वा वर्षा हुता देवे क्षेत्रा वर्षा कॅ.सेंच ग्रेयानक्ष्ययानपुर, ४८व्चेच हुयानू यान्य व्यापक्ष्यानेयानपुरा चुरा»वेराय देवे वरातु म्यायायाया गुराया वर्षा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स १६११ व्यु : मान्य विकास दे : इया प्रदेश विकास *ଵୖৼ*ॱय़ॕॱॸॖॱॺय़ॆॱॺॕॱॿ*ৼ*ॱव*ৼ*ॱतुॱॡॱॺय़ॆॱॿॖॱॺॸॱॺॾॺॱॺॱॿॖॱॸॸॱॸठॸॱ**ॱॱॱ** इर.स.सम्बद्धान्तरा रग्र.स्यामु तुरायाकः द्यानञ् क्षेत् छन् ज्ञत्याया या परि पद प्राप्त क्षेत्र वि दे र.च.व.र.च.च.च.च.च.च.च.च.चे.केर.री.लर.जे.च.व्चेयाताच्या..... बह्यः हे वः रुः सुयः भेदा मृत्व प्यादः दिनः यद्वः नदीः नद्वः क्षेत्रः शुक्रः श्री के कि है । बाले बार्स किंदा बेदा या ने वा द्या वि । नवा द्या ववः ठैवःग्रीः हः यर्षेत्रः क्रेवः विषाः ग्रुदः छितः व्यदः यर्पः येद्। हः देः रेष्यायः सः यर-न्म्व पर्व-न्द्रवार्य-इ-क्रेब्न्य-विन्-धेव्-पर्या-यराञ्च-द्र्य-क्रिन्-क्रे-व्ययः यः दिना ने ने ने ने नियान स्था के ने सं विना नी निस्तु त विस्ता मुक्षासम्बद्धाः स्राप्ताः मुक्ताः स्राप्ताः मुक्ताः वर्षाः विद्याः मुक्ताः वर्षाः विद्याः क्रेवः(श्चिनःश्चिमः) यदमः ध्वमः व्येषः मर्वनः प्रवादः व्यापः स्वादः विकास्यमः तक्षतः श्रेपताः श्रु 'तिवरः श्रुवातः हवातः कं 'सं 'विवा वीता हुः दी 'वा विवा संदेः ... वेषान्याग्री:[पाञ्चे:**वषाञ्च:द्रै:य**ावैयार्थ:श्चेत्र:**वॅदानु:पञ्चाप:रेन्। विवा** *ঢ়ৄ*ॱ৸৾৾৾৴য়ৼ৾৾৽৻ঀৢ৾৾৻য়৾৾৽**ড়৾৾৾ঀ**৾ৼ৾য়৾৽য়ৢ৾ৼ৾য়ৼয়ৢঀ৾৽ৼঢ়ৼ৽৽৽ ल्याय:नेद् रे.केर.भीथासेबाथाक्रर.ह्या.वें.पारु.शं.वारु. पर्वे बाया विदे बित्र शुः व्यन् पदे त्याया बन्द के दातु । वस्त वसाद । दहु दाया से दा

स्व बिर. वे. तापु. थापु अथा अथा स्थानर वेष्य था प्र बिर की स्थानर वेष्य की स्थानर विषय की स्थानर की स्थानर की स इर-दिब-त-र्थाप्रि लर्-र्यर-रय-४. दिन्याप्र-प्राप्ति व्याप्ति व्याप्ति विश्व बदै द्वाराधिन तु दिरापाद नै सु तु वै क्षुव र मा वी पहूँ न वु स्व र र र र विष्-रेन्-पर्याययः व्यन्-प्र-रेन्। श्रीययः नेत्र-हू : यदे : ह्व : या नेत्र-व्यन नतुष-दंशनु-वेनरा-प्रन्यानेन। विद्रःश्चिनः नर्षः व्या-वं स्विनः यः देवा **र्र**-रेग्यानजुर्ग्यत्रर्धेते चुैयायते त्यार्ग्यता गुःश्चर् ह्या क्र्रा अर्ः द्वायात्वेषाध्येव केटा द्वायम् निर्मा विष्यं वव केटाया के ने न म् नेम्यान्त्रास्याय यायळ्ना स्ट्राल्या त्यू त्रान् नित्रार्वे नाया [मन् : हुरामः ने :म बन् : हुराबेगाः हु: कुरा ऑन् : या ने ना अब है रा ने या र्षिट्र पत्तृ सं भूर व वर्षे व्यविष्ठ है रूट्र में लार हु में वरे प्ट्र शेषा वियादि भीव पर वे ळ वा बेर् छ वा हर गार वे न ग्री र विराध रेर्। श्च-व-स-पते-व् -पते-त्र-अ-नेष-अव-वेद-य-पन्न-अय-ळेन वि-नव-----न्शुरलः रुकः वॅदः अदः वं वकः युदः व्येते अदः श्वरः यः नशुरायाः अदः **য়ॗ৴ॱनेराः कु ॱ**श्नन् 'हॅमा दराः अदः कुटः मीः ग्रुटः मॅदेः हुटः धेमः त्यः प्रदा इराधेनानेतायानेराने अन् वनावनावन नेरायान नराया रेत्। वन वैदःगैयारदःवेद् ग्रेयार्वे पर्मेद्रायादेवे वदःद्वा दःदेवाद्वायवे व्वः बाबह्यानानेवान्तानेत् यावेबवादमुयान् उत्तिवादी विवासित्या र्मर-म-दिना-मर्जेकान्तुर-देवान्त्रेकार्यन्-धः रेत्। " **उठेका**न्वकारान्-देने **न्**डीव है 'न ठव कुल ने दायुग्य प्रताप द्राप्त प्रताप के वा कुल कुल के वा कुल के वा कुल के वा कुल के वा कुल के व

①(বৃন বৃন ক্র অল্লেম্ম্র।189—191)

इवा वद वर वेच नेर्दर्भ नर्ज्या मालिया धर दर इरा मल्या पर श्रम्य त्रेदे वास स्वारी, सूर. मी. श्रम् र. मास्त्र स्वार मिया सूर. पि. रेटा. ... त्यकः कूटकः स्वावः शुः वटः ३ ह्व वः नटः। व्यानः स्वावः नवनः अष्वः व देश: हुट: क्रॅंन: न्ट: क्रॅंन: ५ ह्व तार्थ: क्रॅंब: क्रॅंन: क्रॅंब: क्रॅंव: क म्बर्स्यवालेवासदेखुः धेवारेशात् इत यापन्याम्बेरावाया या गुवार यर पहेन बनर में र भिर्म प्राय विषय में ने या निष्य है ने पर शु'वि'वक्ष'न्वं क्ष'चुर'कुव्। हेल'शु'न्द्वेव'हे'वठव'जुल'रेट'खन्य मलामर्ज्यात्र स्थानु क्षेत्र चेत्र स्वामित्र में अम्बर्धा चुरामिते क्षेत्र ने माने दे वदःवियः तर्वेदः मवदः यर् गःगुदः धिगः इति महा के देगारा वदेतः सः श्रेरा मॅद्राम्यायाम्बद्धाः द्वंतान् द्वान् विष्ट्वं व्याम्बद्धाः विष्ठाः श्रेषाः श्रेषाः श्रेषाः श्रेषाः श्रेषाः श्रेषाः त्रुः रॅवः क्षरः वॅर् क्षे क्षे रे द्येयः ययः रॅवः **इवयः बॅरः व**देः श्रेरः नृतु**रः ः** য়**৴**ॱয়৾ঀয়৾য়ৢ৾৾৽ঀৼ৽ৼৢঀৼ৽ৠৢ৽ৠৢ৾ঀয়৽**ঀয়**৽ৠৢ৾ৼ৽ৼ৾**ঀ৽ৼৼ**৽ঀয়৾য়৽ঀয়৾৽**ঀ৽৽৽৽** लगान्त मुन्त स्वारी वार्या स्वार्थ स्वारी

श्ची स्वास्त्र विद्यात् विद्य

95'ai

"ฐ่า. เมา. โรงสา พิ. ผูล เกา เมา. พิ. พิ. ผูล เมา. พิ. พิ. ผูล เมา. वै:देयः बढ़ हः द्वी। "देशः दहः। वर्षे वह दःवा "वैदः है। मॅर्-पत्नायानुः वराज्याप्तराङ्ग्रामुयानयापायायाया मॅर्गा দু 'এনি 'ন্ত্ৰ' ম' 'रे के 'रे 'के दे 'क ' ब्र पर्या शु ' न्र ' या श्रु 'ये पर्या ये ' ह्या या ग्री ' ' **क्रे.इस्.५स.इब्.५वयावयाक्रे.इब्.इ.२व**.४स.२स्. ४.४५७क्रे.लेज য়ৼ৻ য়৾৽য়ৼয়৽ঢ়ঽয়৽য়ৼ৾ঢ়৽ৼড়৻৽ড়ৼ৽ঀয়৽ঢ়য়ৢৼ৽ঀঢ়৽য়ৢয়৽য়ৢ৽ঢ়ঢ়৽ न्द बुषान्या वर्षे प्रतिन्द्रायमें न्यता "वेषात्विन्यतुषायते व्रतः" ৢ৾য়ৢঀ৴ঀৼৄ৾য়৵৻ৣ৴য়ৢ৸৻**ড়৾৴ৼৢ৴৻৸ড়ৢ৾৾৽৴ৼ৻য়ৢঀ৾৻ড়ৢ৽৴৽৸ঢ়ৢঀৼ৾ঀৢ৾৾৾৽য়ৼঢ়ঀৼঀ৾** ন:ম লবা ক্র:শ্রন থিকাক্রী:মি:শ্রীকাপ্তর:প্রথাপর বা দুর্বান্তর দিঅব দ্বিএ গ্রী:ন্ন:অ:ন শ্রু:বৃহ:গ্রুঅ:স্কু:র্ন:বরি:র:নির্ন্তর্নের স্থানার দ্বিনার করি স্থানার দিঅব ऄ**८ॱॸ८ॱय़ॕॱढ़ज़ॱॸॗॹ**ॱॹॸक़ॱॸॆॣढ़ॆॱॸॾॕॹॱॸढ़ॖॖॖॖॖॖज़ॹॾॗज़ॱॹॗढ़॓ॱॸॾॱॻॖऀॱ**ॺॾ॔ढ़ॱ** र्टा विद्यास्या मुनेन्यारुवाग्री:न्सुटाग्राटवारक्वास्टाया विषित् वर्षु ना रा धिना स्वन्या स्वरास्त्र स्वर्ण दिन् र भीवासी लर्पा न्ये अळ वाचिना सरापर्मेन वा "ने सं रेवार केरे **क्षे:**क्षेर-दे| न्द्दारा देव क्षेत्रक्षेत्रक्षा व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त <u> चवर्रा अर्रे इंद्रेचेन वेराधर रहिस्य। दन्तर अंत्र कुट् छुर</u> परः वृत्रेव्या देते हुता सुः न्यतः युद्धः वर्गः विया 过亡.点.公. न्गरःळेषः।परःनुःत्वुर्या न्तुरःसःन्वःगह्यःपरःगवेगया केन-५-तिविस्या रस्ट-र्थ-रस्-न्यु-पद्ग-न्य-पन्-विन्यः।

র্ম স্ব্রেশ্বেদ্রে মূব্ ঘর ক্রিমের হব। স্নের রেশ ইং (ইং) প্রম ञ्चर्रु त्रष्टु द्या द्युर् सं ले द्वार्यर न ने न या देशे श्वराष्ट्र र न ব্নদ্ৰেষ্ট্ৰান্ত্ৰ বিষ্কৃত্ৰ কৰিছে বিশ্বৰ্ **न्तुर**्ष:रे:न्तुब:पर:न्नेन्**रा** नेते:ह्नुत्य:क्नु:प्न:न्पर:दहव: र्मतायरे के म्या कु अही में र में तु कु कि मिर में में र अता हु . हे.पर्वेष.घषथ.ठ८.घष्टेष.त.मू.पच८.घथ.पच८.के. बर्ळ दे ने दे दे दे दे विष्ट्ष दे विष्ट दे विष्ट है के दे विष्ट है बःकेदःर्यं यः हे : बबया रुद् : बाह्येद : यदि : मुलः कंद : मुः बद्द र वार्ये या वि : रोदः यम्भवायायदेवाचेत्रात्र्यायाय्वादे विवाह्यते विवाह्या विवाह्य विवाह व ॱऀस्वॱकॅॱऄवॱज़वॱॻॖऀॱख़ॺॱॻॱॸख़ॗॴ॒ ॻॏॾॸॹॱॸॱक़ॕॸॣॱॸॸॣॻॱक़ॗॆॿॱॺॾॕॿॱ नर.कु.च.चळ्ळेला रंबीट.ज्र.ट.कि.चर.बेचेबेळा ब्रूट.अ.कुबे.त्र. वयान्ने ळ न्या श्रुमः श्रेमयान्द्वया श्रुमः छ नाः श्रूमः न्या निमानमः त्यः तर्गितः क्वुः वरः बहेर् तर्वे वापविः वा वात्रु वा वात्रः विषायिः वाधः ॔ढ़ॾॴॸॖॗॸॣॴॸॣॺॴढ़ॾॕॗॸॱॸॕॗॿॱॹॗॗॸॱॹॗॱ**ॺ**ळॱक़ॸॱॺॱॸॕॗॱॼॖॺॴय़ॱॿॖऀॸॱॿऀॱ *के.पर्चया.या.* झेट.री.पविरया या.पश्चिता.ठे.कुच.ग्रि.पखे तथा.च छै.री.ता. यदै वरः। जुल रूप हा स्वा है विद क्वा निवल यदि स्वा दि नि लकः न्व: तम् : केरकः शु:पङ्गं पवनः न्दः। व : श्रेव: क्व: श्रे : सं: न्दः चयःम्'नरुलःनङ्कलःनःन्**नुन्**रःसं'ले मनुन्नःसःलःस्यःह्वःनःन्नुशुद्धाःसद्दैः ···

म्यायात्वां ने द्वायात्वां म्यायायात्वां ने व्यायात्वां ने व्यायात्वां ने व्यायात्वां ने व्यायात्वां ने व्यायाव्वां ने व्यायात्वां ने व्यायाव्वां ने व्याया

ह्यास्त्र स्ट्रिस्या स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वयाया स्वय

 $[\]textcircled{1}$ (पूर्-रूर-पर-पिषय-भै-शून-पर्य-भै-शून स्थय-भै-शून-प्र-प्

② (র্অ'র্ম'র্ম্'ন্র'নর'জিন্'র্র্ম র্ন্'গ্র্ম'173)

मान्त्राम्यान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान् हराम्यान्यान्त्रान्त्यत्त्रान्त्यान्त्रान्त्यान्त्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्यान्त्रान्त्यान्त्रान

व्यापन्याक्षेत् भ्री न्यापक्य पहुंद त्या याव्या पान्ता मा वाव्य भ्री न्या व्याप्त पान्ता व्याप्त पान्ता व्याप्त पान्ता व्याप्त पान्ता व्याप्त पान्ता व्याप्त प्राप्त व्याप्त व्यापत वयापत व्यापत व्

नरुत.लट.धु.र्ब.राचश्चेत. रंक्वेच त.ज.श्चय.तपु.क्ष्य.नर्ष्यात. स्वाय. पष्ट्रवः त्र्यं रः श्रवः पर्देः ग्रुं गः क्ववः द्यः धरः त्र्युरः पदेः ते : के श्रवः तृ। ষ্ট্রীকে: 1815 ইন্-ন্ন-ব্রুদ্রনন্ত্র-বর্ত্তী-ঘরি-প্রি-ধেন্-মরি স্ত্র-বন্দ্রেরি: वर-र्राह्म अनुवादक अभी प्रत्नुव निवादि या वात्र मही पान विवास मते छेरा तम्र न सूद र्या न न न हिर शुरा इया नर दरा "ने दर्य कुं.स्र-१.१६८: चर्-चल्याय हे. इ. ब्रेटे च क्षुव-म्बेटे चय-र्मा विषयः पहतःश्चितः स्वायाः श्ची : बक्केन् : अंताः वेतः श्चितः श्चिताः श्चितः श्चितः श्चितः श्चितः श्चितः श्चितः श्चितः कुव स्व देर हे हे श्रे भाग द मेया प्र मेया प्र मेया है प्र श्रुव मा पर 지지 बेद्-यः द्वर-पत् नवा नुवाय दुर-ईव-दु-दर्श-पवायदयः द्र-सुवाहेः पश्चरत्रे.वियासर। पग्रायाया स्थापवा इयाग्वेराश्चायहेला चॅ :बा हुरारबा नेरायर हुन्या होया हे :चा रूरा बेरा :या है निया वेववा यदःस्यानः रहा यहः वगादः यवा हेर् वहे स्वातः वः र्रार्धितः बहु मृ . तु . तक वा धरि . व र . मृ विषा दुर . च र . या परे . या पा र . या प ञ्चन-न्धन-नेब-ग्रॅल-इन-क्रेन-बुर-ज्या ज्यानक्रुर-ज्ञ-न-न*विल*-पदे-**ଝ**୍ୟ.৬મু.५४.৮য়ৢ৴.ৼ৾৸.ঀৢয়.৸৸ ৻ড়.९য়.ঀৢৼ.৸ ৠঽ.८ঀ৴.ৼৢয়. गॅ 'चल·श्चॅर्-हे 'क्षेर'चल'ठर'द्रन् श्चेर्-ळेर अःबुर'**णर'** क्षेर-ळन्लालुः… गवलानिमा न्वी गमा धरा क्रिवा धरा विद्या वर्षा लट. वृथालव. बेवेथा थी. बेथा पुटानेबा सप्तान क्षा. त्र र. (क्रेट. ग्रीया. न्यल्यायते द्वेनः) न्न्रेन्याने सेन्या १ विषान्यता विरा ने न्या

ञ्च. पः मेड्रेयः यः दे रदः मे ळ्या य द्वः यहे देव दे र तरः मेने मयः य दुम

वसन्तान्त्रत्त्रत्त्र "ठू केन वि नत्न नि न्तु न्तर ने सु नारम वृत्त्व हु . पत्ने . प्रेत् . य मृत्व . मृत्रे या पर्वे . क्रेय . पत्ने . क्रेय . मृत्र . या घषलःठर्ॱबह्ये**वः**ग् चैग्वःशुःशेरःर्गुःधः सुरःहंग्वः कुः बळें 'र्गुरःषः' देवे जु वळव म्रोतःकृतः भ्रवः भ झ.ष्ट्र-श्रुब-२ब-५व-<u>स.</u>ष्ट्र-बेज-चपु-युज-क्च-२े.[.] चेळ-तपु-क्रु-तपु-क्रु-या क्रेब्र'स्टर'न्कॅला " 🛈 डेल' न्वलल'र'न्ट्रा 🛊 स्था हर पुरुटा "बॅट'स" मन्यासं केवासं वत्या श्चायत्रा भी मन्द्रा धिन प्रविव न्यदायी सुर्थासं रासकेन् नव् इया नृत्रेता थे नता है। जारमा नी क्षेत्रता न्दा वा नदी वे सक्दा र्दिल:श्रर्-पकु रे .लूर्-पद्गः तसुयः स् .च स् धेन नै र् द र् मन्या तर् भारता हु। दि र र र ना ता में र या के द र द र द्वा म् यात श्चिम्याम म्मून्यामिता हर्ना व्याम्यम्याम्याम् भ्रीत्या व्यया कर्'ल'चु अर्या प हे या प हु द्या परे दे में द्या पा मूरा अहु दाया हू 'यादे' ञ्चःवते ञ्चलः ञ्चः न्याया ग्रीः परः तुः गुराः पराया प्रायता परिवृत्रः ञ्चयः यः तार्यः तेः … भूर. बर्ट. त. के था वि. व्याप्त श्रि. येथा य विष्यः कर म्यू वा प्रमाण

①(देन:बेर:बंद:नवे:द्वेन्य:वु:म्न-ग्रव:22)

म.केर.लम.मकेंच्यह्च क्ष्या श्रीट्क. याच्या स्थान्य स्

^{🛈 (}र्र् प्रे क्रि. दड्ग व्य ग्राप्त र र 193—194)

②(দু 'শই 'ন্ন 'অই 'ক্অ' হম' হম' ইন্' ঋণ' ন্ন' ইন' ইন' 187)

^{®(}नेप:वेर:वंद:पदे:न्वेग्य:स्मृग्यदय:35)

मृत्यात्रक्षाः स्टास्त्रक्षाः महितः स्टास्त्रक्षः यम् व व्राप्तः स्टास्त्रक्षः स्टास्त्रक्यः स्टास्त्रक्षः स्टास्त्रक्यः स्टास्त्रक्षः स्टास्ति स्टास्त्रक्षः स्टास्ति स्टास्ति स्टास्त

चिन्। प्रतित्वा क्षाया । ज्ञाया । ज्ञा

1. ॺॸॱऄ॒ॸॖॱॸॕॺॱय़ॎ॓ॾॕक़ॱॸॖॸॱ। ऄ॒ॸॖॱऄॗ॔ॸॱॸ॓ॖॱॹॱॴऄॖॻॺॱॾॸ ॓॓**ॱऄॖॕॸ**ॱऄ॒ॸॱॺॎॱज़ॺॕॣॺॱऄऀॸॱ। ॡॗॱॺॎढ़ऀॱक़ॖॱॺॱॿॆॱज़ॸॕक़ॱॿॖॺॱज़।

第42. 43 2. 43 2. 42 3. 42 4. 43 4.

मुरुवा वी हित्य तु : ब्रोट्स्प वा चर्। ये : ब्रट्स क्रा स्ट्र व्या गुर्स्स वा वा कु देश थे पर्या द केंद्र देव देर देव पर प्राचित विष्य केंद्र प्राचित केंद्र प्राच <u> ध्र</u>ेर-८५५-एम्प्रियायायहेव। *७८-अ.*ब्र*ाय-५५व-३-म*ठेग-५**.५५** पराने द्वात गुर्या बेदारेया पा हेन परी ख्रून है। इन्तर बेर परा ॅ.भुपरा अर्मे व : प्रा : के व : यें : मेरी र : व ता रे रा पा हे प् : परि : ता अर्थ ता : ... ॱढ़ॣॸॱॿऻॹॸॱय़ऀॹॱड़ॳॱक़ॖॾॱॻॾ॓ॿॱॸ॔ॹऀॱॶॴॹऻॎॹॹढ़ऻॴॹढ़ढ़ ऄ॔ॴॱड़ॖॴॱॾॖॕॱऒॸॕॸॴॹॖॱय़ॿॖॸॴय़ॱय़ॸऀॱॴॸॱॸॕॴय़ॾऀज़ॱ**ॴॸढ़ॱढ़ॖॱॐॴॱॱ** यालेम में रायापर्यायं के दायं राम्ये राष्ट्रवार्श्वेद प्रमुद्दा स्वाप्टर स्व विगयाहे के न्मेयाल कुर अराया कि स्वा चा चा चेया कर है दॅर्-तु-ल-इन्न-ज्ञ-प-पञ्च-निवेश-पदे-छेल-पने-पदे-वेन पनिके छेट यदः क्षेत्रः क्रुयः ग्रीयः न् इतः व्या स्वरः त्रीम्प्राच्या श्रेम् श्रेम श्रेम् श्रेम श इयामुलाग् कर्रात्रावरामु अपिवर्श्वरायता द्वेरा ठता कर्राया हु द्वे विराप ॻॖऀ*ॹ*ॱॸग़॔ढ़ॱॸग़ॕॖॹॱॿख़ॱॸॣॿॱॻॄऄऀॻॱढ़ॖॱढ़ऻॾॖॕख़ॱॸढ़ऀॱॸॣॕॿॱॾॣॕॱढ़*ॹॗॸ*ॱॿ॓ॸॣॱॻॖऀॱ;ॱॱ য়ৢঀ<u>ॱ</u>ঀॱ৾৾^{৻৻৽}ঀ৾৴৾৸৾৾৾৾৾৴৾ঀয়৾৽য়ৢ৾৻৽৻ৼ৾ঢ়৾ৼ৾য়৾৽য়৾ৼ৾য়৾ঀৼঢ়ঢ়ৼ৾ঀ৽য়৾৽৾য়ৼ৾৽৽৽৽৽৽৽ तरीयात्वराष्ट्रियात्रा दे. र्वाश्चित्रयाः सम्बन्धियाः स्ता सम्बन्धियाः वर्षाः ग्रह्म श्चन्यात्नव श्चान्द्राप्तवेषावया द्वापति श्चायानेव में केंद्रे श्वीत WC.到了、其可如、可可如、切、目で、到、可其下如、別、口間上如、む、中心、方、方、下、 <u> ब्रेन्स्यन्न्ग्यान्दा। अभागश्चरात्वायाः श्चीः वर्दनः श्च</u>न्यं याद्यान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्य वित्रास्त्राम् विमातुः के समुब्राह्मण। ने रामहेवा में प्राप्तेत स्वा यदः तर् ने ने नि व र स्वयाय तुवाय श्वर से त्य के गाय है । क्षर त्या म्रोर-पुबर्देव्सं केरामह्म् न्ध्रित्वु कीर्मेषाधर वे स्पर्धि प्या ढ़्र-ॱदॅलः २ हेवःलु 'त्रवृष्णः वुष्णवःहे 'के'न् वृष्णः लेषः ज्ञयः पवः ह्र वा वृष्णः " <u>中華之:古書出之台と如東下、如果如為,華明大之。何,何如,之如,等也,美國</u> ব্রাবর্ত্তান্তর আইব্য "এইবান্বাবাতার্তিনা দু নের স্ত্রামর আন खे**र**ॱबळॅन्'ड्रुयःसुन्यः नित्रःसियःपदेःपरःदेरःकुयः ळंपःदे**ःस** ैर्चणः बु: बळॅम र्हे : हे : ळें र: बादे : बर्न: धवरा ग्री: क्रुव: मबि: घर: 'हे : बिम: ४ॅम: · · ह्ये.स. 1810 प्रं था.स्या.स्या.स्या.च्या.चारीया.सप्रा. ह्या.चारीया. ট্রবা *वैव*ॱश्चॅं सुरःश्चरन्वेनवायः सन्दः। श्चेत् :श्चॅंदः क्वरः न वरः अत्रः स्वरः स्वरः वर्रा ज्ञापामशुक्षायदे छे लाय वे हो "दे दे छे के वायगदे ज्ञेव छवा डे मिन्वर्थायका ह्रा हुर हिर का ₹ ¤4.7₹.1 ট্র-স্ল-মন্থ্যস্থ-র্মন্থ্যস্থি-দেই মথ্যস্ট্র-ইন্স-র না ガス、当りな、単く र्नेयर सम्बन्धाः कर् मान्नेयायाः केव संदि सक्रियाः श्रुयः मारी र विया दे याः । यं बाक्रेन् पर्दे [मून् ने 'ब्रॅं 'क्रॅं 'ब्रेन् फ़्र्न 'ने ब' में 'क्के 'यून 'ब्रूं 'तुन 'व्य**रा**' पन् अपन्त्र पानि सुराशु शुरा देवाया या सक्रियाया । देवा वा वि केवा बॅॅ्र-अ:ळेव'चॅ**ॱन्**गुट-ॅंग'डुग'ङुर-वेनल'सदे-झु'ऄर-बा्व**द'चॅ**र- वेनल**ः** वेराशुरुवदर्ग वर्राशुः यया देवासाय मर्याके मनियासाय परायान

यं न्वव देन ने हर दश्या नरा श्वापित श्वापित है दे हैं रे से से श्वाप **५व**.ग्री.पथ. इ.च. थे.च थे.च ७४.५८.च २४. मूट. त. कुब. त्रुप. चे.च. ४४.४ दुतरः क्षेत्रप्रकुर् सुन्य हे के र्मेष लेया अधिव न के न ने में स्याय सुत्रः म्राम्बिचेयाती वाषान्यस्याच्यान्यस्याचे यानी यानी त्यानी **बॅव**न्तुः ढटः यः पश्चेंद्रः दे : क्षुवः यह गृषः बुषः देव। वृः भेवः इयः गृष्ठेषः **दयःग्रुटः दंर**्ग्री :ययः द्वास्त्र न्वास्त्र न्वास्त्र न्वास्त्र न्वास्त्र न्वास्त्र न्वास्त्र न्वास्त्र न्वास्त क्रियाश्चीरावयात्मयास्यास्यायायां व्यात्राह्मयात्म् । स्वराह्मयायाः स्वराह्मयायाः स्वराह्मयायाः स्वराह्मयायाः केंद्रे म र्रेट के ब्रॅब ब्रेट ज्ञा चट तु र तृषा नर वट महा वहा निर्धे यह **रॅ्व**-५२ - सुकान्वान्यसुका वृत्र- चुन्-वायायन्न- पकारेन्- मृत्रेका ग्रेका ग्रा म्रास्थः हेव स्था विषय क्षेत्र विषयः क्षेत्र विषयः क्षेत्रः कष्टे कष्टे क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष् ন্মান্ত্রি বেরা প্রাপ্তির বকা নি বেরা কুটি বিলা প্রিরা একা কনা স্ত্রী অকা দ্বি বাদ **६. मधरार मूथा पश्चा प्रवास प्राप्त प्रवास है. धुव. क्र्या प्राप्त ।** द्वार्षियः राष्ट्रेया मुस्या "णेषेया गयपः विदा पर्ने अपः स्वारेयः ने 'कॅ 'कॅ 'केव् 'हव'" रा पॅरा हा नहीं वा मदि केरा महिवा हैव पक्षदः मुराद्वीरः ऋथः स्राप्तः स्राप्तः विष्णः प्राप्तः स्रव्ययः छर्। अधिदः मदिः यदः त्रीतः व्रक्षमः श्रुवः देवः यः वर्षः मृत्रः देवः व्यवः नवः म्। इया में केया वया वया ना निमा न्या यववर मी ख्रमा है। नमिर बतुवाह्मवास्तरकेताह्मन् वर्षा ने तहाताह्मवारा ततु वर्षे वर्षा बियास्य छराने देश्यायाने महीदाश्चिताश्चरम्य द्वराद्वरा द्वरा

①(₹མ་ឧར་ནོར་བུནི་སྡང་བ་རྡོན་གངན་३६—37)

क्ष्याविषयाक्षे अद्भन्न यालयाञ्च न्यश्चायति क्षयास्य हेन ने ने संस्त्र याकः दे.हेर.ग्रे.र्टल.घब.र्टा, के.घबा के.चथ.घब.चंट्य.इय. য়ৄ৴৻ঀয়৽৻৽৻৴৻ৡঀ৻ঀয়৻য়ৢ৴৻য়ৢৼ৻৸য়৻ড়ঀ৻ঀৼ৻ঀয়ৢৼ৻য়ৼ৾৾ঀ৻৸য়৽৽৽৽ त्तुःचकुर्-पदेःळेलानकुःम्बेलानरःने :संदे-र्याधुम्-ते :ळंदासुःस्विर्···· तह्रवारान्वदाया मृहवाळेग्यान्ता कुनाम्बेवार्यायाया <u> नञ्जला महोराञ्चल इंदरञ्चल ग्री छिर वे नहार मात धेन र में दहार देवा</u> कृ के दारि पत् नाया हे रापदि पर या में या में ने ना दे हा पकु ना परे के या गा नश्च-मृत्रेयानेवायाने प्रमिति श्चित श्चारम् नर्मात्रस्यान्या र्ह्या विषयः कु वाह्य ही द्राप्ती विषयः वाह्य वाह्य विषयः त्रुवा:यॅर:श्रेट:श्रॅट:केव:यॅरा वारोर:श्लव:श्लेव:यदे:चगाय:धेवा:दवॅदराः **रॅव**'के**र'**हे'वै'वें'वेव'ड़व ग्रे'कें'यं'२६२'ख'यठख'येपया "Û वेख' न्याया प्रति व दर्भाषा मृत्या द्वा के किया प्रति । अवादा ह्वाया ह्वाया ह्वाया ह्वाया ह्वाया ह्वाया ह्वाया ह्वाया संनित्यः हृदं नित्येवर्षा इयः वरः वरः। "कुयः वदे : अर्डेनः त्रिंतर प्रते श्री र विषया श्री विषय में त्री से श्री श्री र भ्री र त्री से र त्री श्री र से र त्री श्री र से र मॅद्रायापनाहे केवार्य देशन मृदि पठद्राय संयया ग्री द्वार्या द्वार्या स्वार्या *न्रोर*-तुब-तु-पह्न्न-नुधन्-चुक्-तु-खन्क-र्ज्ञल-नून-अनुक्-केट्र-। **ळ.लट चक्ष्य.त.पर्य.लूट.५.ल.जु.चट.जु.श्रु.शूर. ट्र्याय. येवय.रूव...** ल्ट. ह्र्य र.१८. तश्चर. तश्चल. व्यापद. र्चाय. च वया विचा च देया हैर. **नष्टुन** गरोर क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र त्राय रोर त्राय त्

⁽दिन वेर बद्दानदे र्वेग्यासु र्वृग्यास्य 23)

वेपला "क्षेत्रान्यल पास्राहेराहें द्वेदान्नीराहें वेदान्दादला **ሻ**독: <u> न्तुल न ठरा कूँ न अरल ने ला</u> इर ने बा इर न् बा केर न हा बा बर्।विश्वतः हूर् श्चर् श्वावारी इत्याविषात्वे त्यर् क्रा वर्ग स्थरा वर्ग स्थरा वर्ग स्थरा वर्ग स्थरा वर्ग स्थरा बक्रवाःश्वयः द्वयः ववयःश्वे द्वितः द्वः बक्रः मः हैः यदः दः नद्वयःश्वे ः क्षेत्रः . तु.प.तृष.नृष्यः ष्वपः प.द्रे**ययः ग्वरः** नः क्षेत्रः भूरः प्रे प्रे ष्यः श्रु रः व्यः । । ष्ठिलु विचार्त्रा देवाशुर्या् ≩राद्रवा वयाविच मुःशेर् गरा उ.चयान्डेम करासर् छ। वरा न्वयः म्राप्तान्डम् करासर् या म्बर्यार्थाः र्थरः नहमा न्ध्रनः विषा यसन् हेन् खे हिता है या केन् महिता विषा मवरामः ध्रीतः वितरावश्चा इव व्याप्तः वे । हरा वै । देवा ह्या ह्या ह्या ह्या ह्या मवरामवन न में वरावराश्चामहरास्वरा के स्याधिता है। स्याधिता है। र स्याधिता है। शु.रद्रा. लूर्। ग्रीय न मुन्य म मे छ्या महे ब. तह है . सर श्री नाय. मह्ना हु न्वदःया थे सर ने हुर रेंन् स्व कर अर्द व्याधेव पति कुर श्रेन महिला है 'के लिया वेग या ने 'वया है 'या 1821 मन्' द्धनायाः श्रीताः प्रप्राञ्च ता न्दरा प्रदेशक्ष्या ना विष्या हिरा विषया नशुक्र-तु-शेर-श्रु-तन्-न्द्र-ह्र-श्र-त्र्यत्र्द्रवर्गः विन हें श्रुव् श्रीट-र्द्र-शेव् न्व'यळॅग्'व्यानम्य'र्स्व'द्रयान्युर्'न्युर्'न्युर्'न्यु विनःगरायः गर्श्वारयः व्यव विवः कर् है स्वरः ग्रुयः येगवा क्रीरः यः नवायः <u> ज्ञाबार प्राप्त प्रमाय प</u>

^{🛈 (}इब बर इंद सुदे छेट व वृग् ग्र व 37)

र्क्षिः वर्षे द्धर् श्रेर् र्व्य पर् रहेषा न् वर्षे युर प्रक्ष বপ্তৰ:মা त्यायम्याः क्रमः अर्देषः विष्यं मृत्रेयः महाव्यः महाव्यः सं स् निविषः मिरः व्यः । केव-यदिः निर्वरः क्षेव-दुः क्षेव-पश्च-दिन्यः है के-दब्बियः ग्री-बु-प-हन्यः · · · च्व-सर्चिव-म् कैन-मु-सुत्य-म-सूर्य कें स्थेव-म्ब-रेव-र्थ-क्रे-व्याग्रूर ने दें ब ब्राम्य के ब र्यं र मारी र पुंचा तु पहुंचा न धन पु प वृत्त विषा ग्री पु प्येना न्दः मठलः वृद्गः मृत्या व्याप्य वित्रः वि बहुव ग्री क्षेत्र हु पर हु सारे निया हु सार हु ना श्री सा हू ना है । सारे जा सा है । सारे जा सा है । सारे जा स रॅंद-स^{*}२व८णके विशया हे केदा छेर हे 'दे 'दे या ग्रुट 'हुं वया य**र्ह्स्य'** ग्रुं .सर.सु .स्वाया रुदा र व्याया व्याया या पाविदगुदा व विवाया पाट केव^{्रे}व-भॅॱकेॱवयाग्रद-भॅन-ध्रुति लु प न्द-समुव-पति-सद-मु-न्य-ध्रुर-दे त्र हो या अध्य प्रवास्त्र केवा ये गानिका विष्य क्षा ग्राम हिंदा का मादा 회.고찾시 के'न्द्र'यदीय'पदी'मेंद्र'याकेव्'यॅर'क्रव्'लु ते'न्य'हे'ड्वारा'हुयाह्रा'नः '' नतुवःमदेःळेषानुनःन्गुदेःनुःद्वंषाञ्चःळनःनेषातत्वानञ्जुन्यः 🛈वेषः न्याया प्राप्ता में मार्थित क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र महीय क्षेत्र र्यद्र:<हिरयः नवयःश्चः नन्वः व .व .व .क .क . म्ह्रा की . प्रः विनः सः यदः वे .. त्रितः न्तेवः मव्याद्यः प्रवः र्यः र्यतः प्रवः म्वः क्वायाः विदः स्रवः नम्दःक्षरःद्वःश्चलः इयवः म्बेरः त्यः नहमः न्धनः म्वरः न्मेवः स्वयः गुद्राच वेग्रायह छेदारेद सं छे अळेवा गुरा छ ह ह ज्ञाय द्रार्से वर-रिथ्याच्या विश्व स्था स्थानिक स्थान

①(ব্ৰ-নুৰ-প্ৰ-ন-ৰ্শ্ গ্ৰহৰ 36- -40)

रुषः केवः केवः नवितः तुषः पहना दध्रः वर्षः नः कुरः क्ष्रं रः केषः यतुवः • • • *वैवाववान्येत्रः* तुब्रः क्षः वान्यव्याप्ताप्तः व्याः क्षे स्याप्तः वीः न् वैवास्तरः यानश्चरा इ वा मुला वरा में रा वरे तर् हारा पति में वा ता पता हैं है वा रार्या । वता स्थापहरूचन्यातः स्वाधिः ह्यार्मार्मराष्ट्रक्षाम्यार्म् पत्नवारा ग्रीया न्र न्य च्या हो स्वाया हा खुया के । वा न्दा क्या कुया र्गे.क्ट.क्र्म. वेनया नरुयाचेयाचेयाचीयाचिताक्रम. श्रूमया क्रिमया स् ८**तुगः ठेटा ग**रोरः सुयः न् गुगः द**्वः न् ह्राः ग**विते क्रॅरः इयः इरः वरा 1922 रॅन् रमचुरामङ्गामदेग्हान्ते छ नामहा ष्ट्रं नेता "ने त्या हे प्रताय गुनाम ने महा केन पेन प्रें के नेंद्रा श्चिरःवराकेराकेनरान्यावश्चराने सक्षराध्याद्वरान्यात्राचराने सुरा **बतुवातुः वे**नवा नवु बाब बावदावया श्रीनेदारमा अथा नवा इया बावे वा युर्- वुंब-हे. कु रूर् हा र्यंब-इब-कुल-पर्व-व्रंब वहित हुर-धेन **इयसः दयः सं** रसंदे: च्रदः दृदे हॅ सः सुः हॅ वृयः वृद्यः स्वरः स्वरः स्वरः विवाः विद्ययः । *चुर-वर्ष-वॅन-भेग-वे-थळ* व-इ*र-घठरा*-झेरा-पर-*क्षेव-क्करा-वरा-वर-द्व-***छ्या** तळ्ला त्यत्र म्या अरा ह ह न त्या यळ्त्य चुर म्या अरा से न्या वर हु पर्श्वनः हे या महाराष्ट्रं नाया क्षराया कर्षाया वाह्य ना वित. इ. मश्चितामद्वार में व. क्र्या श्चिताया श्चिताया र्या तावा मश्चिया मश्चिर्याः मति केना वळवरा शु त व ज्या न व व व र धु मो त क ता सव महा व र ह न तपुरस्य प्राप्त वर्षा वर्षा

बे:ळवाकेन्-परामुदान्धन्यवित्यरावर्षन्।यावर्षद्रायरावर्षेत्।या क्ष. बदः वेथा बश्चरः क्षेत्रः यंत्रः यह्नं स्तरः यह्नं हें म ∄गया व य। वया मृद्रा सुन् मुने वया प्रकार के वार्ष के न्द्रा के न्द्रा वे ने वे वर्ष निवा श्ची. द्वा : श्वादा श्व য়**৴**৻য়য়৻য়ড়ৢ৻য়ৢ৽য়ৼৼয়ৢ৽ৼয় त्विन्द्रंद्रः व्यते श्चित्रायवा दुः पष्ट्रं हेरा म्रोत्रः पुवा देव वि हेदः दुः बर्ह्न-त्र्युषानम्दान्दिः व्ययान् विषानी व्यत्तु वर्ष्य स्त्राच्यान् से स्त्राच्यान्य ঀৢॱঀঀৢ৽ঀয়৾৾৽য়ৢ৽য়ৢয়৾য়৽য়য়ৣ৽৻য়ৢ৾৽য়য়য়৽ড়ৼ৽ৠৢ৽৻ৼৢ৾ৼৢ৽৻য়য়৽ড়ৼ৾৽ঀ৾ঀ कॅर-तु-पक्षु-बेर्-द्विय-व्यय्यम् हेर-रॉब्-य्याकंट-वार् मृद-प-र्टः… न्न्-पर्वः त्यरः स्रे वितः तुः कुषायरः श्रुतः ७ विषः न रायः यः र्षे न्यः **दॅश**प्यहेंद्रालु :देश*प्दा*। यहेद:तुशप्याप्य देंद्रप्ट्रे**राःशु:५००।पदेः** बर्दर् क्षें र ग्राप्त पश्चाप ठरा र हो या व्यन्त हु या सु य ग्राप्त विषा ह्र या सरा वदःयविदःयवे ळेण द्वाहे यहे पविवाद्याय वी यहे क्रिं र <u>ٷ</u>ॱऄ॒ॸॱॸॕज़ॱक़ॗॣख़ॱॸॻॺॱ"ॿ॓ॸॱॻॱॸ॓ॣऀढ़ॱज़ॸॱऻ "**.....**ॿॖॱॻॱॸॣॸॱॺॕढ़ऀॱऄढ़ नर्डे ॡ 'हेद'कुष' नदे 'अप्र'र्शेर' ऑप्र' निर्वेर सुष्ठा र शुष्ठा प्रत्ये व स्वार्थ कर स्वर प्राप्त कर स्वर प्र য়৽য়ৼ৽৸ঀ৽য়ৢঀ৽ৠ৾৽য়ৼৼয়৽ড়ৼ৽ঀ৾৽ড়ৼ৽ৠ৾ৼ৽ৼয়ৼ৽ড়৽**য়ৼ৽৻৸৽৽৽** व्र-क्षेर्यः थुर-श्रुःक्ष्रः याञ्चे ।याञ्चे नायः या**ञ्चरः ययः याञ्चरः न**वेर-तुब-त्युन-वर्देव-ब-इक्-ग्रुट-। क्र--श्वर-तु-त्युन-च-क्र-तु-नक्षेत्र-नथाः अवः हितः अवः नवः अदः न यवः नः हेत्या नः हितः स्तिः हितः प्रतः । देरःयहेवःक्षयः वरः त्यः दः चलेरः तुः अः त्शुवाः यदे वः व्यवः यदे वः कुलः

पर्वयान्नीयः प्रत्यान्त्रवा विषयः भ्रम्यः प्रत्यान्त्रवा विषयः भ्रम्यः पर्वयान्त्रवा विषयः भ्रम्यः पर्वयान्त्रवा विषयः भ्रम्यः पर्वयान्त्रवा विषयः भ्रम्यः पर्वयान्त्रवा विषयः प्रत्यान्त्रवा विषयः पर्वयान्त्रवा विषयः पर्वयान्त्रवा विषयः पर्वयान्त्रवा विषयः पर्वयान्त्रवा विषयः पर्वयः विषयः विषयः पर्वयः विषयः विषयः

प्रमा विच्या महित्र मित्र प्रमा विद्रा मित्र प्रमा महित्र मित्र प्रमा मित्र प्रमा महित्र मित्र प्रमा मित्र प्रमा

①(ব্ৰ:মুব প্ৰ: ব প্ৰ: গ্ৰহৰ: 60)

कुल पद लट्येन क्षेत्र न्या क्ष्या वित्र प्राप्त क्ष्या स्था वित्र वित्र व्या क्ष्या वित्र वित्र व्या क्ष्या वित्र वित्र व्या क्ष्या वित्र वित्र व्या क्ष्या वित्र वित्र व्या वित्र वित्र

मः स्वे त्यत् क्ष्या त्यत् वे वे त्यापा त्या क्षे क्ष्या श्वी वि या व क्ष्या क्ष्या व क्षया व क्षया

① (青不) 五下, 其中, 到 五 如, 69 -- 71)

য়৶৴৽ৡঀ৽ৠৄ৾ঀ৽৴ৄ৾ঀ৽ঀ৾৾৾ঀ৾৾৾৾৽ড়৾ৼ৽৸য়৽৸ড়ৢ৾ঀ৽য়৾য়৽য়য়ৢ৽য়৶ৼ৽৾ **ळेव'**अेर'हे'वे'ग्डंर'रु'धेर'यॅग'वुष'ळॅग'बेव'रॅग्रा'ग्रे'क्रॅर २५ॅर'''' तू 'यदे 'त्र खदे 'हु य सू रेया य हे द हिया तु व मव रव व या मवया द्धंता:यञ्चर:तपु: वितु:वातु:यांचेतर:त्यानु:कंद:यद्देशताःतर:पह वा:पः: ุกฏิสานา| ผิายะาลิาธัราสิาฐากละาลูสาฎๆสาฏิาภูาศุสะ कुलाब इव इवायरायह गार्धर हैं वहरा देवा हैरा दूरले ते वा ब्रुयः श्च.पव्रियः अर्थः वृत्ते त्रे स्ट विष्यः त्रे देशः यः क्रेरः यरः स्टरः विषयः। ळंटॱअॱॸ्षतः असु 'धे 'ॸटल'ॻॖै 'ॸ्षे 'अळव'तु 'अ'चु*ट*'म'ऄष्**षा ' ' '** *न्वरा* ग्री :श्रृव् . लु . ५ ज्ञॅ र . धर . रॉस् . श्रृप्या . भेव . तु . व्यान्न्य . ज्ञूर कुटा। ट.जवाह्यजाश्चराम्याजारुवार्याचाराम् वर्षाः क्रान्यम् क्रान्यम् क्रान्यम् क्रान्यम् क्रान्यम् क्रान्यम् क्रा **ग्री:भ्रु:पङ्क्दाम्हम् हॅ:**देय:ळ:ळट:म्हम् डी:दि:प<u>न्न</u>रासेट:म्हम्: न्ता रगन्तरायहवान्यवार्द्धवाविषयामु वह नठवार्था वर्षा ड्रम्या सर्वे द्राप्त हैं स्त्र हैं Ba.a.a.2.4.9.8.2.8.2.1 \$2.8.2.4.8.420.000 <u>ब्रेल ग्रे 'विया यह मान्नेन प्रमें का ब्रुमा अस श्रुप्त में मान्तु भी केरावया प्रमा</u> ≆৸.য়ৢ৵.য়ৼঀ৵.য়ৢৼ.৸ৄৼ**.**য়ৢঽ.ঀ৵.৸য়.য়ৢঀ৵৻ৼৢঢ়৻৻য়ৼ৻ঀৢয়৾৽ঢ়য়ৢ**৽৽৽৽ बयःपः**र्श्वन्-र्वेषःश्रदःबुदः। हुःयदेःन्नःयःठदःयःपञ्चयःकुदेःपग्वः

ल्य रटा इर लया महारा राजा श्रम्या स्माना स्मान स मृष्टेयः केन् व्याम्या मृष्टेया स्वाप्तः स्वाप्तेन् स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्व मृ त्यते न्ना व्यते म् र्यं न र्यं न र्या व्यापः र्यं या या वर्षे या ने वर्षे या वर् इसाम्ब्रुयायाने देवास्वाम्यान्ता श्रम् ह्या श्रम् ह्या स्वराह्या स नक्षः तह्मा ग्रीया वेया श्री वेययः ग्रुटः वेया यहिं च पगातः देन हुनः मुंदःशुनःबहुगःसुनयः वर्गेदः केदः यः यनः श्रयः ययः छेदः नः। दुः ईन वि.क.विव श्र.रवा.श्रर.श्रे.प्रथ.वया.व्या.स.श्र.क्रव.त्र.क्षेवा.पक्षा.रंबी. ध्रमाया सुन्या स्वाप्त विकास स्वाप्त स **षट्यः** तहेवः श्रॅनः त्रः पः सः पदेः क्षेत्रः केतः वित्रः वित्रः वित्रः यातः त्यतः क्षेतः । । । । वेममाह्या "सुदामदारुदादमामोरि हुनाईदाईदार्द्दानिदा हून्यदे ञ्च अते : ऑप्ता नहीं न न में प्राप्त के प्रा निन्ने बु शु अ है पि ही दिया हू पि ते हु अदे से द्वार में दि है न पि ही का राम प्रवादिता प्रवाद स्वादि । विकास व पह्रव.त.मु.५. (श्रुं ल.श्रु.) तह्रवाद्यत्वाचे नेवानश्रव परे मु वहेका **ॅपट्यानहें वास्त्रमाय में जान में जान क्रिया के जान क्रिया के जान क्रिया के जान कर जान कर जान कर जान कर जान क** श्चॅंगळ म्ह छे पश्चेर र्मेश श्चे थेनल श्चरा "@ लेल रहा दे निवेद ष्ट्र-पदि:ञ्च-बदे:नशुरःवय:र्शन्यःग्री:क्रॅन-पद्-क्रुन-क्रॅन-बुजः ५५न्। ५देः -ৡ৴৻ঀঀয়৻ঀ৾ঀ৾৻য়৻ঀ৾ঀ৻ঀৢ৾৾ৢ৾৾৺৽ঢ়৾ৼয়৾ৼঢ়ঀৢয়য়য়৾ঀয়৻য়৾ঀয়৻য়৾

① (दॅर:सुवै:श्रेट:य वृष्ण्यरण:77)

② (ইম্র্রি:ইম্রে:ইল্ল্র্মের:87)

वृत्तः व्यात्वेतः त्रित्वः यात्वेदः त्रायः युः व्याद्वः त्रायः वृत्तः वृतः वृत्तः वृत

प्रत्ते त्राचन प्रत्या के का संदेश मान त्र के के मान का का स्ता के स्ता के का स्ता के स्ता के का स्ता के स्ता के

① (ইম্ইম্র্ন্র্ম্ন্ত্র

② (ইমাইমাইল গ্রম 94)

८वर्वर पर्व

घट. चे. चे श्रंपा. में त्राया श्रेषा श्रंपा चे चेया । क्रंपा क्रेपा पश्चित पश्चित । য়ৢঀ৾৽য়৾৾ঀ৽ঀৠ৾৾৾৾৻৾৽য়৾য়ঀ৽ৼ৾ঢ়৻ঢ়ঽয়৽ড়ৢয়য়৻ঀ৸৽ঢ়য়ৢৢৼ৾ "गनुन व्यापरः व्या वी ज्ञाना न र्रा रा प्रकृतः परिः पर्ना मिरिः स्तुः पक्रतः (क्षे वरः प्यारः । इते.रे.वुर-वेपया घ्वा पर्मेया वुप-र्परः) या क्षेत्र शया रूरा व्यान्त्रेवावायराय वर्षायवा व्यवहरायहार्षायव्यायारावञ्चया " दे वया हूर सिर हिर व्यापा क नवर। श्रूर धर वेरण हें व ग्रीया "मुल-पर्-संलानी ने तर्पका हा सेपका पान पर्म ह्य ह्य र के द में र्वाद मद्राध्याम् वाक्रायाया महाम्यारा व्या मिना पुरामहा अर्था व्या শ্ৰথ. **ई**ल. १े**द.^हंक**. च. ८८. चठवा ४ेचवा नशुः चर् वत्या लुवा चरा स्वा **ब्रॅन'न्र'र्स्नारा'तर्म्यान्नन्र'व्रॅन**'र्स्चन'र्स्चन'र्स्चन'र्स्चन'र्स्चन'र्स्चन'र्स्चन'र्स्चन'र्स्चन'र्स्चन'र्स्चन पश्चरता " ने वता व कव ने नि श्वरापर पत् ग्रा श्वर के से दे न प्रा शु थेनतः वता बर्द्धन् क्षें इवका शुनः नसूव ने 'कुनः वळव न न ने वः छेटः नु रः…ः वदःचलु ग्रालगः अर्द्रा यदः ने व क्रियः हु गः में श्राकरः " दरे ने व हिंग बर-सं-सद-क्रेब-सं-रिवल क्रु-र-सद-विवल स्थल सुब-ग्री-हेब-दसेल-तु-वेमरा सवा नु दि दि स्परी द्र त्र ति रा वळे ग् द्वव बदे । इर् ब चर् यधु. में या. भे. में . चे . च ता अहता में . च या राम अवरा ही . में . म . प च या . में व . में . बर्दर:धैरा क्रैमयः मृंगः तुः येनयः वः वेयः भ्रुः वनयः वे वेवः व्वः वयः क्षेत्रालु मन्दरमा ह्रेराया में दर्शा वर्षेत्रा युद्धा स्वा प्रदास के वा स्वरा स्व

चक्याःविषाःग्रीयाःचविषाः हे : श्लाः मिदाः अदि : क्षेत्र : क्षेत्र : क्षेत्र : मिदाः मिदाः अवाराः ग्रीः नक्षाने<mark>का</mark> थेनवा ग्रेवा क्षेत्र कषा सुर्वे स्वासुराविदा विदानसुरे यतः ... विवया नेकेन मित्र श्रुम्बन खुम्हें यो न्द्रम् मिन् विवय व्यय प्रव ब्रेश्व. यू ब्राय. केट. व्यय. पश्चर. पठर. पर. शि ब्राय. यू ता. पव्चे द. की. वि. पत्र न्या है 'हॅंन्'न्र'पठया ळें अया ळेव'नु 'येनया वया पत् न्या दिनः........... क्रेव्राप्तिः न्यं व्राप्तवा न्यः । ज्या प्रवास्त्र व्या व्यवः र्वेरः यमें दः दे। नगादः तक्षायः पर्दे . या वा या प्राप्तः होनः स्वा . युः पर्वे या । वा या या परि । पर्वे या । त्र्रात्रार्ग्याय वेरातः हेलः मु " न्यं द स्वातः हेद । तः वेरात्रा " वहता स्वा र्वेन्वायायहर् र्झे शुपापसूर्व केववापश्चराग्री स्राध्यार्वे वापना वी तेरः ইঅ'ঐনআ "चन क्रिंग हैते वक्ष्यय वया सं चट केव सर न्यय पश्चरःग्रेयः दावा श्चेदः न विवायि वर् ह्या । च : वि : क्वेयः श्केदः केवः सं । विवा पञ्चवराःग्रेराः पर्वापरायम् अतुवाह्या ञ्चवाद्रः प्राप्तेवः पर्डेल'पठरा'पश्चरता दे'द्रश्चल्य'मृत्रूर'र्झ्'पश्चर्'र्द्र'देर'द्रर'व्य'द्रव्य' क्षेत्रतायतान्त्र्यान्ते स्वेत्रता चुब्रवातु स्वेत्रता "के मुदे स्वाह्म दूरः पठलः मृतु दः क्रॅ 'सु दः क्रॅ मृताः २५ 'लवः मृतु दः पदे 'लदतः नृरः रु 'सेनतः " विश्वयात्वरायम्याविद्या मृत्या श्रदे हे व तह्ये या हिन् सर उदा या नृत्ये द्या हे स्वयः मुद्रः (नमुद्र्यः) यु स्ट्रेदः म्वयः अद्गिष्टः मे हे दः म्र हे स्यम्यः "ने न्वरा म त्रेया कुरारा मासुया ह वा कुला हु तिह्वा न् ग्रुरा में राया केवारा स्पु प्र-विद्याः विवारम्बत्तः पश्चित्यः विषयः विरायः विषयः विष्यः विष्यः ब्रीट-कुव-गर्डग-र्टा व्रेट्-झ्-झॅ-ग्रुट-इॅव-बर्ट-झु-वरुरायर-ऄॳ. चेल. वीबेथ. श्रुंच. चश्चेरयाचेश. बीचेश. केर. खे. पूर्टा पृष्टी पा. चर. खेनया. • ঢ়য়ৢ৾ৢৢ৾ৢৢৢৢৢয়৽ঽৼৢঀয়৽য়য়৽ড়য়৽ৠৢ৽ঢ়৽৻য়য়য়য়৽য়ৼ৽৻ঀঢ়য়৽য়ৼ৽৽৽৽৽ नमॅर्-तल्लाम्बर्रान्याः वर्षाः ঀৢ৾ঀ৾৾৽ৼৼ৴৾য়৾৾৻য়৾ড়৾৾ঢ়য়৻৻ঀঢ়য়৾ৼৼ৾ঢ়ৼঢ়৸ড়য়য়<mark>৻৻</mark> ळे*व-क्रेट*-य-ग्रीन्-वैदे-सु**व-ळ**ग्य-शु-वेनय-य-न्**ट-। केव**-प्रदे-श्लु-ळंन-অয়[৻]য়৾৾৾ঀৢয়৾৽য়৾৾ঽয়৻য়ৢ৾৾ৼ৽ঀয়য়৽৻ৼয়য়৽ঢ়ৢয়৽৻য়৾য়৽য়য় 型乙. बः क्रेव् ॱघॅतेः नव्दः क्रेवः देवः वदः ख्रयः नत्तेः न्द्रयः घः नवदः विदः ग्रुः व्यापः **₹बबः हे गवः ग्रे ।परः ऋवः रूं ५ ग्रे वः न्ह्री गवः ह्रे वः पर्दः सुः बरु वः रु। विदः** य.बक्र्म.च्लेचेय.चेरेब.क्री.क्रेट.चेय.चेल.चेर.चेच्चेयेय क्री.चेचय.सेय.... नर्श्वमात्रान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धाः **५८**। अतुः विनयः के स्थितः इतः से वः से के स न्दः। यद्यातहेवःकेः वर्केणः श्चेदःया सुदः। नग्नदः ह्वं वर्षेण्यायः खरामबरायेषायदेवापराम्बेरकाशुमङ्गेराधते महोताये मान्ने स्वाप्त म्न.र्वेरय. येथर.री. कैय.च विराधयाच्याच वात्राच विराधायाच विरा नर्वदःयंताताः केटालंटताता व्याप्ताता दूरः मदे श्व अप्यत्य । देन् व्यान्व व्याद्य पारा हेन् मी ही दर्श मान

ট্রিমন: শ্রী দে শ্রে: শর্রা ধ্রম: শ্রু বাব: শ্রু বার্টা: শ্রু: পর্য: প্রথম: তব্ শ্রু: र्षे'वयापरे-क्रिन्'ग्रीयापळ''विदा। ळेंबान्दार्शेन्'ग्री'पर्धेनापासुवः **ळॅ ग्**रामान्द्राज्ञुराशु शुक्रादा म्रह्मिस होत् हिता त्राया वर्ष र्षेत् :ष्रयानवः ग्वेतावताञ्चयः शुः छित् :शुः नद्ग्यतः मः वतार्दे :यर्करः सत्ः " चुर-वै-र्-वे-अळव-अर-पॅ-अरॅव-शुअ-तु-चुर-प-र्-। रर-पवेव-**ॡ॔गलः तुनः ठेटः।** ५ क्वां क्वां न क्वां नुःतयन्याया इतःनुःवयः क्रयः श्रें नातर्वे व मेयायः न्ता वृःयये श्रः ब भु में र बबा बळें र पदि हे द महाब रूट हे र हु र हु र छै र छ र विवास ठर:रॅ:वेष:यर:यहेवा वेंद् यय**रष:ब्रु:**बेर:**यबष:ठर्**:ग्रैष:बर्बर:य: न्दा वेंत्रायाचंत्राधीताधेन् केत्रान्दाव्यानुताचे म वेगा तु वेंता यतुत्रा न्य यो भि मि भेष ना नर्या न्या मी क्षेत्र न्या के पहिला भी अहर ना केता म् निर्मेष नपु कुथा चिर्या सिष -शिया क्रुबीया नपु -धेषी स् -धे -लपु -स् -चेर **ळेब**ॱ४ॅन:४ॅब:५**:४ॅ**व:५**:४ॅ**व:५५ व्याप:वय:७ेव:५५व:ग्रे:२८:ळॅव:५२ॅव: *** न्दः देवः ग्रॅं 'लः ददन् केदः। यहः क्रेवः खेरः हे 'वैः क्रवः वरा म्रॅलः मः नहनः केटः नरे वः क्रूं नयः नहूँ न् सं स्वायः शुना नहूँ वा सं हः लदे सं छ दः र् अक्टर तरु. ये ८. १ द्रा स्वाया स्वा द्रा हे दे र द्रा हर दे व सं के दे बर्चन्तु। नेबर् ग्रे.रिवानाचयाहिन् ग्री.वस्व विराह्मवास्याया लुका चुरायर। देरावका भेवा तुर्म बारा श्रें स्वा केरा विराहा त्यते हा **बदे** : ह्वयः क्षुनः बद्दः ्र्रंयः ग्रीःच **गृदः धवः धवः दवः देवः** यः केन्ः तुः चन्-ग्रीः…. ष्यरायवासवागवा कवातुरे ष्यापवातु हुमा सम्मान् स्वास् इया अर्ग्या द्या ५ मिटी ज्ञानाम कुन्यते छे या न कुन्या स्टाया

इतः हैना हु हु ता हु न में हू न परि मत विर सरतः न र्से ता हैरा गा नम्तः सनः व्यानहरः नः भेव। धरः हिर् सानक्ष्यानवैः नम् विकासवैः ढ़ॆज़ॱळज़ॱॹॖॱळॕज़ज़ॱऄ॔ज़ॱय़॔ॱय़ॖऀॺक़ॱॻॖढ़ऀॱक़ॕॖ**ज़ॱय़॔ॱॸ॒ॻॗॹ**ॱয়ॱॺॎॱॹ॓**ज़ॱॿ॒ॸॱॸ॓**ऻ तुर-तु-हेव-कल-इव-ग्रद्य-चेल-पदे-कु-धेन-सव-**गव-**ल-**चें--पशुर----**चुराः विन् । ने निरादचें राक्षे रहुताः शुः हिन् वरा वन् ना निरा**वर्षेन्। अवसः** तर्नरः हुषः हु न्दे नेवः रवः मॅटः नुः तथेयः वदेः नुवः धेवः यव। देनः वयानश्चरयापदै नग्तर देव हेया शु द्वा पविवासर श्वेषा मुकेर प्यव **५व**.ग्री.प्रवायात्वाच.पङ्गवाञ्चया वे.श्रयात्राचीया वे.श्रयाचीयां वे.श्रयाचीयां वे.श्रयाचीयां वे.श्रयाचीयां वे.श्रयाचीयां बिटा कुषाया नृदा अुष्तर कवा दिवाया सम्मार सम्मार विद्याला सम्मार सम्मार सम्मार सम्मार सम्मार सम्मार सम्मार सम्म नदे नन्तर या नन्तर के। वे में राय मुला के र पु सन माधे दा श्चिनः नरायासं न ने राप्तरे न मिया ह्वा क्षे अते न शुक्षापते के राप्तु न या *ढ़ेब.चुचय.त.जुचय.तऱ.चेथच.*न*ेब.*चीच.इ*ब.*खेचथ.झॅल.नडुच.ग्री.श्ल. प्रिते त्रान्ये वा स्वाया या वाहया न्या के 'क्षेत् न व वहा नि वाह्य वाह् वयाम्राम्यतः चवराश्चियाचयावयावव्यवाश्चवान्ता श्चिर्यत्रेयाः रहता नलु गरा वि "केव "कॅदि में दरितु "सु ता नदि "हॅ ग । व नरा जुद में "हे दे । व रु द जु । Àन्यायः पर-पर्वेदयः वृषाः पढ्नियः तहन्यः चैवः दक्षयः । न्यवदः क्रेषः विदः वयान्तुःप्राद्रा श्चाचेत्रः मृत्रेयाञ्चेवायत्यायहं नः यतः ह्वार्स्तः क्रन् तेव ग्रीकार सुवाया पविवाद सुन्ता सुग्न सुन्ता पराशुरापार्व सामञ्जीवायापवि हेव त्रे वासुव सुवा संवायापर दें शुरा" के वार मिन् पर लेंबावा सूर खेंबा वि से बबा के बावा प तुवा की वह न्

① (青木·岩木·岩可·羽木和·95—104)

화·제크다·중도·필지·디자·리토 (- 국)

2. धुन्य हुन् विचः निष्ट प्रयम् प्रमान्द्र । व्याप्त हुन् विचः प्रयम् विचः प्

तृ 'यदे :त्रु: यः यकु यः अक्रवा :शुः व विव तु दे : क्षंयः यवे राः हरः व र ः व **२. अर्. क्**चेय. चेर्टि. जियेथ. मै. अञ्चर, चेराच राजशता चे की. ऐ. पंगीया. नर-बर्-न्दि-बर्-लक्ष सर-ह्रेन्वा-ग्री-श्रु-बंद-ज्ञ-न-बर-देदे-न्दवायाया त्रावायायविवार्वेदाविवार्तुः स्ट्राविदायविवायान्दा ही स्वा 1824 मन् <u>नैदः ह्वे :ह्वः चः मुख्यः पदि छेत्रः पर्छे त्यः केत् । दः क्वेदः वि : छेतः देतः ये : छेदेः </u> **यदः**श्चेर्-देवःश्चेतः।वनः नवेरः तुवः यह नः तुनुरः ग्रैः वर्दरः र्क्षेरः वर्देरः र **ल्य-क्ष्य-क्य-प्राप्तः प्राप्त-प्राप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त ਫ਼੮੶**ਲ਼੶ਜ਼ੑੑੑਗ਼ੑੑੑੑੑਸ਼੶ਫ਼ੑਸ਼੶ਜ਼ੵੑਲ਼੶ਜ਼ੵੑ੶ਸ਼ਖ਼੶ਖ਼<u>ੑ</u>ਲ਼ੑ੶ਜ਼ੑਲ਼ੑਖ਼ਲ਼੶ श्चैरःग्रेःबळवः इरः व्रवःयदेः रहात देवः नहवः दिवः वृत्रः व 🛈 🔍 🕏 ञ्च नामित्र के यामकु मह्य के वामित्र के मित्र के **नुबान्गुना रें नृःकपः वर्र्**दे **छ्टः**श्चेन् ग्रीः बळव नु*चटा* **र्ह्वन** दिन

अवः यान्यः भुः वः श्चेवः केटः। धुवः देरः पश्चवः प्वेतः सवः त्यः पः व्यः देवेः वृतः । जुवः प्रः पश्चवः पवे यः सवः र्यो द्यः पः

① (ই্ব:ই্র:ই্ন্ন্র্র:141)

② (ব্ৰুইন্ট্ৰ্ল্ড্ৰ্ড্ৰে)

दे श्रेष तश्चमारा म्बब्या छ्टा स्रिष्ट्रिया म्या स्रित्य स्रिया म्या स्रित्य स्रिया म्या स्रिया स्र

मुद्देन, स्वाक्ष्य, स्वाक्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्ष्य, स्वाक्य

^{① (ব্ৰংগ্ৰংগ্ৰংগ্ৰংগ্ৰহক:146)}

र्भायः अल्यान् सं कार्ने सकदान्याय छ्रातु स्वेमसामा विमला मन् भु नठर इ व कुमा ग हर है नव लंदवा वे तर्व र व ग्रुवाग्री के प्राक्रेवा গ্ৰহ্মেশ কুন্ই্ন্স্ন্গ্ৰ্ *क्षे-रॅर्ज्ञान्तरा* सुगल हे के 'ढ़ दे 'ये गल*न्-र-न्-*' द से य' बदे ' बह य' वि ' रेश' लुका कंदा सराद दें दार्स का पति बार्यी वाहता श्रुवा कें सका सेदार दा प्रमुद्र वा अत्राय्वितः सः स्वयः अवाषाः सम्बादियः मृद्यः अदे। ने स्वयः यद्याः स्वयः । *चवराञ्चिरः चेतुरः चै* : अर*दः विरसः धेररा वतारा*ष्ठियः कुरः नगः यः ने : हेशः <u> नश्चर वैन इक हे विन नवुर नवर यहें दारे ज्ञूर युद्दा दे छैरक कुः</u> वितः क्षरः अर वः देवः पर्वा प्रतः प्रतः । वितः देवः श्रेवः कव वहन्। । नश्चिमान्दर्भे दे रद्भारत इ.४ ह्र ब. ब्रेट्स्प्र. लूट्या खेन्या की. पुनः चित्रः स र्श्वेर में के में बारे 'पेवा में राया र बरवा में दें र वह का र श्रुव बा चुवा र र म्शुबाक्षराव्याने त्याम्बराम्बराम्बराम्बराम्बराम्बराम्बरा यदैॱ**वॅ त**ुन्नेर् पर्यार्परायसासुन्दायावैषाय**्वेषा** प**्रमु** महिदे भिनाक निया के दार्थ किना भिना भिना समाना विनामहिदार सम् न्निन्ता ने दे र में न स्मानिक का मान की ता कुरा मान समा स्मान स्मान स्मान स्मान स्मान स्मान स्मान समा समा समा **え、冷、せん、大と、髪と、気になっても、ないない、ちんしょうが、した、も、している、がんご** Ť١

ह्ये का १८३१ वर्ष स्वर्थ स्वरं स्वरं

① (ব্ৰুম্প্ৰেম্প্ৰম্প্ৰম্প্ৰান্ত্ৰ (১৯৯৯ কি.মুখ্ৰ প্ৰান্ত্ৰ প্ৰান্ত প্ৰ প্ৰান্ত প্ৰ প্ৰান্ত প্ৰ প্ৰ প্ৰান্ত প্ৰ প্ৰান্ত প্ৰ প্ৰান্ত প্ৰ প্ৰ প্ৰ প্ৰ নাম প্ৰ না

ल.स.चं न्यर. त्रुं के न्येर्य च अवाक्षर न्यान्य श्वास्य अवाक्षर स्यान्य व्यान्य वृध्याः न्यं न्य्राम् व्याप्ता व्याप्त्रम्यं केव्यये त्रम् नल् गवा धुता शुं 'शुगवा नरा। में रावा सकें गा गुरा देरा बेदा या परा वरा ଌୖ୳୶୲୳ୢୖୄୠ୵୲୶ୡ୵୲ୢ୕ଈୡୢ୵ୢୖୡ୵୕ୣ୵୲୳୲୳ଡ଼୶୲୶୲ୄଈ୵ୡୢୖଽ୷୳ୡୄ୵ୢଞୄୡୢୠ୷୷୷ *ढ़ॆ*ᠵॱड़ॗ*ॺॱढ़ॆढ़ॱॺॕॸ*ॱॺॱय़ॸॣॺॱय़ॕॱक़ॆढ़ॱय़ॕय़ऀॱय़ड़ॖॱॿॸॱॸऀढ़ॱय़ॕॱक़ॆॱॺॿऺॺख़ढ़ॣॸॱॱ व्ययः विदः रु दे दे नेवायः असं दः श्रुता चंदः च ब नवः अयः व दः च हे यः वे वतः य:न्दःचञ्चवःत्वात्वातुःबह्यःन्त्र द्वेः श्चनःन्दःबद्धंबतः दर्देःचठतः… न्दरःवर्ष। रूपःकः न्दः यः नहरः नः न्दः मृदः रा सळे नः नदः। अयः नदः मृत्रेया श्रुःवनयार्वे अव-न्व-नठयावयात् न स्टायाञ्च मान्येया हेल। यगर जॅब प्यार ज्ञा बबाय इंग्यर वा वा प्यार जॅबर *য়ৢ৾ঀ৾৾৾৻*ঀ৻ঀ৶৻য়ড়ৢঀ৾৻ঀৼ৸৴ঀ৾৻ঀ৾৶৻৸৻৸৾৾৾য়৸৸৻য়য়৻য়য়৻য়৾৻ঀৢ৾৾৻ঀ৾৾৻৻৻৻ भूरःग्रेयःयरः में रयः रहा। व्याप्तः भ्रेयायः वयः श्रेः ह्याः स्वयः वर्श्वेययः झे**८.८८.घठश**्रूपा**क.महेश.घदे.श्रुपश**.चेश्यश.घट.१.म८व.वेश.ग्रीश. पत्नु न्या । प्रत्ने प्रत्ने प्रत्ने प्रत्ने स्था क म्यू अयः या प्रतः त्या अर्थः प्रता **गॅरःजःबळॅगःवदायद्रःबरःयदरःबर्दरःवर्द**रःकेरःधिःक्रवःम्यःयद्याः न्वर-र्र-परुवाधनायस्याम्ब्राह्या इयाग्-र्रुवयान्यान्वया ৳ कॅ म् र्म्मत् " ট देशम्तर्यान्य प्रमान्य मित्रः व म् श्वास्य मुल्यः कुर् त्म द्राया मृत्रं दिना मृद्रा प्रत्रः यह द्राया मृद्रे के दिन्या से वर तर्मा । मानी साने माने वापर वर्षा "इते सान्य निर्मा **डै८स-५८।** े देर्-जै-पर-हेर-तु-महिबाह्यर-म्यर-कुन्वर्द्-पर

① (ব্ৰুমান্ত্ৰম্পান্ত

इस्रयः द्रान्यः स्रान्यः द्रिः त्रिः त्रः त्रिः त्रि

① ② (考示·発示·并可·明도·和·260—262)

म् च्रायाः मा च्रायाः व्यवः याद्रः निवादः क्रीयः श्रायाः याद्रः याद्रः व्यवः व्यवः याद्रः याद्रः व्यवः व्यवः याद्रः याद्

① (青木:岩木:青河:到木村:288—289)

म्डॅल बे द्वा इबका या हैं वा नवका के का कें वह दर्श लेंगला चे द्वा रैस पर प्रभूषा "च डेवा प्रविद प्रतृषा गुरा देवे धे व्यास्य स्यार <u>पियाः भव न प्राप्त करः पञ्च श्री दः चीयाः प्रियाः य चीयाः य च</u> प्रवेदःस्वः भेर् : ग्रुकः क्रुवः र तुकः वर्षः प्रवृह्मः द्वा । द्वा । प्रवेदः प्रवृह्मः द्वा । प्रवेदः । प्रवृ न्यगः नञ्जायः र्रायाः रेयः हेर्या द्वयायः यः त्रा न्युरः न्यग हेः विनः तृ नगातः ह्वं तः सः नः नः स्या न्याः न्याः न्याः न्याः तम् याः न्याः न्याः न्याः न्याः न्याः न्याः न्याः न्याः न्याः न्हेंद्रम्बि कु के र्वयान्द्रद्रम्ब वासुद्राय हुन्य पा स्था स्टर्ह्त्र वास् छ त्तर्भात्र प्रते वर्षः । "दिन अप्रवार्धः देव अप्रावस्तरः । चर्षाः भेगायामहेदान्यग्नमञ्जूनायरागीन्ध्रायहण हु यशे अञ्चार्मन् हुरा त्रिंदः द्रः। द्रम् वितः तर्मे वित् रु: वक्क वितः रूम्या द्रः। শুরু বি শুরু বর্ষারামার্ম শুরুষারামারা বিশ্বর প্রা बह्यामान्वदा दे स्नित्रार्धे द्वन् म्झुरायदान्त्रिय वे तेराया पह्नत्या चश्चा-त्रः। मृद्यरम्बद्यायाध्यर्मुत्रः व्रेक्टे चरुत्रः व्रुरः वरः ह्यन्यान्येरान्दा हुन्याधिनात्वुरान्दीः हंताधरान्देवा "७ देवा त्वित् केटा त्सुरायह् माञ्चरायवारा वेदाश्चराचेत् माहे : इयव यवरा

① (ব্ৰাইন ব্ৰাহ্ম 228)

ਅਕੇ ਜ਼ੁ·ਕਾਫ਼੍ਰੰਕਾਬਿਕਕਾਜ਼ੁ·ਕਛੋਂ·ਕਛੋਂਯ "ਜ਼ੁ'। ਸਕਨਾ ਨੂਟਾਜ਼ਨ੍-ਕੈ·ਸਨੇ·ਸਨੇ ह्यामबेता नेहा नहें या शुः हुन न केर केर छेर । जुरा न में संसामका म्राया वर्ष्ट्र सेर् संदर्भ विषया क्षा मावर प्रते के विष्ट्र सुत हुर सर् तक्रतःवेशयःवैरःक्षेतयःरे.पस्तःवि.श्रेबे.≆थयःबेशःक्षेत्रः खेयःधे..... म्याय श्रव-स्याधर-दृत्याश्चेत्रायनेवरानेता मृत्रा मृत्रायवरा **ਡਾ**. ञ्चन यापन में निश्चन माना संगया स्न प्राप्त में न न विदानी ज्ञन ही न पर न्ता पहन्त्रीताक्षेत्रकातिन्त्राम् न्युविनाक्षेत्रकातिन्त्र तर्वाता श्रुवा निवासन संदूरा श्रुवा सामिता स्वापा स म्यूपाञ्चर्तिताषुटा श्वरायटाम्बिटामव्यावयावययाच्याच्याक्रि मवर कु . वेव . सुगल निर्मा कु . के . व न या सर . यह व . र में या की या की . मठर-इयरावराम् र्यायः स्टेमराम्बर्यः मन्यः मारायदः स् महत्मु के भुगागुराह्यानग्रार धेवात्तु गामला मु लिंदावी तत्रात्रा **षॅट्-४ट्-७**न्न-१ नहें नहीं निर्मा के निर्मा के निर्मा नि बेर'नदे'न्ये'कृर'णेवां कृ'लॅर'**रॅल'वल'**ह्र वासुल'नव'वहेंन्-तुः ख्नाताः भ्रमाः विषाः न्हाताः न्दाताः विषाः निषाः निषाः विषाः विषाः विषाः विषाः विषाः विषाः विषाः विषाः विषाः व इत्रत्रक्ष्यापरायायाचा छेत्राक्याका र्द्रा वितास्त्र हितान्या इवरा

दयातस्**वान्5वान्यंत्रके इत्या** छंत्रसम्बाह्याम्बर्गः वद्याः द्याः द्याः विनाचेन् क्रुंन् के न्वेन स्टे के लामुकाया धेव गुमा क्रिं चेंन्र न्वन के **बैदःकः ने 'न्दः। देशः ब**ञ्जनयः नृषि की यने 'यदे 'शुः नेवायकरा सामसा केर-र्म-वॅट्न वर्षणवर्ष्वनम्बद्धनिम्भवश्चित्रम्वरम् प्रवयः श्रेदे पर्ने स्वरमः स्वायः स्वायः स्वरः स्वरः श्रेदः दिनः श्रुदः दिनः श्रेवः उदः। ष्यरः क्रेन्द्रितः वीः यत् वादाः च्रतः ग्रादः च्रतः याः देवः व्येदः विवाः पदः धेवः यः " বহ্ৰ'ৰীকাৰীনকানা ই'হ্ৰা'ৰী'শ্বনকান্ত ক্ৰুবা স্ত্ৰ'নতহ'ল'হ' वयः कः न्में रयः नृरयः नदेः म्हारायः देनयः हे व्हरः वुयः ग्रुरः। **बॅॱ२८**ॱमङ्क २े प्रतः रेर् म्बुरक्ष सः ङ्बायक्ष व्यामवेषाया नृबरामः **ः** न्तुरःग्रद्याकेरः मृदेशाधेयवायाया थे ा वृ तान्तु । यदे केंद्राः मुर्चना केवा में बर्च महिता है महिता है कि से महिता विश्वयानपुरम् विश्वया हिर्या ग्रीयाम् विश्वया है। प्रवित् स्रितः स्थायाम् विश्वया बर्हर्-पविवासितः स्टां बर्हर्-सितः बद्धतः वा बुः स्व वावा वर्षासितः र्ह्धवः । नम्ब दें। "धेवेयान्ययानम्बद्धारम्यानम्बद्धाः र्वा म्रायान्यानम् निर्देशक्षेत्रक्राविष्यस्य निश्च विष्यक्ष्यं द्वारा मे**र**ा बळ्ट न क्रिं तर हं ब ही र कु व न के मा मी मा व्यव र र रा शु म तु मारा पर दे অব্দ্বর র্থা

য়्तिःश्वरः न्या ज्ञातः स्वाता क्षेत्रः न्या द्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्व भूता स्वाता ज्ञाता स्वाता स

① (ব্ৰুমান্ত্ৰ স্থান্ত্ৰ স্থান্ত ব্ৰুমান্ত্ৰ স্থান্ত ব্ৰুমান্ত ব্ৰুমান্ত ব্ৰুমান্ত ব্ৰুমান্ত ব্ৰুমান্ত ব্ৰুমান্ত ব্ৰুমান্ত বিৰুমান্ত বিৰুম্মান্ত বিৰুম্মান বিৰুম্মান বিৰুম্মান বিৰুম্মান বিৰুম্মান বিৰুম্মান বিৰুম

व्याम्य प्राप्त स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

हु त्यते म् स्याद दे कि प्रे विदारी विदार मि दे स्थान द त्रा स्थान वर् श्चर मु र् श्वर व में र मु सु र में म हिर्द स प्य प्र ह व सम्बर्ध र र बक्र्य मृ.पविरयामध्याक्षेत्राक्षेत्रावितारी मिताक्षेत्रम् भुैन् क्ताना वेयाना ने मिते की कुन् गुर्म मधु विमा केर विते ही कुन् धेव धर बॅर्-डेर्। ने देशन्वतः व्वाव व्याप्त व्यापत व्य গ্ৰহাথ-থো ॅब्र्स्कर्शुः लु न्यायः स्ट्रेन्स् नू : श्रदेः च्चाः खाः श्चाः चित्रः यः न्द्रः न्याः स्ट्राः स्वाः यः स्वाः स ४५७.अंपय.प्रापर.श्रंब.लट.श्र.ब्र्ग.बाकुय.क्षा.वीट.प.इ.ब.घर.ज.बायजा. भ्रमणायन्तराष्ट्रायदे मञ्जापति भ्रमणाया विवादिता ब्रैना अर्द र प्रतया न र स्रेर न्युषु विना र र ज्ञ च्रीया विन विद्यास्य या क्षे-म्-तन्-त्रेन्वान्त्रह्म-न्नर्द्ध-न्न-स्त्र-म्विलाव-क्र-क्र-द्वाह्मुर------तहन्यान्त्रः तह्येयः दुषः श्रुषः धरा नविषः नधः मिनः सन्तरः नविषः नविषः नविषः न 部と、ロイ・ダイ、

मृत्व प्यान्त्रं व सामुत्र त्या प्यान्त्र म्या स्यान्त्र त्या व स्यान्त्र त्या स

① (青六岩六月刊7刊5四、333—334)

ইনি:বৃদ্য "দু:সূদ্য দ্রি:ম্ব:বৃহ্ত নেম (ক্ট্রী:ম্ব: 1835 ্) বা व्यक्षवतःग्री:मुव्-मुक्-व्य-प्-र्म-त्रक्षकः व्यक्ष्यवःग्रीतः यद् विट. अंचय. मूरं ि. मिल. त्य. पूर्ं चर्चे वया लया नव ख्र. खेव लये पा • ধরকার্দেশ ছ. নথা থা অজ্যথা বর্ষা বর্বা বর্ষা বর্মা বর্ষা বর্মা বর্ষা বর म्डन् डेन् इत्म क्रूर्य क्रूर्य प्रतानम् दर्त्वेष म्बर् र म्बर्य म्बर्र १ विष क्रुव् रेट बियामारेन्। में नायान दें में नामियाययात मनामियर निय समिन मॅंब-इर-धर्द त्या श्यायर वेद न हैन मेरिन वेदा प्राया न हे या पर दे कर्त्रे न्या संस्थान व ति स्वर्णा स्टा हिन् से अव वा यह वया है । मृत्या इतालादेवान्धन् द्वेनान् क्रायराया सन्। श्रीवतातस्याया विताला म्बरम्बर्गेषा श्रीता श् ब्रीयान्वायाः केवायते क्षां व्याः स्तार्वा स्वार्क्षेत्राच्याः हिताः スエ·ズロ·雪·ガイ·イガ る·え回る 心・下・也て、〔對·劉·· 〕 する 刻て イエ・ぞる . *त्र्वेन्'न्यःचॅ 'चेन्'न्वॅ्रापदे'नग्दःषन*'व्यावेश्नेव्यानेवागुरःतः''''' बक्षयायायायाच्याद्याः इत्यावि श्वितः देवाया च्याचे याचे त्यु स्तावि श्वितः देवाया च्याचे याचे त्यु स्तावि । वै नायात नाम्या के भेषाने ने ना १ (४५ न व व नाया खया म्वा सा हे ना ढ़ॖऺॸॱॾज़ॱय़ॱ**≫ढ़ऺॹॱय़ॸॱॱॺऻ**ॺॺॱ) **ऄ**ज़ॱॺॣॕॸॱॾॣॕॺॱॺऻॺ**ॸ**ॱख़ॕॸॱय़ॱॸ॓ॸऻॱऻऄॣॸॱ वना नर्**र, नरावर विनान्ते राम्**याः स्रेराळेना तुरार्थया धराय वर्षे सेर भारेत्। देरामहेब्रायञ्चलाष्ट्राचाराम्यान्याञ्चर परान्धेवाहेरा पत्ता श्री मा मदर ने लिया भ्रमण (न्दी वाहिते श्रीना मल्र मीया हिन मिले दे प्रज्ञा क्षेत्र घर में प्यव हे पहर पर रेत्। इत् व दे र व व दे र

⁽हू.यदे.ब्र.यदे.इंग.वर.वर्.यू.र्च.र्य.199--200)

*`*हुल:र्राम्यान्द:के'क्षाद्दे'अक्त:न्द:श्लुक:ग्रम्याक्ते न्दर:ग्रम्या MC. 粉. ロタン、(単か、イロビ、) 対はな、利か、当か、当か、当か、 **वराः इत्**नप्ते इवाधराद्रां बढ्ना क्षेत्र देता है। वेशा चुन्ना त्या त्युदाना "न्तुलान्डराने कूरलादिनार्दिनार्दिक्षे त्या सम्बद्धान 용지 मुलानितः न्वदः वित्यदः श्रीन् ववायेवतायाः श्रीवायता स्वातः देन् याः सूत्रः ।। श्चर-हरा गुन-न नेनल प्रकेत-सबल-ठर-बहुन-प-लॅनल इन्टर-भ्र.बर. बियानपु. जिरान हेव. इयल वर्षियानर विश्व स्त्री वेश श्री नवर..... नर-महेदा मु 'दॅर्' बुर्' र बेल' द्राप्ताव प्रमाद पर्मे वा ग्री वा पर र शेर्' त्विताच्य-पद्भन् मुर्द्भन् मु स्वरम्यायदे द्वा द्वा त्या स्वरम्य प्रमुखाना । । । इ. च व्यार चेच. शर्था केथ.र राज. ब्राप्तव:मू.भू.गूथ:पध्व:ना मनरः। उ.र्यं व.र्रर्न्त्रारःश्रवाह्म अव नगायः मु " व्यापहरः गीवारेशः ग्री*या.* हे. हेरा पराच्या प्रकृत अक्चें गृञ्चे या सर्गन केरा तु. से प्रका "बेका (इन्याड़ि) "म्र्रेट्रा च म्राम्या मार्था मार्था महासा हैन म्राम्यायाः म्राम्याः इयाः म्राम्याः द्वा न्गुलास्रिन्द्राह्म वराबह्म नगुः वैदायदे स् म्दार्विन् देना **बैज.च.क्र.बचट.लय.नपु.र्श्व.च्रेच.च्र्य.सेज.चर.र्षज.**-द्वा.च्या.र्**ट्**य.च्या.र्ट् **मरुयाने न्यो या क्रें राक्रेव संया महिया "ा हिया या या हिमा प्राप्त स्थान्या** *ॱ***इत**ॱर्तेतः नदः तः व्याः दें । यद्याः केवः ये । युदः प्रदः प्रहेवः युः प्रदः प्रवः व्याः र्रः तडेल र्रं तुर में र बर महोर क्षेत्र भ्रव भ्रव न में त स्वा भ्रव । ① (तृ 'यदे 'पडु 'ग्डेग्'यदे 'इव घर दें 'अळर 'झदे 'रॅय' कॅ 'र्म्ग्'ग्रहरा'

11-12)

हु सं 1841 द्र क्षणयान्य स्याप्त स्याह्म प्राप्त स्याह्म स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याव स्याप्त स्याव स्याप्त स्याव स्याव

मंदिः त्राच्या स्थापतः हेतः पुत्रः प्रदेशः त्राच्या स्थापतः हितः स्थापतः हितः स्थापतः हितः स्थापतः स्

र्मा-त्नर्भयानवरान्ष्र्वापरीः ब्रुवाबी वावराश्चरा हु वळे न्यया चन्नद्रातं तेयान्य्याचरायहर्गाः निवाने स्टायानुद्रावद्या रे कु प्रवासन्तर्भित्र निष्य प्रवासन्तर्भित्र निष्य प्रवासन्तर्भित्र मित्र स केवःस्याच्याच्याच्यान्ध्यान्ध्यान्ध्यान्ध्यान्ध्यान्याः नयः हुरः स्वयः ये नयः द्याः त्याः (ज्ञाः यः यत् वायः) क्रे यः वे रामाशुक्रः वैवःमरोरःभेगःरेवः यं के र्मः। वर्गः वैषःधरे क् में षःश्रेन् रु रेमः म <u>६</u>४.र्चल.क.क्र.। वै.४५.स्ररायाश्चयाचङ्गलाचाद्वाचयव च**७व.** श्चीर-तुःसुयायावा यहः छेव वयरा उर् यहिवाम वेगरा छेवाया रूपा मुल नदे मुल इन वि देव क्वं वे बेव क्वं देव के के के के कि के विकास के के के पर्व ग्र अयः पर्व : क्ष्र : कुरा प्रगृदे न् गुर : ह्र्य : र्यं ग्र : के : त्र : र्यं प्रायः के : त्र : र्यं प्र <u> श्रद्धान्दः अव्यापदे न्तृषाश्चा वितरः धेवा वी न्वे ह्ला ने दाञ्च दातुः ।</u> स्यानना पह्नाय नेटालुवाया बेन्यते कुबला कुरान्यव केटा स्वाया ষ্ট্র'নই'র অ'ন শুস'নু 'অ'অ'র্ছ'। "এইঅ' শ্বম'র্ডি'। শ্বম'ন্স ञ्च नामञ्जालया विष्यान

① (প্র. শ্ন. প্র. প্র এম এ. 18)

म्बितः श्रूनः इया धरः वृद्ः। "र्स्यः कः नृदः मृत्रेतः ग्रुतः श्रून्यः श्रून्यः यं के तेर बेद मेव हुन पश्चा है मदन लु दूर । दे नव क्रुप्त यम्बंम् क्रिया वि क्रिया सक्ता निर्मा विताय विता <u>ଌୖ୶ୄ୷୷୲ୢୄୠ୳୶୲ୄୖଽୄୡ୵ୄୢୠ</u>ୖ୵ୣ୶ୖଽ୕ଌୖ<u>ୄ</u>୵ୣଌ୕୵ୄ୲୕୶୕୳୰୰ୡ୳୶୵ୣୄଌୡ रेवः मुद्रासम्बद्धाः अन्य स्वर्मा मुत्राक्ष्यः देवः सः छः न्दरः व्यव्यस्यः र्श्रम्याची याञ्च याञ्च न्याची निष्ठ व्यवस्त व्यवस्त विष्ठ व्यवस्त विष्ठ व्यवस्त विष्ठ व तस्यापत्व नारा नाम् व विना भरा ना त्रेनाया स्याप व्यापा स्याप स्याप स्याप स्याप स्याप स्याप स्याप स्याप स्याप स मॅद्रा के बर्धि माबदा हे बरद्युया प्रदेश द्वा मारी राधिमा श्लेब ह्या व श्च-प्रमुद्धम् दर्स्यापञ्चरताहेतालयापदार्गम्यापार्द्रायह्यार्द्रा स इंद्रामञ्जूदर्याने। म्होराधि केदार्थे राव्यार्थि राव्यित् प्रमुद्रा मुला संपा कॅं:बैव:फ़्व:व्यायह्य:द्र:प्रस्य:प्रवेष:द्रः। हे:ख़र:कु:देव:वॅ:के**:** वयाबह्यान्रास्यावयान्ववान्ववान्तिरात्विन्। 🛈 ने वयान्चान्त्र्या र्घे द रे ने वार्य ने वार्य अस्य अने र र र र में द के द के द र ने वार्य स्र प्रा.में अहर दे भू अधर रेग में चन में या में यह रे से में

শ্বন্দ্ ইলাত রাবা গ্রিন্ গ্রান্ত বিলে ক্রান্ত রাবা গ্রান্ত বিলে ক্রান্ত রাবা গ্রান্ত বিলে ক্রান্ত বিলে ক্রান

① (常年,美山翼,美山,和七山,10)

श्रीतः चेत्रः प्रशासितः कुषाः में ग्रा चुराः है 'त्राम न्यं द सः हेतः चें तरः "" सरान्ता वे हमारीतायार्यम्यान्स्तान्यम् दर्वत् केवास्म्यान्याः विष बराय न्वायायाय दवायहीया च्रयाया न्या । भू**नया न्राया न्वाया छै ।** षाबळ्बरा शुद्रायावन वावरान्यं दारा सुन् वता वेदान्यदासुना वासामुः म्बेरान्दा यान्ताकु प्रमादा ह्रवा ह्रवा स्वाक्या स्वाक्या सम्बद्धा स्वाक्या स्वाक्या स्वाक्या स्वाक्या स्वाक्या बह्रद-क-पन्न-(वि.धिया. प्राया श्रम्म- मूर्या प्राया प्राया वि स्मार्थित विश्वास् न्यम् विम विन न न्दा विवाधान्दिकाश्चन नक्ष्र न दिवा विना विवाधान श्चॅुव'र्घेग'पिर'५२४ग'र्सुर'द्वैरल'**वॅर'व्य'र्ग'र्वेर' सर्वे '८ रॅ**न'र्**वेद्य'** बुट्रान्यान्वराय भहेवायवरायान् वारा यहता स्न सेतारीहरान्या महिद्दा न्रेरायुन निष्ठेष भद्देष त्यान् वाषायु 'कुत्य वॅन निर्म्र वाष्ट्र दे त्या केर ल.८८ज.धूर.धू.८ची.कूट.५.५चील.बै.वेज.येळ.जू. वं.२ अ.बेज.तू.वेय. ततुः श्रूपः ज्याय तः श्रदः न् अयाः तत्य य वे त्यः कु यः वेवः यः 🛈 धेव कः यवदः 🔭 प्या भेगामर मु किर । या हुना सर निर्देश स्वा निर्देश साहिर श्वर लरायान्यावाद्यार्वे स्वाप्ता वक्षवादह्वान्द्रवायुव हे स्वापवा त्रुर:गुव-८ वदःइस:मुक्षःवः८ वकःग्रु:मुक्षः यर नर्श्वर। वाह्यर:धुवकः ब्रीयाग्रीकाबादयादेकाञ्चराम्याशुक्रातु त्युदायहुण् ब्रेदाञ्चरकास**ेहराग्रीका** विदान्यम् है : विदान्न वर्षा विदाया द्वा । वर्ष म् वयरान्दा नः क्षेते नगतः ह्वा में अयामना छम् वर्दे । वर्षेत য়ৢ৾**ব**৾ঢ়৴য়৻ঢ়৴য়ৢঀ৻৸ড়ৢ৾৻ড়য়৻৴য়ঀ৾৾৻ঀয়ৼ৸ঽয়৻য়ৼঀ৴ঽয়৻

^{🛈 (}य न्यवःकुयःरमवः श्रुवःसरः नेमः देवः 70—74)

र्व वर्षानकुर्विगावराठ विगार्वेब। दे त्या ই্ৰাথ **ইবা** ইন্ ক্ 되도 다. 그 전 전 가 보고 . 십 년 . 그 중 . 그 중 . 그 전 . न्वगःन्सुरःवस्त्रः वस्तान्य**सः स्टन्त्रेशःन्वगःन्यवः वे सः इतः** हे ः न्त्रम् निकुषः न्य ब्रीनः महासान्यरः नृ न्यस्य 월고.인.스む.둦고. हु रह रूप उ विवास विवास केर र वर्ष रूप वापर 四卷 有明 न्यद्राम्ब्राज्यसम्बद्धाः १ द्वाराज्यसम्बद्धाः व्यवस्थान्त्रम् नश्चानु त्याकीर की न्यान स्वाप्त स्वापत्य स्वाप्त सामा स्वर न्यान । न्याक्षं श्वराम् क्षा क्षा क्षा श्वराचित्रः विकासः विकासः विकासः विकासः विकासः विकासः विकासः विकासः विकासः विका **न्दर**'बद्द'द्र'हेथ'वदे'न'द्र' द्रुक'बद्द'हुर'ह्रद'प'द्र' **बर'ब्रेट'ळे**'वहद'न्स्ट्र'वस्ता श्रुट'क्ष्वरा'क्वरा'क्वरा'क्वरा'द्राण'द्राण' **34.** 身, 超, 文仁, 格山, 云, 如白文, 口数文, 立台 少仁 之如山, 高, 仁愈, 农公, 便之, 九, चयर्रे न्यं पय क्रिंप्ति दे.श्रुद्राल्या.क.एडद ६व.श्रुवा.पथा.था. नेब्र-भाष्ट्रियायायायन्। यातीदान्यम्।यान्मयान्दान्दान् मृन् भी वासस्यया ロエ・努ロ公! द्रन्वताश्चरायम् न्स्रम्भवान्त्रुरम्भवाभित्रा ब्रॅंब'ळे'पहव'र्ने हेन'न्यग'र्नेब ब्रे हिपानक्रेंबाने न्यंब'न्यग्यमु गवा **६८.ग्रेय.**हेर.हे नेय ह्रव.चयास.हरामी.इर.रंगा क्षायाय. वेशियाय... **नम्यःब्यःब**रःक्रेयःक्या अनयःनेरःन्यमःन्यंब सःहेरःक्रेयःयःक्षर न्यनः इनः पष्टुकानि रदः नैकान् वनः है विदः वकः हा रदः सूनाः वावदः " मानक्ष्रत्युष् व्या द्वागुर् व्राच्या ग्राह्रत्व्र द्वार व्याप्त **ॲन्-इनल** तेर-५ वर्ग-वर-ॲ-वे-क्रय-वुर-। अन्य-देन-व्**व**-त्यान्त-

① (याद्यावाज्ञयारम्बादेमार्द्यात्र)

ब्रद्धात्रम् वर्षा वर वि.च. छव . सं. प्रवस्त प्रतः वर्षा न्या । स्ता वर्षा वर्या वर्षा वर मन्त्रमञ्जूषामञ्जून्त्रम् वारावन् वारावस्य नेत्रावस्य निर्मानस्य निर्मानस्य राया स्ट्रिस्मा त्या स्ट्रिया वि के रहे सा स्ट्री हिन पहें ना स्निय सा द्राया यदः दंशया वृत्तः द्वा द्वा द्वा वृत्तः व र्मण्डिरायक्रेरायक्रास्त्राह्याचे वार्माच्याचे चर्पायक्रमा हे " " "" पहेंद्र पर्या हुं न्य महेरा म्र १ ज्ञा के व र हुं हुद्। हे क रे प्र मेंद्र न्र-तुल वर्-द्वम् दर्भे मः (य र्षेरः) वैग-द्वरः श्रेलः इः विदः दे कः न् अव् अद् र्थे 'वैद्र'यदे 'क्रूर'द्द्र' कुळेंद्रश'व् श'वे 'ळेब' वेद्र'यर''' '''' त्रेर्त्ताञ्जनत्। सःहराव्यार्गर्गर्गर्न्त्रात्रेत्रविदाः वेनावताची न्युन्यायत्वेद्वास्त्रायद्वास्त्रे सद्दिन्द्वन्यवे स्वास्त्राद्वास्य "र्द्वास्य . त. शूर . वे था. चू. ता. स. हूर . तूव. ता. हूं. वे था. वे था. खूं वे . या वा हूं **या तर वार्टर. .** ण्चर ब्याबत्वत् पञ्चर ने खर र है लात् र हूव पावा स है र न्नर मु. पर्रद्राया स्तर्भाता स्तर्भा विष्या स्तर्भा मिन स्र लट.गु.रु.जुब.विज.नेय.गैट.श.क्रुचेया ल.ख्ट.ग्रेख.चर्टर.रु.पर्वेच. व्यान्नेन् वर्णा पित्रवा है । अर्थे । यं पर्वत् वर्षा हिन् ने ने निहे वर्षित् द्वन्ह्यरा में विव वर्षा स्राप्ति महार्म्यन इस्य कुरा द्वरा रक्रा **८ वर्ष के. त. र. र. प्र. र. र. र. ये था. व. १ वर्ष १ वर** वराधरः कर्ष्यं चे ने क्ष्यं इययः नयर् " क्ष्यः स्यायः विदः दयः त्रिंद्-यः क्षरः वेदः द्वमः मुलः बेदः। लःद मुक्षः क्रे वेदं वेदः दव्यवः र्रः। नः श्रें नगातः श्रेवा में स्वयाम्ब र्यम्यार्गः। ब्रेट्सि स्वरं

① (A.244.\$A.244.\$4.24.24.29)

त्रुण श्री श्री श्री व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्य

ने देश 1842वर् छ इन वर्ग त्र जुल व लु वर्ग तर विराधित व्य स.ह्र. में. थे. में के या जा शर न्वणःन्धेवादेःखवःक्रादेः**डव**ःन्।न्ना न्यम् नकुन् र्ह्रन् दश्य पठवा पहर हो त्य रीर वी न्यवा न्यवा विर वी वा द्र म् लात वया त्रे ता त्रवा वा त्रा वा त्रा वा त्रवा **ं त्रम् क्ष्र- व्यन् क्ष्र- क्ष्र- व्यन् क्ष्र- व्यन् व्यन्न- व्यन् व्यन् व्यन् व्यन् व्यन् व्यन् व्यन् व्यन् र्वन् स्याद्यार्यम् र्यदाक्षेया**यते रूपा तुरावर वर्त्रम्यमाखः **२८'द्य: २०४: भ्रेन्स: १ म् : ४: १** बदर दुन् देन् न्दर्कर पदे पर स्व इंव छिरल इं व पुरा व्या व **६ मतः ५८: ६५: महिल: ग्रें: सः सह स्वरः इ.२: ५ सः महिन: पत्रः राज्यः** मन्यायित्रचेत्र्ञ्च मन्यस्यविद्यस्यान्त्रा **द्वर्गाताश्चराकुः विश्वशः क्रियः क्रियः वृह्दः क्वा** यान् वाराज्ये स्ट्राः या ब्र-र-र-र-र्वेण-र्वेण्यान्न-त्वन्त्र्र्त्त्वर्त्तः व्याप्ति विक्रित्तः विरायदे हरायातार नवानार में ब्राह्म वार्य में वायदे में वार्य वार्य में वार्य वार्य में वार्य वार्य वार्य में ww. と 美山、音、章、音和、古本、祖山かん

द्यावरःवृद्दा स्वाप्त्रं स्वाप्तं स्वापतं स्वपतं स्वापतं

वर्षेद्रः इतः पठवान मदः हेदः छ। "धेवेषः महावा গ্ৰথ-প্ৰদ্ৰত্য नः भूरः बहु म् ति वु व किर्यः देवः मर्छन् वाववः मरः मयायः इवयः धेवः 1843 प्र.क.ल्य्या.च्या.चे वेयातप्र. क्र्या. धराबद्देव विदा र्मु केंद्र अर्दर र्घेद्र प्रत्भू पा मदि है र्पर धुन कुंदा संपन्न र ... য়ৢ৾**য়**৽৵৻ৼ৾৾য়৽য়ৢ৽য়ৼ৸৽য়ৢয়৽৸৽য়ৢয়৸ৼ৽৸৻য়য়৽য়ঢ়৽য়ঢ়ৢঢ়৽৾ঢ়ঽয় नगर देव न दुया बेटा केंग्रन दुन शुश्र वेव केंद्र न्या ही विनय ला गु नि वितान क्षेत्र हिंग में मूराला सहरी लिवा गु सि वे नि व तर्या गु'नवि'हॅब्'सॅदे'झर'वयानगद'ल्लं नुर'नवर्'ह्वाम्वेय'न्र्य वि.स्.मोळ्या.पर्था.तर.ज्याथा.श्रुष.अहल.द्वेय. व्र्याप.च्रुय. स्या मुद्रेश.पःम्डेशःश्वनः हुःम्लेशःहः प्रदेशः तहारा বৰ্থায়া অথাই. "Ûठेलप्दिंद्पदरुग्पायविदाद्युल्यद्दर्यद्वप्यम् च.र्चट. व्युगः मुल. चॅर.ल.श्र**ट.र्**चन्य.पचन.श्रेच्या.ग्रे.चेया.हेया.श्रे.म्ट... *ने 'च्चैरल'र्रे 'यल' क्षर*'ब्यर'न्यम् क्षृंद्र'न्चर कुल'नेन्य न्य**ल'यः न्देलः** থ্য-মাথানামা

① (ব্যার্মাপ্র ক্র ক্র র্নার্ম্মার্ম প্র 29-30)

2. ক্লি-**শ্ল**-শেষৰ'ন্দ্ৰ-শেষৰ'ন্দ্ৰ-শেষৰ'ন্দ্ৰ-শিষ্ট্

म्रंदं नु दू त्यते व का भु विदः च कु न् परि भू न रा ही ते क न् हु ग परि । **ব্দ:** নুস: ধ্রম: শ্লুম: শ্লুম: শ্লুম: শ্লুম: শূর্ম: 1793 র্মন্ম: ম্বান্তুম: দর্ম: মার্ ब्रॅल:र्च,क्ष्य,क्रे.से.स.रंधी.सपु.चर.चाय्य.र्च्य.क्ष्य.पर्छ.चेक्चेन.त.क्षेत्र. त्रेव गुरे त्या श्रामा हव रिविय व स्था स्या विव स्थि हैं न न व्या देश यः अर्बे 'न्यतः र्यम्यः म्यायः वर्षन् न्युः सः दि व ने नः वे नः म्यानः श्रीमा मीयः नवाकुरोपा देवात्र्र्यम् पार्चे प्रमान् विष्यात् व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त श्रेनरा तर्ने र. पश्चिता चर . श्रे ता ग्री र. के. वि.र. वाक द 보다. 공학. 참고의 तब्र-इ.स्यायराब्र-तर् ब्रेन्न् विषा 1842 व्र-४० वैर.पर्श्वे. तम्र-वियापर्यातम् । पहूर्यो वरावयास्त्रियः श्रुप्तरुषाधीयाः कार्यः रैग्याने ऋते या मृद्याश्चित् मृद्धानी मृद्या स्वाप्त स्वाप्त नगतः इरः डेन्-ॲुट-बावनॱळॅ*रा-बान्नें न्यान्यें न* रेन्या नृत्वन्न नेया गुटान्टेंया खु:बर्झर:न्ग्रद:वर:वहेव:क्रु:वॅ:चेट्य:य:क:चुय:ने:वय:ग्रुट:वा:य:यँद्। न् त्यार है र ने प नि ने दे ते वि प प श्री र त्या र व तु द र प क्र र ने दे र द वि र

तः ची नक्षः चायाया सहितः नितः क्षेत्रः स्रष्टि व क्षेत्रः स्त्रः चित्रः स्त्रः स्त्रः

(b. 22.)

"म्बुट्र्न्न्य्रस्य स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्यानः स्थानः स्यानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्य

त्वायाक्षेत्र-त्वाद्याक्षेत्र-त्वाव्यात्वाद्येक्ष्याः व्याप्यात्वाद्यः स्वाप्यात्वाद्यः स्वाप्यात्वाद्यः स्वाप्यात्वाद्यः स्वाप्याः स्व

म्यानर अग्रेच १ विचाके के ज्ञान होत्र निका प्रमान में का ना निश्चान र्ष्ट्रत्यः स्वरः कुषः यः 'न्वरः स्वरः केव-सं-वर्ने-हेन्-मेु-वनका नेह-तु-विन्-पा छे-वह-क्रे-संन-सहन्वायायाः इयरात्या मृद्यान् भूतायह्यान् चुरसाम् दायान्यान्या छेवार्यता हेवा म्बत्तः पङ्कत्यः या में 'देव' वर्षे 'द्वत' देव' धर्रः द्वे 'पः श्चेरः पहर में म इतः हेरा यः महे**र : द्रा**त्यर यर : ब्रदे : म् व : कुर : म कुषः म रेग्यः वे न : व्यायः कुः : : देवः गृद्धे द्वः स्वर् द्वः स्वरः सुद्रः के निरः महेवः स्वरः स्वरः सुद्रः स्वरः मृद्रः स्वरः स्वरः मृद्रः मञ्जर-मञ्जलामञ्जी-सर-ब्रागाने-रहा-नेवान्विवानस्व ग्री-मञ्जव-स-क्रेव-यदेः ङ्ग'न्यादेषः स्रेटे द्वें धियान्न एन् तु न्धन् ने न् में याम हु 'यहन् ने न्दःवर्द्रोयः मदेः क्षेणः देवः महः सुरः ह्रवरा यः वृवयः यर। येगयः यरः ब्रुर-व-श्रक्की कृते स्निर-तु री के ये या ने या ने या ने स्र बानन्गायं के दायं द्वार्यं मिरावि न ल मारा हेरा मा है राया खु द्वारा स्था र्गे परारेगावर म्याराम्ब्रीम्यानम् राज्या

रेयायाम्बुयाया नम्यि यतु वादर्वानविते श्रया नम्यास्त्रवाहायश्रीवाके न्या

त्तर्भ्यः क्षेत्रः मृत्यः विष्यः विषयः श्री क्षः मृतः क्षेत्रः मृतः विषयः मितः विषयः मि

ह्नन्म के हे हिन्दि त्या के का महिन्दि के क

नगतः व्रंतिकः नहतः ई दे।

च्छुः मुंड्य त्र्रः मुंट्यं प्रत्या व्याप्त क्ष्या व्याप्त क्ष्य व्याप्त क्ष्या व्यापत क्ष्य क्ष्या व्यापत क्षय व्यापत व्यापत क्षय व्यापत व्यापत क्षय व्यापत व्यापत व्यापत क

नग्राम्बानस्त्र व्ययः मुलास्

्रेत्रम्त्वित्व्वात्रः व्याच्याः भ्रेत्तः भ्रेत्तः व्याच्याः व्याचः व्याच्याः व्याचः व्

स्थान्त मेथ्या स्थान स्

नग्तः क्ष्रं त्र्येषः नवे स्वर्धः स्वर

((त्रै.क्.क्रंग.) श्र.च.व्रेच.प्रेच.प्रेच.व्रंच

रैयःयः यद्धे यः न्तुषः मृद्धः य्वै । यद्धः न्यॅ व : हुणः मैः गुषाः नृतुषः यन्दः न्यॅ व : वरः श्लीनः वे : यह व।

म्वेषाढः ह्रम् त्रम् द्राध्या हेषाया नहेषा हेषाया नहेषा निवास हरा ।

न्तुरायन्तर्वेषःश्वेषायवे नान्नरः ध्वाः कुताः या

430

[र्थः न्व. नवा यर तथः न्व. ये. में में स्थान्य न्या के या है स्थान्य न्या के या है स्थान्य न्या के या है स्थान्य न्या के या के या है स्थान्य निवास के या के

तर्भै नगात र्ह्म क्रिंग्त महस्य तथर हरा]

मर्जर स्वर्तः न्यं वः कः र्रदः प्रमृवः वहें वः व्रा

नर्वरः अर्तः द्वं व : चनः तह्वः यः क्रः द्वरः व्रा

विर्त्तां प्रत्वे प्रत्वे प्रत्वे प्रत्वे च्या के व्यापा के व्याप

न्दर्यद्रम्प्दर्यद्रास्यायाः सर्वद्रम्

गर्डर'बर्दर'र्देव क्षेत्र ग्रॅट'य कें र तु।

रैबायादिवा हैलान्यवारे बाम्युबाग्रा

श्चि.क्षेच्या. रूच. श्वेच्या श्वेच्या श्वेच्या

[द्रं र्ग्नर्वि लुग्यायङ्ग्वि यानेदाहाना म्युयायदे छेया

पड्ड. सं. धेय. पश्चे. पवंग. पश्चेला]

क्षे-क्रेट.त.मश्र्ट.वस्थ.क्रेंचय.मेण

[द्रं मूट्विन्व्वयावद्गुन्तु यात्रायम् त्राच महेत्रायदे द्वेतः

नर्डे स् ने व न व व स् स् र न में न व व न न स् व व

出亡、玄英仁、む、美、手、童の、丸

```
[क्द्र-म्ट-वि-चलुब्ब-दे-सु-च-इब्ब्य-डे-ब्र-च-वेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्रेल-चरे-क्र
पर्ञ.र्स.धेय.पश्च.पथ्च.पॐशा ]
               रेब.प.चबे.च। श्रम.महेर.प.महेरा.ग्री.म्या
               [ तर् स्राम्याविष्वविष्वेराविष्यायिः (ञ्चव्याय्याः) त्रापाः
चिना नह क्र या के रान्तु क्र या के ला .....)
               ন্ন প্রশার্র নের দেই বার্বা
               [.....]
               ञ्च न अंत अंत अंतरम न्यर यह न
               [.....]
               ३.छन्.बह्द.त.च्यर-ब्दि.चर्च्र र-ब्रुव-स्व-क्रम्था
              [.....]
               रैयामासाम रस्याम्बरामी उ.र्घेदायञ्चानीयाम्या
               क्ष.य.२.रम्ब.क्र्य.पन्ना (....)
               क्ष.र.य. १ त्येव. स्व. क्ष्याय. च्या. चेया [.....]
               इ.य.२.र्म्ब.प्यूर.व्यय.त्रस्य (....)
               इ.य.२.र्म्य.इर.र्गर.च.पह्नया.बर्-ह्रंचया.केया [.....]
               म्बिलाक्षे तु न्यं व न म्याला अर्ह्य न मह्रव सुव क्षेत्र ला [.....]
               म्बिलाक्टे र द्रार्मे व स्वाप्त र मार्के र मारासुव के माला [.....]
               म्बिराडे ठ र्में व र्म्स म्बर्भ ( ..... )
                नवियाहे . ठ. न्यं व. नग्रवाचरा हे . ब. क्रे . देटा [.....]
```

432

```
कुषा है 'ठ 'द व व प्र व बुरा बेर्। [.....]
     मुला हे 'ठ 'द य व 'श्रुं राराय हा या छे 'देर। [ ---- ]
     रैर-२-ठ-५४व-थ-वेषा (.....)
     १इ.५.२.५४व.बल्ल.क्या (.....)
     रेबायास्य इत्यान्तेराक्रमान्त्रा
     বুশ্ব প্রদেশ কুলা (.....)
     ইব্যার্থা ইব্যুবা ( ..... )
     रैबायास्या इंटाईं नग्बीर्घवान्वेराग्वा
     ञ्चन होता हो न हे न हे वा [ ..... ]
     विष्याम् र्रेटायाळे देटार्ट्टायर्जा ( .....)
     रेबायास्या प्रवेरान्यरायान्वेतास्या
    र्गद पति य है य हुन शुन ( ..... )
     वेषायात्राचाक्षाक्षाच्या विष्या
    रवायास्य विवासम्बद्धियाम्य ( .....)
     बर'य'ब्रेर'के' पहुवा ( ...... )
    मने वापर मा के 'मन् वर्ष पर कुषा [ ..... ]
    रुवानास्य वायक्षयास्तान्त्रं नहीत्राचा
    त्रराष्ट्रयणा₹८.ई८। (क्ष.य.वय.वया.क्र.च्डी
                                                    वे'र्यरः
3500]
    र.सूर.स.सुब.क्र्यायाययाः चीया ( .....)
    क्ट्रॅन:क्ट्रान्यवानवेया (क्ट.य.वय.वय.क्ट.चडी
                                                    ঐ'ব্নহ
                                                      433
```

```
3500]
    पद्मरामुकामा इयामुका छे पहुन्। [ .....]
                   [.....]
    बक्ष.श्रु.बट.कुव.ता
    A'5্ব্হ'700]
    इ.वैर.क्षत्राध्ययाचनर्धान। (.....)
    बरःञ्चरःर्देवःश्चयःळे रेरः। [ ......]
    बक्ष. इ. इ. र्स. के. वृष्ट त्यू विषय न वृष्य (क. य. वय. वन
বস্তু ঐ'ব্বব'700]
    नरे अंत मन्नरावर्षा है | [.....]
    सुव रव.स.छ. वहंब.र्सपत.यञ्जूरा [.....]
    यग-२-इर-इर-अ-द्व-त्र् । खर्य-महेया (क्र-य-व्य-व्य-र्स्
A'5ন্ম'630]
    वि.स.र्गातरीयास्याञ्चनयाः ( ....)
    महिराक्षेत्राष्ट्रराष्ट्रराक्षु दिते त्र्राष्ट्रिया महित्रा विष्या विषया
নম্ভ'শৃতীশ ঐ'ন্নন'770)
   ष'ञ्चॅब'भेषापञ्चर'र्नेब'शुवाळे'न्नर'र्वेर'र्शेट्रं [ .....]
   क्रे'अर'म'त्त्र'म् [.....]
   = ह. न दुव् | से : द्वर : 1190]
```

```
司·戈司·红·美·美
                 (----)
    क्रमः क्षेत्रः यन्तुन् तनुत्रा
                                        [.....]
    <u> भु</u>रॱग्रॅटॱॾॅटॱॺ्रॅन्ॱभुॱॸॅदेॱढ़ॻॕॱढ़ॎटकॱॻढ़ॆॴ (ॹॱॺॱवॺॱॿॺॱ
ब्रेन्स् वे:५५५:1750)
    क्षन्यारी भारा या के न्यार न्याय पर्वेता
                                         [.....]
    मॅं तहें हिंद र्ने नुभु रें दे त्याँ पुरया गठेग (क्षाया दया वया वे ।
열 <sup>최·</sup>독직조·3150]
    र-धॅर्-ध-सुद-ळॅ ग्रा-घराय-गुना
                                    [.....]
    শ্ৰ ঐ'ব্নম'2450]
    वॅव गॅर में र पर रेग पहेंद इय मुला [ ..... ]
    र्श्व-द्वप्र:≝८-रूर्-श्च-द्वप्र:पर्श्व-प्रज्ञाचिया (क्ष-य-वयःवयः
মুমস্তা ঐ'দ্বন'2100)
    वियान मानः श्रीमाया कुया सुनान मनः विष्या ( .....)
    र-र्ष्ट्-य-सुद्-ळॅग्य-नयय-गुन् ( .....)
    भूर-द्र-ध्रयाप-इर-र्बर-श्रु-द्रदे-त्र्य-विरय-वश्रव (क्ष-य-वय-
ৰশ্ব্যা ঐ'ব্যুম:630]
    ब्रॅब-५इ-म-छ-५गर।
                               (.....)
    ऱ्र-भ्र-भृ.स.भु.च्रु.पर्ग्र-विर्याग्ड्य (क्ष.याद्याव्याप्यडु.
    मतुवा वे रमम 1190]
```

```
व्यव्यात्र त्र वे प्राप्त वे विक्त श्रुव श्रूव श्रूव श्रुव श्रुव श्रुव श्रूव श
                  बर्यः श्राप्तः हॅरः स्र्रः श्रुः देवे त्या हिरवः गवेवा (स.यः वयः
  वग्वे स् वे र न र 3150]
                  नग्रायायहरायाळे नगरासुन ळेनाया ( ...... )
                  षःम्रेन्।म्रेंद्रः द्वः द्वाः वृद्धेन्। द्वाः (.....)
                 मवयाक्रीविदाह्मरार्क्र देशायाखायाच्छिताग्रा
                 बे.बर्नेट.इंट.बेर.बे.प्र.प्र.बं.बिट्य.बेंचेया (के.य.बेय.बेब.
 मली वे र्यर 280)
                पर्व, ग्रॅट.त. ¥ ब्र.क्येज. प्रंग. चुया (·····)
                 इर कुन य के द्वर अमें क स्
                पश्चरणः मृत्रः स्र्रः श्वरः दिः त्यं विरुषः चित्रः चित्रः चित्रः व्यः
ৰশাশ্ৰা ঐ'ব্নম'350)
               रगाङ्गामस्रामु राम्यापर्वा
                                                                                                                                                         [.....]
                न्न-इर-पळे देर-द्वर-प्रतुषा (.....)
                मॅर-२गर-ऍर-ॲ्-अु-२ेंदे-५र्जे-विरयःगवेय। (इ.य.दयःवयः
मृत्रेश वे र नर 140]
        र निर्देश्य के रियट इस मुला
                                                                                                          [.....]
               ब्रूब-र्ययायाक्त, रचर श्रीयायी
                                                                                                   (....)
               क्षुन हे 'हॅर'रूर क्षु 'दॅदे त्र्रे 'छिरल मुहेल (क्ष 'ल न्तर लंग
ন্ত্রা ঐ:ব্নব:490]
                                                                                                                     [.....]
               後れ、マイ・ストス・イロース
```

```
लुच-पश्चर-इया-चेता-स्व-क्र्चया
                                                                                                                                                             [.....]
                 म्यार हर हर हर श्रु श्रु तर वर्ष हर्षा महित्य महिता हर वर्ष वर्ष
बे.क्ष ब.र्घर.3120]
                                                                                                                                                    [.....]
                とかんとかいがら、
                 बर्करःहरार्दे र वा ने 'वा केरा परेवा ( .....)
                म्राम् अराह्ररार्क्र अ. म्राम् राह्रराष्ट्र विराय मुक्त (क. य. वय.
ৰ্শ নত্ত শ্ৰীকা ঐ ন্নন 840]
                ञ्जवार्यम् प्रमान्यम् तर्मुवान्यवार्यः वर्षेत्र ( ..... )
                 मुला हे : हॅर : कॅर : श्रु : दे दे : त्य : विरता महिला (क्र : ता व वा व मा
 महुबा थे र्मर 490]
                क्षे क्षे व्यक्त व्यक व्यक्त व
                 इव व त्याना मान
                                                                                                                                                          [.....]
                 म्बेय हे हिंद श्रेन् तेन हु त्या प्रत्य मृत्या (क्ष य वय वय वय
र्शु वे र्घर 630]
                 $.2c.2.dac.aca.2al [.....]
                 नेयान्यान्द्राक्तात्रानु । विष्यान्यान्यान्त्रान्यान्या
 নষ্ট শু ঐ ন্নন 1050)
                 第.24.與.七当七.
                                                                                                                                                          (.....)
                 | 「中下、女司、中、本司司の、美、美| [······]
                  व्याक्टात्म् यार्थराभु त्याँ हिर्यायविया (क्ष.यावयावया
```

```
<u> উব:লা</u> ঐ:ব্নব:1750]
     [.....]
     ळे अॅंबर ब्रेटरहे रागा व्वायते वित्र क्रेंटर ( .....)
     रवारा हुना यद हैना नवरा ज्ञा
     र्नुयान्दर्भी प्रमु र्यंदर्भी सु स प्रदेश विर्यादया
     क्ष रवि नकु द्वें व नकुर्।
    मविषा इते. यमु 'द्रंब पमु द्।
    मुला हे दे पमु र मॅं व पवी
    रैर-रे-पक्त-र्धद-पत्री
रैयःप:5ुन:पदे:हॅन:नव्यःव्दःनी:यवःळव:ग्रा
    ক্রবর ব্রব্দারীরা
    चर्याय:चन:द्वी:लवा:क्रेस:बहुता
    बर्चेव.च केर.चश्चा
    रैयः यः हु गः यदे रे मृ ग्व्राह्मरः यद्वै 'यञ्ज्ञ' वृ श्वारा या
<u> इट. इट. ईट. श्र. २५५. ५४. १८८४. में ३०।</u> (य. घन. य. पे<u>ट्.</u>)
    母*き、て切、て口て、美・食」
                                  (.....)
    美工. 多之. 美之. 如
                                         (.....)
    हेन. इ. इट. रूट. शे. प्र. प्र. प्र. विट्या महन
                                              (क्.य.चय. वर्ग.
  438
```

শৃষ্ঠশানি:ব্নহ:70)

ন্ত্ৰ অন্ত্ৰ প্ৰ বিষ্ট্ৰ বিষ্ট বিষ্ট বিষ্ট্ৰ বিষ্ট্ৰ বিষ্ট্ৰ বিষ্ট্ৰ বিষ্ট্ৰ বিষ্ট্ৰ বিষ্ট্ৰ ব

•••••

ঘর্ষাইন্ই্ন্সু-ইবি-এই-ডিব্র-বিজ্বাবিদ্রা বিজ্বাবিদ্যান্ত্রী বিশ্বাবিদ্যান্ত্রী বিশ্বাবিদ্যান্ত্রী বিশ্বাবিদ্যান্ত্রী বিশ্বাবিদ্যান্ত্রী বিশ্বাবিদ্যান্ত

नेत शुर्वार्ह्र र्न्नु वितेत्व हिर्वा विवा

[क.य.वय.

ৰশস্থা ঐ:ব্নন:350]

•••

र्वा के:र्नर:630] र्वा के:र्नर:630]

इबःश्चिरः र्वेर् श्चिः त्र्रे । खुरतः नृतेता (कु.त.व्राः वृत्रा विस्ताः नृतेता (कु.त.व्राः वृत्रा विस्ताः नृतेता

••••

ইন্দ্রেইন্সু-বর্মরে । ব্রুমরে বর্মরে । ব্রুমরে । বর্মরে । বর

*** ***

क्रेन्य्य केन्द्र केन

बहैं बिट हॅट स्त्रेत् लेट क्षु त्याँ खिटल गृत्रेया (क्षे तान्याल्याः संग्वेता लेट्टर 2240)

चु-बर् तःह्र्रःक्र्रःक्रुःवित्रः विद्यः विद

.....

शुः ह्या¥८'र्न्,शुः द्वः त्यां विरयः वृङ्ग (क्षः यः व्यः वृणः र्गु। के र्परः 630]

न्श्रम ते.र्पर.510] नश्रम ते.र्पर.510]

....

স্তব্য ইন (গ্রুন) ইন শ্র্ন রম র্রি নে গ্রুনির বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব ব

रॅ·ॅ्ट्र-ॅंड्र-ॅंड्र-ऑंट्र-ऑं

त्रह्मा से.र्वर.र्क्र.स्व.प्त्रा.स्वर्थः सिर्यः पड्डियः (क्ष.य.व्यः लगः प्रदेशे से.र्वर.र्वरा

ॕॱड़ॆॸॱॾॕॸॱॺॕ॒ॸॖॱॷॖॱॸॕऄॱढ़ॶॕॱॺॖॸॴॸॏऄ॓ॸऻ (ॷॱॴॸॣॴज़ॏऄ ॸॸॖॖॖॖॖढ़ऻ ऄॱॸॖॸॸॱ३२९०)

ठ. व्रन्थ्य क्ष्यं च्या व्यवस्था व्यवस्या व्यवस्था व्यवस्यस्य व्यवस्यस्य व्यवस्यस्य व्यवस्था व्यवस्यस

र्षणःमृष्ट्रियः स्ट्राचित्रः सुदेः त्याः विद्याः मृष्ट्रियः विद्याः मृष्ट्रियः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः

441 . A A र्स्यमिव्यास्त्रित्रस्त्रास्त्रित्रस्त्रास्त्रित्यः विष्यान्त्रित्यः (स्र वायवान्यः विषयः विषयः

चुत्रः श्रृंत्र हिंद्र हिंद्र

वृत्यम् स्ट्रिस् स्ट्रिस् स्ट्रिस्य स्ट्रिस्य

क्र-ह्रेर-क्रु-विरेत्र्ग्राह्यरुग (क्र-ताव्याव्याप्त्रु।

अयागुद्राह्नदाङ्ग्राह्मदाङ्ग्राह्मदायागुरुष्य (क्षायाज्याल्याः 442 শৃঙ্গা ঐ'ব্নম'140)

बायर हे म्ह्रा स्ट्र हु स्ट्र हु स्ट्र त्यु हिस्या बढेन (क्ष.या द्य वना १

द्वान्। विष्यं व्यान्। विष्यं व्यान्। विष्यं विषयं विषय

ळत्याचने (क्रून्तुरः) ह्र्र्स्न्ते त्या हिर्याम् ठेग [क्षायावया वृत्या वे त्यत्या ४०]

न्तः स्ट्रिं क्र्यः क्ष्यः विद्यः विद्यः

ক্ট্রাইন্স্বর্মান্ত্ব্র্মান্ত

ष्ट्र-इं-इं-इंन् तेर-भुदे-दर्ग-विन्त-मृतेया (क्र-त-वय-वम-

(অমান্ত্রিশ) গ্লীমাশ্লী কাইন্ কোমান্ত্রিশ বিশ্বালী কাইন্ কোমান্ত্রিশ কিলান্ত্রিশ কিলান্ত

ङ्ग तुः नृत्वे तः स्ट्रा ते राज्ये दे त् त् वित्रः नृष्ठे न (द्वः तः नृत्रः तृत्रः नृत्रः वृत्रः वृत्यः वृत्रः वृतः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्

(ব্ৰু-ডোল্-) ক্লিন্ন্ৰ ইন্-ইন্-স্কু-ব্ৰী-নেই-ডিন্ন্-ল্ভিল্ (প্লু-মাৰ্মান্ন্-ব্ৰা নি-ব্ৰুম-420)

অন্তর্বর্শ নার্বিনর্শ নির্মান্তর্শ (ৼ কার্বিনর্শ নির্মান্তর্শ নির্মান্ত্র নির্মান্ত নির্মান নির্মান নির্মান নির্মান নির্মান্ত নির্মান ন

बरःकुरः तर्चे यः तेरः बेंदेः तर्चे 'श्वरत्यः वृष्ठेव (कृ'तः वृत्यः वृत्य

वर्षः स्टर्गायः देवः यत् वृत्यायः मृत्यायः मृत्यायः स्वा

मुद्धा ले.र्चर.५००] वि.र्चर.५००]

ৠ লার্থনা ইন্ র্ম্বি নের্মা দ্রিন্ম লার্থনা (ৠ রাজ্বরা লার্থনা বিশ্বরা দ্রাম বিশ্বরা

न के प्र में प्र कि स्व के स्व कि स्

त्रर.वर.इंट.र्बर.थ्रय.थ्रु.४.व्य.विटय.चेड्च (के.य.वय.७वा.

मुडेम से र्घर 70]

•••••

र्वे : च्रतः नृष्ठितः स्त् : श्रु : चर्वे : त्याँ : श्रु द्याः नृष्ठे न (क्षः या व्याः नृष्ठे । वे : न्यतः 280)

•••••

म् शुन्ना वित्रः व्यः श्रुः स्वेरः वर्षे श्रुः स्वरः व्यः वित्रः व्यः वित्रः व्यः वित्रः व्यः वित्रः व्यः वित्र विश्वा वित्रं वर्षः वित्रः वित्रः

•••••

র্ন্ শৃলিক শৃন্ স্থান্ত নি ক্রিক শ্রামান কর্ম বি ক্রিক ক্রিক শ্রামান কর্ম বি ক্রিক ক্র

•••

तर्याः वित्रः वित्रः क्ष्रः क्ष्रः त्रे त्याः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः व

न्नरः इतः मृदेवः क्रां क्रा विवास क्रां क्

कु.अझ.न|देशःर्स्ट्रञ्जु.स्ट्रे.पर्स्राह्यस्यान्त्रेन (क्र.यान्द्रम् इन वे.र्घर. 420)

इ.पट. नेव्यः रूट् येट सेंदे त्या विद्यान्य केन (इ.य.व्यावन

「「利」 A てって 630]

•••••

ळॅल'त्वरः मुल' मृत्वेतः स्र्रेन् भुःदिः त्र्रां ख्रित्रः मृठेम [हः राज्यः विमाम्बर्गः वि

क्ष्यः नृत्रेतः श्रुः द्विः त्या । प्रदेशः नृत्रेन (क्षः तः नृत्यः वृत्यः वृत्यः वृत्यः वृत्यः वृत्यः वृत्यः व विद्यान्यः अऽो

.....

क्रेयः खरः मृदेशः क्र्रः खरः क्रेयः खरः मृदेम (क्षः यः क्राः कर्यः खरः मृदेशः क्र्रः खरः क्रेयः खरः मृदेम

•••••

चञ्चम् विःर्वरः ७०] विमान्त्रेम् विःर्वरः १८० विमान्त्रेम् विःर्वरः १८० विमान्त्रेम् विम्रान्यः १८० विमान्त्रेम् विमान्त्रेम्

••••

न यथा) न यथा)

•••••

শ্র-শ্র-(এর-) শ্রিক-ছ্ন্-স্কু-র্র-রেশ্-ড্র-রেশ-শ্রন (জ্-ক-র্ব-

*** ***

क्रेंब्र मविषाक्र म्र अः दिर त्र्राष्ट्र पा मठिम (इरण व्यापेर

595.15]

•••••

•••••

শ্লন্থ নিত্ত প্রতি প্রত

हैत निवेश हिंद तेर वेंदि त्याँ विद्यानि हैन (इ.स.व्याये क्रि.स.च्या विद्यानि क्रायानि क्रि.स.च्या विद्यानि क्रायानि क्रि.स.च्या विद्यानि क्रि.स.च्या विद्या

•••

স্থান বিষ্ণ ক্রিন ক্রিন

•••••

बहेताहर निवेताईन् तेर बेंदे त्याँ हिर्या नृडेन (क्षाया व्याप्त स्थाय । क्षाया व्याप्त स्थाय । क्षाया व्याप्त स

श्चि.परीया घटा चोषुया ईर् . श्रुपः खुष्टा पर्या विष्या चाडु चे [३]

(म्यर तयर) म्वयानवि सः श्रुः दः श्रुः वि नः सः मृष्ठे म (यः वम्

য়्राच्यास्य स्वर् म्या स्वर् स्वर् म्या स्वर स्वरं म्या स्वर स्वरं स्

च्य्यास्याद्वाचाह्यायळ्ळात्वह्यात्ता (.....) इंदर्श्वा श्रृंबायळ्ळात्वळ्ळात्वह्यात्ता वेश्वाचित्रवर्णे.

म्द्राह्म चुराह्म स्टाह्म स्वर्ण (.....)

ग्री.इंट.क्र्रा ग्रे.तर्.स.क्र.तक्ष्य.च्री.पश्चरा (.....)

मृद्रायः केष्यः संविध्यः विश्वास्य स्वास्यः स्वरः स्वरः मृत्यः मृत्यः स्वरः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः

रेश.त.र्ट.तृषु.भेष.चडट.सुव.क्ष्याच.मेणत्र.तृ.लहे.चडु.त.) अक्ष्याची.श्रुदे.चडुट.ह्र.भेषाचडट.सुव.क्ष्याचा

[तर्-इत्नां न्वान्व्याः निर्मे स्वान्यः विराधिः स्वान्यः स्वान्य

अर ठ्व स्ट्रा के न्यर विष्

न्त्रेयः प्रेतः क्षेत्रः प्रेतः प्रेतः प्रेतः प्रेतः ।] प्रेतः क्षेत्रः प्रेतः प्रेतः प्रेतः प्रेतः प्रेतः ।]

कृर-विदः हं राज्य-हें व श्रुवः नधायः श्रुवा [.....]

र्र ज्वायावार्याः श्वायाः श्वायाः स्वाक्तयाः

पर्विच्यान्द्र-चेष्ट्रेयान् स्वच्याः स

ब्रीट-चु-क्ट. त्र-पट्ट-कुन-पड्डला " इत-चु-क्ट-प्ट-ट्ट-इन-इन-पड्डला " व्यान्तर-दि-पड्ड-पड्डला "

(लट.भै.द्व.दे.४८.मू.म् वय.कर। वि.वेट.ज.)

"मृत्र-र्म्यान्य स्वार्थे स्वर्धः स्वर् वर्षः हुं मृत्यां स्वर्धः स्वर

म्ब्याम्ब्यायाम्यादाञ्चन्द्रात्रः स्तुः वर्षः श्रुः वर्षः श्रुः वर्षः स्तुः वर्षः स्तुः वर्षः स्तुः वर्षः स्तु

[전로도. 환. 여호 [성고. 최고.]

हेन्द्रेन्न्न्यः ह्या मन्यः प्रत्यः मन्यः प्रत्यः प्रतः प्रत्यः प्रत्यः प्रत्यः प्रत्यः प्रत्यः प्रत्यः प्रत्यः प्रतः प्रत्यः प्रत्यः

শ্ব্ৰান্থ নাৰ্থ না

श्चर्यः वृद्धस्य द्वाय्य विद्याः द्वाः द्वरः यस्त्र द्वाः (र्यू रः विद्याः वि

.....]

(तर् क्चिम् व्यापन्त स्व क्चिम् व्यापक्ष व्यापक्ष प्तापक्ष प्राप्त क्षेत्र व्यापक्ष व्यापक्य व्यापक्ष व्यापक्य व्यापक्ष व्यापक्ष व्यापक्ष व्यापक्ष व्यापक्ष व्यापक्ष व्यापक्ष

```
श्च-पठरः म्बेशः द्वं दायायदायं ह्वं पबदः रवः कुषा [-----]
                            ۵.)
                                                             [.....]
                           স্তু-মত্ত্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্র-মূল্
                            भ्रु.पर्यः भेथः रेबे प्रविधा ( .....)
                           श्च.पठर.पहरा.र विरया.पर्वेच.रा [.....]
                          म्वरापित स्वाप्त क्रिं है द्रि दिया से र से पापित से
                          夏た、切山、巣・ロヨナ・栗かん魚メ
                          [ ( दर्भ द में द र र ल र र के वा कि 
 ব্রি'মঞ্জুন্ম'ন্স্'ম' (1859 ম'শুন্মুর্ম'র্মুর') স্ত্র'ম'ন নাগ্রম'নর জ্রম'ন ইন্'''
                                        श्च.परःश्चेषः विदः स्वाःषया पश्चेः पववाः पश्चेषा ]
नेना
                         इर्.लग्.व्र.पवर.पन्वा (मवयाम्यर.)
                                                         [.....]
                        विराधनार्भे पवर क्रमा (वर क्रमा)
                                                        [.....]
                        इर्.लग् भ्रं पवर पहला (म्यं म्यं)
                                                        [.....]
```

न्वयानवी भी प्रवरावितया वि वावव के किरावि प्रवित्ति में

শ্ৰু বা 452

```
यम्बरहराञ्चराळ्यास्या (.....)
    ब्राप्त्र-छ्ट्-.र्ग्याया.स.मि.श्चेता (.....)
    অবিপ্ৰ-জ্ব-- ভূম বিশ্বন্ধ কৰা (····· )
    नव्यःक्टाश्चरम्बेदायः व्याप्तदःक्टाश्चराच्याः द्वाराष्ट्रवा
[.....]
    नरायायात्रास्त्रा निष्टे व सामव द्धर सह सूनरा नराया ना [.....]
    बर्षित्रःक्ष्रायम् वास्त्रा ( ..... )
    बाववःद्धरः भ्रं यद्यरः जुलः बढंवा ( ..... )
    অনিব প্রমান্ত্র মান্ত্র প্রা ( ..... )
    मदरापदीया हे समायहर सर्वे पान्तिया
    म्बर्यायवे या म्यूलान्यव छूटाया
    म्बर्गायवीया है अर्ग्व के या
     मवरापिता स्वयार्य्या
     मवरापिता माश्रवाकेपा
     नवरास्या रोराब्रामदीयार्कवावर्ष्यान्त्रेरापङ्गीया
```

न्वयः सः न अर् श्रुर्यः द्रायः विते ग्रा

म्बर्धिया श्रिब्रहर्मा

•••••

म्बर्यः सः न्या द्वारा म्या हित्यः मुह्या स्था

म्बर्व सःमा र्वेन् म्बेन्स्स्र संस्थान्य म्ब

.....

म्बर्यः सः या ह्रिंदः स्वरः स्वरः स्वरः म्वरः स्वरः स्वर स्वर्यः सः स्वरः स्व

म्ब्रम् म्या क्षेत्रः स्वः यत्ते स्वतः स्वायः स्व

मन्तरा हुमा मा अक्रदा≝रा दें द्याया महिला

म्बद्धाः हुनाः या यदे त्वितः श्रुः मृद्धेनः मृद्धेन

नव्य हुनामा अरुक्ष प्रते हिंद र्न् गुला (19)

म्वयान नुवायदे ते र व्यापदे त्या व्याप्त

इश्राम्येय.ता.चारुच

....

इ.गडेर.गड्रम

.....

विद्राम्बेर म्हम

••••

इ.च इयात चचा पत्री

••••

•••••

तझ. विट. रू. र्याया मुठे म

••••

इ्थाप द्व. ट्रं. र या ना कु ब

•••••

ब्रॅट वर्षेट दे द्याय मुठेन

य. यट. पट. चेड्रेट. चेड्र च

•••••

र्नेर-तुःब्रेट-नदे-[हट-न्हेर-न्**हेन्**

শ্বশন্ত্ৰ নেই কিন ইনিইন ইনিইন ইনি গ্ৰা (10)"①

ब्रियाम् रायायायक्याहेताशुर्यायास्त्रातम् त्विमातयराक्षम् न्रा हिंदा न्दियः विन् देनः क्षेत्रः क्ष्यः ग्रीः विद्याः शुः क्षेत् धः ख्रायायः दश्यः स्न स्वः आ ळेंग चुर-ळॅर्-ध-तवादवास्वाळेते.तवाळंत्र-त्रा 돛८.1일의 हॅग्'ग्वर्ष'ग्रे'रेश' स'पठराकंट'य'न्यट्षा'ग् ठॅदे'पठॅरापञ्च र'यागुरा' नर-वे-ल-नमु-नद-दुन-दुन-दुन-द्वा-द्व-न-निन-कन-त्री-निन-निन-निन-निन-ल-खुन्यान् र्राप्तान्यान् व्यास्त्रान्याः श्रीत्राम्बुद्रामी देवा वितानेवा क्वान्द्रा क्तरम्बराक्तरम्बरीक्षां त्राप्तर्थान्तरम्बर् के क्षेत्राम्याक्षा मॅं नव्यारेयायाने न्वार्थेवाळन् «यग्यायान्यानु नेवा»व्यायिन् बेर्-पदर्। ब्रे-लं-1845 वर्-रन-वृत्त्व-पदे-वृत्त्व-पदे-वृत्त्वलालं-वयामत्तरादेवावर्षेत् प्रवासाम्बद्धाः वर्षाः म्ब्राची क्षे वर्षाया कं वा ते राक्षु न्य वा रे म्बर् के त्री राक्ष्र म्ब्रा की ग मॅं'नदर्श वेंच' वद्यांची रेवा या बवदा द्वा केंद्र में दावदे खेदा न बुदा नेता। महत्रायायतायाः सूरायाना येतातसूरा श्री वित्याना मान्याया स्वा वी उत्तर्देता धैगः रेग्रायरे देगः द्रायः रायस्य ग्रीः स्त्रायः सन्। वितारा ग्रीयः स्त्रायः सन्। वितारा ग्रीयः स्त्रायः सन्। चरुरःश्चे । इतः व्याप्यः या व्याप्यः म्याप्यः व्याप्यः विवा षयाम्बर्वान्याम्बर्वान्यम् व्याप्ति विष्याचित्रम् व्याप्ति विष्याचित्रम्

① (क् इन लं न्रा) नेर हुल सर देश नमें र नगत नन क रेग)

रैग्रायायाः हिन नवेराग्रीया**हेगाग्रया**यस्य स्राम्हेग्राया **ह**ेया व्रदा कुतै तकर तत्ता है दुर धेग के द स नि संग्रा द दें द **२ेग्रा प्रमार्टम्**।अयानदायाबीनाम् द्वादाः हुद् । द्वादान्यः स्मान्यः । ইন্-ৠন্-অঝু-ঘন্-ব্ৰান্তীন্-গ্ৰী-অন্-ঘন্দ-আ্ৰান্তন্-স্থা ইন্-णुरः "हर् ग्रे श्रेर् देव कुल रमया " बेर म देव बर्ग अमया देवे र्मा न्मॅंबर्यावनात्यान्नेरसान्ध्रंतालुः चुर्ताः क्षंर्येना (यवः) *बेषा*-घ-वनुष-कु। वन्-वन-वी-वव्य-**ढ्**ष-क्ष-क्ष-कु-वव्-जु-वर्ष-कु-**४अ.लय.चेवय.लय.भे.चट.लट.लूट.च.अ.५८। "उद्या** रेरामहे**व**ार्या क्रुयार्टे या विमान राया के हिनाया वामन क्रिया न राया प्राया न चेन्-य-न्मः। मल्द-यन्-नुष-भ्रम्यक-नेत्र-वन्य-श्रेन्-मल्द-मी-**ब्रैन**'नवि'ब्रे**'र्ट'** चे'चन'ह्र्ट'नविषाग्री'ह्रसाग्रद्धार्सन्यार्थं कुषा वैनःय**हण्**णव**रः**यानवःस्य रःन्धन् ग्वै : ॲंटः क्रु अयःयशः स्व दः दर्जे · · · · · ष्ट्रित्रः इत्रत्रः धेमा ळेन्त्राता वा तहे वत्रा धरात दे राक्षा कंटा है या भेटा। **ᇴ**੶ৠ৴৻৶৴৻ৠ৾৾৾৻৸ৠ৾৾৻৸ৼ৸ৼ৸৻৸ড়৻য়য়৸৻ড়৻য়৸৻৾ঀ৸৻ঀ৸৻৸৻ म् रायानान्मा मुर्वेषा यह्यस्यायान हे वायान्ने रायान्मा दे से वायान हे व वयः हॅरः न वैषः हरः विदे : रैन षः ग्री: श्रें द श्रेंदे : श्रेरः न्दा व अंतर्भाः ववा मीः र्वतः इत्। तद्रयः क्ष्यः श्रीं नर्ज्ञ्यः युवा विष्यं विष्यः विषयः दे र ब बे के प्रयासक्ष म् द हुन लु ब मा धेवा

① (ব্ৰাব্ৰাধ্যাইকা679)

ষ্ট্রী^{শে} 1844 ব্র.পুলার বান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রা য়ৢ৾ৢয়ৼয়ৢৼৼয়ৢ৾ৼয়ৢঀ৻ৼ৶৻ৼ৸৻ৼয়৻ৼয়৸৻ড়ৢ৻৸৻ঢ়ৢয়**য়৻য়ৢ৾ৼ৸৻**য়ৢ৾৾ৼ৸৻ श्चिरःगीः यक्षात्ववार्यः वृःशुः स्वः स्वः नवरः हेरा विरः वः नृदः मेरः ঀ৾৾৾ঀঢ়য়ঀ৻ড়ৼড়৾৻ড়ৢ৾ৼ৽ঀ৾৽ঀৣ৾৽ড়য়৻ড়ঢ়৽ৡ৾৽ড়ৢড়*ড়ৼ৽৻ৢ৽ড়ৼ৽ঽঢ়ৢৼড়য়ড়*৽ न्न न्यर ने प्रहेद र्पर कु दें र मल्र प्रवेष र प्रवेष र प्रवेष कर क्ष्यथःक्ष्यः द्वाः स्वाः तर्नु व द्वः श्वरः वेषः यः यदः श्वरः श्वरः विषयः त्विन् प्रते धेमा रे म्या तम् र्यंतः मृत्व व्याया हुन्। दया ने न व्या स्थ मल ग्राकेरामले सामितास्य वार्मिकेरी शुरावरावरा म्रोराह्म क्षेत्रा न्दा भू: ज्वा ग्राम् नेवा यह सका नेवा वहा "विन् यह ग्राह्म सका सका प्रमा इर्ट्यार्ट्र्र्र्र्त्व्व्याष्य व.क्व.स्व.ग्रीयार्म्ट्यान्द्रं मृद्र्या श्रीर् श्चिरः ५९ चुः बूँ र . यः यहवयः भैरः श्चे र : शेवयः क्चे : ययः बृदः कुै र ग्री : यग्नः : ਸ਼ਖ਼ੑਸ਼੶ਫ਼ਸ਼੶ਖ਼ਸ਼੶ਖ਼ਸ਼੶ਲ਼ਸ਼੶ਲ਼ਸ਼੶ਸ਼ੑਜ਼ਫ਼ਸ਼੶ਸ਼ਗ਼ੑਸ਼੶ਫ਼<mark>ੑਖ਼੶ਜ਼ਸ਼ੑਸ਼੶ਖ਼</mark>ਗ਼੶**ਜ਼**ਸ਼੶੶੶੶

① (नेन:बेर:बंद:मवे:न्बेगल:नु:ब्रंग:ग्रदल:25)

म् स्ट्रियम् स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्र स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार स्वार्त स्वार्त स्वार्त स्वार्त स्वार्त स्वार स्वार्त स्वार स्

① (हू .सवे .ञ्च .बवे .इब .बन .चं न् .धे न .ने न में ल .204)

② (ইন: ইন: শ্ব: নের ব্রীশ্ল ব্র:শৃশ শ্রহ্ম : 25)

क्ष्याक्षीः मूर्या प्रेष्टः विद्या स्वास्त्र स्वास्त्र

अनवानेराक्ट.श्रुवाञ्चन्यात्रात्मश्रुकःन्ना श्रेनः चुराचुरायात्मे श्रेवः ब्रीट केंग्रान्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त के के ब्रिन ब्रीट मी धिया ने युग स नर्मन्वरार्वरार्वराष्ट्रिन् स्रवा श्रीन् बुराष्ट्री दिन ष्टिन्तर वरा श्रीन् श्रीन ข้าข้ากาละ.ศ.เซนเรานะ ซะเซ**ะเซลเลนเยนะ** เพียามีนามีนามีนามีนายะ.... र्षेण्यायानुष्यान्ह्रमान्द्रमाना वाचन्। श्रीमानुष्यानाम् वान्त्रमान्द्रम रोतः भ्रतः द्वितः पार्यायः द**र्मम** में त्या अविम्**यः** पत्तुरः में। ने राळ । विमानुरः त्तृ "सं नेते त्र ता पहु न के सामदे के साम के मा के दा के दा स् न स् मा स् ना स् **वराकुः में र् ग्रिः गल् र र वर्षा पश्चा वर्षा ये र अर् या र सुर पर सुर पह गाउ कुरी** कनः तन्द्राः वृताः नगादः तः वहः तहिन् केन् सनः नदः ब्रदः न् दः वहः वर्षुव मृत्रा देन नर मान्या द्वार प्रमुख हे सेर ब्रून रहें वर् त्रीं श्रुरायक केंद्र रेव में के व्याख्यान्य श्री व्याणात्री केंपाये या

① (以及:要点, 全型, 可以)

र्मेश्वः म्यक्तः म्यक् श्वः म्यक्तः भ्वः म्यक्तः म्य

प्रिक्तित्रेवार्थे केलाम्बुद्राष्ट्रीशित्रायम्वाप्तवेत्राक्षेत्रवेत्रायम्याः **ळ्या हु नया ग्री खिनम्यान् या छे "न् केन् 'तृ "मञ्जू म्या ळॅन् 'पदी खु नया मलेन्''''** बह्दरद्वित्राम्बद्धन्यम् निह्ने वि विनुष्टेन् । अवायवान्यम् निर्मेन् ^{क्रु}व-ल-सुय-पदै-पग्व-यव-तु। यह केव-सेर-हे-वै-ग्*र्य-*नु-यय-न्व-ब्रेट.ल.कु.५े.च्नेन.धे.ल.कु*य*.बे*ट.ने.चेट्ट.*धेनय.५धे*य.*७ेथ.नकुष.. त्तृ वृ त्यते च्च अवे **इ अवर वर त्र दर** है यं 1845 वर वर वर यदि:त्तु:पःपवि:पदि:**ळेकान्नेर:र्जुम्:नेना "त**ःश्चेर:ख:के:सु:र्के:बेव:५व केव-यंन नवशः ग्री कः पह्यान्यमान् इत्रामेट सामन्या ये केवायं व्याप्त भी त्या देव निर्मा स्थाप विषय विषय स्था गुव म निषय म् ठ केव देव में के वरा यस में व श्री मिया गा न इसस हे में र श्री र वरा क्षेत्र थेनल भेट्य मूर.क्र्याग्री.धे.बा.झ.चरालायाग्रीर.बा.कु.वी.से. . क्षेत्र व्याक्षेत्र पञ्चेत् ग्री याम बिरा क्षेत्र स्वा क्षेत्र प्रवास प्रवास विकास विकास विकास विकास विकास व য়ৄৢৢৢৢ৾৾৾৻ॱ(ऄॕॣॖॖॖॖॖॱॱ) ॺऻॖॾऀॺॱख़ॖढ़ॱॱॖॗॱऄय़ॺॱय़ऄॣॖॗॖॖॖॣॖॖॖॖॖॗॣॖॖॣॖॖॖॗॖॣॖॺॱय़ढ़ॖॖॺॺॱऄॗॣॸॱढ़य़ॺॱऄ॔ॸॱॱॱ

① (~p·歲有·養和·日本、)

विविद् । अता े विविधान विवास विवास निम्म विवास निम्म विवास निम्म म्बेबाद्धरासुत्रः व्यापार्देरावियातुः मुलानायना ख्राक्तामु वार्मे माः बह्यः धुन न्दः। र्वः दं रः अह्यः न्रः वृत्वः पवि वः हैनः न्रं तः गुं र्नः म्ब्राह्म स्वया द्वाह्म स्वर् ह्या है स्वर् द्वाह्म स्वराह्म स्वराहम स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराहम त्रिन् न क्रुव् रेत् क्रुंत्रकी त्राया न्यात तृषा न वे वा श्वना हे वा क्रु खना न्दा। बाइता हेव. चेश्व. सेता वया नव नया विराधन रामे वा न विराधन न भुकार्चन मैकाला विषयाय र इस भिनायाय है। द्र- व्वायाय में इंदू। बदे है। व्यायाय के के कुरा हुर:इन:दर्शरा वर्गय:क्षुव:ब्नव:श्रव:दर्ग:दर्शर:द्युवा इराहें ना व्यव व्यवहता दरा सुता हे । ग्राया या दिद्। में हारा ग्राया हा शुःबद्धरः नवेषायञ्चा रगरः श्चः नग्नेः रञ्जः यस्यायः ग्रुनः बहु गः श्चरः अरु र न इस्याने र वह नवा म्याया मृत्या " किवानं राया वना करा निर्दे दव्यारः "वर्षे श्रेर्द्वम् मुल्रस्य " भेरावदे वर्ष धरा **९**त्व

श्चै-स्र, 1846 स्ट.श्च-स्या त्रिक्ष्यः प्रियान्येयः श्वे स्थान्यः श्चितः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः

① (፫.ልዴፕ.ጵያያ.ጟጣ.ጟ.ሷል. ሷል. መደረ (62)

· 보고. '어외. '숙조. 비크다. '화 시. 다 왔 드 시

द्रमाय मट्ट.इ.ट्र.प.इ.प.चडीट.घडुंब.लूट.ट्री हेबाय मट्ट.इ.ट्र.प.इ.प.चडीट.घडुंब.लूट.ट्री प्रमाय मट्ट.च्र.प्रमाय प्रमाय प

स्तर्ते प्रयाचा विकास विता विकास वि

भू क्रुन्यूर मेला वह बला देवा ग्री वर तु। 1852 वि है वि है । स्त्री विरःश्रेनयाःच्याःच्यान्तःक्टरःक्टरःचःचयाःच्यःदिवःवे दृद्देवःच्याः हे वि बर-त्र-वर्श-प्रव-भ्रीय-ब्र्-इवर-व्र-(क्र-इटर) मु बर्-दर्ग-दर्ग-दर्ग-पर्म-पर्म-पर् कुर-पर्दु-पतुव-पर्य-पायाचन्। यहत-सन्द-स्वाम-न्द-न्वेव-केवे वॅरःह्रायः दर्धेषाः वर्षे सः दरः बेरः वर्षेषाः यहरः विरा । **सः वेषायः** ग्रीः **घरः** ह तर्स्व भे देव तथा देव में स्वाप्त दिन विद्या प्राप्त विद्या वि थेगा वया थरा कराया ने ने निरात्त वा वश्वातु कृषा श्री ना वा विया तिरहा र्नॅ**व**ॱक्वेवॱरे ॱक़्वॱतु ॱॾॗ*ॸ*ॱॲर्ॱय़ॸॱॻ**हेव**ॱॸॕर्ॱॻ**ढ़ॖ**ॺऻख़ॱख़ख़ॱय़ॺॱॸ्ॸॱऻॗ नगतः भवा नेवा नगतः व्रव के नह व न्दा क्या वर्षे दे छवा वर्षे द् चना न्यान भी द्वि से निहर व्याचन न्या खु कर निहर न्या कर न्हें र छेर पर छेव हैरा के विव छ ने का विव छ ने का निव हैं निव हैं ने का निव हैं ने का निव हैं ने का निव हैं ने का निव हैं निव हैं ने का निव हैं ने का निव हैं ने का निव हैं ने का निव हैं निव हैं ने का निव हैं ने का निव हैं निव हैं ने का निव हैं निव हैं ने का निव हैं ने का निव हैं निव हैं ने का निव हैं निव ह ब्रेन्-तु-ळन्-वृक्षेन्-न्वा-यॅ-च्रेन्-धन-ध्रेव-**वक्ष-यं-वृक्ष्**व-क्ष्वा-र्डव-र्स्न-----हेरान्वि वराराष्ट्रयारे नविराग्चे वर्षः मनसाम्रम्य द्रमान्वि वाचेतः वियाया बुदाया ने राष्ट्री "ा के का यहिंदाया स्वरा ह्या वा व्यया हु र ख्रु राष्ट्र दुरान्नेर प्रमुत्र स्वाप्त स्वापत स्वाप রবিদা ব্রীকা 1855 র্থ-জাম-দেধ্যার বানক্র্যানধ্য ভ্রমা বর্তীর্ हेराम्डराय्या मेंदायायकेत्र्यं व्यवस्य मिन्ने विद्या

त्वे.स.च्याचे प्राप्त व्याप्त व्यापत व्यापत

① (ই.গছ্ব.র্ড.র্ড.র্ড.র্ড.রে.র্ড.এহ১)

② (ধৃব স্বার্শ্ন শ্বান্থ 109)

व्यात्रा व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्या

1850 वर् क्षिम्बा क्षि स्वर क्षेट्र में द्रा वर हरे में दर में द्रा पर प्रा देवे छे । सं : ख्रेम्य स्व : स्र : स्व द : ख्रु द : व्रि : सः य वि द : क्रे द : । स्व त्र स्व : स्व द : व्रि : से द : व्रि : स्व द : स्व द : व्रि : से द : व्रि : से द : व्रि : से द : व्रि : व दे-वेद तु-मुल वद-दल वदी-दबन-दद्विन दद-दि-वदे-नवय-मुल-ग्री----য়ৢঀ৽৴ঀয়৽য়ৢ৽৴ঢ়ৼ৽ঀয়ৢৢৢৢৢয়৽ৼৢ৴৽য়ৢঀ৽ড়ৼয়৽য়ৢ৽৻ড়ৢয়৻ঀ৽য়ৢড়৽ঀয়ৢঀ৽য়ৢৢঢ়ৼ৽৽৽ ळ्ट्रा नेते.शुग्राक्तेव चॅन् बॅट्राब्स्या शुः अटः वेचयायः वे श्रुरा हे त्यः न्वेया देर-पहेद-सर्दे 'म्बर्याष्ट्रिय**-र्वय-तु**-स-इ-र्म्द-ग्री-सम्बद-सर्वस्याः **इ**य.श्रुट.घ.क्री क्रूंट्र.विज्ञातकर ठव.ग्री.चिंदर.क्रुट.तर.ज.ट्यंय.घथ. इरामअग्री हातियायायहराता दार्म्य विरायास्य विरायास्य क.ज.रंबायातया व बीटाचाञ्चाया रहा। रे'नवैव'बॅब'ख्य'ग्रे'नॅर्' पहेव। यानवयाह्मराष्ट्रप्तयापहेवाच तुराक्चेन्।परान् हेराञ्चेपा पः वॅ रा मृं रा ग्री रा र ग्री दा हिते ग्री ग्राम र र दंदा महार ग्री रा श्री दा तर स्टेंदा चर अर्गे नह निराधिया हि निराधिया है विराधिया है निराधिया है निराधिय है निराधि न्द्ररः श्रेष्ट्राचेर् सः स्वाया चुरः तत्वा ग्राह्मा देः त्वा संरक्षिरः विषः न्ध्रन्त्रे द्वाप्तर्भावत् स्वात्ते निर्देश्य द्वार्या स्वाप्तर्भाव

① (考名:天中著:취可:到云句:117)

रेगवायान्त्रं वायान्त्रं वायान्तः वायाः वायान्तः वायान्तः वायान्तः वायाः वायान्तः वायान्तः वायान्तः वायाः वायान्तः वायाः वायाः वायान्तः वायाः वायाः

4. वॅट्स्स्र पूर्वित्वह पिड्स्प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त

① (ই'য়য়৴'৽ৢঽ'ৼয়য়'য়ৢয়ৢয়য়য়'236)

द्वातः स्वात्रः त्रात्रः त्रा व्यक्ष्यः त्रात्रः त्रात्रः स्वातः स्वातः त्रात्रः त्रात्रः त्रात्रः त्रात्रः त्रात्रः त्रात्रः त्रात्रः त्रात् त्रात्रः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः त्रात्रः त्रात्रः त्रात्रः त्रात्रः त्रात्रः त्रात्रः त्रात्रः त्रात्रः त

1853 पॅन् छ ब्रास्ट प्रंत्र शुन्य विवाय प्रः छ नः स्वर्य प्रंते छ । यस्य स्वर्य प्रंति छ दे विवाय विवाय स्वर्य है । यस्य स्वर्य प्रंति है या प्रंति । विवाय स्वर्य प्रंति है या प्रंति । विवाय स्वर्य प्रंति । विवाय स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः

ষ্ট্রী'ম' 1854 ইন্: রিন্মুশ ইনি: স্ত্রানানজুন্: মনি: ব্না "ইন্: नव्यात्रात्राक्षयानवाञ्चानकरः स्वाञ्चे । व्यान्याय्यात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रा तकरःश्च[,] पठरः न् र्ययः देवः केवः सं 'न्रः। श्च[,] पठरः स्चित्रयः यः स्वाप्तरः म्में चे थ. श्रुपा श्रुपा विष्य में स्था निष्य न न्रास्यान्यव केव सं र्या न्यराय ह्रव न्या स् हु । ह्रया स्वाप्य स्थान **ढ**ंदा-वर्ष्ट्री-चर्ष्ट्रा-वर्ष्ट्र-वर्षा-दर्श्व-वर्ष्ट्र-वर्ष्ट्र-वर्ष्ट्र-वर्ष्ट्र-वर्ष्ट्र-वर्ष्ट्र-वर्ष्ट्र-वर्ष नश्चिर्या "D वेयानययानास्तरहे. श्चरश्चरास्यास्त्र के वि तर्दे. रैग्राचर्क्ने'नव्गःश्न्नव्यः हू 'यदे 'ञ्च' यः यळेग्'व्**रा**दंश्यः दळरः ये ग्वेत्रः **'** परेश्वतःश्चनानवरः र्हेन वर्तः र्हेन् ख्यानवः ता शेरामः श्चनः लुः न्रः त्रुषःचम्द्रस्याग्रीयःशुःद्रयःम् ईनःषःश्वरः स्तः नङ्गः नद्ननः म्वरः है। षयानव वया वेदायर क्षव विषया वया नगद त्या वया वया वया विषया व सुव दि । । न्दा भराइवाधरावदा दानेदावदा नवाधवाधवाम्बर्धनायमानिद

① (等名 苯四萬 芳可可不可)

क्रम्थ्यं क्ष्यात्म् व्यात्म् व्यात्म् व्यात्म् व्यात्म् व्यात्म् व्यात्म् व्यात्म् व्यात्म् व्यात्म् व्यात्म व्यात्म

① (दें बद्धर क्रें रें यह स्वा मृत्र १४४६)

र्स्यःक:न्दःन्वेषान्तीः अनवः नृत्तीः धेन भेन्द्रः नव्यन्त वि केवः **ब्रु**युः ्र्रास्या शुः व्यापार्थे या र श्रुव्यया सद्दे हे व्यया श्रुप्य विकारी विकारी रेज र्यः क्रेतेः तहतः ल**्दरः बयः गाः न**्येतः ग्रीः तहतः लःद्दरः बयः गाः मक्यान्तिनायाश्वान्वायान्यम् श्वान्यम् वर्षाः वर्षान्यम् वर्षाः न्मा नगर व्यवस्थाने वार्षेष्य है न निकार देवा के नर देवा न क्षेत्रमार्द्धमालमाम्दा क्षात्या दिव ही ग्रेंदाहियायक्या हा हा तुर-५२ वहार-विवादमानुन-सँगवाक्षी वाह्यन-ह्येवा हे विने प्याप्याप्तर न्यर में हे दिन् क्रिया विक्रिक स्र विषय स्थार में न हिन में विक्रा मन्तराहरू वाक्षा के वा के बह्यः द्रः त्रुयः विवेषः वरुषः ज्ञेषः वर्षः स्रः त्रहेषः व्रिः देवः यः क्रेः वर्षः *हेव.चंशुबरम्द्रवा. रचेल*। केल.लच.**बेट**ः। वेचळ.सट.ऱ्यास्। श्चे 'ष्ठितः यावतः स्रो स्वारायः द्वारायः स्वारायः स्वारायः स्वारायः स्वारायः स्वारायः स्वारायः स्वारायः स्वारा र्षेष्रारी रामस्वास्त्र स्ति १८८। भ्रु : क्षेत्र ग्री : स्यास्त्र स्व र्मात्त्रीरार्क्षण इयाग्रियाका है। व्यवन्त्रम्यराव्यावराह्यः **६'-५८**-। ঝাম্ব-ভূম-খ্রী-ভ্রনাঝ-স্ত্র-মর্ম-মরম-স্বম-স্থ্রন-র্মনাঝ-স্ত-স্ विनयः मृत्यरः नः अदः ठवः यञ्चरः छदः व्ययः अर्छन् ः धवः वः व्यः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः ख्याने ज्ञार दिन हेना भूर्ययाचा न्यायाहा न्यार हा प्रकार हेना व्यायान्य विकाने चेता १००० विकान विकास के त्रा विकास विकास

^{🔘 (}ह. बहर केष इस इस इस अंग स्ट थ. 252)

अन्-न्वर्णाः स्वर्णः न्याः न्याः न्याः क्ष्यः अन्यः स्वर्णः स

विराधितारं वदारे रावे राविता क्षेट्या में वायक क्षेट्रा ये द्रा विराधिता रावे रावे राविता क्षेट्रा ये रावित

① (ইন ইন:স্ক্র-জ র্ন:মহধ্র:22)

वल्याविकाउनरावक्षान्त्रीत् हिकान्ता ब्राह्मर्थाक्षराया भाषान्त्रीया **ड**िका कुंगा है : बेब : २ कर : क्षका दर्स मा : में केंद्र : गुर्ने : र्ज्ञ मा मा मा : বের্দ্রার রাজনার শ্রীরা ইবাজন বান বাংবর নার্দ্র বর এনে জী ট্রীন । यदे हु हु ्दे विश्व सेव नव देव दर कुर रन्य हु या है। द्या है। इंट.सन्।व.राय ने केट.येथा त्र्रायराय द्वाप हैया हेता है रे.त्र्रा न्दा ्ष्रत्वदा ह्रार्वतावर्षात्रेयावविषावर्षात्रुया विन इन् ज्ञात्व दि वि दे अभिन्या राष्ट्र मिर्जु र ने में र वि दे दिया । ^{ঽয়ৢয়৽ৼৼ৽য়ৢয়৾৻য়ৼৢঢ়ৢয়৽৸[ৢ]৾৾৾৺ৼয়য়৽য়ৢ৽ৼৼৼৼয়ঢ়৽য়ৢঀৼ৽য়৾ঀঢ়} द्र-ब्रुंगल ब्यागु:न्3्याद्यरः&नावि:सःक्रंटाच्रामरःश्च्राचु:🛈**३यः...** ব্মান্যশালপ্ৰথমান ইশান্ গ্ৰামের নি দ্বি ব্যব্দা ত্ব গ্ৰহণ <u>ञ्चेषायावयान्द्रातेवायाञ्चयायरान्ययान्धुद्रावाञ्चेवाञ्चयाञ्चे श्वराणदा</u> बर्दरदेशाविताग्री श्रु छेर हॅर न्द्रा वर्दरविताग्री दूर वर द्व पत्तुराग्रुषायायाचर्। केटान्यमामी रसुटाङ्गराङा थेरातु महेंदा हेषा श्रेनयार्ने राज्याता श्रृंबाळ्या वह वा (य्याया विदाय ध्रेवारा स्टा) *ৡয়*ॱ**ঽ৾৲ॱ৴৶**ঀ৾৾৻ৢ৾**৴৺৸৽৸ৣ৾৴৻৸ৼ৽ৠ৽৻৸৶৽য়ৼ৴৾৴ৢ৴৴৴য়৸**৾৽য়৾য়৻য়৸৾ क्षेत्र वेर् नु प्रहर्म रूर नृष्य प्रस्कुर व्यवस्य । इर र् निर प्रम यदर वृष्य निर्मात विषय है विषय विषय है विषय है । यद ।

① (ঋু'দৃৰ্'শূহ'নী'নঙ্খন' ইন'^লহ' এন'নহ'ইন'209)

मृत्यात्मः ध्वाः द्वाः विवान् विवान्

ब्रेट्ल देर मॅंर द्वान वया हेल हूर धर रत्य सुया दल दलन हो . .. इमाञ्चमायतुवाङ्गरार्थवाययराञ्चवाञ्चवान्तरान्तरान्तरान्तरानु पद्माल्यान्य यर प्रमुक्त मुक्त रु वि परे मवया कुला की प्रवाप तहा या प्रता हुया की जिंदा सरा हिव **क्रट.ब्रट.बर्ड.**ब्रेट बिंबट.ब्रि.ब्रेट.विट.वि.ब.टेट.ब्रेडव.र्डेट.ब्रे.सेचय... बेर्'पर्याद्यं रूर्'अब'रव्युवार्त्तुवाष्ट्रियाव्याद्यां द्रारीत ही द्रवाया थे नेताक्षेट र द्वा पञ्च ता प्रमेटक ग्रीका **गर्द र तु** पन् हर प्रमा हिन ग्वि व वैषाःवराषेट्रः अरःशेः विवा**उटः** हृतुः धेराः हरः विश्वराष्ट्रियः नश्चराः ह्युयः 🕶 ग्रैलःमुनः भ्रुँ रः नव्दः र्रेन्यः घठलः बुलः वदरः । लः विर् मुदः चः रूटः में । त्यन्। वदायः श्रेम्यः क्रीशः न्यमः नेदः **इ**म् जुत्यः वि स्थेदः सुरायः यः चुरा **दॅव-ॻॖ८-बॅ**द-ञ्चॅब्य*ाशु-५तुषाच् ४८-विश्वयामशुवानु-६वान*-वश्चया<u>ची</u>----स्यान्यम् वि क्रूर्यस्य स्याप्तान्य विषयः न्या वि विवादन्य महास वरान्तः ज्ञत्रात्वमः । ज्ञतः के वर्षे नः द्वारा व्यवसः श्वरः श्वरा केवः यः **इंग्राप्तः।** वयः रुक्षः ग्रुदः ह्रॅबः दर्<mark>चे ह्र</mark>ंग्र्य यः मरुकः ग्रुकः ः दर्कः ह्रॅद् सः

① (तू.लंदे श्व.बंदे.इबाधर.व्रं.लंबा.रंच ह्य.500)

स्वायान्यत्तित्त्रम्तः विद्वान्यायः विद्वान्यायः विद्वान्यः विद्व

स्तर्मेषु वराष्ट्रालपुःशिकाश्चितित्वत्त्रः । वर्षेत्रात्रः वर्षेत्रः इया बराबरा ज्ञानामजुर पर्वावरा मार्ग्या है। कवा. इटा शि.शेव. इ श्यात्राया व श्या शिया श्रीया श्री ता श्रीय ता श्री ता श्रीया श्रीय माम्बद्धाः वर्ष्ट्रम् वर्षाः वर्षः प्रतेष्ठः वर्षः । न्तः पर्यः वर्षः म्र-मिलेबोथात अर्थ थे.स्राप्य अष्ट्रवी.मुं.श्री.पिश्चया.मुं.पिश्चया.मुं.सं म्,क्रेट. १. जुनवा पर्या व्यान ब्राज्य मिराजा हता पर्य र मिना श्री प्र क्षुवान्या ग्रीम् व्यार्द्धवार्थेगवा मुख्या मिल्या विता है दवा वहर । दे विवा *ॼॸॱॺॖढ़ॱॸ्ॸॹॱॸऄॗॸ्ॱॺॱॸढ़॓ॺॱय़ॺॱॾॸॱॺ*ॱॾॕॱॺऻ*ॵॸॱॾ॓ॱॾ॓ॸॱॼॗॸ*ॱय़ॺॱॱॱ अरायर वर्षा वहें वा वि देव में के वहुत न्देश व तुल न्दा वर्षा विस्तानम् तहवारि ग्रावारिया में विवा ही हो र कंट वा विवा विवा वि हेन् म्रुयार्ट्या प्रतायक्षा मुद्रेषा मुद्रेषा स्राधिता प्रति मुद्रिया प्रताय । **ब्रॅ.चयत.२८.वय.इत.इ.जूर.ग्रे.वयय.घर.तेय.**घ४.घ४.ये.वे.घयय.त....

तुरास्वाची प्रश्नरामा संयाता श्रीया प्रयास धीना सहरा नगर्वाथरा यया ने विव विद विश्वयान्व इं व क्षे निर्देष्ट्या व वेन १ । हन वे व सर्व न्दर-वैषाञ्च-प-वर्ष-विकासदे-प्र-प्रथान्य्य क्रमाश्रव्य क्रमाश्री म्राया विद्या मिन्न मिन् **ন্ত্র'ঝ'অউল্'ন্যুদ'**স্থদ্ম'-'উ' ্ডুদ্'রু'ঐনঅ'শ' 1855 ইন্'ঐদ'শে**অ'' ढॅं त**ंत्रीत्तरशु:देश ॐ तःवेतःहु गः्रेवःवतःश्वरः धरः दःश्वेरः ल**ःढ**ः कृ.व्या.बि.स्य रंबराजुः, श्वा.दीया.बिष्यशः क्षेतः व्यात्या श्वीरः क्षीरः क्षीः ... विनयः रन्त्व सु स्ट्रा ्रुर्यः वयः न्यारयः ह्न्य सक्र ह्विरग्री खु र्झे बळूबाःशैलःशैपः २५ हो बल्लार हेन्या श्चिम्बरीटरविबनालीलानटा। म्बर्धरार्ध्रहाराज वर्ति स्राध्यराच्यराचिर्याता सामहिन्या हा । सम्बद्धारा हैव हर द्वाराष्ट्र सहित्। हु सदे हा सार देवे स्व कराया म्ब्रान्यकाम्य हे इस्रार्ट र्यम्य १६ व्राप्त विषय म्बर्थ म्बर्य म्बर्थ म्बर्थ म्बर्थ म्बर्थ म्बर्थ म्बर्थ म्बर्थ म्बर्य म्बर्य म्बर्य म्बर्थ म्बर्थ म्बर्य म्वर म्बर्य म्व क्रायराधनावियान्यरामञ्जवाशासुन्यः वर्षापराम्यरानु ग्राम्य । । पबालय बहुबासुबायराया हेबायर ।

म्न्राच्याप्तकुः वद्याराष्ट्रीत् क्षुः न्राचिया व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्

① (१ वक्र.कंष्ट्र.स्वाच्र.भ्रेग.यर्था)

बाह्रेद्राया मुकाय तुर्तातु विश्वे केरा वर्ता वर्ता स्ताप्या पर्ते निहेत् हा बादी दर्भव या न्दा केंता छेन झेंबा हैव स्था मर्डर न भूग मी पाल गता यर स्ट्रम् वेया र त्या म ह्र र में र में र म वया या मुला म व न क्षा मर विया हो र हि र मा हिला में र दि के के र सर सर मा ला र वरा चर्डरः द्वरः विषा अश्वात्यात्र विषाः क्री देवायः वरः धरः द्वरः कै' के इ जेर पर रूप मुख्या वर्ष र वर्ष पर है देव पत्त है पर स्वाप पर से र बॅरि-१ देर देश ने देश ने प्रमानिता । स्ति अर् से ने वर्ष क्रिने वर्ष स् वर्षान्राम् कुल वराया धेरा श्रेना छेरा ह्या वर्षा केर ही र सन ही र सन ही र सन ब्रुन्:ग्रन्। मृत्रत्न्त्। ह्रन्न्त्वा ब्रुन्ह्रनः। रूटःन्रायक्यः ग्री-भ्री-श्री-राह्म समा ग्री-श्राह्म के कार्या मार्या मार्या मार्या सम्बद्धा स्थापन म्र.५.बिल्किट्रवयाद्वेर्ध्र्याद्वेर् ब्रै.५८.१ क्रूट्याप्यीय्यास्यः हेराधु छेरा र्रेर भरा भ्रेन श्रेन स्रान्या प्रयाप र्रः ब्रेरः। यः हे द्वा ग्री में रार्वा द्वारा हरा पहुरा ग्री राष्ट्राय **ब्रॅंबर-१७८:ब्रॅंबर-१५ कु:२८:पवी ४:६व:२:२:ववर-१३८०:बेट:** ि.मेलावट.वंबाचलातम्,शुप्तह्म श्रु.स्वापह्माम् में.स्वाप्ति से.र्सेव. **व.केब.जिर.**मु. छट. रिट. पर्यम बी बूर. व. में थ. कथा मूथ. कथा इंग र्रग्याद्ययादर्द्रा सम्बन्धी क्षराचक्र पास्या रूरा इन चलालायदाक्षात्रदेशात्रकार्यक्षात्रवाचारा हिरानाच्य क्रि.क.र.च.वय.विश्वयान्ड्र-च्याच्याच्या है.यद्य. यानवयाश्चर्

तपुः न्राप्ति श्राप्ति । अयानुति । के इवया यष्ट्रिया या श्रुपान विनः मुख्य विन्तः विश्वयाम् **विनः श्रेष्टिन विन्नः विश्वरा**ष्टी स्वीरोतिनः द्विन'राचुराळे'नॅरापॅर'न्नेत्रेल'ग्रे'के'ठ्न'क्ष्त्र'ग्रुक्षाव्याम् ठॅर्' विवयान् इर्डिर् श्रेपया दूर की श्रेश र की खेरा रेट्य दूर **多ち**で到1 त्रि.शु.र्या वृथा प्रच क्या वृथा भ्या भिष्ठा श्री राष्ट्र राष्ट्र प्राप्त के स्वया **ग्रै-वेय:२५८:बॅर:५८:बे:५व:वय:येव:बु:५८:वर्**वा बॅर:विते:बे: तेर-वृत्ताबी-नत्तर्ने-मॅर्-ग्री-ता-|वृत्तान्तु-मृत्तान्तर्म् वृत्तान्तर-मुत्यन्यः " क्षेत्रः क्षेत्रः कु। व्रतः श्रेः त्रेत्रः त्राः श्रेः त्राः त्रेत्रः त्रेत्रः त्रेत्रः त्रेत्रः त्रा ইঅব'শ্ব'৮'বঅ'ইব্'ক্তুঅ অ'ইঅ'ইব ট্রব্'কু'ব্দ'নকুব্ বি पर्डबाचुकाळे क्रांतराष्ट्रकी केरा कु क्रांतरा के क्रांत्र के त्रा क्रांतरा क्रांतरा क्रांतरा क्रांतरा क्रांतरा रैन्य द्या पर्स्ट न्य इंट ग्रीय होत. हिन हो सहिन पर्स्य पर्स्य पर् <u> च्चेन्-ब्रे-व्याज्ञु-क्रॅन्-ब्रॅन्</u> य द्युप-ळे-येव्-न्यॅ्य-क्र्यय-नुव-न्युव--र्षेत्-ज्ञुतै-स्रेत्-त्रेस्यय-पॅत्-से-द्रग-वय-ग्रेत्-ज्ञु। पॅत् श्रे-रोत्-स्रेत-प्रेत-**ॹॗॱक़ॕॸॱॸॕॸॱॸढ़ॹ॓ज़ॸॱॺॴॱ(ॻॖऀॴ)ढ़ॾॕॻॱॸड़ॕॴॻॖॴक़॓ॱॸॕॸ॔ॱॹ॓ऄॸॱॱॱ** कु दिन की प्रमास स्था स्था स्था स्था स्था निर्मा की स्था निर्मा निर्मा की स्था निर्मा नि न्हर्भुयाद्वराञ्चन्द्वराङ्का दल्ला चुर् **द्रॅ**र-ब्रॅन्-ब्रंबिय-**क्र**-ज्रुब-र्म्ब्य-स्थय-रेब्य-५वीट-वर्गः वर्गः व्याप्ति-क्रि-क्रिय-क्र तर्में बता में रापित के रि. के र्वा व्या के रा कु र रा र त्या र वा मा अपता वित्रः श्रीः की राष्ट्रीयः भिष्या वित्रः प्रमान्य सुवाव वा वित्रः की र्दा ずべ PA:श्रे:श्रेर:वॅन्:मुत्र:विट:न्ट:बहुद:दवा:ऑट:श्रे:ता:केटवा:पङ्चे गवा:कंर:

ইঅ'র্:গ্র ই হ.পুর্ব অন্মহনের ছ্র' বিরুপ্ন বির

म्रास्तां वृद्धां व्याप्त्रं वृत्द्वा हुं न्या हुं न्या

भिष्य अने अन्यने द्वावर वर् वर् भिष् रेप देव 210—212)



व्यत्यः श्रेन्यः श्रे श्रे श्राच्यः मृष्यः यः श्रेन् श्रे त्यः श्रे तः श्

चि.श्रङ्कत्रं अंचया चचिरंता यें,पापुंचि,श्रःचड्रं चोड्रेयं,तापच्चेयं,पाया

इंश्वाहाक्षेत्रम् वया वर्गित्यान्त्या श्रेतः इंश्वाहाक्ष्याम् वया वर्गित्यान्त्याम्याः श्रेतः

🛈 (तू 'यदे 'ञ्च 'बदे 'इ बाधर'वं र 'धेष 'देव 'देव '213)

ব্রিন্-ঘর্মা

७(ब्र.सट.त्. ५ पतु.ज्.ब्रैथ.व्रेचेथ.च्रेचेथ.व्रेचेथ तर.र्ट्ट.ट्थ.वे४)

®(इब दर दृद्य नेवा वे प्रतः नेहा धर मृत् ग्रह्य १३४)

बरतः रेवः क्रॅरः न्युवा इरः रेन्वः क्रे प्रवी विश्ववः पठवः ग्रेः हरः म्बेरापनान्दा म्बदाधदादरदासी वदा क्यावदा क्रिन्ना कुॅर-श्रेर-पिन हिर-स्-रंगर-थन श्रुर-नश्चा क्षेन्याय-स्वीयातास्य शु मिना क्र स्र्रा " । विष में अक्र के न के तर बिना महे बया स्र उरामिन स्वार्टा हे.सम् अर्गास्य क्षेत्र वि तस्यारस्यात्यीया र्मे वाराये त्याय कु स्थित मावदाय क्रिया कु स्वावा स्वारी रूप द्य-१ वेद। भ्रेष विषा १ मेथ. म् . मेथ्या १ ८ . ह्रे मेथ. यून. खिला इस्.नु.बिस्.बू.ब्राय्या क्षे.क्षे**य.के.**प्राय्या वर. ঀ৴৽৽ঢ়য়৻৻ৠৢৢঀৢ৽য়ৢৢঀৢ৾**ঢ়৸য়ৢ৸৽য়ৼ৽ৡ৾ৼ৽ৼ৾৽ঢ়ড়য়৻য়ৢয়ঢ়ৢঀৢ৽ৼ৾৽য়ৼ৴** ठवः हुमः हुं यः ुः ऋदातुः रैवा युष्ठं र बुमः मः वयः में गवा **गववः के** रैगवा न्तः। गुन यः गुन्या छे । नः इययः ह । ह । स्य स्ट । ह । यहं न । स्ट बर्यः नै:न्रः। देवः न्यादा न्यायः सः गर्यवः रहतः ग्रीः वितः इय्यापन्नद्रान्त्राचेन्या नृत्रेषा न्रेन्यायार्चेषायदेः यह्न्यान्धन्त्वुः য়ৢ৽য়ৼয়য়৽ৼয়ৢঀয়৾৽ঀৣয়৽য়ৢ৽**য়ৼ৽য়৾ঢ়৽য়ড়৾য়৽ঢ়ঢ়য়ৼয়ৼ৽ৼঀ৾৽৸ঀয়৽৽৽** रमः ५८८ वॅ र तुः ५८। वेर ञ्चर में **८ ये ५ मे** प्रमेश्वरमः ५ वर द्वर विषयः गृष्टेयः बॅटः ब्याययः छिद**ः ब्या**युषः ची 'द्विट्यः **ब्या**यः सं रसं र छेट्ः … <u>₹८०,७७४८.५४.₿९.५.५५५५५५५,₽७५%</u>५.*₽८.५*₿८०.४६८... र्श्वेन् : र्यव्यायः या निव्या

① (हू .पारे .प रू .पाठे य तर . इंस. चर. दें र य . ने या श्र. प्रंट. ने र . तर . में प.

बर्म्ब २ इन सम्मार है वाम्ब है हरा हिन ने मिवन सब विन है त्रवाय रा विरादर राज्य दिरा विष्ठ वाष्ठ्र या की जाव वा स्वाप्य स्व र्टा हे.एहर.लेज इ.ज्रबयायी.वे.च.केबयापचराक्षया केव.ज्रटा *ভ্রম*প্রন্য <u>শ্বিন্ শ্রুদার শ্রুদার্</u>শন ব্যাদর শ্রুমার প্রাদর সভর স नगतःग्रंयः द्वेन श्वेर यर यर्द्यः तहेन त्वे नवरः बह्ने न र नर्द्यः वि ञ्चवा (क्रे. ह्वव) १८८। हि. य चरा थे. भेषा क्रु. अळा १ रपया प्रतर ह्युया श्चे.तर्थात विवयातक्षेत्रान्ता वाज्ञाक्ष्या वयवालयाक्रया प्ति. ५ ची बो. क्र्याता प्रवया क्रुया श्रीरा बी श्रीया था खेरा खे । प्रवया मवरः न्या में रामधाया हितु माह्यस्य महोत्रः सुस्र र त्यु मा दे देव प्यार र *लु पा च*ामझरार्द्धाया हे अस्ता स्वापार्याच्या मान्या मानुस्या गुैकायळॅव परे द्वंव के के विवागी ज्ञाय विदान विवयः अ×-श्चि.रचीर-रचीयानशियायकयाचेवेत्रारी.पञ्च ५.श्वंर-**व्र**चे तार. श्चेरः श्चॅरः ऋ' क्चेरः यह ष' रास्त्रदार विषा स्वरायदे । यह साम्यायदे । यह साम्यायदे । यह साम्यायदे । भूबापिब सरायदेवा वियासदा स्वापालका प्रका भूबा सिर्धा यह रा विष्य "ग्रुवः पञ्चेता विष्यः याद्या याः केवः येताः व्याप्या वायः पठ्यः। द्रब्द्यः द्वाम्येतः तुर्वः त्रवः वेतः वह्नवः द्युत् तु द्वावः वा कृतः बैर्-हेड-नशुक्रत्यक तहेन छेर्-रवा रे-बेब्-ब्रूर-प्या हेड-नव्य र्बा-पहर्-५ ळेला छेर्-र्वेला हुवा-५ देव-छेर्-धर-व्लाख-र्वेल र्भक्षकथ्य. वर्षः वर्षेत्रं वर्षाः वर्षाः श्रीत्रः यश्रीत् वर्षः वर्षाः वर्षाः रुद्र एष्ट्रिद्र म ने मूचर के द्र स्रिश्च के मा मी ह्या स्तु देव सं के पड़ द्र मा के द्र

ववरास्यवारायरी स्वा वदरा व्यारा वेदायर् वेदायर् वा परा वळेवा हुया रेता " यहें वृष्यरात गुरुषा शुः सार्षरा नरः हुराश्चे राय दे । वृश्च सार्व द् है। बिर्मायाधीन क्रियाने या बुदा क्रियाने विद्या स्वाप्त क्रिया निवास बर्धर् सुवायां नृहा देवा बेर् हितु पर्ने महावा स्वानु मार्व हुवा ग्रैयामह्मार्भराया विमयाभराकेताकेताकेराहेराहे स्नर लट् हिंदी.विवरं रंगा पक्षरं पक्षात्रा अह्र रं अधि हु हु निवरं रंगायः त्उराववात्रुवाबुवायरायहेव। **ने ने वारा**श्चेराहा वेवा सु ने वार्या के विषालया नवा केवा घरा सरी 'क्रॅरा ची 'चवरा द्धारा दिना ग्राया ची 'सर''' सु रेयायर पञ्चल। "वेयार्टा "इनायर न्येर सुयायहना र्धर्या बर्दर-बॅद्र-ल-कु-दॅर-न्न-र्यंत-व्यवान्डर्-व्यान्द्वर-श्री-स्वयानान्त्वा न्रॅल-परुवाशु-वृद्ध्राप्ये स्ट्रार्श्चर श्वाप्य विष्ट्रा श्वी विष्ट्रा श्वी विष्ट्रा श्वी विष्ट्रा श्वी विष्ट् ञ्चन्याशुःन्द्रालु याग्रीः यहमा द्धर् वियः क यहं दः ईव वियेतः तुयः पहन<u>् , र् धर् , बर्</u> र <u>ब</u>्द र <u>ब्</u>द र <u>श्</u>रेर रे । इबब ग्रे ब प्र विषय । पर् द्धरःम् चतःक्र्यात्रेम्यायः दिन्।ताम् होरः तु वा पह्नम्। न्धुन्।तु वा क्रम्यायः षयः पवः ळेवः यं रःसरः सु ' पञ्चरा मवरः सुर। অঅন্বৰ্অইশ্ৰ্ম

यदाने म्य द्यायद्धवाक्षेत्राच्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्याः व्याप्त्र्यात्र्यात्र्याः व्याप्त्र्यात्र प्राप्ति व्याप्त्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्याः व्याप्त्र्याः व्याप्त्रे व्याप्त्ये व्याप्त्रे व्याप्त्ये व्याप्त्ये व्याप्त्रे व्याप्त्ये व्याप्त्रे व्याप्त्ये व्याप्त्ये व्याप्त्रे व्याप्त्

<u>दे 'वबाहर श्रेद्र'ग्रुबाक्ष'यर मृद्दावुदे बे झ'स संस्टेद्रःः</u> ₹८४.४५८८५८%। १८६८ ४८८५५५५५५५५८%। क्र-श्रीन-प्रवास के.यर.च्रायशायीय.क्रा चि.य.पर्वे.तप्र.क्र्यायिये. वेद-दॅन-श्रेट-वङ्गवान**बट-४**-घ**ट-५-ग्**न्द-८द्रेद-वुराने-श्च-द्र्यद-क्रे-मु 'इत' दहें बरा' पर दू 'यदे ह्य वा झु 'हेर' द' रेवा ग्री 'हु प्रार र वा हे द स्वा स्टर्स्य वर्षः दे र तर् र दे र त व वर्षः वर्षः देवः 원. 호신 त्रहेव् अह्न राय्रुवा धनादेखा**र् व**दिः **ह्नराशेर्-१वार्थः केशः क्ररायाया वेर** पर में अ वि द र वे या पर गुन्या "के या प कु र न हु र न हु र हि र हि र **नञ्जलनबर्द्ध वर्ष वर्ष विवाधिक स्टर्ध स्टर्ड स्टर्ड स्वाधि र्या** षयानदाळेदायानरुषामु विन्नु न्यंदाक्ष्यात्रस्थयाग्री न्तुषाशु हुन <u> श्रेन्-इयल-इर-अ़र-गन्द-लुल-ग्र</u>ी-अय-पद-दल-दुगल-विप-पश्च<u>रल-----</u> कुराश्चित्तरी द्वाया सुति छत् त्वीतया राम्या भेवा तु नेवाया 지지 नव्नव्याम् स्ट्रार्थिर नदी इययामे यक्ष्य ग्रह्मवेर स्वा स्ट्राह्म स्व <u>लेककः सन्त्रेनः त्यः मह नः न्युन् खु कः स्वाधाः देकः स्वाधाः सन्त्रः स्वाधाः स्वेदः स्वाधाः स्वाधाः स्वेदः स</u>्वा

① (বৃদন নিশর কিন্দ্র নৃশ্ গ্রহন 27—28)

ब्रेट्स ब्रायदे नगान ५व. १वर वाचन १८५८ वर्ष वाह स्वेदे हान वया है 'सं 'इट'वी 'स्टि' बदे ' ५५ ' वट' पद प्राय शुषा रा महीया है अ मुला है न्त्राहरा धर्मा स्राप्ता स्राप **के.**च.क्रबय.र्ट्स क्रव.क्रिय.वी.क्र्ट.त.५२४८५४४४कूर.परीय.वीय.वी. ग्रुं**ॱळॅ**ॱमॱढ़ेवॱमङ्ग्रेच'ऱेर-मृवर-वेरः। ज्ञ-पःने मिटे ळॅलामङ् श्चित् इत्रम् श्चे म्यळ्या हते हते हि भी मी न्दा । इदानु दे दे माम हे मा स वरिव हिटाइ वरा वरा दर थेना नी वर्ष व छिटा होता है। इत कुरा कुरा स हीय वि. त्रा तर के इचेय क्षेत्र प्रचय तर र स्थित्य हैय लाग तर वि वि त्र'हर'ल'खबा'एक्ष्म'ग्रीय'बक्ष्य'चिर'**ह वरा**ब्बिर'त्य'ग्री'वर'''''' तु मञ्जूष दे व्यवस्र हे ग्वादे हिंदा देन देन देन दिन हो है । व्यवस्थ व्यवस्थ वि बक्र्या विर्मारा हेते. रहा न विषय नहा बक्र्या महावा का अक्र र विषय हे पश्चितः प्रदे । प्रदे व : क्षेत्र : प्रदः श्चेव : पः शुन्तरः प्रवः त्राच्या । प्रवः व व व व व व व व व व व व व व श्चरः लटः खबः नवः ववाञ्च नः तक्षः नृ नु । श्व नवः नृ दः नव वाः नु यः **3**1 वदःमी:सळव: इदःम् ह्युक्षः सेवारा:पर: न्युवा: ह्रे:वाष: ईत्रः क्रेन्:पर: इदः ः त्निक्ना महिन है। हैं सेना सु केव से न्राख्य रव रहकरा वरा नहिन्य हॅग्तायहर्न्द्रवा देयार्न्या हैं नवरान्छ्रदार्द्धनार्युर्वे यक्ष्यः मुं क्षेत्रः मं गुत्रः या पञ्च ग्रास्यः यह्नः यात्रा व्यक्ष्याः ग्राध्यः या धिन्-ळेलाग्री-नन्-सुल-न्दा-नम्ब-र्श्व-मर्वे व-तु-की-पर्वे-न्दर-पदी-न्दर-वर्राःक्

न्त्रत्तिक्षा ने केत्र्वे भ्रीन्ष्य व्यवस्ति स्वर्धि स्वर्ये

पक्षाची केरा हो साम्या विश्व विश्व मान के बिराव विश्व का का का किया है । विश्व किया के किया के किया के किया के यदा मुद्राह् राम वदायायाय के छे छ दि मी यह रामी पर रामे म्बा अत्र क्षित् सुवा न्या वा का वा दस्यःब**ळ**ॅर्-विदेः **हें**ग्-वर्श्चेग्राधरःब**ळॅ**र्-दर्यःर्दः। थेनराः हेराः नग्रायः धेर्याः अवाः छेदः तुः ग्राप्तः लुर्याः दः श्रेरः हॅ ग्रास्ताः म्ड्याम्ब्राक्ष्याः विषयः अर्थे देशास्त्रम्यायः अत्रावः विराधः विराधः विषयः वयास्यान्द्रवायाग्री तिविद्र हिंव हुर धेवा वाष्ट्र से वया नगाद े वा ब्रुंग-ब्रुट-बेद-पश्चद-कु-घंट-कट-अर्ज-धुग-८&त्य-तु-सुग्र हु-त्र हु-त्र बक्र्याः श्रुषःषायहषः ५ २.५५, तथानः स्वायः वह ५.५%। ५०%। पते पक्कर रेवा 🛈 विषक्षित स्वाधित वर्षा वर्षा विष्य (विष्य क्षा वर्षा वरम वर्षा वरम वर्षा वर्या वर्षा वर्या पति के या पत्ता की के वा में दाया अके मानी प्यापा में दाया के वा में प्राप्त गुर्ने के सं न्रिने देवा मान्रिने वित्र में वि

श्चे स्वया व्या श्वया श्चे स्वरा व्या श्वया श्

② (বৃদ্ধা: বৃশ র):শ্লে: বৃশ গ্রহ্ম: 49)

बेंच्याच्चित्राच्चेता श्चितारहेवाच्चेत्राच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्येत्रच्येत्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत्रच्येत पर्मर. स्रचेश के. अस्था नभूर. नधुवे. तर. র্মনারান্ত্রীধামার বানস্থানা **৳ব**্দ্রেঝজন্ত্র-শ্রী*র*-খেল্'ন্ড্রারীন্রান্ইল্রজ'ন্ন'| **नन्याः छेतः देते व्यवरा क्षेत्रा यु । हें या मार्चन : छुन् क्षेत्रा यु । वरा नर्गेन् ।** मेन्य सहस्य पर प्रमुवाय पर सिन्द्रम् में दारा स्व हिना में दारा स्व हिना मल् नयः स्व स्वरः वियः वरः न् ने नयः ग्रीयः वर्षः स्वरः पर्दे नयः परः यह र इंग मूर. अ. पर्वा सं . क्रेंब्र. सं . वंश . चेश . र पर . वंश सं . वंश सं . वंश सं . बर्दवःधरः न्त्रेट्रतः शुः नङ्गं न् प्यते । न्यतः धेना यव । हते । हु रः येना न्दा वाष्व-दुर-परुव-वयाञ्च-र्ग-ग्राय-पाश्वयः ग्रीय-श्रुव-श्वॅव-लुव-ग्रुप-----तस्याय**ळ्ट्रायं त्राच वेशार्यम्यावरा सु**र्धा न्त्रास्य स्त्रा खयानव् मृत्रेशन्वरायकॅन् प्रवासाये न्यात् तृतायहरा न्रापुतान रहा : ञ्जॅग यहं र। में राज्य ब्रेंग पहे ग्रा बेरा ग्रें राख्ये रापराया प्रमुत् ग्रैकामहेन्का सदै मत् न्वावि केद सं र मन् न्यर व्यव कर राहिर ব্ধুঝা लयानवाव्याम् दायाकेवार्यतानवदानेवा इत्राह्म वाता तु पहर हे खुरा दे हे ल खेन या न्यं व हु रहे द हु र है र से या या व या बह्तर्तर्ध्वानः नदः श्रेषः नदः खणः नवदः वङ्गवा अववा वर्षेत्रः नकाश्च खन् न्रात्रेयानदे यहता न्रार्चिन दारेरान ख्या हे पत् न्या विरायमित्। ने हेल ऑस्काय हैन वि हुर रेन ये के न्या विष्नुन क्षेरा के वकेंग क्षेरा देवार्ग वहें सुरा बहत रेवा हुवा

ब्राचन क्रियम् विद्यास्त स्त्रा स्त

लगलाम हारा भर्ता ही व्यक्त में नरा स्रम्य रहेगा ला चेर 91 यम्। दिहेरः र्राम्यातु 'ब। स्दा अराधेरः श्रीरः ववायनः कुरः मृदा वदः वयः केः " द्यानिर्ध्यप्रेष्ट्रेय.त्योष्टः चेब्राः युव्यात्यः यञ्चरः हः क्ष्यः त्रः श्रीः श्रीः सः सः स न्दः। नृतुरःनेः ययः र्देवः ययः ग्रेंद्रः नृतिः खन्यः क्रन्यः स्रम्यः नग्र-वेलानर-विलय-पर-विर-भूल-द्रा रे.हेल-पग्र- विवासन यह बर्षा ईना प्रम् : भ्रुता पर प्रवा की नवर : देव प्रम् : पर देव प्राप्त के प्राप्त के प्रमान श्चेरःक्कॅर:२व:घॅॱळेष:५२'*:इ*न:**गवर:व**:ग्**वर:गे**:ळघ:श्चेर:५००:५ॅवः... नगदः भव वयः पवदः प्रवः ३ व नयः इतः खब्यः स्वयः ग्रे ग्रे यः दर्वः नर्देव.तर। जयः <u>द्रबाधानमायः भ्र</u>ंब-बाधान्यान्यमान्यमः भ्रियाः । क्रवाः बर्धवः लवः लव्याः ग्रंबः तकवाः हैरः चः हैरः चत्रावः भवाः वया नव्यः इतः नने अन्त स्वयः वर्गारः श्रीर अन्तरः तः व्याः व ववतः **२ॅव-५:श्रुम्यायमॅव-५:प्यदे**:ञ्च-द्व-द्य-क्रेदे:श्चम् वयः यद*र-श्रुः*ःःः न्दरःश्चे । इनः व्याप्तः द्याः व्याप्त्रेतः चाः व्याप्त्रेतः । व्याप्त्रेतः अन्यः हुरःथेन् के सं नदे नठतायद्वय दहें यतः ग्रेतः त्वातु नदरः श्वायदः । याक्नु वर्ष्य तु पर्मे द दे अद् श्रीद वर्ष यद द दे सु तु विवाय ईद द्रानृतुर्द्रत्र वयास्यावे त्राचित्रः न्ता श्रीत् क्रिंतः देवायः केते व्यक्षतः र्देंब मदोर ञ्चव राविष अराविर ने विक्व के के स्वार्थ महारावित व्य लुख-धन्। श्री क्षेत्र के त्र के न मुक्र देव वर्ष वर वर लुक्र स्र श्चर् इंग्याची बहेत् वस्त्रे र्वयावर् धा विमाधेद यत् मागरा 77

भ्रमणः सवाना नव्दरम्या हु ः व्वदः देवः क्षण्या मध्यक्षः यम् दः त्यवः या *ने तम् चुरावा प्यापा वा वा दिस्सा सम्मान* स्थाप हेवा स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन . न<u>मा नवा तकरात सुला नृत्री वा हुराने ग्र</u>ेश्व नक्ष्मा न व मा छवा न सुवा ने वा पियायेव माव दान् व्याच्च द्वाच द्वाच द्वाच द्वाच का विष्य वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य विषय क्षेत्र माव का विषय का वि ञ्च यारो र वें पार देव पार क्रिंप प्रवास विवास क्रिंप प्रवास विवास क्रिंप क्रिंप क्रिंप विवास क्रिंप क्र क्रिंप क् ह्याञ्चराष्ट्रम्भ्रयायायायायम्। नग्रदान्ग्राज्ञातम् द्वारा ग्रॅल-१ नुरान्धर क्रिंट प्रांच प्रमाद क्रिंच ग्रेल-१ निक्र क्रिंच प्रमाद क्रिंच क्ष्मताने त्यताद्यामा विष्यु अन् स्या ग्री द्वा यान वन् श्रूता या महिन्दा श्चि<u>र ह्यायायहरा इ</u>हेंद्राच्चेर् श्चेत्राचेश्च स्वा दे रहेंद्राची प्रकरामदी पञ्चरा हे दिन् हिन्या । इन विषय हिन द्वारा विषय । इन हिन्या हिनया रॅन्यःभेषाः दुरात्याराळे**दारात्रे स्टा**त्यार्त्ते न्यस्य सुः स्टराङ्घे । व्रवासा बर्वान्यामुल न्यर्षुलाञ्चान्याम् व्याप्तान्याम् वरामेवान्या ब्रॅंन:र्येयायद्वी:यह्न्यम् डे:व्रॅन्र्येन:श्च्रुःन्यंन:रेग्याग्ची:न्यहः कते वर् वर् तर्म मानर द्याया न स्वर् सुका धेव सार् रामकका ही ष्ट्रन्यास्त्र^भरेषा पर्ने ते र्नेत्रन्रस्यायाश्चिन् क्रुंटानी न्यटाक प्रस्या कुतैःक्र्रम् नाम्याद्वेषाः धेवः देवाया देन्क्र्रम् व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः बार्वि.शि. त्रवर् नाइर नावर र म्ब्रिय द्धेया लु याया स्रेर त करा निवर न्यरामानी राज्ञेराज्ञेराज्ञेरान्याज्ञाने भेना स्वरायानियान यान्यती । चग्रात्र्री क्ष्राय ग्राह्म व्यवस्य म्राह्म का मुका मुका विकास के निर्मे का विकास

दे-दश्यन्द्रनः सः सं म्वदः विषायः स्रूर् य मृष्य हे य पर् श्रु य ग्रायः भूष-बी.प्राप्त स्वास्तान साम्राज्य चित्र विषयः प्राप्त स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास য়ৢয়৾য়ঀঀৼয়ৣ৾৽ৼৼ৽ঀ৽৻ৼৼ৽ঢ়ৼয়৽য়য়৽ৡ৽য়৾৽য়ৢ৽য়ৢ৽ঀঀয়৽য়ৼ৽ৡ৾য়য়৽৽৽৽ **८८.६७.**चरीय.ची.६८.८५५८५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५५ **६८:ब**.स्.स.चे.४:च.४:५८:५.क.चू.४:५८:४:४व.कू.४व.कू.५८:५व. वी.पद्मिता वी.विवाश व्यत् क्षेत्र वा वि. तथा पक्ष्यया पट्टे दे वी.वी.विवा पह्न प्रीत्रायान्त्रीयाग्रीतावित्रात्त्रात्त्राची मवित्रास्यात्रात्रात्रात्राचनाः लब्दिन्न नहरानदे ने ब्राचिक निकार का निवार के नि ঈঀ**৾৻ৢ**৾৾ঢ়৴৽ঢ়৾৾৾৽ড়ঀ৾৽৶ৼ৾*৾৾৾৾৻৲ঢ়ৼ*৾৽৻৻ৢয়৾৽য়ৢ৻৽৺৾৽ঢ়য়ৢৢ৾৾৾৾ঢ়৾৾৽য়৾ঀ৾৾৽য়৾ঢ়৾৾৽য়৾ঢ় त्यासुत्यान्वराष्ट्रवा ते त्या हो त्या हो त्या हु हो वा ह्य त्या व ह्याक्षेत्रद्वातः मृत्रेक्षत्वतुन्। सदी: नूरः देवे वित्रः स्वितः स्वास्त्रः स्वास्तः स्वास्तः स्वास्तः स्वास्त ଞ୍ଜା **ଅଝି ୮.୩** ବିରୀଖିବା ନୃ ' ଦ ବ୍ୟା ଅଣ୍ଡବ ଅନୁ ମଧି ' ଅଁକ୍ ' ବିଣ୍ଡା ष्ठ्रे*न्*यः नृहेन्यः प्रतः स्रम् अहेन् - न्द्रायः तृषाः कुष्यः स्रेत्रः त्यु नः वर्षः … नन् भुदे च र्ष्ट्वर्यः हिन् विव १ वरः नहिन च वरः हे या वरः हिन नहिन स् क्रवारीमा विकास पर्वीय.व्य.त. नेय.पस्या के. इंश.स. ८ वे. पश्चेत. ब्रीय. क्ये. प्राची. मञ्जून वरु र ब्रेट मा स्थाप र रेट वर्ष प्रमु स्थाप वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष **ロゼノ型、イロビ、高山、車の、丸の、イン、上をといると、中で、カイの、 क्रेन**्चेन्-पदे सुन्-बेन्-हेन्-चुन्-स्निकासु-पहेन्द्वसन्-स-न्नद-स-----क्रेन्, क्रेन्स्, क्षेत्रस् क्षेत्रस्य ह्राह्म ह्राह्म स्याप्तरस्य वर्षा ह्राह्म स्व

सासुतायात्रेन् चेरा म्हास्त्र वहरा "वराम्यायानेयात्रे रिव वेत्रमुन्याचेरावदेत्ये देवा स्वाहुत्वियाया विवाहुरावहुन

ই'ব্ৰ'জ্বি' ষ্ট্ৰন্'ইৰ্ম ক্ৰিম্ম'ন্দ'নত্ব্ব'ন্থ স্বা चमावः नम् वः चमावः धव है। ह्वीमा ह्यां मान् वः वदे चराः न्रः व मायः वदाः क्षे:क्षेत्रयायायायाः रशुया**ञ्चरा**यदे केता श्रेटान्टा पठरायद्यान्य **व्या** यान न्यव न्युत् द्वि ने भ्यस्य विदान् विषयि यात प्रवाद प्रवाद । चर्गातः रश्चेरः अनवा चन्न स्त्रु न व्यंतः न्वेता लेवा बर्देवः ववायाः नु चन्न र बेन् गुम्। म्दासन् केन्याम मान्याम निवास केन्याम स्वासन् वर्षा स्वासन् वर्षा स्वासन् वर्षा स्वासन् वर्षा स्वासन न् ने निर्मा समुद्रा परि सं ति है दालमा ति हो ना लिमा गुमा प्राप्त स्थान चन्या अन्तःन्यं व स्वायः तम् न्यमः नवारः स्वयः ग्रीवा हे स्रायः वरः नक्किंद्रास्त नन्द्राक्ष्र्राध्याचु क्किं निवेद्यास्त्राक्षे स्टर्धानियास्त र्षे 'पिर'वर'रञ्च,'र्पेर'पर'वय'गुर'य'रेदे'यद्यर'र्नेर'र्वण'गेवा'''' नभूर विदा इव मा अर्थर न्यं व ति वर्ग नर क्या नर कु न वदा है ति हैं ला भ्रम्यः मन् भ्रुयः दद्धमः अनः सरः अयः वरः नुः क्रूनः मेवः ग्रुवः वराः द्वास्तरावस्तर्भेन बहरान्यवाञ्चात्वराधाना वर्षात्रा म्द्रायः विकास्यायः वि यॅ**ॱरॅ**ॱन्ष्यन्।व त्राय्याञ्चर् सर वेना न्र्यर् सर कृ रे त्युर पदे न्ये प्रवेत न्यं व न्यव यह सं रेपक न्यं क म्य वह स्वा वह रेप् न्दर्र्ेरायदे कु क्वेदान रे चुराय भेद द्वादेश व्हर्माय अद्रा न्यंव वहा दर्भे ने निर्मेव में रास्तर नगत धेवा म्वहा है स हिरात्यासार्द्राम्यायाः स्ट्रिक्तायाः स्ट्रिक्तायाः

দ্রিনাই অর্মার্টি র্মা শ্রিশ্ব শ্রেশ্ব হ্রমার্ট্র রিশাগ্রন রাবস্ক্রেশের वायवः विषाः धेवा वद्यः दर्धे वः शुः विषयः छे रः र गुरः सं खरः छरः रे रा बै'र्वेद रदे' मदद्यासम्बद्धार्यात्रात्तर्दे त्र र्यंद्र वेदाविरास्टर्स्य मुव्हरा विषयाचियाया विद्यापश्चराया स्वराधिया मान्या पहिंच्या है । पश्चर हिंदा । । । न्दा याक्षेद्रान्वमात्वनाव्दान्दराञ्चनावर्देतातुकाग्री विनवाश्ची लुका धरःकुः घॅद् : न्नु : द्वॅद : वॅद : यद्व द्वे व्याप्त व्याप : यद्व : व्याप : यद्व : व्याप : यद्व : व्याप : यद्व च्च-पङ्ग-प्रविग-पङ्गल-सुन्नवा **ब्रव-**स-नेव-रच-ग्रनव-स्वान्ते-नुक-कai, יגַפָּמִישָּׁמִיאַמַרָּשָּׁרִיבָר אַרִיבָּיָרָ יִבְיּיַרָ יַבָּיָרָ יִבְּיָּרָ אַרִיבָּיָרָ יִבְּיָּרָ יִבְי बाउदः दर्भे बारा विचान् **धेन् : चुर्याः या** विचान वि শ্ৰহ্ম বিপ্ৰথা *ताः*म्बृत्यःत्रंष्यायः यःविचःन्धुन्-तुः चक्कुन्-व्वयःविन्-यह्यायः ग्वन्वः विवान्तर्भवापदे स्वा हेवा हेवा हुता हुता होता व्यापन विवास त्र्वततः बद्यतः बद्धतः शुः नर्त्रुतः वतः त्रदः तुतः ग्रीः तन्दः या निरः यदः प्रवा खुम्तः र्यम्यः बर्देरः वः मृतुरः नृरः। करः दयरतः वेः तेरः यः यवः यवेः नलकः श्चर है 'बुल' रे 'रे 'नब्दि न निर्देष अधन अहम 'हु 'दण' केर्' *वेश्व*प्तबेषान्त्री ब्राव्यप्तव्हित्यान्त्रीत्राप्तत्वत्तान्त्रम् । त्रायवार्षेत्रा र्नेत्रक्रिरः नवितः वदः वद्याः हिरः नृष्ठे हुरः नृदः धेनः हिन्द्रितः ह्याः ૹ૾ૢ૽ 'ૡ૽૽ૡૡ૽૽૱ૹઌ૽ૢ૽૱૽૽ૺ૱૱ૡઌ૽૽૾૽૱ૹૹૹઌ૽૽ૢ૽૽ૡૹ૽૱ઌ૽ૹૢૡ૽ૢૻ૱૱૱૽ૺ पक्षश्चर्यायन् रचयायन् रायाया । रारार्यायन् स्वाप्त्रायम् रायायः ॕॱ**ॹॖॕॱॻ**ढ़ॖ**ॖॸॱॸॕॣॳॱ**ॴॸॱॿॖढ़ऀॱॿॕॻॱक़ॕॖॱॺ॔ॻॱऄॺख़ॱॺ॔ॻ॑ॱॹॖॖॱॶ॔ॺॱढ़ॖ**ॹॱ**ॸऀॻऻॺॱऄॸॣॱॱ

यः नृत्ते बळेवः न्यदः यं रः चलुवायः यं ना दिः वावयः द्धंयः ने : न्यः वुयः वैदःहेलः ५ कः नार्थे ५ : यह्म र श्चे गः नशुव्यः न ५ : वैनः न द ६ र में लः गुरः **** ष्ठित्-क्री-श्वम् व्र**ःब्र**्यं प्रयानगदः दर्शेषः क्षेत्रः मव्यः क्रुटः मव्यः स्वयः वेषः ञ्च र्या सेवया र्वेदे रहर पहें नृत्र मृत्य विवास स्वर्त र्वेद स्वर् विवामीयः प्रवास्त्रः मृद्धः त्रमुत्यः वेषता वृत्यः विवासीयः विवासीयः विवासीयः विवासीयः म्यम्य धेद के मृत्रा व्या द्वार क्वा क्वा क्वा म्या स्वर क्षेत्र या विष्य यदे शे द्व गुग्य केव पर्ने पर्ने ग्यूर विषा श्वर वा हेय शु र रर लयर.श्रर. थंथ.रंट. क्रूंबे.रं. क्रुंबे.सं.हं.लंट.क.श्र. यक्षाचण त्र्रक्षक्षः व्याप्तः प्रकार्यस्य विष्या नवनान्द्रात्स्यास्नियास्याकाक्ष्रानात्तर्नुनाःश्रेवाःश्रे राष्ट्रिन्तरः <u> न्वरः न्यंनः यहरः वरः श्रुवः यदेः वेनः श्रूरः न्वरः वेः न्वेष। विनः ग्रूरः </u> नगातः ववः तर्भे च्यायेनया ज्ञेवः मया म् स्युया यज्ञेन् मन् मनु । यद्या वे । **ॲट-इनल बेर्-डेल**-वन्-दलन्-रेन्न-श्रुट-इ-र्वन्दन्-र्द्वन्ल नेटन् ठरः बरः पर्यः क्रे 'क्र्यः क्रुयः क्रेन् 'न् वॅवः पर्यः यत् 'वरः वी के 'क्रें वा पुः वर्षे वः '' क्टरानी मर्द्रवापट पर्ववार्य विवास मंग्रह्म मान्य मान्य मान्य स्वाप्त मान्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व वरानेरामहुगान्ने मुल हेरान्में वर्षते त्या हेर्रा हेर् इवरात्य वया षदः न हरः वृत्रः श्रे र श्रु दः न द्वेषः श्रु : श्रः श्रे : श्रे : श्रे : श्रे : स्यदः श्रृ वाः तस्त्रित्त्र्वाक्षे कॅग्पिके स्वापिक क्वाप्त्रे स्वर्णके स्वर् **व**.च ५८.ऋ.लट.क्षेट.बट.टी.लूट.शब.२.२४.लट.शु.५४.च४.च४८.मे...... र्या पञ्चिम्या च्या प्रमाण प्रमा हिया महिमा या ने निया प्रमा अपि

स्वात् नहें नवात् व्यात् व्यात्यत् व्यात् व्यात्यत्यत् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्य

स्थान्तर् अ. चार्च . त्र. चंच्यां सूर्यं . त्रं चंच्यां . चंच्यां सूर्यं . चंच्यां चंच्यां . चंच्यां . चंच्यां . चंच्यां . चंच्यां . चंच्यां चंच्य

क्षार्यम्यान् नृत्याष्ट्रियाची म् ने म्यायायाया क्षार्यात्वरान्तरान्तरान्तरा ळट्राश्चलाळ्ट्। देरामहेदार्मणास्वार्मेद श्चरार्म्याणाण्चितारम्या तप्त. में. त. में या प्रिया विया प्रया श्रीया विया स्रा में या स्या द्वा प्रया प्रया में या स्था स्था में या स्था वयायरगयाकान्दायरकाक्षेत्रं स्टान्दार्येग् वित्यास्त्रं दि वित्यामी वदा न्यर प्रते थे ने भून हर हुन्य है न्यर स्वयं कुर प्रति स्वर् वयः ध्रेषाः त्यदः स्टार्या चुः द्ष्रेषाः वेषा वश्वा वश्व न्न्व-धरे छे तन्वरा शु हिर इन् तरहर पर न्रा न्न्व पर वर्ष श्रूर ष्ट्रें प्रत्येग्वाची में अनवा न्टान्धुव व्यान श्_रि सुदे प**र्डव** शुटा चेन् वाववः न्दः दे नेवः म्वावायः से वा श्वरः वा श्वर ने न हुन्द र अपर पश्चर पर नहा। इर ठ र हूर पर वर वर धेन त्यव मेन तक्षरःचक्रुवःयःध्वेरःश्चेषःर्श्वव्यःग्वे त्वेतःषश्चरः ह्वव्यः द्ववःयः चुरः..... 921

यूर्मिवर्ष्याः वेद्यः वेद्यः वेद्यः वेद्यः वेद्यः वेद्यः वेद्यः वेदः व्याव्यः विद्यः विद्यः

मन् भू मान हरान दरा बहर १ १० देश विदाय दिया दे हे र याः सुमा स्प्र नमायः स्वार तस्य विष्य विषयः **ॿॖऀॱॿॖॱय़ॱय़ॸॖॖढ़ॱय़ढ़ॆॱळेलॱॺढ़ॺॱढ़ॖढ़ॱॴॸॱॷऀॸ॔ॱॸॖढ़ॱय़॔ॱऴऀॱ**ढ़ॕॸॹॗॸॱॸॹॣॺॱ चश्चरः**क्र**ःश्चरः**क्षेत्रः राष्ट्रः विषयः विषयः विरः "……श्चेतः ययः गुरः यग्नेदेः यन्त्रः विष्** वःर्द्रवः इयः नवे :..... "वे वः वनवः मन् नवे ना व्यन् मः वः नु वः परः। देते.*षद-वेद-*हे-त्व-प-द्द्द-पदे-"ळे*ष-*मृवे*ष-वेद-दुद-ह-*युन-हेष| बर्ळेर-ळॅब-ब्र<u>ें</u>ब-४५र्देर-५ष्ठिल-तु-ब्रॉल-ह-घेनल-झ-देश-घेनल-झ-धनः र्श्वः मृद्रः परः प्रग्रदः त्रुं व्यव्यम् । प्रवादः विष्यः प्राप्तः व्यव्यादः व्यव्यादः व्यव्यादः विष्यः प न्वायानुनातुः नम्यानञ्च राम्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्या यरः मृर्यत्यः हः स्तुन्। तः नृर्वे हः सुनः सुनः सुनः सुनः । " त्रिन्यन्त्रः वि सेनलन्त्रं लाम्बेन्त्रः नि त्रुव्यत्रे केलाम्बुक्षः केवः बर्दर् बुतै विवयाय दे रदा बै दुदाह थेनब तहुव "ने दिरान वृत्ति **ॾॆॠॱय़ॕॸॱढ़ॸॺॱॺॕॸॱढ़ऻॕॸ॔ऻ**॔ॸॻॺॱॾॖॕॿॱॺॕॗॱॸॕॸ॔ॱॿॺॱढ़ॸॺॱय़ॸ॔ॱॿॺॸॱ बह्यः लु 'पर' बर्केन् 'पॅव 'क्व कुरा'या बह्य 'न्र र बड्ड्य' हेव 'व्या व्या " " त्तियःर्ट्यः इवसः श्रुद्धं तथः तुः नष्ट्रः । नग्नतः त्त्वं वः टेः न्यं वाः हवायः यः तकरात्यराग्चे तेन्त्रम् मृद्रास्य तथा द्वरायस्य । "@ठेता न्त्रायाः ब्रिटा दे.पस्ता.**क्ष्रांब.क्ष.क्ष.व.व.व.व.व.व.व.व.व.**व्याचीयाची... बर्न् दें न्वा कुरार्ट्र हुन्य न्तुन न्वा हुल है र न्या ल निवारा

⁽玄如 まべうため・うべる・ふた・)

[&]quot; ② (द्रमधर दृद्य मेल वे स्ट्रम् न स्टर्भ न स्टर्भ न

ब्रिन्ज्या वर्षास्त्रम्यायते क्रिन्ज्यातः स्त्रामा वर्षाने से से वरकः करामहरामुकाला नेता स्वाञ्चनाया के सामान तक महामान स्वाची स बिटाकः मञ्जद्या भैदा। अपया देरा द्या वाया वाया विवाद वाया वाया **पळ.स्न.**पन्यत.बुन्य.स्न.स्नेश्वय.क्रीयान्ती.स्नेटर.जु.सर्यत.स्नेथ. स्नेयर व्यः श्रे : सरायहर श्रे ज्या केरा र्वे दाराव्या यात्र त्राराय वर्णा यात्र त्राराय वर्णा वर मर्ज्नात्र्यम् मेयाक्षः यानाम् वात् । च्यानामा वास्तान् । वास्तान् यानामा वास्तान् । वास्तान् यानामा वास्तान्य **ब्रॅ-**.पचयाब्रेटयावयाब्रेबाब्रेटामाब्र्चर्टा र्वेदःपचयाचाब्रेयः क्ति. सर. सर. थे. बच. पश्चे. बचर. खेळा. खेळा. चेरा दे. बळा व वर से स्थ मवियामने म्यापित म् विवि म्यापिव में विमायविष्ये विमायविष्ये विमायविष्ये **क्रयानभूरावयार्थयात्वेवाक्षायरात्वेराभ्रायया** ष्र्याः ईर्टा द्वे व्यवेर म्राज्यान्य व्याहः वु न्दान्य राष्ट्रां राष्ट्रयाय वेषया यसः स्वायाय हे न्या नन् भि नहेन्य वि त्या नन्य हे हे ये न्द केंद्र वि स्वाप स्वाप **द्यग**.पक्षत.श्रॅब.पवा.च **२ च.कूर.**। हैं.जपु.धं.बद.पक्षयथ.वेंपु.धहण. र्रः आर. परीया पश्चराविया पर्या पर्या क्षेत्र नन् मु वे कुल न् नर् अळ्च ने नगर वर्षे स कुर के तर वे नल स वृते इर वकर रूर क्षेर क्षेण्य हराय बेण पर्चया रे वया नर कुण नम्राञ्चते व्। वर्त्राम्रवायदेव लुकार्व्यान् वर्त्राम्य स्वायत्। वसाविदः मीसार्गादायात्रा है द्वा पर्ने माराया मिताराया मिताराया

७व। नया<u>श्चेन् श्रे ळ</u>ं यानञ्जेन्। यह्नम् यह्नम् यह्नम् योवान् यस्य ने श्चेन्। कुनः व्याम्ब्रम्या दे न्यार-प्यादः तहायाः ग्रीः श्रुरायः पद्धन्यः नैरायळवः सं **दे-रदःव्यन्दः इं-वृत्रुरःवृत्रःक्षः**यरः**यँदः**यदेःगृतुदःवृत्रयःरोरःश्चुः..... **र्मा र्मद**रस्वरुद्धनः विद्यान्ति । विश्वराद्ये न्या स्वराद्या स् यदः विषयाञ्च चरः हेरः तुः अवाया यतु रः यदः द्वे या यहः विषः च्याः देवः <u> र्वादः दश्यः र्दः चन् रञ्जे देः स्वायः व हे वायः श्रेयः सेर्धियः । या</u> **ळ**न्न द्वान्य द्वाने वात्र म्। इ.हे दु.स्. <u>बैय.र्टा वर-श्रेचया</u> ही.क्य श्रेर-क्षेट्याग्रे.**अ.डेय.**वि. बाल्बाया श्रीराञ्चीराञ्चेताया वाहेबाया वाहेबाया वाहेबाया वाहेबाया वाहेबाया वाहेबाया वाहेबाया वाहेबाया वाहेबाया मृद्धरः तर्रायः गृद्धर् पर्दः सुन्नायः तन्या सुन् तस्या स्वायः देवः कुषाः पश्राबद्या र.क.र.ब्रेट.ब्रेट.ब्रेट.ल.ट्र.ब्रेल.वे.ब्रेट.क्ट.क्ट.बराबराबर्ट. शुन्य केन ने तर्म यर्रा र्षम्यः छै : व ८ : वी : वर्गे ५ : श्चे व : इ अयः क्षं वयः शु : हु ५ : ४ : ५ यः वयः " ५ व दः… दन्नराष्ट्रीः"वेरःचदेःध्वायः विवादे कवायः सः अवत्। न्तान्द्रन्यान्तान्तार्वे र्वे राज्यान्या विष्ट्रित्वार्वे विष्ट्रान्या **ૡਜ਼ਜ਼੶ਗ਼੶ਸ਼ੵ੶ਜ਼੶੮ੑਜ਼**੶ਫ਼ੑ੶ਜ਼ਗ਼ੑੑ੶ਸ਼ਜ਼ਜ਼੶ਜ਼੶ਜ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ਫ਼੶ਜ਼ਖ਼ੑੑ੶ਲ਼ਜ਼੶ਗ਼ਜ਼੶੶੶੶੶ श्चे**र**ॱश्चेरःपत् ब्रयःखयःपत्रे सर् ज्ञाश्चरः वे बहरः नश्चेरः द्याः । । कॅल्प्स्ट्रेटका छ्रुपासर ग्राम्या स्ति क्रिंत्र स्था ज्रुव ग्राम की महरू वर्ग वर.१८४८। "क्रर.मेल.४०४।होर.चवर.नेय.इर.क्र्य.थे.र्वर.

मञ्जूर-वेन्-यन्ने न्वळ त्मुल-वुद्र-यत्यः......र्यन्-बूद्रत्यन्द्र-सुल-तुत्रदः" हैर-रह्माया क्षेत्र-पदि मात्रवाहंया हेत्र-रे रहिताहंपवा के दि त्याँ मी অন্বান্ধ বিষ্ট্ৰেন্ড বিষ্ট্ৰেন্ড বিষ্ট্ৰেন্ড বিষ্ট্ৰ বিষ্ট বিষ্ট বিষ্ট্ৰ বিষ্ট दत्रकाशुरकान्त्रॅवायदे र्वो तत्तुवाळे दे परायातवाया नाशुरावेरा**.....** दञ्कासुरकार् कॅव्रायदे र्यो 'दतुव'ळेकास'दर्र्' पान्नकावका सरः " नहःरुवः ग्रेयः श्रेदः श्रुंदः मैं । मृत्रेयः नृषः हुः छैवः हे । दुरः श्रुः कुषः अपया **थेतु के बर कृदे खुतु रॉज्या कु न् अण न्ट २००५ न्या या बॅब छेन् धरः** । न मृत्यापा वि 'धुल' सुतु 'धेल' त इत्र सु द्रार में व ' यदे ' सु व व उत्र स ष्ट्रपरा ग्रवरा द्वंत्रा कु 'के 'तु 'धेव' हे ' य घरा शु दरा 'न बॅव' धरी 'न बे ' य तु **व' '** इस्रतः ग्रैतः न्यादः स्वान् वृंदः पदः न्योः तत्तु वः इस्रतः न्यः द्वेतः यः ग्रुतः **६**च इ.६.पषु.स्.चर.ची.च्.यहूर.ग्री.झ्.डु.ययाडा.झ्यायायहूय.हे. श्चेन्:ऑुर्:पे'विवेदा:वृष्यःय:वज्जुदा:य:देन्:**"ठेल:न्र**ा **"**नॅदाक्तेदाने**ः** <u>डुर्-हेरा-र-ब्रेर-र्ड-र्ह्नन् द्वरा-द्वनायः न्</u>ठन-वरा-वर्-प्त-पत्नायाक्रयः-पदः--<u>जःनेवयः इंजः विकः नेदः। व्याच्यान्य वृत्ताः वयः श्रः वदः न सः नेवः ग्रेयः श्रेयः श्रेयः वयः श्रेयः वयः श्रेयः श्र</u> बर्दरम्बराहे द्वान क्रानेवर नहन नहन हरा दिरान्य बर्दा ना र्ने 'नका ऋषेत' हैं 'विष्' सुरा' शर्कव से र शेर्' श्रुं द'वी' सब वा सि **र है 'इंक'** 'धेव पः नेन्। "णेडेल' प्रॉपन् प्रतुष

ति । क्रिन्य विकास क्रिन्य विकास वि

क्ष. क्ष्यं व्यक्षः स्ट. व्यक्षः व्यवक्षः व्यवकः व्यक्षः व्यवकः व्यव

त्रवार्ट्ट क्रियां विवर्ष विवर्य विव

हेश्यः प्रस्तः श्र्याः व्यान् व्यान्य व्यान् व्यान् व्यान् व्यान् व्यान् व्यान् व्यान् व्यान्य व्यान् व्यान् व्यान् व्यान् व्यान् व्यान् व्यान् व्यान् व्यान्य व्यान् व्यान्य व्यान्

तः भ्रेट् भ्रम् वर्ष्ट प्रतः प्रतः व न्या प्रतः भ्रा प्रतः व न्या व न्या प्रतः व न्या व न्या व न्या व न्या व न्य व न्या व न

^{🛈 (}हूं विते इंश वर वर् विन देव देव 216)

ब्रुट्यान्नेन्य या केवा स्रितः महिंदः स्री कना स्रेनः वया खेटा त्या रहा हिंदः । **गै**षःश्चेर्-ग्री-वयःगःनञ्चययःहे 'श्चे' तुर-ह्न्य-हेंन-ग्रुट-ग्र्जुर्-४्षःकु ' वृषाः मुं भेनवा दर्देत मुल ह्रवा लव विवेश रेट लट र हुर ही मु मा श्चिरः सः अन्तर्भः धिमा मी तहारा 'नगावा अरम्या स्तर्भे । त्या देवा त्रित्त्वत्व त्रेत्रपष्ट्व प्रत्येत् वित्ते के ते के वित्त क्षेत् के वित्त मानुवार वेतर वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा निष्म वर्षा मुल्य हैं। श्चेर् वश्र्माञ्च र्वरः ध्वमः कुलः यः वर्गर् रे महोरः श्रृदः ञ्चेदः वर्धेयः दें *** बैद्र-इद्राची केंग्स-मञ्जूल। "ठेद्र-इट्रा "श्रेद्र-दिदेद-दिरी-देद-सुद्र-पश्चरायान्तरायाक्रम् वी.सवाना न्दा प्रमाया स्वास्यानाया प्रमुखा मया मुला मंदी त्याया सवा देवाया से दा । " 🛈 हे या दावि न धा क्षेत्र में दा सवा **য়ৢ**न्-पदे-श्रेन्-मयाबेन्-स्रमण-मन-पदेव-ग्री-मयाम्य-म्-बी-कॅन्-प-ने----न्रायेन्य वळव में प्रा दव गुर "द्र गुर द्र में व मुल रायर" <u>बैर-प-रेदे वर-द ब्रेट-कु वण हु व्याप्त यय प्राप्त क्रूर-२क्रेट्-सम्बर्</u> "ने तस्यान्नातात्रकातुराश्चेकावळेता सन् व्राव्यकार्यान्यान्या ड्डी. बियाक्षेत्र। अ.च. च श्वारायद्यात्र क्र्या च क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया र्यत्यक्रम् र्मुर्ग्रद्यार्यायत्वर्यायायाये विषया स्वीत्या मृत्रेयःग्रे सुग्रायम् व दरः द्वा अवार्षः स्वा व दरः द्वा अवा ॅॅन्य्यःवनसःवुरःचग्वःतुरःचन्दःश्चःदचरःष्टुनःकुत्यःधंरःकॅॱबेद ५दः **ॻॖऀॱಹॅॱॺ॔ॱॸ्ॸॱॻड़ॹॱऄ॒ॸ्ॱॷॕॸॱॸॷॕॱॻढ़ज़ॱज़ढ़ॸॱऻॗ**॔॔ॱ॔ऄढ़॓ॱ

② (うつうね・繋っ・あ・うつ・だべ・40—41)

য়ৢ৴৽ঀঀৼ৽৴ৼ৽৻য়ৢ৸৽য়৽ঀৼ৽৸ৼ৽য়ৼ৽য়৽ড়৽য়ৢ৽ঀ৾ঀ৽য়য়৽৻ৼৢ৽ঀ

रॅ्व-२्टॅश-अ-ठू-अदे-ब्ल-ब-व्हु-ग्वेश-पदे-ह्यादर-वे**ट-पर-----**बदै वद्य दावन् तम्य विषय दे क्षेत्र विषय देवे दे हे त्या विषय है रॅंब-५२ेते-ब्रॅंर-ब-ब्रे-कॅ**- 1862 वॅर-इ-**ब्रे-कॅरे-ब्र-प-ब*वेश-पदे-ब्र-*प **८८४** अदेरे र न र र अर्थे र स्तुर में कि क्रुल मदेर र खुल क्रुल सुन्तर कि र न बेद्राञ्चर नर नेर नवि के यर्ष यात्र मु पर्म केदार्रा क्षुव् ऋ र न न र्याया वर्ष्याया केवर र्यानया ग्रीया न र त तुवा व वरकेया ग्रुट्-अप्ततुष्ठाः धरः पहेवः रः श्रेट्-१५ श्रेष् । सु । वक्षःश्रेट्-ग्रे-पक्षः देवः । । । । पश्चिर्याशु^{*}यात्रुवः पर्यार्थेदः राष्ट्रेवः शुक्षः द्वदः श्वयं राष्ट्रः बहुवः न है नवः क्रेवः में क्रेंबः श्रेन् खन्यः न वेषः ग्रीः य नवः य वेषः नवः म २मॅबरड्डर'नर'ञ्च'न'म्बुयप्यते ळेबरम्बुरम्बेबरवेदर्दर'त्वेर'दहतःब **ई**त्यःद्रम इ.५इ्य.टॅ.पपु. थ. यपु. थ. यपु. थक्ष्य. व्या. क्रिय. व्या. क्रिय. व्या. क्रिय. व्या. क्रिय. व्या. क्रिय. ग्रे**लासुता**नदीः तहताला नृतान् लेता ब्रकाला पहेन त्वला श्रेनः नृपदा ब्रह्मनः । मलेक मन्दर पारे र्रा अस्य मन् श्रुर श्रुर श्रुर श्री से श्री राज्य है । ब्रॅच.च.मे.र्चा.वे.पेंस.चवेक्स.चयुक्य.ग्रीया.पच.प्रच.चव्र.च्या.चेक्य.चेक्य.चर्च ने हेलानमन ज्ञन रे छेन नक्षेत्र पान्य के ले न न पति में नेवा दे ह वा वरक्रा मन्दितः त्राप्त वर्षा भन्तर वर्षा भन्तर वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे वर्षे

⁽इंबरवर.रेंटथ.वंज व.जूट.वेब.चंट्य ठेठ)

अर्डेन वया रेता श्रीत सम्बद्ध महिला मी दिन्य तम्बद्ध तम्बद्ध त्या स्वर् **ॅर दिन नङ्गे प्रवन अहर् कुर र्न दर्श राज्य सुर नशुवा पर दर्श राज्य स**् नगतःतुरःनन<u>्श्रु</u>'नःमलुदःसःसर्ढमःन्दःसुम्रःवर्द्रःग्ठैमःश्चेषःः बर्दर् हुर बॅल बहुव अँदा में दर बर केव पॅर महोर अहव अँव न जहुर ्मग्रातःभेगः ध्वेतः सेमयः अयः मदः गृष्टेयः द्वारास्यः तुः कमः श्रेतः ययः त्रेदः । त्ववः लु न्वीत् न्वेतः कुर सदः दर्शयः ह्वा न्दरः छ यः हेरः व ठैवः *वैद*ॱनग्दःतुरःनन्दःञ्चःनःवैदःञ्चःत्रदःक्षेदःद्वयःक्षेरःनञ्ज्ञद्। "Ûेद्यः न्याया सन् क्षेत्र व्याप्त व्यापत व्याप रट हुट लेवा वा ता धेव हे इस सम्बर्ग वटा वि देते हु न द्वा परे **"ळेलामतुवानेवामें मारायान्चावेदा ह्याय देवायाया मनेवाची महाराया ।** यॅर-बरद-वृद्धंय-त-दर्भ वर्गाद-तुर-वश्न-क्षु-र-र-धुव-क्रुय-वॅर-न्ग्रे**राः इंद**े केदायं वाह्न कुरा..... क्षेत्रया केदारीन् विदेश्व वाह्म न्यार्थः " क्रेनरा:पञ्चर:ग्रीरा:अव:पद्गर्नः वहत्य:तस्त्। मूर:रा:मुव:र्टर:रेदः मॅं के न्मा के बेव कवा के में मानुके कि मान सुमार माना ही **চন** আমৰ্ ম নহল ৰ্লাধ্ল নহু ৰাল গ্ৰী নেৰ ৰাল ইৰা অৰ ভু ন ন্দ। वानव्:र्राट्रक्राव्याम्येर-ध्याःश्चेम् श्चरःख्याः वितःविद्याः विदःव्याः षॅदॱयॱ**ळेव**ॱपॅरः*गुरा ५५५* ग्री धुषा ५ **ळ** ल ५ ग्रु 'धुषाय लुखा" @ेवे रा ①② (इबाधरानुद्रकानेवाचे व्यद्धान्य गुद्रका 92-95)

र्षम्यः म्यायः वदे 'न्या दे 'श्रयत्दे 'सं कुत्र' कुत्र' कुत्र' कुत्र' कुत्र' के स्वादं 'या धिद'

पन् मुं निर्म् खुन् मुं निर्म् खुन् मुं निर्म खं निर्म् खुन् मुं निर्म खं निरम खं निर्म खं निरम खं

<u> २८-छ.सब.ज्. ४८-४४४० वि. तपुर.चे. अबूब.त्. छ्. ८ ४ व. क्थिट स्वर्तिः</u> पर्श. यय. वे. थ्र. वि. वे. श्रुप्त. व्यापर. र्ह्सर. दरा प्राप्त विरामी. सर् स्र-र्धदाष्ठी ग्लुट ह पर्धयायस्य **⋾**बर्याम् हॅरायाबर्। न्दा मु-विन्यवेतः तथा श्रेन् पठवा मुल्दः भेषा स्ववादि है। न-र्र-भ्र-्-वञ्चर-पत्तुर-पञ्चिष्यार्थाम्याः विषयाः वेर्-स्र-क्रि-क्रे-क्र-----बॅर-लॅब-ध-इक्ष-क्ष्रा दे-हॅब्न-ब्रक्ष-इन्। बर्ने-द्यॅब-द्यद-क्रेब्-द्य तर्भः नृतः। विदः नृष्यः नृष्यं नृत्रं वा सुवः स्वावः स्वाव बे.पै.रे.प्रस्तात्त्र, सिर्न्स्, श्रेन्या बे.प्रस्था वर्षा है. हे या के. न्ने त्राञ्च न्यान्ता न्में वाळे वाञ्चार्या व्याण्या क्याण्या क्या त्रुषान्षेत्रापदे तु . भेषा नेवा नसून त्युं नः पा नरुताया नहे व . मेन लामवलाग्री कु में रायमें पहें वाह्म वाला प्रमाया प्रमाय विवास हो । हनान्**ठें** अनेव पें ऋअ कुल सं तु अधर पर्त्नु र ग्रेश जेर क र्वेर पहर . *শৢঢ়ৼ৽৸য়৽ৼয়য়৽ৼয়য়ৢ৽ঢ়য়৽য়য়য়৽য়য়ড়৽ড়ৼড়ৼড়৾ৼয়ৼৼৼ৾ৼ৾ঽৼ৽৽৽* नक्षं नल्या व्या न्त्राया व्याप्ताया विष्ठा *न्सुषायन्तः*न्धॅव् यर्ने याष्ट्रायः के न्यनः कॅरासुः न्यवा न्सुनः यठकः द्रवया विराह्त त्या र्वाया श्री या 1863 ह्र दिन स्वा स्वा श्री श्री या ने बेयातपु क्रियान्तु के वा क्षाया विवाहित हिमा वा माया प्राया प्रिया मि बर्ने न्दा हराहरा दें हरा दे वि कप बर्ग न्यय मृत्रवाता ব্রংখ্রনে:ব্রশ্নর্শনর্গনর্গনের বিজ্ঞান্তর বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্তর বিজ্ঞান্তর বিজ্ঞান্তর বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান বিজ্ঞান

क्रमः श्रुपः श्रमः श्रम

ষ্ট্র'ম' 1864 মৃথ-পুর-ট্র-মুর-শ্র-মুর-মুর-মুর-মুর-শর্ম----*ढ़ॖऀ॓*बॱक़ॱॴॶ॔॔॔ॻॱॴॻ॑ॱऻॺॸॱॻऀॱॾॕॱय़ॕॱड़॓ॿॱय़ॕॱख़॓ढ़ऀॱॾॗॗॿॱॾॣॸॱॲ॔॔॔ॸॴढ़ॿज़ॱॱ वि तुरक्रि हुन क्रें नवर अद्वित रम स्मर्य द्वा मैका अविद्य वहर् तृ त्यते न्त्रा यदे यळेषा ह्यु ता ते दार्थे करार पा हु राषी पञ्च पा क्रिया त्तुषायवे**रा.ग्रे**.ब**६८**.श्ले.ब्र.पथाक्षेत्राचश्लेरता सन्देते वर त्त्राचन्द्रप्रते छे या हो राष्ट्रप्त हो वा हे ग्रीट्रप्त म्यू के स्वाद्र के वा प्रवाद स्थाप श्चितामें श्चिर् श्चिरत्वतात्र त्राप्त स्वतान के राज्यान वर्ष या स्वतास्य ववर ग्रेयार्वेर त्राधिर । प्रताम वैया कुर १ क्षु व ग्रुय । द्या द व्या तु । श्रु । । । । । <u> पियसः यः तर्षेः निरं क्षेत्रः सर्वः नः नरः ह्यं गयः हूः यदेः ह्यः यः यक्षेत्रः यः यक्षेत्रः यः यक्षेत्रः यः य</u> इनिया पर्वते श्रीपया वि त्यरीया पर्वे राष्ट्रराष्ट्रियाया श्रीवाया प्रीवाया परि पश्चरतारा स्वीया इया घरा नु ग्वायाया चरा "ञ्चापार्वा अस्तर स्वीयाया अस्तर स्वीयाया अस्तर स्वीयाया अस्तर स्वीया नवेशःवेदःश्रीः तहः तह्रदः नवरः तङ्गतेः श्रूरः व नवरा हरः हवः श्चिरः केवः यं रः खरः लुः नृरः। ष्रयः मवः यः सरः लुः मकरायः धर्मः नृयः

पञ्चल" ७३ ल. द विद्राया क्षेत्रातृ त्यारी ज्ञा था बळे वा दातु दार्ग् तु दार्ग वा खारा नर-पहेद-ञ्चन-र्मन्यःश्चेर्-श्चर-न्यर-पश्च-मन्द-क्वरे-श्चर-त्यःत्रतः श्वर-पन्नदः बदः क्रें तः अंदः खंदः बदे तः च्रें दः क्रें दः क्रें दः विषयः वः विक्रें नवनानवरःस्वित्रः सर् नेत्रः नव न्याः अयः नवः यः तत्यः स्वितः स्विः सरः विः सः र्षर-तृषः ठेषा-तुः श्चुषा-त्यः मङ्कषायः ष्वष्यः यं रः सळे दः विदः। इया सरः वहेंत्रके द्वाया होत्र राष्ट्र वार्ष हुवाया वहेत्र या ही वार्य वहेवाया बद्भः श्रुटः बद्धः द्वेतः पर्दे विषयः "र्मन् कु रे दिन कु या र न या अवस्त विकास कि सा अवस्त विकास कि स्वा য়ৢ৾৾ॱঀয়ৼ৻য়ঢ়ৢড়৾৻ৼয়৾৻ৼৼৼ৾য়ৢ৾ঀৢয়৽য়ৢ৾য়ৢয়ৢ৾য়ৢয়য়৻ড়য়৾ঢ়য়ৼৼ৻ৼয়ড়য়৻য়ৢয়৾৻ ॅॅन्यर:श्रेन्:श्रुंन्:बी:बुन्यःत्विन:प्वेय:न्बेय:श्रुन्यःत्हृनःवुयःपःवयः**ः** चवेषाश्चिषाळेषाकेरान्तु केदानगदान्धुराबह्यान्राद्यायावेषाः *ॸ्*ॸॱढ़ॹ॓ॺॱॸॺॱॾॸॱॹऀॸ्ॱॹॗऀॱॿॖॖॺऻॺॱढ़ॺढ़ॱॸढ़॓ॵऻॣॱॱऀॿॏक़ॱॸॱॸ॓ॱढ़ॸॖॱॱॱॱॱ য়৾ঀৢ৽য়ৼ৽ড়ৢ৽য়৾ঀ৽য়ৢ৽য়ড়ড়৾ঀ৽**ৢঀয়৽ঢ়ঢ়৽য়য়৽য়য়৽য়ৼ৽ঢ়ৢ৽৽৽৽৽** त्रुत्यःमव्हः नृहः त्रेवः पञ्चः पव्यामव्हः यः विषाधिवः यः वात्रा हः तुमः इयः वरः तुः "कॅषः श्रेनः ५ भ्रेवः ययः ग्रेः में गयः श्रुनः ग्रेः गर्ठः ५ भ्रेवः श्रेः तुराधरतात्रेव रेवाया के वितायस्त कुर्गेराया केवायरा मेवरा सूवा क्वॅन'सर्वे प्रगृद धेन' क्षेत्र सेपरा' न्द प्रमु**न'यर्द न कु' धेन' न**्दा । स्रयः नवः इवः कुरावरा न्या दर्श क्षेत्र त्यरा देवं निर्मेश की सर दर्शन हरः

^{🛈 (}इस वर दूरल नेवा वे केंद्र मृग ग्रंदल 121)

वित्रात्त्रात्त्रेत्। हेलाक्षेत्राक्ष्यात्र्यात्रेत्र्याः हेन्द्रात्त्त्रात्त्त्रात्त्रत्त्रात्त्रात्त्रत्त्रात्त्रत्त्रत्त्रत्त्त्रत्त्रत्त्रत्त्त्रत्त्त्रत्त्त्रत्त्

इयावर वृत् श्री सं 1865 वृत् भिर श्रूर येते श्री स्थान वृत् या वृत्य

①(दवावर द्रवानिस्बे अंहर में गुण्य ए 122)

७(दू लदे व्यक्त क्यावर वृत्विष्ट्रेत ह्यू १३३७)

ন্ত্ৰাইশ্ৰেইশ্ৰুক্ট

1865 ख़ॱदेरॱॿॖॺॱॸॕॸॱॺऀॱॸॖॖॺॱॾॆॸॱढ़ॕॸॱढ़ॾॺॺॱॺॸॕॸॱॿॗढ़ऀॱॱॱॱॱ न्यम् देव मु त्राप्ता हे सेवाया शु गुरायरा वर्गात वाया माना वयाञ्चरः धरः कुः न्यवः "वेः श्वरासुत् ः वेन् ः न्वर्गः न्दः वठराः न्सुरः ५६ न चेन्-धर-८ हरः वेष केर्-जुल-रचरा ग्रे-शेन्-प्वर पेराप्यरा ग्रे-यर नुरः हरः (१५ र. व.नु.) मे नु रि रो र रूर् न ववरा र र र नु व. र र । इन्या त्यः इंद-में सु की मुल सहंद रेद केद लदर द्वम इरल हे म विम्त तरेग्र कु त्यस पर्विष द्या पर्त्र के कि किन् र्मेष प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति । देन्। "ण्डेलाम्यायानान्ना अन्यान्यंत्रातिः श्चेत्रायसः श्चेरातिनाने मन् न्वनानील क्षंत्राव वराधर क्षेत्र श्वनाल केव छल हेन क्षं क्षेत्र न्ता डि. র্মুন্-ব্যা-শ্রুন্। তুলা-স্কু-দেরি-ব্যা-শ্রুন-র্মান্ত রাম্বা-ম্বা-**ইরা-মন্ত্র** वर्षे द.तू. इया ग्रेपा ग्री की नदी. न्नर्यायधराञ्चाय यत्व पदे वरा য়ঢ়য়৴ৼৢড়৾ঀ৾৽ড়য়৾য়ৢ৾৾ঀৼয়৾ৼঢ়ৼৼৼ৾ৼৼ৾৾য়ৼঢ়য়৾ৼয়য়য়ৼঢ়য়ৢ৾য়ৼয়য়ঢ়**য়ঢ়ৼৼৼ** क्षान्या । स्वानेस्वान्तिः स्वानान्तिः । स्वानान्तिः विवानीवानीनः विद्यानीनः स्वानीनः स्वानीनः स्वानीनः स्वानी पहेक्'लॅ'नेते'त्त्र्'पायकुन्'पति'ळेल'न ठेन्'हेक्'ळ्ट्र'व्यापर'ल'**ले' पकुनः'** हे वर्षे व इ य ध तु न्मा ब्रैंब.के। ल.सेब.पर्य.ब्र.पर्वे.संब. त्नातः भवः नुका नुक्नाः नुक्नाः चर्चनः चन्नाः चन्नाः वा क्ष्मा खरामवर्षा उर् क्षेरा वर्षे क्षेर दिना क्ष्मा रूट के पर पर वर्ष करा ययारगदान्ते विययात्वरातु कुते यहतात्रे यया हुता है। सुन्दिरी वैरः कः ने : वृदः यह नृषः यह रः श्वेषः यह रः वृदः वृदः यदे : यहः

^{((}तू निते न् वरे इस वर्ष्य वर्षे के ने रेप र्रा २१७)

स्यावरान्त्राकेताकेत्याकेत्याक्ष्याक्ष्याः श्रुप्ताक्ष्याः श्रुप्ता विकाः विक

⁽पू प्यते श्वायते स्वाप्तर वर् विष् देय देव १२१७ — 218)

न्दा "ञ्चन्या कर्ल्ड्रया सदानु नेमका १ ज्ञेन व्रतान्यामना वा**वेवः** पञ्चराष्ट्रस्य । चग्राता चग्राता हेत् **हे रेवा शुपाया देश** मःमविषापतिः मृग्नामवा नगानः भ्रवः सुव ळ्वायः (सुःसनः) ळेः नगरः ₹·हररेंशराम्बेलर्परे हॅग्मव्याप्ट संचित्रें ग्नेर्राया केर्या मुनेशासु मिते कुर् तहेवा यगत स्वा के र्पर र्पर प्रथा रपर त्या ल्ब की के लि के हिर हैं नवर लंब हव ला है र के रर न ह ने न र हु : हु : ब दे : ब दे : ब दे : हु : ब दे : ब दे : ब दे : हु : ब दे : ब म्बेरामदे में मान्यवरा सदे है : क्यून तहें व महेम व्याप्त स्वरास्त चिलाबक्ष्यालाङ्गास्त्रम् स्वर्मा स्वरंभी स्वर्मा स्वरंभ मुल र् हेर रेय य ग्रुय परि हें ग ग्रुश र् त्रुश यर् द र्यं द यर् बानराक्षे न्नदार्वे रासुरारेबायानासुबायते क्रिनान्दात्व द्वीरार्चे बर्देरला प्रदासदानु देन्या सार शुरु से हेर देश साम शुक्रा पते हैं न न व न इस न्यं व तुर न र ख्या न पर के व व र तुर रे या प मह्यस्पर्वः मृत्यान्वराप्यक्या मृत्वापरः न्वमः द्वानुन् क्षेत्रः सुरस् २.पश्च. ईट.चेशेत्रात्तवा द्वाट्ट. व्याचिट. वाच व्यवाता प्रवास नवया है। ... नवरात्यर प्राप्ति वर्षे रक्षात्र नवर क्षा स्वर स्वर मिना में विकास निम् व्यानग्रान्त्रुरान्ड्र्यानान्। द्यायाकन् क्रियागुराग्रीयाकुरात्यम् वृषा मूर्यः कुर्यः स्थायः ५५८५ ग्रे : द्वयः ५ क्यः वृषा 🛈 वृष्यः ५ 🎏 ५ न्यः

क्रेंद्र-विचः क्वायः भेवाः ।व्दः प्रतः सद्दः क्वाः विदः स्वायः विदः यः व्यः व्यः विदः विद्यः । पक्ष्र-विचः क्वायः भेवाः ।व्दः प्रतः सद्दः क्वाः विदः स्वायः यः व्यः व्यः विदः विद्यः ।

1867 वृद्-रवः वृद्-रवर्षः स्यायः त्रः वे व्यायः विवायः वि

प्तिन्त्र ब्रह्मेन स्त्र प्रस्त प्रस

भूरः अन्य प्रश्न स्थान्य स्था

① (नृत्त्र नेवा वे प्रतः वृत् । श्रद्धः 139)

ga 124.44.5.02.5.12.13.1 वय. चेर. श्रेनय. वनय. यर्. *য়৾ঀৢয়*৽(৴৴৽)৾৾৾৾৽ঈৢ৾৾৴৽য়৻৸৾৾৾৾ঢ়৽৾৾৾ড়৾৾৽৾৾৾৾৳৽ৡ৴৽য়৾য়ৢয়৽ঀয়৽ড়৴৽য়য়৽ড়৴৽য়৸ঢ়**য়৽৽ ૡુ · (৸য়**৽)ঋ**৾য়৾**৾য়৽য়য়৽৾৾ঀয়৽৸য়৽য়ৢঢ়ৢয়৽৸য়৽য়ৢয়য়য়৽য়ৼয়৾৽৸ঀ৽৽৽ न्तः। ञ्चनलः नैः नः र्रानायः वयः रोतः श्वेतः। वृतः श्वीतः श्वायः श्वेषः श्वेषः वयः मुद्र'यग्रद'त्र्वा ई'हू' धदे है 'ख्रेंग्ल' द्रल' यहा 'य' द्राप्त क्राया विद्रा **कुर**-वे-दॅन-तु-देब-बेनरा ग्रेक-न्दुत्य वय केव-बॅ-ब्रेग्वर ग्रे-ब्रेट-तु------मन्द्र-इत्राने :बर्ळेर्-१५ सुला अयः नदः सेनरा नसूद्र- यहता दे मॅंटरका अकेंदर ऍकर दरा केंद्र माही च माय मुद्र की द्रम बहर्भेद्रामञ्जूदा व्यापार वार्षेत्र विद्राप्त विद्रापत **परः अवः** रवः वयः रहुषः वयः केवः कें रहुषः हुः तर्वयः यहे यः अर्दः । अयः **चत्रः र्वन्यः कुः न्येत्रः । रन्यः वर्यः ने रः यः अर्क्वनः यः अह्यः न् रः सुर्या** यायक्रमावयान्त्रया स्वाक्रिया क्रें र्योत् क्रुंदायक्रमाया नक्र्या तस्या क्रेंत्रा (য়ৢ৴৽য়ৣ৾৾৴৽৾৾য়৽য়৽য়৾য়৽৴)ঀয়৽য়ৢঀ৽৻৻ড়৾৾য়৽ঢ়৽ঢ়ৼয়ড়ঢ়৾৽য়ৼয়৽ঢ়৴৽৽৽৽ हेव-मशुब्र-सुत्य-र-र्शम्य-मु:न्यॅव-प्रिय-मी-मवर-क-न्रः। मॅर-रा-बर्कर् **ऍद**-पःश्चे:र्न्याः इयराव्याःगुरः अहत्यः र्नः ततुत्यः पत्रे यः प्राप्तः देवः पश्चिद्दरायाम् वदार्विः श्रुषायत्रद्दाः वृष्ठवायत्रः द्यीताः हृवः क्रेवः य राह्रष पर वर्दा "किता न्याय पर्दिय वया के के दि किट के दाया कर सुद ট্র-ম-ট্র-শের্রক্রন-ফ্রি-ম- 1757 মন্-মন-স্তুন-নস্কু-শৃত্যক্রানর-রাস্ত্রন য়৴য়৾৾**ৢ৴ৣ৾৽ৡ৾৾৾৴**৾য়ৣ৾৾৾ঢ়৽য়ৢ৽য়ৼঢ়৽য়৾৽ঢ়৾৽য়৾৽ঢ়ঢ়৽য়য়য়৸য়ৢ৽য়য়য়৽ড়ঢ়৽৽৽৽৽

⁽इव वर-र्रल नेया वे रहर में न नरल 141)

पते. वि. ने काला "चंद्र कुं त्या ने वि. त

4. न्ययः च्र्रं न्यायः श्रीः त्रः च्रीः व्याः च्रीः च

मिट्ट्या के स्ट्रिट्य हुट्ट्या स्थापतिय स्थापति स्थापतिय स्थापति स्थापति

शुःश्चेनवः मः वः चर्। र्यरः शुन्वावः ग्रुरः क्षेत्रः मुहः स्वरः ग्रन्वा विरः तः देवा वं वं या भी 'वेया लंब 'श्रेन' श्रेन' श्रेन 'प्रचा प्रचा प्रचा में विवा प्रचा स्वा स्व स्व स्व स्व स्व स्व श्चान्ययात्रहेयाम् इवान्त्रित्त्र्ययाः विमाण्यन् ततुम मृत्रान्ययाः म्बर्भवात्रा की र्या क्षेत्र रेश पक्षित्र वृद्धि प्रवर्ग रूटा व्याविक हेता त्यहा यम्याः सदः नितः केन् नि में दाने स्थायान विदायनः विवास्याः भैवा पर्श्ववाता हे 'तेर 'श्रु' न्यॅद' रेवाता वि हता द्वा वा बुहा ता के ता लु 'न्वॅ**रा**' देवालाक्षदायाद्वापनेदाकदासदेदाद्वीलामदेश्वेलातकदावेवापक्रेंद्रा । म.केर.कूब.शक्ब. व्या.चेथा.,बेधिर.कुथ.वृयावियावर.,खेथातपु.पाथा..... ष्ट्रित्तः भेगः पर्द्वंगता यः नृदाः विदेश्यम् गार्षेत्र दः नृद्यायः स्वार्मे वृश्युवः रदः लानक्रां नव्या च्या व्याख्या देशे त्या स्याम्यरा नवा चेत्रात्या [P'रेराहे क्रि.पर्वेर.र्वेर.र्वेर.व्हेर.ता.हेरातर | "व्हेर.प्र. वेर.त.हेर्यः *ঘ*শৃদ্বে দেখী শৃতি অবিধৃদ্ধে অভাব্য দি শে দেখী অবিধৃদ্ধী দুৰ্ क्रे.स.चलुर-मे.पर्याग-दे.मुंग्-दश-द्वेग-चरा-द्या-पर्या-पर्या-प्रदानेरा त्विन् र्ष्यन् देवान्वेन् ख्रायां व्याचित्रः श्रुवान्वान्यः श्रुवान्यः व्याचित्रः वित्रः वित र्राष्ट्रिं नावितार्यम्यान्त्रम्याः इतातु र्नेत्रार्थम्याः कराव्याः पनेर वदार्थ रूरा कर रेग्या कं परेर पुरा प्रसामित र्थे वा क्रिंग्य वैन:_{विस्}त्वतःष्ठिरतःग्रुःङ्गं त्यायःतुः चरतःक्रेवः पर्द्धव्वतः यदे विसः विषयः ग्रॅ. रीयामा नेया सर्या नविषा है। बिंदा कर अ. में राक्ष या कराया वा है द

मदर्श्येष व चेया राजी रक्षेत्र वक्षेत्र विष्ट क्षेत्र महिराक्षेत्र के वेया तह्नाया श्रुत्या द्वरा श्रून् . यंग्रय ग्राह्म . ग्रुह्म . ग्रुह् ञ्चमाञ्चित्रः विमान्दा विष्यरायानहेवामा सेन् देवा पर्वे तायर ग्वाया ढ़ॕ*ॺॱॻॖॸ*ॱढ़ॕॱॸॸॱॴॺॕढ़ॱऺग़ॖॖॸॱॿॖ॓ॸॱॴॺॺॱ**ख़ॕॸॱॸऺॸॕॴॸॕॱॳॺॱ**ॲ॔ॸॱॴॱ᠁ ङेखप्या के पार्ने स्पर्या । यदा के स्प्रोद्या स्वाप्ता के स्प्राप्ता के स्पार्थ स्वाप्ता के स्पार्थ स्वाप्ता के स् मुब्दाब्द्या अरामें बिनान्द्रानु स्वरापान्या ने व्यापि प्रवाला इर्-धुन्-अर्देर्-र्र-। दग्रदः कंत्रः त्रुः यः र्यम्यः में न्व्यान्यः के देशः धरामतुरामायात्र श्रु.सं. १८६८ चेरायातश्चाम्यरार्धयात्र्यात्र्य য়ৢঀ৽য়৽য়ৢৢ৽ঢ়ঽৼ৽য়ৢৢ৽ঢ়ঀ৽য়ঢ়৻৽ৼয়৾৽৴৻য়ৢ৽৴৻৻ঀঀ৽য়ৢৼ৽ঢ়৽য়৽য়য়ৢৼ৽ঢ়৽৽ **२ऀॱॸॺॱॾॗॕॱ**ॸॺॱॸॣॸॱॸॣॸॸॱऄॣॸॱॾ॓ॱॾ॓ॸॱऄॣॸॱऻ ॾॸॱऄॗॸॣॱॻॖऀॱॸॗॸॸॱॾॱ नविरःहर्विः भवाकुवाद्वाता अवः श्वाता विराधिता विराधिता विराधिता विराधिता विराधिता विराधिता विराधिता विराधिता व न्रॅं १९८२ न्य र न्य र त्य र जुर ही हो र नि कें य र प्य रे हैं नि स युन्यः ग्रे: बद्दान्य वितः च्रकः हे : न द्वनाः न ह्वन्ः ग्रेड्नः यह न व्यवः कुदैः चलमान्द्र-विकर्षी स्ति भ्राम्याने देशमानुर विनय के ग्राया स्वया नेवार्षव नहेव वरके नार्रा इवायर विषयि। न्यर दु विषय मःइयवारे दे पदिवायेन् या मार्थे विषया मुख्या मार्थित वृ १९०१ स्टान्स्टान्स्वानी न्यमा न्यम् देवा द्वी विष्यानम्य द्वेवास्य स्व द्रद्रंद्र-तहन्य पहर हेयानग्य क्षराविषय विषय । ह्या विषय हेर अन्या नर लब ने ने र में कुर नय त्रवर रूट के हिर विया सम्म न्यान्यात्रम् त्रम्यतः तुत्र कुरानु स्या क्षेत् वायतः वारायः र्यत् न्यान् ...

क्षे.यथ.ल्ट.क्षे.ब्री.बाव्य.रंततात्त्वे.प्यायीयात्त्वी.प्रप्रं श्रीययायक्षा. विराष्ट्रमया विराधारा त्या स्था त्या त्या क्ष्या सरा हिता कर् विरा रदः मै नवा या त शु न पदी त माना हूर शुरा दें मावा शुवासु खिदाया विवास वयार्या पर्दा त्यारा राष्ट्र व्यापा स्वापा स ब्रैट.भुवे.ल.भूरे.केंट्य.ब्र.पट.च.परीच चेचेथ.क्र.चर्य.चर्ये.क्षेत्र. द्वर-व-न्ययः६व-न्व-श्वनःश्वरःश्वनःन्यःभ्वा-त्व-स्व-स्व-स्व-ब. बुना क्षेत्र. क्ष्ट. क्ष्ट्र. त्या पहरा हे। सु. सुट. या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या लय ब्रेर्-ध-पर्झ -र्मेश-ब्रेश-ब्रिय-ब्रिय-क्र्य-क्र्य-स्म हिर-द्वेत-ग्रीय-लग-ध-**पञ्च**ताया.बेथा.वया.बेथा.रेथा.चयापायाचे.ह्र.कार्ट.बे.पी.पीटाना.पटाया पश्च भ्रम्या सं.लट.तया मट.केर.लच.च.श.स्ट.च.चेयाचया विर. बयः पते के र क्या विर तरा वी सु किवा यर पतर र अवयः मु त वे व व व व क् लाडुनयामानेत् चेरा नम् स्थान्व विवासान्य स्वाद्व मुन्तु वा सुना गुषायम्बर्गातः वि.स्व.गुषाञ्च.क्षंत् व्याव्यवायः मृष्याः स्वरः स नेट.च*र्टि.*ञ.इ.बय.चर्णल.वय.झे.ज.घवे.च.च.च.च.चे.चे.चे.चे.चे.चे.चे.चे.च वग्-प-८वेद-हे :चय-ग्रुट-पश्च-र-दल-कु-प-पश्च-र-प-रेट्-चेन हुर-विर-त्य-र्यत्य-द्व-र्वेष-शुन-शु-विर्म्व-त्वे-स्व-व्य-शुर-त्व्य वेनसः . 음소. 왕. 너 2 a

म्बद्गायरः स्वत्रार्थरेरः क्षायरः स्वर्ग्यते विष्यत् स्वर्ग्यः स्वर्ण्यः यदिवे वर्व वा बळें क्षं पा वेषा न्वर छे भेर ने वा वर के में वा वेष पर । यहेब्रिक्रिया अप्रान्ध्या स्वार्द्र वाश्चा ती ना व्याप्त वा अप्रान्ध्य वा विष् पर्म दे.लपट.व्र्म.यपु.पन्या.पह्ता.विट.केट्य.रेट.ह्य.वी.के.ता. श्चिरः सविषः श्वायः विषः स्रोतः यभन् । ईवः श्वः वरः पः तविषः विषः वर्षः न्येर व तम् व दहें व हुर हुव अंर व व रेत हुर हे न ঀ<u>৾</u>ঀ৽য়ৢ৽য়ৢ৴৽য়ৢঀ৽য়ৼৄ৴৻৴৸ৼ৻৽৴য়৸৻য়ৣ৽য়৸ *वैद*ःग्रेव्'न्यादःभगः क्र्दाक्तुराःभ्र्न्'ग्वीवाह्नदःतुःश्चेन्ःभ्रुदः यरःश्रृदःः बुर-वेनवानवाडुर-वन-भ्रनवा तनान-नवानान् भ्रवाड भ्रानवा म्इबःक्ट्रानु तर्ह्यावयाश्चित् क्रुंटा क्रेन्डु मृत्या গ্রী টিন প্রদিব. र्यते च र्श्वे**र्-ग्र-**त्य यह गृषा ग्रुर-म्रेर-त्य बर्ळे र-प्यं द ग्वे विराय रें हिराना लट् बुदि न्ष वनता श्वेय कु . वे च इ स्मान व द स . सु . पद्यन्तियाः मार्चे वः नृदः त्यतः नृवः तः वृवावः न्वावः नृवदः श्रुं दः वे वः न्यतार्द्रवायायवानम्याप्तात्वायायायात्राच्या

ने नगरी यद्र'वैन'स'नेर्'पकाः "वेश'मन्रप्'नेरेने ने ने के अनवारे राष्ट्र'यरे ञ्च : वा व देव : व्यव्या क्रु : वळ वा : न्रः प्रकः क्रेव : यक्षु नः परे : न्यदः **ञ्चनामहेकामाञ्चादाञ्चाधेदाङ्गनयादितामहेकायादितामहेन्यादिताम** तुॱॸॿॺॱ**ढ़ॺॱॸग़ॗ**৴ॱऄॗॱॿॖॱॿॗॱॸॣॸॱऻ<u>ॎ</u>ऄॗॸॱॺॖऀॱॸॺॸॱढ़ॾॕॺॱ**ढ़ॺॱ** वि रूटः मृद्रेषानग्रतः दम्मामि हेदान् उ रहेटा व प्रदे श्रुः नक्र्या दे न्युषाः **च**दे-षु:च:दे:दबुद:दब्य:ईब:इ:क्रेब:ध्रेक:चु:दे:खदद:क्रेब:देव:चुक्रः... व। ^वर्न्न ग्री:र्फ्र**क:**्रेट्रेव:क्युर-र्ने:बैव:ग्री:ग्वर्-प्रग्या:बेर्-हेर:प**े** ध्वास्तरः गुन्नाया वर्षः इत्यापि स्वाप्तरम् स्वापे द्वारे हेन्नायः वर्षः बन् गाना "म् भारते ने प्रमुद्धि प्रवास हैं है प्रवास प्राप्त हो । बावन मॅ'व्याग्रुट: न्मॅंट्य:य: ने 'क्षे' सु 'सं'य: व्यायायवे य: मॅग्य: नव्टा " वैकामन् अपलाविका न न न वेका मन् वे केवाय विवासन न ने प्रका विनयः सर् भी विन्यासायः सर् के विनायस्य पर धेवा देवायाने वर्षा ला श्रेन् । के बाज के मान मान विकास ঀॱऄ॔**र**ॱय़रॱपहेबॱऄॣॺॱॺऄ॔ॸ्ॱय़ॹॖॖय़ॱय़ॱढ़॓ॸॣॱॿ॓**ॸ**ऻॗ

च्याः स्वाः व्याः व्याः व्याः व्याः क्ष्यः व्याः व्य

ळ्ळाचित्रः त्राच्चेत्रः क्रव्यक्षः ळ्ळ्त्रः व्याच्यः विषाः त्याः त्र्यः त्र्यः क्रवः व्याच्यः विषाः त्राच्यः व देद्वाः क्षः व्यः क्षेत्रः क्षः व्याच्यः विषाः त्यः व्याच्यः व्याचः व्याच्यः व्याचः व्याचः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याचः व

न नन् खंया मल्द दिन दे निया द्व न्द्व न्द्व सुन की राष्ट्र मान की राष्ट्र स्व सुन की राष्ट्र स्व सुन की राष्ट्र ষ্ট্রীনা.ঞ.ৼ.শ.পূর্-শের-শ্লু-প্রথা चकुचःव्याञ्चः क्रुदःचहदः क्षे 'चगादः क्षेव" ब डे 'क्षे 'चः बर्चेव" व वेदः चितः """ ৽য়ৢয়য়৽য়৽ঀৢয়৽য়৽ড়৽য়ৢয়য়৽ড়ৼ৽ৼ৾য়য়৽৻ঀৢয়৽৽য়ৣৼ৽য়ৼ৽য়৽য়ৢয়৽য়ৼ৽য়**৽ৼ৽** मॅं रे मुलक्षा छेर रेवा अपन हराया दरा। वार्ष्यया भ्रमका में पर लुम्वा है য়ৢ৴[৻]য়ঀ^{৽৻য়}ঀয়৽ঀ৾৾ৼ৾৾৴৻ড়ৢ৾৾৾য়৽য়৽ৼৢ৽য়৽৻ৠয়৽য়**য়৽য়৾৽য়৽** न्यंद्र-न्यं वास्त्र-स्रुप्त-हिन्। ही कुरान् रंग हे नवा पदे होन हिन्या मञ्चलायान्द्रा क्रांतु वालाया स्र इ म्या दे मा विदार मा विदार मा <u>⋛</u>祝ਸ਼ੑੑੑੑੑੑੑ੶ਫ਼ੵ੶ਸ਼ਖ਼੶ਸ਼ਸ਼੶ਖ਼ੵੑਸ਼੶*ਫ਼ੑਜ਼*੶ਸ਼ਖ਼ਜ਼ਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼੶ਸ਼ੑਖ਼ੑਜ਼੶ਸ਼ੑਖ਼ੑ੶ਗ਼ੑਸ਼ੑ<mark>ਸ਼੶ਫ਼ਫ਼</mark>੶ दे'सळ'र्झ'पदे'ङ्, मधु'धेव'स'ट्रं तेयाहे'मवि'वयाङ्क'साम्भूर'स'र**''''** दर्भ न पर्म न के ला के न के ला ला के ला के ला के ला के ला ला के ला के ला के ला के बद्ध क्षे.च.रट.षाविद्धिटा वर्षे अळ क्षे.च. द्वाया छ न्या ने के ने ने के के के वास ना के का विकास के का ঀ৾৾৾ৼ৾৽য়৾য়৾৽য়য়ঀ৽য়৾ঀ৽ড়৾ৼ৽য়ৠয়৾৻ঢ়য়৾ড়৽য়৾য়য়য়য়ড়৽ড়য়৽ঢ়৽ঢ়ঢ় नेत्-द्व-विवाधियाः क्षेत्-विदानायम् । या निवाधियाः विवाधियाः विवाधियाः विवाधियाः विवाधियाः विवाधियाः विवाधियाः न इनेय. ब्रैट. ले थ. ट. प्य. ने श्रीट्य. ब्रैट.।

ग्राक्षराद्यायाच्या देवायाचा केषा व्यक्ष केषा करा प्रमुदा क्षेत्रा व्यक्ष

म्रॅर्-यहर्म्य दे देव र्देव प्रें का मुर्ठम् सुर र्षे द्वा स्वाय केव केटा हैलानगृतः व्वतः ब्रह्मः चान्तुवानन् वासुनः श्र्रेनः देवानविवा श्रेटः व्यवा अन्य द्वरायः प्रा देश्वर मुः मृत्यायः मृत्यः द्याः दयार दियः ग्रैट. बंद. श्रंट. क. ब्रेट. टे. क्रैंट. त. ईंब. श्रंट तत्त. दंब. ईंब. ग्रंच. ग्रेंब. श्रंब. यहरःवयः सः श्रुपः मृत्यः व स्त्राः यः यठयः द्वः ग्रुवः देवः व्रुपया য়ৢ৴ৼৣ৽৴ৼ৽ৼৢৢঀ৽ঀ৾য়৻৸৽৸ঽ৽ৢ৽য়ৣৢ৾৾ৢ৴৻ঢ়ৢ৽৻ড়ৼয়৽য়ৢ৽৻৽ঀয়৽য়ঢ়ৢঀ৽৽৽৽ क्रेच्या हैर वेटा रे तह्य तह्य हिर्या हिर्य हिरामात यन है तह्य न्रः के दुन रर ने दुन वह र पठराय दे दुन वळव से रर ता मृ नर नहरःवयायहैव नहिरः न्रः यहोता श्रु नति क्रिन् हेवा वया सुनः ने स्वरः ... विव मृत्राय हेताय त्या न में ता मदी न में न त ने यहा के वह न न वह न **学工「古・番・番 C・a゚漬・日 T・ C R q ・ ロ 男 C・ 日 の・ ロ・ て 下 「** ₹4.a\&\ नग्रतः ह्रॅब्र इवयः न्टः सुः नरुरः ह्युः व्यान्दः यटः व्यावः सृनः न् हेवः सुटः तुः वेनवः नृष्वाग्रीः नद् द्वां न्य्रः विदः। न्ययः व्वः द्वां गुनः व्यवः विदः वर्ष्टर.वे.ब्रिय.में में व.क्ष्यंया क्ष्रं वाह्रं व. यह्रं ढ़ॎॱय़ॱ**৴**८ॱয়ढ़ॕ८ॱয়ॱॻ॑য়॔॔॔ॱय़ॸॱয়ॗ॔ॻ॑য়ॱॻऻढ़ॕॻ॑য়ॱॻॴढ़ॱয়ॕॖज़ॱॻॴ॔॔ॱऄॗॱऄऀॱॱॱॱ र्रान्तर धुन् कुर बड़बादिर ल सुन नगर नगर नगर नगर वह नुद्रं इंकः इकः तुः होत् वकः द्याद्याद्यः द्यावः प्यतः द्यावः प्यतः वि विक्षित्रे विकासिका स्वर्गान्य विकास स्वर्गान्य में विकास स्वर्गान्य स्वर्णान्य स्वरत्य स्वर्णान्य स्वर्य स्वर्णान्य स्वर्णान्य स्वर्णान्य स्वर्णान्य स्वर्णान्य स्वर वि कु केद देव या महराम या वर्। र्षा र व्या देव कि श्वर प्रति देवा प अवश्वनात वयात्तात स्थाप । स्थाप

য়ৢ৴৽ৠৢৼ৽৾ঽ৽ৢৢয়৽ঀ৾য়৽য়ৢৼ৽ঀৢয়য়৽য়য়৽ॐৼ৽৺৻৾য়৾য়৽য়য়ৼ৽ৠৼ৽৽৽ ष्यानव्रायानम् तान्युराचीराञ्चारार्यन् परि चु नित्रम् वितर्भवा म् **व्यर्भवाश्वरः त्वावरः व्याप्तः विद्राप्तः विद्राप्तः विद्रा** त्रवताची स्वार्थन चन् चन् प्रत्या स्वार्थन स्वार्यन स्वार्यम स्वार्यन स्वार्यन स्वार्यन स्वार्यन स्वार्यन स्वार्यन स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यन स्वार्यन स्वार्यम स्वार्यन स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्वा রি'ম'ন্র্বর্ব'র'ব্রর্ব'রুম্ম ক্রীন'ঙ্গান্থান্ত্রী'নে গ্রা**ব্যানা**র্বি'ন্ন'নত ব্যারা नश्चलः न्दलः श्चरतः श्चेतः त्रेतः न्द्रनः व्यनः व्य द्वःश्वरःर्वादःस्वःर्व्व्र्रास्व्राचःर्रःश्चवःर्व्यःक्ष्वव्यःयःयःवद्वःययःययःवरः वह्रभार्गादाचार्दा न्वॅद्राम्द्रभाषाम् रूर्माद्रभाषाम् र रे विना न्यमा न्सुर नेया यहत नर्य र प्रमान में र व्या होन् न हे न्यया द्व-द्व-शुप-द्वरादस्य-द्वरापदे-पद्व-शुद्व-द्व-। द्वन्य-मृत्व-वुना-वया-पश्चर-छ-न्दा च चतःक। बे:भेद-संनयः पन्ययः দ্বা-দন্ধ্রনার-ক্রব-ম্-শ্রার-মান্ত্র श्रम्यान्यः म्यान् द्वा चेवयानहरानदे छेवाला

न्तरः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः ।

न्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः ।

न्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः ।

स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः ।

स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः ।

व्याष्ट्र-व्यक्तिन्त्र्यः स्वर्णः स्वर्णः स्वर्णः व्यक्तिः स्वर्णः व्यक्तिः स्वर्णः व्यक्तिः स्वर्णः व्यक्तिः स्वर्णः स्वरं स्वर्णः स्वरं स्व

मैयाहेकापरेट्रप्त्रराचराच्चाचेरानदेख्यात्यदेख्यात्राचेत्रात्त्रा ¥ग-रॅग-४८-त-दे-प्रे-प्रे-प्रे-प्रे-प्रेन्ट-प्रेन्ट-मगोबी.क्र.पर्येबो.च्रं रापतुंबा.पक्ष्या.पक्ष्या.स्टाचेबा.पीर.सप्प्र.स्या. ग्'र्ग्र-खुद्:बर्'बेर्-देर्-च्लुद्र'र्वण्गुद्र-के'र्यर वठर स्ट.कंचथ.व्र.त. ६ वे.च.चचथ.चर.ग्रीथ.ल.स्वे.च.चच्च.स्ट.र.च.चेथ. मि. इषु लग तर व्यय व देगे. त् ई. र में. देगे. श्रूर में व्यय श्रूर मयार्-रराम् केयामव हं व वे व वर्षाम् मान्या वर्षा वर्षे चु दे त्या ह्या यथै समयाम्वन सेन् चेर न्या से स्याप्त मि कूर् नु मि न्र ने मि केन म्केला महायालेयानमुत्याने यमेव राया ये या तर प्रमुपा वया विराम है . म्रातके नात्रा न्यतास्वार्वे वाश्चारा के वास्ताम् वास्ताम् वर्षद्धत्याम् वर्षे न्याम् वर्यम् वर्यम् न्याम् वर्यम् न्याम् वर्यम न्यद्याध्याद्याव्याव्यान् सुरावुयाने विषयाधन् मन् मु छ देरान्यर विन.र्टावि.राष्ट्र.का.सेन्य्य.इट.प्रूट.न्ट.च्याय.खेन् पठरा.प्ट्. न्यम् मैकामतुरामक्कीमका प्रकारम् न्यत्र स्वाम्याम् स्वराधनः मञ्जीरयः वेर.पजीयः वयः हे स्मामक्षयः सः पठयः र वयः र सरः वीरः वीरः क्रेर.वर.पर्वेच.क्रे.व्रेर.प्रंचर.क्र.थर.प्रंच.पर्वेर.लर.वेथ.तर.चेवा दे क्यामग्दादेव तुरावहम्या ग्रे के विष्या इयवाय वहम् वहन मार्न् न्नवरान्नव्याद्वितार्यम् तात्रात्वात् व्याप्तात् । न्यरःग्बुरःप्वेषःग्रेषःर्भःयर्भःदेरःस्रःतुःग्रःत्तुरःर्रः। देः क्री. द्वी. क्री. क्री

२ॅवन्त्रेबन्दरे-ॲ्नरन्तु-लदेन्नङ्ग्बन्नेबन्दरेन्द्रयाधरातु-डूट्र-क्रेब्न-' र्षम्याम् वदार्मा न्राम्परा ्ययाचे तत् मामुरा । १८७१ वर्षा सम र्देते ह्वापायहाँ अपवे वदा "ने कृषण ह्वापकर विवास प्राप्त इस-म्बाह्मा है। हमा मु सिमका है। मि मदी सिदे हैं। में या मु सि हे न ही इस्रामका द्वारा हे महा (संकाशमका है) मञ्जूषा हिंगा) है। ईवा व्या स्वार तु 'बदी'रूर' व ई दार्रेट्र'। 🌱 रीटार्रेट्र' आर्थिन यर प्रवाह्य में बाबुना लामहेब्रासदी:न्यादा स्वासु दिरामधीया लाह्या स्वाया हिनाम त्या ष्यानवःवयःवेरःश्चरःच्वनयः म्वयः वरः हेरः तृ । संरः न वेया पः त्त्रकान्चै म् मक्तान्व भु शुराम् ईन्व स्रादे प्रवाकरास्त्रे प्रवाकरास्त्रे प्रवास **ब्रुंटाळे** प्रसार हे वा के प्राचित्र हु कियला न क्रुंटा लर्स ा " के लाया **ठ वा** न्यायानाने त्या देवा के वा किराहारा स्वाया स्वाया स्वाया हिन् ता धेवायान्या न्ययास्व न्वायाका न्या हो स्वा हो ना धिव या स्वर हो ने स्वर <mark>ऍन्</mark>पबरायन जेन केन नगा कु केन् ते । दल्ल पर करा कार में न् । देने बना "" <u> चलाने दूर श्रीरात् के ल्ला श्री श्री विश्व प्रात्ती श्री त्र के त्री स्थार त्री स्थार त्री स्थार त्री स्थार स</u>

⁽इयाधर नूरल किया वे . लंद . में न . चंदश . 184)

पटकालळेंद्राची ५५ वर्ष

रे विव अन्य ने वे मालु र धिम संग्रां विच धायक मुन् व वा वह वसा । ग्रनः। र्नेवः क्रेवः यदेः यदः वेदः ग्रीः न्यदः यद्देवः वदः श्वयः तुः श्रुदः यदेः स्व ब्रिय.लूर्य.च्याय.कु.प.वृया.लूय.क्षेत्रया ट्रे.क्.यय.चविर.वितय.स्याय. ल्'रावे : बे : रावा क्वा यदे : व्दः ने वे : क्र्रें रा ची : प्वन् : चु व : बदः ये : विषः र्षें रा वी : प्वनः च पान्द्राची में विद्यार्थयाता स्तान्द्रिताया मुद्राम्या न्त्राया सुन्यास्त्रा स्तान् गुःके न्यरः है : बे अळेष न्रा क्रिंग्यर प्रत्य त्यरः न्तर्भि. रंजाप. इंब. रंगाय. उद्दरः श्रष्ट्रमा. श्र्माया. चं बेट. वेचया. वर्दे नगदःश्वन वृत्रः र्वे व स्ट्रायमा नरा मी नव्यव श्वरा महार्यन् सुन् न्या छे देन्या इयमान् ठेन् यमुन्यम् हे न्यन् से त्रुन् हेर् वयाय वात्तर श्वर्यः) तत्रवर क्षः वया मश्चर र र र रे द्वा श्रवः ल . स्या रेवः नन् मुते वनमः हे व वहेव र्र्र हेर्य स्ट्रिय स्ट्रिय हेर पर्ना ग्रम् में मार्थ प्राचन विष्णा प्रमा श्री से का हिन से मार्थ विष्ण गा छे. वन हैं. नहिलागा हे. घर निमार हेला तथा नहें व निरुद्धा इ दूर धूर वया यथर स्रित इव कुव तर अहर १ क्या गेवा कुष त्यार ... िह्नाम्रायालेगाळ्रायानेते व्रामीप्रेस्यानेतास्यान्तान्ति व्रामीप्रेस्यानेतास्यानेतान्ति व्रामीप्रेस्यानेता

मलेश्वरश्चरान्य श्चरान्त्र स्वरण्डे र स्वरण्ड स्वरण्ड

त्यायळ्याने ते न्या हु न्या १८७० ह्न ख्याया हु न्या छ न्या हु न्या हु

ढॅंबरबेर्-मुत्यकेर्-छन्'यळं दारु'-वश्चरवायावेन्-चुरादाश्चराहे दे देवः" कॅट्रायान्यायं केद्राचें राष्ट्रदार्श्चे दार्चे न्यायात्वा वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षाय धूर-द्वार्श्वर-इंच-इट्ना अन्त-कट-अन्य-मयद-नवेयायासु-नेन्यर्थः नन् भ्रानन्ता बर्वादहेन विन्तर बहिन रमान्यर हुना वठवा व्यन्देवः धरःश्चेत् श्चीः स्वावः श्चेदः वदः वदः वदः के द्वादः वदः वद्दः मर-रेश वुषा ग्रेषा न गुरा या गर्दा गर्दा न स्वावण मेरा बाक्रेन् पॅदे नगदे गठन् बडंबल सुर खुन्य महिल ही सुन्य दन्न पश्चरतः श्वरः (1873म्.) **छ**. २. १५८ श. य १५०८ मधे. १६०८ मधे. य १५८ स न्नरावस्त्रं हुरान्ने प्रवे हेन् स्रंतरस्य स्ट्रायर हेरान्यार्स्याक न्रा न्त्रेतःश्वेतःभ्वत्यः श्वे न्त्रान् चेत्रः स्ट्रः हे द्र्ः स्वेतः स्वेरः न्त्रे त्राक्षेतः स्व पतु नवः विदे :द्रायकः श्वनवः शुः द्वे रः सुदे : सवः मा : न्द्रः । व्यवे रः श्वी : २ हदः राधवागा नेते बहुव्हु वळें न होवा हो गान मियान्सा में सारा वळेंगा न्तुग्राष्ट्रिकेन्द्रिन्त्वम्यार्वेन्द्रिन्द्राव्यक्षेत्र्यक्षेत्र्यक्षेत्र्यक्षेत्रः इं त्यर हे अर् मृत्राय्य प्रमायम्य द्यार् र विर प्रमाय है सह दे प्रमार् हेव-मृशुम् सव-स्रायस्व-य-न्त-सुद-विनव-यन्-विवानह्न-हुंचात्तव.र्टा इवार्चे.पथाङ्गे.परुधावधावधार्थःर्पतिसूर चर-लर-केर-र्र-के-प्पाक्तियाक्षेत्र-अस्त्र चे-लिका-विवा-विवा-विवा-विवा-स्वा-स्वा पत्तरण: न्यात्र व्याप्त वास्त्र वितः श्री वास्त्र वितः विश्वराष्ट्र विरा दे वया नगादे हाँ व केव दर है । इन् र्से म्या व वर हाँ या बेदा निर्वा **लु'र्**र'गठरा'सॅ'ञ्र'र्यर'पॅदे'ळॅबक'ळेव'श्रेर्'वेदे'सुव'ळॅगठा'''''

न्द्रातुषाग्रीषाक्षेत्रपानश्चरानश्चरषामान्द्रात्रपान्द्रम् ইন এইব ট্রি বারার নাম বিদ্যালয় বিদ बह्यान्राह्म वास्त्रित्राह्म वास्त्राह्म वास्त्राहम वास् ঀড়য়৽ড়য়৽ৼয়৽ঀয়৽৸য়৾৽ড়য়য়য়ৢ৽ঢ়ড়ৼ৽৸৽য়ৼৼয়৽য়ৢড়৽য়ৼ৽ঢ়ৼৼ৾ৼ৾৽৽ न्या निष्य ह्या ह्या सुर्य ही न हिंद स्वार्य सुर्य है के हिंदा की कर नर १ वे य. हे द. वी च. परा ल. हे र. ३ इव. ६८. १ . कु चया म हे द. वी य.... मया देवायाव वर्षे वया यह या न्राहेवा मृत्या के दुराप वे सं **दल**ःसहत्यः द्रनः त्रे : सुत्यः द्रवान् त्याः वृत्तं दः ग्रीकाः न्याः मुन्तः व्याः हेकः श्रुव भ्रा र्वा वा वा स्पर्न र श्रुत्र वा श्रुत्र वा श्रुव र श्रु र वदः अहेर : दूरः इस्यायाया भे से प्रकृता "े देशः म्रायाना क्षेत्र विद्या ५ देता श्रीता श्रीत श्रीत स्वाया स्वया स्वाया स् **यर** मॅंद्राक केव पेंदे शुद्र प्राचन विश्व स्था हिन खब्दा हिन सेव स्था स्था सेव स्था सेव स्था सेव स्था सेव स्था स न्दर-पः धेवः द्धंतः वदः हवः द्धेवः यं यः न्यतः पन् नः ग्रुयः वर् न

1874 वॅर्-१८-छि-लॅर्रा हू-लते-न्न-अरळ्ग्-श्रर-लक्ष्रः
मान्व-ल-ळेव-लॅ-र्-मान्य-स्व-इक्ष-पर-कुल-परे-न्न-कुल-परे-न्न-कुल-परे-न्न-कुल-परे-न्न-कुल-परे-न्न-कुल-परे-न्न-कुल-परे-ल-कुल-परे-त्न-कुल-पर-ळेव-ल-कु-र्--कुल-पर्न-कुल-पर-कुल-प

1875 ব্র্নির্শ্বশ্রের ক্রন্ন শ্রী ব্রান্ত শ্রান্ত শ্রী ব্রান্ত শ্রী ব্রান্ত শ্রী ব্রান্ত শ্রী ব্রান্ত শ্রী ব্

पद्मेर-पद्मकान्द्र-प्रविच्याक्षयान्द्र-व्यासराश्चित्व मूर्यान्द्रनाम् क्रेष्ट्र-विद्रायक्ष्याची अवारा निवाह क्रिका मिन्या माराजायक्रमा वयाग्रेटा विवाया पद्मेटा वी इसामा सह र १ वटा इसा श्रिया है होन इसाया बर्ळर्-तेर-क्रेट-त्य-बुन्वा-देव-तक्रुट्य-हेव-क्रिट-वा-वर्ग-वे-क्रेव-विः----र्म्र्यास्यास्याताः होटः मृत् वयदा ठर् ता नवदा न वे नदा ही कि नदा न ही र ग्रैयः हेवः इयशला द्विगयः श्चॅवः श्वेवः नियान तुयः ग्वरः र्राः। £.25. য়ৢ**ঀ৽ৼ৴৽য়৾ঌ৾৾৾**৴৻ঀৢ৻ঀ৻ঀ৻৸৻৸৾৾৾**৾ঀ৽৾৾৾৸৽৸য়ৼ৽ৼ৽ৼ৾৽য়ৣ৾৾৾৴৽৸**৾য়৾৾য়ৢ৾৾ঀ৽৸য়৽৽৽৽৽৽ सम्बर्धः विष्यत्रद्वा न्ययः झे खेषः हु गः हु ग विषः म त्रे गत्र के किरान्ययः है ब्रे.र्च याम्बेर-क्रेड्रक्य-पर्झ्न-पर्झ्य-पर्झ्य-परः हिन्दन्तः। न्ययःह्रेष-परःहेन्दन्तः स्.वट्-रुंग-क्र्य-रेंग्य-सं.चन्यकान्य-क्रिट्-येव्यकान्य-क्रिय-क्र्य-क्रिय-क्रिय-स्वर-स् धुव-रेद-र्वयः बह्दा ®"ठेवा नवयः वेदः। दे-वॅर-नॅद-य**ॉदः** बु-द्विः অ'ইবআ

⁽इवाधन: नृत्या नेव वे वितः मृत्या वादव: 231)

য়ৢ৾ঀ ড়৶৻ৼৼ৻৸ঽয়৻য়৻য়৾ৼঀয়৻য়ড়ৼ৾৻য়ৢ৾ঀ৾য়ৢ৽ড়৻য়ৢয়৻ঀয়৻৸৻৸য়য়৻য়৻ য়য়৻ড়ৼ৻য়ৢ৾৻ৼয়৻ৼয়য়য়য়ড়ৼ৻য়ৢয়৻ড়ৼ৻য়য়ৼ৸৻য়য়৻ঀয়৻৸য়য়য়৻

वयानेपावरावायायास्यावा "म्रात्वितिवायायार्गाया (1875) विदःसवा ञ्चायः वहात्रा सदि छेता है सु ता वृदः रा कुतः द्दः न्द्रु:मृत्रेयायःकेदार्यः नृतुद्रःस्याः के सुतेः स्माम् नेया विः समदः ठदःःःः गुःद्वानम्बा त्रः नमारेटा देन् गुः ययः द्वानगरः नगः गैयः स्वारायः इन्-र्इन्य-क्र्यायायर्न्-मुलायह्यायायर्च-ग्रायाह्या श्री-स्यापः ढना हे 'हु र·ङ्रं 'हॅ न हु 'रन' र पर· र पय· क्व 'क्वें तंत्री' कुयः बढं वा में रः ढ़ॖऻढ़ऀॱॸढ़ॖॖॺज़ॱॸ॔ॸॱॺॕढ़ऀॱॹॱॸ॓ॱॿ॑ॸॱॷऀॱढ़ॗऀॱख़ॱॸ॔ॸॸॱॻऄॗॸॱ**"**ढ़॓ज़ॱॱॱॱॱ ผลาสะทาฏาค ๆ สาวคิสานาระบุ "สิ.มีะ.(184.) นู. มีลาสะน. इट. वय. में . क्र. प्रत्या . क्र. क्या व्यापाय क्या में या में या क्या में त्वव न्रम्प्त्रें या शुप्त वे या यया हा स्वाप्त दे । या झें मा व व हे 'हें वा खु 'बु ' याधिवा मुलाह्मवारम्यारार्थ्यानी ह्या वया सुरार लुगवा सुला म्बर्स्य म्बर्स्य विद्या में श्री कित. मूर्य त्या प्राप्त श्री वे स्वर्म स्वर्म राज्य स न्ता श्रुप्तरुरक्षे विषयाम्बर्यः स्याप्तरुष्यः विष्यं विषयः विष्यं विषयः विषयः क्रिंग् वित्रः व्ह्रं व्यञ्जित् क्रुव् विष्ये विषय द्वित्र विष्यः विष्यः ळे. ह्ये थे. प्रस्थान विश्व स्थान स्थान के का श्रुवाया के बादा स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान

^{ा (}नेप वेर वेद वेद न्वेग्य तु मृग्यें द्व 32)·

저분기

<u>र् चैतः है 'वर्डव कुल' रेट' अवल' यल ख'ल वल गुट कें</u> दे 'वंट्'''''' <u> बूर्यातायव्यापद्यात्री, शुवायायकरयालूर्याताक्षेराव्यात्राप्ती स्वारा</u> में बेया तर श्री देश विष्य है या तर्य सें हिंद या या निरा तह में छया. बद्यर-र्ष्ट्रीद-तर्श्वर-रवर-तर्श्वर बाह्य विद्यान्ति । विद्यानियाः बुद'र्द्व'वद'। अद'र्वे विदेश'र्वद'यात्वी अप्तश्च याचे द'यदे' यदे'यदे नुह्रवादिनकार्यन्याच्याच्याच्या द्वागुराद्याच्यावयान्धेवा हैतेः **बे**.इ.चट.पर्देल.**बे**.लूट.चपु.२ब.चब्रैचश.बचत.चकुच.५.वुट.जु.लूट... पर पहेदारि परा द्वेषाया मलदालेगा दया करा मेरा यह मारा परा नुहर श्चेन् ग**्निरः १४०० ज्ञुन**् र दन् ठ्रुयः हु । श्चुनः यः ने । यः मृद्वे दः शुग्राह्य न् : ने : : : : द्र-पाश्रुवातद्वीताच क्रुदे वनवार व व्यत्त व करावे व व व व व व व व व **শী-দঙ্গর্মা-ব্রনি-র্মি-নি-জ্ব-র** 1876 শ্ব-(ক্রিন-ক্র্-রেনর कुःभूरःक्ष्यःविःसःबहेयःयः)५**डेवःहः**पद्वःक्ष्यःद्ररःख्ययःपयःस्यःख्वः • व्वादेर अने भी के न्यात्व शिक्त न्येव से ते स्त्र मु स्वार का के ति निर्मा । सदै देव के व दे राम मामर हे किर कुल र मरा है है र महर ला त**हेन्त्रः इटः प्रमुखः वक् केट् मुकः र वक् ग्रे** श्रेन् मुक्ट मेवा थे र हुटः बराश्चितार्थान्त्रेयाने ज्ञाराक्त्राचनता स्त्रात्रेया हेरा नेवरास्ता ...

'न् सुन्देषुक् हैकार्यायायायस्काने ग्रेकारमें तन्त्र मुन् ন্ त्रक्षात्र व्याचित्र क्षेत्र व्याचित्र क्षेत्र व्याचित्र क्षेत्र व्याचित्र क्षेत्र व्याचित्र क्षेत्र व्याचित्र शुदु - नदः अहे - सूद्र-कुद्-ग्री-ध्रायाः हु नयः इवयः पकुद्-द्याः यथा वदःरेवः शिक्ष्वं व्यावायवयः स्ट् ब्रिंद्याशुः ब्रेवः हैं . कुः वदः हुः श्वेनवायः चेर्-कुदै-र्वेग्राध्याकिर्द्रायाः इर्-ग्रेंर्-छेर्-केर्-थेदा चेन्-कुर-६ वॅश-घरि-एख-धेव-५८-। यः बदयार वाची-६ व्यक् केव-५८-इर्.मध्येष्याक्षराध्यात्राच्याः स्राप्ते राष्ट्रियः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः र्देन ही हारा व्यावेद ही या रामा या महाया द्वार हवा हवा है या नेवा हेर् म्पारीत् प्रमानदे वे झापया रते व्याया है वापराकु म्र न्दः चन् वृंद्रका ग्री का वर्ष ब्रक्ष वर्षा क्षेत्र वर्षा धेव वर्षा ग्रुटः वृंदे व हेते.ब्रॅब्-क्रेब्-ग्री-<u>ब्रे</u>म्ल-फेब्-**फ्ब-**फ्ब-५ड्डॅ-र-द्रस्प-घॅन्-पढ्नब्**ल**-स्स्र--पवायाम्बुराधिमाप्तहरावयाम्बयाद्धयायार्पयायाहे अरपहरावयाहव **७व ७ म ७ म मेरा १ इं म छेर र मेरा या बरा व्याप विकास के या र** पानित्रकेत् श्वि 'देवाश्वि 'ख्या था कवा निवा क्षता श्विता श्विता श्विता श्विता श्विता श्विता श्विता श्विता श्विता पन् रॅंप्, यारे द्। दे 'के 'द् छेक' है ये की कु 'क्र 'क्य 'वॅद् 'क्ट्रेंद खा खु' या য়*ঀৢঢ়৽ঢ়য়৽য়য়৽ৠড়৽৸ৼ৽য়৽*৸ড়ড়৸ড়ৼ৽ৠৼয়৽য়৽৸ড়৽ঢ়য়৽ড়য়৽৸৽৽৽ पर्ने व पर्दे ज्ञार छ 'बेव' रे र । 1879 बॅर (क्रिट कुक्ष र पर्वा कु) जॉर (ब्रुक्ष

विःसंन्यः) न्धैवः हेः पर्ववः कुलः नेरः खुन्यः प्रयः केर्यः धेनः नेः न्वः ः ः **৺ব:৴**৽৸ঀ৴৽৸য়৴৽য়৵৽য়৵৽য়৾৾ঀ৽য়৾৾৴৽য়ৢ৾৸৽৴য়ৢ৽৸৾য়৽য়৾৽য়য় लप्रे १ वर्षाया प्रमा हो यह र्ष्य वर्षा प्रमा हिंद्या शु (धु या क्रें र १ वर्षा या में वियायहराया देवे वराहा याता स्वाया कु न्यया न्रा में न्यया न्वरावराक्षः हेनान्दः शुदः श्रुदः छेन् स्यः नहेंदः न्वेना स्ये नहः है … न्हें रः न्वें का बे का यमन् वें पर पर देन वित्र मान वित्र के निया न्तुल न्दर वी लेर क्षु दर्वे स्तर ग्ला क्षेत्र व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त श्रमण है ब्रैट य दर् हिंदब शु. लंद कुर व बी व न व व न ह न ह न स न व न न ह न ह न स न व न न ह न स न व न न व न न व पर या त्र । ही ही ना न व न ही ही कें के विन पवन हैं न हूं अदे हा वा नर मह केदा दया महिला की वर्ष दान्दर में राव मिन्दे ने में दाव व्याप कथा वदा त्मेश्चे अव विवास्ता वया केर मुला र न या ग्री में र वर न यमु र वि न वर र र न्बॅल'पदे ब्रद्भ प्रमृद्ध प्रमृद्ध प्रमुद्ध प्रमृद्ध प्रम क.क्र.च वय.ये.चयता

ळवे.क्रमःव्य**द्र**-दे-द्रवादे-क्रुव-वेद-लु-द्रग्यागवद-लु-कु-वै। <u>ឨ៝៓៱៓៰៶៹៶៹៓៳៶៙៝៶៳៝៳៶៰៷</u>៓៹៶៳៳៸៹៝ឨ៶៷៰៹៶៹៹៶៷៓៹៶ឨ៰៸៵៹៸៶៸ यम् हु दिन् मत् म्राज्य स्वरं मी दिन्दे व भेग् स्तरं दे र मुर न रे न् म् मि'बर'त्'केरल'धेमा'चलमा'वलामि'के'चॅर् व्हरल'तु'चॅर केमा याचेर्'''' न्क्षला क्षेत्र व्याचन्यवास्त्र त्या वेष्ठ प्रति नेपाल ने न्या प्रति व्याचन ब्रु--पर्द्रका च्रिला क्री क्रिया प्रता कुला विचा विचा ची क्री क्री विखा तुला क्रु के निमा व्या <u>इर.त.क्र. व्यय.के. क्र्य.रट. श्रेट. श्रेट. व्रेट. र ब्र्य.त.पय</u> ₹र्मवे' য়ৄ৾ৼ৾৻ৼৢঀ৾য়৻ঀৢ৾ৼ৾৾৽য়৾৾৾৽য়ৼ৸৻য়৻য়৾ঀয়৻৸য়ৢ৻য়য়ড়৾য়৻য়য়ঢ়য়৻৸ৼ৻য়৻য়ৼৢ৾৾ঢ় नदः ने दः श्री या चुः वळ वः यदः व या यदः दुः व ययः य दः व शुदः चुदः पया वर्ष्ट्र शु: श्वे : श्वेर्य महत्र वर्ष वर्ष स्थि । श्वेर्य वर्ष महिष् र्रःक्रेयः स्वाता नरः के शेरद्रायः प्रेय द्वर्यः क्रेयः व्यात्वे स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्व त्यायानुवाधिरानेवाळे स्वयानिता वन् वित्राहेत्या तेनासुः वे न्यादयाः विवादानेवाने ल्या की श्रे अवरा विषाने ने ने ने निष्य विषय स्वरामन निष्य की निष्य कि स्वरास्त नवर हे नज्जू र लु नवर रे ववर ये जेर जे स्ता र तुल नर र नहेल श्रेष्ट्रमणः वृषाश्रेष्ट्रमणः परः वृष्ट्रमः अव्वः वृष्णः प्रमृतः द्वेषः ग्रेषः प्रमृतः वृष्णः प्रमृत्यः हेः ब्रु त्रेर पष्ट्रव पार्टर श्रेष प्राप्त क्रिय स्वर ग्री . खुषा श्रुप श्रुप स्वर श्री प मवरामवेरमम्बर्धे वाञ्चावाकेरायाने वेरकार्ययापराम्बर्धास्यायरा र्रित्र्येग्रस्थिग्रस्थिग्रस्थित्या द्वीत्राच्यात्रस्य द्वान्यात्रस्य द्वीत्रस्यते न्भैयान्ररम्भवन् विक्रिः विक्रिः विक्रियान्य विक्रियान्य विक्रिया विक्रिया विक्रिया विक्रिया विक्रिया विक्रिया यट्यामु यागुः नष्ट्रव माञ्चन करा वी या वार्ष क्रिं राष्ट्रिय येव प्राय न्दें या मृद्या के कि व्यव का मृद्या मृद्या के न् व्यव के न्

श्चारमकानरःभिग्वस्वाहे **स्ट**ालाबानहें स्वतानरामु काव वायार ही श्चीरः म.बरप.ब्रियाशी.पर्वजारी.पर्वेबा.चै.बुर्चा बेजाहीर.ल्रा.बाव्य.हैर. व्यायवापम् त्रान्यम् यत्रम् द्वयापार ह्वयः क्षेत्रम् यत्र द्वरा विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्य नहर्वश्र द्वेर श्रेंबा बैका बदा इंदा तमें निरे तर् वा चरे केरान हेर हु ... ब्रुंग-र्ट-पर्वेश-वर्श-पर्गाय-पर्वेग-छेर्-कु-ध्रेव। ग्वयः ग्री-क्र-इराश-ग्रैल-इयःक्षेत्रः ग्री-लील-अञ्चल-ल-श्रीनयः पष्टियः योदरः मृः स्टः। मृटः। **ब. कुर्य. त्य.** यट्य. मैथ. पहेर्य. त. श्रीट. श्रीट. पा. वीर. विर. चर. चर्य था अह्र ट. नब्दि-स्न-प्रमाम-द्वरा-प्रदेश-पर्देश-प्रवेश-व्यान्त्र-प्रमान-विवा----निष्यः वस्य स्तराची स्वरंतर प्रवास स्वरं स न्यवान्यत्या प्रत्या श्रीया मुकारा केवा ये या श्रुवा केंद्रा तु व्या प्रत्य श्री राष्ट्र राष्ट भ्रमकारम् भन् रादे ते अका विकान्त ते अका देना है . लून ही क्षेत्र व र र र है . बाहि निविव निर्मे र दे किर् अर ग्या ग्री का कर् निव्य ग्री वा वा वा वा विद्रा भ्रेषावि सेते संग् वर्षात् ने प्रकृत् लु ग्वत् र व्याप्त से स्तुत् न्द्रा मॅंद्रायायकेंग् मेलानगादार्दे व्राक्षन् येद्रा कुलानश्चरताने र दंदा बूदला कु त्र्नापानवराक्त्रत्ने श्रुवाञ्चरायदायदे ते तत्त्व वावतः व केवा हु . ल . वी ल्टा ध्यान.क्रव.म्य.स्या

वि. स्त्र मिन्न प्रमाद मिन्न वि. क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत् व . स्त्र क्षेत्र क्ष त्र-रक्षाक्षितास्त्र-स्र-रि. क्षेप्ते अत्र स्वाप्ति स्व स्व विष्य स्व विषय स्य स्व विषय स

म्राच्यात्राम् श्री त्राची त्राच्या ने व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त য়ৢ৵ৼৼ৻ঀৢ৽ৢ৽৻ৼয়৻ঢ়ড়ড়৻ঀৼৢ৾৽৻য়ৢ৾৽ৼয়৾৾৾ঢ়৻ঀ৻৽৻য়ৣঢ়৾৽৾ড়ৼ[৽]ৼঢ়৾ৼঢ়৻য়য়৻৽ য়ৢঀ৽য়ৢ৽৻য়৾য়৽ঢ়ৼ৽৻ঽয়য়য়য়য়ৢৼ৽ঢ়ড়ৼয়৽য়ৢয়৽৸ঢ়ৼ৽ঢ়ঀয়ৄৼ৽য়ঀয় नम्दःस्त्राचान्द्रा व्रत्भीत्वान्यद्याक्षदाययात्रेयाची व्यवतः য়ড়য়য়৽য়ৢৼ৽য়ৣ৾ঀ৽য়ৢ৾ৼ৽য়ৢ৾৴৽য়য়য়৽য়য়৽ঌ৽৻ৼৢ৽ঀঌৼ৽য়ৼ৽য়ৼ৽য়য়য়৽৽৽৽৽ न्रायायर सक्षेत्र परि सं कुरा कुरि है द क्षेट स्व परि धेन क तरी रेन्रायाः पहे**र**.सर.सरथ.स.धुबे.लुबे स.स.चरी कुषाबु **देश**.ग्रे.शूपाकुदास्द पतै·पॅन्-बै:न्यम्लःग्रै-क्रेम्-क्रॅन्तःने-क्रे-तु-बै:न्नतः हेलःवनःश्चॅनःन्**र्तः** ब्रैन'नव-कु-बु-ब्रॅ-क्र-**र**ा| ब्रि-क्रव-ग्री-य:भेव-ट्र-य:ऍन्य-र्-ट्र्-ट्र्य-लुबो.क्ष्वाथाविष्यालूर्यासम्बद्धाराज्यानः। पःश्चरुःश्चिरःसायानुःश्चरः देग्रादेशे वरा "पॅर्व्स्रायुः मॅर्ट्स्यायुः मेरार्य्या करा स्रायः युः ग्रीरायः पॅर् ፝ቒ**ጚ**ፙፙ፟፟፟ፙጚ፟ጜኯጟጜ፟፞፞ጟቑፙቜ፞ጚፙ፟ጟቜ፝ጚቒፙቜጚጚጚኇቜ፝ጚፙፙጜዿቜዹጚ፧ *ॸॆ*ढ़ऀॱ**ॼग़ॖॹॱॸॖॱॸॕॸ्ॱॸढ़ॖॱॻऻज़ॹ**ख़ॱॸॺॱॹॖॸॱग़ॗढ़॓ॱऄऀॱॾॖॱॻऻॸॕॖ॔॔ॺॱऄॸ्ॱॸॖॗॱॹॗॸॱॱॱ *हे ॱबॅ८ॱअॱबॅ८ॱढ़ॖॺॱॺॱ६३८ॱॺढ़ॖॸॱढ़२ऀॱॺॹॖ*ॺॺॱय़ॱॸ्य़ॖॱॻढ़॔ॺॺॱॻॖऀॱ*ढ़*ॱॱॱॱ नःविनान्त्रहर्भिक्तिवर्षे व्याप्ति द्वाराष्ट्रम्यान्त्रहर्भिक्ता **ঀৄ৾ৼ৻য়৻৸ৼ৻ৡ৴৻৾য়ৢ৾৾৻য়ঢ়ৢঀ৻ৼয়ৢ৴৻য়৸৻ৡৼ৻৸ৼয়৻৸৻৸৻৸৸৻৻৸ৼ৻৸৸৸৻৻৻** 🛈 (तू :बदे :ब्र वदे :द्व वदः देव :वदः देव :वदः विव :देव :देव :260—264)

क्षेत्रकार्ष्ठेव्यत्में व्यवत् गृहेन् हुते शुक्ते शुक्त श्रिक्त प्रम्य व्यवत् वहेन् वित्र श्री वित्र व्यव्य प्रम्य वित्र वित

^{া (}ছু: এব : হু অব : হু অব : ইব্: এব : ইব: ইব: 264 — 265)

चित,तक्षेत्र,चि.सञ्चत्र,श्चेतदा चित,तक्षेत्र,चि.सञ्चत्र,श्चेत्र,त्वर,व्यथ्यक्ष्य,त्व.

स्था स्थान्य स्थान्य

भ्रमकारे राष्ट्र त्यदे ज्ञा वास्तु छेरा पद्ध मृत्रेषाया मधेदा त्यता कु वह रा म्बेबाप्तिः सम्यान्त्रत्तुः श्रुतान्त्रे ना केना क्ष्मा क्षा स्राप्ता स्राप्ता स्राप्ता *२ेवॱघॱळेॱवडॸ्ॱवळॅलाऱॅर्वावहॅव्*नुॱधु*न्वावःवन्*ॱख़्ॸॱख़ॕल*ॸॖ*ॱक़ॗॱॿॖॱॺऄॱ खर-६वाय-५**४**-५इव्य-५**वाय-५वा इन**-व*र-*गुद-नईवाय-५*४-*३द-म्बर्या कर् व्यक्ति व .स.श्रु :सेर. च क्रु दे.स. द क्षेत्र :सदे. द च द. स्थ्र व .स. स्वापा :... यद्गे. चेन. क्रेंद्रे. बळ बया शु. लॅन. ठेवा गहार या ने नवा मनवा हिन. हे. इना स्व र्यम्य ऋषा श्रुटायन श्रुव तदेव अट लुव श्रुव व ज्रूव ज्ञू र **२व.**च.कु.च.कुपु.बक्**बया**श्च.श्च.चक्षेत्रयाञ्चव.तपु.चमेच.लिट.चयाया... चॅरःन्दरः वरः वहेदा कुलः कवः कुः कवः दरः वन्दः वन् वीः वन्दः । पविव न्यं व ने वाका न्या श्रामका के अराये क्या पर्य का ने व्या की ना पञ्चल.चर.पञ्.श्रंचथ.क्य.पेष्ट्र.श्रेल.चेष्ट्र.ज्रेथ.टेब्बय.घ्र.श्रद. बर्चन्द्र-विद्यःद्र-वक्ष-रञ्जादेगः सुन्यक्षः स्वरः 출신,첫८,에너얼 열고,젖.너의단,신고,효성,몇십,집,신단.너소성.돼. N

यान्वयार्वेगाः तुः हेनाः विषान् वदाः परायेषयाः श्रीप्या श्रीप्या यद्वाः प्रदारा स्थाः ढ़ॖॴॱॿॖ*ॸ*ॱॸऀॺऻॴॺऻढ़ॺऻॴड़ॖढ़ॱॿॖॸॱॶॺऻॴॸॖॸॱॺॾॕॸॱॾॕॴॱॸॕॺऻॴॺॶ**ॺॱॱॱ** ब्रैट.पस्तार्भे.पर्यावयाक्रयावे क्रियाचे या स्वास्तार्टराच्यापर देटा के... न्नर दें र तु क्षु त्रि र न्र न्य वर्ष न हें र न्य र वर्ष । म् विरम् १६० मन् मार्पं नार न्रान्य मार्पं नाया विराधित विराधि ह्यु र बा यदा होत् । सर दिया है या हु । द में द ने क्षेत्र हु । द स ता नु । द स ता नु न्ब्रामितः स्वाप्ता श्रुः म्हनः स्वाप्ता हेनः स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वाप नगतः इरः कः नगरः में रः पुः महेतः ग्रीतः धवः धवः सुरः तः अहतः न्रः लः । गरीरःइद्याग्रीःशुःतक्ष्वःर्यग्रासुतानेः के.ध्याज्यायात्र.र.र.। Bेंद्र-तर्र-हेर्-मृत्व-एका: Bर्-रु-तर्ममृतः परे दें-संहर-यत्माग्रीकाकीः... हरासः देवा पर्वा पर्वा कुवा तु म्बर्धरा श्वा नारा ये वाया न्रा श्वे श्वा नाव वा नर चर.वैर.वृथायहता.पसर.चबर.व.पग्रेन.श्रव.ग्री.पमप.पर.पस्यया.वै. गर'गत्रवारवर्द्रा

 दे 'ब्रांबर' का के दा श्रुर शेर' वज्जु र 'य' वश्रुद 'यदी 'द्वर' खुन' द्रा । मुला स्वात्त्र मिराहा स्वात्तर विदाल वार्षे में वासार प्राप्त स्वा न्द्राकेद्रार्थे तेराद्यकार्न्या न्या नेवा क्षुत्र या विचयः विरः भुः न्यं वः रेण्यः पॅट्यः च ठ्यः ञ्चं चे ग्यञ्च व गुवः छुटः ... च्यायाध्येत्रायतासम्वेतः न् च्यायाचे व क्यायाध्याय व्यायाध्याय व्यायाध्याय व्यायाध्याय व्यायाध्याय व्यायाध्याय <u>शुरःगुते पञ्च र मवस्य पञ्चेत्र में र स्थामें र ल</u>ुते स्था ग्रीतर स्नुव क्षेत्र प्रया अर्बेट्र-अन्बर्धनानीप्रमायः श्चित्रन्थेनसः शुः"गुवः त्नायः त्रेवः छेवः ग्चैः छेतः । <u>ब्रॅ</u>.पड्ट विपयायाम्याम् यद्वे दे पढ्डिन ग्री र पुषा पह्ना ५८५ (ब्रु. यः । *२बॅब्रायर* तस्रवातस्रवाहु व्यते ह्या वारेवाये केते व्यक्षणा ह्या तु देवाया दहेव्'च्चित्र'त्र्व्तुत्र'ऑर'दर्शे."Ûढ़ेब्र'नग्व'नदेवेब्र'नचर'सं' ¥ वःसबः' '' मॅर्रायायळेंग् मी नग्रायाय म्यून् श्रुव् श्रुव् लु नरानग्राय स्वार्यायाय **ळे** '२ मर वॅ र सु '२ र १ | क्षु ' म कर ' व म रा सु र म के स र में व ' स व व स र में र हे-दुर-रन्-र्नर-र्**रंग**-शुक्-शुक्-गुक्-न्रॅक-न्रॅक-वन-वनक-वन्न-श्र----ग्रन्तः पतु व र्षं वृत्राके न हु । वरतः इत्यः वृद्धः पतः हु र हु । पर्वः क्षेत्रः

⁽१) (इबाबर रें बर्बर रेंब् बेर बेर पर कूर क वेंच ग्र र 43)

बे.बद्र.(1877)विदे त्रु पदि ळेवा है शु हेव मनद स्रूरः त्रॅन्'ब्रॅन्न्स्न्न्र्राचन्न्न्न्त्र्यं व्यान्न्न्न्न्त्र्यं न्न्त्र्यं न्न्न्त्र्यं न्न्न्न्त्र्यं न्न्न् ८ण्यात्राह्मवात्राक्षात्रात्राह्म हो द्रितः व्यत्रात्राव्यात्रात्राव्याः त्रेरःक्रु-न्**यॅद**-नेनवरःस्-पङ्क-र्वयःगन्द-लुन-पङ्के**न-ने**-प्रा<u>ष्ट्रम्यःग</u>दिकः… द्रम्यायः अद्भारत्य त्रात् वर्षा त्रम्यायः वर्षा व *बेनतःनश्चःनःप्रदत्तःग्चैतःगुत्रःग्चन्यःश्चनःनद्भःन्द्र्यःश्चेन्ःनवुदःत्रम्तःः* অছ্ন.মু. म्युर-द्वम्यःहेवा व-पन्नदः चे क्या म्येर-रह्मा **利似.**イン. र्षण्यानि नेया भेरा। रहारहा में यन ग्री अहला द्रासुला हे ग्रीण न्दर्भुवा धनाधुवाञ्चर्यद्वरध्यत्वायान्वेतरन्तुवान्ववान्रर्वेनव प्रचयः श्रेयः न्दः च वतः स्या व्याद्यः च विष्यः र्वेष-द्रम्याल्यात्वेदः व्यायाः स्यायाः बर.जब्बय.बिया

ই বব ট্রি- ব্রবান্ত্র-অন্ট্র**ন্- ইব-র্ম-ক্র-রবন** শুরবান-রবিশ্বন শ্বংশ্বংশ্বংশ্ কৃণ্বংশ্ জীব্দাকৃষিগুলাকুণ্বং নতবংশবং त्रकाक्षे द्रात्ता हे त्राह्म विकाय विकाय द्राता शुः क्षेत्र । विकाय विवासीयाची भी वे.मी के. कं. कु. कु. मूर्या वया बुराया नयर्था रेटा। युरा **ब्रेट्य:इ.न्ट्रट:र्-र:**पञ्चर:य्रब्यायाश्चरति न्या र.क्षे.ल्नयाः क्रेन्-'ट.ज्रच्या बुकाने देशान विवासितान सुराय हो। ने खिता हा नहिना परे **इय. पर्दे. पष्ट, वेय. के. यप्ट, चेय. इय. क्य. श्व. ह्य. श्व.** यहें द्र-इन्-यव बाया लया नव शिरागी पुर्न-राज्या सूबाया यह जुरा लारा लारा इसम्बेद्धाः स्थान् द्वारा स्थान् स्यान् स्थान् स्यान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्था के न्वेबरहर ने द्रिन् नित्र द्रार्थ में वा द्वा हित हेर विया पर मंद्रम्बर्खाः विवया देवे श्रु कि. के प. हैं . के प. कं प. हें में . देव . देव . देव . व्याप्ता व्याप्ता वहितासु नाविवाय सुरा हुना रेवा में हो। न्यं द-ने बावा पर्वा सुवा वें व्यापा पर्वा बावा विश्व विवादा विश्व विवादा विवादा विवादा विवादा विवादा विवादा व रक्षिरासुदे वर्णा भेवरायान्याय केवायता तू सदी हा वराह्या पह्रेच नियाता तार्थी , वृथा , असूर अपुर प्राप्त अस्य । श्री या श्री या श्री या भ्री या लपु.श्र.अक्रम.मुयाल्यान्र.रि.मझमया.पु.समा.र्गी.स्मयास्याहेया नवुन्तः विरः व्यक्षः स्रः विद् (क्षयः पवः श्वरः गुवे - न्रः वकः स्वयः स्व **अर.बर.इयान्**र्वेशं ग्रेयार्टं .पपु.ये.यायकूनं तानीयानयायहतार् र..... **名の なおころ、イナ、ころ、 大力な、この、大力を、 とれ、イナ、の、う、か、イナ、 可然の、**

⁽इवाबरादेवाञ्चराङ्ग्रीकाव्याचरवाकाः 47)

मवर क्रेया ग्राइं याया मवर।

दे 'वया हेव' एडी या वर्ष द 'क्षें 'छ्याया हे 'ह्या' वर मुया कंदा ह 'छया ' ' <u>रमः नदरः नध्यः द्वः भेः भेषः बह्नमः नैषःश्चेनः मृतुरः मैं श्चः ह्वः यहानः ने</u> बह्यान्रान्दा बहुया देवाक्रेवाश्वाहा न्राम्याकेवार्यम्या तत्त न हे क्षेत्र म सुवा दे हेल ग्रव त केव में नम केव स्वर में शुः स्वायां वाक्षेत्र क्षेत्र द्रा दे प्रविव सुः स्वा सुः विव द्रा भूषा भीर.इ.था घषु.हा अर.पर्य. १४५१ श्रीयाग्री पर्वेयाश्च. र्वमायान्यायाहर्याः न्यात्रा याः स्वापः (1878) व्यवः ज्ञान्यायेतः ळेलामही के बाद हिमान बाद वा हिला होता मुना महिना लाम है वा मुना इट.टक्टेट.त.र्हेच.तपु.रटट.हैच.हे.थर.स्टवा **अ.रट.**तुपु.क्र्य. **म्हुःग्**ठेग् क्रेत्रगुद्रःन्हेग्रायः स्वारास्य केत्रदेवः से के सक्रेग् न्हा क्षराकृ क्ष्य श्रुरावदानु विवासी र्यान्यरान्यता स्वा धरदार्देद **ঀ৴ৣঀ৾৸ৣ৾৴য়য়৴৻ড়৸৸ৣয়য়৸ৢয়য়৸৸য়ৢ৸য়য়৸য়৸৸৸ৢঢ়৴ৼ৴৸ৢঌ৸ৼ** नश्चित्रः नवरः हे : » कुलः नवे : धरः श्चित् : त्रः वलः वहे वरा नवरः वनः वनः व हुव अहल दर प्रिल देश अहं न दे हे राष्ट्र स्वरे हा अवस्या में **र्सुः**श्चरेःगृङ्ग्।सुर्याःगृहॅग्यार्सुःश्चेयार्दा। र्राम्यार्थः द्रान्वतः इबल-द्र-हे-रन-विर-बे-क-लन्बल-बन्ब-नेर्न न्वेबल-हर्ने. दर-ग्री-हेव-ब्रु-च्रेव-ठव-ग्री-श्रुव-ह्र-र-म्ह-क्रेव-रेव-में-क्रे-ब्रक्ष्य-वीया-**ढ़**८ःश्रेन्-नेवार्थे ॱहेदेःन्सुःश्रुदेःग्र्ड्ग्।सुन्-प्लेवान्ने "हे न्य्व्नार्मा" ः र्टर. में . च च र. खे व. र के व. में . य क्रू . य ह ब था. य था. र य द. दी बे. क्रू ब था. य था. र **₭**₳₮₵₮ॱॿॖॴॸढ़॓ॱऄ॒ॱॸॣॻॴॸ**੩ॸੑॱॻॕॱ**ॵढ़ऺॴक़**ढ़ॸ**ॱॻढ़ॕॴॸॱॸॣॸॱक़ॸ**ॴॱॱ**

(1879) विरोधी अ.स.चंद्रायदे प्राचित्र विराधित "दू प्यते न्न त्यते क्रे क्रु ख्रु या देव सं के दें ता तहेव न्। हव तिया नेव हे ति ति ज्ञाच : द्वा : प्रते : क्रिया म्हु : वा ह्या हे **व** : अर द : ना ह्या : क्या स्वा : वि : क्या स्वा : वि : क्या स व्यानम् भ्रेषापदे द्वान्वर् न्वराये र सराम्भेषा ह्याम् र्न्य ब्रान्द्रेयाच्याः द्वारा केटा वर्षाः वर्ष पहनाया रोत्राच केन सु पक्र मार्केन प्रज्ञिया हैन दें दारे या क **६८.**मेडुमे.पर्यापङ्केषाल्यी व्येम्थायक्दियार्थे त्तु वि.यासी.मूट्यूट नष्टुत्य हैं म हु र नदे रो र ग्री वया ग रे नदे व दू त्य दे हा या गरोर दिरा त्र्र्भ्यत्रः श्रुम्यः हे के खेते खेते । स्याप्त स्यापत स्याप्त स्यापत स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्यापत चित्रवा विरःहा श्चर्तवार्थनः सर्वा विर्यवास्त्रवातानः र्वे वास्तरः सरः इरायवा ने न् हुं न् निग्रीया स्वागी स्वागीवाने विष्यु के वासीन ने **ढॅ**-ॅंग-५८५ दॅर-तृते हॅग ज्ञ-३ते क्रें अर्द्र रूप-२७वरम् वॅल-२**वर्ध्**र मसन्बदारमञ्जूषा विवादिदाल्या

ब्रद्धरान्न्न, कु. चेथा थी. क्रीया क्षेत्र, त्या चे व्राचिता चे व

त्रिक्तत्र श्राचा नर्षा त्रेष स्वराधा क्ष्या स्वराधि क्ष्या क्ष्या स्वराधा स्

①(র্মান্ম-ইব্রেইন-র্ম্ ন্ক-র্ম্ গ্রম্ম-র্ম্

श्च. बा बाकू बा निर्मा अज्ञुला स्वा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा स्वा खे निर्मा र्सम्याञ्चर इं र्वत्र्र्न् सु वर रु पत्रु म्या व्या वर्षा वर विश्वयान्वतान्त्रः क्वयान्त्रः क्षेत्रयान्त्रः मुन्तिः स्वायत्ववायः स्वरः नुः ्रह्म-प्रविम्बाह्यरामुदे : खबा यव : न्रा विषया प्रदाप से राञ्च : न्रा व द्रम्या-स्राह्म्यारा-स्राह्म-विद्या हू न्यते हा यह या स्रेम्या ह्याया य मविष्मुवा भक्कितार्य क्षित्र क्षित्र म्या निष्ट निष्य मुद्र विष्ट मित्र **溪山, 泉, 七当七, 桑山, 田田山, 双丘, 黎口山, 白口山, 七十, 上日日, 南山, 田田山, 双丘, 黎仁, 五之,** म् सर मे प्रविषय द्वर दे देवरा अया पत्र दर सम्मार्ग है हैं र ब्रह्मन्ते व्रह्मानुन् केव केंद्रे वर पत्न नवा निनः विवरा तर तिन् हेवः कुला सं मान्ता स्वा सुराव वा कु स्वा सु र वा नियर नियर निया स्वा निरा गुवा । म्बन्ध्यायक क्रिन्यस्य परि नियर श्विन नी सु किया वर्षेत्र **हुंन** श्च.पनर क्षेत्र प्रिया ने स्थ.ये. हे ने पी से .पन. रे पर हो पन प्राप्त हो पन हो प प्यारच मैयाय्वेय श्रीयाञ्चा स्वार न्याया प्राप्त । बर्दरङ्ख्याच्यात्वर विरः क्रवरहे द्वायावेवा व्रेरः तव्यर्दर । नश्या कुरामा कृरासर की स्वार कर से नाया केरा कुर किया किरा विन श्रे.द्रा चतुः ही विरास्त्रीवर करा विक्री वया से श्रि.दर मार्थम्यान्त्रतारम् रम् मी में प्रमास्त्रार्थे वा अस्यान्त्रस्या हेयाः हेव-पर्वेष:यहर्न में इंगला

क्रेंशनद्भु-मृत्यं क्ष्म्यन्त्र मृत्यं क्ष्म्यं मृत्यं क्ष्म्यं मृत्यं क्ष्म्यं मृत्यं क्ष्म्यं क्ष्म्यं क्ष्म्यं मृत्यं क्ष्म्यं क्ष्म्यं क्ष्म्यं मृत्यं क्ष्म्यं क्ष्यं क्ष्म्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्म्यं क्ष्यं क्ष्य

विवा वेवलालसान्यलान्यं दातुः है सूरान्दान्य सेना प्रवेदा च**८.क्रव.त्र.त्र.५**.ज.५८। ४.थ.५र्स् ज.इ८.गर्श्च्य.ज्या.७८.य्याय.क्री. लट हेट र न र न किया वर्ष वा च र न वा वर्ग ने वा र र र स्विया ग्रीया अह्या तर्रा तम् निया क्षा या तर्री स्वार अहा त्रिया क्षा विद्रामा चित्रयः श्रे. ध्यूष्यः सः क्षेत्रः श्रीतः श्रेषः श्रेषः श्रेषः श्रिषः श्रेषः श्रिषः श्रेषः श्रिषः श्रेषः श्रिषः ॡ॔ॿऺॳ॔ॱग़ॹॖॱड़ॱॾॹॱऄ॔ॱॳक़ऀॱऄऀॱऄऀॱ॓॔ऄॱॴऄॿ॓ॱग़ॾॱऄॣॿ॓.ग़ॹॗॱढ़ॗ**॔ॱ॔॔॔ऀ** तृ 'यदे'न्न' ब'बळॅन्'सेपल'३बल'तेर'र्घ'३बल'दर्नेन्त'प्'रम्कुर्'ग्रे**रा'''** पहेन्या परे व्राप्त न्या ज्या क्या क्या स्राप्त व्या स्रापत व्या स्राप्त व्या स्राप्त व्या स्राप्त व्या स्राप्त व्या स्राप **ल्राम्यात्र्वास्य अन्यास्य म्याप्य स्वर्धाः वर्षः स्वर्धः स्वरं स्वर** रे. ह्र्य वि. विय श्रे. ही लाकु विय स्. वियय परा व्यक्तिक्षे हुरः भुः सेना केना विषान्यन ने प्रविदास नयासं लार्ड् रु . लॅग्याकेनया वनया न्नारक्या वेनया য়ৢ৾ঀ৾৾য়৻[৽]য়য়৻৸৻৸ড়ৢ৾**৾৻**৾৸৴ৼয়ৣ৽৴ৼয়৻ঢ়য়ড়৽য়৾৾ঢ়৽ঢ়য়য়৽ঢ়ড়ঢ়৻ঽ৽৽৽৽৽৽ चञ्चेनवाने. श्र्वाचे. श्र्वावान हे. क्ष्याचिता क्षाच्या क्राच्या क्षाच्या क्षाच क्षाच्या क्षाच्या क्षाच क्षाच्या क्षाच्या क्षाच्या क्षाच्या क्षाच्या क्षाच्या क्षाच अनवः नविराधकेषान् वयास्तरः देन् स्वान्गरः वतरः वर्षाः नरः रहता ने न्या हर र्या ला हर वहिंग लग निर्देश हैं में पृष्ठ शु ने निर्देश विद्या त.रट.वैट.र्ज.र्जय। ग्रूट.पद्ध.श्रेयाच्रा मै.पचरा टपा.पचरा ग्रुवान् विग्यानी अर्ह्न् क्रिंकु के ब्युटा दे द्वार हे में ज्ञार पुरान वयान् वेशवाह्या है रिन् तन् ना तज्जुन सेनवा है मिट सरे तर् वर राज्य न्तः तयम् वाक्षम् वाक्षम् वाक्षम् वित्र ति स्तर वित्र वाक्षम् विषयः वाक्षम् विवार वाक्षम् विवार वाक्षम् विवार व

निकायतिका निवस्त्राह्मी दे वया द्वया द्वया द्वया वि । केवा निवस्त्राह्म स्वाहित् भ्रम्यः भर्म् र. ब.क्रेक्-इ.पु.श्ल. क्षयः नव-बक्क्रमः वदाः भूपः वदः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स भुेंथा≆बयार्थेनवागुः।र⊀ायश्वयाद्वनाश्चारा छुवाद्यार्थे. पदाञ्चाःःः য়ৢ৽য়য়৻৽ড়য়৽য়ৡ৻৽য়৽ঢ়৾৽য়ঢ়য়৽য়ৢ৻৽য়য়য়৽য়য়য়ঢ়৽য়য়য়য়৽৽৽৽৽ **द्रथः%व.**श्चेत्र.षेथात्राच<mark>न</mark>.पे.लश्चन्यशि**ट.गी**षुःशक्क्वेन.वयःज्ञिन्यतःपरीज बह्यः ५ र: हुरा थेगवा नहेगः ५८। व्ययः ते : ह्रवः य दे दे वः विवा श्रम्बरास्य या बिदा **६ व. प्या**र्थीय. तपु. र्षात्र स्ट. कु.च. यञ्च व्या व. प्र. प्रथा यो व्याप्त. देवु.चेल.-रंगर.सी.इंट.चेकुवे रेटिल.ल.क्.चेबुर.चेटर.चवु.चंद्रराष्ट्र. मुरुष न्द्रलाग्री अङ्गलाङ्के पा मुरुषा ग्रुप दिलाश्रद छ्या वि । ब्रस्य रा स्वाया वितानक्षेत्रः मु अस्त मार्थरः वितासद्यान् स्वानितः मु वा हे वा तहीयाः . वे.क्र-इ.५५५.ई.५८.३८.१.५८.३०५. !वयावने.४४.५८४.च४.३... मन्त्रवर्यः मन्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्त्र व् निव्व में ज्ञ न् रतायाय द्वापाय न व व व व के र ख्र के व व ख्र हे र र व नग्र-विकासु-न्यान्त्रा वर्ष्य-व्यक्ष्य-वर्ष-नेवर-वर्षा-वर्ष-वर्षा ८४.नेत्रान्वराउ त्वी अन्यर्गिष्यया सराम् नामी सामे ब्रे.क्रे.ल्राच्याची.क्रे.स्.वावत.रंबे.रंबेच.क्रेप्ट.रंबकाक.क्रे.रंबेट.रंकी

ने न्यास्त्रात्यस्त्रास्य स्वाधित्य व्यास्त्रात्याः विष्य वित्र स्वाधित्य स

छःइं (1882)स्त्रा द्रायते त्रायते त्

क्.इ.(1882) स्रा ग्रुवाचीवाय प्रक्रित्य स्वाप्त निर्मा स्वापत निर्मा स्वाप्त निर्मा स्वापत निर्मा स्वापत

महामा हेता मही का तान मही का तान मही का निर्माण का निर

न्त्राम्त्राम्त्राम् वर्षाः व

त्याने र म्न्यो प्रविष्ट्रिय क्राया हिंद्र क्रिया क्रिया

 2. 「当ち'き'ロボち'あぬ'され'され'さいまれ'さらいにはいいい

 「おおいれ」

 「おおれ」

र्था-रनवारकु-र्भु-रते श्रीनवार्थः स्व श्रीर वास्ते देर-रेर स्वावार

① (इबाधर देव हिए हुँ ए क विषा ग्राह्म 148)

ने क्षेत्रः संयाया सते देरः अन्यान्तरः पद्धन् जीया देरः सन्या जी द्वा स्राप्त शु श्वेतवा १ ८१ । वद्व जुवा नेर खन्य जुवा विष्य विष्य दिया र विवासीन् क्रांक्षात्र्याने राष्ट्रीन् प्रतिन्यम् त्रवा पर्या त्याने राक्षेत्र गुरान् इराजे रागुल राज्य राज्य वा য়ৢ৾*ॱ*ঀৢ*বয়*৽য়ৢ৽ৼৢৼয়৽ঢ়৽৴ৼ৽য়ৢ৻য়৽ৼৄ৾৽য়ৢঀ৽য়ঢ়ৢ৻য়য়৻য়য়ঀয়৽য়ৼ৽য়৾৴৽৽৽ विष्युम् मिन् भिन्न विष्युम् न्राष्ट्रातुः सुदेः न्राराज्ञवयः ने : न्याः धवः द्धवः त्यवः ह्यं नः चेनः धदेः हेनः ब्रीरः धरः धरः धरः वा रुवः ने रः रुचे वः है वः यव वः यनु रः वीः वाकः मुः **श्चेर**-कृष्ट-व-र्न्ट-चॅर्-केय-चॅ-व-ठव-८त्तुर-चेर्-धते-र्वेग्व-ध्य-पश्चेत-केर् क्रें ता के ता विषय के ता क ब्रवियः यान्य म्यान्य व्याक्षः हेवाशुः विवादः श्वियः वारः यः य न न न न न वर्ग्यु अरेत्र्व विष्ये वे अर्वरवा गुवा वि या स्रेति वृद्धे ते स्रुत स्रुत वि स्र-भ्रेचेथ.धे.स्.स्रेचाव्यतःचेश्चाःधियःक्षेत्रयःचेश्चेतःहयःच्या त्र्वाता त्री प्रतित्र त्री त्र त्री त्र क्षेत्र स्वत्र त्या व्यव त्र त्रित्र त्य त्र त्रे त्र **ਫ਼ਜ਼੶**ਫ਼੶੶ਖ਼ੑੑੑੑ੶ਜ਼ੵ੶ਲ਼੶ਖ਼ਖ਼ਲ਼੶ਜ਼ੑੑਲ਼੶ਜ਼ਜ਼੶**ਫ਼ੑੑੑ੶**੶ੑੑੑੑ੶੶ਜ਼ਗ਼੶ਜ਼ੑੑਫ਼ਜ਼ੑ੶ਜ਼ਫ਼ੑਫ਼੶ਜ਼ੑਫ਼ੑੑਫ਼੶ਖ਼ੑਲ਼ প্র-ট্র-(1814)শ্র বৃত্তিব-ইব্যার্থ-স্থ্র-ট্র-या द्वेर:वा नवात्रवार्ष्ट्रित्यापरार्पेदर्भ्यावाचिवाने नवार्षेद्रायां विवास मृद्रैतामर्थ्या स्वा द्वा द्वा द्वा देवा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्व स्वा स्व स्वा स्व स्व स्व स्व स्व स्व स् है 'चर्च व् कुल न् वर्षा ल है 'कें ल वहत गृठेग कु चुल च न्हा न्वन्देव्यक्तरम्

र,**हॅ**८:कुरै ने प्राप्टे क्रि. खुका कुट ने का न्सुट **रंग**का न हें दाकु के लेंग "र्व बेर्र्ह्गार्-वर्ष्ट्र या व बेर्द्य मा उर्वाप हरा नहरा पहेब्रत्याच् चे ३ १ श्वास्ताया स्वास्ता स्वास्त्र स्वास्त्र चे व्यास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र वह्रायर वर्षा म्या में या में प्रामित स्वायर ने में प्राप्त में में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में में प्राप्त में प्राप् यर्षे प्रमुष्य (बुष्य में प्रमुष्य विषय विषय प्रमुष्य प्र पविषास्तरः ब्रेट्र शुर्रे हर्। र्डेव्र हेर्यानयासं जुला पिःहरः 5 ने र न् हे न . ह न म हे रा सहुर ग्रे रा मर्ड द . द ह या चे र . म से . र से न रा खेलायाञ्च. स. थु. रचा लेला. रेट. या पड़ियालय. तपु. या थी. कु. पा. रं या ती. ये व्या वदायान्ता हैयान्ताहे व्यानेवाया हे वाहरामा है। यह राज्या लाईवाष्ट्रिरवाबरानवे वंदावदी वा वे वा वे वा वा विवास विवास वे वा विवास व <u>न् चैक है जः बहु नः धदे : बैं। धना नृष्टेना न्हा ह्वा तहे वा चुक हे : वें न् खें का न</u> हिर्यास्त्रम् वस्त्रः अस्त्रः अन्यायः वर्षेत्रः स्त्रेन् स्तरः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः चेथामा अःच र्। द्विगास्यार्मा स्वतार्ह्मेरवासुरवासुरवासुरा चेर् क्षेर पर्श्वया अवयाने्रायच्याक्ष्र्रत्याताक्ष्रुन्। या स्तु क्ष्रे वता क्या कुषा क्षे **ब्र.**क.प्रा.स.चर.रे.क्.बंलूप्त.रे.चलेब्या.क्षेत्रय.रेड़े**द.**ह्या.पह्नेब्य.... न्नेंयः वेयः वया स्वःग्रम् मिनः नेवा विया वेवः सः नः वयः वा वदः वरः मॅं राय केव में दे क्षु कंव में रामलु ग्रा शुरा गुदे खया म्वार्मा ह्मान्द्र म ह्मालवासु हेम हुम्मान्द्रान्यता स्वा माम्याञ्चेत सुरं

मळें देर दें र हा न्या विवाल रहर हें हे। रवाया विवादर ক্রমানতকা বদ্যী দ্রব্দির্মন্ব্রাক্ত ব্রহ্মকার্মান্ত ব্রহ্মকার্মান্ত ব্রহ্মকার্মান্ত ব্রহ্মকার্মান্ত ব্রহ্মকার্মান্ত **ढ़ॕटयःक्र्यः**चंब-मुःब्रेटःयरःयद्वःपर्देषःमुष्यःमुष्यःम्यदेःपष्ट्वःपःरेवःसः करःसः तच्चे वःग्रीः चः त्वःश्वेषः श्रुः वृद्वः वः वः वः वः वः वः व्हंषः वृष्यः वः व्रायः वः बर्हरः ततुन् पर्या नेया न स्रान्ति राग्ति राया केना नया विताय ने दे राया के स्राया तस्रावन् स्वयास्य द्वारास्य स्वरास्य स्वरान्य स् ঀৢঀ৾ৢঀয়ৼ৾ৢড়৴ৼঢ়ৼ৸ঀৼ৸ৼ৸ড়৸ড়ঀ৻ড়৾৾ঀ৻ড়৾ঀ৻য়য়৻ড়৸ড়৸ড় म्रान्ने दे वह न स्वाया स्वाया विकार हरा देवा गृहार विवाय स्वाया विवाय स्वाया स्ट्रेम्यावि.की.,, वृद्य प्रिट्रतपु श्रेच.वि.क. इंच्य.वी.पश्चरी द्या अक्र्य. ब्रवतः ब्रक्षव्याता निवयः ह्रास्य विवयः निवयः निवयः नेति वयः निवयः निवयः निवयः विवयः निवयः विवयः निवयः विवयः **बर्धर-ह्या-द्रेयायाम्यायाः अन्याक्ष्यः अन्यायाः स्याप्यायाः स्याप्यायाः स्याप्यायाः स्याप्यायाः स्याप्यायाः स् द्भगः धरः तुः** धर्यः तेः न्द्रः ग्रवः धः ह्रदः विषः गृष्ठेषः वर्षः श्रुवः लुः तेवः सुषः " वद्रम्बल्यः वृद्धाः क्रिक्षः क्रिक्षः क्रिक्षः व्यक्ष्यतः तः २ द्वेतः मृद्यः क्रिक्षः मृत्यः विद्रास्य क्षेत्रयाग्रीयाश्चरादीयात्राह्य ग्रेन् श्रेन् श्रेन् ह्याशुः यहरायान्या न्वतायरा **ल**प्त देता है 'कुल बै सेर ला बहेल मा हुल है 'ब्रह्म द्वा हैंत 'हुस ' **८.६.वर्धेय**.वैट.घ४.घर्षेथं.रंगे.है.श्रीट.घथ.४८.व्रीवेथ.थे.घद्यं.पर्द्यं. **⋽.बै.**पथबारबे.पूर्वारकरावृद्धांपरक्षप्राचिराक्षप्राचिराक्षर्याचेत्राक्षर्याच्या **यःबद्धवरा**णयाःबवान्दारायः वस्तिःह्यः वीः त्रेन् वदाःतृतः हिनः नुः सरःः *क्षे*ॱसःदल्लर:नृष्,यरःपञ्चरच्चे देःयाच्याःविचःदक्षेत्ःग्रुयःचयःवाळ्न्ः · · · · रहः श्चेन्य शु र्वेन्य द्यार्य द्या वी राष्ट्र न्या न्रा र्यम क्रिम्य

ग्रवाम्बंबाड्रेन् महत्येव वर्षा नर कुल बर्यवा केत् हु हा । वन्द्रतः के निवेषातुषावयद्रवाषा वायवि देशा वृत्र विवेषात्रः "" বৰিব জ' ইন্বেন্ স্তুন শ্ন্র্লাবইন্ র্থা খল্ল ব'র' ্র্লিব্ উব্ '''' **द्रथातस्यास्य अरास्याद्राहरः । मृद्रः । यदाशस्य द्रयाद्याय । दराराः** र्मात. इ.ज्याया श्वेमाया स्वाया स्वया स्वाया स्याया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वय **५इर-५५०-५८-५७ वर्षा श्रुर-गुदे-७४-५ अ**हन्-५६५ श्रुर-क्र.क्रमारम्परप्रदायाःच्या नगायः भगाःस्याय राज्यार स्थारः स्थ्रास्य व्यवस्त्रम् देश्वेदार्थेत्। या अध्यक्षयाः भुः देवा नृत्त्र देशे कुलः [विकारी] विक् वा दिवार विकास विनामते स. क्रेते च . प. देन . लेव . लव . पर्या त स्ता र . य व व वर्षा व वर् . र्वे **हॅन्**न्य देन चेन् स्र राष्ट्र स्तर्भ क्ष्य स्तर्भ न्य न्य न्य न्य न्य स्तर्भ न्य न्य स्तर्भ न्य स्तर्भ न्य स् **४५:५०म् अन्यः ५४ ५:**५०म् ११०:५८:कुराः मृश्राः छे ५:५:५% ५० मृ **इंन्-अर्म्यः मृद्रेट्-अर्ह्-अर्ह्-।** प्रि.त. मृद्रेयः येथायः अस्ययः स्ट्रः **न्वैस्पान्नात्सर्टान्र्सुन्र्ह्माह्मा**विनान्नायम् न्रीवाः,नाधरावाद्यसः <u>おス・ロカメ・車車、マゴダーを大め、小類イ・ナ・マゴの、質にない単の、丸・ぬ着・・・・・</u> **ॾॕॖॸॺॱॾॺॱॻॖ**य़ॱॺॕॺॺॱॸॣॺ॔ॸॱॸॺज़ॱज़ॣॸॺॱज़ऄॖॎॸॱख़ॗॳॱय़॒ॸॱॿॣऀॿऻॺॱॿऀ॔ॱॱॱॱ **र्डेदर्नवग्-रहरार्वर बुरादाबीयार्डवाहरार्वराय्वा** बिनारा ब्राट्यायान्यायाव्यान्त्रात्त्रायायान्त्रात्त्रायायाः **क्रॅंबल:१:इट:इट:२** लॅट:पदे:८व:५५वास:सु:-(च्रेव:६स:-दव:५६स:-चिन्यान भूवा बरार् वा श्रीया तरायां दिया श्री हिन्या श्री हिन्या स्थान **गुरा ने नजान् हैन है नजन तह लान्य मानी तर्जे धार्ज़ दे ने ने नाम ज**

ॅंच व्याप्ति का चेरामा मृत्रेक र्माम्य प्राप्त का मृत्रेक प्राप्त का मृत्रेक प्राप्त का मृत्रेक प्राप्त का मृत्र ळ्ट्याशुः नर्द्रदः न्तृतः चुला हें स्मात च्या हें ट्या दे 'हे द्' दें द्' हुं य्या शुः यक्ष्यत्र त्र्य होत् वितः विष्या त्राया विष्या मा ्यम बै: न्यू: रुप: र्यम सम्बर्ग मुने चेर्: भदे है नव्य बेन है. < इल क्रियान्ताव वृष्य ध्यान के विषय विषय क्रिया क्रा क्रिया क्रा क्रिया विषय क्रिया विषय क्रिया क्रा क्रिया क्राय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिय रमः चुत्र के रेन्याम्यानीकी व्यम्यान्मा कृषास्यानु वेन के अमः नेया म्बायाञ्च व किराक्षेत् होया नर श्रुटा क्रिया एव श्रिया मध्या श्रिया । हिया श्रिया । हिया श्रिया । भेषाय **चयासः न्दः इन्यः** मृद्यः हीन् विद्यः वीयः ग्रुटः यः यद्धयनः सः ८ हुन् <u>ल्ट.कुर्-रटा</u> प*चथाकूट्य.त.र्ट्*-पूर्-पूर्यय.त.२४४.कु.प्रमुल.स. वरायान्द्र। श्रदाधियात्राचा वदायात्रत्त्राकुत्रायदेः इत यान्द র্বারান্ত্রিশ্রের বিশ্বার প্রিক্তির প্রার্থ প্রার্থ প্রার্থ প্রার্থ প্রার্থ প্রার্থ প্রার্থ প্রার্থ প্রার্থ প্র इवसः इर.में. वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वरः रमें वरः रमें वरः रमें वरः रमें पश्चितः चे. प्रत्याः चेताः चेताः चेताः चेताः चेताः चेताः चेताः चिताः चिताः चिताः चिताः चिताः चिताः चिताः चिता ञ्जुॱत|कॅरःग्रे**ञाग्र**रःनञ्चनःञ्च-दृर्द्यःतेत्रःथ€र्-रे-कॅर्-रु-वृद्दयःश्चवःः •• <u> श्रीकालः महिकाञ्च मायविष्याः । त्वाने रान्धे वाहे । यर्व पर्यक्षायकः</u> त्य**यः कूट्यः श्रुपः य श्रुः कू** त्याः इया श्रुपः व स्व नः द स्य नः स्व नः स्व नः स्व न्म्यावेयाः हेन्याः श्रुत्य वेदया यदा च्रुया गुदा विदा वेदा राया दराया दराव या । ब्रद्राद्रान्, न्हें वृत्ते हे व्यववायहीयायर व्यवाहियावका वित्राह्रात्राचा विह्रा चेंचर.अह्री थ्या.अब्रेट्य.प श्च्या.क्रूंट्य.क्रेप.सू.अव्.क्रूंच्या.क्ष्या.कष्या.क्ष्या.कष्या. र्रः के अवात्रः नेतः क्रांचा कर्या विद्या के यार रूरे विवयः विवा विवा विवा म्माद्राक्षणा व्याप्तक्षणा व्यापत्तक्षणा व्यापत्तक्षणा

प्राचार क्षेत्र में विक्ष में स्वाप्त में स्वाप्त स्व

६ने त्त्र व द्या द्व े व स सदव हे खुन दशे दर द स स सर स यवरः। त्रःश्चं वःकुः वात्रुरः श्वे विष्यास्त्रे यवस्यः स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा याच्ययःश्चर्ः ्ब्राचेयाः हेवायाहेयाः तेराकेवाञ्चयाः शुः तं च चरार्मयाः स्व सः तरार्यातार व्यापा गवर है ही कुल की की का सक्यता वर्षा है " व्रत्यायाः व्याप्तिः वर्षात्रः वर्षात्रः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षा **พระดิสะอร**์.พระจฐสะสโจราสินะสโจระจุดีระจุดีสะระสำสนา यरा न्वरा र हुर हे 'मॅर' सं 'कु ' अर्द सं स्रातु कुर रा द तुर ' २५ र । बन्दरः कुः बन्दरः ह्रेटः नुः चर्चे द्रा इविषः बर्द्धरुषः नुष्ठेवः हिदेः वषदः खुयाने न्दर्भ क्षेत्र खुब्र बढ़्ब्रा तु कुया हे न कुद् वा वा अरावा पर वर्ष् वा नश्यः क्रेर् स्वाराया नवरा सहया नही सुंया होता निव द सु रार तहीं रा दर्देव'विद्रुप्त'ई'विविषासे'यम'व्यास्य'रे'रा'मव्याश्चेन्'म्बुद्र'य" मगारायहणायहा वाद्रायदेशाच्यात्वा इंरात्वा पक्षात्वा प्रहाने न्तु *न्*र:बे:नक्रु:न्तु:न्रःसुत्य:ख्र:ने:सं:क्ष्र:ब्रद:वर्डर:वर्तुत्य:बु:न्वॅरा:मदे:**देरा** कर'गवर'। **रे**शःमॅर्-बे:रेग्यायामुब:याहॅर्-ग्रेयार्चे**द**िहेयात्हरयायाच्या

 यूर-र्इर-श्रेर्-म्बुर-धर-क्रूर-मै-र्सुल व-म्वल पर्द ध्व-शे-ब्-सुर-युरा दर्ग्री के रेन्या प्रमानि वी के स्टर्मा कुला महेरा न्यं करी नाय त्रेरःश्चु ।पणः गैराःश्चेराःश्चराःश्चे । सद्दरः सक्ष्यराः पह्नद् शुरः दरः रदः हे दःः ग्रे अहं राष्ट्र मा स्वापित प्राया स्वीपात में ति हो त्या मुन्य स्वीप के न् मु के ইন. (1866) মুখা প্র-এই এ. গ্রু এ. গ্র नरःनग्याः तर्म्याः च्या र् र् र् राखरा बुरः यरः यवया छूरः दर् राख्यार्गरः इप्तु-ध्रम् त्या प्रमुख्या । स्मुक्त-ध्रम् प्रमुख्यानयायाया स्मुन् 대자·성·육· [도· 다성 미집· 다· 회탈도· 다 된 대· 회·황미· (1866) 전요· 휠· 쿨···· ষ্ট্রি'Bব'অ'র্ম্ব'শ'"৲্রে'ইন্'ন্থা-নৃত্রীব'ইনি'রী'র্ম্ন'রর্মরা<mark>শা</mark> र्वर वक्ष की लग्द क्षेत्र की विषय की कार्य की किस्स की की कार्य त्शुवारमामाः क्या चेन् किन् नेन्। न्छेन हिनः का बळेन नः क्रुं मुन्नः ₹८.५.७६८.लथ.४.५.०८.। ८.९५.००.००.१००.१००.१००.१००. तर्न् तेत्र्याः ने मा व्याप्त्रं न् त्व्यायाः व्याप्त्रं त्यायम् । मृत्रं व्याप्त् यसान्तरः श्रदः नदः न्तः ग्रीरा रुवा या क्षं सं ग्रीत् वी तदः वा व श्रुतः वश्रु न वश्रु न वश्रु न वश्रु न वश्रु चेन्-तु-दह्दन-र्रम्यानवर-"वेयाधे ने पहराद इर हुराद ध्याक्षेत्रः" युर-५५८ श्रेर्-मृबुर-५८८ श्रुम-४म-५ श्रे श्रेय-५ रम्र-४म-५३ मः" द्यायर श्रेष्य मेर्रायन प्रत्रा विष्या व्याप्य प्रवास स्वर् विष्य स्वर् विष्य मद्रार्थिन मृत्रायायुरा सुरायदे र्था भाग राम्मे षमःगुरः वृत्राः ग्वराःशेर् ग्वतः र्राः न्रः रोतः श्चु खैः बरः व्यर्याः ग्रेकः केवः युद्र-न्युद्र-वी-व्य-तिविध्यायी-वर्गत-देद-व्य-विद्य-वर्ग विद्यन (1887) स्तु अनुवासन क्षा वा का छेव । स्तु ता स्वास न वा का न वा का न वा का न न वा का न न न वा का न न न वा का न न न न न्या नैया हुव स् े र्े सेरा श्रु अंदरा वया जवा प्रवाहित स्रोह । र-प्र-न्द्रिय-इ-पद्य-पद्दियामायवश-क्रूर्याका वर्षा র্গ্রবা *ॸ्*ॾऀ॓॓॓ढ़ॱॾॆ॓॔॑ॹॱॸॕॸॖॱॺॱॸॳॕॿॱढ़ऻॖ॔ॺॱॾॖॹॱय़॓ढ़ऀॱॺॕॱॹॗॹॱढ़॓॓ज़ॱय़ढ़ऀॱॸॆ॓ॸॱॿॸॱ **"ৢয়৽৾৾ৢ৴৽৴৾৾ৢঀ৽৾৾৾৾ৼ৾৾৾৽৴৺ঀ৾৽ৡ**য়৽৾ঽ**ৼ৽**ৠঀয়৽য়য়৽ৠ৾য়য়৽য়৾৾ৡয়৽য়য়৽য়৽৽৽ য়৾য়য়য়৻য়ৢ৾ॱৼৼ৴য়ৣ৾ৼ৾ৼয়য়৻ৼৼৼয়য়ৼ৽য়য়ৢ৾৽ঢ়৽ৼৼ৻৸ৠয়৽য়ড়য় बद्धवराशु न् वर्षा वी ने वर्षे हिंदा क्षेत्रा स्वा र वर्षे हता सामा हिंदी हैं वर्षा प्रति । न्मॅर-म-याजन्। मन्-क्ॅन-यतुव-वेषामदे-षा-ववष-नेर-न्वया-याँदेः **ॲ'कराप्यूर, कुबेर, सूर्य, सूर्य, सूर्य, यह व, प्रदेश, कुबेर, सूर्य, हुबेर, यह व, यह व, यह व, यह व, यह व, यह व,** न्रें तर्शु नर्श्व मृत्रा "बेरा निम् । अन्याने नः यान्य विषाने स्वान्ते साम न्वर-दिव छेन् अपव अर व व र ने निव अप भिव भूगवा न छेव हिवा व र অন**ত ব**্ৰেছিঅন্তিন্-স্কল্মন্-মাট্ন স্কল্মন্-স্কল্মন্-মান্ত ব্ৰহ্মন্-*८देव् प्याञ्चे पन्ने पायाचर प्राच्चा वेवापा चेन् ज्ञे त्या क्षेत्रय प्रचर*

 द्वरःद्ययः वृत्रा विषयः वृष्यः वर्षायः दृष्ठेवः दृष्ये वर्षायः विवयः हेदः मति पत्रवार्ष्य पार्ते व दिव " र्डिव हि पर्व व हिल य प्राम्य व में म व व " र्देव ग्री पर्मेन् त्रे देवाया बुया स्वामनेन सुन । मण म के म पर्मे । पत्म । नवर न्वेयावर न्त्या वर न्रा इ नि न्वया मेरा है नि विवया विला वरायव्यानक्यान्यात्रेवान्ययान्यास्य न्यान् श्रुवात्युवा न्दा न्-तृदःन्में याया चुदा के न्में वा शे के त वेदाय वा वया ये राम्य र्टा व.र. श्रेयाता १६ तम्रेट. १ व.६८८. ८ थवा श्रेपामे व.र. मूथा बैर. तियः श्रे.क. प्रभू प्रविचा चेष्टर मृत्या सार्मरा। व्याप्य सर् प्रमू ना स्वर बे हुँ गरा न्रा के नायन्य वे हरा वायनेया हुन है। शे यहरा मन्तित्रः मन्ति कर्ने भेनान्ता द्वेनवा सहत्वान्यना द्वनवा त्व *नैषावाःग्रीवाःषाञ्चवाःचवः*ळवःष्यान्दःकेःवतुःवर्षेत्ःषाद्याःवहंषाःद्वः · · · · · · न्द्र-तर्व-र्यावयःश्वायः श्वायः श्वायः ग्रायः वर्षान्यवः ग्रायः तस्याः **ॿॱॿॖॱढ़ॖ॓ॺॱ**ढ़ॻॖ*ॸॺ*ॱॿॺॱढ़ज़ॖॸॱॸॖॱॺॱॹ॔ॸॱॸॱॺॹॱढ़ॿॕॱढ़ॿ॔ॺऻॺॱॿॗॱॸ॔ॸॱऻॗ रे'नदेव'र्श'दर्भेष'र्यष्यान्त्र्र्भेष'विषयार्द्र्यान्त्रुत वर्रद्र्यान्त्र् ॱ न्वॅर्यः र्नेव ग्न्व राक्केव सं द्वयान्वि न्दः न्ययः व्व ग्वरः केव · · · · **ॿॖॖॖॖॖ॔ॱ**ॻॖॱॾॕॖॖॖ**ॖ**ॱऄ॔ढ़ॱॸऀऺ॔॔॔॔ऄड़ॎॱॸॕॺॕढ़ॱॿ॓ॻऻज़ॱख़ॸॱढ़ॻॖ॓ॸ॔ॱ॒ऄॗढ़ॱॻग़ॗॖॸ॔ र्राञ्चन्यार्न्यार्वन्यार्वनायव्यात्रक्षात्राच्यायदेश्यक्ष्मान्यश्या ने देशेय ग्लूम

रुषादेर वर्षावयाक्षेत्र विदान्द सेन ही व बदा बद्या वया र्चेत है नद्यातहाल सर त्वान क्षियं चेर् सद र्यन ग्रम्य छेर् क्षे दे শ্বান্য ইন্নির্শ্বাজয়নব্রের্জ্ব অইশ শ্বান্ত্র-স্কুন্ররেরে न्डेन्-तु-न्वरः। बे-धन् (1887) वि ह्व-पत्त्व-धि छेरा-पति केत्रप्रकार्म् त्याय उरवापाने 'न्यापक्षया केन्' द्वरार्थेरव वायस्ववा सु बन्दःन्धं व स्व स्व स्व त्या व म्ट.र्थनं वर्षान् ह्रान्तर वहरी रे.पलेब विषय ह्रेन्य है. र्सर-्यमायर्भ-स्पन् के.से.स्यान्र-प्राय्यान्र-प्यायः या. बाक्ष बारा की. चीष या. कीषा. कीषा. चीषा. नदैः दे न न मृष्या सार् न है व है न र व द दह्न य न सम्मिष् क व दहें में हु "" হ্ রা লেম্ রে রিকা দিম । কারী (1888) মুধ্ এ মিটু রা নের্ড রু রা মেরু রু র बुब्। यम्बेदाहायद्वायहायाम् वया व्राम्यायवे गम्भावः व्याप्ताया म्न त्रानु त्या पुरायान्य विषायका द्रान्यन त्या हिता नेर हर्-्वम इवय स्मिन्यरमि । । विश्व दुम्बल कर दिन स्व नगर इदु-धे. मेश्रय-७इथ.वथ.२.च्युपी नम.पे.व्रय-वर्ष-रा. बर्ष-ग्री. बत्रः चतुवास्त्रः म्वरः रवता ग्रे वळवाळा बरः मं विद्यारे न्दीवाहित न्यम् सिराधर कें त्राप्त मार्च चुला केंद्र त्रारम्य सु रच्छेद है ला ये न् तर नर्जन यहाँ साम्रिकासदे स्या क्रुका लेकासदे नदः "नुकाने राम् वर्षा करा केरः" मं जुन मते न् है न हिते न सन् न न ने न न न न सन् सन सन इययान्दर्याञ्चन रयातु क्रेयाने छिना व्या व्यान्य प्राप्ता क्र्या कः रः यर य हुर वर् त्रात्व विषय दे छे त पत्र हु द हु द हु द ति स र हु द **฿**.ጜ**ዿዿ**.୯ዿ፟ፙ**.ጘፚ**.ቛ፞ጟ.ፙૹ.ኯቝ፟፞፟፟፟፟፟፟፟ዾ፞፞ቜ፟ጟ.ፙፚ.ဥዸ፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟ፚዾፙዹ.ዿፙ. .. चेथा <u>रूपा-विचाल्यामुकानाः श्</u>रेचाल्यायकारांच्यान्ययः स्ट बेद्रायरायर्बद्रायह्र्याद्र्यम् द्रद्रात्र्यम् यच्या हेद्र्या बद्राव्यक्ति । बद्रा न्डेब हिरेन्यण वे पन्नु क्षा उंया परा च करा वि न्यण वे पकु^र्**रॅव**र र्**ठेग**:र्दा खुलार्ब्य है शुःक्ष्याः र्वं यार्व्य व्या रूपः हुर विदः" लेका निम्। र्वे यार् राप्ता व्या व्या विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय न्यंत्रत्नेन्यः वन्यः न्वेतः है नर्यतः तह्यास्यः न्यमः । चया नर्वनः तहे या परान्तरः हे ने . यथा पनः सुना ने ने . सः नः ने या थे। से न्या **ॿॱॻढ़ऀज़ॱ**य़ढ़॓ॱऄज़ॱॻॡॖॱॻढ़ॖऀज़ॱढ़॓ढ़ॱॸॣऄज़ॱॸॣऄज़ॱय़॔ज़ढ़ढ़ज़ॱय़॔ॱॻॣॱॱॱॱ सर्क्षित्रम् विवादित्रम् विवादे । द्रा न्यान्य विवादे । मर दिर म्या चया श श्रुवाया प्रवेद प्राय स्ति य राज्य प्राय प्राय प्र

ब्रमायी म्यो मात्र स्ट्राया मृत्या मृत्या मृत्र में स्ट्रमा मृत्र में मृत्र मित्र ६८. ं वर्षा क्ष्रा १. व. क्रिया ब्रह्म क्ष्रा क्षरा क्षेत्र क्षेत्र क्षरा क ষ্ট্রনথ:গ্র.রুথা रहेव इ.पद्धारिश्वाच्यातर विर प्राप्ट्या श **নহ্নধ**ন্থৰ মন্ত্ৰ, প্ৰাৰ্থ প্ৰথম নাম্প ন **ଌୖ୶**୵ୢ୶୰୵ଵ୶ୄ୰ୣ୵ୠୖୣ୶ୖୄଌ୕୶ୣଌ୕ୣ୵୕ଊ୰ୡ୶୕ୡୄ୕୶ୠ୶୳ୡୖ୵୕୶ୢୄୢୄୢ୶୶ୖ୶*ୣ*୶ मधे वर "इर र वर्ग स्थय वर्ग वर र र र हे य वर्ग वर छर हैया रे दि वि के ृर व े ले या व वें संद कु व वें ते रे वा वया न वें व वें के व वि व थिष क्षेर.स.पर्दे.लूर त.रु.चबीर.सूब.पट**घ.र.**पच्य.<u></u>धे.लूच. व्ह्यी ढ़ऀवॱऀॣॻ ॸॖॹॕॸॱ**ख़ॕॱ**ॸॣॿॖऀॺ ॾॆढ़ऀॱए**ॹॕॱॸॣॺॻॱॾॣॺॹॱॺॻॱख़ॸॱॱॖॱ**ढ़ॾॖॕॸॱढ़ॆॱॱ बर्झर ह्रेनल रेर बद्ध व ब्रा सरान कुन वर्षा म्यूर "केरा दिन प्रा रेर ब्रुट गुर तहें बल नेट र्पंपत वह दल इव पर में र न्वम मेल बळ व. . **इ.**ंथर.कैंचयार् था.ं नेत्रेच.हपु.रंथचा.बेंच.ग्री.षघष.घषु.लूरथाश्री...... पर्भू र हे में द र दाय इवल क्षेत्र स्या हु से द्यत द्या रे ति हे । हुल ग्रेग्रु । कुंग्रायति असंस्रायन् मुन्द्रायो कि के लेखार राम् **है**रामाद्गराञ्चेषामध्यार्थे**व**ार्धे**व**ार्थयात्यायराज्ञेषाध्या र्धेवाहेरा ५ में । र्वन्वरः संस्टिन् ने व्यान् हेवः हे त्र्ने न्वन् नेवः व्यास् <u>อะ. ฺะฺพ.</u>ข.ฮฺะ.ะฺฆ๗.ฆะ.ฐ.๗ฺะ.ห.๖ฺ๗ฺ๛๘ฺ๛ฃ.฿๎ู๗ฺ๛๛.๛๛. ... प्रवेष-त्र- उद्गेष-त्र्येन-श्चि-प्रवे**ग-र्यान-स्थय-क्र-श्चेन-स्य-श्चन-**द्रस्य-श्च-**हं**या हेव पतिवास 'त्रमा के ५ रायहेव हा यह वायदे के वा हेराय कुरा हेव

ने हेवः न व ्त्यारेन विदानमा विराह्म विवास बर्धर-रेड्डेबर्ट. क्बर्यह्यातरासर-ध्यान्त्रेर्त्यान्यान्यान्या नगतः व्रवन्त्रेदः वैषान्वषा क्षरः द्रः स्वानगरः द्ररः दुरः वुः सुषाः । नदै नग्रत्यत् नु "न्द्रस्य नस्य अतः प्रस्य नस्य विष्यू निस्य विष्यू विष्य सर.व.ज.च.च. अवाव विरयामाय विवा शुः अहर र में वे तर में वा तरा र्नर तित्रा है रिया है अर्वि व व्यवस्थान व व व देव ने वे व जे व वा हे इरा विषय प्रमानविदेश में वा क्षेत्र हिरा विषय विषय है र वेशानकु न्रा के मि के में रार्टा वर्षेर्या क्या दवा दया र्मत। इ.चंब.श्रवया.की.लेल.रंबव.कुव.ईर.चेब.चकी.लेल.रंबव.श्र. ॲंदै:५वेंं:५२ॅंबरा-ठ:२यॅव:२८:। वज्जु:२यॅव। वे्ट:२यॅ**व**:२**ठरा क्षॅत्र-तु-पार्हेर-पात्र-अर्धर्। ज्ञुल-रगर-श्रुय-उद्गृत-ज्ञु-अळॅलामॅर-**न्त्रमः न्यं न्त्रमः इवराया स्वराया स् **व**'मञ्चर'र्स्याय'भेर्'केय'म्यवर'क्षे'ययार्वेय'म्युम्'म'ठव'ह्ययय''''' **९व्-**ङ्द्र,लुक्,चूर्-कु.शु-श्-अं,श्-अर-बुक्-**बे**क्-बेक्-बेक्-बिक-कु

র্ব্রু ম ক্রুব স্থ্রুর মরবে শৃত্তৰা দু শব্দে বা মার্মা ব্রুলা ব্রুলা ব্রুলা ক্রুলা ব্রুলা ব্ न्यकास्यका सुकार्यका न्राने कामा तर्व । विष्या सर्हर्या क्षेत्रगुर-र्घर-शेर्-मल्र-मि.छे.क्षेत्र-प्राची-श्चिर-परि-स्र- विजाने.... **৾ঽ৴৽ঀঀয়৽৾৴ৼয়য়৽**য়য়ৢ**য়৽**য়৽য়য়৽৸ৼ৽৺ৼ৾৾ঌৢ৾ঀ৽৾৾ৼ৽ৼৼ৽ৠ৽ঽ৽ৢয়৽৺ৼ৽য়৽ त्रे-क्:पुरे-न्-श्वर-बुन्-य-ने-क्रंट-त्यत्य-ठ य-य-धेव-ध्न-सुन-३८-वै..... **ዻቔ፞ዿ.ጚ.ዾ፟፟**ዹዾዹፙቘቜ፟ጚቜ፝ዺቜ፞ዺጚጜኇ.ឨ.ቜ፟ዺዿ.ፙጚዾ.፞፞፞፼. ๓ጚ.ዾ፞ሗ. **य**ॱविषाधि**वःयराक्वेवः**शुदःर्घुदःश्चेर् बबुदःग्वैरार्नेर ह्यूनःश्चॅरः । बदःः **६मॅथः"वेशःगवश**ासुतः र मशान्दः रेश्वः सः बु**शः**गुदः **१०व**ः स्हेगः शुः ४ वः । **बान्नियान्त्राह्मरान् बर्गान्नु रह्मान् मराह्मे । यया छन्। मु राह्मरा ह्मरा ह्मा ४५:५:बर्त्रःधरादेश:छेव्**:गु**रः५**इर:श्रेर्:म्बुर:बैं:सर्बे:सर्वेगरादेवार:देर: **खन्यामदे त्या द्वान्या प्रत्या शुःलम् त्येदा** यह्न राहे । स्ट्रान्य मा स्थया सम् देन-वर्गाय:श्वेमा हे : ह्वं र-दर्भे स्वर्गायाया द्वेत-हेर-वर्भेमा सें या हेर्-के **दे.लट.र्ब.त.लुब.त.बङ्ग्रह्म,कुर.लेट.बीर.**लय.थू.के.वट.चर्श्च्या स... **रे**-वर्-क्षेन्याक्याक्याक्रियान्यानेत्राच्यान्यान्यान्यान्या न्दे व तु व द्वापा तु पश्चित्। "मुं व रेव केव म्र हिल रु व र्प्त पदे र्द्र-त्यम् क्रेम् विक्या र्दया रे र्म् विकास क्रिया के कार्य राम् न्वयःश्चेन्-नृतुर्-त्यन्-त्यव्-यर्-यर्-यहर्-। श्रवयःन्र-न्द्वेव-हे-८६व.पद्धातमा ब्रेट.पद्चव वेर्.बै.के.ख्वा वर्षा घर निर्ट पद्दिन क्रिय **ॺॱਫ਼੶ਫ਼ੑੑੑ੶ਜ਼ਫ਼ਫ਼ੑਜ਼**ਫ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ਫ਼ਜ਼ੑਜ਼ਫ਼ਜ਼ੑੑਫ਼ਜ਼ੑੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ੑਜ਼

ज़ॺॱॾॺॱॣऄॿॱЀॺॱॿ॔ॱ॔ड़ॖ**ॸॱढ़॔ॸॱक़ॕॺॱऄॖॸॱऄॖॺॱऀॿॱढ़ॱॐॱॸॺॱॸॕॸॱॱॱॱ** रवान इसर श्रीर सा नर वे या मदे या विया या न है से निय र मही सा न म . वयः क्षर्-पर्यः वयः यः विवार्यः **, श्रेवः हे , यववः यः यञ्च यः ञ्च यः यः व व**ः श्रु**रः** छः र्रिसावेया मादर् वाचेया स्मादायमा हे हेया अया मु हरा वया ग्रीया र्द-्राव ववाय विवय विवर्षः प्रकृत्राध्यन्य विवयः न्यर्वाञ्चवा र्यः । ुःक्किंग्ने भारत् न्यमा प्रस्तान्ति क्षित्र प्रमेका निष्ठे का न्ञुर-तुःथॅद-द-र्वन् र्व् द्राक्षयानदादायाञ्चर् क-द्रीताळेवाः" ठेता वृह्याः ऱ्गाद.चक्च.च**गुर.लु.खिल.क्ब.लय.र्चव.यै.च्य.**च्यच.चि.चण्य.क्रे.खिल.ट् ्रायान्य ने देशालयानवान्त्रेयान्यान्त्रीयान्यान्ति स्राप्ति ৾ৡ৾৾**৴**৾ৠ৾৾৾**৾য়৾৴**৾ৼৢ৾৾৾ৡ৾ঀৼ৾ৼ৾৴ৼৢ৾য়৻য়৾য়৻ড়ৢ৾ঀৼয়ৣ৽ড়য়৻ড়য়য়৻ৼৼ৾ৼৼয়ঢ়য়৻ৠৼ য়ৣৼ৾ৼ৾ৢৠ৻ৼঀ৾৻ৼঢ়ৼড়ৣ৾৾৻য়য়ৼ৻ৼয়ৢঀ৻৸য়৻ৼয়৾ঀ৻য়ড়ৢঀ৻য়ড়ঀ৾৻ৼৼ৻৸ঢ়৸ঀ৻ প্ৰ শ্ৰুৰ্কাশ্ৰুষা শ্ৰুদ্ৰেব্ৰাইন্ত্ৰান্তৰ্গ্ৰাপ্ৰাইৰ্কা অৰ্চ্ ন্ই षयानवः हेर वर्षायासर तुः ीवास्यानदैः न्वातुः "गृर तुन् द्विः सः … रम.वैर.पर्.र्ज.नधु.बु.वु.प्र.वेय.र्वुव.ह् थ.र्ज.बु.चर. ন্ত্রীয়'বা नेशियारी. तूर्रा थराष्ट्रदारा नीया नियमाने हेर्या बाबा विरूच वाया विरूच वाया ८६माने - रहेन ५ हिमाने न् खुदे क्षेत्र न्या प्रदेश वर् इस्ताने क्षेत्र प्र- क्रिंद्यः शुरः भुः श्रे : 'अर्थः छ्राः अर्थः यञ्च रः श्रे था छ 'स्ययः ञ्रायः प्रेयः । ८८. थे. न्र. मूर. मूर. मुंबा श्रीर. वे. बी. वेबा ने वृषा या ने धूर्याया र सर्वा बेर्-पर्वार्ण्यळवाताशु-दिव् - न्यम् नेया यहर मीवा वर्षे मृ शुर छक्षः मूरः

मवयान् भूषाम् दायान्याया केवायितायाया धेवावेषाया प्राप्तायव नन्-वदःनः भूरः न्ववाः अळ्यतः द**ह्वः न्व्यातः सः** तः स्रात्रं तः स्रात्रं स्रात्रं स्रात्रं स्रात्रं स्रात्रं स्र संते न्डिव त्यू वा हिन बावव मूर्न वा ब बबा या वा बबा विवा हि उत्ता क्र-्य न्व्यापरायायायाययायव्याप्यव्याप्यव्यापायवा । ध्रीरा रखे वासाया वयालु य ने में याया नहा। मृत्या श्रेन श्रेन स्वेव श्रेया व राष्ट्रीय राष्ट्रियया परेते में अपया ह्य पा वेग रहा धेवा पया हे या पर मुनया रहा रे देवातम वेवारहरा समाया वेया व्या करवा रेमा श्री राष्ट्री से बक्रमान्ता मन्नात न्यानीयास्त्रम्यायात्रित्रम्यसार्थया नेवे र महिता ष्यर्द्धाः विषयः वद्याया द्वार्ष्टाः द्वारा विषयः बी'ब'रेत्। वॅद'त्यवा'विवा'त्रेवा'यवा'रेर'८हेव य'सुद्। दे'हे दवा' धिरः विव चेन् न्वेषः"वेषा अवतः न्वेषा हुः चन् । ध्वाषा अहं दर्षा थेः २ेष्रताष्ट्री मृतः ५२ेष सालवायवाञ्चे**रा**खराञ्चे रातानेराज्ञा**ञ्च** ५ राके**रा**णा बर-५डेव हेरे न्यम् बर-५-५क्रुं - रे-५डेव-न्दुर-क्रुं क्रन्धेर-५८-অও অ. ?. বেল্ল ক্লেন্দ্ৰ ক্লেন্দ্ৰ ক্লেন্দ্ৰ ক্লেন্দ্ৰ আৰু অব্যাদ্ৰ ক্লিন্দ্ৰ ক্লিন্দ্ৰ ক্লিন্দ্ৰ ক্লিন্দ্ৰ কল ब्रुषा छ्या वाज्ञर (१८८५) यन वर्षा प्रवया ध्रीना बुदा वी शु कवा रग्त. व्रवास्यामा विवान्ता कुषा व्यावाषा क्षा व्याव्या व्याव्या व्याव्या व्याव्या अनवाशु लयानव दिर वयाया श्रेन क्रिंट ने के तु वि तु हमा निर्मा है । मन्द्रित त्यारम क्रिया व्यक्षि न्द्रा मृद्र व व्यक्षेत्र में - हिवा विर मु-र्यं न-देन्या सुन्यं स्ति। लु-धिया मुर्ग स्या हे 'र्यम सि हे रा सेन **डेन्** खॅन्य क्रॅन् नें न्याय प्रतिवाद क्राक्ष्य प्रतिवाद क्रान्य क्रान्य व्याप्त क्रि

प्रति स्वार प्रति स्वार प्रति स्वार स्वार

शुःव-सःनयात्रं तदेवे:ब्रु:५८:वॅवे:क्रेय:स् वेद:५८:देव्यक् वेर:ब्रु:•••• **ॅपट्यःग्रेयः**अभे**दः**र्घट्यःग्ठेगःग्रम्थः **ह**नःग्रंयःनः नहनः यः निवदः हर **ૻૣ૽૾ઌ૽૾૱ૹૺ૾ઌૢ૽ઌૢ**૽૱૱૱૱ઌૢઌ૱ૹૢઌૺૺૺૺઌૢ૽ઌૹ૽૽૱ૹ૽ઌ૱ૹૺઌ૽૾ૺૺૺૺૺૺ૾ૺૹ૽ૹઌ૽૽ઌઌૢ૿ઌૺૹ૿ૺઌૺ **न्दः स्वाक्तः त्र्याः ब्रुवाः व्याक्तवः केवः के**विः स्वावः वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे व **यम्।यर-तुः विषयः स्टार्याद्यः ने केया रहा महिया हे वाह्यः स्याप्या हा वे या केर्-तु-न्र्न-इर्यामदे-द्वन-र्य्य-ह्र-तु-र्यायन्त्र-हेव्-न्र्यः** [प्पा ने सुव स्टर द्या स्टेर अकॅर हो व मा न म क्र ता न व ता सि ता न व त **पतु गरा वि रात् परा स् राप्त्री न दे।** स्राया राष्ट्रिया सु राष्ट्रिया सु स्राया साम्नुः ब**ळ पः वाष्ट्रव द्वारा वाष्ट्रव व्याप्ट विश्वर विश अट.क्रेब्य.पहेब.**पह्च.पहुच.पथ.ग्रीय.बयट.क्रे.क्रेब.न। ब्रैल.श. व्र. चनर.रन.र्नर नक्षेत्र ५ ह्व.मे . बक्ष. वया.र्या.म् । **ৡ৾৾৾ঢ়੶ৠ৾৾৾ৼ**৾ঢ়ৢ৾৾**৾৾**ড়৾৾৾৾ঀ৾৾৾য়ৼ৾৻ড়৾৽৽ঢ়৾৽ড়৾৽ঢ়৾ড়৽ঢ়৾৽য়য়ঢ়৾ৢয়৽ **र्वन्यः २२: धदेः २ने : ५५७ व**: श्रद्यः क्षरः पदेः २२,व्यः शुः पक्षेषः धरः हेव्यः सः न्ने द्वर ने व्याप पत्रे या भीता ने व्याप्त व्याप पर के वर्षे र हो न हुं दर ने **ਫ਼੶੶ਫ਼੶ਫ਼ੑਜ਼ੑ੶ਫ਼ੑ੶੶ਜ਼**੶ੑਜ਼ਸ਼੶ਖ਼ੑਜ਼ਜ਼ਸ਼੶ਜ਼ਖ਼ੑਫ਼੶ਜ਼ਜ਼੶ਜ਼ਜ਼ੑਜ਼੶ਜ਼ਫ਼ਜ਼ੑ੶ਜ਼ੑਸ਼੶ मुद्रा नगदः भ्रुंद्रा इं राज्या हरे है। यद्द्रा या शुव्य ग्री पद्दुरा वी केरा **क्षु: न्यं व: रैग्**या**पॅरय: नर्यः वयः वयः वरः नरः नरः**। वाङ्गयः हे व: ग्रायुवः পুৰ্বাথ-ঠ্ৰীথ-ছুৰ-প্ৰহ্ - ই্ৰ-ৰাখন মীথ-নদ্বীদ্ধ-ছুথ-প্ৰাচৰ-য়ুব-ন্ৰী-----

ततुन्दरः मक्रारक्षेत्रः स्वारा तत्या वा सं स्वरा ता वा की राप्त तरा रा मॅलाराम्बराय्येव तर्वा राष्ट्रमान्याहेवाम्बर्गारम्य वारेवायाः केदेः मुद र्रा में या राष्ट्रे वारबता सक्षरा होव हा छे रायस्या विरासहरी ह्रवा पत्र ग्रॅं त. ईया श्रेपया श्रम् व व . यपु. भि. या शक्र्या . इ. त्र . खरा छवा . हा . हा . हा . हा . हा . हा . ह लर हिराने गया ने ल्या इर स्य हर सा लेर आवन में बर ग्य हे तह व र्बर्थ प्राय र्राटा वृष्ट्र बाह्न म ता- विराह्न वार्च विषया यह बारेब मूराव वश्च मुकारण इपु म्यानमेषालम व्यव सरा सरा स्ट तर्-द्रम्पत्मः वितः ने अळ दः क्ष्या धरः छे : नवा स्तः ग्रुसः भेर् र् वः द्रम्यः : য়৾ঀ৴ঀৠৢ৾ঀ৾৾ৢঢ়৴ঀয়৸ঀয়ৢঢ়৸ৢ৾৸য়৾য়য়য়৻য়য়৸ৠৢঢ়৸য়৾ঢ়৴৻য়ঢ়য় न्यं हु सदि ह्या वा माद है वादवर बदे म् विवार वाही हु दिदे ल्लाम् विश्व विष्टात्यार यदे ल्लाम् विश्व क्राधिवाः छः न चेडुच चै.डिच.व्हट.च.चेडुवा द्वेचवायर्श्वटयाल्ट्यप्ट्रेड्डेच. 係上、後山、白口以、記上、望、下当上、発、山、日如以、日如以、口、雪、如葉 ナーロ・モライ・ के.च.चंड्रेच. रंब्य. कै.प.ग्रंच. , वृथानुचयाना च्रंच क्रंच क्षा चे.च क्रंच कर्रायुषा हेवावर्गेषा भेगवा स्वाया कुनिया है। स्वरा है। सदी स्वरा है। सदी भ्रात्मक्ष्यं मानी समा प्राप्तिकार है निये वार्षा स्टा स्था समा

नश्चरतः ऐ तृषःदेरः वृर् ्वा वृषः द्ध्यायः र्षुयः प्राप्ति वृरः द्विषात्रः स्वारिहरः । ५.६८. छ्व त्र विराध ही हिंदा वर्ष रेथा प्राप्त वर्ष हेथा प्र ग्रै'कपः श्रेरः नृहः। इसमा स्वा द्वा द्वा द्वा स्वा स्वा स्वा स्वा इर-वृद्दः व र्द्धान्तरे गुँदः सुन हेन यं स्ना हे ही छ नवा गु त्याय यः ः ः सुन्य हेर छेव पर दरन के । द्वेव है पठव पह वापव में प्रता <u> इयथ प.जू.पश्चेर पपु.कुर.री.पश्चापदिजारवर्गापविज्ञ व्रार्थः हिय</u> सःर्ह्मरः वर्षः श्रुण चेन् सः न्रान्त्रः वृद्धाः कदार्ग्मरः वर्षे श्रुनः इन <u>श्चेन नृतुमाने क्रिमाने नृत्यान नामन्यामे श्</u>चेन वे क्षानुमानुमान वरानी तथा देव वाहर र्ना तान में र हुरा न हिंदा न दे तुरा मा द्वार प्र **፟፟፟፟ጟጚኯ፟ጜኯቜቜጚፙዹጜ፞፞፞ፚ**፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞ቚፙጚ፧፼ፙ፧፞፞፞፞፞፞ፙጚኯዹጜፙቜቑ ন গুঝা **৾ঀঀ৾৾ৢঀ৾৾ৢঀয়৾ঀ৾৾ঀয়ঀ৽ৼ৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾ৼৼৼৼঢ়ৼয়ৼঢ়৽**ঢ়য়৸৽ঢ়ঀ৾ৼ৾ঀৼয়ৢৼৼ৽৽ ख. २. ध्या. में . भेनया. ने . नर न है ये . हे . प डे . पाया . च र . है . **てて、口角**] चकुरराय:न्द्रः सः चठरारा। **मॅ**टः म्रायायः मृत्राः स्थाः ने ने ने ने श्चेन्:क्रुंम:ने:बॅं:बळॅंग:बेक:न्बॅम्क:लु:नेव:यायावहंन:ने:कू:लवे:ब्रा:बः..... वित नक्ष्याकु यह या शेरा तम्या यह वा शा निवे या निवे या परि निवे राष्ट्र व र्श्वेन'विरा यम्ब प्रमान्ता मन्द्रारा सेन्द्र स्वारा म्या स्वारा मुख्या हुरः रेन्ता तेर हु। बर के न न र र ही ता गुर हू । यदे हा या बळेन ने ता ही र त्राच.र्द्र्य.थ. - प्रेय रम्यायपु. प्र. पर्थे त्राय हेरी वेट

① (রমালমাইবাইনাইনাইনাইনার্লারেমা253)

⁵⁷⁹

এবা (1894) মন গ্রিন স্ত্রান কৈ কে কি বারি নে বান করে । এবা নি देत.लट्यानक्यामी.क्रबंबरापर्थे.क्ष्यापहूच्ययाच्चेत.स्वाम्याम्या मदे. प्रमादः है . से प्रथा प्र बुवा कि मारा पर हैं . मुरा पर हैं मारा है मारा चनःववःवजःहेःब्रानःराधक्रवःयःधयःपदेःक्रवःवःयदेःद्वरःहे**ः "नॅरः** याक्रव स्याक्रमाश्चिरियी त्वी सप्तान्त्री स्थाप्ता तह्त्या सार्चे साम्या या अस्य शुः स्वयं या हि त्यात में तर्श्वर न्यं या शुः तमाद स्वत्या हरा हरा दह स्वयः **ৰিন:শ্ৰমান্ত্ৰামন্ত্ৰান্দ।** भेट. इ.ज्. बहुका शु. **हे. के**र. न्यन्तराधितः ते क्षेत्र न्यान्य विष्ये क्षेत्र क्षेत् बर् .र्चवया.विट.तिवया.चे.बक्टर. वयव.चयत.रटा ন্ত্রী রূপ: ন্রুদ: শুদ্র: নই : নক্কুদ্: ইবা এ ব্রুব : বুরি বর বর কর : • • नव्यान्त्रायाः अन्ति क्ष्यां सदे क्ष्ये त्या स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स् श्रेन्द्राक्षे प्रते क्रें का खंबा बहर न्वा ता बृद्ध ने देन के तहें वा মধ্ৰেষ্ট্ৰব্ৰাক্তৰ প্ৰাৰ্থিব লেন ব্ৰীক্তি বেৰাৰ লি প্ৰাৰ্থিক বিদ্যাল ঽ৾৾ঀ৾*৾ৠ৾৾ৢঀয়৻৸ঀ৾ৢয়*ৢ৽ড়^৸ঀয়ৢ৸৻৸য়৻৸ড়৻য়৻ড়৻য়৻ড়৻য়৻ড়৻৸৻৻৻ **ৼৄ৺৻য়ৢ৴৾ঀ৸৶৻৸ৡ৵ৣঀ৾৾৾ঀ৸য়৻ৼ৸ঽ৾য়৸য়য়৸ঽ৻য়ড়ঽ৽৽৽** म्बेग्याकेन्यं वक्षां १८, वया ग्राप्तियात्राप्ति व के वितास विता

सम्बन्धितः मध्यान्यः भिरः मह्मान्यः स्वरः स्वरः

রমার বর্ষ প্রমার কর্মার বি ক্রিম্ম বি ক্রিম্ম ক্রিম্ম ক্রিম্ম ক্রিম ক্রিম্ম ক্রিম ক্ **ब्रे**:८व.त.**क्ष्र्ययः ज.वे.य.त.त.त.त.त.**क्षेत्रः तट्टे.श्चेट. त्रिययःग्चे.लेव. ब्रॅ**य.** ध्येत्राया अष्ट्रित् इं हे तक दातू । या ते दाया इयता न्दा ह न अन् मा देन् मवस देव या केरावी कुल में से सवा ठवा हराया ठन् ही प बादे न्बॅरराय:न्द्रः अञ्चतः यनः श्वन **ब्रे.**ब.धेंच.ब्रेचेथ.ग्री .थ्रबश.**२**व. बर्गलायदे गर्रेर गर्रेप रता ग्वर भेवर भेवर में प्रकेश प्राप्त ग्वर प्राप्त प्राप्त भीवर प्रमुख प्राप्त भीवर प्र र्ट्रि.गूर्या यट्य.क्रिय.गु.पक्षेत्र.त.र्ट्ट्र्यंत्रय.क्र्रे झ्यय.पर्ट्रे **क्रुट्र**ायानमॅ**ट्रायराम्**द्वाया**श्चे**र्यस्मुया व्वाह्नद्रामुया "@देशा **রুবর:ন:নহর:**মেন্ট্রা বুম:রিন্ম:(1895)মুণ্ড: ই.৪ ছু**র:** ৪ र्नर वियान देव में अब्द्र या लागाया महिया में मुन्य में मूर्य शा पहिया

क्र्याला विट्रास्तु,लट्रहेट्रव्याक्यराये विक्राक्ष्य प्रित्याक्ष्य विद्रास्त्र स्वराक्ष्य विद्रास्त्र स्वराक्ष्य विद्रास्त्र स्वराक्ष्य स्वराक्य स्वराक्य स्वराव्य स्वराव्य स्वर स्वराव्य स्वराव्य स्वराव्य स्वर

र.ब्र.क्र.क्ष्यार हम्य श्रुप हेया.स्र.व्हार.प्र.क्ष.त्या.क्षेत्र विषया वाह्री इच्चयार्थियाची.क्ष्र्यं साज्यायाचीयाच्चयाचे.क्ष्र्याचेराचीयाचेष क्षेत्राचे

मुलान्दराह्मच रक्षेत्र मु.ज.स.स.ली बाबार्य देवा. मु. मुबाबार व र **ल्राम्याश्चारते या हे या हे त**्राम्य हे या या त्र व्यास्त्र विष्य या स्तर मः विना महेबा हुराबा दरे समा नरा में निरान विनवा अब दवा ही। म् नवयास्तर रविव ्वया गुरा केवा मेरा अया वर्षे पर्याया ग्री स्वा ब्रुंगवायमा येवा म्झून हे १५ डीव क्रिय द्यमा त्युमा या कुना क्रुंन या कुराया विना म्रा रिया मुरा लाद्या पा स्वीया पार हेव. मूर् राधवीया स्या नव-रदःहु त्यदे हा वा बळेंग रः र ग्री तहेताम हेव र हेव हे स्ग हु मानेतामा केवानिरासमा मन् से सरामी जुल ग्रेकासहता श्रुद्राची द्राया तहारा ता हुन भूत होता हु । द्री द्रा है । दरी द्रा द्राया नर-स्-रविधाविस्-विश्वाक्षिताच्चिर्-छेर् सिर-सुर साववा प्रज्ञान हिरा नै*ॱ*ऄ॔ॱॸॕॴढ़ॼॕॻॱॸॱॸ॔ॸॱॴऺ**ॱऴॱ**ॿऀॱढ़ॖॸॱॻॱढ़ऀॻॱॾॗॸ॔ॱॻॱॺॕॻऺॴॴॱॱड़ॆॿॱॸॣॱॱॱ wg.ਈ.षथ.की.प्र.थीर.रंभीर.५४ वेथ.पङ्गापे. 1 होच.ह. पश्च.पहेल स. . बन्दरः ह्युन्दिः वनवा व्युवानवन्दः य विनावी - तुन्दः वनवा वेन्द्रः कुन् **ढ़॔ॳ॔ऒऀ॔॔ॱऒ॔ॱऄ॔ॴक़ॖॱऄ॑ॻॴॱऺॖॱ॒॔॔ॱॱ॔ऄऀॳॱॳॴॗढ़ॱऻ শ'বন্ধু**ৰ'বন্ধ'ৰ ৰে'বভদৰা দ্ব' বে' ৰ' ৰ' ৰ' ৰ' বি' বি' ৰ' নু দ্বা

য়ৢ৾৾ৼয়ৢ৾৾৾৽ৼৼ৾৾য়ৢ৾৽ঢ়য়ৼ৾৽৻য়৾য়৾য়য়য়য়ৼ৽ঢ়য়ঢ়য়য়য়ৼ৽ঢ়৽৽৽ बदार्थया चुदारा द्वीरावा वालवा दे वें होत् हुराद हेवा यहारा चुका ह्यान्ड्रव, िट. १ .श्रु. पवे गव वेर च. र्टा व वाय रह्रव, विट. १ .ट्ड्रग. | 産る・カガトな・3 トロ| यद सासन दवान्त्र द दुवा है। शेरान्य**र** त्र्न् न् हैरा मुन्य मेरा पर्दा मृत्र क्रिया मेरा मित्र करा *बुवा*विक्षयाय चुरः≣रामः स्वायान निर्म्हताय**रा द्या** प्राप्ता स्व गुरः रॅ्व'ग्वर्'तर्देते' वर्'हू 'यते' ह्व'या क्षु'सेर' प**ङ्ग्ग्रुअ'पदे' ह्य' वर्' ''** रण-२०८५ त्रुं वचर-५६ व । यश-२० कु**राने । केन् वे । बॅराबा** अक्रेन् थॅ**व** । गुरान्चेन्य सर्दिर के बिरा म्बुर पहून या धुन हेरा है। न्यन या *चॅरःशुरःधःकॅरः*तुःकेःरे*रःन्दः* नॅ्वःव्वःवेयःधःर्यवयःदग्दःवेवःगैः.... बक्रमानी बरदर बर्रा वर्ष र . पासुब रह्य वाह्य ጟ፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟ጟ፠ጜፚጜፙጜጚጜኯቝፙጜጚጜቜ፞፞ዺቜ፞**፞ हे. ह्र**बाबर ब्रेट शक्रेबर ये. प्यॉट क्रुटे स्था ग्रेश न्**ग्टर** हेट अर्ब द न्यत्यभुः न्नः के र्ञ्यः मृत्युयः ये न्नि दे र्-देशम्यः स्याप् राम् रामा रामा स्याप् ঀৣ৾৾<u>ॱ</u>ঀৣ৾৾৽ঀয়৾*ॱ*ৼয়য়৾৽ঀ৸৻৸ঢ়৻ৡ৾৾৻৽৸৾য়ৣ৾৾৽৸ঀৢ৾য়ৢ৾৾৵৽৻৾ঀঢ়য়৽ড়৾ঢ়৽৾ঽয়৽৽৽৽ न्दरार्ट्स्याशुः सर्वेन् वृत्तुन् र्यन्यायान्या वै भीवायान् निर्मु स्वा

到,七年,12十二年公, 夏十, 南山公,公(五十)日山,公仁, 七日日 大, 村口, 兴, 十二, वृष् श्रुष चेर पर कु स्व श्रूर रव **चुरावरा वरा पर्च पर्च परा ग्रीरा पर्च र** भवे क्षेत्र प्रते न्द्र प्रवास प्राप्त प्राप्त दे निव प्रति स्व स्व क्षेत्र स्व स्व क्षेत्र स्व स्व क्षेत्र स्व बंदयाया मैल.र्यर.श्रह्मन.ल.प्रील.मैं.पु.व्यय.सेन्य नेयर.पश्चि ग्रु'बर्ह्मभःक्षं.श्रुप:वट:२ठरःशु:श्रः५६ मःचग्रुरा:वटा रे.ध्रेग.घर. श्चितवायम् वास्त्रे वास्त्रे श्चितवायः हेवायः निर्मा स्वायः निर्मा क्रांच चरा ुे प्रामा त्यामा त्युम दुव वी रेवा यदा वारा वार्ष तामा मयत करा वर्षेराय कवा रि. श्रीया वर्षा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा के या प्रवेशाया वा न्यया ब्रुयाथे नेता ग्रे ज्ञुन एव र्या गैया नेया हिया स्राह्म रहे गया या स्राह्म राह्म *য়ৢৢ৾৾৲*ৣ৾৾*ॱয়ড়ৼ*৾৸ৼ৸৸৸৸ৼৼ৾ৼৢড়৾৾৾ৼ৾৸ঀৢৼ৻ৼ৵৻ঢ়ৢয়৵৻ঀয়৸৻ড়ৼ৻ৼ प्रति द्वाया वया द्वा येव यावर म्याया तुया परि त्या दीया ग्री तु व दा न्या भ्रम् स्र स्र स्र स्र म्या म्या प्रति म्या हे ता है ता <u>चॅर्-ॡॅरल ळॅनल ५५. व्</u>वे. ग्रॅल ने हेन्, हु-बहुद-हे-हेल ठद-प्रन-ल------विवयः ग्रॅंन् न्रायक्षेत्र ब्रेर् क्ष्र्न प्रदुन् ग्राम् के स बेन् ग्राह्म प्रदेश बक्षवयः २७८ . पर्वे चंदा शि. पर्वे चंद्रा श्रे चंद्रचा श्रे चंद्रचा त्या के द्रावा त्या हो . स्वा चंद्रा वा वा *য়ৢ৾ঀ*৾ঀ৸ৼ৻৸ৼ৻য়৾ৼ৻য়ৼয়৻ড়৾৻ড়৾৾য়ৼঢ়৽ৠ৾৽ড়৾য়৻ৼঢ়ৢ৾৽য়ৢৼ৻ৼৼৼ पते द्वार मृत्र "" वर् मूर म्रामा पर देर में दा सर मृत क्व र द्वार विषा नग्द र्धर है 'हेर ग्वर प्रंग्वा हा हुव कुर रेप रूप अर श्वर

देव विद्रासन्य वार्टित गर्हिका विद्

म्राचित्रात्त्री न्याची म्या व्याश्चित्र श्चित्री श्चित्र श्चि नवनान्नंद्रवालु व्यवदाहेय ने अंदे शु.कं.च्रें र हे रेटान्दा देवा थवा स्वाय रदः वि.सं.सं. सुप्त वि विवाय महिनायः । ह्यं ये। रामाय क्षाः श्रीताय कर्य । सनाय विनानियानर हैन् में न्यर में रामका हूं यदि हा य यह न या थे य रहता यर पर्योद : विवश : वेश हे · विं : यः क्षेत्र : यदः यदः देत् : यः देवरः श्रेतः । वेशः श्रेतः । बी:श्चिन्-द्याद्याद्या क्षेत्र देते. हेल. प्रचर्या सम्बद्धः दं क्षया प्रहेत् प्रचुरः हेन्। खुः पञ्चर्या प्रया र्ते'र्वेते भैग ने त'इसवा देवायेव बुवा भैटा 🔰 रे से री रा हुराह्म राज्या र्यर.म्.चन्रातस्वात्रयात्रम्याक्ष्यात्रयाः मृत्राच्याः मृत्राः स्वर्याः इयायस्यावेष रेप्रावक्षवाम् म्याप्तरान्म्राया इयया अपयारेरा न्तुरः सं ले : न्हु : ले : स्र : से न का ने : न ले : *षेषाचेर्*म्बहे : इबला रेबा नदेव : क्षेत्र : प्रस्व : ग्लेट : बी : ग्लुः क्षे.गर्दरःरय बयायाँ सुरार्गार र्यम्या निविष्णानमा निविद्याने वार्षेना रे स **ज़ॖॱॺॕॖॻॱॿॖढ़ऀॱॺॾॱॿॱॻॿॹॱॿ॓ॸॱॸॱॼॕज़ॱऄॖज़ॱॹॸॱऄॗॸॱॼॸॱॸॕज़**ॱॱ पह्रबः वि. श्रे. क्र्या - द्रेश नगाय - स्य।

ቑ፝ጙጜ፞፞፟፟፧ቜ፟፟፟፟፟ፙጜኯዼ፟ጜጚ፞ጜ፞፠፟ጚጜፙጚፙጚፙ ኯ፟ጜጜጜፙጚፙጚ ፞ቜጜጜጜፙጚፙጚ ፞ቜጜጜጜፙጚፙጚፙጚ ፞ቜጜጜጜፙጚፙጚፙጚ ፞ቜጜጜጜፙጚፙጚፙጚ ፞ቜጜጜጜፙጚፙጚፙጚ ፞ቔጜጜ፞፞፟ቔ፟፟፟፟፟፟፟፟ቔ፟ፙፙፙፙፙፙፙጚ፟ጜጜጚ

त्त्रं त्या स्त्रित्या व्या स्त्रित्या स्त्रा स्त्रित्या स्त्रा स्त्र स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्र स्

4. 8'5'86'45'44'45'5'455

पद्च-क्रिल-प्र-प्रिचाय-सप्तः श्रम् - प्रम्न-द्वित् न्त्रः स्वित् न्त्रः स्वतः व्यः पद्च-क्रिल-प्र-प्र-प्रचाय-स्वः श्रम् - प्रम् न्यः स्वतः स्वत

छाउ छाते स्वावित्वा प्राप्त प

श्चुःके:बट:ऍटल:व्यःटे:क्य:बद्धःव:विय:क्रि:चुरा:ऍट्। पर्द्धव:बुर्य: **इ**ब्रा**.ध...ब**्राच्यान्यतान्य । क्ष्या क्ष्या क्ष्या । क्ष्या क्ष्या विष्या क्ष्या । विष्या क्ष्या । विष्या क्षय गुदे नज्जुन में राया केवार्य राष्ट्रवाला प्रताना तरी क्षेत्रा "मृत्र राष्ट्री भाषा **रॅक**ॱढ़ॅरॱक्वॅरॱचेर्-घंॱहेॱडुर्-फुॱवॅग-बुॱबक्षःथेॱबेॱसुलःरॅव| क्रे**ः**करः क्षयानव्यक्रम् व्याप्तर्भः व्याप्तर्भः शुः व्यवस्य व्याप्तः विष्यः कः देनः व्यवसः । मञ्जूनः ब्रॅंबालु व्यान् में वार्यास्त्र । यश्याने वार्यान्यास्य वार्यं वार्या **इट.**पर्वेष.श्रेर.श्रे.किट.जय.ट्रंथ होट.त्रु.ल.श्र्य थय.चेथय.क्ष्य.ह्राय. न्या में दावि दे वि पत्वा महिना पति हा स्राप्ते हे या पत्वा हे व दे व से या त्रुतः म्यायानुः रं न्यं व वेक्षे चेत्रः सः सः श्रे यक्कुन् यन् व्हित्यः यठयः सर्वः **य. वेषया थी. तश्चेर. थेपा. थे. वृष. क्र. क्र. क्र. वृष्ट. वृथ. क्र. व्या.** वृष्य. **ॿॖढ़ॱॿढ़ॱॺॖढ़ऀॱख़ॱॿॕढ़ॱढ़ढ़ग़ॱॿख़**ॱज़ॱॺय़ॱॿॗ॓ॱॸॕॱक़ॕॣ॔य़ॱक़ॗय़ॱॺॎय़ॱऄॗॱॿऀॱॾॣॸॱॱॱॱॱ **केश** ह्वन् रॉ**८** प्राप्त व्याप्त विशेष कराय हिन्न स्वाप्त स्व स्वापत म्बिन्यास्यान्द्रिरान्न्यायान्त्राचित्राः भेगान्द्रवासुन् नेन्यायाः विद्यानाः न्मॅलाक्च येनलायास्त्राचर्ड तहें मान्नेनात्ते लाले लान लागाया वर्षे भूराः रगाद ह्रें व द्वार पर्दा श्रु विव अधिव से प्रश्नु र विव द्वार से द भु-वे-न्यरयायासर-तु-क्र्या-ब्रुट्या-वेग्-वर्ग्न-विवा-व्यापर-वेर-भु-ब्रु " बहुव ग्रेस हा देवारा हा ने स्वाद व किंदा है न है न सदे ।

गुःनम्भवागान्द। वदान्वयाश्चितिनदेःश्चिदाय निद्राक्षं वया सदान्वया त्यः वर्दे : तेन्य हे : सूर व्रवः ग्रुटः यहँदः व्यवः वेदः सुन्य व्यवः यह वि श्चेना हगल श्चर वल्या र्रंग वर्रा व्याया श्चर केव वसुर में राय केव वरा विताक्षत क्षेत्र या विवादा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वान्ववान्न वयात्री स्वात्री त्रुना रहरा में राष्ट्र यवना भेगा त्र्युवाः द्यापदः नहेंद्रः ये दाशे स्वाप्ति स्वाद् न वु सुरा रे स्राप्ति दा प्रसाद्गःभ्रम् व र्याया त्रा द्वाया श्राम्याय राष्ट्रिया ग्रेया महिता श्रीया स्थापन नव्यान्त्रात्राच्याच्यान्यान्या वाय्यव्यान्त्रात्र्वेयार्याव्यान्या वयातरी न्दारे तर् पर्याप्त त्यापाय तर्षे द्वापा स्वापाय प्राप्त द्वापा स्व षा वळं वरा विष् देशे तह बारा पदी विद्या शिषा द्रा 🔰 देरा पहें दा पहें दा लर नस्यासुन्तान्द्रन्तन्याहै त्युरादन्त्न्त्र्त्रा गर्झन् केवाया दें बॅल.ब्र.देवल.स.वब्स.ह.पट्ट.पड्ड.प.पट.। नगवा.पत्तीवल.हि.र. क़ॕॖॺॱॿऀॱॿॖॱॿ**ढ़ॱक़ॱॸॱॸ॓ॱॸॕढ़**ॱक़ॖॱॸॕ**ॸॱ**ज़ॵढ़ॱॿॕॺॱढ़ख़ॺॱॸॖॱख़ॕॸॱय़ॱॿ॓ॹॱॱ **ढ़ॱढ़ढ़ॱऄॱक़॓ॱॸॣॸॱढ़ॾॊख़ॱॻॹॱऄॸॱॹॗॱऄॱॸॺ**ॸॹॱढ़ॹॱॸॕज़ॱज़ॖॱॾऀ॔ॻॱॿॖॱॱॱॱॱ मन्द्राञ्च त्र हुत् व्यस्य प्रकार हु वे प्रमा व्यव विकार **घॅरः प्रतृष:कुर्व:क्षुव:बु:ह्नाव:प्रग्न:पठवासुष: र्**ग्रॅर:ग्रूट्राय:खव:........ नव बळ्या प्रांदिया द्रात्या केदा रोता क्षु ही ते ख्रवाल क्षाया वर्षाता सुरा हार तत्याल्यान्य त्यावादीय ग्रेवाज्ञयावयायवाद्धवाटा दायायाञ्ची विया बहर्षेत्रे.ण.ब्रुव.ज.्व्यान्वराद्वरास्वार्यम् निवयत् मह्रवः... श्चेन् क्वि: **रॅव**: ब्राय: क्वेन्स: , **वॅ**ट्य: प्रवेश: वेय: प्रवेश: रेवाय: प्रवेश: प्रवेश: प्रवेश: प्रवेश: प्रवेश: कर्मात्रमाबी । हुरामाबिना नवीरता अहमाता प्रेमा माला निके के मुन्ता बेर

प्रस्त क्ष. क्षेट्र. टर् क्षेट्र. य्याक्ष. व्याक्ष. व्या

क्राम्म स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य

ロ·mc·当日の・うて、毎、四七、日夏七・方・「日田、岳日、日日の・夏 にの、「前日」 1 वि.त.वे.ज.५.(1846) प्र. है. यूने ने.यां द्या प्र. ने ने त्या वरःक्रेया सम्प्रिति वरः तुः ईः हे म्योधियः नृदः। वेदः मृत्वः तुः मृदः ब्रदासं रीवाक्षा सेवान वायतामुवादयदाई हे हे तेर विद्यात है या है या है या बिर-ब्रॅं-पबर-रग-रगरने विषायवर्ग बिर-देर-बिर-ब्रू-प्रश्ने र-ब्रेन-ब्रू-त्य बै'यद्ग'य'बर'य'बे'खु'ठ'खु'दे'धेया'हॅया'तु'ई'हे' **,ख**र्''यु**'र्'। र्'डेव'** धेषा हु 'ईद हे हा कु थेषा हु हु गार हो वेषा दिन्। र्डे द थेषा बी ₹-हे-निधनःग्रे-सं-ज्ञूलःअर्देनःपष्ट्रलःवेलःधितःवदःतिव्-र्द्वा "श्रे-सं-1871 स्र | र् हे विध्य प्रतास के प् वयातवयाश्चरयान्म्वाधरारमा हुन्। ज्र.श्रेत्र. श्रे.ज्र.श्रेनयः बर्क्ष्व हैन्या ब्रुट्य बर्क्ष हैन चुल है ब्राह्म व्याप्य प्राप्त चुरा स्निप्य देन मुलाविन क्षे क्रामी करा श्री माम माम विकास कर्म क्षा क्षेत्र क्षेत्र स्थि । लयाला में चुरा साम वर्षा की में प्रमान में मान स्वापन में मान स्वापन में मान स्वापन में मान स्वापन स व्याम्बुर्वि धरे वृद्दारेया दे या दे श्वरम् वृत्ति श्वर वृत्व वृत्य के विव ल.इ.चेट्रेच्य.र्ट. देय. श्रेंच. यह्त्रय. इर.ग्रेय.पचच.पय.चेत्र.पष्टि व.ची. ॻॱनॱबरॱर्वं नड्यत्। चर्याः र्चे दे गृधिन चेरः नदे **बेरः रे ग्**के गृष्टू · · · न्ता भे.वं.य्यायायह्वाभित्रायाकावराह्याकिया श्री.प्र. 1898 सरा अद्र.गू.व.रटा श.२.श्वर.वर.इ.व्ट.क्रव.विच.पाचस्र्र्रक्र য়ৢ**৾৽**য়৾৾৾৾ঢ়৽৻ঀ৾য়৽ঀয়ৢ৾৾ঀৄ৽য়ঀয়৽ড়ৢ৽ঽ৽য়ৢঀ৽ঀয়৾ঀ৽ড়৾ঀ৽ড়ৢ৾ঀ৽য়৾ঀ৽

विषातस्यात्राचान्तात्वनातस्य स्वान्तात्वात्यात्वेतासः स्वान्य सात्कुतः मृतः हे.बेल्य.के.थर.परुष.कूर.खे.२.थे.५.भे.क्च.धे.८५५ व्याचिय अग्रीरी दे-ह्याई-ह्र-म्धेन-देश-प्वेद-प्र-५-छित-प्रमाहे-ज्ञाय-१-८-ह्य-पहेद कु'अहर र तत्याचा तद्र र केवा तत्या दे प्रविवा प्रापत हिंदा र पर् न्मतात्वुर है हे संग्राय द्राय व्यायीत् गृत्यं वा रेग्य के म्यानम् वात्रास्याम् स्यान् स् ष्टिर्या ग्रीया पर्मे त् सर म्याया ग्रीया स्रा है 'हे मधिया ग्रीया है ' सदी हा स र्षम्यायायात्वा "गुरामेदीमुयावन देवाया मुरास्ताना इप्रमिण मिय लुया। र के.श्रम बाक्या. रेबा के. रीया कीया प्राप्तीया पश्चेयाव शेरवीय गुरानि हैयावियानी है ते हिरीन्यर श्वाया स्या हिंदा बैक कैरा। न् बैक है दे पहिन पर्दे द जवन है नाया बेर दरा। थे मुदे **ॾॕज़ॱॶॺऻॺॱॺॱॺॖॺॱॺ॓ॿॺॱॾ॓ॱॸॺॱॿॖॆॱॸॱॸॱॺऀॱॾॕॺॱॺॱॸ॔ॸॱॺॖॺॱॿ॓ॱॾॆॸ॔ॱॻॱॱ** या बद्दा वि की क्षा अपे क्षा दिन हो से की का रॅं-मॅल'तर्ने'नविव'गवय'दॅग'गे' क्रूंनवा'तुगवा ठव' धेव' **व'न्सुट'** रॅगवा बुरके न्वेन हे ततुल बुर नका कर्। हे ने दे ने र बदर विन रर नी क्रयाया यह ना स्वराया न्या है के त्या क्षेत्र ने निया स्वराया है निया है नि न्वेन्याणु व्यत्तात्वत्यालुकाने नहीत्या स्वास्तात्वा स्वास्तात्वा स्वास्तात्वा स्वास्तात्वा स्वास्तात्वा स्वास नःस्प्राचाला में पुरार्मे प्राचान करा करा होता स्थान स्थान स्थान वयाकेवागुरान्इराशेनावद्गायादेनाशेनान्या अळवाकते वन् कुना क्कुंत्र:ऑद्र:वि:दे:व:हे:क्व्र:व्वॅल:अद्र:केव्:वेद्र:वात्र:वांत्र:वेंद्र:वात्र:वी:::: ययः द्विंग्रायम् वेव प्रमूर हे व द्वि अदा व द्वि व द्वि व व व व द्वि द द्वि व द्वि व द व दि द द्वि व द द्वि द द

वैन्तुयः ग्रेक्ः ग्रे च र्धुन्यः देवायद्यायः प्रम्तुयः तुः तुवः क्रुन्ये चेन्यः र्मः। ब्रैनयासईरयाक्ष्यामुयारमयारमःहेर्गुमःरेवानवेवासुवा चन्-भूव वो क्। तु नः शुन्नः यं त्रवावा ही विनः वी विवयः ही त्या क र है वा तहरःके नदेः मृव्याशुः शुरः रायहेवः हं स्विधाः ग्रीः न्या न्या देः द्रया: द्रेंबर-द्रेंबर-द्रेंबर-ब्रह्धद्रवरधदेर ब्रदेवर-ब्रह्म व्यादेवर-ब्रह्म व्यादेवर-विवाद क्रिया विवाद क्रिय क्रिया विवाद क्रिय क् য়৴৽ৼ৸ঀ৽ৼয়ৢ৴ ড়য়৽৸ৼ৽য়৽৸ৢয়ৼ৽ঢ়৴৽ৄয়ৼ৽ঢ়য়৽ঢ়য়৾ঀ৽য়য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽ म्रम्याङ्गयान्त्राच्या प्रमातः भवाः वीवाः वाववाः द्वाय देः भेवाः तस्य क्रीय दर्दः बुपःरङ्गवःकुःबळ्ळरः ऋवः बुःस्यायदेःवरः "......खुः उःशुराः चर्रायः য়ৢঀ*য়ৣ৲*ৢৢৢৢ৾৾৾৾৾৾৾য়ৢঀয়৽য়৽ড়ৼ৽ড়ঀৼ৽য়ৢড়ৢৼ৽ৼৢ৾য়৽য়৽ঢ়৾৾য়৽য়৾৽৽ঢ়ৼ৽ৼৢ৽৽ हे-मधन-मञ्ज्यास्त्र-प्याद-पञ्चर-सर्द्र-दे-ख्या-ग्रॅंद्-मवद-प-वे-द्यद क'लब'यम् ल'पब्यम् ल'र्सेन्'"डेक'म्रांला ने'न्वरामम् तम् न्रांतेन भु-५६व-५वता भनव-यामशुब्र-स्वायाग्रीयानु-घनयाद्वयायाञ्च स्वाया *षामहेव वर्षामाना दर्वेन चुर्षा स्वया सुर्दे स्वया नव्दः स्वयः स्थानवः* श्वेदः मूरः बर बह्यः वहरा न्वरः। विः यः खुः उः शुरः वर्ञ्चरः वर्षे क्रेरः यः <u> २ वे व . इ. श्र्वाया केता वचा श्रदा श्रदा के वे . त्रा विदारी त्रा त्रीया विदारी त्रा त्रीया विदारी त्रा त्र</u> देवे क्षे कुल कंग्रामर वेंगा में दिन्दा "हु लवे हा बर्यु हिन्द नवे **४.७.५८.ब.२.बेय.२५५.चथ.क्रेय.च.वेय.५५** ५. ५८.४.८५ ईं'हे'चेरा वितेर्वेग्याध्याम् **उ**'र्च वें खुरु खुर्न बर्द तः ब्रह्म चुै'-५डे.<mark>प'-प'-द्रा, दु'न्द्र'केत्-द्रा</mark> दू'-५६'-ह्रा अदे-झन्-द्रेता-सन्

तस्तरः अ. र्टा. ले पाञ्च ग. झ. ऋ गया जूटा अरास्या विटा**।** ने अवाधाः उ श्रुदै:मुल'ल'केर'र्घ'हे'पद्'तु'र्चर्'ग्री'न्दिरळंच'पठद'रूर् दर्द्वाल''' ष्ठ्रम्यः भूरः तः मूं वः म्रायाचीरः सरः द्ररः यः रेरः" तेर। यरः म्रायः सरः वन्तरं देन् में न नमें न पर "हू यदे हा वर्ष पहेरा दे हा हु र हु र हा र मु यळव . ख . द . द में व . ह दे . स्वा मार्च य स . म हे र . न हे र . स्व य वापव . में . मुलावित हूं नवा स्वालिया स्वालया स् दे र-५ च्रेब-हे-पठव-कुल-देर-सुग्वायाययात्र स्वरे ज्ञायायळेषा गेवाये कु बद्रम्य हे . खु . दु . खु . दूर . द्रे त्यान . द्र या चन . तु . या हे द्र . नदे . या व ता . हु त्या À&~ स्वावर वि:&द.त. कर्या कर्या के ... वि . वर्ष में . वर्ष दे . वर्ष ... वर्ष वर्ष में ... वर्ष वर्ष में ... धेरानराम मदी महे नुमानह न माने निमान के भेनामराम है राजेना पर्टर पाया बर् वर्षे वर्षे या पर्ट्य वर्षे वरते वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे नः श्र्मायाः च्रियाः स्राम्याः स्राम्याः स्राम्याः यहायाः यहायाः यहायाः यहायाः यहायाः यहायाः यहायाः यहायाः यहाय न्-तुन्-म्नव्यःसं-बै-नेवा मन्-ग्री-न्-व्यन्-म्बद्यास्यानश्चरः वर्द्वयः रायान् गुना समया चेन् स्वते द्विनाया क्षुरान् राविनाया वरा वि स्वा स्वा स्वा হন্ত্ৰাইন্"ইন্

聞.ロ.山舎山.Qa.父仁.与d.矣.与.山仍口.划∠.m仁.m及.江G.2.類之.当口d. हु 'व्यदे : त्रा यया प्रमाद : नेवा र्यावार रो र : श्रु : न्यं व : रेवाया यर : यं या श्रु व : श्रु व बुर्याप्तर महावर पहिंग इ.प.वयाया मवट प्रयासी मार्थिया है ब्राया वर्ष वे..... वनकान्तरक्वायाव राज्ञानन्दर्भान्तरान्तरक्षाक्षेत्रक्षा ঙ্জার্ব-দ্রিঅ:অহ্ব ধ্ব ছ্রবার-হব নম-রেঅ-নদ্রু*-- ন্--ছ্র-ই-- বা*চ্ম: क्षेत्र'र्न्नर्रक्तां इत्रेत्र' द्राया प्राम्ये राष्ट्रिया चर्या स्माया है ロ景・尖山ないないもないな山 高い と動し、残・2・308・41度・ち・インともないない。 निहराने वरायहरी द्राताक्षाळी. २ . थे राप हेरा हेया नेरा वया यह ता বর্শ রুল রূপ্রেল্ফেল্ডের্যান্তর্গা জন্মন্ত্র্যান্তর্গান্তর্বল্যান্তর্গান্তর্গান্তর্গান্তর্গান্তর্গান্তর্গান্তর্গান্তর্গান্তর *ৡ৴*ॱ৵ঀ৾৾৾ৼৢয়৽ঢ়ৢ৾৾৾৽৸৾৾৾য়৽য়৽য়ৼ৾৾৽৽ৠৢ<mark>য়৽য়৻৸</mark>৾ঀৢয়৽য়৾য়৽ৼঢ়৾৽ৼৢ৾৾য় क्षवःवरः रु.क्षवः सरः क्षः तर बर्गातः क्ष्र्रः ग्रीवः यवः क्ष्रवः रुपरः ग्रीः वर्षः भूबोयाञ्चराच्च.रेटः। पूर्मी,पर्वियाञ्च,क्ष्यासेपाचपुराखे.प्र.थी.रेटः,पूर् *ॱ*इं.ब्र्याय.वे.पड़ेल.र्ट.वेर.र्याय.यपु.र्ट्य.इ.ट.कु.ट.कु.ट्र.ब्र्य.प्यया.वया. खेद-र्स्नाया-रञ्जान्तुन्। ह्र-म्, दयान्यायात्रः वि न्यायात्रः विष्यः। विष्यः। द्रिर्याशुः यर्या क्रुया शुः नष्ट्रदाय द्रिया क्रुया मृत्रेरा क्रुया विदाय दिन्या ने श्चिम्यायम्बर्द्वात्वराष्ट्रायायळ्यातास्याह्याःह्यातातहत्राम्ह्रवातावा बहर्गगुरा वर्षान्वराश्चेर्मनुद्रानेवावरायाञ्चरवानेहा। यदा ष्ट्रं त्यते : ञ्चा या अक्रवा : द्वी त्रा त व वा व्याप्टर देवा ता क्री वा नवः ते व्याय त्र व्या । । **लुरा-प-य-त्रन्।** दू 'पारे-त्र-वर्रे द्रा-द्रवर-देव-शे-क्रुय-ह्रवयः बेर्-तु-गुर-हे-बळॅव ळ-ग्नर्यान्व्रिअन्तेर्-हे-विध्व-श्वर-धर----

अन्याने नान् चेता है । त्राचिता ने स्वाचिता स्व

भक्त न्वरास्त्र न्वा अळ वात्या विषया विषय ऍ८्याशुः विवाह्यास्तान्त्रास्तान्त्रान्त्राह्यान्यान्त्राह्यान्यान्त्राह्यान्यान्त्राह्यान्यान्त्राह्यान्यान्त यर-वॅर्-र**ढ**व-चतुर-छेर्-प्रदे-बॅ्-श्रम्य-व्य-व्य-व्य-क्रेर-रे**-**र्-छेव----है :पडव:पहेंप:पदे:५वग्:५वॅव:इंदे:बेश:५ड़ेव:५वग्:देश:वज्जु:**डय:** वित्रिन्ने ग्यायाह्माव्यक्षाम्या विद्रालेषायदे ताकाने विद्रालेषा त्र्वा,तपु.४.अब.सं.क्रंट.२वा.८इ.वलब.वै.वलव.वै.व.वचे.२वा.५वा... নর্থ-ইথা श्रम्यान्त्राच्याः वेषात्रम्याः क्षाय्यवतः मृद्याः पुः **ᢖᠬ᠇᠋᠇᠆ᠮ᠋**ᢂ᠂ᢃ᠂᠗ᠩ᠇ᢧᠸ᠇ᡈᢅᠸ᠊ᡥᢧ᠇᠍ᡜᠴ᠂ᠬᡊᡊ᠇ᢖᠩ᠇ᠻ᠂᠄ᡱ᠀᠂ᡫᠵ बद्दरः क्रेन् वदः र्वः नङ्ग्न्या स्रूपरा र द्वेदः देवे र वर्ने र वनः इयरा हेरः ः ः प्रवेद-शे-चेन्-वनता सेन्-ग्री-मृद्यासु-ग्रु-ग्रु-त्। ने 'द्रुत-हे न्दर्व-यहं वा प्रवादी विदेश विषय विश्व वा वा विदेश विश्व व **ঀ৾৾৾৾**য়৾৾*৲৸ঽঀ*৾ৼ৾ৢ৾৾৾৾৾৾৾৾৾৾ৼৢ৾৾ঢ়ৼ৾ঢ়৽ঢ়ৼ৾৸ त्त्रु ग्-जुल:दॅते:श्रु:ढंव:लॅं कुद:पकुद:०वॅद:रा:बङ्ग:ल:धे वे :ऋ:हेरा::: ष्याराष्ट्रेयातत्त्वाकृष्ट्रायदेश्चा वाश्चार्ट्राय**्यह्या**वध्नन् ल्यावयाः **२५.१.४.४४४४४८८। ८१४५.५५८५४४८७४५४५४५५५५५५५** क्रुवै:रे'म:महेंद्र'णरः। केद्र'गुरः ्5र:श्रेर्'म्बुर:न्दःवॅर्'ब्र्' लवा मन् नकुर्रे त. १६ नय है किया पर्रे धना न्या धना त्यु व हुन है न हे र छै ।

শ্রীর্মনা র্ব গ্রীর্ শ্রুর্নীর্মন্ন করে শ্রুর্নীর্মন্তর্ব করে ব্রুর্নীর্মন্তর্ব করে বর্ণা করে বর্ণা

यान्त्र्व्याव्याः व्याव्याः व्यावयः व्याव्याः व्यावयः यावयः व्यावयः व्यावयः व्यावयः यावयः यः यावयः यः यावयः यावयः यावयः यः यावयः यः यावयः यः यावयः यावयः यावयः यः

मूर्यान्यत्यार्थं सब्द्रम्याः वित्रा वित्रा

ने न्यान् चे न है न र न जन का मेरा सुन्या यय या यह स्या सु न न इर-४र-४र-ग्रेथ-ई-६ नवानवर्ग पर्वनवाहेनवाहे व क.वर-म्- द्व ... मन्द्रम् चित्रः मृत्राः मृत्रः वेद्रः मृत्रः वेद्रः मृत्रः वेद्रः मृत्रः मृत्यः मृत्रः मृत् हम्याम्याम्यारायादे द्वययाम्हॅरानरानहेवात् धेवादे रहेवा वहाय पर इर्.र्थतं मुथाया अक्षयया प्रयासम् पानार्टः। क्रूट्यः न्याः र्टः मुहः तम्यानुकासानेत् चेनामाकान्याना व्यापाना विष्या माना विष्या विष्या विषय बदःर्वयः नर्ज्ञल। देवः न्द्रलः स्त्राः स्त्रः द्वेन्तः व्याः स्त्रः व्यवतः चरः ्रेत्रयः रु.केव. पहंबार विरया भूरा बा क्रवा स् . कवा लिटा हि. पडी बाया स् . टार्सी.. (1794) स्र- वृष्ट्र दिन्य वृद्द निर्मः विर्मः विषय विषय विषय । ब्रे.चम् ताचर.पट.अष्ट् अथ.चम् व.च्र.च्येर.च्येरी प्व.चिर.क्र.ल्थ. (1903) শুন- ५ मे व स्थि मालु म स्थिमाला व राज्य न राज्य स्था राज् रे.च.चह्रंब.च.केर अ.ट्रेय.अ.चश्चांचर,क्र्याचर्थ.चर्चेवी

भ्रम् दः यः दे वः स् दे :च गायः यर गायः स्तः वि गायः श्रुः कवः गावयः - श्रुय सदेः गुःह्व-दृः दुव वेव-र्मा गुः बेंदे न्ध-वियः शेः खः दम् मायः नग्यः नग्यः नगः गै न्नरः ध्रुवा कुलायं न्वरुषा द्वुषा वै न्व निर्मा सर्वा कु हे ' हु रान् वे ' त हु व क्षान्रान्स्। यकु न्यं वात्र बुरा बेरा के यह व विसान्यं वा के खा য়ৢ৾য়ৢৼৼয়য়৾য়৸ড়ৢ৾য়ঢ়য়৸ঢ়য়৸ঢ়ৼয়য়ৼ৾ৢয়ৼ देर-५ वेब - विषय में - विषय - दर्ध व - विषय गु.नरुव.र्स्न.न्दीव हेते.ग्रॅब.र्ब द्रेयाच्च.न्दीयाग्रीयान्दीवाहेते....... ्र हुरा बेदे े दः । ब्रिनः द्रायान्यम् बे नेश पन्नः ख्या द्वे । द्रिनः ने 'मॅन्'या" ্রিঅ.ব হ্র লেব র ঐথ বস.থ অঙ্গণে বথ.বেম্ব.ট্. 'র.ন.র্ব..... ईष्या,थे.पूर्या थानेषय ऱ्राक्री ग्रीश रम्य पद्ग्ये.**ह.**के**. विश्वा श्रीया.ह.** वन तहेन हेन् हु भे लेन हिरान्य वायदर वे का हर पन हर वेरा दे বর্ম অ ম:ছ্রেইব্ এওবা ঐস্বেম্ সম্বর্ম প্রুব্ ন্ন ব্রুদ্রের্ ः गादः १वा स क्षेत्रः वि. सियः चद्रः श्चेत्रः स्व स्वे चराः वारायः नुः "वेः क्ष्त्रः वरः" **इ.**पश्चित्रप्र, वर. रहेव. प्वर. वया त. क. क. प्र. क. मञ्ज राज्य वर्षा शु के क्ष्र में केंद्र द स्वर में हैं मार्च राज्य मुजलाय । पविवादमै व्यादी श्रामा सह मार्थ में प्रामा स्थाप के स्याप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्था निव-न्दा वाववाहुदाह्य प्रवाद विद्याला प्रवाद वार्य द्वार र्षर-व-पत्रिव-मृति-मृर-द्वित ग्यान्यान्यस्य वार्याः वार्यव्यव्यव्यक्ति विद्यान्यस्य विद्यान्यस्य विद्यान्यस्य

क्षेत्र तह्मार्यः वरः मुः तर्ने प्रवेतः विष्यतः तह्मार्यः विष्यः स. \pm ष.च्.क्ष्य.श्चे $\mathbf{1}$.श्चे.ब्राज्य.क्ष.चय.प्. $\mathbf{1}$.प्राच्यय. थेव उरा त्रेंत्वाद्यत्यः धेवः वृत्रेषः स्टार्थः दे विद्यार्थः दे विद्यार्थः विद्यार्ये विद्यार्थः विद्यार्ये विद्यार्ये विद्यार्ये विद्यार्ये विद्यार्ये विद्यार् रु'नर्द्वात्रह्माके स्ट्रान्दि दिन् न्यान्त्र क्षे न्यान्त्र में विद्यान्त्र में वश्चमाञ्चन स्पर्मा विवादित्या क्रेरामण वास्त्र श्वराञ्च रामण विवादित्य बिरःश्चु-न्धंद-रेन्द्राधंर्याची द्वाया वर्तु-वर्श्ग्रेट्स वर्ष न्यार्थम् न्यायाः **१८.४४.२३४.५३४.३५.१५४.१४४.४४.१३४.१५४.४४.१३४.१५४.१४४.१** के. सेब. पथा. पत्र ४. प्रया पत्र १ क्षेत्र. से ४. से ४. प्रया १ वर्ष 55" यया च 'हे' तकर' व रूरता के व 'शे र र र र र । ৭5ুকা त्याः हव द्वापरा ध्या द्वापा त्वा त्र्वा त्र ळव स्व स्वा ॅम्<u>न-इ</u>न्-क्रेन-पः संग्रालग्-हग्राध्याः ईग्-द्रन्-क्रेन्-द्रहेन-द्रा न्त्रः नव्दः द्वरः व्रदः व्रवः तह्यः तत्त्रः है । द्वरः च्वरः व्याप्तत्त्रः व्याप्तत्त्रः व्याप्तत्त्रः व्याप्त र्रायराम् इरावेरा दे वया केव ग्रा न्वरायेरा मल्रा नरायेरा **ल. प्वतः**श्चेन् मृतुम् मे स्वानः इवला म्वामः ह्रम् नु त्र द्वेनः त्रामः न् द्वेनः **बि.**चन्तुः स्थलः मुन्दः स्थलः इसन् वे विषय वे या प्रमा র্ব-শ্রুম-দ্বীব-শ্রুশ্বান্থীনান্তব-यहॅग्'स'न'व्यायाच्यापर। ५'तुर'ये'ठैर'तु'यठव'स्न्'न्चेव'हेवे'

न्यव रेगव वू न न्येक केव गूर न्युर तेन न्वुर ल म्य क संवाद व्या *बेर-*घॅर्-ऋ्र-खबःपव-रूर-पग्य-क्ष्रंब-विग-ग्रॅं*र-र्म्*य-पहॅर्-ध-क्ष्र-। aुषाबेर्-मृष्टॅर्-खुर-तु-खुर-मदि-केद-गुर-न्छर-शेर्-मृतुर-मैश-चॅर्-···· ८७ म्याक्ष**यः द्वः**र्**ध्यः** म्टादस्यः नुःम्यायः ह्टानुः मञ्जूनः ने विः नदेः गॅ्राॲं या हॅ म् प्यत् रहं<mark>त् : न्यम्</mark> त्रह्ता वे प्यंद्रः च ग्रेन् : न्में रा प्रदे : न गृदः यमःगुरः। इरःयान्वयःश्चरःग्वरःगर्वःयःयेदः सञ्चरःन्वरः न्श्वः ग्री त्रिकः श्रेतः प्रत्नात्र न्या क्षयः प्रवः न्या यः स्राः नुः त्र्राः ग्रुरः रः कॅलः बन्नतः वृद्धेषाः हुः चुरुः हे न्यू द्वा **"क्वः क**न् सुरः सुरः स्वरः स्वरः *वेषाचुरः भर र*ःक्षेप्तक्षुरःवृष्यः ग्रेरःश्वन| वर्रःनत्वव्याः समानवः केरः वतः श्रवान्वम् मुम्पारम् म्यातम् मारम् मारम् मुन्याः स्रवारा वाकः स्रा देन्। नःत्रे**लः**न्याने श्चरः धटा च मृष्यः देने नः च ता व व ता स्वयः नवःग्रेकःश्चरःषदःषकःग्वरः५६कःव्यःवरःमञ्ज्ञायः रदःरेरः" देवःनन्त्री **इ.सन्यः रेवु तपुरः बेब्यः थी. कीरः वयः ब्रूटः** श्र-वयः क्ष्यः श्रेटः विमःग्रायः क्षृत्रः वु स्याः ह्रम् यायाः मृत्यं द्रम् द्रयायः वु याः भैटः। नश्चे.चबन.क्रिया

स्त्राच्या स्त्राच्या

ই'বৃষ্ণস্কু'জ্ম'(1903) স্কু'10ণ্-'বৃত্তীবৃ'বৃষ্ণ স্ব্যম্প'ন্ন'''''' **बॅ**ल सु ल ल बब बल म् वर् देव विमा मु वर् सु के दे सु वर् के ते सु वर के ते से ते स्वर्ण मु वर् के ते से ते स्वर्ण मु न्यः हुते हुं रामा ठवा धेव विदा देवातु अपरा देवातु विदा ୖଌୖଌ**ୣ୷ୡୣ୶୷ୢୠ୵୷ୡ୷୕ୢ୷ୢ୕୶୷**ୡୣ୷ୡୢ୷୷ୡୣ୷୷ୣ୶ୡ୷ୢଌ୷୷୷୷ **ঀৢ**ॱয়৾৾৾৽য়৽য়৽ড়ৄৼয়৽য়৽য়৽ড়ৢয়৽য়ঢ়ৼ৽ৡ৾৽ঀৢ৽য়৽ঀয়৽য়ৢৼ৽য়৽য়৾ঀয়৽৽৽৽৽৽ वहिंद्रमन्दराच्या र्चेदादेवार्यमार्यदादराज्याच्या **६० ने ने या प्रस्ता में रामायाया माया प्राप्त के या ने या ने या ने या ने या में रामाया या प्राप्त के या प्राप्त** न्मॅलमान्दा सुन्नलमान्डैन हिरे ब्रॅन के लेख ब्रंट ब्रॅन वि बेर-पःर्यम्याद्धंयाबेदाग्री-रे-वर्तुदायदार्दयागर्हेदाग्रुदा। मद्रवार्श्वन् न्वतः न्वतः वार्षेत्रः तञ्चवः न्वतः बाह्यवः क्रीवः ने तत्वः ने न्या ता**र्य या यश्व**त साम त्राया चिता स्रम्य या म्या स्टाष्ट्रिय व्याप द्वी । न्यन्तित्रं त्र्यं प्रत्यः प्रत्यं प्र <u>न्गार वर्गः वर्षः श्रुं वर्षे राजकं अवः श्रेर वि वर्षः श्रेवः वेषः वेणवर्षः वर्णः वर्षः वर्णः वर्णः वर्णः वर्ण</u>

या चुरायदे तम् वाम् उत्तर्भे वित्राम् वित्राम वित

त्रायद्धर्यार्यन् राम्यवार्यन् मृत्रायद्वराम्यायाः वयः अरु ८. श्वायः बङ्गा श्रीयः ग्रीयः ग्रीयः नश्च ४. रंगः ही श्रीटः सरः प्रमूचः स्थाः बनतः गर्रेगः तुः चेतः केतः त्वगः श्रुत्यः सः केंग श्रेतः नदेः तदः देतः तदः न "བོད་སྡོངས་ఌྱི་ས་མཚམས་ఌྱི་གནད་དོན་སྐར་······ད་ལྡེ་ས་ 영지 बद्धबरा ने निरा गुरा न् छैन ग्रॅं रा छ निरा दर्छ ना र्चे ना ग्रॅं रा से या छैन प्रति ना द्वःग्रदःश्चन्यःन्वेयःग्रयःत्रक्यःश्चन्द्वःददःवयःवनः धर् खरा ५६न-विन्-स्वन-संविन-संन्-इन्-स्वन-सं-नेन्। नाय-श्वेन-न-तुन-ष्ट्रित्रासुर् बेर् मदी ने त्रित्र पहें व बुर व नर ने या दे या पर तु बे तीयान्ने, श्रेट. ग्रि.इ.चर. श्रीर. सप्ता याया श्रीया प्रश्नेय सप्ता कुरा दि . प्राप्ता स त्त्रुल:नृक्षेत्र:य:त्यतःत्यन्यः प्रश्नुव्यतः व्यान्यः वः निष्ठ वः वयः व्यो नः नीः यः र्मन् बूरवाग्री श्री श्रीवायायवयावायश्च माळे दे वरा नु व र, ररा ता में वा वर में प्राप्त के देश में बर्ज का में वर में वर किया यभू गरा चुनामदे संकेषा न्या कुना क्षा व्याप्त प्रमान प्रम प्रमान प्रम प्रमान प्र प्रिया नृतुत्यः वृत्ते त्यारक्षाः नृत्यः । अन्यतः व्यायः व्यायः विष्यः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विष विच. पश्चिम्या च्या पर्वः विषाळमा महिंदा श्रुषा ध्येमा म्याया इयया सुद्रा दे रे·य·र्अणःबैं·रे·दिष्टिःश्चितःचेर्-र्गेषा मृत्वःयरःसःष्टियः। स्वाःवीःबैः

अपयाने रान्डे वृष्ट् या वृष्ट् प्रायम् वृष्ट् या वृष्ट्

इसरा वर्षा वर्षा निर्मेशया ने वर्षा देश प्रविदः सेपा सामक्या हैं मॅं कॅं रेव केव ब्रह्म र्रा यगरे कृत्या सुरु ख्रिया सुरु हिंचा सुरु वियानित्। अनमानेनामायाष्ट्रिय में सूरा क्रें नशुयान्ता सरायहें ন্থান্-ন্থ্ৰা नक्या न्त्र**यः** न्द्राहरः नृत्यान्त्रान्त्र्या ङ्गानः हरः नृत्यान्यः नहरः चकुन्। वनाळ**र ळ** दुन इर नेन्द्रा श्रेचित संग्रा कु खुनान्यन न्दा। *ढ़***ॕज़**ॱॸॺॺॱॠॺ**ॴ**ॱॸऀॺॱॸढ़ऀॺॱॺऻॶॺॱॴढ़ऀॱॺॸॗॹॹॹॱॹॖॱॸॠॗॕॸॱॸ॓ॱॸॕॸॱ न्वम् शुक्रः क्ष्रं र क्ष्मा ठवः यम् ने र त् इं र वता द में म क्षेयः वदार म ठेम् . हु केव गुर र इर शेर म्ल्र मेल मेर र प्ल म्ला अया र व 급성.교도·[म्राच्याच्या स्थान्य विद्या स्थान स्थान स्थान 5,88.82 22.1 য়ৢ৾৾৽য়ৼ৾৾৽৶৻ড়৾৵৾য়ৢ৸য়ৢ৾৽য়য়৻য়ড়য়য়<u>৾৽</u>ৼৼৼঢ়৾৽৸৻ঀ৾৸৾য়৾ৼ৾৾ৼৣ৾ঢ়৾ঢ়৾৴ **ଛ**ेर्-सु-बहुर्-५केन् कॅल**-बहर-**न्डेन्-हु-चुल झ्नल-कॅर्-न्तुन्त-लबा त्यानेरान्डेवान्यम् मैयाधम्। रेग्यंवान्तुरान्डय हेयारेया ন্ত্রব, মুল, ङ, রিনাথ, গ্রু<u>, নরনা, নয়ু ८, শু ८, নর, মানথ, শু থ, মিন</u> न्यग् गै कुन धुन्य न्धुर र्म्या है व्यन् स्य ने स स्वय र चुन्य है य न्वराददेवाचेन् बाह्वावन्वर्गात्रामाने वाह्यान्य वाह्यान्य विकास विकास वाह्यान्य विकास वाह्या विकास वाह्या विकास ष्ट्रम्या है .८४.१ है या वया में .या प्रमान है में या थी .पें हैं या था थी .पें हैं या था थी .पें हैं या था थी .पें **₹**न्नवान्दर्भाद्याः दुवान्ति । चेत्रायः चन्नद्रा विष्या । हे वा चेत्रः

ॺॕज़ॱॹॣॸॺॱ**क़ॱॶॱॱॣॺज़ॱॹॣॸॱॻॖऀॺॱऄॱज़ऄज़**ॱढ़ॾॆढ़ॱॸॿॖॸॱॻॖॺॱय़ॱॸॣॸॱऻ ग्रेगः मृथः व्याप्त्रं द्वे व्याप्त्रं दें रहे देव निष्या प्रकृत् व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व तह्यान्यम मे तस्र-द्यंदायान्ध्यम मिन्द्रामें न्दा हैं केवा क गाः य र्याय यः न्हः व श्वरः रेखः पविव स्प्रः यः न्रः। कुरः श्वेषयः न्सुर-र्यम् गुर-दर्द-क्रेव-धर्-पदे-न्यर-पदे-न्वता-स्या-स्यतः.... <u>न्द्रीतः रद्यम मैं १ तमें "न्यें व १ तम् निम्नित्र हुन्यः न्र्राह्म या न्राह्म में १ तमें हैं से व</u> ট্রিস্:রনঅ:নন্তুস:র্ঝান্টা:তব্:মুস্:নেষ্ট্ অ:ট্রঅ:র্স্স:রেষ্ট্রন:(1904) स्रुप्तः चे १८.५१५ के था नक्र क्षा ब्रुप्त स्थान स् धै·वे·विवाःरहरःरॅवः"र्ःर्रः रंत्र्रेवःर्घरः विवायरः विवायरः विवायरः विवायरः विवायरः विवायरः विवायरः विवायरः वि <u> রহ'র্ম রুপার ব্রার্থি, মূলা খ্রী বেই রুবা দেশ ক'রু নের গ্রী শ্বার্ণ সং</u> हैतथा वर्ष बहूर बार्चिया तथा राक्षार्यास का लूर सप्ता था खे. रारा हा हूर तस्र - व्यवः मृत्र - द्राव - द्राव - क्रें - या श्ववः पः स्यवः - व्यवः वा न्यवः - - व्यवः वा न्यवः - - - व्यवः वा न्यवः - - - व्यवः वा न्यवः - - - - व्यवः वा न्यवः वा न्यवः - - - - - -त्रै ररः तुः तृषु वृः कॅर् छ । कुरः रः कॅरः कॅरा व्यवु वः पॅर् छ रः। र्ष्ट्रेवः मॅन् वि'र्यु ताबी झ्'न्ट वर्यु न्ता झ्वा दहें बता चु कु खेव "वे ता ने न मन् য়ৢ**৾৾৽**ৼ৾৾য়৽ৼয়৸৽ৼয়য়৽ৼয়৸৽ৼ৾য়৽ৼৼ৽ড়৸৽য়ৢৼ৽য়ৢ৽য়ৼ৽য়ৢৼ৽ড়ঢ়৽৽৽৽ न्यवः पः न्रः। इ.प.क्रः देवायः यवतः न्वः क्षः न्रः च्रः यदेः प्रावरः सुदः सः म्बिन्या हे निश्चन न्में रापया न्दीन न्यमा नी न्या श्वित श्वन न्यम ना नर्भूर-तु-ह्युर-ने-ज्ञानाक्ष्याचेन्-ह्यु-विनान्निर-न्यव-न्यमः र्व-त्यन् न्यमः न्यमः ने हेर्यमः न्यमः न्यमः विका माञ्चा के र्यम्या नेवा पर्वव कु विमा माने ह्या माञ्च माञ माञ्च माञ्य माञ्च माञ माञ माञ माञ्च माञ माञ माञ माञ माञ माञ माञ्य माञ्च माञ रे-वृदे-कःश्वर-चॅर्-र्वम् र्र-दि-वदे-ग्रॅक्कंबन्य-विष्यविष्यकः

इसरा पत् गरा सुरा है ग र्डिन र समा मी के राव प्रांत में न इसरा सं है देवायापञ्चात **यदायाम्याराम्ययाम् रायदाः श्रम्यया**वस्य श्रवाते रा उ.र्च्य श्रेर् श्रेयाता वर्त्तरा त्रे क्र क्र ये. क्र प्रेया क्र श्रेया है. म्रास्यान्यं वादवाया त्रुना कार्यायान्य वार्षाया केर् इता में दें प्रताय ने में दान के ती हैं है है है नि में मिन का ता महे वा वर्षा र्चेत्रव्र र्र्रे मृत्र र्वा स्थल स्या गर्हर् स्राम चेर् चु र्रा म्पार्श्चन् वि नदि मूं या झूं या ने या के व क्षेत्र समित्र साम ने मान्य में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में ठगः इवरा दरा पर्देव शेर् ग्रे प्राप्त मान्य श्रीत है। यह स्वराह्य विदार <u> गुैस्र तम् नः मूला श्रवतः र १ १ ने में में में स्थान में स्थान स्थानः स्यानः स्थानः स्थानः</u> तहेंद्र:रतः विषायायायाँ याते : ब्रेंग्बर ताथी खुराते : खुरातवा क्रेंग्याया न्ता भी अरुता उर में जिन्ना भीन अरामनर ने वासायना तक्ष्यातक्ष्याः ग्रीतावे त्यात्यामः मिन हे न् ग्रीवाः म्रीवान्य नार्वे वरान् में तरान्य वर्षे बेर्-ग्रु-ग्र-पदे-रेग्व बे: राप ग्रेर्-र्म्या नेर-रह्म । विपायहरा विरा दे वयान् है व मॅन् हुँ गया गृहे या गया यदा हुं दा यहो या यहुन् हु या हें गा । बन्दर्वेदः देरः रूषः न्दः इषः श्रवः श्रीहः। श्रवः देः उ न्वेदः श्रीनः मुन मह केवे ने द में के दे भी के ना न लगा न में न या व में हिन निम् निम **र्यम्यः दर्** द्वम्यः ग्री-दश्चराञ्चेः नृतः। उतः दृत्रं द्वनः र्यम्यः नृद्वेनः हितेः ढ़ॺॕॱॸ॔ॺॻॱॻ॓ॱढ़ॺॖॖॖॖॖॹॱऄॱॾॺॺॱख़ॖॱऄॻॱॻऄ॔ॸॣॹऒ॔ढ़ॱॸ॔ॻॖऀख़ॱॸॖॱॸॕॣढ़॓ॱॸॻऻॹॱॱ **क्रुॅंन:बेन:बॅन:बॅन:बर:कंट:ब**:वहेंबल:**हॅन**:बद:क्रुंद:बॅ:बेट:न्द्रवानाः

दं बूद्र-ग्वर:रेषायहंद्र-प्रथम्द्रवेदःहितःद्यम्द्रवंदःउरःद्रं छ्वरः रु वि नदे तम् न का मूं का सं वा मुन् र्मे का स्नवार्म करा तहें ना र्मे का रा मलामव हुंदा न्यम शे हिंदी शे यद्दे वदा मी यद्दे तर दें व दें व दें व विन्-न्यम् स्यास्त्रम् हिते वे म्यार्यन्-न्यम् यान्यम् । ५३ व-न्यम् स्टि बल बे बरदि मिन वर ने बरे द कर या नर्ने व कु धेव "वे ल नहें न् भ्रमकः नेतः चन् न्वमः मी क्षेटः न्यं नः यदः यः वह्यः यद्वः य न्दः ने स्वाम् म्वा न्यम् न्युकाः इयस्य यार्चन् यन्यारे न्या मी न्ययान्यारे यार् वेन्। इर-ब्रिचेश की.पम्.-रंथची.रंत्र्यं रुचेशःक्ष्यः रंजे.ब्रिचेशः की.वि.जोर्थःक्ष्यः तह्य याधिन् केवा ग्रीवायन्तान्यं वाक्षाक्षान्याया विवासी स्ववा वयाने 'क्षेत्र'नृत्यायेव ग्रीयार्चन् 'न्यम् 'इययायायायायात् नम् 'नहरानया" ঽ৾৾ঀ৴৻য়ঀ৽ড়৾৾ঢ়য়৻ড়ড়৾য়৸য়৸য়৸ড়ৢ৾ঢ় <u>न्डैब्'वर् न्बर्'न्ब्'व्याग्वर्र्'स्र्र'यदे'रे'ङ्गर'वञ्चव्'क्ने'ञ्चर्'यदे</u> ररावस्र करा न्द्रेवाहे वर्षा तहिलाय के नाया तहुला नित्ता हुना **ऄॖॱ**ॺज़ॺॱॗॸॱॡॖॖॖॖॸॱय़ॱढ़ॏॿॱऀॺढ़ॱक़ॗॸॺॱक़ॣॕॿॱॸॖॖॱॸ॔ॖऄॗढ़ॱॸॣॺॿॱढ़ॸॱ॔ॱॕॸॕॸॣॱॱॱ न्यम् मै : यद्यतः अँ र र र : धैर : हे : तक्र्र : केर । ब्रे.बर्दे विवादर वी. बनेदु निहें ब निर्मा अन्ति बहिता गु हु या हु निर्मा यदि वर वहे द स्वा है । *७*२। ने वर्णस्य रहेव वि पर्व ग्रॅं या केंग्य चेन पर्वे रहे बाता हे रहे रहेन ह्रा र बानर्के त्यार्थं दार्श्वार्थं दान्ना निवार मुद्रिया निवार में वार्ष्यं वार्षं वार्यं वार्षं वार्षं वार्षं वार्यं वार्षं वार्यं वार्यं वार्षं वार्यं वाय नु वे वन्द हर हर देन पहें व वया के केर ख्रान्य व का ख्रा केर र्वेष्यः र्रेन् क्षेष्यः ग्रीन्द्र्याये इययः याये वाद्यः तयद्यः यदे ह्याः ने हे ्

तस्याक्षःक्षेराराज्ञाताः । स्वा न्या तत्या ग्रीयारा **क्षेत्रक्षे नयन्** । यहारा वेषाः बद्दः न्यं दः इः क्रिं वे किवलः यदे हे न वे न्यदः न्यः ने सुवलः यवः । । । बुद्याने मी भ्रा भ्रा मार्विद ने र स्प्रा म्या त्या त विवा वी श्रे ति नि र ने से #याशुःर्वय पदः येदः पदः वाळेद्रवाहे : द्वित द्वामा ठः द्वित महिमः बिना तानी पहुन हे प्यत् स्वतायहरा व्यवतायवि राष्ट्र प्रदे में र न्यम् इयम ग्रेम् गुर्-न्यतः हरः बुयः यः बेन् यरः रत्यः मे १० हुरः विवः बर्ह्सराधरायरान्धे दान्यमा मैतायहरानदी नङ्गेराने के वायर राह्यमा इययार्पतः इता क्वा क्री र्मतः माना द्वार् राप्तः प्राप्तः । न्चेव परे रवया शु श्रुप्या भेरा। वाचर में न श्रुर श्रुर श्रुरा श्री स्वार्षया ब्रैट्रप्रन्ट्रप्रकेत्रकेत्रवर्**यः केतेः झुः कंनः ग्रां**यान्यं वर्षावर्यः सुर्रः [म्द्रानुन:नृदा] त्रेत्रात्र्वातान्वृत्यान्वेतान्त्रेन तुःन्येतः विराग्यरायाच्यायान्वयारी मान्यानुस्ति विराधित ल्.च्यी.व्याऱ्यां, व्याप्तां व्यापतां व्यापता लग.ल्ट्य.ह्र्यय.ब्र्यय.व्राच्या वर्ष.र्ट्यय.क्र.क्र्ट्र.श्या.श्रट.श्रयावया ¥.ल.र्ज़ेज.री.चं.त्रेचरक्षे.चंचेब्यातपु.श्रेचयाश्च.या.या.या. क्षेत्रायेवः स्वायः नृदेशः सः तक्षयः प्रनः स्वयः विद्याः वहायः ॅब्ट्र त्र पदे . तुन् . बोन् . बोन्न . बोन्न . बन्द त्र . द्व त्र . ब्रेट्र . खून . खुन . बहुन . .

हु : ब्रांतर क्षे : क्षे ब्रांतर विया किया विदाय व्यवस्ता विदाय विया विवाय किया विवाय विवा बर्दियः झ. ब. इ. द. तर. द्रद्या तथा के. कुर. श्रियः व. द्री व. कु. कु. हु. व्यायः वियायदी हुन्या श्चन स्किन्स्या सुन्य प्रवास देवा सारेन्। न्डेन र्थन पान्यतर्भः य क्षेत्रः स्वाता वेषा परः पादः महित्य। द्व ग्रदः ब्रायान्य क्षेत्र क्षे ५इंर-हेरान्मान्यमाय मन्न्यम्मीन्यम्न्मिन्स्मान्मिन्स्यन् भै·रह् : महमः हे : मह्म् : ५६ वा ठेवा <u>छ</u>वः मवा न्वेवः व्याः वीवः व्याः विवायः व न्स्बे के कुर नचिरायर प्राया वांच्याया स्वा कि छे त्याया शिल्या राष्ट्र *ॸॖॱॸ्*ॴॸॱय़ॕॱढ़ऀॺऻॱक़ॖऀॸॺॱढ़॓ॱॿऀॺऻॱॴऄ॔ॸॺॱग़ॕढ़ऺॱॳॸॱॸॕॹॱॻॖऀॱॸऀढ़॓ॱड़ॗ॓ॸॱॸॗऀॱॱ <u> च्यात्रेनयःश्रेनयः र्वेदः र्वयाः ग्रीयः व्रे भ्रीयः रद्धः ययः क्षः व्रेटः ययः ः ।</u> न्यदःहरः ६वः पदेः हरः श्लुः नभेगवायाया ने वयाय उप वळवाया देवेः न्श्रीयातुःभिन्द् निन्नः हे नक्न्याये में न्न्यम् म्लव व स्वया व या छेवः २.८त्र.श्चेर.श्चेत.त.च्ययात ब्राचरप.त्र्या.श्चे.श्चयावया 4.22.1 लुकाराविनका क्षेत्रावाइंदातस्याञ्चलायरा दित्राचा न्दा। उ न्धं वाहेदा मालमा अथा के प्राया ने या ने की या भी या भी या भी या मालमा स्विमा है। पर्यो पा मालमा न्यम् वी गृत्व प्रीत वर्षे रार्ध्र या ने या स्या ग्रीया न्यु राव्या ने या निवास ययानग्तः नग् तु : हे : यू र : पह र : हे : हे दे : ऑर : क्रे द : स्वायः विचः ग्राययः : : क्षेत्रवु सुत्याम न्दात्रेताने वितान्यमा क्षरामिना तात्रम्ना श्रुदा होन् वनराः क्रॅरः या ग्रारः वर्षे दः क्रेया परः नहरः विरः। वर्ः न्या द्वा **बैर-प्रवेष-बेर-प्रवे-प्रव-पर-प्रवेष-प्रव-पर-प्रव-पर-पर-पर-पर-**

क्रि. प्रचा पर्के च्या विकास क्रि. प्रचा पर्वे प्रचा क्रि. या क्रि. प्रचा प्रच प्रचा प्रच

क्ष्माः मृत्राम् त्राम् त्रियाः व्याप्ता व्यापता व्यापता

महिराचन केन विन के हिराहित बे है रना हु त नरान नि न के नि है ... केरा। *क्रायाचेवा* श्रीतान्त्रेत्रान्त्रेया क्रायान्त्रात्रेत्र श्री श्रीतान्त्र स्थान ल.श्रेल.श्रंट.श्वीय कुव.विया.धे.श्रंट.लट.ट्यत्री.श्रेलाचक्वेच.वया.५रूव.... न्वमान्दा धुलान्वम रोतान्वमान्वस्यराक्ष्याः क्षेताः हुनाः हुनाः हुनाः र्दयः कुनः न्सुनः नुः निष्ठः हो। कुनः हो। कुनः निष्ठः हो। हा निष्ठः हो। <u> स्वाया-रञ्जा पद्मया भ्री प्रचाया स. याचे या प्रचाया प्राया श्री ट. री पर्वाया प्रया</u> नेन:हु:बेग्-ग्नेंद्रतःमें व्याष्ट्रेन:दवेव:द्यराधदे द्यग् बे:ह्रग् दर्धेताह्यय रेवापदिवः र मुंर हे 'नवागः ग्रद्या हेवा हूं दः शुवा यमु 'क्रेर' य दः देवः ... मन्रेर-र्मः तर्ने या इता सर्वा यन् वा मुन्या स्वा वा वा विवाय भ्री वा स्वारा पा বঞ্ধা মিথা রূম म्बर्ट वर्द न्या वर्षे हैं स्वर्द के वर्ष **৲্মর** ন্মান্তবানে বিশ্বনা আহবা গ্রীবারী থবা প্রামান্ত হাল বিশ্বনা ग्रैरा-र्यम् यद्य-चिन्-चुदि-र्य-पठद-पदम् न्चिन-र्यम्-भैरासुः बर्वन् कुष के क्षिन्या शु र्ष मानदी प्रयानन विमानी मानदी । श्चु'दनुवान्में वामार्थम् वान्ने वाक्षे वादा में विताम् श्रेम्वा वामार्थम् श्वामार्थम् वादा वितामार्थम् वाद्या <u>न्ह्रम्बुन्तः हेन्-न्म्-ब्रम्केन्तः ग्री-न्म्त्रम् वर्भः स्याप्त्रम् न्यस्यः ग्रत्स्य</u> निरा रे'हेल'र्डेन'र्यम'त्रयल'म्रर'र्वर'ग्रे'क्र्'त्व'रे'ग्रुप'र् म्वरायदे में प्यान्में वृत्ति दुर्ज्ञर पदे व्याञ्चन तु यद्य न्यं वृत्त्य व्या ब्रीरामान्दारवामान्द्रेयाग्रीयान्वनान्स्दायद्विनाने वळवादनेवया इना तबन व्रकायबर न्वेद न्यम ६० इना द्या नगन् स्थर हराया

र्चे वर्वम मै वे वर्व ह्रा हर वर्ष वर्ष में वर्ष न्ध्रे व न्यम मुला हे र वर्षे नदी त्यस तुर व न्यम मैदा वर्षे म क्रांत में व न्यगः तहरा बेदरा यदः चुरा भेदः। क्ष्य परः तुः न्धे व द्यगः द्रवायाहातस्य र व्यक्ता व्यक्ता व्यक्ता विष्य के त्रा द्रा विष्य के त्रा विष्य के त्रा विष्य के त्रा विष्य के न्यम न्रा ध्यान्यम केरान्यम र्यम्य विम्या अ००० ब्रॅंब-क्रिन-ब्रीम-पा विमान्यामी तर्वे त्यम्यात्वरा शुम्यान्ययः क्रिंग्स्वादहेवःक्रयाकुषा विराद्येवान्त्राम्दाः संगतः च्व-इर-डे-व्र-न्नदा र-क्र्र-इययायासुव ळवाया री-रदे-र्न **ईवः अ: न्यायाः । इतः ईवः याव हुयः ठवः रायायः ग्रीयः न्ययः ग्रायः यादः ।** विम्यानुयाने रचे वार्यमा संराग्हेर् महिरा हु दे र्या पहला व्य न्दा लबामनार्द्रस्यानुर्नेनाया न्नार्वरान्वनात्वराचेन् यदःयाकः पर्वत्यः विवाधिवः विदा देते म्याया वार्षवा श्रीः ने हितानुः तहरारम्यायाम् वाहे प्रति। द्वापा स्वया श्री तिस्वाय द्वार प्रता बन्दा बन्दाची बन्दा महामा मुना से ना ते ना ता पर स्था मुना पर मुना पर स् दे'र्ग्'र्वं कर्ष्यं क्रिंग्व्रिंद्वराष्ट्रयागुरः स्टान्यमा मुठेमा मीरा वेः *** बर्दाम में र इत्रा र्डिन र्वम मैना रेदे म्याया मूर्य दर्द में र र्वा ळ्ट्र.त.वेय.वे.जु.जु.जू.य्ट्र.पस्या.जट्प.जट्ट्र.पवेव.वेट्रा देश्या. मै । वित्रास्य में राष्ट्रम्य वा वित्र वे त्या में वा वित्र वे त्या वित्र वित् मञ्जीयाने निष्ठे दान्यमायाञ्चलाञ्च दान्यान्य स्वर्थान्य स्वर्थान्य स्वर्थन्य स्वर्यम्य स्वयस्य स्वर्यम्य स्वयस्य स्वयस्य

न्हर्न्दि न्द्रेन्द्र म्या सुत्र स्तुत्र दे द्रात् हे द्रात्य मेया सुत्र सुत्र बरुवःपश्चेतः व्याप्तवेवः स्वयः देते के त्यायः ग्वयः केटः न्याव धरः । त्र्च्यतः हे ·कॅरा चेन् क्रेरा तु ·क्यरा या यावनः गुर्केन् ·कंन् वेन् ८ हरः। न्मेन सारी-पद्य न् बीरा में न्या की र शिया है न मुन है न स्र र है र इर्.र्थत्म.मुथानेषयः क्षेत्र रे.पुथातस्तास्त्रम्यास्य वर्षानियाः है वेदाविषा यळव सं ऑप्टः स्यमा मेदा मद्दरा हे प्टार्नेद पदि यहाय पर्से राज हे. में. पीर. पहंच भूषा निया है प्यार ही बे. रे या. मुंबा मूर्य प्राप्त में विया मूर्य प्राप्त में विया मूर्य प য়য়ৼ৾৻য়৾৻ঀঀ৾৾ৢ৻ৼৼৼয়ৠঀ৾৻ৼঢ়৻ঢ়ৣ৾৾ৠ৻ঢ়ৢ৾৾৻য়য়ঢ়য়৻ঢ়ৢয়৻ঢ়ৢৼ৻য়৻য়ৼ नर-र्डिव-र्यम्, यास्र-रव्हर् हेर्। म्वराक्रेर-र्मेव्रपरे क्रं-र दे.लट.पिया.ची.अञ्जल.कै.*वी.च.बी.*र.*तथा.ट.कैपट.सथा.चू.*ल.अ.*यट्य.सपु...* विर्वे हेरा-दूर्याशुः अर्हरा शुः विराने विरानी न्यरयान्वयाशुः "ल.र्र.म्र.प्रंदे.र्यम.म्या र्वेद्र.यम्.य.प.म्थमय.यूर्म ग्वराहेर र्ने म्ठल के व्या र्यर ये दे निग् गैरा पश्चर रार्यर । ेवायाने के अन्यानेते न्यम् त्यमा क्षेत्र क्ष्यान्देवा शुः **याहे**वाया *षेवा ने न् विश्वान् द्वेवान्* यया त्यान्स्ट स्वायानेया प्रविवाद द्वेतान् क्यल. झ. तद्व. तवीर. ब्रूच, तवी. इचे वाला. हेर. सची वि. चे वार. इल.गूर्वाव. वर्षाञ्च वरायाया वर्ष कुला हे हिरावी विराध सराके या मनेन र् हेन्र्न्यम्मेर्यम्रस्य उर्ज्यः ह्याने सञ्चर हिर्ह्य तपु.र्नुव.र्बे. इवया.क्रि.क्ष्यु.प्रांबा.क्रि.क्ष्र. श्रीर्वियः स्रेयः विवाः **ৡ**ॱॸॺ॒ॸ्ॱय़ढ़॓ॱॺॣॸॺॱॹॖॱॺळवॱॺॕॱढ़ऀॺऻॱय़ॱॸॕॸ्ॱॸॺॺऻॱऄऀॺऻॱॺॗॕॸॱॷॺऻॱठ॑ॺॱॱॱ য়ৢয়৻য়য়৾ঢ়ৢ৽য়৾৽ঽৼ৽য়য়য়৻ঢ়৽য়ঢ়৹৽ৠৼ৽য়ৢয়৻য়৻য়ৼয়য়৻য়৻ড়ৼ৽৻ঢ়ৢয়৽৽৽

२६ मः वै २८ मः वर्षः स्टर्स्यः र्ज्ञे या चुकाः स्ट्रव्यः दर्ज्यः दर्श्यः या य न्द्रत्यः श्रुणः रमः हुः श्रु बाहे : खाया बळेंद्र्यः मः न्द्रा या या न्यरः न्यू न् नहरः बैरा नवना न्यें बारु राज्या द्वारा न्या विष्य हुन्। **६स.** ८८८४.पक्ष. ८८.में. **४.**६९.५८.५.स.२.५.में ८६८। अंपयारेट्र. न्बर्यान्वयासुः भे निः दे निः स्वार्ययास्य विश्वराद्धाः व न्यतः वृत्तः त्रम् अवा स्त्रीर र्माम्भगापन् र र्वा म्या नहरारराज्ञन्य। उराक्षं ज्ञरायंत्र हातने सं ज्ञरातु व क्रान्डेन न्कॅलपदे रे न न में व मनदेव स्तर्हि न स्र है व स्तर्थ के ल न स्व न स्तर है वर्षरः केदः वित्रिने देरः रमणः ठदः ग्रीः वे क्वां वर्षः । वे वर्षः व्या য়ৢঀ য়ঀয়৻য়য়ৢ৾৾য়৽য়ৼ৽য়৾৽৻ঀঢ়ৢ৾৾৴৽য়য়৽ঢ়ৢ৾য়৽৻ৼৢয়৽৻ঽঢ়ৢয়৽৻য়য়৽ঢ়৾ঢ়৽৽৽৽ न्यग्'ल'र्ह्डर'र्ज्ञेल'र्स्डिक्'र्ड्सर्थं या स्राम् द्राम् द्राम् द्राम् द्राम् द्राम् द्राम् द्राम् द्राम् द्राम खर संभीराम पर्व पात्तर मिंगान्यम र्व प्री हे वामवि पर्व माता हे · · · · भ्रम्याः नेरान्वयः क्रेम्प्रम् **वृत्रम्या** कृत्यः क्रेष्टः क्रेवः न्वेवः न्याः त्रम् तुः मॅरायायाचर्। कुला द्वेर्ध्हराध्यरार्ग् ग्राथमा तुः मॅरावेदाके प्रदेश ले**या** दस्तानग्रतः भृषाः वृषाः द्वाराम् वृषाः अवायन्त्रः वृष्यः व **ੵ੶ਫ਼੶**ਫ਼ੑਸ਼੶ੵਸ਼ਗ਼ੑਸ਼ਗ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ੑੑਸ਼ਖ਼ਸ਼੶ਫ਼ੑ੶ਫ਼ੵਸ਼੶ਜ਼ੵੑਸ਼੶ਖ਼ੑਸ਼੶ਖ਼ੑਸ਼੶ਖ਼ੑਸ਼੶ **ጚ**፞ቔ፟፟፟ ৾ঀ৽**ঀ৾৾৾ঀ৾৾য়৺য়৾৾য়৺ড়৾৾৾ঢ়**৽য়ঀয়৾৾য়৾৾ঢ়৽য়য়৽ঢ়ৢ৾ঢ়৾য়ৢ৾য়৾ঢ়য়ড়৽ৼ য়**ৼ**৾৽ঢ়য়৻ৼয়৾ৼ৽ড়৾**য়৽য়ৼ৽৻**৾য়ৼ৾য়য়ৼয়য়৽য়য়৽ঢ়য়ৼ৽

<u> मॅरःबल - रः (चैतः रः रः ले गॅलःग्रेः नगःग्रॅर चेरः सः त्यलः र् गः त्वरः</u> यरे-ब्रेष प र्वा क्रेया वृदा सहस्राय कुला हेरा वि ग्रॅं या वेरा पर पर्या कु धेद "वेषान्द्र रेष्ट्रेदावगुरुषावगात्तुन् ग्रीषान्दीद् न्यगायायम्" त्रम्य चेर्प्यते प्रथा धेन्या चुन्य हिर्या चुन्य स्ते । तुन्य देरा वर्ष न्समानी में त्यम वदायान्दान्समा से तुराया से मुसान में त्या ह लदे नि.च.च.चेच.चकेच.चे.कक् न.चेय.चे.चच.चूया च्या.चेया च्या.चेया च्या.चेया न्यमात्वम् नाम्यस्यात्तीः न्यम्दर्शः द्धाराय देवः न्यम् दास्य स्तान्यस्य स्तान्यस्य स्तान्यस्य धेषा प्रस्या देदा गुरान्य षा देवा श्ची । व्यापा स्वराधिष येवता त्रुं र या चुर नेंदा त्रा स्टापि कें या यह व ने व ची कें ते र या शु र ची व र या मैलाइंटाडेराबेर्ज्वेन्वराद्दाबेरबद्दाञ्चनाञ्चनामित्रदेवर्वराद्वरा यनः केटः। अन्यानेरः ह्रेटः केरः वृतः न्यणः सः ह्रेटः क्यः व्यनः परिन् गः स्थिन् कर वित्य वित्र स्था वित्र में अव्यास्य में अव्यास्य वित्र में अव्यास्य में अप्यास्य में अव्यास्य में अव्यास्य में अप्यास्य में अप्यास्य में यमा बेर् 'गुर-र्मतर्र्रात्व्यामा बेर् म्यर्रास्य श्रुराध्या मृत्या सम्यामा न्देग्रु । इत्र कुल के दे दुर्ज कुल के दे दुर्ज कुल दुर्ज मा , वर्ण त हु ग वर व्याप ब्रॅंट्र परे क्तर प्रवास है या प्रवृत्दें वर "न्डिवाहे पर्वव रहिया न्यवा वैया **इंग** वर ह्रेर ले के क्रुंगर रूर के बर्द स्था ख्रा चर चर्चा है. व्याम्पान्यम् मेयाद्धं रार्म् या बेदया यदा प्रयाग्रदार स्वया यदा यदा या 551 वर्तः ग्री वर्षः गृश्वा दरः म् श्रेम्यायः यः यहेदः दयाः दर्ममः कॅल[्]ड्रलप्यायाचर्। अन्यातर्द्रायळव्य**वे** से से क्लाननवाहे न्डीक

र्यण में र्यण झर अपर में अ हेर् यर हेवा है पान हैन दय रूट ह्यानित श्रम् वी स्वास्त्र स्वास्य विष्य । यस निति स्वासानित विष्य निति स्वासानित विषय । क्र.चद्र.च|वयाश्च.क्री.च्री प्रव.क्य.स्.इपु शुक्रवासरास्त्राप्तसीलाश्ची . द्या য়৴৽৸৴৽য়ড়ঀ৾৽য়৽৴৽৸ঀয়৽ঀৢ৾৽ড়৽ৡ৾ঀয়য়৸৻ঢ়৽ঢ়ৢ৾ঢ়৽ 청디의. तन्तरकुःक्षेत्रवराहेगविक्तान्तरात्व्यात्राहेन देवा दिन्ता हैन कैंचया. शु. सुन्याया. ता. दुन्या. ता. दुन्या. द्वा. मुन्या. मुन्या र न वा. ロス・美に・多な・単の「ドエ・ベ・弱・ガス・身・ガイ、てぬり、ロエ・ガ・ガニな、カエリ 「つ」・ न्वनानीयानी 'अन्याने 'न्नानसुन न्यासंत्र केंग्राह्म न यें चित्र स्नाया रे से वर्षाः र् न्यमः इयर्ष धेरात्रेष्ठनः व्यव्यायेनः स्त्रा हिःवर्ष सम् *वे*दे दॅन्-न्वम् विम् ग्रेडेम्-न्रम्-धुयः तुःश्चेन् यम् यःन्नः। विनःन्वमः न्म धुलान्यमा यमाळे जलमाया त्रां म्यान्य द्वारा विमा ने हेरा न्यमा タス・カケー क्षे.श्र. पश्यामी स्वापानिया क्षेत्र क्षेत्र पत्री प्रमा द्या पत्री त्सुन् नेतातम् त्र्वेषतः है । सं त्यातान्य मिर्यायः न्रः । स् नः सुन् सुन् नः न्रः শ্রুম-শ্রম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রম-শ্রুম-শ্রম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রুম-শ্রম-শ্রম-শ্রম-শ্রম-শ্রম-শ্রম-শ্র **ঀ৾**৾৴৻ঀঀৢ৾ঀ৾৾৾৻(1904)য়৾৾৾য়৾য়৾ৼৼ৸ৼ৻ড়৾৾৾৻য়ঢ়৻ড়ৢ৾ঀয়৻য়ৢ৾৾৾ঢ়ৢঢ়ৼ৻ঢ়ঢ়ঀ৾৾৾ঢ়য়৻ मदी पाया पर स् 'न्या र से र प्र हुर स्मायत मेन 'न्य या न्र स् धुया न्य या वीया न्यग्न्र्ध्यान्यग्र्यया द्वया ग्रीयान्यग्न्यव ही १६०१ मदी मार्ग्

द्वार ह्या मित्र श्री स्वार श्री स्वार स्वर स्वार स्व

न् हें या ने हें ने त्या त्या क्ष्या क्ष्या

बी ८५८.पहें ब.स.८८.। ५३ ब.हे दे.८ बब.८ दे ब.हे. ह्वा.ब्रॅ ४.ब्रं इलाहे मात्रव दंगा शे रसदार्या विषापकुषावला श्री सुराहु के लाग्रुया बर:बी:र्डेव:र्वण:बी:सुर:वर:बळॅर्य:दॅर्य:हे:र्डेव:हेदे:र्वण: **..** न्यवाशैतन्तिवा न्याशैतन्तिवा नर्ति स्राप्ति हिन् बक्रम्यात्र्या प्रदे अपया ने रास्त्रप्रया श्री यावारा विवास सुराध्या स्थाप त्वव व्यात् ग्रेता प्रीव पर्वे व र वया मैया ववत प्रभूत वया प्राह्म **इ**मा-रबर मर्सर-४६८-४५ देवानुवानुदान्देवाने राञ्चा श्री सामान्य सा त्रवात्रेवाते केर रूरा है। लगा हिर हिरात श्री वाया प्रतापित वरा "की" *शुः* धेदः ठुरः ५ क्चे दः हेते: २ ब्रागः झ्चरः क्चावा खुवा के त्राया हुः वः क्वा *५८*… म्बर् १८ र्षम्य दे स्टर्म त्र्रे स्टर्म त्रे ताम कर् म्बर्मिन्द्रं व म्वराके हर्रिंग गुर्मित हो यान चुरा व की यश्ची मा " नेरा **ॸॱॸ॔ॸॱॴॸॱ"ॸॊॱॸऻढ़ॸऻॱॸ॔ॸॎऄ॔ॱॸऻॷॴॹॴॾॸॱक़ॆढ़ॱढ़ॺॱ**ॸढ़ॗॗ**ॸॱ**ऄॗऻ न्धतः चॅला छै: ब्रीटाया नलन् वला दें स्वर्धतः हिन् सें नकूवा तस्रता न्डेव-न्यमः इययः इंयः याँ " वेयः यम्यः इयः सरः ग्रम्या न्डेवः <u> न्वम्मे तर्मे पर्या इंग्लेशेन क्रुं वे बर्ट हर वया विश्व से त्रिया व्याप्त</u> पहिंवार्कन् : बेन् : चेन् : यान्ना विवाय विवाय स्टार्ट : बेन्य स्टार्ट : बेन्य स्टार्ट : बेन्य स्टार्ट : बेन्य स पर्सिन्-पःर्शिन्ताः श्ची-द्रवानाः ने द्वानाः स्वान्नाः स्वानाः स स्वानाः स नविन्याक्षयानवान्धितः हर्षायान्यान् केर्या धेना तहेन न्म्यास्यः । रे'न'नहॅब्'हेर'| अबारब् (धुदु'६न्'वे' वृज्ञवाहुर'द्यनवाजेन्'

हिमा धिव स्या रमाद निमा तायहव निमा ग्री वाकिरवाधिया दहिमा निमा मद्रे मग्रदः स्वाहेरा श्रेत् श्रुंताया न्वात्य श्रेता श्रुवा श्रेवा विष्या प्रेता प्राप्ता मार्गा द्राप्ता मार्गा स्वाप ग्वि व्यान् क्षेत्र्यात्र वर्षे व **রব**-দব-শব্দ-ছ্র-দেপ্তর-শ্রদ-। त्यते न्ना स्व ने व में के पत् व व का की न ह्म पता मार्के का सवा न के न मा त्या सुव **ঽ**য়৽য়ৢয়ৢঢ়য়৽৸ৼ৽য়৾ঢ়৽৸৻৽য়য়৽ঢ়য়৽৸৽য়য়৽ঢ়৽য়ৢঢ়ৢয়য়৽ঢ়৽য়ৢঢ়৽য় उदान्द्रं द्वंदायाम् द्वं प्रत्यं प्रत्यं प्रत्यं विष्ट्रं विष्ट्र वे.च.लपु.श्र.क्च.च.च.चे.वे.र्टा पर्वेग्.तपु.श्र.क्च.ल्.भेचे.र्टा श्चुनाम्बेद्रताश्चितात्वरम् सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम बि'नदे'ग्लॅ**राञ्चल'ग्वर'व'नगे' वर्ळव'ळे**'खेगल'वर'ठंब'बुरा। न्डीव' ब्रुंग्रय पर्यायहेर्ग्याञ्चरा,मृत्याद्वरा,कु. स्वय्याः ह्वयः या श्रुः स्वय्याः श्रुः स्वय्याः श्रुः स्वय्याः श्रु न् मु 'मदि' के बा महि 'हे ब' क् ' यदि के म् राये में ' के बा मा मु ता द के मा कि सा मा मि सा मि सा मि सा मि सा लगार्ने वाळ वा पद्धार्थन्। पर्वे वा पर्वे वा पुरा के वा गुरा २३८.शूर्.चेथ.कै.थपु.कृर्याच्याचित्राचा श्रीरयाचा व्यवरा सवः स्व ग्या वा का स्व ता की वा से प्राप्त की स्व ता स्व वा स सवः स्व वा वा स्व व नेवः वदः नृष्ठेवः हैकः वदः ग्रीः वदः श्रीदः ला विः वृहें व्याः सः वावकः छेदः श्रीः स्व बे तिर्दर इनियासमा निविद्यासमा अनियासुद्। या गहेरा पर्नेव चेन् पर्व त्राची न्यम् क वै केव गुम् न् चम् श्रेन विद्या वि स्वर या म्हें न्या है ज्या ज्या विष्य है प्रत्य है प्र

6. ग्रन्डिन'वर'नेल'वर'र्न्न'न्न'वेर'डुल'नते'ङ्गा

म्रिंगूर्मेदेर्दर्कं क्रंत्रं का स्रिंग्यदे तत्तुवा वेरान्त्रं नव्या च्या है " गा.गा.धर.बर वेथा वर्षे राज्याच्च "के.यपु.क्षर्यालवा. प्रायञ्च यक्ष्य.वेर.ब्रुच्या.ब्रूप ब्रूच ब्रूचा.लेव द्वर.वेय.वेर.तव.पव्य.चेर. त्यर. देःब्ह्यस्टरःस्ट्रं मधिरःवर् मवि स्मा हे र्मेर्ण लु *ज़ॖॹॱय़*ढ़ॱॾ॔य़ॱॸॗॱग़॒८ॱॸ्ॼॖऀढ़ॱॿढ़ॱय़ॾॣॕॱय़ढ़ॵॱॼॖ**ॺॱढ़॓ॱख़ॖॱॺॿॖऀॸॱॸ॓ॱ**ढ़ऀॱॸढ़ऀॱ র্মার্মান্ত্রমার্মার্মান্র্রমান্ত্রমার্মান্ত্রমার্ অধ্য: ব্ (1906) শ্ব- च- केट- तु- श्वल अव- चेन्- वर्षे । अव- ने श्वल । श्व निविदःवी:र्वर:क:र्क्र:क्रंट:क:र्क्षर्यदःपदि:पद्मुक्षःक्षे:कृष्टं निकी:र्क्षन्वरःदि:पदि: য়৾য়৽য়৾৾৽৽৽ৢয়৾৾ৢয়৽য়৾৽৽৽৾ৢঢ়৽য়ৢঢ়য়৽ৼ৾ঢ়৽য়৽ঀৢয়৽য়৾ঢ়৽ঀ৾ঢ়৽ঢ়৾য়৽ঢ়৾ৢঢ়য় **ॾॕ**ऀॸॱऄ॔ॻऺऺ॔ग़ऄॖ**ॱ**ऄॣॕॸॱॾॕॸॣऄॣॸॱज़ॱॼॸॱख़॓ढ़ॱॻॕॱॿॗॗॸॱढ़ॏॸॱॺॿॸॱॺढ़ॱख़ॖ॔**ज़ॱॱॱॱ** े तित्र मुं ताझे या झे या खे . यादा क्षेट्या धेया त्या या च . या ह्या वि . या हे . "፞ዻ፟፟፟፟ጜ፞ጜጜ፟ጜፙፙ፞፞፞፞ጞ፝፠፟ቒጜጜጟጚጟ፞ዺፙ፝ጟጜፙ፟፞ዀቜጜፙፙኯጟ፟ዻጜቒዹዀ <u> इन्'र्वन् अन्यरेर'ग्र्र'र्इक्'वर</u>'नेवाग्र्र'र्इर'धुः'र्वासुदुःथः हरःधेनाःन्हेन्यःवहरःद्वाःव्हरःक्षेतःह्वाःन्वरःयःदेनाःवहेदः हरः *ज़*ᠵॱऄॺॱॸॆॣय़ॆॱॺ॔ॸॱॹॖॱ"ॸॖॾॖॏढ़ॱॾ॓ऺक़ॱॸॕॸॱॸॕॖॿॱॺऻॿ॓ॸॱॿॖक़ॱक़ॆॱख़ॿॱॸॆॸॱॱॱॱॱ ৾৾ৡঀ৾৽৸৾৾য়৾৽ৼৼ৾৽৸৾য়ৢ৾৾য়৽৻ঀৣ৾ড়ঀ৽ৠ৾ৼ৽ৠয়৸ড়ৼ৽ৠয়ঢ়ঢ়ৼ৽ঀৼ৽ **য়৽৽৽ बैर**:५च्चैब:हेल:दे:घेब:५८:खु:ठ:खु:बावेल:५श्रवा:कुवा:पविब:स्पर: स्वा: ख. २. १९५ . हे नया से नेया से प्राचीया में प्राचीय प्राचीया व्यापा व्यापा

रदः मुल त् देव मेन पद पदः चूदः वदे में अवकः ददः वसून हे য়৾৾ঀ৾৾৽য়৾৽য়ড়য়৽য়ড়৾য়ড়ৢ৾য়৽য়ড়য়য়৽ঀয়৽য়য়ৼ৽য়য়৽য়ঢ়৽য়য়৽৽৽৽ নপ্লু'ব্রিশ্ গ্রীঝা ক্লু 'না বাং ব্যাব্র হ্রেমার ক্রি ক্লি বার বাং ক্রমান জ্যান ক্রি ক্রিমার বাং ক্রমান জ্যান दाञ्चे तेत्र नदान् न न ति सं नेदा कु न न गु के न ता पर में न दि न दि सा য়ঌ৾৽ড়ৢঀ৾৻৸য়ৣ৾ঢ়৽ৼঢ়৽ড়ৢ৾৽৸য়৽য়ৢ৽য়ৼঢ়৽৻ড়ৢ৾ঀৢয়৽ড়ৢঢ়৽৻ঢ়ঢ়ঀ৽য়ৢ৽য়ঢ়৽৽৽ ऄॺॱॺॱॸॖॱॺॺॣॺॱॻॖॱॻॖॺॱय़ॱॸ॓ॸॱऄॺॱय़ऒ॔**ॸॱ**ख़ॕॸऻॗॱॱय़ढ़ॱऄ॓ढ़ॱढ़ऀॱॷॖॱज़ॱॱॱ **८८. विरासिबाया पया राजवा नया अच्ची. पश्ची राधी शाक्ची राज्या अच्ची** ढ़॔ॳॱॻऀ८.त्रे,कुॳ.गुैथ.४८.क्ष्बेश.८८.बेथल.स्टर्याचेर.बे.च.ज.सैची त्रै के दे भेव ग्रेया गृदं से द स्वया श्रेत ग्रेत प्रति ग्रेया समया है । पश्च र वृषातुमामरावे द्वरा यतुवा ह्रारा स्वा खंबा द्वरा ह्रा वृषा हरा मरावे """ र्यर ह हर द्वा द्या पर द्वा चे हिंदा रूरा ध्वा व्वा च्वा वी ग्व-शुदु-परुषाविर केव-पविदे प्रम्म इं धेव ह्रम्य म्य रेत् इर विर् तु^{*}र्राट-व-विद-क्रेव-वविदेश्यम् शुर-हेव-क्र्य-चेन-त्म्र्याय-व-न------वहरासुना न दर्शा ईया है। व्यदा सिन् र मन्त्रा द्वा ता विन रेता बार्कन् विस् केवानम् मेता सम्बन्ध सक् सता श्रुम् श्रुप होन् सन् न्यम् शि । । । ढ़॔ॺ॔ॱॻऀ८ॱॸॣ॔ऺॳॖॱॿऀॱ॔ॱ॔<u>४ॱ८८</u>ॱॴॶॿॶॴ बदःयाः चल्यान्याताः नेदः। त्रें ल'ब्रन्' पर्यायवत् यद्यव्यक्षा ग्री स्नि न वि वि व व व स्नि में न व र र र विराळेवामगान्दावायइ यानेवावेवामवातरायवेवाक्रान्दावाय **पः वैषः नेतृ वार्षः** प्रवादः प्रवेशः बायदः ह्वं दः केवः ग्रीकः वाशुप्तसः यः स्रनः वेन्

्रान्द्रतः भ्रेनः चेनः कुः **दे** - द्रंतः नद्रताद्यन् र त्युं रता धनः र वा चुत्र दः वैः दश्चिमाया दिवा देवा स्वारा स् **न्यरः ह्यं रः श्चे** त्ये **द्याया श्चेनः नृरः श्चेनः त्यं रः त्ये दः नृष्यः व्याया स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः** सुग्रात्याकी पहेदावया बेराने रा शुः द्रगः मे वे जुराद्रगः परेवया ग्रैल'ॅर्न्र्स्ल'स्रेन्'न्नर'दद्देव'म्हुब'र्झव'न्सव'र्नेव'नेल'स्याप्त्'' न्यं वः केवः विवाः वैवान् व्याः इवा वेवः विवादी देशे विवादी निर्मे विवादी विवाद नरुतः रून् ग्रीयाश्चना स्ते ने विनाया नया ने महिता अरवा के रायह नवाया नवैव कु:रेग्व न्वग्:बे:कुट:तु:८हट:हे:न्दग्:उटव:स्:हॅट:ठव:वॅन्: लामलना व जिस्क क्षेरायाम्ब लाइना न्द्रित हैन हैका देश हैन। हुन्य बर्द्धरतातृ 'यदे हा बर्दर प्राप्त केत् देत दे के र के र वे र व्यापता वर्षे नःवङ्कषः वृन्दिन् क्षे : क्षेत्रः कष्टि क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः कष्टि कष्टि क्षेत्रः कष्टि क <u>ୡୢ୕୶୷ୢୖୠୄୢ୕ୢୠୄ୵୳୕୶ଵୡ୵୵ୣ୕୶୵୵ଽୣୠୄ୵ୄୠୄ୶୕୶ୡ୵୵୳୷୷୵୷ୢ୷୷ୄ୲୕୕୳ୢୠୡ୳ୄ</u> **ॱ**न्यॅव-२ेग्य-५ग्य-१वय-ग्रेय-५७र-५-५व्य-५७-५व्य-५व्य-५७-५ ने⁻पहेब्ॱळॅग्-पःयतुःग्ॱश्रुवःयदेःधेन् :ळेराश्चेःपःयञ्चं राजः जुनःहेबः**ःःः** यक्तात्रे । व्राचित्र व्राचित्र व्याचित्र व्याचित्र व्याचित्र व्याचित्र व्याचित्र व्याचित्र व्याचित्र व्याचित्र न्नःमःमःभःवद्देनःवन् नेयायासन्निष्ठनःहैयागुरःवन्निः रदानेति-त्राम्,शुन्याळे हृदायान् मे विष्यंत् प्रयाने दे दि स्त्राम् क्रुंदा ... **३५.६**म.ब्र**ब**.कु.र्च,लब्य.य.ब्रब्च.कु.कुर.ल्ट.स.५८। ४८.५४.४८.

मुद्दः सदे ने न सद्भाग के दाय के द भुष्ट के दाय के के के दाय भुष्ट के दाय के दाय

ग्रर-र्न्चेद्र-वर-मेवायम्द्रित-प्रते-प्रतुर-प्रते-श्चित्-व्याप्य-पर-पर-*ढ़ेषःचःनेषः®वः*शे*न्ः*गलुन्योग्ययशःतनुषःन्नःसनुवःस्रवयःसःवदेःकः वयानवयातकराने न्दायेव वेष केवा गुरान्धरा श्रीना गृहरा वेषा ग्राद न्द्रेन हरायातृत सुरायाव्यायते मानवयायम् प्रविषाद्रा **२ देवः वैवः बर्केन् क्रेन् धनः प्रत्ये प्** (1906) མར་རྱ་ན་ར།ར་རྡོ་རྡེ་ང་བསྱུད་ད་མན་སྡོ་ན་བསུ་པན་རཚས་བསུ་ मृद्धेयाकेवाक्षायरायञ्चरावेदा। श्रीययाचेराकुयाळवार्ययाव्यति।याञ्चा पञ्चर'कुष'य#**व**'५८'| २ग्।२'ह्वॅब्'कुष'ग्**डॅष**'धदे'डु**र'**२ेग्ब'केर:ह्यु क्षे:रेग्राप्यामि वी कर राम्यास क्षार्थ है स्ट्रिया हु विवस है र्द्रिय पशु.प.र्म. ब्रे. ले**ब**्रं चप. क्रुयः लु या ग्रम. र क्रेब्र वमः ख्रं मयः क्रेब्र ख्रेन् म्बुर मे र्ये द रे गल दग्र देगा क्र लग् र त्र लग क्र लग र दे र हेल व र मे है र व रे मल श्री बर मे ता से नृष्ट् न लग्ना न्वा सुतु । सन् सि न्या स् । राज्य र र र र **४५-अव-७व-ग्रे-२यव-२ययाम् इ.५.४ यथा ग्रेथ-२श्चेय-५.४ य.५५**०० चर-दॅ'नङ्गॅर्-द्र-वॅर्-देग्वाकेकर-ल-व्ह्न-विक्-विक्-विक्-विक्---नहें र. न न विर कु क्षेत्र वा वि हे वे क्षेत्र हव खेब म र वा वा विव केव য়ৢ৾৾**ॱ**য়ৢৼৢয়৾ৼ৽য়৽ঀঢ়ঀৼঀ৽ড়৽ড়ৼ৽ড়ঀ৽য়৾৽য়ৢ৾ৼ৽৽ড়য়৽য়৽য়ৼৄ৾৽ঢ়ঢ়ঢ়

[्] ① (ला.चेंच्यार.चेंचा.चंद्यया.चंदी.≪व्र.चंदी.ञ्चा.चंदी.क्या.चंदा.अ च्चा.चंची.चंचा.चंच्या.चंद्यया.चंद्यया.चंदी.

न्चरःश्चेर्-वृद्धरः सदरः श्चं स्वाधिः वृद्धाः हैतः हैतः कु केदे तिरा भु 'न्यं व' दे गावा नृद्रा दे नृत्रे गावा का का का मिला का वा नित्रा वा नित् न्इरःश्रेन् न्वुरःनेवास्न्नु त्देवास्त्रः न्वरःकःश्रः नहवः वेनास्न्ःः क्रुंद्र-विरेश्चिद्र-वृत्तान्वर्रःयः वन् वन्नरः द्वर् व्हितायदः छेदः वन् वरः ः **दर्-ह्र्यः लबः नव्-म्छुत् : बर्-र्यम्यः न्यवः रव्-द्वतः छुतः चुर्-ः** त्यायहन् वियानहिरः चयः चुलाहे 'नलत्यायं रः हेनल' देव। स्वायाः के. यप्रायक्षाः कृष्टाः क्ष्याः युष्टाः प्रायः प्रायः प्रायः युष्टाः स्वयः । ঀৣ৾ঀ৻ৼ৾৻ঀৢ৾৾৻ৼৼ৻ঀ৾ঀঀ৻৾ঀ৻ঀৄ৾৻ঀৼয়৻ৼঀৣ৾৻ঀড়৻৻ঀ৾ৢঀ৻৻৻ঀৣ৾ঀ৻ৠ৻৻ঀ৾৻ঀৣ৾ৼ৻৻৻ लाज्ञुन:क्रुंत:कुंद:कुंद:ल्वा न्डिक:हेते:तव्नं:न्वव:क्रंत:देन्द्व:न्द्रंतः न्रॅल केर मार्टा रहातन्त्र के तिहार नर निहर में वाद हुल केर न्हें राया न्द्राकु भून वर्षात्र हैरा व ह्र व वर्षा हु व वर्षा व हे व क्रमा ह्वालेवामा मानवादमानी न्यवादमाना न्यवादमाना मानवादमाना निवासमा द्धराचेरामा वर्रित्वाला शेष्यराया प्रमान्तिमा गृहिरामा गुवार्चेरा शे ण्डम् प्राप्ता के प्रति के वार्ष्ण के प्रति के वार्ष्ण के प्रति के प्रति के प्रति के प्रति के प्रति के प्रति के यापरुषाक्षेत्रावेराव्यतान्वितान्नुवार्श्वनाने विष्यास्तराने व्यास्तरान्व गर्डे र् र्वेस परे दे तर्व स्वाति स्व नेर-१स नेवा केव मुर-१३८ ईन् नवुर-नेव नधु नर् वन् वन कर्म न्**वॅब**्रेन्ययः स्व्रायः विवायिक्षाये विवायव्यान् स्वरः केषा कन् व्यक्षात्रा स्वरः नग्रायम केद्रा नग्राम् देश वृत्र में द्राया केव्यं या नग्रायम सरा ग्रदः र्वेत् वर मैकाञ्चन प्रधेत विनादक सुता परि त विना पर्वे द्वारा ।

देवे वद वंद क्रू द्वाद व देवाया की क्षु देवा दवा पर्या वंद ने नाया के रोरायाबद्राम्डिन्प्रा प्रमार्थेन्य कृषात्र सम्याधारा प्राप्ता प्राप्ता प्रमार है है र म इय दर्ग मय विर वि के द म भरत निर वि से व सि से व सि से व न्दा शुरावदा वे बेराशी व्यवादी करासदी রিথ.মার্। वृत् के.यर.परुवानव्यानव्यानव्यानव्यानव्यानव्यानव्यान्यं में विषयात्या श्रुपाने के के स्वार्थित मह्य प्रह्मा म्या विश्वराम्हर व्याम छेर रम्या इत किंदा म्या र्चेर-न्द्राच्यावयायर मविरामी त्या नव्या प्रिराधी स्वापाय स्व रु:पञ्चर्यार्झमान्द्रान्द्रयाववार्साच्चेन्।न्मिया ग्राद्राग्यवारीदान्द्रायास्वर ৡ.৸ৡ৶.৴ঽঽ৾৾৻ৡ৴৻৸য়৻ঀঢ়৽৴ৼ৸৻৸য়৻ঀৢ৴৻ৼ৸৾৴৸৶৻ ਫ਼੶[ੵ]ਸ਼ਫ਼੶ਸ਼ਫ਼ੑਜ਼੶_ੵਫ਼ੑੑਜ਼੶ਜ਼ਲ਼ਜ਼ਫ਼ੑਜ਼੶ਜ਼ਜ਼੶ਸ਼੶ਫ਼ੑਜ਼੶੶ र्म्या यल हिर् प्रयास्ताविदालया अधिर देवाया हुर के वि त्या हेत कर्र्यार्थं मुळेर्र्र्य्वा मुखुदु वर् वे बुलाय बेर् केर हें स्त्र म. बुर्गे. लुवे. केंचया जया प्रचे बेंचे मानव्या र जाना वा व्या वा विष्य नपु.कुथ.मू.स्याळ्ट्रनथा.मूब्रायाचारायाव्याच्चरानहराम् वाचे क्वानु য়ৢ৴৾য়৾ঀ৾৾৾ঀয়য়৾ঢ়৾৾ঀয়য়৽ঀ৾৾ৼ৾৾৾ৼ৾৽৻ড়৾৾৴য়ৢ৾৽য়ৢ৾ঀ৾৽ঀৡঀ৾৽য়৾৽ৼ৾৽য়৾৾ৼৼ৾য়ৼ৽ঢ়৾৾য় बर नैया स्र प्रवेद द्व कि की हैं द्या विष्य कर महर धेद ध्या है ... म्वराद्धंयाहे स्प्राप्त मुरातु वि स्पापत त्यार में रा कि र में रा में नग्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क नहरः ह्रनः विमः महरः ग्रीयः विश्वयः गुर्हेर् छिन् र मृत्या " 🛈 विश्वयहरः

भेषाहित्यान्तान् निवन श्रीतान्य हित्या। हाई स्याहित्या।

भेषाहित्यान्तान् निवन श्रीतान्य हित्या हित्या।

स्वर् श्रीतान्तान् निवन श्रीतान् निवास हित्या हित्या।

स्वर् श्रीतान्तान् निवास हित्या हित्या हित्या हित्या।

स्वर् श्रीता हित्या श्रीता हित्या हित्या हित्या।

स्वर् श्रीता हित्या श्रीता हित्या हित्या।

स्वर् श्रीता हित्या हित्या हित्या हित्या।

स्वर् श्रीता हित्या हित्या हित्या हित्या।

स्वर् श्रीता हित्या हित्या।

स्वर् श्रीता हित्या।

इं र हो र प्या विस्या व हो अ व हा या नहें र स्या प्या विस्या नहें हिंद व्यवाहित्य। श्रुवान्द्रवाव्यवित्या व्यव्यव्यवाहित्या カ数イ. चेलट. के ब. कू चे. जथा विट्या च क्या जया विट्या कु. चेया विची र्यं चेया. हे स्व द्वं व क्रे प्रोयान न्रायम्ब बुवा महवार नेनवा म्याया व रा चबर्ना या वर्गाता हुव चार्य स्ट्रिंग चित्र पत्रिया निष्ना प्रयाष्ट्रिया न्दान्त्र क्रिं स्था विद्या क्री तन्त्र तिरा हु ... विरयः नरः तर्गुत्रः तर्गुत्रः वर्गुत्रः वर्गः त्यतः वर्गः चरुतः तथा तथा विरुवः निया याद्या अत्या विरुव्यः विरुद्धाः विरुद्धाः विरुद्धाः विरुद्धाः विरुद्धाः विरुद्धाः वि बाञ्च प्रचर वर्षे व त्याय ग्रीया वें राञ्ची र त्या विरया रहा। व्रावा देवा त्या विरया न्यूराचलरा देवा हूना तथाविरया नक्या तथा विरया निर्मा निर्धिया ग्री'दगव'दष्टिर'श्री ग्वव'यद'र्'रुट'र्स'वय'यय'ष्टिर्य'ग्री'श्री' वित.पृ.सु.दु.दु.दहेवाया अंतः इया कुता नृतः। सुतः कुतः क्वा इया कुलाक्षे पन्त्रवा विकासमाया था कुरायरा संरचा । तराक्षेत् सुत ळ्यायान्ता स्वाप्तायायाया निया में हो हेव संख्या नेवा सुन कुल या वर्र् र रचल रे र व अल वंबर लंब हुवा हे व बेर ले नेव विन न्युदे वर वयायय हिरया विन नहेना ने वया वर्षे । हुनया स्वा र्थे.वंशाचवाविर्यार्टा। ह.क्.जवाविरयाश्चीयातर्श्वीयातान्या *षा* ५ वर्षःश्चेर् ग्वतः वी कॅरशेर प्रवार वर्षः यवायः केवायः व्हरः हे · · · · · 1959 শ্ব-দ্ব-স্থা-অপ্তর্-শ্বক শ্ব-দা-ইব্

ग्रह्- भुद्धे ब.सर. बीबार्- १**८८. «सम्बन्धः स्वा**नश्चनः च ने ने ने ते हैं निष्यः »र्टः "इरः क्ष्यः भ्रम्बान्द्रवः" वेषः पदेः नेवः खटः नवेषः दर्ः ल्या.ज.पश्चिर.पे.य. ग्रयाविया.ज.पग्रेश्या.श्रयाच्या.पर्र. प्राप्ताविय.पि. क्रयाम्बरमञ्जूना चुः बे्बायम् मृत्याम् । येना ने मिन्ने व्याप्त स्वराम्याम् । विवासी स्वराम्याम् । विवासी स्वराम न्द्रेत्वराचेत्र" धःतुःचरायायद्वे तुराव्यन्यः"न्रा "कुयाञ्चेत्रपरः मः इतः वरेवः वर्षः व। " "इः श्वाः वरः मः छर् ः धरः वरः व।" "क्षेः भेः इयः इ. श्रेयः वटः रे. श्रेचः रम्याना " "व्रेयः सः प्रः परे वः पक्रेरः प्रवः रेयः मु:धेनःश्चं न: न्मॅलःय।" "गुःयः ळेलः क्षेत्रः सं । वः तर्ने तः ग्वेन् वेः न्मॅलः यरः ॅब्र-५. ब्वेट-पर्च-क्रट-महाबाची यात्र-देग्या महोत्र-व्याचु-द्वेत्र-होयः...... न्मॅलम्यायतावी गृत्व गुरे ही वासरारे मानर्स्यावता नस्नावी स्वा <u> ल्रम्यात्र म् र क्ष्यायम् क्यायम् व व्याप्त र ग्री श्राया मृत्राया व विषाया व</u> न्दानवर्यायदे ततु नेवायायस्य निन् ग्रीवानश्चरायस्य वासेन् न्वेवायस्य पर्ने न हैं व पर ने न ने प्रति व ग्राम न के व व प्रता की व भी न न न म ਫ਼ੑਖ਼੶ਸ਼ਫ਼੶ਖ਼ਜ਼ੑਫ਼੶<u>੶</u>੶ਫ਼ਖ਼੶ਸ਼੶ਖ਼੶ਖ਼ਫ਼੶ਫ਼ੑ੶ਫ਼ੵ੶ਸ਼ਖ਼੶ਫ਼ੵ੶ਫ਼੶ਖ਼੶ਜ਼ੑਫ਼*ਜ਼੶*ਫ਼ੑਖ਼੶੶੶੶੶ मृत्रानी,र्नरक्तां प्रस्याश्चर्यम् मृत्रे, स्र्राक्षर्ययम् मृत्रे रा न्ता "व्याप्त का देवाया ठवातु क्षुत्र क्षा" "ह्या स्वाया की छेन्। क्षेत्रामस्वानित्राधियाचे महिम्याचीत्राया"मरुयाधी महित्रास्याने निम् मार्चर् ग्री केर श्रु र्वेव रेग्ल र्रा वेर्यस्य ग्रीय व्याय व्याय वि गुर-५५-ग्री बर्धे देवा वे स्वी संग्वी वि वद्-५८-० व्यापाय वि व्यवस्या

स्त्रात्रक्षेत्

क्षे.चीय.क्षेप्राच्यां व्याप्तां व्

न्त्राक्ष्यात् विकास्त्रात् वि

7. 凌'在元'祖'弘'弘'古'古孝子'西'諸'弘明'라'의 冀江'贞'帝'라'] 5'弘日君'日'「「「「「」」「'唐'君'라'帝「'5'弘日君'] 冀江'贞'帝''] 「「古田田'日弘丁'「古西' 古元' 滅土」

रमः वैदः पट्टः सः पर्षः वैदः पत्रुवाः (1904) यदः व्राः विवासदे व्याः म्बु मृत्रेषा केवान् केवान् वर्षा स्वर्षा स्वर्षा स्वर्षा द्वर मेवा है । स्विन् च्या मद्गायद्यायद्यान्यान्यान्यायाः अवारहः शुराञ्चनवा चयानीः हे त्यायानु स्थितवा कृतसः तग्व तः ह्र सः सः न्दः। ग्व व तः से रः द ख्यः द ग्वः ग्रु सः ग्र त्रुकाबी तेरः भुः न्यं कः रेमका रमारः मृतः मृका सम्वास्तः स्तः नेः हू 'यदे न्न 'या यहँ वा रे 'देवा म्याया विषय यह र व रे वो यह व 'के 'खेवा या क्रॅन:न्वेतर:क्रुव:क्रॅव:य:क्रेन। ०कॅट:ल:बळॅन कॅर:तु:ब्रेट:_|व:वल:हे: **४**. च**८. री. नुप्यः प्र्य**ाक्र्यः प**र्वः** यश्चितः प्रतः प्रत मुला वह व हे 'सं सद न् ने व हर है 'सं द र र कि द व र व ल गर गदव ल बह्र-दे. "र्डेब्रह्रे पद्वे पह्रिया द्राया या प्राप्त विदान वर्ष हा ৡ৽**ঢ়৴৽ঀ৾৾৾য়ৢয়৽ৢ৽৾ঀ৽ঢ়৾৾৾ঀ৽য়৾৻ঀ৽৸**৾৾ঀ৽ৼঢ়ৢ৽ড়ঢ়৽য়য়ৢঢ়৽ঢ়ৢঢ়৽ঢ়ঢ়৽৽৽ भेकामा हुराह्मकर द्वाप्तुरावी तर्वे वा शुरावधाया तरी प्रशेषा है । अहा बेर्-चूर-व-कृर-द्वन् यद्य-स्-हुर-बॅर-ब-ळेव्-वॅ-बळॅन-य-दुवेद----**ᡶ**ᠬᡸᢩᠵᡊᡊᢋᢆ᠗ᡊᢎᠸᡸᠬᠴᡠᢋ᠊ᠬᡩᡊ᠑ᠩ᠆ᠵᡳ᠍ᢖ᠆᠒ᡭᢋ᠂᠘ᠵᢩᡴ मन्त्रव देवारा भुवता ५६ व देश धर- कुत गुर- कुव ५ द्वार देश दे वता भुर- व न्दर्भवर वर्ष्या अवर्ष्य वर्षा ग्राम्य वर्षा वर्षा वर्षा ग्राम्य वर्षा वर् इ.र्यार.इ.६व.ग्री.थ.पवान.इर.पब्.िवन.प.रट.पक्ष्वया.ग्रीय.रेर्डेव..

हि त्यं व शुर केर प्रवि व र सुर र अव स्थय है र त्वे व र वे वा परि मग्रातान्त्रमान्य वर्षात्रकात् के देवे देवे तर्षे त्याया इयाया क्षायर तर्षे रः वेर-५-५५-५४ व्यावनिर-४५-२३५-५२-२१ सुर-वस्त्-वाक्ष्य-वस्त्र क्रमःश्चिन्यात्स्रवास्त्रम् निर्मेत्रेष्टः व्याद्रः स्वादः श्चित्रः स्वादः श्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः दहेब.र्इ.५३<u>४५.भी.स्थानीतम्</u>ये तम् য়ৢয়৾য়ৼয়ৼ^{৻৻ৼৢ}য়ৼড়ৢ৾৽৻ৼয়৾য়য়য়য়**ৼ**৾ৼ৾৾৾ঢ়৽৸ৼৢ৾ৼ৸ড়ৢঢ়ড়ঢ়য়ৢ৾ৼৠঢ়৽৽৽৽ धित व देते पर पहन श्रीद श्री पन व पहिर सर्द र में द सद हा हु या हमामी वरावया हिन्दिन स्वाद्याय के मा बेन मेनेया । वन्तिह्न द्धवायार हेवा स्ट्वा स्ट्वा अवयाय देन हेट स्वया ग्री में काम वेया हे खेन श्चिरः में श्वमल तन्त्रं श्चिर्यः नृष्यं यः "लेयः नम्त धनः धन्रः स्वयः हेनः " अरः रश्चरा भी रशेर्म्स अर्थेर में दूर ने दर दिरा दे प्रदेव प्रमायः भागा न्दा इदाहेला इदादेन्या स्टाह्म प्रकार माहिता है नि विगय तह्र न न स्व वि स व स म व स म व स म न स स म न स स म न स स म न स स म न स स म न स स म न स स म न स स म न स स त्यः श्चवः मदेः इत्वान्यवा श्वनः मान्यन् वित्रान्य वित्रान्य वित्रान्य वित्रान्य वित्रान्य वित्रान्य वित्रान्य लट लट बह्री नु.चय.क्र्य. 12 वेच.क्री.चय.क्री.क्रि.क्रु.द्र.ख्र.क्र.क्र. ष्ट्रमणः ग्रेयः क्रेमयः |वःमञ्चरः विदः | 🔑 ५:५६: तेरः वरः वश्वरः नवावः वश्वरः 🗗 <u> स्ट्रिस्य, स्वान्त्र, स्वान्त्र, विष्यं, सन्ध्रम्य, श्वान्त्र, श्वान्त्र, श्वान्त्र, स्वान्त्र, स्वान्त्र, स</u> प्रिन् गवर वहर्। ने वल देश प्रवेत क्षे राते हर देश क्षे प्रवेत हे

त्यायात्रीत्त्वात्त्रेत्त्वात्तर्त्त्वात्त्रेत्त्वात्त्रेत्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व व्याव्यात्त्रः व्याव्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्याव्यात्त्रः व्याव्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्याव्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्याव्यात्त्रः व्याव्याव्यात्त्रः व्याव्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्यः व्याव्यात्त्यः व्याव्यात्त्यः व्याव्यात्यः व्याव्यात्त्यः व्याव्यात्त्यः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्यः व्याव्यात्त्रः व्याव्यात्त्यः व्याव्यात्त्यः व्याव्याव्यात्यः व्याव्यात्यः व्याव्यात्यः व्याव्यायः व्यावयः व्यावयः व्यावयः व्यावयः व्यावयः व्यावयः व्याव

दे द्वास्वास्यास्य द्वात्वा के द्वाया तु विषया स्वास्य स्वास्य बुलार्झनाम्बेशस्ट्ररानुन्द्रराषा रेशानबिन्दान्तिः क्रेनला मक्ष. रट. मुचयालया विवाया वाहा. श्वायाय प्रताया न र वाटा खेला हु या नह रकुर्-वेद-दः श्वेर-र्नेद-ध-दश्केरयाव-पश्चर-हे-तर्य-न्वर-र्रः-----म्यदःम्बुदःर्वम्यःवज्ञुन्देवःवविदःम् छेदःयदेःज्ञुवःवदःन्युवःतुः वर्षाकु वर्षायहर्षे र में द्वारी र याया वह वर है यह सामा है से याया है से वर्षा है से वर्र वयायेनयान्तु-न्दान्द्रेद्र-म् नुराव्याः हेष्-न्दान्यान्त्रान्दा। दे नविवाञ्चन विराञ्च स्वापाञ्च स्वापाञ्च त्राप्त होता स्वापाञ्च त्राप्त स्वापाञ्च स्वापाञ स्वापाञ्च स्वापाञ स्वापाञ स्वापाञ्च स्वापाञ्च स्वापाञ स्वापाञ्च स्वापाञ स्वापाञ स्वापाञ्च स्वापाञ्च स्वापाञ स् न्वतः कुरालुराम द्युराम् वे राम्ने राम्ने पार्मे ना विताने दे राजे राम्नु वाराम् व क्र.रंगर.ध्याय.बह्री क्र्य.क्रेर.चम्रेर.क्रेय.व्या.क्र.वया विनलाई गार्व हो के नित्व मदि के ला मख्य हेव नित्र ता नकुर ने ब्रेन्यःश्रेन्यःश्रः देवे, ज्वान्त्रः हवान्यः वयः विवान्ध्यः द्वान्त्र्यः । अर्'ग्रन्य क्र'क्र'क्रे नका श्रु पंकर इंबय ८ हिन्य इर रच हु हु या है.. रे निग छर परेव वर्ष र व वे ग्राय ने या गरी र व्रव क्षेत्र वर के पर के पर

सक्ष्मं मेश्वर म्यवर प्रवेश स्थान म्यवर ।

स्मानी स्वर मेश्वर प्रवेश स्थान स्

ने न्या त्रा महत्र प्रते छे या पर्के प्रतु न् के ता यह र हे वा व्हर् य त्या म्बर्-हु-वेनलान्न्नित्रान्वि-व्यार्ग्निम् वित्रान्ति स्वान्तेवाया **ग्रैॱन्हॅंॱॸ्न**ॱह्रबर्शःग्रे**रा**पद्वॅगःयःबैःशेनःह्रबरापदिन् ने वेनराःव्युदेः बह्यासुना तु र र र र हें न धुल हें न बहर र दें खुला दे र बहर र र रे र र र र र र मु । खुल के : कंद : काद : क्षेत्र : कष्ट : क्षेत्र : क्षेत्र : क्षेत्र : क्षेत्र : क्षेत्र : कष्ट : कष्ट : कष्ट : कष्ट : क्षेत्र : कष्ट : कष् विकादन् पर्दे हुं मृत्रा रक्षेत्र रसुन विचया हें मः र विचया वुका दिरा। त्त्र-प्रकृत्र-सदी:त्त्र-कार्ड्या-हु-हू-सदी:त्त्र-अस्त्र-स्त्र-अक्तायः गावः स्त्री खु**ु** (बूर-क्रेब-प्रदय-ठू-तुं-बेय-पदै-य-ग्व,य-ग्वु-र-क्रे-य्ने-मु-बेनया तः न्तु भिर्ते के सम्पर्क मन्तु न् केवा छे स्यापि न्यस्य मृत्र क्रुप परे श्लेटा प न्मॅं द नी ना या या दे दें के दे के दें के द नम्बान्ति । स्वानान् में यानि यास्या वास्या के या स्वानान वास्या वास्या वि ॿॖऀज़ॱऄॖॿॹॱॻॖऀॱऄॱॱॸॸॸॱॹ॔ॿज़ॱॿढ़ॸॱॸॱॸ॔ॸॱऻॿॶॸॱॸ॔ॿॕढ़ॱॸज़ॺॱॕढ़ढ़ॱ **ब्रुंगः यदे** ब्रीटः वे क्रेंबर-देन: न्यः परुदे क्रेंब्या वर्षे वृत्त्रः वृत्रः व्या स्तरः नर्गेत्। दे वयान्वव तर्दे दे यु बर खर्या या बर ह श त्ये द यह

ख्यामा इसका मुक्का प्रते का सह न्। ब्रामा स्वका मुक्का प्रते का प्रते का स्वका प्रता का स्वका का स्वका प्रता का स्वका प्रता का स्वका प्रता का स्वका प्रता का स्वका का स्वका प्रता का स्वका प्रता का स्वका का स्वका

म्यर-री.वियायपुर-री.वी.या.की.पथिवायाक्षेत्र-री.क्षेत्रक्षायाक्षेत्र-री.वियायाक्षेत्रक्षायाक्षेत्र-री.वियायाक्षेत्र

इ.रथ. धे.र्यं श्राचाला ह्रालच्यायुर्यं श्री.र्टा चेंथ्ला घटा ता ची.क्ट. विचा-ची-प्या-क्रे-प्रचाया-क्रा-ची-प्य-ची-प्या-ची-प्य-ची-प् बह्यान्त्राध्या ने वया त्राच्या वर्षा वर्षा हे त्र हे त्र हे त्र वा वे हे यवता ग्रॅंट हिर दु हि र य र तु खेरवा अपवा क्रेव में ट या क्रेव ये दे र यो प्रयाना *ढ़्*रःश्चःश्चरःतुःद्वःषुःरतःतुःषेदःसदैःन्दाः स्वदेःन्द्रमा १ सुरः ने विष्ठेदः । । । रदः स्वायः द्रदयः वया श्रुदेः श्रुदः च 'ब्या वेषयः यया वया वया व्याप्ता व र्वरः ब्रेट्या पञ्जी नया हे ' ह ' द्रारं र्वाया ' वृद्दा द्रारं कु ' श्रीदा पह हा। र्यम् से पन्तु : सम् तु : यया तु : पञ्ची मया बुया दि : बिया श्वेया ग्री : से राज्य : स्र ह्य म्य द्र स्टान र्रा र्रा की क्रिक् न्रा के खेन्या प्रचार प्रकासी प्रवास के क्रिक्स प्रधी की प्रवास की क्रिक्स प्रधी की क्रिक्स न्त्रां सु प्रति हा या श्रु प्रति र न्दा पठका विया वि कुया दिया प्रवेश से पर ङ्केन्'लु*रा:पदि:न्म्'द:स्व-*न्ने'सॅन्'नलुन्यःप्ति'**केद-सॅ**न्'व्ययःसॅन्'*द्*दिन्'' बाह्मालबानवान्। हेन्द्रवान्यामा द्वाष्ट्रात्रान्मवाळेवाणुःगुः *हेवः* न्युयः रॉग्याः २ यः नविवः सुयः नयः नग्रेयः नवेयः ग्वरः ।

न् म् त्राक्ष्याम् त्राक्ष्याम् त्राक्ष्याम् व्याप्त्राक्ष्याम् व्याप्त्राक्ष्याम् व्याप्त्राक्ष्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्याः व्याप्त्राचः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्याः व्याप्त्याः व्याप्त्याः

দু কের-শ্র অত্মৰ ক্রি ক্রান্ট বে প্রবিশ্ব স্থান করে বি वेनमःहिषान्वराखन्यः क्र्रें राखंदा व्यवाधिनः देता विनायः विनायः यहनाः श्रमणाम्बद्धाः स्थाने भेषायः सामान्याः अन्याः अ য়ৢঀ৾৻৸ঀঀ৻৽ঀ৾য়৽ড়ৢৼ৽৵ড়৾ৼ৽য়৽য়ঌ৾ঀ৽৾৻ঢ়৽য়ৢৼ৽ড়৾৾ঀ৽ড়৾ঀ৽য়ৼ৾ঀ৽৽৽ न्म्यान्तरः ने न वदः ठवान हें व विदा हू यदि हा या शुः होरान हु गहुवा या केव यंते स्वाधन दें वर्कन सेर यन त्रिन्य विवया व तृ यते ञ्च या रे या व्रें व र्रा गुर्भव र्ह्धव मार्श्वय द्वित वर र्मा सदे गवका वि व धिव गिर्मे श श्रम्य इ.डी पर्वे वया सर्वे प्राम्ति । स्वे वया मिन स्वाया निर्माति । वि बक्रव-न्हेन्-चु-न्, तुं-चु-न्नि- धर-पद-बक्रवर-हन्य-त्तुय-न्वद-ग्रे.ब्र्यारा प्रकेशान्य स्वावा म्राम्बाका प्रामिष्य वर्गारा प्रविता प्रामिष्य वर्गा प्रविता वर्गा प्रविता वर् बेब्र्ट.शु.रवाव.त.बर्स्ट.श्रटा किंपानुष्ठःश्चे.स्.बक्र्म.रवाव.वावत.र्था.

ঀ৾য়৽ঢ়ৢ৾৾৽৸৾৾য়৾৾ৢয়৾৽য়৾৾ড়৾ঀ৾৽য়৾৾৽য়৾৽ঢ়ৢ৾ৼ৽য়৾ড়<u>৽ঢ়ৼ৽ঢ়য়৽ঢ়ৼ৽</u>ৢ৾ मरामी अर्द् र ति हेव रूर अर्ड व द्वाया निर्मा व के निर्मा के निर्मा के षिः हे. पर्श्वर र्वा सा विवाया वा र र या सरा ने पा प्रश्नुर प्रते हैं सा सा है र . . . हे दु बदे हा य यकेंग में नल्गा हि नमिग ्हें र न्द सु बहु **व ह**्दर चः वर्षा-तद्येष-सः श्रृष्या-तह्या-हेष-अ-रनयः मदेः **रटः द्धं**यः नद्येष-स्रेनयः । वियावि मुलाविन पति द्रा हे पर्दुव द्याधि विषय गुला स्थल वर्षा म्राया अक्रुवारा नियाने वार्षा स्थानिया स्थानिया वियाने ते नियाने वार्षा मल.कुर.कुथारडील.बूच नधुःश्चिम.बर ध्रा.कैच्या.बे.चचेबा.चक्षे.... मलुग्राप्तस्याप्तले राग्री में व श्चेषा मझ्या मिना मलिया छेरा ७ हेवा हू । यदे ञ्च या बळें वा न्वादा स्वासे वा केवा श्री मा वी मा विकास पस्तामुलायना सःशु न्दा वावनाया के क्रा खना यस्ता में मदे विनया तम्रीमानवि नयु क्षेत्र नरुया ग्रीया हे व म्युया नमा द्युरःग्रीःदर्गलानःग्राम्बनाःस्याः नेःहेराः√रःव्नान्नेःमःन्नात्राः नग्र-रन्द्र-पञ्चल-पः र्त्र-पङ्गव श्री-रायवानित सर्-पः मुः केर श्रीयः <u>विरा</u> ४व् ग्रुरः क्र वार्ने राक्षेत्र ग्रुरः न् इरः श्रेनः न् वुरः ग्रेवा हुः यदे श्लः या बाक्ष्या नार क्षेत्र स्त्र हिन्द्र स्वा खेतवा न्वेवा परि प्याव स्वाधान्ति। मुक्तान्तरमुन्यस्व विष्यान्यस्य विष्यान्तरम्य न्द्रवार्श्वित्नेवाण्यत् सुरक्षान्त्रेवाण्याः स्ट्रान्ता E WY भ्र.च अर. देव श्रीचा श्र.घर. श्रुचः वाह्ने रे.चा च च च च च च च च च च च

न्न्त्रक्ष्यक्षिर्धि स्वर्षात्री हे इया कुल वृष्ट मी मा नग निय-**झुन:दंदे: तहुल:बी मन:प:बी:न्सु: नठल:ध्रे:**रॉम:वी:यॅ**र:**ध्रिन:प्रेन: र्नु । वु : न्या वु वु र : दें दर्या या निक्या में दा निवास विका है । द्या बीयाक्केब्र-पया २ ब्रॅंट-या ब्रळ्च वा व्या इं ट्रि. ये प्राया व्यय हो या व्यवस्य 1906 ইন্:রা:দ্:মির:স্ত্রা:শ্রীকামের ঈকামন্ত্র:নৃস্তু:ব্রি:শ্রম:নৃত্রীকাহ্রম: नैयार्चे दास्य राष्ट्र व त्यापित व दार विदार देव "कु नि राष्ट्र अया र सन् द्रातुरानीयाक्र्या. मुना स्वाया पूर्वा त्राया प्राया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया न्दर्भः नेदेश्चर्ष्य राक्षः र्ष्ट्रेवः हरायायवः श्रुं न वनतः वर्षर् छेतः मृतः ग्रै-८तुम न्ध्र-प्रिय-न्ध्रव-नेम्यान्त्व-ग्रीयास्न-मर्छन्-ग्रुयाध्य-मिल्मया <u>ব.য়.৾৴৴য়৴৻৸ড়৸ৢ৸য়য়৴ঢ়৴৻ঀ৾৻৽য়৾৻য়৸য়৸য়৸ঀ৸য়৾৻ঀ৾৻ৡ৻৸য়</u> ठेल: वृॅं - जुं - दर्ज व्याक्ष्य: ने - देनका वा नक्षय वा न्र्जे वा हे ला वॅ**न्-तुः** न्स्र क्रिन् क्रेन् मिन क्रिया रोबाया हे व ने पाया हे व ने मिले व हि केन मिले नै'तर्नुग'रवात्व्वग'क्केव् ब्लॅंट'रेग्वावी भेंट'रा क्वेन् केन् द्व 'यदे न्न आ''' न्नि र्रेट्य व्याप्त न्या स्ट्रिंग स्याय नव्द स्न्य "व्याद्वा भ्रमतान्त्र-अन्त्र-तावळ्ना-५ .वि. रताव्याक्रमतावा पश्चराने त्यायरः .. त्तरार्दे र विनयः श्रेनवा श्रेनः श्रे श्रे अटा म्प्रें या व्या नवा नवा नवा नवा नवा

श्रीट्राची, उड़ी पालूट्री, स्वा. खूब, कुब, प्रचा. ट्राची, उड़ी पालूट्री, स्वा. खूब, कुब, प्रचा. प्रचा. विव. खुब, खुब, प्रचा. या. विव. खुब, या. विव. या. विव.

र्सं राम भू मुं सं यारा है। नवमा नहीं मार्स म्या मार्स प्रहा मही नया परि ৾৴ঀৢয়৻য়ৢ৽ঢ়ৢ৽য়ঽ৽য়ৢ৽য়৽য়৾ড়য়৽য়৸য়৽য়ৢয়য়৽য়৲৽য়ৼ৽ঢ়ঀৢয়ৢয়৽য়য়৽ विषयः क्रेन्यः क्रमः न्दः पठवः कृतः येः क्षेः न् क्षेत्रः ये नः येनः विन्तः न्त्रः वि वयायहर्षात्सर् गवर कु धेव उरा वेर य र य र सुधा के वे विदे रुषातृ .यदे न्त्रा बराबह्या यस् राज्य राज्ञ राज्य मुणानगुरालु खन्या क्रीरा बहरकेषा 20 वेदाबहला रह्मरान्दर कु मृत्र दिला वर्षर रे रे ७ ब्रूट्-यः ब्रङ्ग्ना स्वयाः विषयः शुः-पर्वे बयः स्वा-क्ष्ययः विषयः क्ष्ययः स्वाः... र्दः २७वा त्या न प्रवासी वित्र द्यम् विदे र मुना र्दः। বস্থীঝ:র্ডাব্ र्च्न, देवाया विक र्र. क्व. क्वे. च्र. बर. च्र. पठवा क्वे. जाया क्रेर. र्विया थी. इ्रेंब.धे.स्.संट.संट.सं.विब.धेय.संद.चेय.क्रेंबेय.क्रे.क्य.स्रेंप्ट.संद.पंत्री.क्य.संद्र.पंत्री.सं वेन्त्रात्स्यावेनता इ**वरायता** यत्त्राम् देवाहुत ह्वावे वे स्टा थुक्र हैं दि हते हु वेदल मलु वृत्य हैं व थुक्र कद हैं विद न्दा है र्रागल वे द्रग न्यं व देगल से नकु र व गुरा ह्य र नव न्या है ल पिर्म्सुण वरः नवः के.यः वया वेतरा द्वेष्टियः वेदः। वद्यरः सुर्यः विवयः लु.न.ब्रेंग-न्म। विनयः पद्येदः पद्यवाश्चरवा पर्यापः क्रिंग-न्यवा मे डिन र्यः दूरम र्म रमस्मि यहिन। श्रुपठर गुन् श्रीस सं राम व्यवस्य वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर वर्षा व बर्केन् न्यं वृद्धि पत्र स्त् तेन । बर्क वृत्व वर्षा बाव विके क्षे स्तर स्त्र न्मराप्रकामाध्याळे वि वदे दुरावह वादस्न म्वराविरा हु खेरे

न्न'वा बळें ना नेता अर्ने दा खदे धुवा ता खना हे वा नु हे वा परि हा पह वा दर् बह्यान्तरतियानवर्षां वर्षाः डेर.य. वैन'र्र. बर्यार्र. दे बेर् ह्यू या वेन्य विना वस्या निवा वर्षा रे.चलेबाथाबर्ध्यार्ध्यार्ध्यात्वर्ध्यात्वर्ध्याः पर्देष्टाच्यापः मदरारेषामदरा दे दवातृ यदे हा या दरा हु पर रायापदा मा विवत चिश्वर.घ.चर्याताश्रवरावयावहतातस्र च्वर নহাদ্যন্ত্রী **इ**ंबा-धवःद्धंदःरग्वःसंयःबहंद्ःरुटः। तृःबदेःन्नःवःव**र्ड**गः**गैराः** २बॅद्रायामॅद्राल् र्द्रायु या ळे वि विते श्रु वळॅवा ता उँ द्रायी चु ना क्र**रा** म्यात्व द्राके न्या त्या म् व स्वत्र न्या म् र न्या व्या व्या व्या व्या न्या व्या न्या व्या व्या व्या व्या व्या लु दर्वे पाळे क्या कु तर्वे रायवे कि कर के निया क्षर छे व त्यव दें व निय **ଌ**ॱৼয়য়৾৾৽ঽ৾৻৴ঢ়ঀৢ৾৾ঀয়৾৻ড়য়৾৽ঢ়৾৾ঀ৾৽ঢ়য়ৣ৾৾৾ঢ়৾৾৽য়৾৽৴ঢ়৾৾৻ৼয়৾৽৽ **ळेव**ॱधॅरः बर् गारः मृतेरः श्रृवः श्रॅवः वः ळॅवः ्यः श्रेः ळॅव देः क्षरः गुरुष्तः <mark>व</mark> **कु***वॅर्-मृद्रेल:ग्रु-बहुद-यय:र्य:यं-र्ट-धुर-व:हुर-दर्वेषल:ग्रुल:वॅर्न्**ग्रु ल.क.श्रुट**ंश्रुट:ग्रेन्:श्रुट:४व:ईन्य:ऑट:देश:देन:ठेत:बुक:ग्रेट:। देवै: वर्षा अपरार्दे रा : ग्रीमा अवागी । यव ग्रामा सामा विषय है है लांकि न्वार्षवानेवायदे त्या विद्या ग्रीयातू त्यते ज्ञा या बळवा ता येवा ह्या व्यवः नद्र में सुयानर "कॅटा बरी नगाय नहीं वातृ वारी मुख्या मुया सुवा मुद्रा । वते कुते तहु दल भूर वन मुग्यत्तु द केव यं लुग्यया यद्ना मुव्या ग चेबर.प्य.चेरा चूर.री.ब्रेस.ब्रच्या ह्या.य.चा.च्यु.चेलावन.ग्री.व्रियया ब्रॅल'ल'नई'ब्रुट'ब्र्स'लकाव्दान्दाके'चान्चेन्'मदी'रे'चार्वेन् **ढं ८**ॱअॱबॅं८ॱबरॱबर्'ग्रर'ग्रेर'ब्रुद्' अ'ङ्क्ष्र्द्र'यर'वॅर्'प्रव्यक्ताख्या प्रद

मकुर-दे-लुकार्स्या-नगतायदासुया-न्येया दे-देव-धेद-तहयाकाश्चिता" ढ़ॏॴॱॾ॓ॸॱॸॺॱॿॖॴॱॸ॔ॸॸॱख़ॖऀॻॱॻॺॢ**ॺॱॹॖॱ**॔॓ख़**ऴॕ**ॻ॔ॱख़ऀ**ढ़ॱ**ग़ॗॸॱॸ॔ॗॸॱॹॗऀॸ॔ॱ শ্রুদেশে, ধুল্বার এন আন্তর্গ, জন্নি, ধুল্বার বি এন নি এন বুল্ वयारेटासरायायव परावेटायामेटालु न्टाध्याळे वे वरे सु हराः থ্য-ব্ৰদ্ৰ-মে ইন্মা গ্ৰী-ম্ 1908 ম্ব-খ্ৰ 10 নন न्यदः तहेव यान्यत् भी तम्या स्राध्या केवा केता भीवा निवानेता मिलिट.मुकाक्षका सबीब. निबट.च.केर । काञ्चिता (1908) प्रतः ञ्चार वि मरः दूरमदेरञ्चर अपुर विषयः न्दर पठवाया थे छिदाववा मित्र छिनवा विषयः चर्चें रे. बुट. । कुर्य. श्रीट. रंबिट. बुरा. कंट. खूरा. कंट. खेट. वट. खे बुद्वां त्रिंदर यमका द्वां बारा शुं वेनका क्षेत्रा लु . चरा यह दा। दे विकार या नर्षेष्रः त्रिः श्राक्षः श्राद्धः रहितः न्यक्षः सुन् व । स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वा **न्र**चयःपद्मलः≩.ट्रजःर्टरः त्रश्रूजान्यः कु. जू.कथा र्व. वीर. श्रू क्या विवसाययानुवासायवितिनेवासानुं न्युवायर्द्धन् ने विदासानुं निवास **\$**पु.चै.सूचे ज्यापर अह्र ८.कुट.। य.वे. (1808) प्रपु. श्र.चित्र *च*दे के ल'न्सु के दे अने माल अक्रीया मेला नगा तार्चे दाचा या कमाधि या ना माल न्रा वाष्य केव हैं र चर गुण्या ग्रव राष्य गे र है राष्ट्र मन् न्यम् विमान्यक्रम् पर्वताययः विन् वि स्वापमा न्या स्विन् विन् तुः बर्गयान्द्रित्वह्री दे.वयाञ्च नवि.चवःक्ष्यान्द्रः सं. वेवःवः नवेः

देवै रोतर क्षु न्यॅव देवावर न्दर मृत् क्ष्व क्षे क्षु खंदव ग्रीवा क्षु के व्यवसः <u> श्रु त.८८. त्रुपत. श्रुप. वि. त.५८. । ५. य य. ञ्र. त्र. क्रु य. त. १. ५ य</u> लियाने दे श्रमा देगुरा-दूर-(वृत्ररा-देश्चर-दर्श्य-दर्श्वर-दर्श्वर) रेग्राया वे वादा मेरा अर्मे दारा वार्के माला प्रती पाती प्रती प्रती प्रती होता होता है व वर्त्रेयाची संग्रास्त्र वृत्रेया है स्वावण्य प्रत्रा है या ल्याया मुन्याच्या स्रास्या हा ५ क्रया १८ हेन पर स्राप्याचिता ह्या इंब-हे-इंब-चंब्र-बंब क्रि. हे-वंब्र वि. क्रि. प्राच्य वि. क्रि. प्राच्य हेट. हे-व्यवा अन्य प्र **ढ़ेब**ॱॸेबॱ**सं**ॱळेतेॱॹॖॱख़॔ॻॱॺग़ॕॖॿॱॻऻॗऄॸॱॺॖॖॗॻॱॻॱॸॣॸॱऻ<u>ॺॱॹ</u>ॗढ़ॆॱॻॸॣॻॱ**ॺॕऻ** बर्हरासुरम्बाम। कृरामदादायम क्षासुदासुदा इदाउन्सुदा য়য়য়৽য়ৼ৾৽ঢ়ৣ৽ৼয়৾৾য়ৼয়য়য়৽ড়৽য়য়৽ঢ়য়৽য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়ঢ়৽ঢ় नेते त्रा पश्चन् प्रते के या महिया हेवा शुला न्यम सुया यह मु । यह सुरा स तिवर-र्ट-वरुक्ष-पःवना-हुर-वेवकः श्रवकः पृह-हेव-हें रज्ञ-सुव-पह्नव **इयाग्री हे.बार्टा इर्.चलेब्यालवारचेग्री.श्री.क्टार्या.चले.विर.** बिटा न्तुराम्बराबन्दान्येवा रोताञ्चाबीयारावन्ता क्षेत्र-द्वाद-प्रशु:ब्वाचन-क्रु**रा**लुर्या ने **-द्या**द्व-प्यदे न्न-अनु-द्वाद-र-**्र**-৴ঽয়৸ড়৾ঀয়য়য়য়ৢয়৾য়৸৸ৼয়ৢ৴য়ৢ৾৽ঢ়ৄ৾ৼৢ৻**ৢ৽ঀয়৽ড়৽য়ৢ৸৾৸৸৸৸** न्द्रेयाग्री बहतार्रार्ट्य बहतायहे न्याया न्या र्गर श्र

英可の、型の、ロス・ロ影可な、ランダニ、ないの葉可、ログ、目可、ここ、多くのログ…… म्बर्मनर्म्वार्क्ष्वात्त्रेवात्त्रेवात्त्रेवात्त्राम्बर्मन्त्रात्त्रेवात्त्रात्त्रेवात्त्रा त्रमकार्ने राष्ट्र व्यवे ज्ञाः वा बाह्मणा क्षे त्या प्रमाने केरा क्षेम्या क्षा विस्ता है रा व्यत्रिः मृत्रक्षास्यात् मृत्रः व्यत् वा क्ष्याः क्ष्यः क्ष्यः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः बर दर् र र वहर हे य दर् वर वियार नह या श्रेण विया वर श्रिर प्रेर <u> च्चेन्-सम्बर्गम्बर-ध-न्द्रम् ब्वास्कु-न्यु-मह्नेव-हे-श्चेन्-न्यर-स्र-विव्</u> न्मॅल चेर पर्रा पर्व निर्गुल कु दे सूर् भेषा न्र में बल प्रेल र्रः सेव चेर् १ ५६ मा सः सम्राया सुरः र छरः में रः स्री रेशेर् गृतु रः वः रेश छेः श्चिन:ह्यान्तःकुन:तन्याची:चु:नःबदःद्वाञ्चेयःविदः। ने:हेयःयवःध्यः য়ৢয়৻ড়য়৻৴ড়৻ঀৢয়৻ড়য়য়৻য়য়৻ড়৻ড়৻ড়৻য়৸৻৴ঀৢঀ৾ঀ৻য়৸৻ঀ৾৻য়ৢ৸৻ঀ৸৸ मात्वा तेव निष्ठ रामा ने वह रवा गार तर सुरा वैदाया रामा त्रया युग्या केन् धरान् वर्षे वह्रंग्यायते मेन् वनया ने न्राहे वर्षे न्राह्म विकास र्वो स्वाया म्राप्त व्याया व्याप्त प्राया प्राया विवाया प्राया विवाया प्राया विवाया प्राया विवाया प्राया विवाय नुषा स्वता मु . ये द् के से ग्वा द्वरा त म्वा च के वा के रा से वा **ଌୖ୶**ୄୢ୷ଽ୕୵ୣୠଽୖୄ୕ୠୣ୕୵୕୶୕ୢୠ୕୵୕୶୕ୣ୷୷୷ୡ୕୵୕ୡ୕୵ୄ୕ୡ୕୵ଊ୕୶୕୵୶୕ୄ୵୷ୄୗ **য়৽**ঢ়ৢ৾ঀ৽ৼৼ৽ড়৾৾ঀ৽ঀঀ৽য়য়ঀ৽য়ড়য়য়৽ৼ৾ঀ৽৸৾৾ৡৼ৽ড়৾ঀ৽য়৾ঀ৽য়৾৾৽৽৸ঀৠ৾৽ चुकारा वा त्र नि व अवा रवा नी विरक्ष वका र ना से ना त से र विष ब्रेन्द्रेयः इंदर्यं द्वम् इंदर्यः मृश्चयः यानम् वार्येयः ईम् वार्यः (१५९०) वितः हुन्यस्त्रः हेन् हुत्र न्या हुन् हिन् केया न्या हैन बर्ने मजुन् सं रातर यह राष्ट्र व वर्षे प्रत्य स्वर्ध में न्यमा श्री द्वाया स्वर

षर दिर्द्या मदि स्वयं रूप वी बदास बाद र महिंद : संद : बेद : र हरा। दग्री दे इनायर तु देवा द्वेद क्रेया तु द्वाया या रता तु स्टा तुना वक्या द्वा दे वयः ह्यरः केवः ग्रुदः राष्ट्रदः श्रेदः गलुदः रदः। वदः यः गवयः श्रेदः गलुदः ঀ৾৾*ঀ*ৼৼৼৼ৾য়৽৸য়৽ৼয়ৼৠ৾৽৸য়৾য়৽৾ঢ়৽ঢ়য়ড়য়ড়৾ঢ়ড়য়ৼ৽য়ৼ৽ড় नहेव् छे जुल नव मॅन् की वर शेन् ल वे हु व केन् विन स्वे में अनव म्वर य विवा केर करा केर वाया वाया व्याहित दे र वा ता पहें व व्याह विशेष ञ्च या यहें मा मे रा के दा यू रा न चु रा ता गू दें र र स् इर में र यम वे शहराया छे र द**वेव**-५ मॅबा-धरे-रे-घ-घ हॅं व-मवर-बर्च-५ केरा 4.≘.(1909) ৵ঀৣৣৣৢয়ৣঀৣয়ৣঀৣড়য়৸ঽ৽ঀৢড়৸ৣ৾ঀ৻ঢ়ৢ৻৸ঢ়ৣ৸য়৻ৠ৻৸ঢ়ৢ৴৻৴ৼ৽৽৽ यरुषान्व व्यास्त्र व शुया है। है न स्वायते ने तर्मण शुष्येमया स्वाय में न मत्याय वाया वाया व लव् .त्या में . व्यव . प्राय में चेया इसमा वेयम न्या मा करे . त्या में . ञ्च यः यक्ष्य मैताञ्च दः ग्री याया मिने मता सदी स्थायह दः दे । मा पा स्वया पादा या नवर र र र वे व ता पर गुन्या व द र र त तुन्या व व त य व स्था विदः वित्रे अः क्षे : रनः तुः तर्रः । विवान्नः यदे न्नाः समान्नः समान्यः स्वान्यः समान्यः । नर्मन्यान्तेरः च्याः कुरः न्रायाः स्वाहेवः विरा श्वरः धरः वनः ह्वरः वैः स्वः **多七. 宮と山公. ひとと、其山. 彩. s といってい、東山公. ひ表山公. とらよ. むと. ふたい. 東山公. ひを山公. とられ. ひた.....**

नै'द्रश्च द्र'यदै' ञ्च 'द्र' यद्व न्या श्वास्त्र क्ष्या त्र प्रत्य क्ष्या त्र क्ष्या व्याप्त क्ष्य क्ष्या व्याप्त क्ष्य क्

तुसन्राण्यं त्रास्तान्यम् न्स्तान्यम् न्स्तान्यम् न्याः स्याः स्य

ब्रान्तः अपया नुरान्त्रा प्रस्ति व्या स्त्रा स्त्र स

शुर्-र्रद्राध्रद्याशुःषयानव्यश्चितात्र्येव्यः शुव्राधान्यवायाये रामहिव हेः **७.व्**च्यां प्रक्रेट. श्र.क्र. व्यय. व्यं . श्री. क्ष्याश्चरे. वे. पष्ट. श्रंय. क्षंय. **धर-क्रेब-ल**-२-र-चेनवा ई**वा**ण्वर-हे छन्वा है (1910) त्र -प्र-धेरे : **ਫ਼**៹੶ਫ਼ਖ਼ੑੑੑੑੑ੶ਫ਼ਫ਼ੑੑੑੑੑ੶ਫ਼ੑੑੑਗ਼ੑਫ਼ਖ਼੶ਖ਼ੑੑੑੑੑੑ੶ਜ਼ੵੑ੶ਜ਼ੵੑ੶ਖ਼ੑੑੑਲ਼ੑਜ਼ੑੑੑੑੑਲ਼ੑਜ਼ਗ਼ੑਫ਼੶੶ ढ़ॣॕ**ॸॱ**ॸ्ॸॱढ़ड़॓ख़ॱॸॆढ़॓ॱख़ॖॺॱॸॕॺऻढ़ग़ॷॱऄॗढ़ॖॱॳॺऻॱॺऻऄॖ**ढ़**ॱॸॻॱ**ॶढ़ॱॐॺज़**ॱॱॱॱॱ नङ्गलाबरण्यायर्दर् केराने व्यावया द्वेर् छवा तुः हे प्राचरावया देरा । ঀৢ৽য়ৢ৾ৼ৽_{৻ৼৼ}৽ৡৢঀয়৽ঀয়ৢৢৼ৽য়ৢঀৼ৽ৡ৽য়ৢঀ৽য়ৢঀ৽ঀঀঢ়৽য়ৢ**৾৽ঢ়৸**৽৻ঀৢ৾ৼ৽ৼৄ৽৽৽ हे.रटा व्याहरम्बर्शनासुबर**स्या**ण करानु**बरब**न्नियर मचरा नर्गातः भूव निरुद्ध निष्ठ निरुद्ध निष्ठ नर्गातः भूव नर्गातः भ संन् नग्रतः स्व: सुर: वर: नह्नदः तहेदः त्ररः चं : नरुव: तुः :: वयायद्यावरात्रावरात्राञ्चरावीशु ।वार्ववाने क्रिक्रिक्रे द्वित्रहराकुर् <u>देद्;द्रवान्वंवाकवार्ययायम् मित्रेवायम् वेद्रायम् वेद्रायम् वेद्राय</u>े । स्वयः वेव-वर्षेव-पायेनवायेम्। वर्ष-चतुष्वाक्यायव-पव-प्यवाधिवार्ष्व-प्यदे भि.च. मूथा मूथा सुपया नद्वा प्रदेश में त्रेया प्रदेश मुगा प्रदेश प्रदेश में क्षेत्र प्रदेश में क्षेत्र प्रदेश में क्ष्मार्च्याहेलाव देन पुन्ति मानुसार के प्राप्त के स्वर्ण स्वर्ण के स्वर्ण के हेला थि.क. थे.. थे. पट्टें र. पहाला बी. पक्षण घर्या हो रे. श्रेयथा ७ में र. या श्रक्र बी. बी. नमेच.केर.श्रेनय.र्रेर.क्रुनय.र्वेनय.श्रे.सूर्.त.श्रे.नकर.श्रेवं.नथपा..... न्त्राम्द्रियान्डराञ्चर कुर्द्वर् कुर्द्वन् के नहुः क्ष्मा क्ष्रा ग्रीयान्डर में वे संदेश देश देश में में स्थायवर गठेश हैं चे शर्य रे वर है विव ही

दे-विन_{िन}्दर्भः दक्ष्मताया श्रुपः धरः सुराया दू न्यते क्षाया अक्रवा न्दरः श्रु त्रिनः मृष्ठः मः क्षर्याः न्यायः नै : नृतः । व्रः नृत्या र के : न्यु नः न्यायः वेन्यः न्म्ये थ. १. न्या विष्यं विषयः व.चंचर.र्के थ.कथ.न् व य.पे. वि.च.च.वर.जचर.जचह्रवय.नर.... यगः रे र्द्राया महुर् रेया यहित् मुं स्र रेये पर्या रे त्या केत् गुद न्चरःश्चिरःगवुरःयःग्रेरःकृदःञ्चदःहेः चर्ःग्रेःय्यः द्वःयवतः न्गःवेः यदे वयता त्या प्रमु न वया या हर् यद प्रदे त्या के व ये व स न् या द के व युर-न्धुर-ब्रेन्-नृतुर-वी-नह-त्यद-वर-वर-व-व-व-न् ॺॕॖज़ॱॸॺॻॱऄॱॾॺॺॱढ़ॗऀ*ॺ*ॱॾ॓ॺॱॸ॓॓ॸॱॸॸॸॱॸॺॱॺॕॖॱॺॕॸॱक़ॗॱ**ॺय़ॖॸ**ॱॸॿॖ**ॻॺॱॱ** वनवान्यानान्या अनवानेरान्धेवान्यवानीन्यवान्येवास्यन्त्रा इ.रट.प्र.त.क्षु.क्वियाषु थाय्या हुत्रे क्वेर च.यट.क्य खेलाने क्वायर र मन्द्राच्याभेरा। गाः व्यवस्थान् हाथेयया द्याने राजल मया वया पत्त्रा नव्नवा तुवानेराक्केत्युरान्डराश्चेरान्ब्राचेवातूरावितान्याक्षास्या नकु निश्च सदे न्तु नवक नवक नुवस्त हु स्पन् स्पन् स्ता हू स्पने हु स् म्बर्स्स विराधिक देश में बाद की स्वर्ध की स्वर्य की स्वर्य की स्वर्य की स्वर्ध की स्वर्य की स्वर्य की स्वर **ॿऀ**৴ॱढ़ॻ॓ॺॺॱॿॖॺॱय़ॱॸ॔ॸॱ৵ॿॕॸॱॺॱख़ॾॕॺॱॸ॔ॸॱॡ॓ॺॱॸॖऀॱॿॖॱॸ॑*ॸ*ॱॸॖऀॱड़ॕॺॱॿॕॖॺ त्र्याः बाह्याः बाह्याः विषयः क्षाः विषयः वि ८मू य.तप्र.विय.रश्चेबयान्ययास्ययानु व्यवस्य ईता ईस्यान्ययान्ययास्य बहुवायरायहेवाक्षरायराये छेरानु वेचबावबाक्रवाकेंद्रायराक्षवाकेटा

वेनसः हे - न् है व न व द र व के से व न के व न ता र व व र म न है व न व व व र र र व व व र र र व व व व र र र व व व য়য়৽য়৴য়ৢ৽ৼৢয়৽য়য়৴৽য়য়৽য়য়ৼ৽য়য়৽য়য়৽য়য়ৼ৽য়য়য়য়ৼ৽য়ৼ৽য় न् वेत्रम्ब्राक्षित्रः व्रायि व्याया सक्ष्या त्या श्रुदः श्रुवा वेत् । सराया मध्या है । वर्ष्यं वर्षे वरत् वर्षे **रुवानेराक्रेवागुरान्धराज्ञेनाग्लुराग्वायान्यान्यायाः** बद्धवः नवसः बेर्-धः पञ्च सःधरः पहेवः कुषः वरः नीः यरतः कुरा स्वायाः त्यान् न् व्या स्त्रीत् व्यापन **द्याया गलव त्वाप वया भ्याप या अक्रमा सव र प्राप्त के म्याप या अक्रमा सव र प्राप्त के प्राप्त प्राप्त के प्राप्त** ८व.त स्ट. क्षेत्र. के. कुव. शुर. गविर. ग्वेश.व. पपु. पपु. व. क्षेत्र. पश्ची वनयानुन्कन्द्रात्वायानुः श्रीन्नुयातम्यावेषायान्यानान्त्री मूद्र-दर्भुद्र-चे-द्विक्कु-क्वी-विकायर-पर्में-प्रवृण-वित्-तु-द्वि-वे-न्नॅ वायदे प्रमाद स्वायान्ता कु.व. रातु सं क केन् वार म्वायान हर हे ः हु .«दे:ब्रु:बः चॅन्:तु:ध्रेन:बॅन्।सेनबःन्नॅवःधदे:क्रुवःबः बु वःमःबॅनवः · · · न्द्रणद्रायः इत्विद्र। देव्याञ्चन्यायान्। (1911) विदेः ह्रवाप्तरः वर्ष्युन्यम्बुत्यम् वर्षान्यम् वर्ष्युन्यम् । वर्षान्यम् वर्षान्यम् वर्षान्यम् वर्षान्यम् वर्षान्यम् वर्षान्यम् विन्यायदेश ह्वाप्तरादेन अन्तराया बहुनाया सुव्यानवा नेता वृत्ता हुता । विवासिका अस्ति निवासिका स्था निवासिका स्था लेक्द्रवे राजके हिट व्रवासक किति व्यक्त विवाहित न है। **%**

बनका शुक्र शुक्र ऋकें गः गैवा र सु द्वि**र अर्द र सदे छुक् वा** बन । वर चहे·लट्याने स्ट्राह्म हिन्द्र विवादन्त्र विवाश्वरा वित्राह्म राद्या प्रति विवास विवास विवास विवास विवास विवास लर्थानुरामु केदे बेलामुलामु लाक मरासराम्यरामहेदे निरा बे है रम ह रम त्याने राजु । बारा ची । श्रृंदा हुत । श्रु । सा स । हे । য়ৢ৾*ৼ*৽ৼৢ৽৾৾য়ৼঢ়৽ঢ়ৄ৽৸৾৾য়৽য়৽য়ৼয়৽ঢ়ৼৼৼয়৽ঢ়৽ৼ৾৾য়ৢ৾য়৽য়ঀৢৼ৽ৼৼ৽ ঽ৴৻য়৽ৢঀয়য়ৢ৴৸ড়৴৻৴৽৴ৠ৾৽ৠ৽ঀ৴৻য়য়**৾ৼঀ৽ৠ**৴৽ঀয়৴৸য়৾৽ न्याः न्य *ने ' चॅन्' ग्री' ख'-, वदा पाउँ ' पावन*' प्रमा हु' चै' प्रव'न् **बम्'**बैर' दर्बे पा केंद्र खतःन्रःखःतःश्वतःरवः यञ्जलः देवः द्वः त्यते : त्वतः त्वतः त्वतः श्वेनः श्वे : न वे रत्रः प्रवेर पा इ. पप्त प्रवेश क्षेत्र किया विष्य थर प्रवेश स्था १ थर महे⁻लम्बानदेभ्, श्रेनबन्म-पहिबन्धे-पूर्-पर्न, श्रुब-मेल-र्म-निका-स्वा ब्रॅंट्र-दिश्चनका**बर्ट्र-यःन्ट्र-दे**श्चर्चीव्र-हेन्र-ट्रेंक्याबवर-व्रेष्-तु <u> नवर म ने न् इक है वे द्वा श्वाल सम्हे व वल गुर न् इर श्रेन गलुर </u> ल.६.५५.३८.१५५.लट्य.व्रेच्य.थे.८क्कें.५५८.। छ.२.थेपु.रंब.थेबय. ल ८ हे व व व र र छे व है : ब ब र र ब्रूं र : धरे : ब र व छ व व व व छ र ठ : छ र मुनः सः नर्रुषः हे . स्ट् . रटः नर्द्ध ने ने दे त्यदे । यद्ध न्या हु न्या हु न्या हु न्या हु न्या हु न्या हु न য়ৢ৻৻৽ৠৼ৾৻ঀ৾৾৽৸ৡ৸৾য়ৢৼ৻৻৻৽৸য়ৼ৾৾ঀ৾৾৽৸য়ৼ৾ঀ৽য়য়ৼ৾ঀ৽ড়ৼ৾৾ঀ ह्रग्रायम् (1911) व्राप्तः त्रायते ज्ञायायकेना नेवासु उ सुते अने रायाः

वे वि त्यर नि द्वर प्रति क्षेत्र क्षेत्र वि त्

केन्-नु-लु-नहाया रह-रे-विन्-मुल-हर-वहु दे-मुल- न-न्द-हे-रेबायरात्र त्र्वे**षः अर्केन् : व्यवः अन्यः अन्यः व्यवः** व्यवः व রামবান্ত্রীবার্মন্ন বর্মান্দ্র বার্মান্তর্বা ८क्षत्रप्रः सः दर्वे दः क्षेत्रः क्वेद्रः यत्रदः दे ः क्षेत्रः ह्याः ह्याः । द्वेत्रः स्त्रः द्वेतः देवः । । बदरान्हेंन् जीया बाराया चाराया है । देन निर्मान्त है । पत्रिमाह्मरया-द्रिम्याक्र्मास्यान्त्रिया-द्रवेषान्त्र्याप्ता व्याधनयाः बर्पान्दर्भ वर्ष्ट्र क्रिंग्रें राष्ट्रे क्रिक्ष क्रुला रामा केवा में उपनिवाह वर्षा महिला वसकेदसाधिया नवया नवदाया नहेव परा नके नेव रवा हुरा देवा देरः तरः रंतुः जुलामरः द्वेदाद्यरया स्थता ठर् द्वाजुला विषः केदायेः म्बेरायार्म्मारायार्म्यायाः यहेरायाः वित्यान्त्रेयाः वित्यान्त्रेयाः वित्यान्त्रेयाः वित्यान्त्रेयाः वित्यान्त र् इत्यान् रेगानीयार्देशातृ । यदे न्ना यया में दाया न न य के व यं रान् में स पर्नियाः भेदा देवालु ना पर्ने मन् मुक्षारमः क्रेवाम मुक्रायस्याः र्ःनग्राच्यंत्रस्यास्यात्रे के स्यान्धे स्यान्धे स्यान्य के द्रायं स्यान्य स्यान्य स्यान्य स्यान्य स्यान्य स्य र्म्यायायवान्त्रा इगाप्तरातुः अङ्काराव्याम् न्रोधयानिया पर्वयाः नै-र-५-इरलामु-विदलामेदासंयामे -द्रायामा निवास के विद्रायामेदा के विद्रायामेदा के विद्रायामेदा के विद्रायामेदा देखारा वी वहुगाया ने मन् मुक्षात्म केव में स्था गृहेक व्यामाय बॅलाग्रेलाञ्चर् ब्रेरावर्व्यस्ववायावह्वावरे परावित्यवे रावी रंगवायम्बर् **ठेकगुरा मुग्याहे के या न्या क्या कुया के वा में या मुग्या है या कुया में या मुग्या है या कुया में या में या में**

ब्रैव ग्री मुलावत केव र र जरायदे व**ळं र** मु**वरा** झे । दरा नवे र राज्य र र र विद्या कवःश्चित्रवञ्चात्रव्यक्ष्यात्रक्ष्यात्रक्षेत्रः विद्यायह्रवः विद्यायात्रवः यं मुकेन त्रा न्मे त्रुव पङ् हुन् परुष में त्रेन स्ति स्ति स्ति । য়৽য়ৢ৾*ॱ*ৼৼ৾৾৾ঀ৾৾ঀয়য়৻ড়ৼ৾৾য়ৼয়ৼ৾ড়য়৻য়ৼ৻ৼয়য়৾৽ क्षे. रचयाया गंचया वी. हूं वो नया या छ । गंध्राता रया लूरे । ना ली बडंबाबन्या ठवः गुर्नेदः याञ्चरः चुरः खंब्यायः ग्रीः मृत्रं वः से । एव व रूर् हेवः नशुर-इन्-वर-य-वयय-ठर्-ळ्यायुन्य-यर-व्य-ग्री-र्-रय-ग्रेर्-चुरे . . लम हिराह्य देवासरामरा हरा देवाला समेव सुम्राहे हे पा न्या मिलारिया मिला विकास के दार्थ स्था मिला स्था स्था मिला स्था स्था मिला स्या स्था मिला स्था मिला स्था स्था मिला स्था मिला स्था मिला स्था मि ८**६** ण नव**र** नेवार्स्मवायायाँ व सुम्याय दें र वेर पा ल क्यू र र वार्मिरया र्नुरयाश्चातहन्यायायाष्ट्रेवा लायरेन्यायाक्षात्रात्राच्याच्चार्चात्रा नक्ष केर सम्बद्ध केरान सर में र सुया " वेरा दिन्। म्राया थे भ्राया हिर्या स्वा ने प्रदेश तस्य है या ते न लब सेला हे. सूर लाबहर खेटा सब सद नथा ता बबा लटा व करा हो है. बॅलालु न्दरलु पत्ने दार्च प्रया हिन् ही हुन्यः न्द्र हुराहेदान्ने साम भ्रम्याः नेत्र १५ कि. व्याध्याः भ्रम्य । भ्रम्य । भ्रम्य । ষদ র্বা হ্রবা প্রদা न्वन् वे न्रः मु देन्य यः में म्या हेन् यदे हिर क. भुन्य केन यर्य यः र 551 त्री वित्रत्यम् न्सुरःवृदःष्ठितः रुद्दः त्रम्य वः क्रेषः क्रेरः क्षेत्रः

बिटा। पॅन क्नि लया नवायन ख्रान्यम क्रिकेन स्मानक्षी मान्य वा चुना हेरा:पॅर्'रा:बद्या:श्रेर्': ृबुंर'य:बे:पॅर्व'र्थम्'श्रेरे:र्वम्'यंव्या:कुः..... भ्रम्यान्त्राचे द्वान्यम् वी द्वान्यम् वी द्वान्याः विवायः विवायः विवायः विवायः विवायः विवायः विवायः विवायः विवायः <u>য়ৢ৾৾ঀ৾৾৾ঀ৾৽ঀ৾ঀ৻য়৾৾৽৻ঀ৾ঢ়৸য়ৼ৾ঢ়৻য়৾৸৻ৼ৾ঢ়৸য়ৼ</u> <u>बॅर्'ग्'बेर्'चुर्'। वे'बिंद्र'र्यण'र्सुर'नैयाव'र्द्र'ळेग'य'वे''</u>व्य यर-ब्रेर-दवेव-स-प्राव-स्थानम् र्यम् विष्य-र्यम <u> स्वायः पद्र-क्रुयः इट्-क्षेत्रायः ४८. क्षेट्-क्षेट्-वेट-क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः ४८. क्षेत्रः क्षेत्रः ५८. क्षेत्रः कष्टा क्षेत्रः कष्टा क्षेत्रः कष्टा क्षेत्रः कष्टा कष्टा कष्टा क</u> र्रा तुर् बेर् या म्यो स्राम्य स्राम्य विदाय अर.पर्येन्य.त.स्न्य.विय.केंचय. रूर्. र्च्याय.श्र.बर. क्र्यार. भ्रायवद. . विदःस्वायः द्यम् वे । वम् म् विम् गुरः ह्वं । यम् ह्वे । यद् यः म् द्याः म् द्याः म् द्याः न्द्र-ने'र्स्रेन्यरस्य द्वन् गुर-धर-नेयःयम् र-दर्वयः हेर्-धरे हे .. ऍ**ব**ॱ२য়गॱয়ऀॱ२८ॱत्त 'ठः ग्ठेग्'ङ्ग्'ॐয়ॱঽ८ॱ२য়ग्'ঀয়ঢ়ॱঢ়ৢয়৾৾ঀ८ःदेः . . पतिवःम् अराप्यतः इर्नेन्यापवः चे मिवान्यम् अर्थान्य प्रतरः बैराक केव्यं त्यर्या द्वयायाम्वव विमान्या म्राम्या स्त्रम्य मैं नगाव ह्रें दे के दूर र्नर हिया कुल हैं रहा नगाव हुर के विया मा नस्व कुराक्षर स्वाता वता है। विव न्वम क्षेत्र कुराक्ष्य स्वाता केव छता मानकलाम्र कि. मेबया क्षा के. करा क्षेत्र प्रहर कि. पत्र मेबया शु क्या रा क्ष.यपु.चता.श्चर्य.श्चर.चया.घर.टर्या.चया.श्चर.चरा. **9**51 निर्देशका विराहिता निर्देशका विराहिता व

第、本文公司, 의소·其公·萬太公司, 교육公司, 종소의 의·보호·건·보호·영·경소·其公·로 학신, 교육·실학·전·역·전 의·보호·건·보호·전 의·보호·건·보호·전 의·보호·건·보호·전 의·보호·건·보호·전 의·보호·건·보호·전 의·보호·건·보호·전 의·보호·건·보호·전 의·보호·건·보호·전 의·보호·건·보호·전 의·보호·전 · 보述

ভ. वै. (1915) খ্র. র. রেণ্ড প্রথমে প্র. প্রথমে প্র. প্রেমি প্রমান প্র र्राच्छ्यामा सुन सर्वार्मि संस्टान्या मेर् हूर्या शुक्रिया वि श्रेनला ने रामु ना रामु स्थित सदी सन् श्री श्रे राम्नु अरा स्थिता ग्री ता वेनलःक्रेलःम्≡मःक्रुराख्राम प्रा| प्रीव हिते:प्रव तेन्द्रातन्तः विन निया ठ क्विना लु : सुर् : ग्री : सुया पर तुर् : लुया सरः यह त्या । या निरा दे वयानेवापतिवाहारीयायापकुन् न्यायीयायन वेपयानेवायन्ति व्यातृ 'यदे 'ञ्च 'या ये नया चु यया शु 'नतु ग्या ई न्'केनरा वृ नया न्रान्य रा ইব ঘন-শ্ৰম্ম শ্ৰী ভিন অন্বংন্ট্ৰ শ্ৰীনাৰি নাৰেশ ন্মশ্ৰমিকান্ম। ঀ৲৽ঀ৾য়ঢ়৽য়৴৽ঢ়ড়৻৽ৼৄ৾৾ঢ়৽ঢ়৾য়৽ঢ়য়৽ৼয়য়৽ঢ়য়য়৽য়য়৽য়ৢয়৽৽৽৽৽ *र्दः पावाच्चेर्-इवावाच्चे : बेववानशुः र्दः पठवा : १२: ग्वेदः वार्वे व्*। व्दः तु-वेनयः हे - हेदः व्या-पतुदा र्चयः पतुत्। वृत्-इतः स्या-त्यानः श्चीरः सरः नगतःक्षनःनङ्गः नवनाः स्रुताः नः स्वायः क्षयः श्रीनः श्रीः क्रीनः ङ्गः सरः द्यः श्रीतः । म्बर्ध्सा ने ब्राजिर वहारा मृत्या श्री से स्वाप के रामकु द्भग र्वयः न्दः तम् त्र्रेययः यन्दः न्यं नः नगायः भगः भा श्वय यन्दः हरः <u>ุรุะเลลี้ๆ นะตะเข้าโดสผารสๆเอองเมื่าผิดผาสผู้เราะหีระเพียง</u>

द्रवासवारित्वकृत्राख्यान्वेवात् विषया तुष्यानेतात्ववावायात्रः **ळेदः देदः वेदायेवदाः विद्यादेश्वदेश्वद्यः द्रः द्रः। द्रायः विद्याद्यः व्याद्यः विद्याद्यः विद्यादः विद्याद्यः विद्याद्यः विद्याद्यः विद्याद्यः विद्याद्यः विद्यादः विद्यादः विद्यादः विद्यादः विद्यादः विद्यादः विद्यादः विद्य** यहेना पः यते वा इन स्वर क्षेत्र महार सेंता है या क्षेत्र सहिता मक्रकेव देवं चे किरे वह र र्ख्या तगर विगाया अमेराया अकेंग सुग्या । ग्र-प्रवास्थित्वः नृज्ञेवः प्रस्थवा अपवान्तरः स्रावाः विवास बहुण क्षेत्र बेर स्वयार्में व रेर हार में हैरा स्वार्य स्वार्य या पत्वारा देरे नैराबर्राञ्चर रेवाग्डरायकाळवात्रां यज्ञरायात्राज्ञावि में गवकार्या नगाद भग भूर पान भर ही जिया पान गाद अगू थी विनय विश्व पर्मे य तुरामराञ्चल यारगाता दुरायकला नक्षे मानवा नक्षे या**ना नर**मान न लट्रम्बेर्धियाः वट्रद्धः शिक्षाः तथा झे र्ट्या इट्रम्बेवरा ग्री झे तस्य खता. कृतः वा**ड**. र्याः श्वायाता यह तापा वाद रावि रा तुषानेत्राव्य न्तु ग्राक्षयः नदः यदः धुरान्तः। न्यगः न्यं दः यदः गुरः तुरः दर्यः द्रः यदेः चै.य.पथयःई८यःथी.स्रपथाःमःभेयःस्यास्यःस्टःभैःर्षुचीःस्याःमे। **ৡ**ৼয়৻৸ঀ৾৾য়৻য়ৄ৸৻৶৶ৼ৻৸ৼ৻৸ৠৼ৻৶৻য়ড়ৣ৸৾ঀ৻ৠ৾৻ড়৸৻ৡ৸৻৸৾য়৸৻৾৾৾ बदग्याः हिंदान्वदायदे ते पायहेवाय क्षेत्रः ह्वं वाळेवाळदाष्ट्रिया यष्टिवाः रमःर्मलामनरःर्दः। यरःश्चरःकःमःविःमःश्चलःश्च। द्वःसम्बः तह्रव्सव् क्ष्यायायक्यायावरा ह्रेव प्यापा श्रूपा विषा मुगा न्राप्त हेया है यर:भर्गेर्-१हॅम्बहर्ने सव्: ह्वं वि: मदै: म्रॅं सं से साम्रुराधार कुर्ने मर मलुग्रालयामव न्दा भग्रान्यं व संग्रान्यं व संग्रान्यं व स्वारा

न्तः शुरानः तुरान्य सुन्। दे क्षेत्र चे न्विनः न्वनः व्यान्य स्वावः कु न्रान्चूर् छेराप्रनार्मेनायार्गा चुते । यं नारेनन र्रासु सुरादर न्म्यार्थान्याः अन्यात्रः द्वास्य विः न्यः सुन् ने चित्राः सस्यः स्याः ह्मिय. म्र. थ.र. वयारीर.र. विर.मी.म्. यह्रर.थ.र थ.र विय. मीया. वर् क्ष्मयाचेर्-रम्यास्तरः स्ट्रिं ध्याप्तवम् वम्यादः स्वाधितः स्राधितः स्वाधितः য়्रवास्त्राच्या पङ्गारावे नवारा नवारा विष्या दे व्याक्षायि नवार विषा रेयानविष्-केर नहग्यार्रर नया हा 8 केया 29 वेष भर्मेर या बह्मा र्राभु तिर्रात्राचकवानवया भेत्यादवाकेनवा वि वश्चराने का वि शु षि प्युत् बर् द्वेषाद्विराध्यादि केराधेवला हे खा नृषारे दा नृष्य देरा पल्याय भेटा। दे वया छ । चै । च । चे । च । चे व । च । चे व । च । च व । च व । च व । च व । च व । च व । च व । च व व यर विनयानि अन्ता शु ज्या स्व न्यात स्व वि । व के र्ज्य वी र न्रा नगाय.स्व. ११८ १४ र श्रु. १ द्व द. २० वा श्रे. श्र. भ्राम्य द्या नश्चरा ক্রমণ্ডুমা ট্রি:ক্রমণের ক্রমণ্ডমা উর্যাস্ত্রমা ব্রমণ্ডমার্মণর স্থিত **इर.इय.**नप्र.ंग्र.केर्रा ७श्चल.र्यर.धिय.पक्षेत्रश्च.बक्च.के.यर.बुर. ल्बे.न्रया.इय.स्ट.की.र्यट.पश्चर.र्यात.द्रयावट.वित.वी.प्याया.क्रया ₹·८र·५८। ६ं:५ण च्व.१७ बुर.१ हु.षदे:बु.य.५८.ते छेव.५वे.सं. के क्या मृत्रेया न्यर ग्री द्वेयाय हे श्रूष हु स्ट दिर दिन दे पतिव पं हेव য়ৢয়৾য়ৼ৻৴য়ৢ৾য়৻য়য়৻য়ৢ৽ঢ়ৄয়৽৻য়য়ঀ৻য়য়ৢয়৽য়ৢয়য়ৢয়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়৽৽৽ न्मव परि कु न्रेस स्र स्वास्य म् लुर यहे या यह र ने पने पने वर्ष इययः नरः नरः स्र स्र निवयः शुः छेनः श्रुंग वः रवरः न्यः ५५ वः छैयः

त्रियः स्वाप्तः व्याप्तः स्वाप्तः स्वापतः स्वाप्तः स्वा

9. 정의'대전'전자'품되지'됐지!

श्रुञ्च.पंद्र ग्रूय.क्रूबय ब्रै.क्ट.श्रद.(1913) प्रद्य. श्रु. पर्दे. पर्दे.क्र्य.पर्दे मह्यसः देव। देव-दितः च दः देवा ह्या ह्या त्या व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व भे**रः। भूकः छ्वासः ने ने १ दे ३**वः हे पटं वः कुषः रेरः शुवारा परा यदेवः शुवा तहं समा केन् ग्रीमा गुरामें दे वहा श्रीना या में ग्रीमा अवा में ता में ग्रीमा अवा में ता में प्राप्त में के सम **इ** चे देव न् है द्वव न् ना में यह हु चे न व व न व व न चे व देव:ग्री:क:ज्रुरा य:यदे:ही। वर्:ग्री:यहादेव ग्री:क:ज्रुराय:होया वर् हा म्बरारीर्-न्दुर-बै-सु-कंप-व्रंब-केव-वनर्-श्च-न्ययः वर्धर-है-रू-। लयार्वायावि हे वि श्रुव रूर स्राप्त निर्मा श्रे वर्षि व सार्व स्राप्त नम्भवन्यान्ता कुरा देवानवे हा वर्षान् देवास हिमारवानविवास वृद्ध्यां ब्रह्मान क्षेत्र र मान्य र र र । विषय प्रमाय प्रवास क्षेत्र र वृत्तर ब्रे-ल्या

पर्वः «हर् ग्रे॰क्ष्वः **कर् :र्रः नेरः नगरः** »वेषः पर्वः वरः "ग्रुरः कृषे र्गरः **क.**क्ट.त्र.लूट.तपु.चेंद.चेंद.कूट.चेंद.रूट्न.तपु.स्व.थी.ट्य.श्वेत हर <u>ञ्चॅबःळेबःममनःञ्चःन्दःसुबाःमधनःग्वज्ञाःमध्येषाः विदःविनःग्रेःन्यदःळः</u> **८८.४.४८८४४४७५८७४५८७४५५५४५५७७५५**३३५४५६५४४४४ म्बुग्धराबर्भं सम्बर्वि ने रेत्। दर्गाहिदायार्थ्व कत् शुदार्वे त्रार् र्मर दर्भे स मातु म होर् स मात्र र मात्र म त्र म च तुराचिया ग्रामा द्वार के प्राप्त के स्वार के स ॻऺॱढ़ॾॖ॓य़ॱख़॔ॸॱॹॻॱड़ॻ॑ॺॱॾ**ॺॹ**ढ़**ॾऀय़ॱॸॹॱॿॹॱढ़॓ॱॾॱज़**ॺॱढ़ॸॖऀढ़ॱॾॕॻ॑ॱॱॱॱ दिष्ठेर. 'म्यातपुर ध्याप वि.वियाता त्राच्या वियायम्या श्वापायम्या वियायम्या <u> क्रीयानमॅं राष्ट्रराष्ट्रराष्ट्राययास्य सुर्व्य व्ययामानवेद्याच्या प्रयास्य राष्ट्र</u> न्वराने भेना संनता सराधार दे राष्ट्र उत् र्रा हे नता क्षेत्र व व कार्य कार्य व व व व व व व व व व व पर्राविर विरा अनवार्रा प्राप्त श्री श्रीव किवार्ष व द्वार है है न्तः त्रकार्रम्यः दे हे वि अव क्रिं तु न्त्र कुरा विषयः विषयः श्रीन् गृतुन् ग्रीप्तसुत्रा श्रीस्वया हेव् त्तृते ग्रुन् दिता श्रीयायम त्य हुन् য়ৢঀয়৾৽য়ৢ৾৽য়য়ৢ৾ঀ৽য়ৢ৾ঀ৽য়ৼ৽ঢ়৽য়৽য়ৢৼ৽ঀ৽য়ৢ৽ড়ঢ়৽ৼৼয়য়৽য়ৣ৽য়ৢ৾ঀ৽৽৽ ळेवः र्राग्यः १ द्वेवः स्थिः र्येवः रेग्यः तम्यः विषः ग्यायः म्यायः प्राः न्रः ह्वेः सेवः " मंचत क्रियाचियाचा न्द्रा तिव्याची स्त्राची म्याम् व्याचिताची स्त्राची म्याम् म्रायेग्याच्यायायाचा न्ध्रेषादीत्राम्याचार्येषार्येषात्रेष् मृत्रात्वातः वे**गः हगः** तद्यत् छेतः धरः द्रत्यः व्याधवः स्वाध्याः स्वाध्यः 34.921

ब्रेट्य.र्देत्.ब्र्य.क्र्ब्यय.ब्र्-ब्र्ट्-व्रिय.ल्र्ट्य.श्र-वि-ल्र्य.च्रुक्

विद्रा न् चुनि हिते र् यं न रे न्या र विषा न्द्रः ख्रेन् स्वर् स्वर्ये स्वर् स्वर्ये स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर

र्विन्द्रं महाश्वास्त्रं चित्रं प्रस्ति विन्द्रं स्वरं महित्रं स्वरं स्

निल्म्, न्याप्त पड़िल्म् प्रम्य के स्वाप्त के स्वाप्त

श्र-श्र

त्वायः करः महेव नावयः द्याः केदेः क्ष्यः विश्वयः प्रविनः वेयः स्वायः त्याः स्वयः विश्वयः प्रविनः विश्वयः विश्

प्रतित्वर्षे स्ट्राच्वर्षे स्वर्त्वर्षे स्वर्त्वर् स्वर्त्वर् स्वर्त्वर्षे स्वर्त्वर्षे स्वर्त्वर्षे स्वर्त्वर् स्वर्वर् स्वर्त्वर् स्वरत्वर् स्वर्वर् स्वर्वर् स्वर्वर् स्वर्वर् स्वर्त्वर् स्वर्वर् स्वर् स्वर्वर् स्वर्वर् स्वर्वर् स्वर्वर् स्वर्वर् स्वर्वर् स्वर् स्वर्वर् स्वर्यः स्वर् स्वर्यः स्वर् स्वर्वर् स्वर्यः स्वर् स्वर् स्वर्यः स्वर् स्वर्यः स्वर् स्वर्यः स्वर् स्वर्यः स्वर्यः स्वर् स्वर्यः स्वर् स्वर्यः स्वर् स्वर्यः स्वर् स्वर्यः स्वर्यः स्वर् स्वर्यः स्वर्यः स्वर् स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर् स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्व

रु'मञ्चर केरा केर्पय दे देवा मार्थ देवा भीवा मार्थ करा माराया

तुकानेराव्यरान् इरावी शुं क्ष्या में नाम नुवारा नमें व शुं के दिवान हैं। ञ्च तः ग्रीयः ग्रुटः र ग्रीटः मित्रा त्रवुषावेषाम् कृत्यते च्या वितान् वितान् वितान् वितान् वितान्य वितान् वितान्य न्वेतात्त्रेतान्त्रुरान्त्र्यान्त्रुरार्म् ताम्यान्त्राम् के त्राश्चराञ्चेत लव बद्र वियानविया ही स्पृष्ट रिया रचया च वि सम् ही देवन है यूर न्यग्-इन्यादयावि स्टानी मुलाविन केदासी बदत स्वा है नद्वा है শ 1652 শ্रামু এই ল্লামার বিশ্ব শ্রামার বার্ট অছল ন্যাম্বর লা के. . व. प्याप्त प्रमान क्ष्या यह ताता क्ष्या व 1717 वर हुद नर द्वन नैस वर् सुल हुन पर में र बर र सुर राजा रॅग्याप्त हर हे पर रॅया में इस्या चॅ ए द्या क्षेर प्र सुर्। रे हे या में र न्य्रण त्यत्र मृत्रेष क्ष्म्या विद्याम् देवा त्या मेन्य द्या किया विद्या मृत्य स् इंश् द्रश्यं च्याच्या निया क्षेत्र च्या द्रश्य द्य द्रश्य द्रश्य द्रश्य द्रश्य द्रश्य द्रश्य द्रश्य द्रश्य द्रश्य र्देशच त्रामा स्रामा हेन्या रहिन। इर्परिक क्रा विमास्य चर् ग्रेक श्वर पर कु क्या में र सर र्यम् र्मिक पर है या प्रका ले या की र न्यन शे. वि. सं. सं. र न्या मं र न्यम इ बया छेर प्रभूत्। ५८ कु. यून्य व्याप्त व्यापत व् म्बेर-५५व्य ग्रम्ब बेर्- पहर-प्रदे सं कुब के कु क्या की रेप बेर- रूप भेषाः क्षायः वटः दिद्धः अञ्चलः हो दिन्नः विद्यायः भेषाः क्षायः देवः हिंद्या पृहा । क्षेत्र ग्रीया श्रीया परि प्री प्रेता स्मृत्या पर्दर म्मृत्या य

म्ह्रम् श्रान्त्रेया कुरान्य व्याप्त स्त्रा स्त्रा

महिरात्वा कुर्याक्षेत्रः हुना तक्का त्रान्त्वा क्ष्या त्र त्र कुर्या कु

製紅.하고.''''' 美山.劉

नित्रं वित्रं व

स्या द्राष्ट्रम्या । व्याप्ता व्यापता व्

ন্তুৰ না ক্ৰ'ৰ্ম' ন্ইঅ'শ্ৰ্ম' ন্হ'। ইন্'গ্ৰী'ৰ অৰ্থৰ বি

तुषादेरः द्विषः मृत्रः मीराष्ट्रयः मेराष्ट्ररः मीराष्ट्रदः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वर वृषाद्वरः सः स्वरः वृद्दः स्वरः विषः स्वरः स क्षर्याः भीताः विष्याः भीताः क्षर् । भीताः भीताः विष्याः भीताः विषयः भीताः विष्याः भीताः विष्याः भीताः विषयः भीताः भीता

न्त्र-ह्रम् विकासम् न्छ्य-मृत्त-त्रा कु-त्य-मृत्त-ह्रम् न्यः मृत्य-मृत्त-ह्रम् न्यः मृत्य-मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम् मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम् मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम्यः मृत्य-ह्रम् न्यः मृत्य-ह्रम्यः मृत्य-ह्यः मृत्य-ह्यः मृत्य-ह्यः मृत्य-ह्यः मृत्य-ह्यः मृत्य-ह्यः मृत्य-ह्यः मृत्य-ह्यः मृत्य-

द्वाळव् न्या व्याप्त कु न्या व्याप्त न्या द्वा व्याप्त व्यापत व्यापत

মই'বেছল্অ'ব্হা ইন্ 5'ক্ত্ম'গ্রিন্ন্রক'ন্ল্ক'ম'ন্ ইব मृत्रम्यः वृत्रम्यः केव यः यद्रस्यः कः वृत्रवाञ्चरः द्वाः कुन्तम् वृत्रस्यः। **ऄॖॱबर**ॱन्यम्'वे'वे'न्नॅर'म्'यः बन्। वि'र्म्'न्यॅव'रेम्य'वे'वह्म् मु द्रम में शे रो र र र विद परे परा दिया में र में र र र मिल र क्रम्याम् वर्ष् चेन् श्रेन् स्रायहम् मर्गाय्यायेव स्या कु वमानी न्यंवः न्यगः ने प्रः केर्या पर्ने पविवः ह गया पहिंगः स्रेपया में न् श्वे स्वरः बदः न्त्राच्या मृत्राच्या १९०४ ज्ञान्त्रा स्वराचित्रा वर्षा । १९०४ ज्ञान्त्र वर्षा । १९०४ ज्ञान्त्र वर्षा । न्यरायव्यापादी केर्याध्या यी त्यु ने व क्राया या है यया व न्या वि न्या न्वनःरेगवाकीत्रहेग्यान्ता सुक्ताह्यवाकी सुरुतावराक्ष्य प्रदे न्यम् बैरबैरदह्मायाया चन्। वैरवेराका बैदारदेनका दिवारी में बैका कन्यान वर्ष्ट्र छेर् शेरह्म भरावरायेवा

च्य-स्थान्य क्ष्याम् क्ष्याम् क्ष्याम् व्याप्त क्ष्याम् क्षयाम् क्ष्याम् क्ष्याम क्ष्याम् क्षयाम् क्ष्याम् क्ष्याम्

र्देनं क्षेत्र स्थान स्र क्षेत्र के त्या प्रंत्र क्षेत्र स्थान या क्षेत्र क्षेत्र स्थान या क्षेत्र क्षेत्र स्थान या क्षेत्र स्थान स्थान या क्षेत्र स्थान स्था

ইবান্ত্র মন্ব্রান্তর ইংব্রান্তর ইংব্রান্তর করা নাম নির্বান্তর করা নাম নির্বাদ্ধি নাম নির্বান্তর করা নাম নির্বাদ্ধি নির্বাদ্ধি নাম নির্বাদ্ধি নাম নির্বাদ্ধি নাম নির্বাদ্ধি নাম নির্বাদ্ধি নির্বাদ্ধি নাম নির্বাদ্ধি নির্বাদ্ধি নাম নির্বাদ্ধি নির্বাদ্ধি নাম নির্বাদ্ধি নির্বাদি নির্বাদ্ধি

र्व इव द्व व द्व

म्बंदिः स्ट्रान्त्रा त्यारा क्षेत्रा प्राप्ता क्षेत्रा कष्टे क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा कष्टे कष्ट

र्नेनः क्वः प्या प्रेनः प्रेन

र्नेष:क्ष्र-त्मु:पर् क्षेत्र-प्रेन्-स्वर्ध्व-पर्-क्ष्र-क्ष्र-प्र-स्वर्ध्व-पर्-क्ष्र-क्ष्य-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्य-क्ष्र-क्ष्य-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्य-क्ष्र-क्ष्र-क्ष्य-क्ष्र-क्ष्य-क्ष्र-क्ष्य-क्ष्र-क्ष्य-क्ष्र-क्ष्य-क्ष्र-क्ष्य-क्ष्य-क्ष्य-क्ष्य-क्ष्य-कष्य-क्ष्य-

र्न्तः क्षत्र च खुः धरा नः त्याः क्षेत्रः ध्याः व्याः व्याः

त्यानेन व्यान क्ष्या व्यान व्यान क्ष्या क्ष्या व्यान क्ष्या क्ष्या व्यान क्ष्या व्या व्यान क्ष्या व्यान क्ष्या व्यान क्ष्या व्याच क्ष्या व्याच क्षय व्याच क्ष्या व्याच क्ष्या व्याच क्ष्या व्याच क्ष्या व्याच क्ष्य

इन्।सं निहर नवा विद्राति श्रीया करिया प्रमानिकर विद्राति हैन्। बळवः ब्रॅन्-बः बुबाधनः देवः न् ही "ब्रुवः यः केटबः धेवः न् देवः शुः तहेवः """ भ्रमका बिद्रा हु मुका तमें न् बी क्रमा के का मादा या पा पा हुर के दका धेमा न्रलाकु'त्र्मन अन्यादेव न् है छ्व छै या बैदा ह नव साम वया या नर्मेन **स्रम्यान् क्रेन् मृत्रः मृत्रः अन् स्यायः क्रिन्न म्यायः मृत्रः म्यायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्** नर्गेर्प्यायात्रा वराञ्चरायाधितः ईवार्डिवार्वर् यायळ्यया सर् वि'अ'रुर'वेरा'परे'रा'भेग'पर्गेत्। देव'गुर'रीय परे'केर्य'धेन **रं** बानेराग्रुटान्ड्रटाश्चेन् मुब्दामी तहुका श्चेषानम् व्यवम् स्वरान्द्रेयाः खु'बेर-ह् म्यानमॅ न् बेन्-ह्रम्याकेर्याधेम् नेत्र-न् वेत्र-मन्नन्यः শ্বদেশের ইন্ নব্দ বর বিষ্কার ব্দ্রা ক্রিক্র বিষ্কার বিশ্বদ্রা ক্রিক্র বি <u>ৼঀৢঀ৾৽ঢ়ৢ৻৸ঽঀ৾৽য়ৢ৸ৼৼ৻ঀ৸৸৻৸য়ৼ৻৽ঢ়ৼয়৻৽৽</u> वयाम ज्ञान मुंदान दे नदा मुन्दा मुन्द

क्ष्यात्त्राष्ट्रिया क्षेत्रा क्षेत्र क्षेत्र

मह्न मः विचः शुक्र-देरः मवरः क्षेः चं रः ग्रुः श्चेः छ नवः र्देवः द्वेवः में रः श्वेवः न्हेंदः द्वेषाव देदः रवका क्षे विव देवा समा स्याप्ता देंद्वा सम वरःग्रॅलःचः तन्यस्य विवः पद्र्यः व शेः त्रीम यः ने म्यलाः यरः बहिता देर-महेब्-इर-ग्री-कर-शेर-र्रम। र्यय वर्डम। देग-मब्का र्यमः विनायन सेन नहर न तरे दिना निरहन (1914) मर रोग पते র্মার্ম ক্রামার্মার্ম ইনেরার্মেরের ইন্ন্র্মান ইরাষ্ট্রী ব্নার্রী रक्केर्-२५८ के स्ट्रं न्यगः न्यगः इतः ग्रेग यः दे किराने न्यगः न्यवः न्यवः न कैट·ध·ਘ·શु·बः हे·बः दत्रः हे·कॅटःमैं: दुम धंदे: सुम्तरः श्वॅलः ग्रुं: न्स्रम् केंद्रः न्यम् झ्र-न्रेम याखान्तास्य द्वाराह्य स्थान **घॅ** : न झूब : यः कुषः बळ ब व व षः छ : ठु : ह्य ते : शु वे : शु व व रा छे : न व व : झू नः मुर्वनातान् विवासिताता कु न्यना हरा इर प्रन कु क्वरा स्वाहर **नक्यान्या.य्.य्र-प्र्याङ्ग्रीराड्मेरानुरान्द्रयाङ्गार्ययाङ्गारम्यान्ययान्द्रयाः** गुैलान्यम् हेन् म्हात्वम् न्मे यहंदः हे नः ऍन् बेन् म्हीम्लाविन न्हः तज्ञेल में न् न्यम के न वि र्यं अतह म्या कुरे तकर तमें न मवर । ने वे जे के न्यग् हु निव्नारा वरे है दि क्षेत्र क्रात्न निर्मा क्षार्या निर्माण 지장이 ने हेरा नवमा झर मरार हेर इयरा मा सेरी में देश से कंडर पञ्चेगवाभिता न्यमान्तान्तान्तान्यम् श्चे त्यवाष्ट्रवाशे सावहित्वाशे सावहित्वाशे सावहित्वाशे सावहित्वाशे सावहित्वा

मिन्नाम्यत्य न्यम् भिन्नाम्य ने स्वयात्य ने स्वयाय ने

द्याक्षेत्राच्याः वित्राक्षेत्राच्याः विद्याः विद्याः

श्चिम् विष्यः मृत्रः श्वानः स्वरः मृत्रः स्वरः मृत्रः स्वरः मृत्रः स्वरः मृत्रः स्वरः स्वरः मृतः स्वरः स्वर

याखन हुन हु ज्ञान सका नहा अना हुन। महिनायय। दयन हेन. नक्षःश्चनःश्चनः चेत्राचरः न्हें दः न्वतः नः न्हें तहे निष्ठें तहे हैं हैं दिन्तें . तह्रव चेर् च देवा पालर नर हैं हे के कुल न हैं र नवर वह रा के ल য়ৢৢয়৾৽ঢ়ৼয়য়৽ঢ়ঽ৾৽৻ৼ৾৾ঢ়৾৾৽ৼৄ৾ঀ৾৽ড়৾৾৾৴**৾৴ৼ৾৾৽৴৾৾৽**৾৾৵ৢ৾ঀয়৽য়৾ঽ৽ঀৼ৾৽ঢ়ৠ৾৾৾৴৽৽৽ र्वा त्या बुर्या प्राप्ता रवा बुर्रित्स व ना प्राप्त व व बुर् नन्रः चुका नेदा श्रुवः न्या अव्यक्ता स्त्रा **क्र**-भ्रंताचिर-ह्याताचु श्चिर-शिर-पह्रं श्वयातानु माना हूं . या चुना लूरी रेथा व्यान्यता श्रुरः हे श्रुरः २ इतः यहा स्यान्य स्वान्य विद्या है विद्यान विद्यान विद्यान য়ৢ৾ঀ৽য়ৢ৾ৼ৽৻৽৽ঢ়ৼৢ৾৾ঀ৽৻ঀয়৽৻ঀয়৽য়ৢঢ়৽৻য়য়৻ঢ়৾৽৻য়৽য়ৢঢ়৽য়ঢ়৽৽৽য়৸ ब्रॅंब् ग्रॅंट् बड़ेब्र रच गुब्र पत्र र वैयः क्ष ति दिर्द्ध त्य वयः वये र क्रे महिरामादिन परि यसादम् नस्ययान्यामहिरामादिन स्वास्य वयास्यायाळेवार्यावेनार्सेवाययाळी सम्यंतार्या की भेतायते हे न्या बक्द नेर् छेता महिन पर्देव परि त्यता मन में क्षिया बद्द मिल मुह्त मुख्या केंचयात्रयात्रक्षत्रयात्रात्रहूचीयात्र्यत्यात्रीत्राचिता न्यर सुर पहुन् कु अळे दे पग्र न्यं र र पदिन चेन् की र र ग्री र र ग्री र र र विन चेन् म्बियाम्यात्यात्म् च नहराक्षे महिराह्मे तक्ष्याविषाचेत्र्त्वेत्रायदेः

याव्याक्कः स्टरः श्वरः स्टरः स्वरः न् स्वरः श्वरः स्वरः स्व

मत्त्र-स्न्नियः यत्र-स्न्यः स्त्र-स्त्रे । स्त्र-स्त्रे । स्त्र-स्त्रे । स्त्र-स्त्रे । स्त्र-स्त्त्र-स्त्र-स्त्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्त

축례·육국·국도· 1913 보스·윤·괴도·철국·"보스·철도제·청국·흵·전도제·대… ञ्चरानी जिरादेराने राजेराने विश्वेरा में निर्माण के पाने में निर्म यदे देव सव "स्या द्वया न तुर ही यारे सुद ने द्वर हिर सुक हि.ल्ट.ज.व्रिंश त.वेशशास्त्र क्रूज.र्चय.थ.थ.वृट.पर्येज.ट.रंटा श्रीर. इर के छर लब की वब नि है ल नि र ने निया नि मिल निर हिन के निया म्बर्भ्यः क्षेत्रः क्षेत्रः त्रव्यः श्रुत्रः गुर्दः यागाः दर्भेषः त्रवः धरः वेः क्षेत्रः वेरः । देः र्ग-न्ने स्र-स्मल्याप्य बेर्-रु-धुर-हेलाकु हिंद-रू-र्ने नेर्-सः महिनाय परि प्रिय चनाया महिनाय तमेया देश हिन परिना नाम न तह नवा शुः ह्य र पवा न बुदः तत्र वा ने वा श्वेतवा व्यदः तः चुः चुः "े वे वा न्यायाना सूनाने क्षेत्राया क्षेत्राचे न् क्षेत्रा स्थया ग्रामा क्षेत्रा मृत्या र्चें व के। क्षेत्र याचना चठल क्षेत्र चना तर्दे बता क्षेत्र या ने दना क्ष्र विदः म. १ वर्षः श्रीतः द्रतः दर्भः स्तर् द्रायः स्वारा स इरः क्रुे केरः समातः रदेवता मरः वृवः रदः अतः क्रूरः वृतः क्रमः या वदः ः *ब्रैंद*ा **बॅद**्रक्केट्र-इक्स्पर्दर्दने चेर्-हेर्-हुद्द-बॅरन्सुबर-देद-द्वियःदवव-बेर्-पर'र्र'र्रेर्यार्थरताश्चित् क्रेन्यारान्ता। ने हेराप्तिय यथायात्रान्तात्र य ब्रु.मेंबेट.पंतरयामेंब्रुयाल्य.मेंघेय.पुरायहूच.पर्मा.रपाङ्गा. ऄॖऀऀ॔ॱॱॕॱॸॸॱ॔ॱॴॸॖढ़ॱय़ॾॴ॔॔ॹॶॴय़ॿॖॹॱॴढ़ॸॱॻॱॸ॓ॱढ़ऀॱॷज़ॹॱॸ॓ढ़ऀॱऄॗॱ**ॱॱ क्रें ग्रायायात्रात्रा ग्रायः पर्वे या भ्रेगा धेदा प्रया ग्रियः या ग्रायः ग्रेयः ग्रेयः ग्रेयः ग्रेयः ग्रेयः** ग्रेयः ग्र-न्ने श्रेमयरेयरवर्वन् विन् हुर स्न

न्ना सम्बद्धाः सं रेते र देव सं र न्दः स्ट स्या अव्याद हेवा ग्री साद **स्वाधनः ঽ৾৾ঀ**৾৻ঀয়য়৾৾৾ৠ৻৻ড়য়৻৸য়৻য়৻য়ৢ৾৾ঀ৻৸য়৾৻৸য়৾ৢঢ়য়৻য়ৣ৽ঢ়য়৻ড়ৢঢ়য়৻৻৻৻ मद्गर्याने वि नवर व नर नहेव न विर में र ख्रिया वर्ष कर ल न क्षे मलना नबर है। दर्मन सर धल हर नी पल देव नहेन शुर हिर दे ढ़ॖॱॿॖॖऀज़ॱक़ॖॖॱॴॸॱॴॱऄ॒ॸज़ॱॾॕॸॱॻॖॹॱ**ढ़ॹॱ**ॴढ़ॖॸॱॴढ़ॆॱढ़ॸॱढ़ॿॱ**॔**ॿ पर्यंत ग्री.लूर. १८८। भी. चं.र. ग्री. य. झ. १८४. ख्र. १०वे. ख्रू था. व. व्यवित ग्रीय. **ৡ**ॱਜ਼**ख़ॱक़ॕॸॱॺ**ॾॕॺॱॺॸॱय़ॖॸॱॻॖॹॱॺॿॸॱॹॕॖॸॱॺॖॖढ़ॱॺऻॸॕॸॱॺऀॱॲॸ्ॱय़ॸॱॸड़ॆढ़ हु त्यते : ज्ञा वा वा केंद्रा त्या छ न वा ने दे दे नव यत्र सुन्या त्या दि र केदःसं मलेवा शुः व्याप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स् स्रा श्रामामञ्जान के मार्थि के रामाश्रय के दा व्याप्त मेरे हि हैं। ये न्या मिनीरायास्यासीयामस्यार्मेता "यर्गम वर्गस्य द्रास्य ष्ट्रित्राम्याङ्ग्यस्य वृत्राम् । क्रायाः स्वर्यः स्वरं स्वर त्रेयः मुत्रः केन् : व्या व्या स्टः मृत्रः हिनः ह्या सन्तः हरः द्वा सहरः व्या सहरः व्या सहरः व्या सहरः व्या सहर क्रास्त्री,चल,प्यय, क्रास्त्रा,चीर,चीर,ची. म्ब्रुन् क्रियायाने खून यम्। लयः विवा महीयः लायद्र दर्भः च्रेष्ट म्या पर्ने स्वरं प्रतापन व्यवा ग्रीरः इट्रिंच ब्रुर् चु कु 'केव्'ठ्रा मेंट्र म्यायामा 'यद इयायावया प्रवासीय ह्या नयः वृद्धान्यतः वृद्धवः न्याः विद्याः ळॅट्:अनवानॅट्रम्वययान्यवाह्मव्यवाह्मवाह्मद्रम्यवाह्मद्रम्यवाह्म नगाना नीता ही र क्षिना हें ना नया हैं । हिंदा या ना हें द मुद्दा ना द हुन । द द पान ৻য়ৢ৻৻ঀৼৢ৽ঀ৾৾ৢয়৻ঢ়ৢ৾৽ঢ়৻৻৻ৼৢ৾ৼৼৢ৾ৼৼয়ৢৼ৾৽য়ৼঢ়ৡ৽ঢ়ৼ৻৽ঢ়ঢ়ৼ

हानी स्वार में का स्वार में त्र स्वार स

म्बिः क्ष्यां क्ष्यां

त्वल निर्मात (1925) ल्या ह्या प्रत्या प्रत्य प्रत्या प्रत्य प्रत

नै हेल निवासित म्यान म्यान

न्द्रत्वं व्यात्वे प्रतिन प्रत वया बर्या क्षे पर् प्राप्त मारा प्राप्त अराक्ष अराक्षे पक्षरा वि ज्रा ঀঽয়৽৾৾ঽঀয়৽ঀ৾৾ঀ৾*৽ৼৼ৸৾৾৾৾৾ৼ৾য়৽ৼড়ৢঀ*৽য়ৣ৽৻ৼঢ়৾৾ঀ৾য়ৄ৾য়ৼ**৾য়**ৄয়**ৼ৽৸ৼ**৾ क्षेत्र:ब्रा श्रद:नशुवा:क्षेत्र:ब्रां सम्बद्धाः नृत्वः धरः नृतः। **५:५८ः** न्तेरत्वाधरामरादरेनवाच्चवाधर्। रे हेवा 1912 व्यापित न्तुरा इर्.ग्रु.ध्व.ल्रू.इव.ब.र्टल.५श.क.क.र्टा ५४ ५८। ५४.५८. ृष्ट्या त्रवाके स्तु । इ.स्. त्रवासः पञ्च । त्रवास विकास में म्या किरासमाधिक ला सूरा । वी ह्युय विमा स्राप्त का **इ.य.चे.१व.य.त्र्य.य.५व.य.४व.४व.४व.४व.४व.४व.५व.५व.** ॡॱॸॾॖढ़ऀॱऄॕॺॱख़ॕॸॱॿॖॺऻॺॱय़ॸॱळॅबॱय़ॎॱॾॺॱऄॕॺऻ *ॺॸ*ॱॸक़ॗॸॱय़ॱॸ॔ॸॱऻ*ऀ*ॸऀ রব'ন্ট্র রুদ'রে'ন্দ'। রুদ'নন্ত। রুদ'র্ব, রু'র, রু'র। রুদ'নকু রুম' मामक्याक्षे म्बास्तर इवया दे द्वायते श्वाया मञ्जू महियामा सुम्बन्या मदे हेरा शु ने अपविदान हें दाया अन्। न्द्रिय शुर म्ह लें खेरे क्षेर **बॅ:र्टः।** श्रदःगश्चयःक्षॅरःब्रं। श्रदःवर्द्धदेःक्षॅरःब्रं। श्रदःव्रेरःक्षःर्दः। <u> श्रद्धः पश्चितः श्रृतः श्रृत्या श्रुदः त्यरः दिन्यः स्थः स्तृ</u>

खर्मवा म्वरः तु : नर्ख्यवा : भैरः। नेवः में नः वाववा : श्रेनः न्विरः न्रः। रम्बे अ. कं निन र नर तनायान श्री नाया क्रवा तर या तर र ता क्री पर र र र म् के के व में अरतः विवयः वर्षाः भेषः क्षेत्रः में निरः व मेला वः हे स्वा है। श्रेरः रेते.बु वळव ग्रॅं सं दे केव बुल रमय ग्रे रुयावया प्रहर मक्रक्रवा की व्याप किर्या न में वर्ष किया निया निया में क्राया की व्याया \$\frac{1}{2}\dagger \frac{1}{2}\dagger \dagger विषान्द्रावेदाच्यायादादळववातह्याद्येवायाद्यायवा इंद्राया न्द्राधिराम्बर्गात्म विष्याके देन्यात्र स्था के न्यूया स्वाया न्यु । विषा लश्रार्श्वयाम्बर्गर् निष्ठवादियाम्बर्गरम् नेवार्षि राष्ट्रदे विष्वत्रायाम् न्द्रिन्दळे सुन्या केवा स्वाधिय थि के स्टर्यास्य सुन्। वित्यान्यस्य য়ৢ**৴৾ঀঀ৴৾ঀ**য়৾ঀয়য়য়৻ৠৢ৾৾ঀ৾৾৽য়ৼ৻ঢ়ৼয়৻৸ঢ়৸৸য়য়য়য়ঢ়৻ঢ়ৢ৾৽৸ঽ৾৻য়ৢ৽৽ बदे बद्द व्या ही बहुंद्र शु पहुर के र मेद मृष् (1914) व्राप्त र र र म्बिसागा दे ते ही हिंदा तु व्याप्त हरा हैं प्रवाद देव शुव द्रा मिता हुद सु.वे.पश्च.यवता.यवर.व्या.यदर.व्याया.हरावया.पर्वे.वेया.स्राप्तया.पर्वे.वेया.स्राप्तया.पर्वे.वया. मक्रकेव सदर द्वा की हिंदा निवेश करा या देवे वदा तु तर्या यः वः च र । इरः मृष्यारे र माज्यस्य विषयः में र र । यम् वः मृ भू . श्र्याया विषा ने याया इ. स्र्याया पर्दे . जुया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषय (1921)শ্ব-'ৰ্বি-'দেশব-'শব্দাধ্ব-ৰাশ্বৰ-'দু-'দেগ্ৰ'ল্বা-'দ্বি-'শ্বৰ-' इर.स.५.८.४ वर्षा द्वारा प्रश्नीति । वर्षे इत्या वृत्रा मृत्या श्रीत्र मृत्या न्या भ्रीय क्षेत्र विष्यः त्यायः । मः है वः महे वः हे रहे यः हः रॉमः मः न्मः। মন্ত্ৰ প্ৰন (1923) শ্ৰী:

त्यानेराधन्याम्बर्वाश्चिनाम्बद्धान्या नेवाबद्धान्यान्म्ब **ब्रेग्नन्-त्रः**श्चेरःयः सँगवार् र यरः ययरः य नयः यः हे स्यारः हु ध्वेदःयः न्रः। **क्ष्माधरः हुः**श्चेन ह्यंद्रः म्युटः हुः रह्यं म्यान्य दरः सः ने साम्यादः समानी न्मरः कः हरः तुः श्रेव द्रम्पराः तृः यदेः त्रः यः यक्ष्याः न्दः । मन्दः त्र्वं व र्मर ग्री त्रेष प्रत्र विदान देव हैं है मा है किर दिर। अपकर रेर **बर्**षर्भर्भर्भर्भः श्रेष्य्राच्यात्रे स्ट्राह्म वर्ष्यात् क्ष्यात्रे क्ष्या स्ट्राह्म वर्षात् वहराक्रकराके नदी नद्दार गुर नदार ने के दार दे के तर दे के तर के **すた**に云れ、可うて、多く、多れ、別、と、なく で、ちゃて、多、な、だて、湯、 ロヨて、 **र्या.पर्येल.श्र्येक.प्र.**त.क्ष्यु. ह्य.पर्यट्य.त्र.प्रेये.श्रेये.श्रेये.क्ट..एक्ट...... **বীরা বার্মনের স্থ্রী**বা নের্ছ বারা নর্ভবারা দ্বী ন্ম নের স্থান নে স্থান নর স্থান নের স্থান নের স্থান নের স্থান নের क्रिते.भ्रेन-न्द्रपु: रच-वियानन्त्रयाः नुरा वियान्तर्भाताः नुरान्दर र्वनानी न्वना न्यवानविव सु स्वराधिव। के र्रा हा नवर न्या **८५**तः ग्रे वियानु न्यार प्रदेश्चे द्याळे ग्यायनु पञ्चे रया हे । या न्या श्वेनः नुदुर्ने श्रेन् न्नर्द्रम् वनया स्रूर दिन न्याय स्यास्य स्राह्म क्रेयान्यानरुदादहेगायाः संग्राच्याच्या व्यापात्वाताः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्राया नै:२्वन:२्यॅद:२्नव:यं श्रुव:यव्यःक्ष्र्न्य, हु:जुव:यःश्रुव:क्ष्र्व:जुःवह्रंदेः:

^{য়ৢ৽}য়ৢৼ৽য়ৢ৽৽য়ৣ৾ৼ৽ৼ৾ৼ৽য়য়য়য়য়য়ৼয়৽ৼয়৽য়ৢয়৽**য়ৢৼ৽য়৾৽য়য়য়৻ড়৻৸৽৽৽৾** इस्रवादि मान्यवास्त्रवादारा विवास्त्रवात् रायदे मिन्यवास्त्रवार देवा पर् द्वै-इ-इट्:इंपराक्वेन्दिःक्र्यान्यं दिन धेद-ध-न्यायः दंर-बहुद्व-हिट्। देद्र-बेब-ळ-दंर-ज्ञ-पन्नर-र्ग-पर्नुय-चंर्-र्वण मे-र्वण-क्रुंदे-मं-ल्वल त्रमा न्यमा न्यमान्त्र-न्यमाळ स्त्राशुः तहेत् ह्य यदे छेत् तुन् ह्य रवना है। नक्षे नवना नक्ष्या देव ग्रम् द्रन्य संस्था है वारा वे द्वन ग्री तह्रवा वरः वदः यः दरः। क्वेदः सुन्वा के यः विनः धेवः क्रू पयः देवः दह्रयः इयान्यं त्यान्यान्यम् द्वीते त्रात्रं न्यम् द्वीतः "ষ্ট্র-ম: 1925 মন:ষ্ট্রনঅ:ম্বনঅ:রু:এই:এইব:এইন:बेन्: য়ৢ*য়*৽ৼ৾৾ৡৢ৾৾৾ৢৢৢয়ৢয়৽ঢ়ঢ়৽ৼৢ৾ঢ়৽৻ঽ৾য়৽ঢ়৾ৡ৽ঢ়৾ৡ৽ঢ়৾ৡ৽ঢ় गुर-म्र-ध्रम्याय-रेत्। यायर्र-विर-विराधर-प्र-य-प्र-द्र-द्रवमानीः न्यम् श्वेराम् अन्तम् विष्या भेरा एर भरावे न्धेव हिरा र जिया छेन् बावव धेव ध न स्वाववाय देन घं ने न सक्षेत्र भ्रवाय धं के द सन् ॡदे.चॅर्-र्वणाची-र्वणाष्ट्री:ळं-रॅ**र-वे-डॅग**-बबद-पर-म्शुब**-र्-र्वेद-*** हिर-न्न्व-लेब-स्न्-य-लेग-रेन्। श्रम्य-नेर-विद-मे-न्यद-क-यद-के-प-व्रायम् व्याप्त रेन् "केश्वामाँ न् यायिवा जुला नयर सुनायह्रवा कु वर्षे के देन

न्द्रतः व्याप्तान्त्रतः क्षेत्राच्याः व्याप्तान्त्रतः व्याप्तान्त्रतः व्याप्तान्त्रतः व्याप्तान्त्रतः व्याप्तान्त्रतः मुःद्यतात्र मुनःद्रा नेगः व्या द्यमः देवः सम्याम् वितः वर् बुरातु विराशिया गर्हे रावि र विराय वा के विराह वरा र हिना ह्य.७.२न.नहेय.गु. वनयायानहेत्र.यया मूर्य. श्रुदे श्रुरान हे स्र नन्यवःगुद्र-विःस्तिः न् विग्वायः धुवः नद्र-यः ने ग्वायवः य त्रवि वः यः यः यः वर्। कु:वर्-बे:देग्व र्-र-कु:बुद-ज्ञितेरत्वेल पः गृहेरःवतः हु:गृहेरः युर-२५८-थेर-म्बुर-५८-४५-ल-५वर-थेर-म्बुर-५नर ळ.ब८.५८.वृ.वे.व.८.६४०.वृ.व८.वय.वयत्त्रस्य इ.६्वय.हे.य.पवीच. .. (1928)৺৫.৴ঀৢ৾৾৾৾ঀ৴ৢয়৾৽য়য়ৠ৽৴৴৴য়৴য়৸ৠয়৽য়ৢ৽ঀয়৽ঽ৽য়৾৽ৼ৽৽৽৽৽ ড়ৢৼ৾৽ঢ়**ঽ**ঀ৾ৼৄ৾ঀ৾৾৽য়৾ঢ়ঀ৾ঢ়য়৾ঢ়য়ৣ৾৽ঀয়ৼ৽ঀ৽য়ৼয়৽ঀৼ৽ঀ **२.९८.८३.५.५४.५५.५५.५५.**३५.७५४ श्चर.५५.५५५५.५५५५५ हरःशुरः र्इरःश्रेर् मृबुरःषःमश्चे रशुरःखुरविःचवेः **हवःयःयःयश्चरःयःयः** बाज्रवात्तर्रोताग्रीताबेतामुलातात्वित्ति दित्तिन्ति । स्ति स्वा वर्षात्रेन् स्वावायम् वेन् स्वावायम् विन् विन स्वावायम् विन स्वावायम् विन स्वावायम् विन स्वावायम् विन स्वावायम् *के*°ॅर्न्र-प्रश्चेर-प्रमाणवराज्ञुर-र्माय-वशु-र्-- यक्षे वशुर-तु-वी-धेवः…. वेया ग्युर्या ने हेरा अगरा है। (1930) प्रनामित बन केन मुन ग्वरान्त्रेरानुः स्टान्दे स्थानुराने साम्बारान्त्रेव स्यापनुरान्त्रव सन महर नेर्रम् त्रायम् स्वर्णा स्वर्ण

"त्रःस्। स्त्रःश्चरःत्वरःषीः त्रेत्रःसः। त्र्रःश्चरःषीः त्रेत्रःसः। त्र्रःश्चरः व्यातेः

म्हेलम। गुर-न्इर-वैल-वं ल-न्नर-वश्चर-कुर-कुर-कुर-कर्मा प्र-न्द्र-विल-वं

महन्तियाचेन्-न्मेवात्वा वन्-न्-भूद्रामी-न्नद्रक्रम्। वन्-न्नेवात्वा

निवा हू तिरे न्दा पह के ब क्या मे हे वा गुर में में के ब हरा व्या क्या व्या के वा में के वा

स्या पूरवित्त्रिक्षेत्रक्षेत्रक्षे अराव्यक्षित्रक्षेत्रक्

নয় ৴৸৻৻৻য়

त्रुण्म। मृहः केष्ट्रास्त्रः क्षेत्रः स्वाप्ताः व्राप्यते स्वर्षः स्वाप्ताः व्राप्यते स्वर्षः स्वाप्ताः व्राप्तिः स्वर्षः स्वरं स्व

म्बुन्य। वृत्रः वृत्यः वृत्रः वृतः वृत्रः वृत्यः व

मॅद्र-म्ययाची-द्व-ह्व-प्रमा-या-द्वेश-य्व-विद्य-म्यया-प्रसा-द्वः विद्य-प्रमाययाची-द्वेश-ह्व-प्रमाययाची-द्वः विद्य-प्रमाययाची-द्वेश-विद्य-प्य-प्रमाययाची-द्वेश-विद्य-प्रमाययाची-द्वेश-विद्य-प्रमाययाची-द्वेश-विद्य-प्रमाययाची-द्वेश-विद्य-प्रमाययाची-द्वेश-विद्य-प्रमाययाची-द्वेश-विद्य-प्रमाययाची-द्वेश-विद्य-प्रमाययाची-द्वेश-विद्य-प्रमाययाची-द्वेश-विद्य-प्रमाययाची-द्वेश-विद्य-प्रमाययाची-विद्य-प्रमाययाची-विद्य-प्य-प्रमाययाची-विद्य-प्रमाय-प्रमाययाची-विद्य-प्रमाययाच

11. ゑ'ゐゐ'函'內'절'얼ㄷ'ㅁढ'可吸ゐ'ㅁ'ळेठ'ऍ'ㄱज़ㄷज़茲미'국저' 腰미저'ㅁ'ㄱㄷ' ऍㄱ'⑪'ㄱㅁㄷ'ㅁ랕ठ'ठ८'內쩝'쩝ㄱ'ㄱㄷ'따茲미'국저' 물저'ㅁ윤'蔣ㄱ!

म्द्रार्ष रेरः स्र्रारा न्द्रारा मृत्रुव र्यम्या द्वेंद्रा से । एमा मी प्रे वे राद् यः स्थान्त्रः श्रीयः महत्रः मत्त्रायः महत्यः বস্থীবথা শ্ৰীদ্ৰেষ্ট্ৰেদ্ৰেষ্ট্ৰদ্ৰেদ্ৰ স্থিত প্ৰতি ढ़ॕॻऻ॔॔॔ॹॱय़ॱॺॖऀॻऻ॔ॴ**ॱॸॖढ़ऻज़ॴॹॴॱ**ॻऻॶ**ॸॱऄ॔॔॔ॵॸऻॸॱॴॸॱॻॎढ़ॸॱऄॱ**ॿॖ**ॸॱ**य़ॸॱॱॱ युराने '्रॅंटार्टे हे हार्डे न्र्युग्या**र्ड**याया **र्दे**ना श्चेटा श्रायाय वराषे विटाने ढ़ॸॣॸॱढ़ॹॖ॓ॴॱ=ॄॿॆॴ**ढ़ॖॸॱढ़क़ॆॱऄॸॣॱॴक़ॕॴ**ॱढ़ऻऄॗॴॹॗऀॱॴॿ॓**ॴॹ॓ॱॴॿढ़ॱॸज़ॱॱ** तु:बुर:हेदः। श्रवल:देर:र्शुर:ग्रदल: 58 ल:बेवल:ळ्रा कुल:र्वदः विच.चक्षेत्र मि.सक्.रेस्ट्य.स.क्.स<u>.</u>स्येय.सप्.चे.चे.स.स.ट्र.टे.विच.पस्य.च्र्.. ंचम्।दः भम् मैकाचरु दः महाक्षः रेमः नृधं दः रेगका इ**वका इः** मुवः ८ में गका**केः** क्रवायम्हा विदायस्य स्वतः च्या स्वत्या स्वत्या । वेता ख्या वि पि.च मि च अ.क्रब च । अ.मि. अवर र न में में व करा पि. पि. शुप्त श्रीय में व करा क्रवा य.ध्वथायी.चयाय.सरा

स्यान्त्रः महिरामे विष्या महिरामे विष्या महिरामे क्षेत्रः स्या स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यान्तः स्यान्तः स्यान्तः स्यान्तः स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यान्तः स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यान्तः स्यान्य

ने व्याप्त ने ते ज्ञ 12 के या 22 वे वान ग्राय भ्रम मेया न वे ग्राया । मया स्वाया तर् निर्मादया है । किया र नरा बह्न मी मी मी मी र है । वरा र र मित्रा हेव पतिरता द्वें गता क्रें र ग्रें ता न दुर अर्द र क्रिनता पत्र ता के द्वाता । वयायग्वर न् ग्रम्याम् वेषा श्रम्भीयामुत्य न्या सुवा सङ्ग्रम् मा अर्के वे सन् त्यद्रतारोतः श्रु-ऑदरातायाम्यादेवः क्ष्य पतः क्रेन देवाः धेवः यरा वृत्रेतः । मृतुरः ६ न् नु . तथम्यायाया दिना यदे रया नृ मृतायदे रे साम है न या हुन। तस्यानु न्वरेत्रः वृत्तरः वृत्रयः दे द्याः दं न्यः धरः च गृतः भ्वतः भ्वतः भ्वतः । मन्दा बाव हुर रवाया व देव देव हिन्दार व वव वि.प्यंत्र.ध्यं.प्रथात्रभ्रं.यंवयं.पर्केत्त.प.र्टर.पर्राप.य्युर.यर्टेर.के.... ष्टर: न्दरः मृत्रदः मृत्रद्याः खुव्यः मृत्रः द्यायः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः बर्**द**र्-र्वेग्-क्टे-सॅ-ब्रह्म-द्वर-दंदि-बुद्-कुर्-तु-लर-लल-रूट-व्येर-ब्युह्न-त्मका भू 'तृ का न के न ' तृ 'द में ' हुं न का है ' मुता अहं न व्हार के का में दे र के कर राजि र न नम्न नम् निष्ठ है ज्यायास देव निष्य मुक्त म्र म्र म्य म्य मित्र है निष्य मित्र है निष्य मित्र मि म्रोर-म्रुर-र्गे येग्रायदि र्दे रायहे रावेदायमें द्वारायर्दा रेपवेद *५५*-इब-क्रे-च-त्र्व-ग्रुव-ग्रुव-बर्द्ध-प्रह्म-प्रमुद-प्रकृद-प्रमुद-ख-प्र-प्रदे-----देन् मुलद्र द वर्षेण मीर इ.स. १ एर हिरल हे महिरा र द मी लेत.

इंच्यान्त्रः भ्रूनः विनः च्यायायः भ्रूवः च्या व्यायः व्यः व्यायः व्यः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः

तुषानेनः वनः श्री: न्वरः यद्देवः यः वरः ष्विषः श्रीनः न्वरः यद्देवः येवः । चैन्'मदै'त्वमःहॅन्'ने'ह्नर'मशःहॅ'र्नर'न्र'। **र्ह**'त्रण् बाद्देव. न्याया द्राप्त प्रमात्र विष्या दे दे में मुला निष्य सुना नहे न महे न न्यवःखरः वरः है : के : कुल। ने : हे रा श्वः पठ रः श्वनः पङ्गवः गुवः दबेयःनडसन्देयःमःनदेवःन्नम्,शुग्रयःकःचनः**कःनराः**नग्रःक्वं सम्बर्धात्रम् भुः नृद्धवः रेग्वायस्य स्थाये वे स्रायस्य सुरायः नृतः। यदी प्रस्ता स्ता अनुवासनका अन्या में अन्य मुक्ता मुक्ता में अन्य म <u> २ वम् १ द्यमः श्चे चे २ अग्रवाम् वळेदा वरायः श्चे छ्राः वरावः म्यरावः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्</u> सन्यः पञ्च त्रः वेव : पश्च त् व्याः कः द्रतः मग्दः त्र्वः श्चे , त्रतः कः मृव्यः ... र्बुरल नहर न रूर। "रे हेबा बुद नवल गुदार वेल लग्य रूर सिर चन्द्रकारीयायाक्कामध्यात्रवाह्मप्रमाश्चित्रमायाञ्चेत्रमायायात्वराष्ट्रियायहित्रमा बाह्यरानवानक्षरापद्वताक्षराह्य विष्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या

ष्ट्रत्रुण र्धेर.व.लुर.वर्रस्यकःवाहेंद्रःश्चरःर्वतःचं व्यन् स्वतः ଦ୍ୱ.୯૬୩୬.୬.୬୯.୩୯.୧୩.୩୯୬.୯୯.୯୯୬.୬୯.୬୯.୬୯.୬୯.୬୯.୬୯.୬୯.୯୯ **गुःधन्** त्यम् तः सम्बन्धः विषः स्वत्या मितः में न्यायः मानः में **छैरः तमेवः न्रः ईराः न्यवः रहः तहम् वाशुः तहम् माराः मवहः"** ॥ विषाः न्यायानः क्षेत्रः स्तरः त्रात्रः त्रुवः दिवयः सन्यायः नृत्रेयः त्रायः तन्यायः हैः ८८.०व.क्वाथाळ्ट्रा त्वाचा.झ.५.५ट.ख्वा.ची.अघथा.वं.पदा.ञं.व्याच्या. **चिर.८ मूर्याता इंग्या केंपयाजिर. ४४. ग्रीयाप्त्रिय. तथ. श्रीया राष्ट्र. म्रा अंग्या** क्रेन्'वर्णाहुर'केरान्रा निन्व'र्ण'वृद्धयाग्री'यष्ठ्वराधीर'रव्याम्भूता **ब्रीयाञ्चितः प्रयाणाणु तः दिया । विद्याची ।** मनुद्राचीया सन्नर्भिद्राम् द्रास्त्ररा सुद्राय रतु द्राय हरा। दे हिला श्रुवः नयल. ग्रीव. पहुतालचीया में न्ये र. में स्वीता में में से र. नया विस्ता ॱरॅनिकासः क्रं न् बेन् : इका हे : ब्रन् : द्वारे क्रं क्रं न् क्रं न् व्याह न : क्रु : वहन् र : वः : -**ढ़॔**ॸॱॺॖऀॸॱॡॕॺॱॺऀॱॿॖॆॸॱॺॱॿॆॸॱॿॗॸ **ॸॱ**ऄॸऻ

নিব্ৰানিন্ট্ৰ (1934) শ্ৰম্ দ্বানান্ত্ৰ ক্ষানান্ত্ৰ ক্ষানান্ত ক্ষানান্ত ক্ষানান্ত ক্ষানান্ত ক্ষানান্ত ক্ষানান্ত্ৰ ক্ষানান্ত ক্ষানান্ত ক্ষানান্ত ক্ষানান্ত ক্ষানান্ত ক্ষানান্ত্

①(दॅन्-ग्रे-नेना-नद् ल-स्य-ज्ञुल न्धन्-न्विते-ज्ञु-क-नन्धल-मञ्जेन्त---नेन-नदेश-सर्वेश-सर्वेश-सर्वेश-सर्वेश-स्था-१९)

ब्रैगः ८ ह्रंग्यः नेरः ब्रे कुरः पष्ट्रदः पः कुषः परवसः दर्षः पः पन् रहः । लग्न तर्दा वि'य' इत् भ्रम हु इन्य तर् न भ्रम्य है में न र है है न **बॅ 'वि'रेद'रीये' (२ ब८रा गर्डे 'देय' मये 'रेंद' पेद')** पञ सुन्या पन्य सेद नमून-न्में यानहें न् भ्रम्या स्माया लुग्या न् यें दाने म्या दग्या लिया मेया हा क्षू र देशकें देव बदाधेव लेकात है क्षेत्र शहर क्षेत्र है कें कुल कुकार है कें कि कि कें कि कें कि कें कि कें कि कें न् भ्रेवः हिदेः त्ययः सुन्यात्यः वो रामः नेत्रः देवाः देन् तो तामः निवाः वा निवाः वा निवाः वा निवाः वा निवाः व किन-वज्ञन-स्रवत्राक्षेत्राय-बुनाय-न्यं द-नेनाय-स-स्या-मन्-स-न्वेद-स्रिः-स्रात्येयात्रिय्या क्रि. म् स्यायवतः मञ्जा हि । च्रित्र क्रिया श्रे वा तह वाय नेते विद्याक्षे वृद्याष्ट्र द्यायाना यद्या हे म्यादा नर्ते श्रुवा स्था स्था नद्र-मव्याक्ष्यान्वयानम्यःह्वनि ह्वन्याक्षवारोदाव्यान्। ፝፼**፞ቜ፞**፞ቒ^ኯቜ፟ፙፙ**ቒፙኇ፟ዀ፞፞፞ጜ፞ቔፙፙ**ፙዄ፞ጚቜ፟ጚጜቜ፞ጚቔፙኯቑቑ፟፟ पहलार्चलाला नेवालाक्षेत्र ब्रें व विद्याक्षेत्रवात प्राप्त भव वेवा सिर सर है. हे⁻ळे-गुप्प्रहेंद्रप्तत्रु**र-हेंग-वेग**-एत्र्यान्त्रेयाम्। पर्हेद्रप्यायान्त्रा म्नायर नियम मिल्या मिल्या के मिर्म मिल्या मि বর্ষর-রুপ-রুদ্রা রুপ-রু-রুপ-রুদ্র-রুদ-রুদ্র-রেদ্র-রুদ্র-রুদ্র-রেদ্র-রুদ্র-রুদ্র-রেদ্র-রুদ্র-রেদ্র-রুদ্র-রেদ্র-রুদ্র-রেদ্র-রুদ্র-রেদ্র-রুদ্র-রুদ্র-রেদ্র-রেদ্র-রুদ্র-রেদ

दे.र्व्याञ्चराचयाताभीयातवाताभी में चारा अर्था अर्था क्षेत्रया मुल र्यम्य वया श्वर विवयाष्ट्रिय धुल र वया पत्र उता क्षेत्र र प्राची र वया व द्र-ः भ्रेषाचेयाने । श्रेराविषया ग्रे। याका पर्या पर्या पर्या प्रेषा स्था द्धारा श्र्वायद्य. त्ररःकेदः नहरः श्रेः श्वरः विषयः शुः र्धुरः दह्न गः ३ वा र्स्र देवाया द्याया द्याया स्या हे श्वाया स्या हि स्याया हि त्या स्याया मुडेम् चे मूं व् दिट् केव् वित्रायम्य स्थापः नु मुं कायः नृ वि वि सुलः र्ञन्।वन्निक्नि वर्रर्वमानिकावहराष्ट्रिकारपरिष्ठाष्ट्रनानिः दे-धुर-श्वन पहर-विरा श्वायन्य राज्य न्य पर मेरान्य पर देवा न्दर्र्र्र्र्वायाम्बद्धाः केर् न्द्रिः नेतः वर्रात्वन् यन्द्रिः द्वे त्राय्य्रायदे अवायद्रायदा निर्दे मद्र-वचत्त्रक्ष्र-चरात्राण्या श्रुंबा बद्दा पराद्रवेषा दे श्रुद् त्र्वायाः भेरः भ्रवयः प्रमुव्यः चुः वः म्यारः केरः चुरः क्ष्वाः यः विषाः येवः स्वयः । । यसः तेरः म्र्राण्यव्याचेर् मृत्रुरः त्र्व्रिर्यः तेत्रः त्रितः चुरः । म्बर-चेर्-पदे विकासे दार्य महत्र महत्र मही मही मही मही मही रर वन नहर द्वर य दुर म रेर्।

म्बु-म न्द्र-भ्रे-भेद-म्द्र-भेत-बुर्गा कुर-स्र्य-बुर-स्-न्द्र-प्रक्र-म.के.थर.५इर.५राज्य कर.ब्रुल.केर.के.के. वर्ष. वर्ष्य ज्या कर.र्रा स्राप्त विकार विका मु स्या-र-झ् क्री र्रावर्कर्वत्व्याकु के म्वरा रे हेरा व हार छेव ये हे ये हार पर बह्रं क्षें क्ष्म् वार्ष हे हि त्यपुर शिक्ष वार्ष वार्ष वार्ष क्षेत्र श्री दा निष्ठे वा क्षेत्र श्री दा निष्ठे व्ययावितःक्ष्यः श्रूचः न्यवः क्षेत्रः यः "लेयायतेः हेया क्ष्वः क्षः यः न्तः। म्यारामीद तहतायात्रापास्या म्याराम्यान्यायायाया न्दः दें र तु ते रे ग्राय व द र केवा ग्राय विदा । ग्राय र पु द र भु र केवा केंद्र अप्.शिर.रेर.पकाऱ्चेया.घु.धेव. श्वीय.च्रं.रे.श्व.च.वेश्व.चर्चेवया.धे त्रुकः इंटि.पै.पूर्वेट्रायः श्वांकाश्चीः श्रेत्रः ववः द्वंतः विषः ग्रेका**द्येर्यायरः** । मवरः क्षेप्ववायवर्गमवरः रेव। गुरः र इरः मैका वर्गः र र दिवायवैः इ. पपु अह् र . हूं बेया थे . हिर . खे . शेव . शेर . केव . शे . चित्र केव यथ . हे र . शे नेग्र ५५ अनुयाग्री सन्ति न्विर पत्ति हो क्षेप्र से तार् रर.मेल.रेर.कुषु.मेल.विवी.येथवे.देव.रे चर.मी.क्रूर.पंगील. र्यम्यानु : चःम्यः क्रे**वः इवयः गुरः नृन्धः मौरा तम्**वः तम्निरः नृ**म्यः धः सुन्।** ने भेव नवन में व इवया हर नविक केंद्र राष्ट्र विक हो न महिर रहा ने वा चन नहर चेथ क्रम य रहा गुर-५३८-५६-६५-४-५ वय-४-५ निवर निवर में त्राया में दे वायर निवास में त्राय में त्री पह निवर श्चित्रम् त्रवेषा गर्ने द्राया स्वराधिता अवरादे स्ट्विन हेल्द्धन कुरा द्रस्य स्वाया प्रत्य के दूर् प्रदेश पर स्वा प्रवास्त्र स्वा क्षा विष्य हिन्द्र स्व 7.00

ॳ॔॔॔॔ॱऄ॓॔॔॓॔॔ॱऄॖॖ॓॔॔॓ज़ढ़ॕॱऄ॓ॱॡ॔ॺॺॱऄ॓॔॔ॱॺॸॺॎॱॸॕॸ॔ॱॺॱॸॸॖॸॱऄ॓ॗॱॿॖॱॸ॔॔॓ढ़॓ ॸऀॺॺॱॸॣॺॸॱॸॖ॓ऀॺॱॾॗॕॗॸॱॸॣॻॖॿॱऄॸॱॸॣॸॱॿॸॕॖॸॱॻक़ॖॿॱॿॸॕॖॸॱॻढ़॓ॱॾॗॕॗ॔॔॔ॣॱ ॸढ़ॱॺॸॱॡ॔ॺॱऄॖॖॺॱॻॱऄॸॣऻ

ঀ৾৾৾ঀয়৽ৼৼ৾৻য়৾৻৽য়ৼ৽ঀয়৽য়ৢৼ৽৸ৼ৽ৼৼ৽য়৽য়ৢঀয়৽য়ৢঀ৽ঀৢঢ়ৼঀ৾৽৽৽ न्धॅ तः रेगालः के । प्रणः स्थलः न्दः प्रणातः ग्रॅं लः विषः गलायः गवदः श्लेः वेतः **ॸ**॔ॸॱॻॖॖॸॱड़ऻॖॸॱॹऺ॒ॸॱॺऻढ़ॖॸॱॺॏॱॸॺऻढ़ॱॸऒ॔ॸॱॷॸॱॼॕॴऄॗॸॱय़ऄॱ**ॹॱॱॱ** श्चिरःनृतुरःनीःनगादःयःपञ्चेःपगुरःबद्ययः न्वेनः हुःतुः हुः दर्रे देः व्ह्वःःः खन्नवार्त्ता व्राप्ता क्षेत्र क्षेत २ेषाताः क्षे ।प्रमा : इब्राताः प्रमाल वा चुन् : धुनाताः भ्रेनः र्त्तेषाताः ग्री : सः नै वे : **द्रवाताः** न्ययः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षः बॅय:होन्:पदि: स:र्नेद:ने:न्वा:य:न्बेग्य:हे: वन्'दर्ने:हो:ह्वंग्य:हा:यहेंद्र व शुरन्वि सर द विरुक्त भेदा उरा देवा तु शुरा र छ र शिरा विरू बीया मन् १ दिन केव विवा तु वी पञ्च र पर्वे । पया येव प्रवीया पर्मा ঽ৾৾৴৽য়ৢ৽ৼ৽ড়ৼ৽ড়ৢ৵৻য়ৼ৽য়য়ড়৸ড়য়ড়ড়ৼ৽ড়ৼ৾৽ঢ়ড়ৢ৾ড়৽ৼৼ৽ৼঢ়ঢ়ৼ৽৽৽৽ रदः वर्षा छेदः द्वेषाय। वर्षु कु मलुदः मै सु कं नः द्वेष देण्या भेषा चक्तः क्र्निक्ता ग्रामः सं त्विनः श्रे ग्राम्तः क्रेनः स् त्या त्वाया श्रे क्रेनः स् विद्र्य कुं बहु ग हैं दि न स हुन् न के राम संग्राह हैं या के द गु दें व हन राम

12. 중'대리'급'라'평'월드'대중'대중라'대리' 저도'월드'본자'

우자: 취자: 석제 (1935) শি. 평. 2 서자: 편씨: 존다. 소. 월다. 된다. 다 취소 ······ ष्ट्यान्यत्याचे नेवान्ता मात्राह्म न्याया ह्याया ह्याय बाव्दः हुरः रगः वैदान्नीरः यः बाद्येदः रगः दर्दरः धुन रयः **यः हुतः** तङ्गवः गुवः बहुवः राँगवः श्चः दिनः न्दः वरुवः यः कुतः वेः हें ग मझ्वाशुरामनात्मामझरात्र्रेवान्वराञ्चेवानवराविता देवता विवा देते. १२. घट. यद्यया शु. प्रक्षा पते. क्षे. खेते. ञ्च. यद्ये र. कुषा द्या र. क्षेट्रः बक्र्या-बक्क, ब्रह्ता-र्य-द्वान्य-विश्वान्द्वान्त्र-प्रे-बक्क, ब्रह्ता-ह-विरः.... न्यर कु म्वर प्राप्त क्षु पठर श्वित गुर वेत हर या हुर विरा **दयः** क्षेत्रः रूप विषयः हेराः वेटः यगः (1935) यदः त्रः 6 केराः 5 *ढ़ॖॆज़*ॱॺळॅॱॺॖॾॺॱॾऀॱॻऻ॒ॾऀॻऻॣॺॱऄॗॱढ़ऀॻॱॕॱॸॱॾॕॗॱड़ॺॱळॕॻऻॺॱढ़ऻॖॱॼॻऻॱॱॱॱॱॱ म्ह्रुवायान्वरामदेवरा। र्तुःठवः ग्रीः धेवाद्वुः वाद्राः गा वा बेरान्य। ने देशन में बन्ध से माना श्री वा के बन्ध मान में बन्ध **३.२४. ग्री.लट.**क्षेट.री.चेश्चर.चटथ.ग्री.मी.क्षप्रत्रस् য়৽৾৾ঀ৾য়৽য়ৼড়ৢ৾ঀয়৽ঀড়ৢ৾৽য়য়য়ৠৢ৽য়৽য়৾য়ৼ৾য়ৼৢড়ৢঢ়৽৻ঀ৾ঀ৽ঀ৾৽ৼয়ৼঀৢঀ৽য়৻ देते :बर्-१वट-यः झॅग-ग्रैन-यः झॅग क्ॅब्-यं खुरायः न्रैन् ग्नौनेन्रा स्थाः **ः** च्र-र्ह्रियः क्र्यायः ५र्थः रुवः नर्द्धाः द्वः इयराप्तिं र विता त्रेयता वी श्रामया न त्या ता न त्या ता ने त्र ता ने त्या ता ने चरम्हेर् क्रिस्म द्र्रियायास्य वळवाव्यरामेतु कर्षु भ्रान्ता ध्रमारम्बाद्यामहेरावि भ्रम् ख्रान्य न्यान्तर पर्या वर्षा छ वर्षा हे : इर विद्राय हे दर प्रमेष राम हे दर देवा

য়ৣ৾*ॱ*ঀয়ৼ৾৾৻ৼঀৼ৾৾৻ঀঽয়৾৽য়ড়৾৽য়ৄ৾ঀ৽৻ঀৼ৾৽ড়৾৾ঀ৽য়৾৽য়ৼঀয়৽৽৽৽ महिंदाबह्दारान्दा। व्यद्यायहिंदासुराह्यम्मेदाराळीन्दा। र्माता**शुः हे : ब**र्में **द** प्रस्नेद प्राप्त सुदाः में द्वारा करा द्विया पासुदाः यह्रव हे दिनल १ र हिर सुव रम स पठ य दे नाय में र विय है. म्हेर्म्यवर्ष्यद्र वेराचेयावर्ष्यम् अवार्म्यवा **श.ड्र.**चेंद्र.जय.क्ष्य.क्ष्य.विषय.क्ष्य.पड्रजा म्रेट्रिट्रायश्चित शुदे ने र कया राम्या कुषा ने मार्ने र माय र यह र শ্ৰীপ্ৰ'ন্দ্ৰথ'ন্দ্ৰ'। स.क्रेर.ब्रेब्ब्य.बंट.थर.ब्रेज्य.वप्ष.लट.श्रुट.प्रबे.च्र.क्र.वक्षट.बंक्ष्रेर.श्रूर... नेति.क्ररः द्वेलः क्षुः रं. प्यावयाका यह ते प्वितान्तः यरः यरः नस्तः वेदः नवरः । नयालायर् स्राप्त्या मेरास्र स्वाप्तस्य रावेता परि विराम् राह्या हा बुबा-हु-चुेदि-कर-चेर-पदे-द्विय-कर-ने-प्यय-क्र-क्र-क्र-देर-न्र-। धुय-नर्त्र न वयतः यहः निवेतः सः वैदः पनः (1935) स्तेः ज्ञः 5 हेवः शुःत्वुदरापदे**ःह**रःशेर्ॱस्वंदःक्षं कॅॱरॅवःशुपःवुःपःवेदःग्वदःर्नः श्रेः नर् नदे र वर्ष र के नदे ह ग्रावक्ष व वर र ग्राविय वृद्ध र प्राविय देवे ... अर.मि.धे.धे.मे.दे.दे.प्रस्थाश्च.स्यायानार्यरा केवानरारी उ.मेर देव् यं केल अळे तहला तु व्वेव्या प्रते सुदायते न् च्चित्रा प्राव्य स्वापा मक्सम्यामहेकाने व्यायक र्ष्ट्र वित्र केवा श्रीन मात्रा त्या हा त्या सा प्रताश्चिर् के देश्विता दे निवेष में निवेष निवेष निवेष में निवेष न कर्यात भे में से खर निया । श्री म से या है न से या है न

बेव्रर्गम्वयः र्माररः तु मृत्वः विवा छेन् र्मेवायः सम्वयः मृत्रां रायरः द्र.पर्यं केप्य. कंप. केप. वे. त्र. ख्री दे प्रश्चीता. क्षट. वा. के. यप. वे. वे इत्सःवसः ळॅरा छॅगरा ग्री न्या अन्यानिव निवानिक मान्यान्य निवानिक निवान **डेन्:र्नेतः**पदे:ब्रॅन:घनतःबावतःन्टःळेदे:चन:न्तेन्:रे:लु:न्वन्टःःःः **बॅर्।** दॅव्याप्यसञ्ज्ञासु छ्रास्य व्यापार श्रेर्न् हु : बॅव्यास्य व्यापार स्वा ধ্বান্ত্রীক্রান্স্বান্ত্রীন নি ক্রান্ত্রীয় ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীয় ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীয় ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীয় ক্রিক্রিন্স্ন্ত্রীয় বিশ্বন্ত্রীয় ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীয় ক্রেন্স্ন্ত্রীয় ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীয় ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীযা ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীযা ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীয় ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীযা ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীযা ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীয় ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীযা ক্রিক্রেন্স্ন্ন্ত্রীযা ক্রিক্রেন্স্ন্ত্রীযা ক্রিক্রেন্স্ন্র बैब हरागुरार्डराधेर् बृब्राय क्षुब्रायेराबै (ब्रामा बेर् खूराबेरा) **ॺ॔ॱॿ॓ढ़ॱॸॖॸॱग़ॖॸॱॸॖॾॸॱऄ॒ॸॱॸढ़ॖॸॱॺऀॺॱॾऀॱऄॸॱग़ॗढ़ॱढ़ऀॱख़ॱढ़ॖॱॼॗॸॱॺॸढ़ॗॱॱ** षदेः त्रः बदेः षदः श्रेन् द्रशः श्रुषः द्रन् तः वेनताः श्रुषः वुः नृष्वा पदेः नम्दः • **44.4.22.** ने व्याधर श्चेन् दिया हुया देव दे के निमा धरा के के के दिया धुवा वर्षन् द्वाय बद्धः श्रम्याञ्चः तिर्दरः नृदः तठयायः सः सुः द्वृदः नीः देः सः तः द्रेः यृदः सः सः व्य सिंदी. मूच प्याद्र प्रवादा है . देशवा च मी . सवा प्रवाद विवासी. **ダブ ブブリ** व्रवायः स्वाय द्वाः बद्धः स्व व्याः क्रवयः ।व वहुन।

यान्त्रीत्। विश्व विष्यः विषयः वि

...पर्चश्च केचा.पक्च र.में.पविष्यानषु.प्याश्चितानु.प्याश्चितानु.प्याश्चितानु.प्याश्चितानु.प्याश्चितानु.प्याश्चितानु.प्याश्चितानविष्याश्चितानु.प्याश्चितानविष्याश्चितान्त्र्याः विष्यानु प्रत्यान्त्रः विष्यानु प्रत्यान्त्रः विषयानु प्रत्यान्त्रः विषयान्त्रः विषयान्तः विषयान्त्रः विषयान्तिः विषयान्तिः

· র্মারার্ম স্ক্রম্মিনরান্ত্র্যমেনরার্ম ক্রিল্ডনান্ত্র্মার্ম নার্ম নার্ম নির্মা त्रमत्तः नेरः त्रुं .तुरः नुः कुत्यः पदे .आरः श्चेन् .देवः व्यः क्रेट .क्षेत्रः दिरः न्दः पठता **गन्द**.लर.क्षेत्रयायञ्चरामेषराञ्चेषायदेः मद्याः द्धंतायञ्चरायस्यायम्यः ञ्चेष्-प्रव्-भ्रद्-ळे.चक्र्य <u>६.</u> इया.चे**द्व**य.क्ष्यय.चेचया.ध्य श्रे.**रंटः**। ह्यया. इयाग्री इ.चंश्रुलाचनात्री कुचयार्चराश्र्चाश्राञ्च. **ळेळ.** २ क्रेब.सं.य.बळ.ब्रब.धे.पत्रंत्र.स्रं ८.७ब.यप्र.पत्रंत्र.संप्यायब्या... क्ट.पर्च.त. बट. वया स्.र्चा.ची.चे. पर पर्चे राचयाय व्य. ८ क्रया 10 *ঀৢ৾ঀ*৾৻৸ৼ৾য়ৢ৾৾৾ৼ৾ৼ৾ঀ৾৽য়৾৽য়ৣ৽ঀঢ়ৼ৽ৼৼঢ়ৼঢ়ড়৻৽ঀয়৽ড়ৢৼ৽য়ঢ়য়৽৽ . र्षायाञ्चर तिर्मया मयतान स्रो चर्मात ज्ञेर च्रा म्र र मेर मेर स्था स्रम महुतातस्यानु केनता ह्या हेवाया अत्राह्म ने अवायतानु क्यायान्त 8 छ्या १ वेच चया छर पर्देर न्येया पर्दे रागाव राह्न याव रा हे व्यय ..ब्रुच्यानश्च.च.ह्..प्याक्ट.घ.ब.ह्याश्च.द्यानग्वाक्रियःववा ह्यःपद्वरः रेम नवे जन क्या विवाद नहीं नेया नरा व्यव है र न्यूया AK!

न्राम्या के या त्राम्या के प्राप्त के प्राप् **ঐ**বা 10 ট্রবাট্টাট্টাপ্রামর্ভ**রমান্ত্রামর্লন**্স্রাম্বনান্ত্রা सक्रमः श्रुषः देवः **दः केःव**ः ८ च. ८ च. १ च. १ क्षाः पत्ने वातः हिनः पत्ने वातः हीः हु स्पर्वः स्वतः प्याः प्रवास म्हेरा ग्राटः चत् म्याः विदे र स्वायः है । মার্থা श्च-विद्यानवद्दाक्षे प्रविन्ता स्यादेरावन्य स्वादेवास्त्रायाः **ॻड़ढ़ॱ₹ॱहेलॱॸॕ॔ॱज़**ॱज़ढ़**ॺॱऄ॒ॱॱॻ**ढ़ॖॖॖॖॖॣॖॖॖॖॗज़ढ़ऻॖॣॹॱढ़ॖॵॱऄॗॴॱऄॗॱॱॱॱ महार विवादा हे व स्या विवा कुया यदे । यदा हे द दे दे दे दे ते विवास वा । विवायान हे व. प्राचिता सद्व. श्रीया स्टार्स स्टार्म प्राच म्रा <u>ॅॅंट्रिंग के निय पत्र के या पहें वाया की के ना हैं मरुया पत्रीया र वटा यह राजा हैं म</u> **ইঅপ্রেম্ম নত্ত্র নের্থ রিম স্থ্রু দ্রব ইল্ফাই অর্থ ক্রের্ল স্থা** ब्रह्म: दर: सुय: ब्रह्म: इन: द्वा মধ্ন. ই. ঘঙ্থান হার. **२** पकुर्यं रेरा के वर्षा स्टा विष्य के राम के देश के पाल के बाद के दिल्ला के विषय के प्राप्त के दिल्ला के प्राप्त के दिल्ला के प्राप्त के दिल्ला तम्रोताक्षेत्रतान् नः त्रम्यानी राष्ट्रवादश्यास्तरायाम् नुमान्यासेना सुना **৾ঌ**ঀয়৾৽ড়য়৾৽**ৼৼ৾৾৾**৽৽ড়য়৾৽ঀয়৾৽ড়৽ঀয়য়ৼড়য়৽ৼয়৾য়ৼ৸**ঢ়ৼ**৾

ব্রীকা-ক্র-র্মি-স্বান-র্র-ক্রনিকা-র্যন্ত্রীকা-ক্রনির্বান্তর্শন্ত্রান্ত্রা-বান্তর্শন্ত্রান্ত্রা-বান্ত্রান্ত্রা-বান্ত্র न्द्रान्द्रक्ष्यं स्थान्यः स्वयः प्राप्तः स्वयः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः 型之,到. इसम्बेदेशः स्वायाग्रीः सिश्चायाव्यापदा पता वारावः न्दा বরুশ দার্ম म.भे.भु.भूर.वि.कुषु.प.सूब्यावाचारात्रर.व्रट्रा প্রবা-বা देरामतुग्राप्तान्वरमान्वरम् हे ज्ञा ८ हे रा २४ हेव दूर्य दे ज्ञायाः बर्ह्मण मी प्यर हो र श्रु प्र दिन दहा २००० मा क्षे राज मे मारा श्री मारा स्र राज्य मबाक्रिनवाम्बुदिः नर्मे न् पासु है वा स्वराय न नुवाया स्वराय स्वीववा प्रयाचित्रयाचरार विवया श्राम्या या स्टा मदे र र र य <u>चलकः द्रवाशुः ते १८ ५ वर्षः ५ चलः चल्लाः क्रेकः वर्षः व</u> पत्तुवःळेषायळेद्रः ह्या-दूरः। देव-ळेव-झ-ळेग्या-लग्-तु-व्यापा-पदिः るべきてがてて! म् ळव स्याशु स्र प्यम मेया मे या में वाळव या पत इनक्षत्रम्भः न्यदे सु न्यस्य न्यः नु स्य नु स्य सु स्य स्य स्य ने प्रविवादी नवस्र-स्-स्-स्-स्-स्-स्-र्गान्त्र-त्र-स्-त् **ইনেক গ্র' বি**ন্ধান্য সুধা

न्त्र व्यास्य व्याप्त व्यापत व्य

त्यानेरावा वेवा हरा शुरान् इराशेन् मृत्रा मेवा द्वा परि ञ्चा वा गा नमृत्रत्देव मु अळे वि थेनरा यह न क्षेत्र रंत्र राज्य छ , वि वि वि वि वि वि **खुः प्रव**ाग्रमः सुन्तः भेवः सं त्ययः केवः तुः तज्ञू नः स्वः यानः यान् यान् मे सः बर्स् र-हरा वि.खे.ल्यं ने येर क्षे.यर ए हेर श्रेन्य हर्ष विवाही र मिलर नेवा सर त्या न देव र ही न न र है . येव न म स न के वा लिया हेर देव <u>ॻॖ</u>८ॱॸॖऺॖॏॖ॓॓॓ढ़ॱहेॱॱॶ॔ॸॱॿॖऀॴ ॸऀ८ॱॶॺऻॺ ॳॱॸ॒॔८ॱॸॖ॓॓ढ़ऀॹॱढ़ॼॖॾॹॱय़ॱख़ॕॱऄॱॱॱॱ म्द्रु क्ष्मा उंग्रा द्रा न्तरा विषय है है त्र त्र त्रु त्र त्र व्राविष् विनवायहर् क्षेर हेव वहेल लु नदे क्या मानकृत उदा र्व तु लु व्दःभिवःशः हे गः प्रः। जुः व न् शुवा हा की ने गया न परा ग्री स्व हुवः ब्रेक्प्याम्हरम्पर्मेष न्हेर्रस्य दर्या रेप्तिव रहेव हेप्दिन मुक्तर्रर सम्बन्धानकार व महिना स्वरास्त्र स्वरात्त्र स्वरात्त्र स्वरात्त्र स्वरात्त्र स्वरात्त्र स्वरात्त्र स ब्रुदेश्व कुर हिन् हेन् या प्राप्ता वित्र हिन विव्य वित्र हिन हिन् हिन बर'र्ब स्वाय नेरा छ गुर नेक गुरा शुर न हर ने नगर निर्मा इ.ज्रुच्यात्तिल लट् ब्याल्ट्री पश्चिम्यात्तिल लट् ब्याल्ट्री पश्चिम्याय्यात्म्यात्म्याः श्चिम्याः श्चिम्यः श्चिम्यः

13. च'ब्रेन'न्न'ख्रग'निग'गड़ेल'स'सेल'ख'ञेन'ञ्च-'नेविन'' निन्न'न्न'न्न' च'ल्लग'गड़ेल'नन'न्न्यन्त'न्न'न्न'न्न्-'न्द्न्-' नेव'क्र्मन

पक्षर.दै.य.बुंट.बैंट.चक्षेत्रंपंह्यानेचलाल.चेंबाचूर.ज्येल.चंटाक्षेत्रंचूर. क्ष्मेश्व पर्य. क्षेत्रःपह्यब.चूंबाच्यानंबित्रंचूंबाय.चेंबायाहंबाचून.कूंद्य. बाबीयामक्षेत्रं के अञ्च.चूंद्यातामेषित्रंचूंबाय.चेंबायाहंबाचून.कूंद्य. बर् मुग्राम् इग्राम् हे त्राम् हितासित वर्षे न्त्राम हितासित वर्षे न्त्राम वर्षे न् गुन्य स्व य न्दर दे केव केया श्रिन्य य हिन् तु त्वन्य यदे न्य त स्व . विरमः क्षेत्रकृताः भेषान्यम् स्वान्मः। सुनः द्वेषाः सम्यादहेवः ह्युताः सु चुबबः म. बुवः म सूवः मरुवा हे "तथन्वा या या में मी मी में दे हो के स्टर् शे न् ते' বর্ষ' বৃশ্ব শৃত্ব শুটা আহব শি ক্রান্ত বৃশ্ব শুল্ব শুল্ **वर्षेयःक्ट.**पह्नंबयःयप्रस्चेषःक्ष्यःविःचीरःविषयःतःक्र्याचेत्यःक्षयःच मह्न मृत्यायर र श्रेर हैं मृत्यु अर्क्ष मृत्ये या श्रुर पर पहें के मृत्र <u> इंट्यं.क्रुबंबात प्रियः मुद्रान्त्र वार्त्र क्ष्या मेला क्</u>रान्त्री. विवाय प्राच्या प्रविता न्मॅसप्प-प्-द्रा श्रेन्-ह्रॅब्-श्रुद्र-स्तुर्य-स्तुर्य-प्रदेव-ह्रुव्यय-द्रव्य-बवुबः नते वः नव दः न्वे वः परे: न हवः दिनवः चुवः पः कुर। दः श्चे दः सैयायक्षेत्रापह्यान्ययाधाः भेषायक्ष्या त्रामुलाक्या गुःग्वे राम् **ख़ॱ**ॐॺॱॸऀॸॱॹॖऀॸ॔ॱय़ॺऻॺॱॻढ़ॏॺॱॻय़ऀॱॺॿॸॱॸॱॹॖॆॸॱॸॄॸॱॹॖॸॱॴॢॺॱॾॺॱॱॱॱ मृत्रेयामृत्रुद्राञ्चेराञ्चवात्ययाम्बद्राञ्चेव्यास्त्र्र्नेद्र्यात्रस्त्रः हु८.घर.घड्डेब.श.क्षेत्र. (1838) ज्रूर.य. ज्रुह्मीय घगीय स्वा. ज्रूबिय या. मुलक्त-न्ब्रेट्स-लु-ब्रुट-मुद्द्र-हुल-ब्रुट्स-भेट-। ने-तस्य-निग्दः भन् निया श्चि । इतः अपितः स्वाप्त्रः स्तः । इतः हरा ग्न्तः साम्याधाः श्चे व्याप्त सं र व्या स्था त्या स्वा स् न स् र त्या स्वा व्या तत् प्रवा पर्य या स्वा व्या बळें मृञ्ज्य देव द्वें केश शुन्य महेश ही माउँ तम्बर साव साम देश पर ही """

धतुर्केराशेर्णी तुन्यातन्तर्वेराह्मेयायते रेप नहेंदायायाः । । । । इ.ट.इ.य.यूब्य.युर.श्रु. १ त्व रुव्यय. यूट्य. नगद भव रू **ঀৢয়৽য়ৢয়৽ড়৸ৢয়৾ড়৸৽ঀ৾৽৸৸৸৻৽ঽ৽৸য়ৢৼ৽৴ৢৼয়**৽য়৾য়৽৻ঀৢ৽৸য়৽৸য়য়৽৽৽৽৽ लट. व्यानिटा थ.ल्य.(1030) लूर.श्रेल क्च र.श्रेट.श्रक्च ग्रेथ. श्चरः परः नगरः नगः त्रां द्रां द्रां द्रां स्रे म्ह्रा मुल हरः रेबासर स्वा हे या बेर् रहरा। र र र में ज्ञानव या सवा हे या घेर सा दर् वै : राष्ट्रवः यः ग्रेचेंगः यः क्र्वेंवः यः ग्रेवें का द्वेः यु कार्त्वः स्वयः स्वयः स्वरः स्वरः देवः द्र:क्र:बर्वःव:ब्र:ब्रु:स्वायःयःयम्ब मुवःयह्रदःदगदःयरःयःवीःयतुनः" **३**थ.न्रप्तयःत्तरः पष्टेषः प्रयोपः सेवाः यथाञ्च वायः पर्धः र स्वाः पश्च यः ताः स्वाः ऄॣ८ॱढ़ळ्ळचलॱॾॕ*च*ॱॾॖ*८*ॱॾ॓ज़ॱॻॼॗॸॣॱ<mark>ॺऻ॔ॸॱॺ</mark>ज़ख़ॱॸॣॺॕ**ॸॹढ़**ख़ॱ**ड़ॺज़**ॱख़ॱॺॕॖ**ॹॱ** नश्रू र चुरा हे ' » कुल मदि ' अद ' श्रु र ' मृत्व ' लु ' र्सम्बर ल' दर्मम् के के के के कि दर् नदै केन् द क्वेर कुष कंन व्यार्शन त्याव सु व स्वत्र निवास मान য়ৢ৴ৼৣ৾ঀ৾৾য়৸৻য়৾ঀ৾৽৸৻৾ঀয়য়৸৻৸য়৸য়ৼ৾৴৻ঀৢয়৻য়৴ৼ৸৸য়৻ श्चेन्:तुन:ग्री:यन्द्र:र्वेन:न्द:व्यार्थय:व्याय:न्दःयहण्यःदत्यःकुदे:वगः:: শুইন্:ব্ৰুক্ষা

नै व्याद्वाया श्वा (1940) वर्षा दि श्वेर सुया यहाया रमारामा नेयावया मुतालं मानी मुतारमाव मानेया स्वारामा मुन्द हेया त्र्रत्यः यः त्र्वः देवा विदाधिवा क्षुतः देवा क्षुतः हे वदः ईवः तुः दः क्षेतः त्यः क्षामः वेदः पक्षः हुः यदेः ह्वाः वदेः वक्ष्याः ह्युषान्देवः द्वाः केरः रवः हुरः वीः मञ्जयः क्षात्त्वयः चितः स्वताः स्टान्यतः स्टान्यः स्टान्यः स्टान्यः स्टान्येतः ग्रे.बह्रं.चश्चर.बैंदुःरेशक्ट्रं.बेध्यःवितान्नुवे.तथार्ट्यं धीर. वेषया वनयः इ.च वयः श्ररः जीवायः श्रीरः व्रिवायः स्वरः द्याः च श्रुं ययः श्रीयः व्याः । त्रञ्चेर के च न हें व्य बेर के न व व श श श्रुर्व म न र । इ न व व व स्व स्व स्व स्व भ्रास्ति सरायहना सार रामुला कवा ने ना ग्री म्री सुराय हिंदा का के निदे में रा बिदाने न्ना बदा भेदा केवाका एहें पा केवा या पव दाराय केदा में न्ना बका ग्रैर·देत्र, क्रेट्र, श्रु. श्रु. श्रु. देव्र, श्रृंट्य, क्रे. नया क्रेया क्राया ने व्राप्त वि । यव्राया क्रिया क्रेया क्रेया क्रिया ब्रारं चरः देया वेया ता प्रवयाया पहें वा मिया क्षा प्रवा अवया प्रवया त्रमारा त्या क्रमा शु दिना त्या नहीं प्रविना सहित हो ते निता सेवा ही ता होता हो ता होता **इ.**थ्ये रंह्यारेतलामेकाशक्षेत्रस्य हि.धीरायह्यारेतलाचरु ज्येया श्रुर:-,व्यान्न:वार्न्न:व्यान्नेयानवान्त्रः मुला वार्यः मृत्यान्नान्त्रः भूतः महरासुनारकृता यहेशान्यंत्रवावन्यं रागान्यराह्रा स्वापक्राता वरः यदे नगदा पश्चर नवर पर यदः के पर्या नवरा श्रेष्य विष्याः महीं के देश देर कुल कर र में रल लु मदर है लल कर र हु हम हम हम ह वर् नक्षित्व मा मन्द्र व हिन कर् सुदे तमाय हुन रोय वह वर्ष है र तर्व र्रर प्रम्माय प्रवेश क्रमा सम्बन्ध स्व म्या स्व गुर्म महिन 714

न्धॅन वापन धॅ रण न्यर हैं स्व ग्रील हु उर तहंगक लॅन क होन ले विनयः रेशःश्चिनः पर्यानर्ज्ञिनः श्चेरः दिः नयश्चानरः शुक्षः स्वाः र्वेरसः लु'य मवराव न्ने यळवाळे पायतुमा ठेवालुवागुरा म्हें पातू यथे हा बते.लट्रीर्लारवाचुट्वीवश्चराष्ट्रवादत्तार्यंत्रत्तात्रत्तात्रवहेक्त्वाक्राम् ऑर-देंत-श्रृंत नेर-म्यव-यह्मायाम्बर-पर-श्तृ दे व्याद-श्रेर ढ़॔ॱॾॖॕॖॻ॑ॱॿऀ॔य़ॱज़ॣॖॖॖॖय़ॳड़ॣॳॱॾऀ॔॔ढ़ॸ॔ॹ॔॔य़**ॱॿढ़ॸॱॿॗ**॔ য়ৢঀয়৽ঀয়ৢঀ৽(1940)য়৾য়৽য়ৢঀ৽ঢ়ৢ৽য়য়য়৽য়ঀ৽য়৽য়য়ৢয়য়৽ৼৢ৾য়৽৽৽৽৽ "নামনাৰ্যান্যধৰ ক্ষমান্ত্ৰীন ন্ত্ৰান্ত্ৰান্ত্ৰান্ত্ৰান্ত্ৰী ক্ষ पदःश्चेन् वर्ष्टम् ह्यु तः देव वर्षः के कः श्वे शुव धेन् केरा यः वे खुतः वन् देदः वरामन्व लु दम्या अन् भ्रम् म्यो स्ति अस्त म्या स्वारा स्वा रैयः यः गुः हेव वेः दहें यः यः येग्यः गुयः यः त्राः वा ताः यद्यं या या या या व र्गारः ८ ह्यः शुना नृहेनाः हुः इत्या शुना गुरा। क्षः श्वः व्यते । सः श्वः व्यते । यह न न्मॅन्यार्न्द्रात्रे स्यार्ट्या हे स्यार्ट्या हे स्यार्ट्या हे स्यार्ट्या हे स्यार्ट्या हे स्याय्या हे स्याय्य **ক্র**মার্ক্রমার্কর বিজ্ঞানী থেকার বিসাদ্ধীরকার কীনী স্থারী ব त्यानहेव में र ता श्वीत्या वर्षेव केव सं र स्पर खन्या व श्वीव नि में र ता श्वीव नि सेव र सेव <u> लुका चैका या क्षेत्र दे दे का दुर्वे हका दिवा विदाय विदाय प्राप्त विदाय विद</u> **के** भु द र न देवान हुव शेन विषय न वेव शेन भु म कंप नवर वन क्षेत्राच्याः देवः सः क्षेत्रास्त्रायः स्वाक्ष्यः स्वात्रायः स्वत्रायः स्वात्रायः स्वात् लाच्नात्राख्याः श्रीन् देवाद्यां के सक्ष्यां व्याण्याः प्रियाः मृद्रेवा स्वापः है नविव नई नगुराञ्च क्षा पुरके ना मवदा सुर प्रा क्षिपरा सर्वेदा

मन्या भ्रमासमान्यास्य स्वास्य स्वास्य

द्वायःश्वरः श्वरः श्वरः या स्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः स्वरः श्वरः श्

मृगः चगः नगः नगः नगः गुरः रवः गुरः श्री नः श्री स्र गोः स्र स्र म् न्र स्र शु'दष्ठर:हेरा-दुवेन:हेर्र:हेरा-दब्दर्या-प:तुर-पिर-द्वर-केर्-न्ने-थेय्य . यानगतः क्षेत्र-तृरः वृःक्षनः यान्वरः धुनः वने व्यनः याः केतान् वेतः वक्षाः म्बन्। न्रे वेदः न्यंदः देन्यायः वन्यः वेनः न्यंदः यञ्ज्ञातः व्यः न्यंदः ल'मवल'श्रीन्'मवुद्र'मी'न्यद्र'क्र'म्डॅ'स्स्रल'न्ध्रेव'हेते'हेल'वड्यद्रार् नपुरम्बा में किर्या हे ख्रिया है स्वा में हिरा नपुर है ति होया । न हे ह हैं (1942) यदे हैं 4 हे ल 23 है व विवल तन्त गुं हैं वल धु-पद्मेषायय विदयानर्श्चम्यायात्रन्। त्र्नानु-पठपःस्नि-प्रदेवे हि**-प्रः** चकुर्'यर'वर्'गर'यग्य'वव'य'दव्य'गतुत्'वु'वै'क्रेंप'वेर'प'र्र' ने निवन में बेव हर गुर न्युर श्विर मृतुर में निर्धि श्वि खेव क्व [मर-में]·क्षं प्रत्यकतः क्र्न् न्त्रं व महर् वित्र तुत्र क्ष्य हे तहे व खे तहे व व विरयः वा च क्रिन् स्वरः व ग्वरः व ग्वरः व न्यः व प**र्दितः पश्चान् । श्रेकः** हरः श्रुरः मुद्धरः में निष्ने । प्राप्तः प्राप्ते रः स्र दञ्चेतात्मतात्वरकात्माः <u>च</u>ेताचात्वतासः चात्वतासः चुतास्वतास्वतास्वताः स्वतासः विन्यान्य विकास वि

本記して、 本記して、 本記し、 でいる。 をこれ、 でいる。 をこれ、 でいる。 でい

द क्रिंग्ने म्बरम्बर् त्युर क्रिंव मर्ड में दी श्रेया र्या र्या. <u> ব্রদ্রে বর্ত্তর বর্</u> बुरायाधेरावत्यालु कुते वरानेवाव न्वाची दुवाळे र ध्या उरा। **ॱइ**न'ञ्च'नेवार्शेन क्रुंट में नव्याष्ठि । व उत्याव हट देर क्षेत्र विवास होना मञ्च .क.म.चथा.श्रम् अंपरा म.जेस. ५७ .म. १९ .म. १९ ४ . छेथा व्याप्त .स्या र्यर.मे. अष्ट. श्वं तंत्र वर. श्वं तंत्र वर. हे.मे ता चे र. र होर. अष्ट्व हे.मे र... มูนสารุ่นาสนาอิสาภูาซะาดูผลาศุรานิกุลาสากฏินาการิสานนำนา न्वराबर्द्रभरन्व वृत्राष्ट्रभः क्रायेनरा देवातु श्रेतः क्रुं **हुन** जन न्दः बहतः दहेवतः ईन ने ने स्वतः ईतः वदः ईतः नवदः वः दुनः कुनः मैं भरापन्न व द्वेर प्रत्याल कुटी रे पा वर्ष र पारे पेवा र ब्रेर रेव मा के के कर वेपक हे के के में ज्ञर हु 'य ते ज्ञाय पर । जे प्र कुर हुन् ज्य क्र तहें बरा यर तर्जेर ख्या वि यवर हें य वह र क्रें ज्य हेक्र'र्भ्र, न्वेक छूट हिन्दुन ह्वा ह्वा रूट बहल दस्र न्व्य दर वर वेवक है" नः श्रीर अक्रमा वर्षा श्रुप्त देवे ने वर्षा या प्रेश्न श्रीय श्रीय श्रीय स्था चन् भु न वर्षे नगर् सु वर्षु र शेर् र नव नवे नवे न सु र स के न के सर र

ह्या श्रुवा वर्ष ४ : रेखा केन् वर्षा वर्षा श्रुग्वरूर (वृषा धार्य वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा गुरा भ्रमाञ्चनानीयाय पर्देरादेव सरामह्राने हीरामहरानी व संसद वर्देवे नग्तर संत्राय वरत देवा लु न र इंस सका में र न्याय र देवा मावर चियाक्षेत्रवार अञ्चेत्रवितातक्षेत्रवाह्यात्रवायायाये नेवाव्यवादा मुन्दि । ळेव'सॅ'क्केय'मेट्य अघरानेर ध्रमरामहेरामधियम्भयादमानीर्घेद देग्रान्स्ययः द्वाराकः तस्याः देशः केतः कृतः दवनः स्ट्रानः सः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्व या चर्। क्ष्मा पर र र क्षमा च्या मी ख्या यह र र र र र र या र क्षमा यहर ষ্ট্রিক'ল্রীক'ন্থীন্ স্ক্রুন'অক্ষানশ্র স্ট্রিন'নন্ত্র শ্রেক্ত ক্রুর-দৈ র্মান প্রধান স্থান স্থান बर्देव ग्राया दें द्राचें र श्रुर र छेंद्र । र्मन्याम्बद्धाः श्रीन् मितुरः मीः त्वरताकेते त्वताष्ठ्रतावराष्ट्रच्ये प्रते ताक्षेत्र में केराक्षे प्रताप्ता विवास चतः श्रेनः श्रुः न्यं वः त्रेण्यः नृहः। श्रेनः राज्यः श्रेः व्याप्तवः स्रुः स्वायः त्रेयः मब्बित्त्य मञ्जूर न्म क्षेर विषय चुका है कृषा ख्या की है का व चूरका सामा इवयः नर्भे नविषा द्वया धरा रेता

द्रश्चरः मुद्रः मुद्रः मुद्रः द्वरः द्वरः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्र देनाय बहुदः श्चेयः यात्रः सुद्रः मुद्रः सुद्रः सुद्

क्व.ग्रु.ग्रुत्र.भूर.गर.भर.म्रं त.य.व्वा भ्रत्य.र्र्र.ग्रुय.ग्रुर्यां भ्रत्य. शुन्यान्ता न्धेदादितः हेरा स्वाद्यायदे न्वनः ग्रे श्रीन्नितः स्वा बेव हेर्प्य त्रवा हैर्रे हेव पहेव हैं द्वा रूपा है रूर ठव है बुर-इरा र ब्रेर-इन्यानम् ने वेर-ब्रुर्-पर्च वेर वुर-पर-पक्षर् रे म्नुना ह्या र्या र्यार्य द्रा १८०० हि. यमा पहुन या अवर छिन्। बुर-पिर-र्नर-क्रेब-र्गे-लेग्या वृ-क्ष्रन-य-र्नर-धुन मर्ने-व्य-स्न्य-वया र ब्रेट ध्रम्याम् म्या ग्रीया दुया नगमा ततर सदेया दिया क्रिया स् महराहे हुन वन नर्ये राहे लान्या कर हो रान्या कर हो रान्या कर हो स्व माय बहुद दर्भ हुन इन ने जेर् र्राट अमें हिट क्रूंन केरा वेर से रेर <u>রিমানার্থার বিশ্বামার্থার রাজ্যার রাজ্</u>য 2मर नम् तः त्रं त् तुर । वर र्र र र हे व र वे ते व व व र है । सु के र व र र है हेर्सम्यान्त्रयार्वरान्त्रमान्त्रयान्त्रयान्त्रम् देशस्त्रहेत्राच्यान्त्रम् मुला बुरा द्वरा यहेव तर बार्य पाया मे या पहेंच प व वर हो रापर हेव वाक्षव भन् मञ्जून चुन्ना मानना र्ह्या ने क्षा राज्य स्थित राज्य स्थान स्थान <u> दश्चिम् त्यात्रका नेवा तस्या अक्षेत्र न्यं नः यो नेवा स्या विस्रवा र्याया तस्याः ।</u> कुःबरगलाग्रेराम्याम्। विदान्यग् क्यतार्वेदायादा क्रियान **बेव-केर**-घनाद-ब्रॅव-बुर-पिर-र्घर-केव-रूने-येन्य-रॉम्य-वय-शु-छन्-बुष्महे म्न्द्र वुरायकरापदे स्या चुराहे स्रापरापद्र ति वित् चुरा म्मानः र क्रूगः २७ हेव. सं. यर ने परा च्या हिन्दा विषयः समामान्यः वरः द्वातम्बन्धः श्चार्याम् । त्राप्तम् त्राप्तम् । त्राप्तम् वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः प्रिक्त के प्रवाद । श्रे कि. चेन. चेन विम्य प्रवाद अहित. चेन. चेन विम्य प्रवाद । विम्य चेन विम्य प्रवाद । खेरं प्रमुप्त से प्रकार से प्रमुप्त के स्वार क्षा प्रमुख प्रमा स्वार क्षा स्वार क्षा स्वार क्षा स्वार क्षा स्व म्बेरा**ग्र**ावेदाशुदाद्यम् वैष्य**, द्वा**या विष्य **৺৺৸৶৻য়ৼ৾৻য়৾৸৾ৠ৴৻ঀ৸৶৻ঀ৶৻ঀ৸৾ঀ৸৾ঀ৴৻৴৾ৠৼ৻ৼঀ৾৻ঢ়ড়৸৻৻৻৻৻৻ঢ়৸** য়ৢঢ়য়৽ঢ়য়ঢ়৽য়ৢড়৽য়ৢয়৽ঢ়ঢ়৽য়য়ঢ়৽য়ৢয়৽য়৽ বর্ষা অ' প্রব' গুদ্রা **য়ৢ৴৴৾ঽ৽ৼ৾৽ড়৽৸ঽঽ৽**৻ঀঢ়৴ৠৢয়৻৻৸ঽ৽ৼ৾৴ৠৢ৾৽৻৸য়য়৸ঢ়৾ৠৢ৴৻ঢ়ৢ৽ৼৄ৾**৴৽৽** रैवः सं केरः वः पञ्च तः शुः कषः श्चें वः यः नृहः। श्चः पठ रः मृर्थायः नृष्यं वः रैणः म्बेयातम् द्वारिययाद्वरात्वा महायाद्वरा **इ.स.चरब.व.व.व.च्या** विर क्र.ची.चवु.रवच सरापाइयाह्य. यः धैदः वेषा पहें र रे. शु. पवेदे पकु र चंदः रें दः शुपः ळे रेरायः द्वेषा शुरः यानेना ने नवान क्रेम्पनेन संके के रामिन ने मा के वार्ष गा हु पर्छवा श्रराचे था.ची.क्षराश्चावाववार श्रीताची.ची.क्षरायरवाचिया 4**2**4.341 विटा। बन्नराते रदे श्वापा इयया में अळे दा वद या दटा। द्यमा यन्न श्वी व्ययः ग्रेंट्र. स.च.च्या अर्. कंचया श्रुच्या (1947) प्रप्राञ्च. 3 क्र्या 8 हेव. इर्-रंबन्-नुवास्त्र-रंदरी-इ.धरवा कुर्-रंबर-रंबन-तंबन-रंब-इ इसाने सार्या मान्य क्षेत्र क्षा क्षा मेरा या सारा सामा मने र्यः पञ्च : श्रवाः तवादः द्वेवाः द्वेवः पञ्च दः द्वेवः विश्वतः वर्षेतः द्ववः यः प्रतः प्रतः प्रतः प्रतः प्रतः प है। ज.ज.ब्र.झ्.क्र.खेब्याचचिव.हे.चेट्यापवीर्याचेट्राच्यार्याचा ञ्चन्यायमाञ्चनारक्ष्याः हे सु द्वा के निनाय अक्षा ह्वा प्रमेत्र स्वीताय से मुक्

र.ब्रेट्संचित्रप्रेथ्रप्रह्यार्थातान्त्रानुष्रप्रहेष्राम्ब चन स्वयः वैय हप हरा ह्यार वर्षा न स्वयः वयः पद्वः श्रुरः हु केरः ः बर्गल ६८. धर. बी. सं. ख्रुव हें हें (दे. क्र. ख्रुव हवा ब्राया नेरा) न्मा हे हुर थे ने स ह्वर पहेंद्र (हे हुर र या संदर हेर) विर विदेश ग्रा-द्राञ्चेद्रात्यात्रवित् वहेत् केत्राचा व्यन्यायाः विष्यित्या विषयायाः विष्या र.ब्रेट. इब. स.क. इं.ट्य. व्रिट्य. च्रिब्य इट. क्र्बया परि. क्रब्य. मह्यारवर तर्रे मा बेरवार ग्रा देवा वेदा स्वा मिरा ग्रीया सु मा ग्रीया स्वा म्या मिरा ग्रीया सु मा ग्रीया स्वा रहिद्रारत रूप में राष्ट्री र क्षेत्र हो र ला न दें रायदे लाल मा न राधर हिता हो र स यानम् न्यार्मन्य यता ३ राया चे न्या पहुरावि व नहें न् शु व्यन् रे त अम्मान्त्रम्याः अम्मान्त्रम्यः द्वारः द्वारः स्वारः न्वारः न् उ.ब्रीट.पाः विश्वशः वृद्धन् है न्हेर-ब्रेन् न्वृताः युवाल्याल्यां अत्राज्ञाताः व्याद्धाराः व्यादः व्या चेन्-न्ननरान्त्रे-वर्ग्नन्द्वन-रम्भन-येगराङ्ग्रन-ग्रीयरान्नेन-म्रीवन-रहिन-लूट.चयान.झे.झे.चन.कब.प्रिना.झूट.कु.चया.झेव.चटा.पराटया.कुब.र्स्ना. च्यानवेयापदे सुराद्ररया हे क्या तुरात के विष्युद्र विष्युत रह्य विष्युत्र ग्'तर्ने व कुते ग्रॅं रायमें पहें व पान्या ने र व श्व व व व ने त के के पाय स् ं बुपः रङ्गवः दें र ङ्वःवयः कुमः क्षु रः व्रेण विवयः करः ववः यः ग्रें रः र्मेयः ৾ঀৢয়৾৽ঢ়৾৾ৼ৾৾ৢয়ঀয়৾৽য়৾ৼ৾৻৾৾য়ৢ৾৽ঢ়য়ৼ৾৾৻৾য়ৢ৽ঀয়ৢয়৾ঢ়ৼ৻ৢয়ঢ়য়৸ঢ়ৼ৻ৢয়ঢ়য়ঢ় ै. न्यातः प्रह्मा की 'सारव' सं 'स्या हुन। या विदः विनयः को नः श्री विना निका

<u>दे रहेल प्रक्रिय श्रीय मिल</u> प्रवेश प्रदेश में वर्ष हैं ये व्यक्त हैं मिल क्रुट्र-मृद्धि-र्द्धः यदान्यव्य द्वान्य के मान्नी-दिन्त्य के वाम्युट्य देर-दःश्चेद-व्रुव-वङ्गद-दश-द्यय-<mark>थे-वेदा-ग्रेदा-वर्व-वदे</mark>-यन्। हु------नन्तालुन बेनवामान्यति न्त्रकातु सुर्वामा न्वयाय न्यानि नाते । ळ्ट्य.पहुंब.वि.वेट.ब्रैय.शे.वे.चचट.ज.चेय.टटा *वेट.*ल्य.कु.च्र. त्त्राद्य:क्र.प्रवेष:विय:पश्चा प्रम्य:व्यान:व्य:क्रान्तःवे:य: गुर्-भे-ने-ने-नेन-हे-हुर-भे-नेय-बुन-नह्नव-न्र-। युर-नर-लं-जुन-₹-ईल-क्षेत्राच्ना:ख्रेत्रावासः श्रुत् मवास्यानुः वनः न**रु**त् वास्रुवानः प्रेरः " **9े**व'ऍर'सदे'र्रे ग्रांस'क्रग्राहे'वे'स्या (1947) ह्र 3 केंता 8 हेवाग्री" वर्षेष् अत्याचन रार्या न्वराया केषा वर्षा वर्ष क्षव रेम लुबाय रेन।

क.प्य.स्.थक्ष्य.पंच्य.पं.पक्ष्र.पं.पंच्य.पं.पंट्य.तः ± 2 .च्यं त्य.पं.पंच्य.पं.पंच्य.पं

<u>र्</u>जा-सुत्य-हे-पर्यादत्व सः नेदः चेत्र। अवः क्षेत्रः वापवः क्ष्यः व्यक्षिवः राग क्षेत्रः सुका मनिम्कार्मेर पहुंच प्रमुद्द प्रमुद प्रमुद प्रमुद प्रमुद्द प्रमुद प्रम क्रुद्र-मृद्धिः या व्याप्त स्त्राप्त के त्रा क्षेत्र मृत्या स्तु प्राप्त प्रमा म्रोनायः हेराः ह्र गयः यहायः वयः शुः सुरः यः यहः विषः ग्रुयः यं याः स्वायः स्वायः । न्र केदे न्र वा हं वा वा न्य न्य क्षा वा न नर्ग्रेट्य व्रुयः यः क्ष्मः धेव यरः इदः बैदः । अनयः नेरः कः यरः व्रवः मन्यः ळे प्रदे र्यद्यः गृव्यः शु "सु र्याग्यर्यः र्याग्यायः याप्या । पर्रुः धुग बिव व न मर धेव। र में प्रत्य परी क्षेत्र ज्ञा । इ तरी बी र में व ब्रन्रह्म व्याप्त व्यापत व 원다.다. 함도.

स्वायास्य वर्षा वर्षेत् व्वाया ग्रेता

रः ब्रेट्-विच नष्ट्रब-एह्य-न्ययाचे क्रीयानग्रॅट्यायदे वाद्या हुंया**ःः** न्मॅं व: धरे: न्में वहुव: धः इ अषः विंदः विंदे वे छे: रमः हु: दवर वराः रः ब्रेट: न वें व: पदे: क्रें | पट: वट: यवन पदे: श्रुट: व्रः चें द: दसन पहु: हुन: * *ने न्वा* महुम व्यार्थ वा वश्वा महमा विषय विषय विषय विषय है । ঀ৾য়৻ঀয়৸ৠ৴৻৸ৼ৻ৼ৾৾৾ৼ৾৴য়য়৾৽ড়য়৾ৼড়য়৻ঽৠৼ৻ঀৢ৾৽ঢ়ঢ়ৼ৾ৡ৾৻ঀ৸৻৾ **रे**ते:बद्यतःपत्ने,पश्चेरःश्चरःस्वतःस्टरःस्टरःस्वतःश्चेवःबद्धवःपत्रःत्वेतः रैट:र्ज्ञात्स्वर:र्ज्ञाचें चुराबद्यर:रोर:र्व्यण:याध्य:वेदाळव्याळेव् :: ĕ৽য়৽য়৽য়ৼ৽ৼ৽য়৾৾য়৸ঽ৾৽য়৾য়ৼ৽য়ৼ৽ৼৼঢ়ৢ৽য়৽ঢ়ৼ৽য়ৼয়৽ঢ়ৢৢ৽য়ৣ৽৽ पकुष्-<u>दर-ब</u>ॅश-ळेष-२ष-ळेष-श्र-ळॅष्याय-ऍष्यय-६४०२ प्याय स**-**ळेष------ष्ट्रतः ह्रम्य दर्भमः न इयः चैयः धे. ल.र. नदः मवयः श्वः चे र। वर्द्र र.वः ब्रेट्यायद्भरः मुलाम्डेयाः कृतवाः शुम्वायः सम्मान्ने मान्यः केवः समान्ते मान्यः कृषा चर्षा संग्रान् के व स्टि हे सार चर्या प्रया में न की खेन निर्मा स्रा शु'वि'सं'वञ्च रावयावेयाज्ञयाचेंदातु'न्दिनाज्ञुरायान् वेंद्राधदे उद्या हे बर है यान रेना

14. 47'8'7858'4'4'4'5'35'3'5'8'45'4

다다. 보고 보고 보고 하나 되고 하나 보고 하는 다른 보고 하는 다른 사 가 하다. पदव कुलरेट सुन्य द्वर ची तहेल प नेव पवेव द्या वर है है व बिट-दे-हेब-बे-धम (1947) यदे-ज्ञ-प- 10 पर-केब-द्**यं**व-ब्-ज्ञ्-----त.रंचर.र्थें च चर्र.रंच.रंट. व्यव क्ट.कर.विश्व.वेच.च हेब.क्र.रंचला रैबान वि श्वें बाबन्य पर त्येया हुर एट बन्य र नें व क् न्यर श्वें या मुलामकराक्षराद्वराह्मना विपाळन्या साचेरामा श्रीना तह न्या गुराही राजा क्षे⁻रे'ग्'न्र-्न्डैव्-हे-स्वायात्यः हॅग्'विच-तु-द्याः कु'वेयानन्। युरःः रॅव.री.श्रेमक.र्रेम.प्रं.की.मक.र्रमा सम्बन्धन्या श्रेव.र्म्मवास.क. र्सम्बर्धरामहिंदाळेदाञ्च मानी श्रुवि देवानेदाखादि । स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व द्याययाश्चर क्षेत्रा छ्रद् यार वया छ्रदः ह्य छ्र वय या व हिरापदः न्वेयः याके प्यादा खेत्र माने वा विषया स्थाप स्था मुलारेराखन्याययार्ष्ट्वार्स्ट्वार्स्वार्स्वार्स्वार्म्य ८वायम्बर्यायाः स्रेराला से राजा **र्रः र्डेक्**हें। कुं म्रः र्षम्यः र्रः रद्य द्वेष ग्रेयः र्वरङ्केरः वहवा नेरः मर-कुन-श्रुर-वेंच-परि-रे-श्रूर-कुन्-प-रे-धेव। दव-ग्रुर-पर्वत-कुल-रेद-**ૡૢૢૢૢ૽૾ૡ૽૽૾ૡૻ૽ૢૼૢૼ૽૽ૢૼ૽ૢૼૻૻૣૻૻઌૻઌૻઌ**ૹૢ૽ૺૡૡૣઌ૽૽૽ૢૢ૽ૺ૽ૡૡૼૹ૽૾ૹ૽ૢ૽ૢ૽ૢૢ૽ઌ૽ૻઌ૽૽૱૱**ૻ૽ૻઌ ढ़ॎख़ॖॸॱॿऀ॓॓॓ढ़ॖॗॖॖऀ॔॔ॱॹॱऄऀ॔॔॔॔ढ़॓ॴढ़ऀ**ॱॿऀज़ॱ॔॔ऀॱॳ॔ॷ॔ॱॺॷ॔ॱॺॷ॔ॱॺॷ॔ॱॿ पहेब् ब्रा वर्ष वर्ष द्वा द्वा द्वा द्वा वर्ष प्राप्त के कि वर्ष के वर्य के वर्ष के वर्ष के वर्य के वर्ष के वर ववः वैरः यः वैः यश्यः गाः वेदः हुरः नः न्रः । श्रृययः ने रः ववः वैरः में : वेवः हरः 'गुर'र्इर'शेर्'म्बर'मैल' वर्'ग्रे'स्टर्'र्द्रव'स्म्बर्या धे'मुल'र्र्'दर्मे '''' न्नॅल-ॅ्व-बेन्-ख्न-क्व-पन्न-छल-छल-छन-द्व-क्वन्त-पन्न-वन-

तह्न्याः सः नः त्राः यः च्रुयः सरः ङ्ग्याः तुः त्रुतः केरः तः न्यः न्यः स्तिः व्यः स्तिः व्यः स्तिः व्यः स्तिः ग्ल्रः र्रूपः के कॅ के स्वुः सुर् हैरः रूटा। र् चैकः है वे ग्ल्रः रूप**के के के न षॅर्-वेर्-क्षं-इबक्-पञ्चनकःहेकः वर्-ग्रे-क्ष्रः देव-क्ष्र्वकः नक्षः वर्-न्-हु-धेर** र्यम् चेन् चु 'धेव ' खम्ब क्राक्षेत्र' क्रेन् ' वेव ' हर ' गुर ' न् इर ' शेन् ' मृद्ध र ' स्व **ब्रॅब**्बराङ्गमराद्विरश**र्द्धरा** कुरानी स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्य येग्रान्वराया अर्। छेर् सर्ग्राम् वया गु निहर हे हिर मेंर *ॱ*इर। कृंदः**गॅ्र**न्तुःम्कतःकॅ्राक्षःन्देतेःम्बुदःन्देनःम्बरःमीःसम्बरःस्यः दॅगालु :ञ्चनःयः न्नदः ध्वुगः नने : स्वः खगवा बैः नवे : ख देते : मुलः वः रूं :र्रेवः **ढ़ॖज़ॱढ़ॖॱॸ**क़ॗॕॖॖॖॸॱॸ॓ऀॱळॅॸॱॸॕज़ॱॺॱख़ॱढ़ऄॗॱॸॱॸॱॶ॔ॴॳॴॱॸॕज़ॱढ़ॖॱॸॕॸॱऄॗॸॱॱॱॱॱ **पर्वतः घटः परः अः** देते : कुरः क्रुंदः न्वेतः खुव्यतः क्रूंदः पहेन् : यः अन्। रैर:<u>ज्</u>ञ:प:पवि'क्ष्ण:र्खयायस्त्। दे:हेरा:र्चुद:हेर:पर्क्रुट्:दे:ज्ञ:पराः ইন'নহ্ন'ৰ্ব'ব'ই'(1948) মই'ম'অ**ছ্ন**'ড়'ক্ক'ন্ন'ন্কুন্'ইন্'র্ ষ্ট্রীর-শ্রেশ-দ্রবাদ্য-রিদ্য

क्ष्याप्तः क्ष्य्याः क्ष्यः क्षयः क्ष्यः क्षयः क्ष्यः क्षयः क्ष्यः क्षयः कष्यः क्षयः कष्यः कष्यः

षाकेद संन्द्रेयामहोद्गानस्ट्रियाम्याम् हिंदामहोत्रम्य देताला वे रे.गा.र्टा रड़ेव है। हेव.री इर.री.लूर.सप्टी.व्रि.स.क्रप्टी.हेय. दब्दयःयः कृष् चष् वष् वषः द्दद्यः श्रुषः रवः तुः श्रुषः वषः वद्दः कृषः व रु-श्री-माल्द्राची त्यया क्षया दे र र या या ची माल ही ते ही र पर पहे वा वया " ह्म.त.क्ष्रुः ईथ.पंचर्थरत.कुषे.चेब.धेय.पक्षे**ब**.घर.त.**८८.**। विद्रास्त्रवायायाः क्षेत्रयः सुद्राप्त्रव हरावी वायरावरे क्षेत्रवाया द्रित्वया द्राप्ति विव मिर्-श्रे.लून्-हेनयान्नित्मः ह्व.श्री.वर्षे-ले.यर्न्नवी.व.ही.वर्न्यानाः ब्रेल ग्रेल क्रेन क्रिक वस्यानु छिरावतु र छेर् र व्यापा वस्या अव रेश व्यापा शुर यः ने 'न्या मैया वव' केर' तु 'यकत' क्ष्न् 'यन् 'यन् 'या वया श्रीन्या बुर'मै ने ' न्हर्वित्वे द्रायम्बर्धित्याष्ट्रेत्रा श्रीत्रावित्वे व्यापायाः वर्षे याः (1949) वृद्धैः त्रः ७ परः क्षः यरः परु तः स्र्नः वैवः कृरः वैः न्र्यं वः देतः । ळॅट्या हॅ नेया नेटा मुद्दामुद्दा के तेर् के या के के विद्यास्य हें द बैन्द्रः व्यत्त्वः ह्येतः तत्तुत् च्याः नेतः। त्रुतः वृतः वृत्वः व्यवः पर्वत् प्रतावित्राचेरामान्द्रेतासु पर्वत्ताता के कि के प्रतान प्रतान के प्र ঈ্রাশ্রেমের প্রার্থিন বিশ্বের বিশ্বর প্রার্থিন বিশ্বর প্রেশ্বর প্রার্থিন বিশ্বর প্রেশ্বর প্রার্থিন বিশ্বর প্রেশ্বর প্রার্থিন বিশ্বর প্রেশ্বর প্রার্থিন বিশ্বর প্রেশ্বর প্রার্থিন বিশ্বর প্রেশ্বর প্রার্থিন বিশ্বর প্রেশ্বর প্রার্থিন বিশ্বর প্রেশ্বর প্রেশ্বর প্রার্থিন বিশ্বর প্রেশ্বর পর বিশ্বর প্রার্থিন বিশ্বর প্রার্থিন বিশ্বর প্রার ग्रेते र्राप्ति तम् पायदे । दर । वर सु री पेर्न दु पहर हे सद्द रुस त्रेयस्यः वेदः क्रीयः मृदः क्षेत्रः स्वि : व्याप्तः वि रेयार्या हुर मेंग रण वानमंग हुण हुर वर्षर मेवा दर्र त्वन हु छेर

प्रतः त्रां त्र त्रां त

यात्रात्रात्रात्र्यात्रात्र्याः व्यात्रात्र्याः व्यात्रात्रः व्यात्रः व्यात्यः व्यात्रः व्यात्रः व्यात्रः व्यात्यः व्यात्यः व्यात्यः व्यात्यः व्यात्रः व्यात्य

यक्ष्यत्य्वायान्त्रितः श्रु विदाले यापदे के न्या हे ता क्षा नया ला के न ग्-र्ट-र्वेद-ह-पद्द-ब्रुय-र्ट-तिब्याना वि.स.क्ष्ट-ह्र्य-प्यट्य-नहेब ब्रायम्या क्रिया सरास्य प्रमान्य स्थान्य য়ৢ৾৾৾৾৾৾৾৾৾৾৻৾৽ঀ৾৾৾ড়ৼ৾৾৽৻ৼ৾ৼৼ৾য়ৢ৽ঽৼৼ৾য়৽ঢ়৽ঢ়ৼয়ৢ৾য়ৼয়৽য়ৼঢ়৽য়৽য়ৼঢ় *६८ ७.च६.च६८७.चॅ.च.च्.च.च.च.च.चच.च५.च५थ.च७व.च७व.च.च.च.च.* वनाः छ । वरात मुरा श्री वर्षा में प्राचिताः में प्राचिताः **ダボイ カナ**リ *क्रेर*-पङ्गेब-बावब-ाव-चाय-ॲवा-विका-ठ्यां श्रुवाका-वा-पङ्गेब-बका-छीर-पञ्चित्---दॅव गुरःगुरः र इरः बै: र बरकः बैरः न बुरः नैवः गुवः छ्रयः य:रेरा भ्रॅग'यर्श्वेद प्रकृत श्रू*र'र्न् चुर'*गे'वॅर् तु'यर्ह्वर्यये'बै'र्रग्रायद्र'अव्या' पदै-र इव- मुल-रेट- शुन्य पदै- हूँ पया सुन्य अवद- द्न अवद- पशुन्- दे **४ॅ५**ॱ५६^५ न्दाबुर-५ॅ'क्चेर-६व' धंदे' बेरा-कुल-ध्रिय-ळंद-ळेव-धंदे-वद-----**ह्धंत्रः संग्**रन्**षेत्रः प्रदे**ष्ठा स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या 27.23Z. [म**ञ**राःबैदः क्षेत्रः श्रेः न्यद्यःश्रेत् : मृद्धः स्वीःश्वः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः न्दरः वर्षः रे नेर हिरे हेवा २४ हेदा करा वर्षे वा व्याप्त विषया

त्रुं र बेद्राया न्द्रा विदानीया वर्तेया व्यन् तेर श्रुं ने वेद रेगवा विग् **भःगरः देते** द्वेलः दञ्चन्य दरः श्वंतः न्यंतः न्यंतरः वः यः त्रः । हः लये न्वः **बाबळें**नालयास्याने ग्राम् स्थितः न्वयासुन्याल्याल्याळेना पदी ने पादर्वेता **ๆๆ८:**वर्द्द:पर:वर्दे श्चर:श्चे: १००:परा २५०:५: व्हर् र वा न्या श्वेरः । **ग्रुर**'य' न गे भूग ने द र दे के किया अर्दे र वियय सुग्य क्रें र क्रुद क्रें द र र के **७ त**.पव.र...र.चे.हेच.श्चल.श्च.लर.चे.ट्र.श.क्च.ला सम्मिन्युत्रःगुद्रःश्चेन्द्रः"देशःवृत्रःवृत्रः द्विः द्वेन्द्रः भ्रवतः **৾৲**৲৾৻ঀ৾৽য়ৢ৾৻৽ৼ৾৾ৼ৻য়ৢঀ৻৽ৼ৻য়য়৽ৼ৻য়য়ৢঢ়৽য়ৣৼ৽৻য়য়৽ৼ৻৽ঢ়য়য়৽৽৽৽৽৽ **र्र**-सुल-त्रम् तर्मर-ळेत्- दश्च-त्र-चुत्र-हे-तर्दर्स्यः द्रम्य-त्रम् त्रम् त्रम् त्रम् त्रम् त्रम् त्रम् त्रम् **८वॅग**ॱकॅयःच्चेन् प्रते चु 'प ने 'पञ्चप स्या हुप के 'न वे 'स्वा देव से के ''''' मक्रुन्दे ले परी मुंलास्य होन स्रुया साने ने ने न कर सर् श्रु ही **हर**ाग्रेजःचगदःवनःवीःचगदःक्र्यःन्वीःक्ष्वाःदेवःचःळेःळ्यःवद्ग्यःचगवः चलना अन्य सेनया शे. केन्या या स्मारा हिनाया हेना (1950) ख्रु. श्रि. ८ ह्या 22 विवाल्ला स्वास्त्राची विवाला स्वास्त्राची स्वास्त्र हेराशु'न इर देवः স্বব্যস্তুর বৃণ স্কুদ শূরি বেধন শ্বন দিন বিদ*েন* দেশীকা শূর্ব প্রবু স য়য়৴৽ঀৢ৶৽ঢ়ৢ৽৽ঢ়ৢয়৽ঢ়য়৽৸য়ৼয়ৼয়ৢ

क्रुवःबन्नतः नृषेयः च नृहः। व नृतः दिः वेषः कुयः छिवः करः केवः यदेः **वटःनटः**श्चरःस्वान्तुनःसर्वःकेट्रानुःश्चन्यःस्वाः(1950)स्रदेःस्वनःनुयःः **য়ुॱऄॱॸॺॸॎ**য়ॱॸऄॸॺॱढ़ज़ॕ॔ॺॱॸॺॻ॑ॱಹॸॱॺॸॕॱॺॕॖॻऺॺॱॹॖॖॱॸॣय़ॖॸॱॸॾॕॗॸॣ*ॱॱॱॱॱ* न्वर्णः द्वरादे ने इंदर् हेरा हुना सन् र्यम्या दिन् की वहाँ देशः देना ৾য়ৢ৾৾<u>৾</u>৾৾৴ॱय़ॱॸ॔*ৼৼয়*ॱয়ৢ৾ঀ৾৾৽ড়৾ঀ৾৽ঢ়৾৻৸ড়ঀ৾ঀ৽য়৸৽ৼৼঢ়ৼঀ৾৾য়৽ यणः ब्रेयः ग्रीतः बळ्ळ **वः कः बदः यः यदः तः न्दः।** न्वणः श्रुयः चकुरः है 'न्वन् क्षरः नवरः भः न्दः वेरः न्वनः व्यन् व्यन् । व्यवः क्षन्वः व्यन् । व्यवः क्षन्वः व्यन् । व्यवः व श्चॅर**:ग्रेर**:पर:प**र्हर। वर्तुव:र्-श्चॅर**:पविव:पदे:स्र:श्चूराग्रे:ईनय:४ूंट: ষ্বা (1950) মবৈ স্ত্রা 10 ঐব্য 7 ঈব্ ঝ ব্ মন্মান উন্ব্য ন্ স্থান <u> न्यम् गैराकमः अर्देरः नृसुमः यह मः चैनः यर्द्ध गराने । यद् ग</u> गर्डे पुग्रान्यग् न्राध्यान्यग् सः क्रूटामतुवामम् राष्ट्रान्म न्राह्म । स्राह्म

विश्वया द्वित की त्या श्रुद्र विद्या निष्ठ निष्ठ विद्या है । द्वित की प्रविद्या विश्वया विश्वया विश्वया विश्वया *न्नरः ततु रापवे "न्वम् प्रंन्राची राप्त्राचि राप्त्राचित्र* ন্ত্র: 10 क्रेब: 15 वेब:क्रम:बर्ने:ब्रॅन:वर्न्य:ब्रंचरावर्न्य:ब्रंचरावर्न्यःवर् इरन्नेगः क वतः स्व करा विना ह्र सम्ब्रियः है । क कि कि के हरा के कि के हरा भेर इर.लट.लट.चक्चेच.च.डी चूर.प्रुप्त. व. 10 क्र्य. 31 केंब.रवेंब. हिते:क्ष्म्यायराधिमः"गुराम्याधित्यद्वायते:वर्षाधितःद्वाधितः *देर*ॱख़॔ॱॹॗॖॖॖ॑॑ॹॱक़ॕज़ॱढ़ढ़ॏॱढ़ऄऀज़ॱढ़ऀॸॱॹऀॸढ़ॏढ़ॱॵढ़ॖॸॱ**"ऄॹॱ**ॸॕॱख़॔ॱढ़ॖॗ॓ॺॱॱॱॱॱ बेर् ग्रैषान मर्यः रूट्। त्रावर्द्धम्याखाचे दे ग्रीते वत्रा द्वेता म्यरात्याराष्ट्राचीयास्य पुत्रात्र्याञ्चेयायदे भूयात्रेत्यायरात्युराः न्दः अधुवः श्रेवः वह गः दिवः छेन् छै। यदः " हेरः वः र्वावा नह यः वकवः द्वः ळॅन्या होता हैता वित्रा होता हो स्था स्था हो ता हो स्था है स्ट्रा स्था स्था है स्ट्रा स्था स्था है स्ट्रा स्था <u>न्नः क्रुं स्न्रः केष् करः तुः तकरः हे के छ । या है या बेन् छै । या वर्षा छ । सुन्यः । । ।</u> म्रं भी र्यट्र पश्चित्र येष द्रश्य द्रश्य स्था वर्षित ही रामकार दे स्थ <u>नल ई र्र न्र वर्ष नलल ५ र स्र जुर हे जेर क्वर क्वर वर्ष स्या</u> न्नरःग्रुरःरनः तस्रवः तुः श्रेनः श्रुरः ग्रेन्थवः ग्**रवार्ग्रद्यः तुः छेनः न्वेवः** त.र्टा व्र.लपु. श.य क्षेत्र पह्त्य मि अक्ष. अक्ष्य मीया से बला मी हे या ही . षुण्यात्मव निवेशान्मेयायदे ने नाम में वा यया श्री ना क्षेत्र स्वा श्री ना क्षेत्र स्वा श्री ना स्वा न्वतान्नेरतालु शे.च. हमता शेन्.तु . शुन्र हिन्। अन्य स्ना (1950) प्रदः 🗓 10 क्रयः ८ वेदः हैं न्यप्रः श्चः वाक्ष्म नेया समया मेवेया ग्री नाईः

तम्ब संदर्भा शु विवेश मेवर सहित्। दे विश्व देव विवेश विवेश मेर् मर्केट्यायम् वार्या मेवाक्या अर्दे तावितास्त्राश्चा महत्ताता न्दा मर्डेट्य.प्र्यात्यवा.पा.मु.केदे.मु.यट्य.ग्रीयान्यंप्राची.त.च्याया. न्स्याधनाम्बर्धाः इवयान्दायम् व्यास्ताम् व्यास्ताम् मैं न्यं वर्रे म्या के स्वाया मादर हिंदर न्दर विश्व हिंदर व्याप्य स्वर्ध हिंदर हैंदर स्वायः रटः। वर्षः यार्थरः प्रच्यार्वायः वर्षे वर्षे वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः नदे मुंयाञ्चल ब्रेट्याबट चुयाने दू लिये नु या बर्क्स्या झे या न्याने न म्राष्ट्राया विष्या ন हे ব. প্র নাথা প্রনা. (1950) ম. 11 জু এ. 11 টু এ। অাব্ৰ ক্ৰ স্থা नवर नग् नेया र्ने या र्वे या र्वे या प्रतास के प्रतास स्वास के विषय । लाश्चिन् क्ष्म नह्मा महम्पन न्मा दे तस्याह त्यते न्ना या मु वित्र-१८-१० वर्षा में स्वेद-१ वेद-१ विद्या क्षा क्षा के स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप्त का <u>श्चैनःग्लुरःगेः ्यरः २६दासःदरःष्ट्रियःतुत्ररःत्रगयःयःहे छेरःश्चूरः ः ःः</u> कुटा। चक्ष भ्रील-प्रटालिबोबानपुः ह्यापचट्यानः विदानयाग्रीयाद्यां त्यद्रः ञ्चःवःवर्ह्म व्रेःक्त्यः तुः मृन्दः इत्राद्याः व्यावः वेः रेः मृ न्दः न्द्वेदः है र र्वेष्यः सञ्जित्यान्वयान्व्यान्ते स्वेत्रान्व्यान्त्र्याः ある」は無力では、当人に र्मन्याम्बराश्चिन्मब्दामीन्यव रेमवाके मुका बद्के पः न्दः न्द्वारा तेर त्राता न्द्वा मृत्या की व्याप्ता क्षा पर तुःचेन् ग्रेःशेनःश्चः सदः स्रे ग्रा धेन्ताःग्रेताने त्यादे स्ति सम्बद्धाः मृहेन्। हुः इयामरामहेन धे कुषा रु मार्वा परेवा लु या सुमा कुषा माठे या र्यवा ঽঀৢ৾য়৽য়ৼ৾৾ৼয়৾৾ৠৢ৾৽য়ৣ৾য়৽য়৾য়৽हे**ৢৢঢ়ৼয়৸ড়য়ড়ৼৼয়ৼৼয়ৼ৸৸৸**

मनतः चेन् मानि मनत बेन् मानि मनि ने नतः मुन्दि स् **नबर्यः श्रेन् मृद्धरः न्रः ग्रंयः स्थान्त्रेयः ग्रीयः दिः समयः** त्यस्य त्यः यहे दः द्वारः । वनरामि व धेव ले व पहूर देव सहर कुल न के रा द येव दे न र र मन्द्राच निष्या के निष्या के ति **ଌୖ୶**ୖ୴୵୵୵୶ୠ୶ୖୄୄ୶ୣ୕୷୵ୣ୵ୠ୵୕ଌ୲ୣ୵୶୵୶ୢୠୣ୵୕୶୕ୡ୵୷ୣ୕୶୵୷୷ୣ୷୵୷୷ तस्यानु तस्य श्री यह मा है है वि निर्दे में या स्य महर g'5'55' মুব:শ্রাব্য:ঘ্রনা নত্র ने वया ग्रुट ५ इ.स. वे ५ वटवा श्रेट मृत्र भैषः वॅन् षः म्**न्यः** श्रेन् मृत्यः त्र्यः त्र्युषः श्रे अस्मृषः ने ः भैन्यः त्र्यः । बवुबाईवा वि पदे ग्रेंय ब्रॅंय चेन् प्रवेताय दे प्रवास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्व অবা (1951) মনি স্থ্রী স্ত্রা 2 ধন দে ইন্দ্র্ন্ন্ন নেই ব্বারা ঐন্ · · · · · · · · ন্মূৰ ঐশব্যস্ত্ৰৰ। रश्य स.चक्षेय.पह्रय रूव.शिव.चक्थ.रंबट.क. क्रम् अप्पर्भित्रप्रवे त्र श्रुषा श्री श्री स्वाप्त में निवा निर्मा कर से निर्मा निवार त्रहेग्य बेन् वळेंग् गैयाळॅग्याच्छेरे त्रन्व र वेयान्व र कु गृहव त्रेन्यायान्त्रम्यात्त्र्याक्षेत्रम्याः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः व **२.३८.५.५५**.५३४.३८.५.५८। ग्रुट.५३८.४.५४८४.४५ म्लुट. भैवान्यरक्तकं क्रांचा व्यन् प्रदेश्व सुवा के क्षेत्रा सुवा कृता न्ता व्यन् केरा 괴도·희·정| श्वामा विवादिक्याता निर्मा निष्मा निष्मा निर्मा क्षेत्रातुत्रान्त्राचीत्राञ्च नाराम्हेदीः यम् वास्त्वेत्राम् वसः सुदेः मृत्यः यसेनताः नवर है इनव जन (1951) यद है जि. 4 छन. 29 हेन गुर

र्इर शे र्बरल शेर् ग्ल्र-र्मा वर्षा शेर् र ग्ल्र- ग्ल्य- ग्ल्र- ग्ल्र- ग्ल्र- ग्ल्र- ग्ल्र- ग्ल्र- ग्ल्र- ग्ल्र- ग्ल्य- ग्ल्र- ग्ल्र- ग्ल्य- ग्ल् त्रुता वे : इ वता क्षेत्र तहें वता हैंग वि : पर्वः म्राह्म तहें निवारा स्वार इविव विवेशम्यात्रात्रात्राची स्थान्य स्थित हिला त्रा वितः *ঀৢ৽৲ৼৼ৽ড়৾৾ঀ৽ড়৾ঀ৽ড়৾ঀ৽ড়৾ঀ৽ড়৾ঀৼঀয়ৢৼ৽য়ৼঀ৽*ঢ়ৠ৾ঀ৾য়ড়৽ ब्राया मिर्या ब्राया ने वरा में वा म्याया है। विश्व क्षेत्र क् ग्रद'र्स' श्रद'त् । ग्रुद'त् श्रुद्द' श्रीद्र श्रद्दर' श्रेद्द' मृत्दुद्द' द्द्द' स्त्र मृद्द्रर' श्चीत् मालु द : श्चें म्याम ने या मादे : द्यद : कः कंद : या प्यत् : पदि : द श्वरा शे : इययः : च हु 'च तु द' त्य' बे द' ह न्वार दें ता शु 'च में द' पदें ' बर्द द' क्वें 'म च न च कु ता ^{ৼৢ}য়ৢঀ৻ৼ৻৴ৼ৻৸৽৽য়ৢঀ৻য়ঀৣঀ৽ৼ৾ঀ৽৻৻য়ৢঀ৽ঢ়ৡৢ৽ঢ়ঢ়ৢ**ঀ৽ঀৼ৾৾৾৽য়ৼ৽ঢ়**ৢৼ৽য়৽ २ अ८षः श्रेन् मृतु र 'न्रः वन् र प्रामृत्याश्चिन् मृतु र 'न्यनः श्चे 'मृरः के देः ''' त्रेतः परे क्रॅंरायः मृह्वार वे पराम्यायाः वेदः मृत्यायः मृह्याः महा र्दर्वर्ष्या के रेव के वास्त्र निवर्षेत्र विवर्षेत्र विवर्य विवर्षेत्र विवर्य विवर्य विवर्षेत्र विवर्षेत्र विवर्षेत्र विवर्षेत्र विवर्षेत्र विव · ष८:५वा:य:४व८:य:४वव्यःय:वहेदःहुःयदे:न्नःवःवॐवः५८ः। গ্রী:বিস:স্কু:দ্র্রব:স্থানার্ম:জ্ঞ:বা ক্রু:জ্ঞরি:অস:জ্ঞ্মন্ত্র:গ্রীরা **নস্ত**'ন**গু**ন'অহন'ন্তিন্'রূ'ইন'উন্| "हू यदे न् या यह मानिया यद गुतु दि न सुया इदे १ १६ न वि नया पर्वट्यात्र्रां तात्व्युद्राः व्यवताः श्रॅनः ग्रीः ग्रॅं ता ख्राद्व र अक्ष्य हैं प्रगुनः लु । पर्वः

भूर.वी.भूग.पह्मेबा

ऍज़ज़ॱॸ॒य़ॱक़ॱक़ॱक़॔ॸॱऍॸੑॱय़ऄॱक़ॗॖॱक़ऺ॔ॸॱऄॱय़॒ॱक़ॆॸॣॱॴॗॸॕॕॸॱॻॖज़ॱय़ॱ 1951 **बै: न्यरणः**श्चेन् म्बुदः मैवान् विम्वारा सहितः म्वदः नदेः न्यदः कः कः करः ः **ઌૣૣૢૢૻૺ૾ઌૢૢૢૢૢૢૢૢ૽૾ૹૣઌ.૾૾ૺઌ૽ૢૢૢઌૢૢ**ૢઌૣૹૢૢઌ.૽૽ૢ૿ૹૣઌ૱૾ૢ૽ૺ૾ૹૢૣ૽૽૾ૹૡ૱૱ **ট্রিম:মর্ব:**ন**স্ট:মন্ত্র**মেম:ট্র:স্ক্রেম:শ্রিম: 1951 ম্রে খ্র:ন: 5 **बहुतः**>४। बीटः ह न्यायामी द्रायर विद्रायान्य व्याञ्चित् वृत्तुदार्द्रायेद् **२ न्यायः रो २ ः श्रुः वे : २ व्याट्यः इययः** ग्रीयः **ग्रीयः ग्रीयः श्रीयः व श्रीयः व श्रीयः** व श्रीयः व श्रीयः व बद्दः शुदुः दि 'न्दः शुदः न् गुदः ने प्रदेशः विद्यार्थः विदः विदः विदेशः विद्यार्थः **२ बरल** वर्डे दल वर्षे पाद्यम् वर्षे द्वा क्षेत्र क्षेत्र के व्याप्त वर्षे वर्ये वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर <u>রেন্-ম-ৠ্র-অব্-গ্রীক্-স্তুক-স্তুক-স্কর-দ্ন-।</u> হর্তব্-স্তুক্-স্**র-ख़ॻ॑ज़ॱऄॖॱॾॕॣॸज़ॱॶऀॻ॑ज़ॱॸॕॸ॔ॱढ़ज़ॱ**ऄॗॸॱढ़ॶॸ॔ॱॾॖॴॱॸॖ॓ॱऄॴॹॖॴॱऄॖॱॴ

देशम्बद्धस्य

स्वाची स्वित्वाचा स्वाचा स्वचा स्वाचा स्वचा स्वाचा स्वाचा स्वाचा स्वाचा स्वाचा स्वाचा स्वाचा स्वाचा स्वाचा

तद्यः सम्बर्गातद्यः नियः सक्षत्रः भूतः नक्षः ता नियातः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः

1. স্বর্গ্রিশ্রিদ্রান্ত্র্র্গ্রিশ্রেল্প মুর্ব্বেল্

न्नतः स्वास्तः स्वास्तः स्वास्तः स्वास्तः स्वासः स

ञ्चव दिया रेगा परि ष्टु वाळेग वायरा परि न् वह यं वाह्येव राम दें रा नु वळ्या दी रू न ध्यापर सुर मी तरे हैं न डेर् वर हिया है जिस् पट.ची.चे.पट्रचराश्चा लच.इय.द्रम् श्चाराम् सम् तेवः वसः हयायः ह इ.कु.७५४.थी.चेब्यास.८८.। तीयार्चिरयाक्या वी.प.ब्रेथामी.यंयासी. है। य. 1883 प्र-प्यावैरायक्र. कं. तप्राप्ती के. यू. सी. प्राप्ती प्राप्ती प्राप्ती **लयः त्रां अवेशः ग्रीयः विश्वयः इत्ययः क्षेत्रः स्थायः विश्वयः प्रमायः प्रमायः प्रमायः प्रमायः प्रमायः प्रमायः** प्रमायः प नश्चीरयाने 'नशुर' या प्तान के ना बळ्द्-ज् :कंट्-ह्-ळॅल-क्रॅ-१२६ नः पः न्वट-ब्रेट्-। न्यट-ने-अड्डिय-र्-छॅर्-र्षेण्यः र दुवः**छ्टः** य्ववः ययः भ्वः पर्वः प्रश्नुयः वश्चयः पश्चरः **प्रवः । स्वः । ।** इरा दे दल "दर्वेद पर्या द्वा देवा देवता श्वा वैदा श्वा वर्षे दिया । स्य-रेग छेन् श्रेर-तृ म्यूर्र-रेग श्रुय-म्युर-रु स्यर्यायः" 🛈 वेराम्ययः **ॻ**ॱढ़ॱॡज़ॱढ़ॴॖॺॱॻॕॱॸऀढ़ऀॱॴॗॺॕॱॸऀॴॱॷॖॖॖॖॹॣॕज़ॱज़ॗॸॱऄज़ॺॱॼॗढ़ऀॱक़ॕ॔ॱॱॱ देवानवायायायावित्तरा न्यावायात्रः त्राञ्च व्यवायात्रवात्तराची v៩५ <u>ह</u>ेरा:हेर्:ब्रावह:वह:ब्री:ब्रावह:ब्री:ब्रावह:ब

मदे वे मु सं र कृ त्यदे मु स " हु हो र महु महु स र के द में द द न्र्रकान्दि नः चुबकायः बुनःन्नरः अर्क्षनायः अपितः हुरः नै ने निक्राःःः য়য়৽য়ৢ৽ঢ়ঽ৴৽য়৽য়ৢয়৽ঢ়য়ৢয়৽য়৴৽ঢ়য়ৢ৾৽ঢ়ঀয়*ৢঢ়*৽য়ৢ৾ৼ৾৽ व्याधिव मदी तहा होत् वावरात् नर हा हुना मान्या हेवाना स्वाला स्वाला रुषाम् रेग् . मु : श्रुवः गृह्विः सः न्दः स्याः स्वः स्वः म् न्याः म् रूपः मु रूपः हिः श्चन मिन क्षेत्र मिन क्षेत्र के वा की जिसका कि मा कि न्बितः इयः नृत्रेतः त्यः द्वन्तः रे रेन् न्वेनः त्याः **वरः** क्षेतः वरः क्षेतः न्वरः वरः न्वरः न्वरः न्वरः न्वरः न रॅ्व-म्वेर-ठव-ळेन्-सरम्य-पन्यय-म्येय-ग्रेय-ग्रेय-म्यॅ**-सुर-छेन्-न्म्य--**पते नगत न में दल के र. " ा रहें रा गही च अरा म सुन न न र सहें म শীবাস্তুশ্ব ইনিইস্কুৰ শ্লুন নিন্ধাৰ্বতানন্বৰাশ্বীবাশ্বী**ৰ্বাল্ড শূ**ৰ্বা **"**ঀ৴য়৽ঀ৾ঀয়৽৸ৼৼ৾৴৽৸ৼ৽ড়ৼ৽য়৾য়ৼ৽য়ৢ৽য়ৢঢ়য়ড়ৢয়৽ৼয়৽য়ৼ৽ড়ৢ৽৽৽৽৽" देश विराविर के बाद्य का श्रास्त के राष्ट्र के साथ कर अपने के साथ कर के स स्य.त. धुबे.ज.स्यक्ष.सर.झट.ह्रा

मदे मः देन । मदे पद्देर देन मण मान महेन । दिनाम देन नहेरान **स**न्ने " ① बेवान्शुर्वामा हुन्दिर नेवा ते त्रं हुन् त्यम् इसामर …. **न्ये**र-पः गुव-वयाञ्चरयाने सुन्यान्ते न्याने या जेया जेया जेया स्वाप्ताने निर्माता गा वरः वेवः सळवः हणः तशुकः मवरः वेरः। वः मञतः महावः स्वायः <u> भ</u>र-१५ : युष-पदे : पहुत्त-दुष-प्रदेश-पदे वाद्य-प्रदेश-वाद्य-प्रद ॹॖ*ॺ*ॱय़ॕॸॱॻॗॸॱय़ॱॺॱॺॸॖॖॸ॔ॱय़ॱॺॸॱय़ॕॱय़ॹॖय़ॱय़ॱढ़ऀॺऻॱॺढ़य़ॺॱ**य़ॸ**ॱय़हेढ़ॱॱॱ गुं पः नव्दः ळे वादिरः या चकुर् अतुर्धः या वेषा श्रेरः व देन्या गुरः व देन्या परः गुन्या ने 'सेर' प्रत्यासं 'चसून्' ग्री' नहें व' त्यु या ग्रु' वहें दे स्वया पर्वतः नुषाया वी व्यापा पश्ची द्यापा यात्रा श्चवः मृत् दः श्वतः दिवः दिवः द्रा **ౙ**ॺऻॺॱढ़ॱॣॕॺॱ**ড়्ळ**ऻऄॗ॔ॸॱॺॖ॔ॺऻॺॱॸॸऺॱॱऄॺऻॱॸॸॱऀ॔ऀॷॱॿॖॕॿऻॺॱढ़ॻऀॹॱॱॱॱ न्दरः सुनः यः चुरः नर्यः श्वॅनः नर्रे दः ग्रीः बळव् श्वृतः वेंदः यरः नहेदः दूः · · · · · यते न्नायते भूते न्ना ञ्चव के ना क्रां नेवा बावरा ठव न देश वि नु बरा म.वीय.रं यर. बक्ट्यं. बुधार वृष्यं या प्रताय कर. बुदा विद्या में हिंदा विद्या मा **ॿॗढ़ऀॱॼॖढ़ॱॺॖॕज़ॱॿ॓ॸज़ॱॿऻढ़॓ज़ॱॸढ़ॎॱॺॕॗॸॱॼॗॱॸॱॿॹॖॺॱॻॖऀॱऻढ़ॸॹॱॹॱॸॸॺज़ॱॱॱ** श्चिमा मेरा ईन् वियाया श्वराय हुन ने मना श्वराश्चर यावराया या वर्षा न्यतः स्वान्यां परिकृत् परिकृत् परिकृता मृतुर दिने वा मित्र परिकृत वा र्षेष्वराराञ्चर्नाची विदासम्बद्धान्य स्वरास्तर स्वरास्त्र स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर *ব্দ*েনতব্য-দ্ৰস্ত্ৰৰ নত্ত্ৰীদ্বান্তী স্থ্ৰদ্বান্ত ৰ দ্বীৰ প্ৰীৰ ন্থান আৰ্ म्बन्या स्थान्या स्थान्या न्या स्थान्या न्या स्थान्या स्या स्थान्या स्या स्थान्या स्

⁽अव्याणी प्रमिय प्रमामिया भ्राप्त क्राप्त भ्राप्त भ्रा

पह्रान्यमार्भय पर्वः मृत्या प्रम्यः ह्रित्यः मृत्य स्र मृत्र प्रम् कें. अञ्चा वि. थे. यं. यं थे अप हु वे मिया अक्षा या अप हु गया अर्र पहुंचे. यत्। र्च-दे-रु-रु-प्न-प्न-प्न-प्रम्याया-देवा अन्-ग्री-स्वायकामा-तु-स-म्बेय म् वेद रु प्रकेष म् वर्ष्या मेर र्मा स्थान र्रा रेम रुपा क्षर वम हिरा ही । देवाःस शुक्षः ह्वारा न्दाः श्चाः देवाःस श्वदः ह्वाः स्वारा देवाः स्वतः देवाः स नह्रव केव रेया मृत्य न वे ता रेय मा बेरा मरा म क्रुर्त परे पर हें र जुन মন্দ্রী'অর্জন অ'"দ্রদ্রতের দ্রীর্মমের অদ্ঞে" ব্রার্থিশ दुवाम् ठेवा. हु : देवा म् बुद्र मी पतु द्र है : क्षेद्र पते : श्रूवा पा हू पता हू : . . . तनर्भः द्रगः में कुवः वृष्ट्रद्रतः गृवरः वयः हेवः सुरः वळव्ययः नगः ये**नः वः** ঀয়৽য়৾৾৾য়ঀয়৽য়য়ৼৼ৾৽ঽৼ৽য়ৢ৽য়৾৾য়৽য়য়৽ড়ৼ৽ড়য়৽য়ৢ৽ৼয়৽য়৾য়৽য়য়৽য়য়৽ मुकारविद्यारा त्यताव्यात्या यक्कॅर् मुजायर द्वित्यता र दित्यता **वे नवर परः षवः** हवः वत्रवः श्रुटः याञ्चे गाञ्चः विवासिकार्यः याद्वाः विवासिकार्यः विवासिकार्यः विवासिकार्यः विवासिकार्यः व **ਫ਼**ਖ਼੶ਗ਼ੵ੶**ਖ਼**੶ਫ਼ਖ਼੶੫ਸ਼ੑੑੑ੶ਸ਼੶ਫ਼ਖ਼ਸ਼੶ਖ਼ੵੑਜ਼੶ਜ਼ੑਖ਼ਫ਼੶ਗ਼ੵ੶ਫ਼ੑਜ਼੶ਜ਼ੵੑਜ਼ੑਗ਼ਜ਼**ਜ਼ੑ੶੶੶੶੶** वेग्यासरादन्यानुनासदे स्नानवानुन्यायायान् ग्रीवाक्षेत्रास्तरा प्राप्तान्याक्षात्राज्ञात्वितः वृदः न्धेन् ज्ञवेः पज्ञतः । वृतः पवैतः वृदः । विवर्गा महिता द्विता द्विता वर्गा वर्गा वर्गा वर्गा हित लुका चेत्र पात्रका सुवाका वहेंदा स्व स्व सुव स्व साम्य स्व पार में का स्व पार स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स

म्यान्य म्यान्य म्यान्य प्रत्य म्यान्य म्यान्

त्वतः श्वीः सः 1910 द्राः स्वायः स्वयः स्वयः

लबा लव रि. म्रेनया तर विश्व हे . तब त. दिवा त्यर चुन हे वा व्यवर तिव चुन बद्धतान्ता बद्धवानुः अवानी तेवलायर यर वह वा के क्षेत न्यवानायर ट्रैवः त्रुनः सं हे गुलः यह्यवे विषा सं व्याप्यत्राम् वेषायावेषः स्वाप्यत्रा र्ग्रेयास्य स्थानम्य स्थानस्थानस्थानस्य निवास्य स्थाने निव्यानश्चरः त्र्वेयतः «व्राप्तेवाकु व्यक्षतः क्षेत्रायः » «म् अव् त्रित्तार्वे पष्ट्रतायः **Ҳ.**ฆ๛ฺ*४.चेशु-*श्रे.ฆ.≫≪व्रेथ.घ.चञ्च.घ**य.घी**य.तय्च.घे.च्य. ॅबर:»र्वम्यानस्थयायरः अर्दरः" 🛈 ठेवाम्ययायः स्ट्रेरःश्चः नः मृद्वान् नुः **२े.**६्श.४४.५४.५५.ग्री.मार्थ.५५.म.म. अञ्च, अञ्च <u>बुणका हे 'क्रे</u> क्तुराधवायदे 'क्रेबाधदे र्ष्ट्व 'बेर्' क्रे के स्तु 'बद्देव' क्रेन्'देर' न्यवातुःश्वरायातदीः सासुः वी दे वाळवा श्वी सुत्यातुः श्वराया व्यवस्य ৴ঀৢ৾ঀ৾৾৽ঢ়৽৸ঽঀয়৸৸ৼ৸৸৸৸৸৸য়৸য়৸য়৾৸য়য়ড়য়য়৸৸ঽঀ৸য় ਭ ·ਭੂਨੇ ਖ਼਼੍ਰੰग गर्थे ·श्चेल हे ·श्चे ·ਕੱ· 1913 ਖੋਟ ·ਲੁ·ਸ਼ਟ ·ਕੱਟ ·ਖੋਟ ·ਸ਼ੁੰ ·ਸ਼ੁੱਕ ·ਲੇਕ· बार्वा न्यर बाह्य व राज्य द स्तु बाह्य व राज्य विनयः नृष्यं चुरः वैरः । चुः कुयः तुः नतु गयः देरः न्ननयः देरः वहं यः न्नीरः म्रामुः श्रेः रेग्वारा स्वारा न्यारा न्यारा निर्देश्यात म्यारा निर्देश म्यारा निर्देश म्यारा निर्देश म्यारा निर्देश मान अव नर्ष्याम्बर हे नरे ज्ञाम रर धव म्याया केव सं हुर नय ह

ब्रु-ल-1916 व्र-रन-विरावद्गः संप्रकार विवासमा क्रायप रेगःश्चरःगर्थः र्दः। अवः पर्देशः समा स्था अवः हरा श्वुरः पञ्चा मवयः रेगः स्र-१ क्षा रेगः गवयः स्र-१ धेगः पठयः ध्वयः पश्चरः ग्रीः श्रं पः ग्रुः केवः **ब्र.**च्र-प्रंट्रियाक्ष याञ्चन क्षेत्रात्में प्रवाधितात्रात्में विषया श्रीता भ्रम्यः न् श्रे मृषः म्ययः मृष्यः मृष्यः मृश्चे मृषः मृश्चे म्यः ग्रे यः श्राम्यः न्यमः **ः** बहुदि न्या कें रातु वळें वा या हे 'हु रायवा रहे दा यदी बळे दा वदवा न्या रहा ध्रम्या अव देवा श्राप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र ख़**ज़ज़ॱय़॔ॱ**ड़ॱॿॺॱज़ॱॿ॔ॱक़ऻॖॱॷॕय़ॱॸ॔य़॔ॺॱॴ॓॔ड़ॿॱख़ॖऀ॔ढ़ॱॶॖॱय़ऄॣ॔ॱय़ढ़ॺॱॺढ़ॸ ञ्चन है याञ्च न मुन्दर ने दे "त्यात मन ने मार्ड में न न ने ने निना ताञ्चन हेरा शे झे निर्देश हो नि हु निराक्ष तथा हैना सर से निराक्ष निर्देश है निर्दे প্রবান্ত্রা ন্র্নী, রু, বের্বাস্ত্রা ছ্র, নার্থানন, ৪৫ অ. ট্রথানা ৾ঀ৴৽য়ৢ৾<u>ৢ</u>৴৽৻৴৻৴৻ৢ परुषाधेदः" [®] वेषाम्यायानः क्ष्राने वषामञ्जरान्यामा मरामिषाञ्चदः **इ.य.चिंटे त्रायायापक्र म्हाया रहा। ज्याप्त्र प्रयम्भाय अवाह्या**

ढ़ेवं अन् न्र म् अं न न व्या विषय विषय । विषय विषय विषय विषय । वेव अद्धव मधेया व बेर पर पर पर ईव केव र मन वर विरा र्श्व पा मुवेर য়ৢঀ৽য়ৄ৸য়ৣ৽ৼৼ৾ঀৢ৽য়ঀ৽ড়ৢঀয়৽৻য়ৢ৸য়ৄ৸৽য়ৢঀ৽য়৻৻ঀয়৽য়ঀয়৽য়ঀয়৽য়য়ৼ न्हें न् ग्वर न्या कं न् स्व क्षें न या यर में कें व वया केंट्र स्व खु न्राह्म द्वारा के ता की ता दिंद मैता ु मतारी त्याँ पव रेमा हे दाश्ची र मि र सु त्याँ व श्वी व स्वार्थ प्राप्त नहुन् भंदरासु सुन्यार न्व न्ये यान वे या क्षेत्र स्राम्य ने रात्ने वा सदी ।।। *ढ़*ढ़ॖॖॺॱॺॖऀॺॺॱॸॺॱॸॿॖॸॱॸॣॸॱ। ॸॺॣॸॱॸॱॺॕॗॸॱॺॿॖॸऻ ॸॻॺॱढ़ॾॗॗॸॱ तर्ने नृः वितः नृदः के तः नृदः कु का मृदः तथे वा त्र् मृः नः नृदः। व्यवाः वरः न्रवः ब्रुट्रन्ड्र-स्रये छु यन् (ब्रु-लं 1923) ल्ट्र-ब्र-ब्र-ब्र-ब्र-ब्र-ड्र-र्भे देश श्रुव वर प्रमु त् स्तु गु म् देश (क् री त् रायर सम्मु या मु स्र स्याप्त सम्मान न्यर प्रवेट्य.) व्रेट् प्रव्यय पर अपया नेयर पहेर् व्र प्रकृष मेयर स म्राम्याः या देवा व्याप्ताः विद्या कुलान्तरः वर्ष्वे वा वी त्र वा विद्या *द्धर*्टे तर्रे केर् क्या हु न्या त्न्य त्न्य त्व्य त्वे या हे र त्र क्षुरा हे या विष्य त्या व्यास्त्र त्या ळट्याह्म न्यामहूर् ग्रीयावालट नयार् द्वा लम्या दे क्रिंग् गुन स्व ग्री बर्दन् प्रकातुका तन्तर प्राप्त हेव वका विषय प्रवे क्रुव श्वन न्र वर्ष न त्रेव प्यार मं द्वाया गुव र है हिया गृत्या है द्वार है ते ग्या रेव गुवेर

①(अन्य सं देव मुद्दः रवयः न्यायः वर्षः के स्वदः देवः द्वः १७७)

स्य. ब्रैन्य. त्यं यं यं यं पश्चित्य. त्यं प्रायं व्यं विष्यं विषयं विषयं

 म्नाया स्वाया के के वास्या स्वाया स्वया स्वया

श्ची-स्थान स्थान स्थान

⁽१) (इंग्यान्हर् अपास्य विराधना देवार्य राज्य रा

② (ग्रव : रवल : श्रवः प्रवर: पह्नाः र्म् ल: र्वः रेवः रेवः रेवः 190)

① (ग्र्वःरमणः श्रूष मनदः यह्नाः स्नूषः नैयः स्वः 191)

बावतः पदेः न्दरः सं म्दः नेतः वार्दः न्यदेः नहीरः स्वाय वास्त्रं दः न त्रवारा श्रुप्ता श्रव श्रुव पा गवर अन्या ग्री श्रव गवुर में र जि ग्वाया पा । र्ष्ट्रत्वेबलःत्तः नेतः द्वेरः तृदेः वेः स्ट्रः ≫≪ व्यतः धेषः नष्ट्रेरः द्वेटः न्टः ः तपु.र्ज. श्रु. श्रु.र. क्.पू.स्य. स्याया. अल्ये ५ ४. क्याया. क्रुयाया. क्रुयाया. न्द्रितः स्वा क्रुवः » «चैयः धरेः वरः रेन्यः । यस्यः प्रवसः धनः » «ॳॕॖ**ๆॱॿॖढ़ॱढ़ढ़ॗॎॸ्ऺक़ॱॸ्**ॿ॓ॱफ़ऀॸ्ॱॸढ़ऀढ़ॱढ़ॸॕॣॸऀॱढ़ॾॕढ़ऀॱय़ॖॹॱॸॿॸॱ≫≪ॸ**ॗॸ**ॱ ৡ৾ঀ৾৾৽ৼৄ৾ঀ৽ঀঢ়ৢ৾৾৾৾ৼয়৽ৼ৾৽ড়য়৾৽ড়৾ৼ৽ড়৾ৼ৽ড়ৼ৽ড়ৼ৽য়ৢ৾৾ড় त्रष्टुर्ल'न्ये'त्रक्ष'य'र्दे'अर्ळर'म्लेर'ग्री'क्ने'ल'»≪ञ्चल'ङ्कॅर'कुल'य'**''' ড়**৾ঀ৾৾৾৵৽ৼ৾য়৾৽৴ৠ৾৾৾৴৽ঢ়ৼৢ৾৾৾৾৽ঢ়য়৽ঢ়য়ৼ৽৾৾৵৻য়ঀ৾৽ৠ৾৽ৼ৾৽৾য়ঢ়য়৽৽৽ <u>ৡৄ৾৴৾৻ঀঢ়ৣ৾৽ঀৢ৾ঀ৾ঀ৾৾৾৵৸৾য়ৢঀ৾৾৽৻৸৾৴ৼৼ৾৾৽৻ৠ৴৾৻৸৾য়৾৴ড়৾৾ঀ৾৾৾৽ঢ়৾৾৾৾৾য়৾৾৾৾৾</u> क्रेट:भ्रेग:वी:क्रेल:दर्बे:श्रंगवद:र्टः। क्रु:क्रेल:देत:ख्व:बळॅट्:यदे:दॅट् इर-वी-क्ष्यानम् नसूर-न र्यम्याह्यान् विनाश्चित्या सम्बन्धान्याञ्चन विना तकर्-ष्रव-नग्द-देव-नश्चर्य-रेग्य-र-क्षेत्र-अर्वेर-नश्चर-ध्य-सेवः-- है प्रविदः सः वृत्रकारम् रः ग्विका भेरा "ण ग्विवः ञ्चवः है राः प्रस्वः प्रदेः श्चेः

① (हॅन्य-न्ट्र-न्न्य-व्य-धर् पह्न-न्य-र्य-51)

कुतैःकेन्द्रः प्रत्या विद्या विद्या

ষ্ট্রি'ম'1952ই৲'স্কু'নরুশ্'ম্ম'র্ম্মব'৲ইব'শ্ম'র্ন্ট্র-ন্যুদ'গ্রম্ম' मतुत्र-द्वर्यायदे:श्रम्यायाश्चा ग्राह्म्यानीः र्व्यायाने वार्या विराक्ष्यार्ष्ट्वारीरामी स्थान निर्मात वया स्यान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान *ঀঀ*ॱয়**ৢৢয়য়**৾ঀৢ৾৽৻ৼৢয়৾৾৽ৼৢয়ৼয়ঀয়৽য়৽ঀয়৽য়ড়য়য়৽য় शु[∙]नरुन् म[∙]न्त्रे नु में न्या स्वर्भ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स প্রব'নস্তুদ্'বৃদ্ধ'অবি'প্রব'য়ব'য়নম'দ্দ'। 4.2x.Ba.21 र्रायक्रायब्रापयाईयामा रा रेग्यायद्याग्रें रायायग्याया इयान्ध्रीत्राच्याः व्याप्रीयाः عرب "¹ वियार्यमयामयरान्याञ्चन विवामयार्थानी न्धनः वनल न्मा न्युन् कला श्चर पिरा र्रा मृत्य प्रा रहेता स्वारा है. बर्ळ र : इन् : तु : तस्य ग्रा : यदे : पर्वे या व्यवस्य : या हे या शु : थी : र र या के व्यवस्य : या स् बह्र न्या तर्ते हें मा व्या गुराविता दे क्षेत्र रेमा या बाम्या रुदा देमा धेदाः

① (हॅन्य.पहॅर.श्रेष.र्थ.पूर्य.तृतं.र्य.र्थ.१०)

मते द्रवान्धुंन त्राव हा च्या पर्ने नाट वे नवा वस्त गुव न वन्

न्याया वाळेवा ने या वार्षा श्रुं मा वारा मही श्रुं मा या श्रुं वा वार्षा या या या या वार्षा या या या या या या वै · रे · रे · प्वे व · पहें प · ग्रे व शे व्य र व · भे प । हें प्र व पहें प · व हें प श्रे व · है व शे व शे न्ने न्तर न्वर वायवादि व नेया व्याप्त वा वुर वायर वर् **क्रथ.र्धर ग्रे.क्रथ.रंगु.रह्य रंत्रय.य्रवी.क्रॅपया इ.सर.रंबेप. इ**थ.प्रत्राची.श्रव.ह्य.चेथ्य.तंब.र्चा.यव.रतता.तंबी हे.पि.श्रेव.ग्रंता. श्चीरानीश्चर् र्ने वियानकृतार्ययात्वरार्दा तहवार्यया क्रिंगः र्रेल महीर राम श्रीर मी श्रुव र्मी हिया महेवा वार तहें मा महार हरहा र् क्व की अब र की स्वा में या के या र न न र । ई न न की की की की की की की की की দ্ৰী: ব্ৰু অব্যানা ৡ৾৾য়৾৾য়ৢয়য়ৢঀ৾ৢঢ়ৼয়৾ঀৼ৾ঀৣৼয়ৼঢ়৾৾য়য়য়য়য়য় यक्रेन र गरा रं न या रेया केरा से ते ख्रुव र में न स्व त रहे वा इंग्न र र हुतान्त्रीट नै हेरा न् ने उधरा पाळेरा गुन्या धटरा ठव न् में व ग्रे ञ्च व न्वे न्यय व्यामुलायक वा क्षे कें मुला मेन न्वें वामी कें तर्वो प्रे ने तर **१.६१ म्याप्त स्थ्यान्ययान्तर्भवानुः श्चर्यान्य स्थान्य स्थान** ८<u>६</u> शुरः ७८ दे : ङ्वरः ग्री : ञ्चर ने : ८ में द : ब्रॉव : ब्रॉव : क्षुव : शुवा इलरी में केला ब्रीटा ने ब्रुवर्गने क्वां पत्रदान स्वाधा में मासुला न्यादा स्वा रवः कुषः ग्रीः ञ्चवः द्वो द्वायः स्वानस्व दहेवा सः से के के वि ञ्चवः न्ने भे नेता कुल अर्क वा में र न्ना र केंदा है से है ता न्ने हिला विवता केंदा पर्चेर.परुथ.र्टा, क्षेत्र.तर.यि.श्चेत्र.श्चेत.प्रकेत.क्षेत्र.श्चेत्र.वि. <u> र्रः। धःश्चर बोन्दः करः वृं त्वः क्षयः ग्रन्या वःश्चरः तयः क्षरः न्नः</u>

क्रूया र्याच्या वि.श्रव प्रया श्रव प्रया स्व.श्रव प्रया विश्वा वि.श्रव प्रया १ व् ञ्चव केलापर वी खंदागर वालेंव पागुव र्चार.सेब.क्र्याया श्रव.क्रयाचर.चु.ल्रब.चर.चेल.विच.प्रव.सप्ट.क्रर. बापयान्य व्ययापार सेवायाया संग्रीय पात्र या मुद्रान म्बर्या क्षेत्र सूर्या स्थाप न्यॅं व के व में व हो व न्या कें र न्तु वे अर्थे द न्तु न हु न वे व है । व न वे व न ञ्चव दिया ग्री प्रमृदाया दिव क्षेत्र होया गृह्य अर्द राया अर्ग रे र्या <u>ঽ৾৽ঽ৶৾য়৴য়৾৾ঀ৾৽য়৽ঀৼ৾৽৸ৼ৾য়ৼ৽য়য়৾৾ঀ৽য়য়৽য়৾য়৽ৠৢৼ৽য়ৼ৾৾ঀ৾৽য়৾৽য়</u> यः च हे **द** च द : श्रु : ब रू : यः द व : यः द द : । श्रेर.क्षरान्या पत्रे गुलूर. सुन्यान्यन्यन् त्रिन्द्रम् चरुष्याः वीः वृत्रवाः मृदः द्रवेतः ग्रीय देदः भ्रवयः । कुला संदर्शन्दा तह या ब्रीटा की हिंद ला श्रृदा परि ना न्दा क्षेत्र क्षित क्षित क्षित क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क बुनःसर्वः अह्नः हेलान् नेत्रः शुः हेवः यः लेनः यह्न नव् वार् वहनः यह नः यह यर रदारे किया वर्षा प्रमात देवा हेरा द्वा वु द्वेरा प्रमार विवास

स्त्राच्यात् स्त्राच स्त्राच्यात् स्त्राच स्त्राच्यात् स्त्राच्यात् स्त्राच्यात् स्त्राच्यात् स्त्राच स्त्राच

ञ्चिष प्रस्थ,≫ध्यातपु बर.चच्चेच्याचेच्य.चेच्र.खी

बावलासदे न्वदासं न्वी तत्वाक्रियात्रे वा वर्षाञ्चर ঀৢ৽৻৻৻ৼ৽ৼৢৼ৽ৠৼ৽৸৶ৼ৽য়৽ড়ৼয়৽য়ৢ৽য়ৢঀয়৽ৼ৾৾য়**৾ৼয়৽৸**৾ঢ়ৢ৾ঀয়৽৻৻৻৻৽৽৽ ॅबॅ.बॅट.*'र्च था.चै.*नपु.बॅट.क्क्र्य.लच.बेथट.र्झबेथ.क्रेट.शपु.रुबं.त.प**्ट्रवं**.. यः खः त्यनाः कुतः दः देतः न्दरः। ध्याः यञ्चः च ः नः ने हेतः ग्रीः श्रुतः शुः श्रीः Ă' 1903 ĂŢ'ᄎབ'쾰ୁང'བᇂ་ལྡ་བద៝'ॡ'র্র'অর'য়ৢ'ঈরি'ঈ৴'রূ'བদ্রুང্'' ॕॖॺ॔ॱॺढ़ऀॱॺ**॔ढ़ॳॱॸॱ**ॸऀॺॱढ़ढ़ॕॺॱॾॺॱॿॖऀॴॱॿ॓॔॔॔॔॔॔ ন্ত্ৰ-প্ৰ-ন্ত্ৰী-বঙ্গুৰ্থা **८१ अ.स. १८७२ ६** श.स.स. विरयः च्रे र र श्र्यायः वे .र या.स.स.स. য়৾য়য়য়ৼ৽ৡ৽ৼয়৽ঀ৽৸ৼ৽ৡৼ৽৾৾য়ৢ৽ঀয়ৢৼ৽৸য়৻৾৾৾৺ৼৼ৽য়৾৽য়৾৽য়৾৽য়য়ৢ৽য়৾য়৽ मन्दर्भी रना बुद्रान्द्वर हुना सदै निद्रान्त विदे सं ता विद्रान्त हु । न्दर् ন্দ্ৰা "② ইকান্তুদ্ৰ নাৰী স্থ্ৰী শৈ 1934 শামিৰ নকা দীৰকান্তৰ সমা *५२५*-वियादार्मेटान्यया**कुः प्रया**यस्य राद्यादा अहं या के या ग्रीया ग्रीटाः । <u> </u> इंगलाबुरायलाब्रेटाबेटाबेटाबेटाबाह्य स्थान

वित्र त्रुण्या प्रयाण्या क्रिया त्रा क्षित्र स्वा क्षित्र स्व क्षित्र स्वा क्षित्र स्वा क्षित्र स्वा क्षित्र स्वा क्षित्र स्व क्षित्र स्वा क्षित्र स्व क्षत्र स्व क्षित्र स्व क्षित्र स्व क्षत्र स

①(म्बुर:इंस:नेम:नर:वंदे:बर्न:म:वंदे:लं:कुष:बर्नर:प्रुव:)

②(कुलाविश्वरादेगानवान्त्र्यः न्त्रेदः निह्यः कुन् ग्वेदः कुन् व सदः नेपःन्दः सदेः पदः हवः तिः ।

ने न्यायम् अन् ग्रे स्वायम् अव स्वायम् विवयम् अव स्वयम् अन् या स्वयम् या स्वयम्ययम् या स्वयम् या स्वयम् या स्वयम् या स्वयम् या स्वयम् या स्वयम् या स्वयम्

ন্দ্ৰত্বা-খ্ৰী. कुं मानरा मा दिना हु त्युर परे क कुद प सुव य य स्त्र रवकायः इवकाराः श्रूषः श्रुदः न्तेत् विवता ग्रुः श्रेष् र्वे विष्णुदः वर्ष्ण्याः म्वर्म्स्ति स्थान्य वर्षा वर्षे त्र वे त्राम्य विमाधिवा विदः इवः न्धुं न् ग्रुः इत हे स्वर स्व ह्नियः प्या विदः दिवः नु हे वायः प्या विदः दिवः नु मु सक्त रूर स्व तारेष मदे हैं र्यता षर्थः भेगः गवरः अन्य। दनर नदे क्वं व्याग्त्व याने केट केट क्वं सदे वर्ष वर्ष केट केट के प्रमान न् चिर्यान्वर् प्रयायहर् रायदे र् में र्यायात्वर विवा । य्याया यावे य प्रया न्ये क न इया कृत वित्या पर्मा न्यें व पर्वे के न दव गुण्या ठव **इ.५.७८.प.म.चय.१५८.५००.५५८.चिथर.पी.५५०.५५८.थ्याय.पी.५५०.थ्य.४०.य्य.** यदः यदेवयः सर् उत्रा देयः क्रेवः यदे विदः यः द्रेवः शुन्यः वक्रुः मह्याः मुः व्याः क्षेत्रः सं मुद्दः यदः यहेत मात्राः देरः यह मात्राः सः रा षदः न्वाः मदेः नेवायः वृत् दः वियः स्वाः वृह् नः मदेः क्षेत्रः न्युयः न्दर-क्र्यानी विद्यायर वेनवायर दें तृ नी नक्ष्याया है नी राष्ट्र ही वि 1927 वर् रमा बुदा पङ्ग बुग् पर्दे से प्रायं राज्य र वर्ग कुर वर्षा प्रायः **इब**न्क्षःत्ररःबद्दाः हिदाः पः न् मृदाः बहुन् देवः स्वार्ते । देवः हिवानुः ब्रिट्-द्र-ब्रुय्-द्वर्या-इतात्यव् च्रि-व्य-प्रहेव व्यवया-क्र बैकानञ्जलाबा लुकामा स्कृतास विदानि निर्मा के के किया हिना स्वर्ग है किया है स <u>ૡ૽૽ૺ੶ਜ਼ਫ਼੶ਖ਼ੑਜ਼੶ਜ਼ਜ਼੶</u>ਸ਼੶ਖ਼ਫ਼੶ਜ਼੶ਫ਼ਫ਼੶ਖ਼ਸ਼ੑ੶ਫ਼ੵਜ਼੶ਫ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼੶ਗ਼ਜ਼੶ਜ਼ਜ਼ म्बर्ध्या प्रत्या तर् प्रत्या मृत्या कुर्या व्या विक्रिया स्था मृत्या प्रत्या मृत्या मृत्या प्रत्या मृत्या इट- कि. तथा वृष्ट- मु. विवाधा रुवा क्षे. इषा षा ना नहें र . तक वाषा क्षेत्र मावट.. माया बन्। श्रम्या ने मात्रु प्यादे हु न्या या के दा मा के दा स के दा श्रम्या

न्तः विवायः विवाक्तं वाया यया प्रवादः पद्मन्त्रः विवयः नेवायः न्तः पद्मायः विवा छर मैयाय र नक्त रे त्या छे न विनाय है न मान र न्में या परे निनाय र बर्ग्याक्षरं येग्याक्षुनः वर्दि यः नठयः ने व्यान तुरः यः वराषः परा विमयासनेयाकेवार्याम्या ने वयान्ययास्वाद्याशुर्याशुर् म् करामी न्ये का मलदान्य न्रास्य न्या नु न्ये निर्माणिया रव मु अर्छ विरावी र्यो करी र्यो क्वर तु अर्द र वरा अर्छ व हैर ही रेग ययाय सु समुद्द द्वाव नवस्तर नराया नराया में में द्वारा सम्मान स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्व देंग न्र अन्रकावयायावरावधानितिन्ये कृतायावरायवे गुन्य कृतः रेग्राणी अर्थे परि स्ट स्वाद्य पर पहरापदे प्रिं र दुतर विर गैरा वे तहिन्य तेन पर्वः रः रे केवा के रे के रहे रहे रः क्रुं रः न्यं व न्रा विष *ज़*ॺॱॾॕॖॖॣॖॖॸॱॸॣॺॕॺॱॺॕॺऻॺॱॸॺॏॱॺय़ऀॱॸऄॺॱॺऻॿॆॺॱख़ॆॺॱॺॕॱॾॺॺॱॸॣॸॱॸॣॺ**ॱॱॱॱ** दरुष:चल्ना:चल:ब्रंट:बी:क्रुब:ग्रन्ताःध्रम्तःचकुर:घन:सःलेग:ब्रुट:यनुम् द्याया ने के ना की प्राप्त विवाय का क्या की स्वार्थ के निर्मा की किया की की किया की बर्द्धनः हुः श्रुरः धारे दे दे दे दे रहे रहे हैं रहे दे दे ते ति है ति ह रव.र.श्रैय.अथ.वश्रेट्य.तर। "पर्वय.श्रेट्य.श्रू.बर.व. **क्रयाम् वियाम्बुदान्दर्गाम्बेयान्दरा म्राम्याम्बरायः स्वरा** नकराः क्षे प्रहेदाः मृ स्वाप्ताः नि स्वाप्ताः प्रहेदाः व

⁽र्ने तर्वरक्ष्यात्रेला कुं क्रिया पहरी र्ने पर दूराय)

न् ने :क्रॅंश-देव-द्र-मुै :इयः क्रूब : मुेन् :मु : हर : धर : ठव विष : धर : धर । के.चै.थर.पर्वेचयाः श्रेचयाः ४ ह्रव चै.केचाः अ.ईप. इयार ह्रेटा पंचे खेः... चलानदै सन् मं क्षाक लेन्स स्व लु न न्रा क्षाक न्ने निक्ष वीयायक्षेत्राचे त्या द्यान्तर्मा नियम् नियम् नियम् नियम् युःद्वाःबदेरःङ्गःबदःबद्धः।वःह्यःचचरः। यहरःकदःबुःद्वा वि-र्ने-प्रवेश-यम्-र्वेश-र्म् वर्ष्ट्रीय-र्ने श्वाधम्-र्ने श्वाधम्-र्ने श्वाधम्-र् यर.स्यथात वयानधिर.सता.कुर.स्.चवेषु.दुर.स्.सं.सं.दीवे.क्र्यावेषु. **इट.त.ट्मे.क्र्य.ग्री.**८ह्द्रार्गी.४८.म्बेल.वि.च्चा.प्यं.प्टं.प्रंट.प्रंटा. न् चुर्-ळॅलाळेव ॲते-ब्र्न्यलाळेवलाई-क्ठलानु-र्ज्ञ-वलान्चिर-वी----न्तु : यानन्य तर्वेय न्यानकर विवल ततु य श्रवल नेर यु : हरः गुण्यायावी के जिल्ला क्षेत्र न्या का लाजा का लाजा का लाजा का का लाजा का लाजा का लाजा का लाजा का लाजा का लाजा का बर्द र तर् न जिस् । र ने केरा देव सं के देन सद तसु ता क्षेत्र सद स्वरा <u> कुथा-देवा-देवा-द्राम् अन्ता-क्रुपा-क्रुपा-द्राम् विष्या-क्रम्या क्रिया हिन्या हिन्या हिन्या हिन्या हिन्या हिन</u> तर्ने महार अर् पर क्या वया मी त सर तहा या प्रे वे का र के का या सुरा तत्व" (1) देवानवायानान्दा विः व्यानवानेवानुवासवानेन्नीः निव्यान न्राय देना प्रमुद्द प्रमा द्रायव छ अर्द्ध र ग्री पर्दे या प्रया महन्त हेन् हेर्ररवा म्वर्र्र्या म्वर्रम् केर्यं प्रतिस्वर्वस्य

①(र्ने त्र्वं क्र व्येष्णी सं क्रुवा है पर कर्रेप देवा 39-45)

इर त.र्च्याच्याक्याकरान्यः इ.लटाश्चाक्यः श्चरात्यारान्यः प्याप्तान्यः अर्गा 5'5'म्बुस्या "D देय'इस्यापर्म दॅव'ग्रर'म्द्र यर'म्बुम्य' रेट'विट'बैक' देव' बेबेर'बर्ट्र परि क्षे.चर्छ से बबे दे.ट्रेट्र क्रूर धिय मःबैनाः याञ्चरायमः अस्वाने विरायसः नी नश्चराद्गरमा श्रुद्रताशु र्वेद : कुद : देद : दे : क : य : दें : ख्रूद : ये : य : चु ता ङ्ग'বর্**র**'ট্র द्यारी.पर्.प्राक्ष.क्र्यां व्याप्तां या व्याप्तां व्यापतां ② वेश्वरविद्यारिवे क्षेत्रः श्वरः मी द्ये कः विदे श्रुतः विद्युदः र्वेण्यः ल.धिबाया.झर.च.चार्चर.च.प्रया.ल्य सूरी रेप.स्वा.चया.धिवाया. कु.५.५५८ माइचयाता तु.सेचया तथा वार्य विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य स्र-प्वेब-र्वेष्यःश्चर्यः सर्म्यः क्रिक् युक्यः स्य रेष्यः र्घे कः यः त्यतः नियाम्दराष्ट्रा लद्याने मिदालास्य देवाया की लया नु लया पा पने निया वया हेकानहरः भरावरात्र अवार्षेत्राचरात्र व्यावरायाः वात्र । वाराहितासुः ब्रह्मन्द्रविष्यात्रः कष्यात्रः स्ट्रास्त्रः स्ट्रिस्त व्याः द्ध्यः स्ट्रस्ति स्ट्रास्ते स्ट्रास्यः न्वेर-द्व-प्तरेन्द्र-प्तन्न्-दे-प्रन्तु-स्न्व्यः हर्ष्ट्-पः वेन-प्रदः प्तरेः इन्डिन्दिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्र कु क्षेत्र चे ब्राय ह्या स्या कु ब्राय र खिया तरा या स्वा कु या परे प्रस्ते न माने ऋ ता द्वा क्षे दिया हु में वा ता हे न कि ता ता है न ता है

¹²⁽न्ने नित्रक्ति स्वर्थिय मे इस वर वर्ष राष्ट्र

इंश.री. बैंद्या र.थी. प्रथानु.इं. व्र. व्र. व्यक्षेत्र व्यक्ष त्राप्त र्देट. क्रुकाने क्रिंत्या "न्यव कु वन् कु वन् कु वन् कु वन् कु वन् कु ଷଷ:ଖ୍ରି:୨ଦି:ଖ୍ନ୍-...ଞ୍ଜୁଟ:ଦ:ଷଣ୍ଟ:ଟି:ଖ୍ରିଷ:ଶ୍ରି:ଘ:ଜୁ:ସ-ଜ୍ୟା:ଷଣ୍ଟ:.... न् कॅर्राय दः रः न्राय व्या तुः कुः मन् राया थे नरा न केरा " विरा वुरा म.चल.ग्रीयानवेया रय स.च्रा.ग्री.क्रियाया.क्र्याचेतरात्ते.क्रेर.क्र क्षे**। "ने**'सर विं ते तु विं वा वर्षा कु गिर कु ख्या ने र सव गिर्देश श्चेनवान् क्षेत्रामायान्यमायम् विष्यः शुप्ति । वृत्तिवाशुप्ति । शुःसं पतु व : र्वं सं सं पावा कु : व र : व्या प द्वे : ह : र : र : यः व या व देवा : मॅन्-तु-चुन म-न्म-तसन्-नमान्यः निवे-सुल-स-मन्न-म-निव-तर्न्न · वृंब-६-ब्रुव-६-क्य-४। " वेय-८८। "दे-बर-व्व-बर-पड्टे-६. **र्**ट्रेन्र्ज्नात्यवाध्यार्ट्या दाश्चेरार्यम्याशुः न्वयारञ्जेरायः ब्रामा व्यापायके निर्मान्य विष्याचित्र विष्याचित्र विष्याचित्र विष्याचित्र विष्याचित्र विष्याचित्र विष्याचित्र तर्ने र्ह्यन्त्र विस्तायन्द्वयायम् अस्य तत्त्र विस्ता विन् अन् গ্রুমেনাক্তমার্ক্রমার্করমার্ক্রমার্করমার্ক্রমার্বরমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রম प्रवृतः ने यः वर्षे 'ददेव' प्यदः प्रवृतः पहेव' द्वेव' वे 'दे 'देवायः ग्री' वरः

①(美山紅、山美人、土山、竹、岩人、山、)

म्बिन्। मृत्यस्य प्रते मृत्यस्य मृत्यः स्वर् स्वरः स्वर् सः स्वरः स्वरः

या.श्च.वया.क्षं.प्रयाची.श्च.वश्चरं.य्याच्या.य्याची.श्च.वया.य्याची.वया.य्याची.वया.य्याची.व्या

^{ा (}कुल विश्वतः देवा प्रवास्त्र निर्मेत्रः विदेश्य किया किया विश्वतः व

७(र्वे ५ रुक्:इंगरवेय ग्रें ग्वंडिंट इंगडिंग्यर रंट्ट.रू.)

ব্দানকথ শ্রাদ ট্রান শ্রাপ্র বার্যা শ্রাম নহ্ম বার্যা শ্রাম বার্যা শ্র

र्श्वास्त्रक्ताः च्याः स्त्राः स्त्रा

① (শ্রুস্ট্র স্বদ্মাপ্তশ্ব নিদ্দেশ 40)

②③(美可似、口美气、气啊、口花、素气、口)

ष्ट्रेरा ग्वरं भुतः रेगः ह्रां ष्ट्रियः ष्ट्रायः यरः येवयः यः अत्र **र्गामी स्रामी अंदार्ट रेट रेट रुबामी पर्मायर पर दि** स्राप्य प्र **इ**र-रू र कृते न्वा क्या र्स्त्या त्युर-प-र्यम्य दें वार्कर-देव क्रेट- व्व-प---बद्यतः न्याः वितः पद्धन् ग्रीका द्वाः पद्मन् न्रः। यायरा ध्वय द्वीकारी द्वारा पद्मन सम्बन्धः वह्न व्यत्। द्वा ग्रहः मुः म्रः तुः मतु म्रा देवा स्या विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः वयाध्यवान्द्रात्रस्यायान्वन्यायान्द्रा देःश्रवःश्चन्याः ठवःश्चीः ख्रायाः स् बर-प्र-हिर्याक्च-बंबर-पर्वाक्यरा रे.र्वास् छै.ष्र-र्यानर-पर धेव र्वेषायान् यव न्षे तत् व क्रया तथेया सक्षेष वी व्या क्रया दीयाया निवी र्ज. द्य. यह त. प. इं यथा. ूप. प्रत्र. प्रत्य. यूप. द्य. प्रत्य. प्र हॅं व : दवेर न वेवा: वा हेर् : वेरा वा स्टाइं रावर है : वा 1934 वेर् : वेरा ট্রি.দ্র.মাছ না.বাথা ষ্ট্রী-ম-1945 মৃথ-পূর্ণ-র-মের-শ্র-ম-বর্ণ-র-শ र्वे 1938 वर कु कर कु श्वास्तर स्तु त्या रहा । दे स्वास्त्य या गाव सव्य ग्रह्रे-श्र्वावायव्यातु न्द्रम्यायाञ्च देनायन्। विद्रायाय वा श्रमतारेते.स्व सम्बारम् चरानिमन्ना केवायारा श्रुराधनायते न स्तायायाचीयामास्यवायाचे वतानुताची कुत्रे के वास्यास्या स्वा यः वुरुष्यरः वृष्यः विद्या दे र न्या विषः तुः मुझेष्यः यः अः सद्। **के.प.बट.त्र.चेन.चेन्यकेट.चेन्यचेन.चेन्यचेन क्ष्यां प्राह्म व्यव्या** ब्रेयः श्रवःदेदः ब्रेटे दे होरः वी नायवः द्वां वावः श्वः द्वां न दे दे होर र द्वां र र होना **ृत् यें न. के. कुर. न दें न दें अ. ऑर. इं अ. ग्री.** विंद. ने विंद. में विं

द्यायायात्त्रक्ष्याः १ वित्रात्त्र्यात् व्याप्ताः व्यापतः व्याप

श्चित्र्त्रत्व्याची नद्वा ह्वाया वया द्रा द्वा व्याची नद्वा व्याची नद्व व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्व व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्व व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्व व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्व व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्व व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्वा व्याची नद्व व्याची नद्वा व्याची नद्व व्याची नद्य व्याची नद्व व्याची नद्य व्याची न्याची नद्य व्याची नद्य व्याची न्याची न्याची नद्य व्याची नद्य व्याची नद्य व्याची न्याची

न्द्रद्रित्रेयताहेतात्रव्द्रामः श्रुद्रामः धेर्द्राम्या ।

ॅब्ट्यर्न्ट ब्रॅट्यर्शः शुःचदे गुः धटः वेगः शुरः व।। "

नेश्वर् संगुर्ता वित्रं हेत् न्याया स्त्रा नेश्वर्ता स्त्रा स्त्र स्त्रा स्त्र स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा

"रेन्स्यून्यं विष्यं त्यात्रात्यं विष्यं विषयं विषयं

ढ़॓ॴज़ॹॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॣय़ॱॸज़ॱ॔ॴज़ॴज़ॱॸॣऒॱॾॣॗॕॖॗॖॖॣॖॖॣॖॖॖॗॣॖॗॣॖॖॗॣॖ॔॔॔॔॔ॗॹॴॎॱ॔॔

^{🛈 🎱 (}ज्ञुल्याम्बर्षः नेन् यदे 'ब्रूंन्यनृत्रः ज्ञुन् न् त्रेत्रः ज्ञुन्तः वर्षः नेनः ३१ — ३३)

र्ने मिल् ग्राय देर सेर सर क ग्राय या बहें व की पर्

प्रक्रा के न्या के प्रक्षा के प्

मुगनत्वात्रस्य स्वा विगनत्वात्रस्य स्वा विगनत्वात्रस्य स्वा विगनत्वात्रस्य स्वा विगनत्वात्रस्य स्वा विगनत्वात्रस्य स्वा विगन्न स्वा विगनत्वात्रस्य स्वा त्य स्वा

भूर-विवा-ग्रीका (ग्रीवरण्या-प्रः) पश्चिर-श्विदः त्यार्थः त्यार्थः त्यार्थः त्यार्थः व IGSOGIET VO देवानुः नदेः इव मदेः वरः तुः सुनाः स्वरः नवरः ः चेर इंशासु सारित है। देवा वेश कु वर रें रे व व र रें প্রথ প্রদান त्रेयाम इराव्याविराखानेनाम्त्वात्रेवालु केया इराज्ञान्त्रा लट्राव क्व वीया स र व शिवे वाद्व लु च के या च्या अद चे तर वादा स्टर षा-देवयाय-प्रवासी-वार-धेव-कुः श्री-विवा-वीया-प्रवायाः इतः क्षेत्र-धें तत्याः " न्व-न्द-वरुषाम्न्व-लु-पुषाय-भ्रवषान्त न्यायान्-लेन्-त्यावळान्त-**इ**च-भु:८ल:ळॅर्-स-र्टा थुल:गु:न्व्र ल:न्डेन्व कॅ:र्ट्स्टर व्ययः श्रुरः वयः श्रुराप वेयः ग्रुरः। श्रुरः मृतः मृत्रः मृत्रः मृतः द्योयः तश्यः पत्रुरः लबालिहेरायासुलाचराचगावासँब न्यायाने हेन् नरायेनवारारा र्वेद्यः हितः श्रेः दिवा च . र. परः केर् . पर्श्वया चया या या या वेदः से र. वृदः दया **ब**'न्य'ग्रे चेन् क्षरता ने 'ने न्या सुन्या त्या या नरता वि । च र 'ने न नग्रदःह्रं वः ग्राः वृत्रे व्याव्याः व्याद्रं दः त्याः स्वरः ये प्रयः র্ম'ক্ট'ব্দ'। न्मॅलःपदेः व्वतः पञ्चलः दल्लेवः भैवः ववः यः सुत्यः चः वव्यः ग्रः सुरः वद्या क्षेत्रः स्वा सेवरा द्वेदरा वृत्रः दे कु वदः वृत्रः वृत्रः द्वा स्वा प्रति । । । लायात्वाव इत्राया गुरा ठवा तहें ना यहं ना वा विता विता विता हुरा ही वेनवःभैरः। र्वीदःहै पर्वतः कुयः रेरः खुगवः पराः रेः ऋः श्रुः यः 1914 स्र-विश्वयः रटः प्रमृतः परिः भ्रम् गःन् भ्रमः मुः भ्रः व्यापञ्चः द्वयः पञ्चयः परिः "यः

[्]री(हॅग्यान्हेंयान्) र्वा देवान्वेयानः)

विष्य सुर्धि याधिया चेरा प्रति क्षेत्र स्वा याधिया प्रति क्षेत्र स्व याधिया याधिय याधिया याधिया याधिया याधिया याधिया याधिया याधिया याधिया याधिय याधिया याधिय याधि

^{®(}द्वे दर्द क्रया तहता क्रे इस सर्वर्य दरा महता

खुन्यस्त्रिः विः चुर्त्रेन् सं के न्द्राचन्य विन् म्या के त्र के न्या कि न्या

"ठ:२८ म्वराः पङ्गरः ग्रेन् । देव। ढ:यदः न्यादः श्रुतः श्रुनः प्रः म्वः । हः यदः न्यादः श्रुतः श्रुनः । हः यदः न्यादः श्रुतः । हः यदः न्यादः श्रुतः । शःवेतः प्रयादः । शःवेतः प्रयादः । शःवेतः प्रयादः । शःवेतः प्रयादः । शःवेतः ।

①(美山かい古美人、人山のは、着て、セン)

इनियान्य व्यान्य व्याव्याय व्याव्य व्याय्य व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्याय्य व्

द्यान्य्यान्य्यान्यः स्वत्यान्यः स्वत्यः स्वतः स्व

ने न्या विर्म् स्वर विषय विर्म् स्वर विषय स्वर विषय विर्म् स्वर विषय स्वर विर्म् स्वर विषय स्वर विर्म स्वर विषय स्वर विर्म स्वर विरम्भ स्वर विरम स्वर विरम

শ্বশক্তিব দিশ অনম্শ্ৰ-ধেই অৱশ্ৰেশ উদ্বিজ্ব দিশ অৰ্থ নাৰ্থ দেশ रेव वेरःन्ग्रासः स्वाधिःन्सः वहंग्राधरः वहंन् त्रुणं ने अरः हर ष्टि निर्वा निर्मात विकास विका *र्धुर्पं*नहेर:बव:नव्रावन्धुर्वर्गु:कुय:रव्यःवेन्:ईय:ववेर्ःः वरः बरः वरः वरः वरः श्रम्यायः बहुव क्रेव यः करः नः कृः नुयाः ने खुरः ख्याप:....र.क.क्षेत्रारम्यः इत्यासद्रः क.मुव् श्चेवासरायो चेत्रात्वराहः .. **इ.रट.** क्रिय. यो हे या त्रात्र व्याया स्थाप क्रिया या त्रात्र व्याया हित्य व्याप त्रात्र व्याप विश्व व्याप त्रात्र व्याप विश्व व्याप विश्व व्याप विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विष **ु**यः श्रम्परा ग्री 'धेम्' केंदः नुयः सु 'दम्दः धुम् नु 'स्य पदे 'मुव' ग्री राद्य न्या हु रा चुतःरनरा¥यःमदैःदर्दे नःवीचायःकुरःपविरयःमदुःश्रॅरःर्दा चैतः रनराने तर विगम् भीतरान निगला में लिए भीता स्व मिर मिन नि परः कर् है : ऑदः देयाया अर् रहेया "द्राना " हिन् द्रया गुदः कुया रायया ¥अःकुरःअधुवःतशुरःरॅग्यःरअःगव्राःगः रेॱधगःधः रेर्। "① न्ह्रुरः द्वं या त्वं द्राया वा द्राया वा विकास ড়৽ঀ৻ৼৢঀৣ৴৻ড়৽৸ৠ৻৸৻ঀয়৻ৼ৽য়৻ৠৼ৾৻য়৽য়ঀয়৻য়ৢ৻ঀয়য়৻ঢ়৾৽য়ৢঀ*ঢ়ৣ৾৻ৢঀয়৽৽৽*৽ नर्वासं वि वे बूँ मानर्व की स्रायान वेम्याम वेस्याम विष्याम विषयाम व न्डिर्याणी महीना भना निरानी नवता स्वार रियान स्वार नविन्याणी

① (考可和·□美丁·丁可·□克·黃丁·□·)

१ १६८ देवे थे वे ७ ७६८ हुँ व बेर् हु गवकार विवाय कुषा मवदे । दे **24.** 美士·甘仁·如·其仁·自如…若士·舍仁·由·美·安仁·也子。如·曰字曰·至如··· रमका ग्री व द्र्यूत विया तब्दा नक्षा महारा विवा " । वेका ग्रमा बहरा त्तृम ने व्यायम्य प्रमाधि म्याम क्वा मु । स्राया प्रवे स्यापि सः । सम **१.८१.९८.च्या.५४.८०.ची.५५७.ची.वर्श्वालवालय.वर्षालय.थे.५५०.** हे विमामह मामवद्रा दे माराई देर विमायह मामुदार दे त्या थे में के वर्षाःचरःविदःवीवा "ने वे 'ई 'नेर वा धे जो वर्षे । यदे स्रवका वा चुर नः धेवः देवः "७ वेषः गृह्युदः ५५ न दे व्यवः क्षः यतः क्षेत्रः येवयः द्याः क्रुयः रवलारेवाबेरार्गरायास्यादवितात्वाराह्यायस्या स्वरापिता **ऍব**ॱনহ্না-কৃষ-দিদ-অঊনা-স্থ-খুদ-ত-হ্মব-ন্বদ-স্পন্তা-অ-ন্ট্র-ঈ্ম-ब्रीट-भुःशुट-२व्यवाः भूर-वट-ठ-२ व व खी व्यवः ववा केवा व्यदः यः दे -४,रः वः क.च.इट.बुटा वि.वि.श्रयानाचठवाल पहेव.ज्. ब्रैया झ्यापड्टा यह्ट. ध्यादेराव्यरायह्व इराष्ट्रकी श्रुरायश "दे हेरा के वि इरा मले सिरे के ब है मान्यमा स्वर तु निरा के नि से ना सु मार्क मा के ब से मार्च मा विन् वेनवाने। दें बुन र मुवेबा दिन नम् न्वा वर विनवार वि वर **२वॱद्यः छ**देःश्चः बरुवः रुःनेवः नग्यः ग्रीः द**र्वः** ह्यः वृगः क्षेावः वृगः वृगः श्वाः श्चु**व** बुरासुला वेरामा ने तेवा मुन्दर्भा की वेरा मे विकार हैं के कर बढ़ वा मुन इर-वी-ख्रवाय-देवे वर-तु-तहर-ह-ग्रुंव-व-श्रे-तश्चना-वाक्षरयाहे-त्यनः

①② (菁可以·互美云·云可以及·云云·云·)

न्ड्यानेयाव्याक्षाम्यकेवियाम्यरागावियावयार्मानीरातु विवया हे-दे-वयावर्ष्वेचयार्द्र-इंदरायंबावेचयार्वेदा। विदावीयार्द्रवार्वेद धते मुल रमका ल ही र क्रुंट कृषा हा मा रेक में के क्रा लमा में मुट पर् मा ग्बुद्यः द्वाः न्दा वि चुद्दः द्वाः गुद्दः केदः च वदः वी वर्षाः व **इस.धेब्य.बवेय.बवेय.रट.**बेशेट्य.बैटाशुर् श्चेट.केबे.चबे. मैका मुता नवका ने : धन व सं : ततुन : डेका न खुरका ग्रमा देन द : हेन ने दे न्द्राम् न्यायाने केन्या व केन्या व केन्या व केन्या व केन्या व क्र-दे-वेब-लब्द-बर्ड-म्वेल-सु-सु-द्वम् स्र-व्यावन्तः वर् वर् स्बा नियं मधु त्या त्या व्या द्या है न्या है अधि वे नया है न्या है । क्र-भियाञ्चर वयावियान् वेगवाग्यारानवरायतुन दे वया हरायरातुः अव्यायेनया:धुन् र्वं यान्तु ग्राय्वा क्षेत्रात्नरः स्वात्यायात्वरः वृहः । दिरः ररः नी पत्नाया भवा हु दिरास्या नवरा दर्गा पदे द्वार से है। हैं শ্ব: 1946 ইন্ নব: বুন: বস্তু: হু শ্বানির রাট্টি: শ্বর: ক্রানানির নার্ব নার্বিশ্ लाने स्थे मं वर्षा होने मालुमानी प्राप्त स्था स्था द्वा द्वा यःस्टिन् भी विश्वयाष्ट्रह्रा स्वानी श्री न्यं व न वेताया नायः यतः । क्षेत्रवामकः सद्यः त्वरः सं स्वैः धेः के त्वः क्षः सु : ते : के त् : यः के कः । मण् वा वा वा वा वा वा ब्रुव-व्यास्त्र्यास्यास्य स्तरान्त्रीयवारान्त्रान्त्रान्त्रेयान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्र मर्थियोत्ताः वा चर् । विराज्ञी मर्थियोथाः भवाः ता स्त्री के विष्या स्वापः द्वारी प्राप्ताः मम्बरः इत्रः श्वायः स्वायः स्वायः स्वायः म्ह्यायः पद्धयः वयः रे रे प्वविवः विषः ः मनेरःववःमः धरः च्रुषः तरुष् विरः तर्भवः च्रुरः चेरः पर्वः र्रवः

① (ईল্অ'নই্'্ন্ল্'নই'স্ন'ন'ইন'ইঅ' 19)

क्रेन क्रेंन यान्दर श्रुन अहिन ने छेल विद ने छन राम में संदे दर् छेन लाचिराक्ष्यामदी क्षेत्र ग्राम्या गुत्र वेया स्ट्या वित ने से न ही न त्या मित्र ५५० प्रमु र्यं र ह्राया यह र र र वे परि ने सं हे र वे परि ने परि ने परि ने स् त्येयाची ताचेताया नेराचेतायते हुत त्वा ने त्र लेग नग्रवता है से बह इयल संरत शु पञ्च पर गुगल देव देल देल की भनत देन मु ग्रा (५५) व हेरे:) गुलुर:गैल:वॅ५ कॅ्५:श्लु:कंघ:५५) व हे:रे:७८:श्लेख:लव:लः र्ने तर्द केंद्रात्रेया में प्रत्ने का मार मिर में के मार मिर मिद দ্বাৰ্ম ভ্ৰেম্ব বিশ্ব বি इर ठव सुर। गुव तथेय संग्रामा सुर य ने दे से स्रामाय भग लायम् लायम् । विष्यान्य विष्यान्य विष्यान्य विष्यान्य विष्यान्य विषयान्य वि न्द्रीतः हितेः हें कं नः नेतेः नदः न नन् ग्रीः हे यः शुः कु नयः वायतः वि नः भेतः । म्हनवा "नर्डं देवा है म्हरानगदान हुयान है न्या वयवा करान न्या मैयानची। " वेयापाक्राच्यावयाचुरानावेयाधेवा अपयान्यरा**ने** ब्रेट्-ग्रेथ-इं-य-द्या

द्वयः श्वेतः श्वेत्वयः चर्द्वः च्वयः द्वरः स्वायः चर्दः न्वयः स्वरः श्वेतः श्वेरः श्वेतः स्वरः स्वर

① (हॅन्य-न्ह्र्-न्न-प्रे-इ्र-न-न्न-र्य-21)

वियान्य प्राप्त प्रमान होत् सुन्। म्यान होत सुन्। म्यान होत स्यान स्यान स्यान होत स्यान स

u.t 2 u.u 当 u y d. イヒ・ヨーロ・イズ u.ロ 章 L. 日 u u. 美 u ヒ・ヨロ・カ u. खु.पश्चित बह्र र.पर्ये ग्रेटा <u>ट्रेय स्व.स्व.</u>धृपापर्वे .क्ष त्रार्वे स्व. पर्नाय बर्। यायमान् ने नियम्बन्य हुन पर्दे हैं के वियम्बर् हुन न्द्रिंदेश्यद्रव्रक्षय रच रणायस्वयायदे द्वी ततुत्र क्रेयादयेयाची... मं कुषा वेषा परि वदा ति विदाय दुवा उदा । धा वे व वदा देवा व है या परि रा बार्बेश रे.केर प्रट.बट.इ.चेन पद्भवीट.ह्ने.चड्नेथ रेड्रेश तथ. **ॅं. विनापर इर** विना तु. पर्डवा यह ना च्या नेरा राम राम रावित केरा नभूयाग्रीयान्द्रनायना रिटाई कुन् नु मिन् वयाल मायेव सार्यन्य प्रया रामान् वेतान्यत राष्ट्रिय श्वरायत नगरान्य वतानगराञ्च **ळे:ने'ॲलःळं**'८५े'चेुन्'-्नॅलःपदे चग्रदःयनःपरःपहेवःहःखगःखःप**छः** द्यः वृषा गुरः श्रुः सुषः श्रेरः यदः । इरः ह्या धरः गुव्या रेरः वरः দ্শানার্যা নেই ক্রিনের্নান্দরেক।
"ইন্ ঐ ট্রিন্ট্রির্নার্যা 1946 द्र-श्च-पर्व-प्रवेग-पर्व-स्रवाश्च श्वास्त्र-त्रेव-द्रिय-द्र-र्ग-प्रवास्त्र-भूटः मवर कुरे क्रें र वि र वा र इव रिट र नियर विषय के ले ने ले ने स्व मदेरमातरवन्तु धिन् सुन् मदे तुस्तर् स्त्र प्यार हेन् स्तर सुन्नियः राज्यः यः प्रमृदः चः द्वे : वार्षः राष्ट्रे : वार्षः : वा रुवात्वहुतः क्रुवायान्तः सं 'व्याञ्चाय व्यन्'ग्रुता वरः कर्वने स्वाकेष वयानाया द्वागुराहे शेष्या श्वायदे ग्वयरार्ग शें जना नतुन् ग्रीः नुरः कन् रिः या सदा। वे वा महादवा मा स्वराया महत्राया । इस्रायायाः में नदे द्वा विषा न्मा द्वा ने के ने के त्या द्वा या विषा विष्य ने निष्य कुलारमणात्री त्युमामदी रे मार्थ व विष्य दे विष्य विषय विषय बाववःशुः प्यरः बेर्। वः यरः लुः चः येवः त्रवान् । वं यः वं रः यः वे बावार्व **ड्या बेर्-पर्यः ज्युःबळ वर्तुः जुलः रवर्यः वर्दे त्र्रः व्यरः र्ह्यः वर्यर् वर्षः** यः ळेषः ळेषः त्यः क्षुं यह ष्वत हे . कुलः रयता तर्दे . त्रः विषाः वीता य रः ता यदः । रात्युराना**र्रा** श्वासर्यारमार्वयायात्रकराज्याची भेषाय्याया **च्यापादर्गः स्वयाद्याद्याः हे व्यायेष्या हे या वृं व्यायक्य प्रायः व्यापक्याः** यः १८ ग्री व्या रर.र्था.मैज.रपथ.ड्रज.पर्स. २व.पर्ट. ५व. खुरामाञ्चरावयरारायवाग्री विस्ति वना केरा के क्रुरा के धेवार्ष र ग्री वैषाञ्च ऑर्याग्री अनुवानु या संर्याया वा द्या हिंदा या विषा संरादेशा या भेवा ने नु त क्षेट ने अव के बवाय मान्दा के निर्मा के ताम दें राष्ट्र खु:८मॅं **र** : बुदी: बृषकः स्थार्भः खं : मा : बाईवा धु: दे : प्यटः या स्वराद्धयः मः अः चर् ' कुषः रमषः ई अः दर्धे 'ठदः रे रे रे विष ई गवः र्षः रे दर्षे र द्वे व विषाग्रुराम्बयार्था" () विषायि विरासन्ता देवार्ग्राभेरासरातुः मञ्जून नव्**रः** श्रॅरः "धरः मञ्जून वर्नः वे वे स्वाः (श्रुः सः 1947) सः रः । ᠯ᠋ᠵᡳᢂᢩᢅᠮᢂᠵ᠂ᢋ᠂ᠮᢂᢆᢖ᠋᠆ᡪᢩᡏᢐᢧ᠋ᢆᢧ᠂ᢡ᠂ᠬᠵ᠈ᢩᢟᢆᢋ᠂ᠱᠸᢂ᠄ᢩᢡᢏ᠂ᠮᡭ᠂ᠵᠵ᠂ᢩᅾᠵᢩᡰ <u>र्विः इथ.चोधेर. बर्चायाले यात्राचाच्यात्राच्यात्राच्याः व्या</u> म्म्यायायायायावारतेयाम्यावाराव्यापरातु प्रमुवः"@वेषाम्यायायाः " *ॱ*ष्ट्र-ॱकृर-।यर-व्याः व्यव-यर्ग-य्यव-रः ह्रो-यर-पर्त्त-वर्ध-र-पः ध्येव-द्या

बे.स्या.प्रपु.सं.संब. श्रुंब.लब.कु.श्रुं.पश्च्याया.कुपु.संयाया.कुपु.संप्राया.कु

① (大司·麗如·別·美可如·口蕉之·七司·口及·紫七·口·)

② (हॅन्य ग्न्र्न् न्न्ग्नि देन मः)

इराहे निवानी पर्देत राकंट वा क्षेत्र स्वयं देता विवाद स्वर केटा पर्देता स्वर केटा पर्देता स्वर केटा पर्देता स्व निरातु क्षां नृष्यं या स्वरास्य विरात् विरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स <u> नयल.पञ्च नय.नट.लट.वे.बै.ज.केर.त.धूनय.ज.पक्षेत्र.ख्ल.री.क्र्याहरा.</u> नव् न्याधुयः धराम् व विष्यः होरान्ये। वरः कुरः विषाः वरः नव्याः केरः। न्याद्रणा ग्रुटा द्वरा द्वरा द्वरा द्वरा द्वरा विकास **बहु**न्:नव्या:दर्य य:नरुष:ध्रद:तु:ध्रुय्य:नर्वेष:नर्ने:तु:ध्रुद:यर:ञ्**र:। ই'শ্**ন'ম'শ্ৰীঅ'ৰ্ডম'ৰীশ্নৰ্শ্বামান্ত্ৰন্ত্ৰাম'নান্ত্ৰাম' 1949 ইন্'আসুন'''' स्पु: र भीष. थ्या. १ था. प्राप्त शिर्या भी र प्राप्त श्री प्राप्त था. व्याप्त व्यापन । स्राप्त वियाने . इ. प्रेचा प्रयाधिरयाशी . श्रेचा श्रेच श कुव्रर्थेयानव कु विना निर्या वया में राज्येया प्रतर्भ रे स्मिर्या श्चे.चे.चे.चे.च.च.चे.चळ्.के.के.यर.पर्वेचवात.पर्वेच तथाविदाचीयाचीयातपुरा.. रट हिया तु हो नवाया न्टा सहंदर्या न्ये स्कर है स्वर है स्वर हिर्मे ततुम्" ठेरान्दा "नर्डेव विदानकानहेंवायान्दायहत्यानवा भ्र. श्रे. प्रिंग. य. प्रचर. रता हूता है. य. रवा श्र. प्र. श्रेया रेंद् तु :श्चरः यतु वा यरः खुद् : ठंवा यश्च त्यः यः कु यु ता ठेः त्रे रः वेदः यदिवः ः ः हुरः" 🗓 देवानवार देरा विस्ति क्षेत्र हुरा क्रिया महिरा हि साम स्वाप क्षेत्र से द्वार स्वाप स्वा श्रुवाया विवा वया भागायर श्रीतावी प्रता र्वा नेराय वुवाय वया विदाय विवा

^{🛈 (}न्ने कें ल इस सर नेन मेंल 22)

स्ताः स्ता यद् । विद् त्य म

चुक्त स्ट्र-स्वा प्रक्राम्य स्ट्र-स्वा विक्राम्य स्ट्र-स्वा विक्राम्य स्ट्र-स्वा विक्राम्य स्ट्र-स्वा विक्राम्य स्ट्र-स्वा स्वा स्ट्र-स्वा स्वा स्वा-म्वा स्वा-म्वा

 व्याप्तः क्षेत्रः कष्टः क्षेत्रः कष्टः कष

म् स्वराध्या व्याप्त स्वराध्या व्याप्त स्वराध्या स्वराध्य स्वराध्या स्वराध्य स्वरा

① (न्ने प्तृत कॅल प्रेंत में इय बर नेप र्ला 23)

② (菁可可、互養方 「可、景下")

सवः स्वायाः सा विद्या विद्यान स्वायाः स्वयाः स्वयः स्वय *ऍण्यान्* म्ह्रा **"**नेते तु या वॅन् तर्ने न्वर्ज कुया नेरा सुग्या ग्री । तकरः वन ययः रुषः न हवः रुः ग्रॅयः हे : वेषः मुयः विवासरः केवः स् देः वरः । য়ৢ৾৾৽ৼ৴ য়৽৴৸য় য়ঀঀ৾৾ঀ৾য়৸৽৴য়৽য়৸৾য়ৢ৽য়য়য়য়ঀঀ৽ৼঀ৽ড়ঀ৽৸ঽ৽৸ৢঀ त्या क्षेत्र कृ ग्राचमा न हेरा धेर कृत्र प्रत्य दं न ततु ग्रा शुरा न छ र भ्रा कि न ग्रदः केवः खुदुः चंदः तुः क्वाये प्रयानी याः द्वारानी हैं क्वादी प्रयानी विश्वादा प्रयानी नकर यता चेत्र के क्ष तिवा केत् पतु कह्या यह त्राया वे नता सदे क्षेत्र राया महारतः र्वा 'रतः गुरः र इतः भ्रः छं नः ग्रीः मवः नरुरः यतः हे र सर् *ৠ*৾৽য়৽ঀ৾৾৾ঀৢৼ৽ঀ৾য়৽ৼ৾৽৾৾৽ৼ৾৾ৼৢ৽ৼ৾য়৾য়ৼ৾য়৽ৼ৾য়৽য়ৢৼ৽ঢ়য়৽ঢ়ৼ৽ৼৢয়য়ৼয়৽৽৽৽ *नेन्* :बेन् :बुर:बुराय:धेव:१वाइन्य| युर:न्इन्:क्नु:कंन:ग्र**-:हे**व्:खुरा बनुबरतुः विद्रायेनवर ग्रे : ब्रुबर्ध सम्बद्धाः विवा वैवा श्रुः विवयः वा नह वा न्धन् ग्रमः इतः हे : न् वै : श्वः वळ्ळा न्यायः चरः छ्राः छ वाः बुवायः नु व वयः । য়ৢঀয়৻য়য়৻(য়ৣ৽য়৽ 1951)ৼৄয়৽য়ৢয়৽য়য়ৢঢ়৽য়য়৽য়য়য়৽য়য়ৢ৽য়ঀয়৽ঢ়য়ৢঢ়৽য় <u>इ.</u>के.यपु.के.कू.कूरं.यपु.स.२वा.स.के.यपु.से.योचेययः नुटा <u>ट</u>ु.श्रेययः *न्सु*रःग्रद्यःयवै प्यक्तुःवे प्रसुरः येवयः येत्। विरःश्चः यक्षियायः विरः त्रॅ.च.६८.ल.४.जवश्यवायार.६५.५.व८.अ.प्वयावायात्राच्या *ं*नुबुद**ःत्रा**र्चे :५च्चेत्र्ग्रीयःधेरःर्खेत्।बुषायदैःन्युद्धरःस्र्यःस्र्वाःद्धनः र्तुः वॅद्राया इसराया नहीनाया हे विया केसरा शु ५८ दे । या निवास दिर

⁽र्ने प्रुव कॅल प्रेम ग्री क्या वर रेम देस २८०)

हिन् कुरा देन ने मूरा वे या अविदया नया से नय ने न्य हता नव न में भी.विनय. १५८. वर्ष्य वया पत्र. तिया ग्री. वशिर. क्षय श्रेवा नर्षेत्र. या..... इबला बुगला वरा नवरा तर्गा उरा "रेगा नवला नवरा नहे "बेरा ロス・選上、翌日公・女山、女・女・女下公・対口公・美・女」、女下、日・美 公・初 丁、 मॅं ही के नवाकं दारेगानियां में की रेगवा विया वह ना विया ववाका प्राप्त न्दःनेदेःन्शुद्रःस्याने स्यान्दे । त्यु या अर्द्रन्यः ह्यया न यदः में द्धनः । । <u> इतामेथर.प.श्रमेथःश्चे विषयः प्रेर्यावर अष्ट्रमा यथः मृत्यर प्राप्त विषः</u> त्रस्यायहर्म्यानहे वायान्ये प्रत्यापम् वे तुराम विमास्त्रामा व्या स्व चिरात इयया च्र क्रिया ही ख्र बाया क्य रेव विराव स्वा क्ष न्या तर.ध्या. रेच. रेखा.थ. १ वय वया र छ .श्रुव. यवर. च. यव या या या र वर. बक्र्या नेति माशुर संया क्ष्या खरा स्वाया खरा सुन वार्त न सुन या परि दे न इट.ग्री.प्रयाप्तास्य पार्यः स्वयं इयास्यान् । विष्या वाष्याः । र्टर. चंट. वृ. श्वे चया दे. केंद्र झं या श्वाया श्वेरात देवा ग्वेर मुद्राया या या

① (青河村 平養丁、丁可 梨丁、)

भःरः हः तीरः पत् वाताः तु ताः श्वाताः संधायसं नः पदेः «सु । वारः वादताः धेवाः » यदः श्रु रूपः 1945 यूपः हिन्या स्थायह्न पात अक्या निया केवाः [四리·대·고실 스·다ζ·너희·마리 시 다·》《스트의 원 드·플·제·디시스 》《스트의 म्रीट.चेयाचे.चेयातपु.ट्रेटा.>मु.चर.ची.अस्व.केटा तत्तालचय पचतः तीय. र्वेट्यी स् . वट्री ई. र्रट, श्वीय. क्री. वट्ट. ন্দুহ ক্ৰম ৰ্ रेषाचकु 'न्र' वे 'स्' ख'कु 'यर्ब न्र त्रेषाच मन् 'ठव' न्र'। चल-देन्यानु दे है . तु : च ठ वा न्याया प्रदे : देव : के : व : व ठ न्याया व व देव : व व व व व व व व व व व व व व য়ৄৼ৾৻ড়ৢৼ৾৽ড়ৢঀ৾৽য়ৢ৻৸ড়ৢয়৸ড়৸৻৽য়ৼ৾ঀ৽য়ড়ৢঀ৽য়ড়ৢ৾ঀ৽ড় ≪के.ब्र.प.लपु.चक्रेच प्रदूधः>(श्रट.मुंद्र:श्रूर.)≪श्रेजा-प्रचयार्च्या व्रेयः... ८ मार. त्र. > (क्र्या पस्. क्य.) ≪श्रेषा विषया रुवा नया चर्से रावदा विषया रुवा नया चर्से रावदा विषया रुवा न ङ्कर्ष्णितराग्रीः व्यरः अंश्वादीः चेत्रः चेत्रः अंश्वादीः चित्रः चेत्रः ग्रीः र्गादः प्यदेः ः ः । मृदर्» «पर्गः छेर् अवतः र्धरः» «पर्गः वेरः रेजः धः देवा छ । पः » ≪रदःपृष्ठेवःद्रयानः≫≪गृष्ठ्यःश्चित्रायःष्ठेवःश्चवःपृत्वःनः≫≪लेग्यः ञ्चरामदाबह्दरः≫≪शुवाह्मवाराश्चीः श्रॅराह्मरानुः≫≪श्रृवाद्यावाश्चीः · · · · न् गादः गावन् : व्रॅंदः तुः ≫≪क्षः यः न्दः। व्रिया नयायः ययः र्यायाः ग्रीः गे.६.भु५:३५८:४४:३५८:४४:३५८:४४:४४:४४:४४:४४:४४ ₹a:बुद:ग्राव:aद:यां दे:बेव:≪५८:अ८:कु:पञ्चप:ठु:≫गवेव:स:

≪ञ्चितायाचेलट.पह्चयातानेवट.पद्घचश्चनः३, र्ट्रमधुवाया «गाःभैःगाः ५ वदाः वदाः पदैः वसुरः व »«पॐदः विरः वदाः वदाः पदेः । न्द्युर्व्यस्त्रः अल्ड्न् वित्रः ध्यात्रः प्रत्यः न्द्यः न्द्यः न्द्रः वित्रः अल्वायः अल्यायः अत्यायः अल्यायः अत्यायः अत्यायः अत्यायः अत्यायः अत्यायः अत्यायः अत्यायः अष्याः तुरावीः पञ्चानः चुः र्रात्याः वाष्याः तुः वाष्याः वाष्याः वाष्याः वाष्याः वाष्याः वाष्याः वाष्याः वाष्य नते.मा.क्र्यः»८८। «सल.सेर्.मा.क्र्यः » «स.सक्रूरं.मी.८८.क्र्यः» < इ.व.चंचर. होय. पा.चंचर. चंद्र. मा. इंचर. श्रेच्य. मे. पुंचे होर. होया. चेया. बक्कव.कच.त्रेच ची.द्रवारा.चे.कट.वट.त्री वेट.ग्री.चशिट.क्वालाचश्रेया इन्-ऑन्-बेन्-ग्री-श्वन-गा-ठन-≪न्सु-बदी-इब्य-पन्न-शु-शु-न-नेन्न्ता------**ॻॖ**ज़ॱ≫≪ৼरॱज़ॱऄॸ्ॱय़ढ़ऀॱऄॗॱॸॖॱॐॻॖॱय़ॱय़ॱॺॕॻऻॴ**य़ॱॸ॓ॱ**ख़ढ़ऀॱॴॱॿॖॖऀॻॱ**ॱॱॱ** <u> इर त्रुच चेथर पर्वेर.खेर.चूच क्ष्य धिर.थे.खेर.खेर.खेल.चेथर.....</u> য়ৢ৾৾৾৴৻ৼ৾৾৽ঀ৾৾৽৻৸ঽ৶৻ৼ৴ৼৢ৴ঀ৾৾৽৻৸ৼৢ৾ৼ৻ঀ मद्री मश्चिर हिं श्रे र . क्षेत्र . क्षेत्र . देश . स्था . स्ट म . ह्या . ह्या . स्ट . स्था . बुरः श्रुपः च : कु दे दे दे तथा ग्रुदः म्या के परः यह दा महः यया या ने दा न्यासान्ते केन्त्री कृत्रा स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्व *ने 'बुर'षवर'नर'ने दे 'ब्लॅ' क्वेन्'पदे 'बुर्याम'न|वव'न्र-'बी'वर्'न' '* विगः धरा त्रीतः न्धे 'यळे व' खंब' विष्नु' <u>न</u>्दर्य' व् गुन्यान् न्याया चारा गुरा चरा मेरा ৡ**८.**स.घबथ.२८.स.तु.जूल.टु.घञ्चेनवा म्यारम्या व्याप्त व्याप्त विष्या विष्य विष्य विष्य

> "त्रै-दै-र्र-र्म्ह्-र्म्द्र-प्रदेश्व-प्रदेश्व-प्रदेश्व-क्रुंद्-क्षेट्-र्म्-्म्-प्र्य-प्रदेश-प्रदेश क्षेत्रक्ष्ट्-र्म्-र्म्-त्रक्षि क्षेत्र्य-रे-र्म्-म्ल्यून्य-रे-रे-स्-क्षे

वियाम्बर्धाः विष्याः विषयः विषय

ॿःवरः त्राः क्ष्यः व्याः व

न् अप्तान्ता क्षा क्ष्या व्याप्ता व्यापता व्याप्ता व्यापता व्यापता

저통미'당도"

विन्रः म्र्-नीः न्र्र्नः खिरायां क्षुतायळेवः द्याव्याव्यात् न्युं न्या য়৴৽ঀ৽৸য়৽৸ড়ৼয়৽৸য়ৢ৻৸৽য়৸৽৸য়৽৸য়৽য়য়৽য়য়৽য়য়৽য়য়৽ वरः नैः सं कुलः ग्रेः चुरायः र ग्रायः पर्या इययः दुरः व कुत् रेयः सेत् परेः में वयाह्य वर्तःश्चेताः इतः द्वारायमः वयान्याः वयान्या यर्ग रुगःश्चेमाः इयः यः तुरः त्यः दरे द्वः तुरे कु के त्यः मृहरः वयः हरः। ৾ৼৢঀ ঀৼৼ৵*৽*৽৽ঽৼ৾৽ড়৾৽ঀ৾৾য়৽য়ৼয়৽ঢ়৽ঀ৾য়ৢ৾৽ঀয়৾৽য়৾৾য়ৢঀয়৽য়*ৼ*ৼ৽ঢ়ৢৗৢ৾ঀ৽ঽয় য়्वताची सु दूर द्वेव प्यता वर्ष दे द्वित्र हर खुर द्रा दे द्वेर वर्ष र् मिलिर.बी.पबर्थ.कुषु विवाय.पवित.र्टा ही.क्ष्रमाया.क्ष्य.प्रना.ायर.पेट. ख्र-क्रि-वर्-गादे-दल् द्विर-र्द्-र्श्वन-ह्वन-दल द्वेल-प्द-र्श्-क्व-र्द-बावलायाः बदः द्विः द्रवादाः त्रवा कुषः क्षुत्रः वा वदः पः वठला ता रहे वः वहा য়৴য়ৣ৽য়৽য়ৢৢয়৽৴ঀয়৽ঽয়ৼ৻য়৾৾ঢ়৽য়৾য়৽য়য়৽৻য়য়৽য়য়৽৽য়য়৽৽য়ৢ ल.वें.लपु.थं.बा.श्रे.सुट्.पर्श्वे.बाधियातपु.श्रेचयाग्री.ला.बैंयारीतेर्.बाह्रिपु.बी **क** न्याके पा अरायें विषाया यहें वर्षा परा पहें वा इमि'यदे मुद् पञ्च नवानम् वा पत्र चि नहें र नि वि नवा से व व स् प प वे र र स् क्रिंट <u>ৼৄ৸য়য়ৢ৴য়য়য়ৣ৽য়ৢ৸ড়য়য়ৣ৽য়ঢ়ৢঀ৽য়ঢ়য়ৼঢ়ৼৼ৻ৼৢঀ৽য়য়য়ড়৽ঽঢ়৽৽৽৽</u>

त्रक्तं त्राक्षः क्ष्यं त्र्यः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्यापतः व

नवनः लरः कः सं नवा से रः क्षेत्रकः द ग्रेयः श्रेयः वृत्राः स्वरः हेता हुः । বর্রঅ:অঁদ্ অন্থ্য দ্দ্দ দ্দ্ भ्रांचा या सं अ शिष्टा या बिचा चीया यह चा **ठ**ण त्यानञ्जलायाया सहित केन लेगाया संदे नित्ताया निश्च हरा निराय सेना म्बे के तर् निरंदे निरंदा यह न या अन् 송괴. 리노. 환성. 너고. रेंबा मदि केन् बावल न्वे क्वे के के तुर न्यार क्वे प्रवर दर्ध व त्यल बळ्च वयाज्यर्वस्य स्ट्रिंग्कर्रे वा तर्रात्रे स्वर्त्रात्रे स्वर्त्ते स्वर्ते स्वरते स्वर्ते स्वरते स येग्यः-¡वर:म:इस्टिम्यः केग्निम्यूवः म:धुःन्रःचुः मः केग्वावः वर्षायः । **ॾे**वेॱन्बॅर्यःतकरःथरःक्ष्याःक्ष्यःन्वरःचुरःपरःक्षेरःवन पःव्यावुत्ः हे[.]के.^{बे.}बै.र्टा पवैर.पकैर.पक्षेत्र.त.हे.र्र.ग्रे.ज्ञ.बुच.प**्**य. अव्यक्ष्यत्याप्यान्यन्त्र्रम्न्यान्यः अर्वेषाः वीः न्याः केदैः न्वेन्यः यक्ष्यः । कुःक्षेट्रसं व्यट्रत्रेतः न्वयः क्ष्वः यरेचयः कुः स्वयः तुः चर्गे र् व्यर्। र्रुटः दे-तर्दे न्वर् र्द्वा क्षे लुर् न विषाक ग्राध्य प्रामें र अक्षा पर्रा **र्याः वर्द्धरताः श्चेमाः स्वाः विः श्चेमाराः निरान्याः वर्माराः कमाः वर्माराः श्वरायः स्वायः गाराः स्वायः स्वायः स्व** व्यवरः भ्रम्वारम् मृत्राम् वाक्षः मामः भ्राम् स्राम् द्वारा प्रमा तात्रर द्वेता प्रत्र त्यर प्रत्या स्वाय ही क्वेत करर हिर स्त्र विद

सः स्वयः वयः क्रास्तिः स्वाः व्याः व्याः वितः व्याः व

ने अव क्ष्य श्री प्रत्य व्यक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्षय व्यवक्य व्यवक्षय व्यवक्यवक्यवक्षय व्यवक्यवक्य व्यवक्यवक्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व

वेयायायि वेदायवात् भित्रावया इया द्वीता प्राप्त विवासी स्थापाती व्याप्त विवासी स्थापाती व्याप्त विवासी स्थापाती व्याप्त विवासी स्थापाती विवासी स्थापाती विवासी स्थापाती स्यापाती स्थापाती स्थाप

तथा है. स्. 1991 स्पु. हु. १ ह्या. २ क्षी हु. स्. 1991 स्पु. हु. १ क्षी हु. स्. 1991 स्पु. हु. १ क्षी हु. स्. 1991 स्पु. हु. १ क्षी हु. स्. स्याप्त स

보고, 원·坦·희선·정리·공리석·원·스비국·오리 보고, 원·선·희선·영达·공리석·원·스비국·오리

र्झे शैर∵	₹ब.च.च्	নপ্রথব: ব্রুবা
1. जुलारमजार्नम बेरान्ग्रासम्	न्ने'ततुद्रःळ्ळात्रेया	ষ্ট্র-ম. 1946 খন বি.ম. 19 বুং মা
2. कॅंग'नडुर'वापण यदे'न्यन'कूँदा	र्धर:म्ड्री-यम् इराम्	1545 বন:স্তুদ: 9 প্রদাস্ত্র্বানামা
ক্রুক:উ্ন:ব্রুজর্ নই:হ্ন:গ্রুজর ক্রুক:এশ:ক্রুন:		द्यान्युःयःम्य द्यान्युःयःमन्
4. 黃木·乌曼木·高·芳柯· 為木·若·寶木·養名· 中憂刊	वृद्गःत्रत्यःवृःबःद्वद्	बेड्रेयःस र्थयःच्याच ङ्
5. স্কুল:ম্বল	পত্ত্ব↓ থ:মী.মা¤াথ.ম:মীল.	নুধ্যমনা নুধ্যমনা
বধ্য.ই.ছিথ্যনা e· ছদ্ৰ্যন্তী.ধি.টু.	क्रुपःकुषःबद्धतःवद्गः मम्भाषा धमाःगुःगुरः क्रुपःगुरःकुषःवद्गः	ची चित्र-स्वयःसञ्च-सद्धे- चित्र-स्वयःसञ्च- स्वयःस्वयःसञ्च-

7. বেইমান্চ্যা এমানী-জ্লীমার্মা ৪. ই'বেম্মান্ত্র্যা	ञ्चन दे श्वें न स्वाप्त प्रमृद तहें न स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त	5্বান্নব্ব 20প্র5্'ক্রা 1608 ন্ব'স্তুহ্'
गुरुवाय:द्वर क्वां महाया:दिहासी	न्यरःसुव् ळ म्या	10 অ.জু.ন্ম্
9. ই্ব'ট্ট'শ্চঅ' ই'ই'শ্ইন'ন	वेदःयङ्गे ह	নাগ্রন্থ ব্যৱস্থা ব্যৱস্থানন্ত্
10. জুনে:ম্র মান:ব্রমনা	ब्य.चल्य.चन्द्रः व्य.चल्य.चन्द्रः	नुरुष्-स्व मुरुष्-स्व
বর্ষা বর্ষা	শ্বন শ্বন শ্বন শ্বন শ্বন শ্বন শ্বন শ্বন	मेथेय.ची येथ.रचय.च र्थ.
12. কুনি ঘদ দ্বি	শ্রদ:শ্রম:শ্রদ:শ্রদ: শ্রন্ত:লুক:শ্রদ:শ্রন্ত: শ্রন:শ্রম:শ্রন্ত:শূর্	941 স্থগ্ন সূদ শা 1060স্থগ্ন শ্বী
4 বিশ্ব ক্রম্মা ক্র ম্ব্রি ক্রম্মা ক্রম্মার্ক ক্রম্মার্ক বিশ্ব ক্রম্মার্ক ক্রম্মার্ক	অদিশ্ৰ-শ্ৰ-প্ৰ	শ্রীধানা বুধানব
14. অম'নু'স্ল'শ্বদ্'নী' দ্শাদ'কেশ্' দ্বীদ'ল্		

14.		মূ বি	1643 বন:ত্তু র: 11 স্কু:এশ
15.	मुलय:मदि: ब्रे : मुलय:मदि: ब्रे :	यःश्चु पर्यम् व्ययः श्चयः यद्यवः विषयः पर्वः विषः न्यवः विषयः पर्वः विषः स्या	1328 মন:ন্তুম: 6 বা দল্ভু শ 1388 মন:ন্তুম: 7 বাদেলু শ
16.	प्रदःग्रीः मृद्यः रुप्यः धिम् कः मृद्येयः पश्चा	धुं गुरा क्षेत्रम्	<i>5ুব</i> .⊻বব. ৴—9
17.	चक्ष्य। यक्षेत्र.सप्तुःक्षेतः क्ष्यःपविदः	ईउ.ह्.य्या	না থি - শ্বর্থানপ্ত ন্থাপ্তর
18.	乗 4. 4 単 4. 1 点 4. 4 年 5 年 7 年 7 年 7 年 7 年 7 年 7 年 7 年 7 年 7	द्व-क्रवा बर-बर-ह्-ह्-न्न-वृक्तु-	1436 ব্য:স্তু ন: 7 ই:ন্যুশ
***	ধর্মানী জ্বীয়া	ঘ্চ'ক্টব্'নম্ম্'ন্'ৰ্থম' গুল্ম'ন্	1538 বন:ম্বু দ: 9 ম:খ্রি
20.	क्ट.बान्यःसः मृ.स्ट्राच्याःसः मृ.स्ट्राच्याः	पट्टे ∡.चे. बक्क्षी केंचा.क्ट. त.र्टाज.	1434 रज इंट 7

	1	
21. ಹೆಡ್. ಫರ್ಡೆ ನೆರ್. ನಷನ	क्षतायागुर	1346 རབ་
	र्षतः ई है।	গুদ: 6 গ্র :খ্রি
22. ব্-ট্র-র-বর		
ব্ৰিঅথ.প্ৰ্লে লেন্ ক.	द्वियदाः श्चेष	
ন্ব্ৰথ-ন্ধ্ৰীশ্বা	9 1 21	
23. নহ্ল-বহুদ্-শৃৰ্শ-গ্ৰী-		<i>5ুঝ:</i> ≍নঝ:
इयादराधिन् छेषा	붙' 有도'及'조'ゑ'된	নস্ত কুল স্থা
मह्युयः स्व।	114 41	631911
24. 554.5651	= '	नुषास्ययः
24.	च.चलल.झॅट.।	8 51
25. 芍气沙、芪、犬气、焰、		
ने रूट देल तुवे	क्रियंश.श्रुम	
		24.244.
<u> </u>		7-951
26. নৱৰ ই'বি'ই'গ্ৰহ		1984 ጓባ
নহ্ব-গ্রী-শ্র-গ্রুথ	ूं व.शैच.श्वे ला	
		হু দ ' 16
ন র্- তি ম ান ই ন্ -মা		निर:डै।
27. ইব্ বহুদ নমূৰ		
ন্দু.ন <u>্</u> থ, নুম.	पर्धियातात्रञ्च.	রুক-সনব্দ
	=m=:ដីប	16鮤气"两门
मदे ने ने ने न	र्गरया	- • •
		823 के.लूबा
28.		
₹ ′२८'वै'ध'वे		
	l	

29. ন্ত্ৰ-মূল দ্বুদ-ন্ব্ৰ ইন্-জুদ-দ্ৰ-ন্ব্ৰ	गः इंगः २गः दहेदः छेः नगरः दंरः सु।	1743 ন্ন-ভূন: 12 শ্বন:শ্বনা
30. कॅल'नड्डर'नेद' य'केते'बह्दर्	तु कूँ द - दे द - क्रे द - शुपा	1322 རང་རུ་རུ་ང་ ठ རུ་ཁུ་
31. पहुन:हेल मृजयःपदे:हेन हेन्।	बद्ध	1566 रूप चुर 8 बे सूग
32. শ্ৰুবাই অৰু শক্তবাই	ह्या कु.र्जु.यंत्राश्रोधयःग्रचटः	মন্ত্র-মন্ত্র-মূল্য ব্রুম-মনব্য-মস্কু-মূল্য-
33. কুন্দ্রন্ত্র শ্রুম্ন্দ্র্য	·	यदेब.स्रो युवास्त्रवासङ्घः
34. শ'বৃশ্ব'কুম'		र्थ.राय.धे.धे.स्।
35. ব্নার্থনার্ছ্র ল্লা	दब्दायःसः नहित्रहुः न्यया	1478 ব্যস্তুহ' 8 শন্ধী
36. নম্বুৰ ন্যু ন ন্যান ক্ষ্যা দ্	<i>ভিথা-ছুব</i> -ছ্ৰ্ ^{ব্য-} ট্ৰিখ <i>বা</i> -	1744 ^{ጚሻ} 12
म्बर्या म्बर्याम्	देव:केवा	नैर-छै

	1	
37. ধূর নেশ্ব শুন অধন	ग्री.धे.थ। ब्रिस.चर्याच.क्र्य.	1802 ₹¤'ৡҞ'
38. হ্লেম্ব্রেম্ মন্ত্রম্মের্ম মন্ত্রম্মের্ম মন্ত্রম্	ইং-ক্টৰ্-নূগ্ৰ- অস্ক্ৰশ্ প্তৰ্-গ্ৰুবা	च2ेंब.च येथ.रचथ.चॐ.
39. ষাস্তুনি শ্রুদ ননমানি ক্রিকা নদামার্শি	অ:শ্লু-দ্নাদ্নদ্দ আৰু-দ্নাদ্নদ্দ	1629 국민물다 11 작품이
40. ইত্তর্গ্রেদ ব্যশ্বত্ত্ব্য শূর্ণব্রদ্	यञ्जरा वञ्जरा वञ्जरा	1748 বন:মুদ 13 ম'ন্মুশ
41. ব্লন্থর ক্রা ইবান্থর ক্রা	भ्रम् यम्बर्स्स्यःस्यः	1985 조덕·ᇴ도· 16 취도·쿼도기
42. বই'লুম' শ্ব'ম্ম্ম শ্বিম'ইম'	तम्भुः गुरः रङ्गेवः यहेवः तम्भ	1803 ন্ন.গুন:
l		795

43. 5'গু 'অই'ৰ্শ্ব নহ ে ষ্ট্ৰণ্বানৰ শৃ'ধা	हू 'यदे'न्न' यः स्'यः . केव'या	রুব∵ক শ্ব ন ক।
44. গ্রুদ:শ্রি:ব্রুদ: ক:শ্রুক:গ্রুণ:শ্রুদ: শ্রুক:গ্রুণ:শ্রুদ: শ্রুক:ব্রুক:	ষ্ট্রশ্ব স্থ	1986 বন:গ্রুব:
45. দুশ ^র ন্ন স্বর ক্ষান্ত্র স্বর শ্বান্ত্র	শ্ব'গ্ৰহ'	1986 শ্ব-নে ন্তু
46. मुह्दाहराज्ञुल रुपकार्द्रका नेलात्स्रुलाग्रीका बह्दा	गःइंगः२गःदद्देदःछः र्यहःद्देरःस्	1749 35.85.
47. ব স্কৃন্ নিশ শ্বশাস্থ্ন ভুন কুনো শ্বনানন	ব্নহ ্রা ূ	2ेब.च 2ेब.रचव.च र्ड.

48• শৃগুদ:র্ম:শ্রুদ:র্ম: শ্রমণ:ব্ম:শ্রুদ:র্ম: শ্রম:নূম:শ্রম:	型内	নুঝা নুঝুঝা
49. इति:इति:वह्नः वर्षेषः वर्षे	화네 덕동호 ૣ 쉾. 덕립리-더참호.	
সুন্ধ:ন্থ:ন্থ সুন্ধ:ন্থ:ন্থ	खू.ताकुच म्री कॅ.पापु.धि.वा.	নুৰ:মনৰ: 17 শ্বন্
রীন্ব-চম-দ্বা শুন্ব-চম-দ্বা	चेथ.चे.ब≋्। ई.धुरे.थट्य.	নুব-মনব 17 নুব শহুশ
52. दू 'यते' हु ग्रायते' इस स्टर रच ग्रायतः ग्रीर ग्री क्रेश्वा	क्रेय.क्रे.ज≋। इं.धूर.जट्य.	1701 শ্ব-খ্রু শ 12 স্থল্পন অব্য
53. हू 'यदे ग्रुव पदे ' इयाधर प्राण ' प्राय देव से 'केदे ' क्षे स्या	## ## ## ## ## ## ## ## ## ## ## ## ##	1818 বন:ম্বুদ: 14 ব্য:ম্বুশ
54. দু'অই'নশ্ৰুদ্'মই' ক্ষান্ত্ৰ্ন্ত্ৰান্ত্ৰ অন্তৰ্ন্ত্ৰান্ত্ৰান্ত্ৰ শ্ৰুদ্	ने सं सुन महुन महिन बेर्	5্ৰ'-ম্মৰ' 19 ব্ৰ'

55•	বছৰ মন্ধা ই'অৰুমান্ধানন্দা বছৰ মন্ধানন্দা		
56•	च-त्र-मु-त्य-मु-सर्वेदेः म्या-स्य-स्य-स्य-स्य-सर्वेदेः स्र-य-त्य-स्य-स्य-सर्वेदेः	हु*पई्ड्र-स्म रुपरः‡:ह्री	
57.	रट:इब:श्रृष:च <u>चट</u> : र्वाद:श्रृष[전 로 도 · 호 · 호 · 호 · 호 · 호 · 호 · · · · · · ·	<i>বুঝ</i> -শ্বন্ধ:18ন্দ্ৰ
58•	कॅ़न्यर-सॅ.के.चष्ट. क्रेन्यर-च्ड्री	बर्न् :बावरः विवतः हुरः छेः बर्ने :बावरः	1733 독다 용도: 12종·제도기
59.	超力・元 可 面・天 白・瀬 「 一 別 で、 日・ 日 美 一 で ま 日・ 日 本 一 日 一 日 一 日 一 日 一 日 一 日 一 日 一 日 一 日	बर्दे 'बापर'के' देट'न्पट'कुल	1763 조 덕·필 도 * 13종·연칙
60.	२न्दर्वदेश्चर्यः मह्र्रस्यः ग्रुःस्यःअ।	द्धर। दह्दर्ग्यस्यः दह्दर्ग्यस्यः	1806~~ 물 ~ *

61. ব্যাস্থ্য বিষয়ে	ঘ্রদ্রে প্রা	5ুৰ:≺নব: 18 ৡ৾৲:হু।
62· 智气·强·ギベ·디침·	ग्री-ध्रे-ब्रा बुद्ध-चगुब-क्रॅब-	প্র2.ছ 2এ.খনথ. 18
გৃষ্ণস্থল্য সুল্ কুষ্ণস্থল্য সুল্	र्रमा≅यःम्म मुकेरःखुःळॅ्न इन्नाह्यःम्म	1987 হন স্তু দ' 17ঐ'অগ্
64. কুঅ:মন্ব্রস্ক্র'বড়ুদ্	파연·전환 역 전환 도찍 '독덕도' 도찍 '독덕도' 교환 역 대원'	1822 རབ་སྱང་ 14 ॡ་ར།
65. ह.क्या.पश्च.सह. अमूच.सूच.सूच.सूच. २८ पषु.पङ्गेच.सूच.		1924. <u>\$</u> 2
66· স্ক:শ্বহ:এ:জ্ব:	म्बद्धः धिम	1793 རབ་བྱང་ 13 རུ་གང་།
67. ই শ্বং ই হ' অ' শ্ব্ৰ আট্ট' হ্ হ শ' শ্বং শ্ব্ৰ আ দস্তু আ' ই শ্		

68.	हू स्वरे प्रमु स्वरे इस स्वरः प्रमु स्वरे स्वरः स्व	दे-बॅ'ह्यपःनमृदः दहेग्यःबेर्-मु'यळ्	1820 বন:মুদ: 14 স্থেশ্বান:ন্ম্ম
69.	দ্বত্য ক্র : জ্ব শ্বত্য ক্র : জ্ব	म्बुर धेम	1814 རབ་སྱང་ 14
	म्बद्धाः भ्रुःद्विरःवीःदेवः मुक्दाः		95°B1
70.	শূর্দ। সুনের:নস্কু:নর:	<u> </u>	तुष: रमष: 19 हॅ ं
	क्याधराह्रा बद्धराह्मरासुदी	নল্লেইব্'শ্ৰম্'ই ম'	& [
	श्रेम्प	कु त्य	•
71.	हू 'यदे' महु ' महिम यदे सह	��ฺณ.소리도.뢺따,웖 . 띛.	<i>বুৰ-</i> ম্বৰ 19 বুৰ
	日本、英、玄原本、	प≅र.पहुं य. पथा. ≇ था .	ন গ্ৰীশ
	क्षेत्रः रूपः स्वा	ग्र ेल	
72.	चश्चरःचम् चश्चरःचम्	म्ब्रूट धिम्	1842 지막 물지 14
	रैया		毫" 芳可
73.	मृत्यदेग्यहुः मृत्यदेग्यहुः	स्र-'ख्रेंग'झॅ.पब ट'ई ख	<i>থুঝ</i> .খনথ. 10 প্ল <u>থ</u> .
	बर-५८ल-वेब- बे-बॅट-१	গছু! ট্রপ্রথ:ঐ প্রথ:ন:গ্র .	æ [
74.	ञ्चव-इतःबद्धवः रुगःवस्यः	ল্ব.মেŁ.ঽয়৶ন.	1985 རབ་སྡང་ 16
	रूतःय्ह्र्नःश्रायः स्वःधनःयह्ना	বর্র -এক	नेट श्रद

75.	명 리 지 지 지 지 지 지 지 지 지 지 지 지 지 지 지 지 지 지	बुन-चह्नद छे देर।	1985 조직·필도· 16 취도·궤도·
76.	स्त्रवः स्वर्गाः स्त्रवः स्वर्गाः	দ্ধব.মে শ. ৪৯খ.ন.	1985 국덕·월두· 16 위독·궤두·
77.	マーマ で で で で で で で で で で で で で で で で で で	র্বন্ধনের। ব্যন্ধনের	1983 হন:স্তুহ: 16
78.	न्ने त्रुव क्रेंग द्येत्र मुं क्र्य बर बर्दर प्रमुख	वै: त्व भिषः रयः कुः	1972 རབ་སྱང་ 16 ॡॱᢒ।
79.	म्ब्रेन्स्य व्याप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्य स्थापत स	न्या-र- बुय- मञ्जूब-ळ्ळ	1979 বন-প্রুম: 16
	पंच्यामी.ज्.मीया	•	

82. শ্রাইণ অর'দ্র' অল্ব'ইন ক্রান্স	चय.केथ। इ.स्.क्षेथ.श्वेच.	
83. গুদ:ৡন্:গ্লন্ন শ্রুম:গ্রু:ঈম:এগ্রুদ: মাদম:দরি:এগ্রুদ: শ্রুম	¥' ቒ ፟ጜቔ፞፞፞፞፞	नुदःह्रं र का
84. উ গ্ৰেখ্ড্ৰ্ড্ৰেই অ উ ন্ ক্লু অ উ	क्ष्म खट:टम् र्यट:ग्रम्बर:या	10 4.9 10 4.9
. ब्रह्मान स्टब्स्ट्र इ.स.चरा चुना पड़ेद अहेरा चरा केदा यहेद	·異仏·美 너희피·화네·스디드.	1845रन:बुद 14नेद:बुव्य
८६ इट्राव य छेत् य दे । इया बरा प्राचित्र य दे । स्वा बरा प्राचित्र य दे । सहस्रा प्राचित्र य दे ।	घ≅ट.। ज्ञचय.रसप्त. ब्राच्य.श्चीच.र्मी.	এ ছ.ৰ্ছ.ন <i>ব</i> ুথ. শ্ৰ ন্থ.
87. দ্দী'ন্দ্ৰ'স্থন' গ্ৰী'ক্ষ'ন্ন্'ক্ৰ' নুধি'শ্ৰম'না	લે-કેશ-ક્રાં	149 <u>4</u> বব :মুদ ৪ পি দ ংমুশ

88.	र्ने'तर्द्द्रग्न्य ग्रीःक्याधरः अहर्ष्याधरः महिकाम्	गुव् न्य्य जुव्य स्व	1497<5-5- 8 बे-ब्रुल्
89.	म्बर्ध्याः स्वा स्वाध्यः स्व स्वे स्वाध्यः स्व स्वे स्वाध्यः स्व	यःह्रं र्-यः गु वः र्वायः	प्र.षं.स थ्य.४चथ.
90.	चेथज.चपु.खे.ज्ञ. इषु.ख्.खेथ. चर्चा.चेथा.क्षेत्र.	स्थातत्त्री स्थान्य स्था	1983 বন স্কুন 16 স্কু শেশ
91.	ध्याःशुक्षेःग् वरः ह्वःस्ट्रतःविगः स्र्	<i>भू:5व</i> :य र :	1989 국 다 공 다
92.	五葉八七二 本の表・多名・近・ 中の名・句・句・ の・ の・ の・ の・ の・ の・ の・ の・ の・ の・ の・ の。 の・ の。 の。 の。 の。 の。 の。 の。 の。 の。 の。 の。 の。 の。	다.뜇·실선 보.뜇·실선	1985

93.	ক্ৰী:ছম:৪ম নলম:এমন্থান: নলম:এমন্থান:	दह्माय:श्रेन्:ग्रम्यः स्र	1419 বন-স্তুহ: 7
94.	ठॅर्-शु-र्गर कग-रेग-ध	5ु८:५ग र:ञ्चॅ:चब्रदः বইবি'শেল।	1984 <u> </u>
95.	전 지 리 다 리 다 리 다 리 다 리 다 리 다 리 다 리 다 리 다 리		
96.	[ૣ] ૡૣ ઌૣૣઌૺૹ૱.ૺૹૼૺૺૺ ઌૢઌૺૹૺૺઌૺૹૣ ઌૢઌ૽ૺૢઌૺઌૣઌ	দেলু ৰ .দাবা প্ৰথ-মা শ -টিপ্ৰথ-ন	1985 ላ ባ - ਭੂਵ 16
97.	यहन्त्र क्रिक्ट्र	瀬 仁美心で刊 て石 仁 瀬'བ☴ ང' 	- নমু - না নু অ. শ ব অ. ন ছ .
98.	श्रृेब:मदे:बे:हॅग सु:हॅब:इव:बर:	ञ्च र स्यः के वा ञ्च र स्यः के वा	1366 বন:স্তুব: 6 ই:কৃ

99 .	वृष्ठः स्वरः वृष्ठः स्वरः वृष्ठः स्वरः	त्युर:बेर्:व रे :ळेव्।	4.3 1600 ±4 å≥. 10
100.	नैपः वेरः वृंद यंद्रेः नृतेः नृत् युः पर्ने प्यहें न्।	দুদ:দুগাদ:স্ক্র'নরদ: বর্ষক'শকা	
101.	ग्री. क्य घर। অথ. क्य. ग्री. त.	दहेग्य-ब्रेन्-दबद्य	1453 <5 \\ 8.2
102.	四円、 では、 では、 では、 では、 では、 では、 では、 では、 では、 では	প্রন নম্পুর-জী-মা	1986 বন স্তুব: 16 ই:ম্বুশ
	ইন দুর্ম বা অন্দ: ক্রম বা অন্দ: ক্রম বা আন্দ: ক্রম বা আন্দ: ক্রম বা		
104.	चिट्ट.रचया	लर.जिट.च.ख.पर्येथ	र्थः रचयः चड्डं ख्रःय

105• শৃর্ম:শূর্ কুল:শ্র:শ্রুম: শুর:শ্রুম:শ্রুম:		ন্দুৰ্-শ নূৰ-শ
g ন্বা	화 4. 화 . 회察 l	चर्चन्य
বি নহান স্থ্য	충 . 칭 스 . 성 논 4.	चुन्न-स्वान्यङ्क
107• ਨੂਟਕਾ.ਸ੍ਰੇਘਾ	朝 d. 動 . 対実 l	चरीय.त।
ਕੇ:ਕੁੱਟਾ	参 . 刻 d . d と d .	येथ.रचथ.चश्च.
108. 可含え、 では、 では、 では、 では、 では、 では、 では、 では	화 4.화.퍼포 충·칭스 4.보	1692 རབ་བྱང་

নপ্তুনমান্মন্য নাম দেই প্রেনামান্ত। (৪४1)মিন ইমান্মন্ম শ্রেন স্তু त्रव्यः सुषः हूरः मृष्यः क्षार्रः मै हिर्यः ह्याः मृत्रे मृष्यं द्वार्यः प्रतुदः हुः । द्भगः दयः तृ :श्लेम्ययः मदे : त्र्व : श्लेम् : वी : स्मः ययः वि : रसः स्तरः द्वे यः पदेः : : : *थैया-*प्याचित्रवास्त्रक्ष्याच्यात्त्रम् । श्रियः विद्यास्य । विद्यास्य । विद्यास्य । য়ৢ৽ঢ়ঀৢঀয়৽ড়৾৾ৼ৽৸৾৾য়৽ৼ৾য়৽ড়৾য়৽ঢ়ঽয়৽ঀ৾য়ঀৢ৽ঽয়ৼ৾৽ঢ়য়য়৽য়ৢ৽ঽঢ়য়৾ ळ. चंत्र-इंट. पर्यं त्यं चंत्र-वंत्र चंत्र-वंत्र चंत्र-वंत्र चंत्र वंत्र चंत्र वंत्र चंत्र चंत्र चंत्र चंत्र चंत्र . পু. স. প্রবার পে বার্ম প্রার্ম প্রার্ম প্রার্ম প্রার্ম প্রার্ম প্রারম প্রম প্রারম প্রম প্রারম পরম প্রারম প্রারম প্রারম প্রারম প্রারম প্রারম প্রারম প্রারম প্রারম য়ৣ৾৾ঢ়ॱয়ৢ৻৻৴ৼৢ৾৾য়ৢ৾৾৽ঢ়ঽ৻৻য়ৼ৾৾৾৾ঀৢ৾৻য়৻য়ঢ়৻ঢ়ৼৢ৾ঢ়ৢ৻৴য়ৢ৾ঢ়ৼ৾য়ৢয়৻ঢ়ঢ়ঢ়৻ঢ়৽৽ चवेया दे.रेया.श्रेन्यां संस्टाया श्रेया निवास स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स् विवल नेत्र दे त्रल सं स् र्सर पा के ची (916) सर न्न के दार सुर सं डे.वी.≆.कॅ४ न्रयथ श्रेपयार्श्वर.बूट.ल.र्जयानीतर.2ैट.शूचयात्रा<u>याः.....</u>

पर्वत्र क्षे:र्व्य **नेवः**श्चरःन्वर्यःन्वर्दरःन्वश्चयःग्चै:र्वुरःन्वेवः ह्य्यवातुः বন বকন এন। বিদেশ বাধার মান্ত্রীয় মান্ত্রীয় ব ১.৯৮. খ্রীর নথা খ্রীন র ञ्च:ळेव:श्रम्यारादेर:मञ्जेव हॅ याया श्चेर.ब्रे.र.श्च.रत.क्ष.घर घडेबा <u> पश्चै पथ.चथ.जू. र्ज. पथ. जूट. बुट. तथ.चे ७ व. ज. र च. वैट. पश्चेव. र् च्राय.ग्री.</u> क्षं य पान्नवरावते संस्वर् स्वर् सेर् जिस्। यर्षे याना यान्या नेराचिरा **६**यःयः न्दा ग्वयः ग्रेः ज्ञः यरः देवः पदेः व्यवः नृवः ग्वतः न्यः व्यतः व्यतः मर्या पर्डे या स्वा तर्या क्रीया प्रमाया पर्डर् म्वर प्रते प्रवे म्य प्रया क्री न्बॅरलप्र-न्द्र-बहुद धर-नगदाधी-गदर-नः इन-पानदेव। मर्श्ववर्षः हुन् मॅ स्मा हुन् र्राम्य हेन् स्माया यहन्। रे हुया यापया नर्द्धवःश्चे नु न् ने न्दरः ह्ववः श्वरः म्द्रा ने तः ने तः नि स् नु दः श्वरः श्वरः स्रा न्दः पठराधेनरा देश म्राय मः द्वर द्वा क्ष्रमः अवः सः मार्गः क्षुदः म्वदः **बुनः**धदेःकॅॱळॅ*न्-नुःचेनवः* चेव*ःधवःन्नुनः*कॅ*ः*बुबःकुः**धवःबवःर्द**यःदेवःः थेदः धरः ळॅ रः र धना छेरः श्वरा

प्रवृत्तः≫न्त्रः«श्रुद्धःस्यायवृत्तः»गृष्ठेताशुः ग्रुत्याः। क्रून् यः বরীহ' विनयः भः नतु त्रः श्रीः त्र रः वीः श्रुः वेत्रः नेत्रः रनः द्धेत्रः विवयः रहा। **অ**-Aব-অব-দূব-অব্যাত্ত প্রত্যান্ত বিদ্যাল मु 'रूर'गलॅव' पव' मुनेता ग्रेता न्ने प्रक्रेव लुला सु सेता लगाया यावला या स्व सुव सेता से स नेषामञ्जेदार्स्यायाम वेषाद्यायाम्य । त्या व्याप्तियाम्य । त्या विष्य **ዻ፟**፟፟፟፟፟፟፟፟፟ኯፙጜዀቜ (949)ቚ፟ጙ፧፞፞፞ፙ፟ጜፙፙፙፙኇ፨ፙዼዀፙ፝ጜፙኯ፟ጜ፞፞፞ዼጜጚ ब्रदःरःस्रदःतग्रेला यःलबःग्रुःनद्रवःनविःयठवःपद्धनवा वःपदेरः नङ्गत्र-पः नङ्गन्यः पदेः ञ्चन्यः चुः न्दरः द्वेतः दः तः दः निः न्दः न्ताः । यं नकु - न्दः नकु न् : र्राटः ने : व्रः न्दः कु : न्दः नदः कु : नदः कु नदः क्ष्र : धे न मु केरा ग्रेरा केर पर प्रकृत परि नव्या नवि र ने पर तुन मी केर पर्द नया परि **सं**प्रदेश्यामङ्ग्रदायाञ्ची प्रत्याची प्रत्याची स्वाचित्र विष्प्रत्याची स्वाचित्र विष्प्रत्याची स्वाचित्र विष् ধর স্তু কে স্থ লব স্তু : (950) শ্ব : মু : ইবং স্তু : ক স্থ ন : ন ন ব । (1. শ্বৰ ঐ প্ৰান্ত বিশ্বৰ বিশ্বৰ প্ৰান্ত বিশ্বৰ वयापः हैं :हे : द्वदः धुन 4. शुः वेरः द्वं यः विवयः दवुदः नवयः) वुदः नदे वरान्येयाञ्चव न्राह्मान्तेयारम हु द्वरावेयान्ययान्यान्तुरा स्यत्व, व्यव कर्षाये वस्य भेव स्याप्त स्वा मेरा म्याप्य माना प्रविदे । গ্ৰহ

हैं.(950) स्राधी अथा हैं.स्याप्त क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या हैं स्याप्त क्षेत्र त्या हैं स्याप्त क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या

द्वारः सं त्तृत्व वंशः पद्धः ध्याः यश्यः यशः यशः विष्यः यशः विष्यः स्वाः व्याः विष्यः स्वाः व्याः विष्यः स्वाः व्याः विषयः यशः विषयः विषयः यशः व

वित् अत्या में हे निया धुना वि सु अव के निर्मा निया के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्म

प्रिक्षंत्र पर्द्धंत्र त्युक्ष मध्य द्वितः व्याप्त क्ष्यः व्याप्त क्ष्यः व्याप्त व्याप्त क्ष्यः व्याप्त क्ष्यः व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्यापत्य व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्यापत

प्यापः क्षेत्र प्रकार क्षेत्र स्वापः स्वापः

न्त्रण्या स्वास्त्रण्या स्वास

क्रियःक्षरः व्यक्षः विद्यः विदः विद्यः विद्य

स्य भेषटाव्याचले बायाले या. यो. याव्य हा. या. याव्याच्या स्या सी या. बाय्या हो. याव्या या या या या या या या या

मूर्यं प्राप्त प्राप्त प्राप्त क्षेत्र क्षेत्